बापू की कारावास-कहानी

— आग़ाख़ां महल में इक्कीस मास —

डॉ सुशीला नैयर

भूमिका-लेखक

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

०

सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

समर्पित

उन दो पुण्यात्माओं को

जिनका

कारावास मे अतिम वलिदान

अहिंसा के सैनिकों के लिए सदैव को

दीपस्तंभ वन गया

☙

प्रकाशक की ओर से

प्रस्तुत पुस्तक को पाठको की सेवा में उपस्थित करते हुए जहा हमें हर्ष हो रहा है, वहा थोडा विषाद भी और वह इसलिए कि इस किताब को स्वय बापू ने कह कर लेखिका से तैयार कराया था और यदि यह उनके जीवन-काल में ही प्रकाशित हो गई होती तो निश्चय ही उन्हें वडी खुशी होती ।

पुस्तक के बारे में हमें विशेष कुछ कहने की आवश्यकता नही है । पाठक स्वय निर्णय कर सकेंगे कि यह कितनी मूल्यवान वस्तु है । आगाखा महल के कारावास के इक्कीस मास की कहानी भारतीय स्वाधीनता-सग्राम के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अश है और हम बापू के आभारी है कि उन्होने उन पौने दो वर्षो की अनेक शिक्षाप्रद और हृदयग्राही घटनाओ को विस्मृति के गर्त्त में विलीन होने से बचा दिया । इतना ही नही, पुस्तक के अधिकाश भाग को उन्होने स्वय देखा और उसमें सशोधन करके उसकी प्रामाणिकता पर अपनी मोहर लगादी ।

डा० सुशीला नैयर को वर्षो बापू के साथ रहने और उनका स्नेह व विश्वास पाने का दुर्लभ अवसर मिला था । आगाखा महल के वदी-काल में भी वे बापू के साथ थीं । महादेवभाई के देहावसान के बाद बापू ने सुशीलाबहन से कह कर प्रतिदिन की छोटी-बडी घटनाओ की डायरी रखवाई । उन्ही की बदौलत आज यह पुस्तक पाठको को सुलभ हो सकी है । विस्तार-भय से सरकारी आरोप-पत्र और बापू के उत्तर का इसमें उल्लेखमात्र किया गया है । इस विषय में रुचि रखने वाले पाठक इसकी पूरक सामग्री के रूप में नवजीवन प्रकाशन मदिर द्वारा प्रकाशित अग्रेजी पुस्तक Gandhiji's Correspondence with the Government (1942-44) पढ लेंगे ।

अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी हमारे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने इस पुस्तक की भूमिका लिख देने की कृपा की, तदर्थ हम उनके आभारी है। बापू ने लेखिका को वचन दिया था कि वे स्वय भूमिका लिख देंगे, लेकिन ईश्वर को वह मजूर न था ।

पुस्तक को मण्डल द्वारा प्रकाशित कराने का श्रेय भाई श्यामलालजी (कस्तूरबा ट्रस्ट, वर्धा) को है । अत इस अवसर पर हम उनका तथा पुस्तक को आद्योपात ध्यानपूर्वक पढकर उसमें आवश्यक परिवर्तन–परिवर्द्धन कराने के लिए श्री प्यारेलालभाई का विशेष रूप से आभार स्वीकार करते है । डायरी की प्रति-लिपि करने व सम्पादन में योग देने के लिए हम अपने स्नेही मित्र श्री काशिनाथ

त्रिवेदी तथा श्री भास्करनाथ मिश्र को भी धन्यवाद देते है।

पुस्तक का कलेवर इतना बढिया होते हुए भी उसका रूप इतना न चमक पाता, यदि इसमें सर्वश्री धीरेन गाधी, कनु गाधी, ललित गोपाल प्रभृति बधुओ और बबई के 'सेंट्रल फोटोग्राफ्स' व 'इटरनेशनल बुक हाउस' तथा लदन की 'दी एसोशियेटेड प्रेस ऑव ग्रेट ब्रिटेन लिमि०' के सौजन्य से प्राप्त प्रसगोचित चित्र न दिये गये होते। इस कृपा के लिए हम इन सबके अनुगृहीत है।

अत मे हमें पाठको से क्षमा-याचना करनी है कि प्रेस-सबधी तथा अन्य कठिनाइयो के कारण पुस्तक के प्रकाशन मे इतना विलम्ब हो गया।

—मत्री

भूमिका

डाक्टर सुशीला नैयर महात्मा गांधी के साथ कई वर्षों से बराबर रहा करती थीं। जब महात्माजी आगाखां महल में १९४२ से नजरबन्द किये गए, तब से वहां बराबर रहीं। भारत के इतिहास में उन दिनों का बहुत बड़ा स्थान और महत्त्व है। किस तरह से वहां पर दिन बिताये गए, किस तरह महादेवभाई देसाई और पूज्य बा का देहावसान हुआ और किस तरह जो घटनाएं हो रही थीं उनकी प्रतिक्रिया पूज्य बापू पर हो रही थी, यह सबकुछ बहुत विस्तारपूर्वक और सुन्दर तरीके से डाक्टर सुशीला ने इन पृष्ठों में लिखा है। यह महात्माजी से सम्बन्ध रखने वाली उन पुस्तकों में से होगी जो मौलिक सामग्री दे सकेगी। इससे पाठक लाभ उठावेंगे और प्रेरणा पावेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

नई दिल्ली
११ जनवरी १९५०

प्रस्तावना

बापू के आगाखा महल में कारावास की डायरी की प्रस्तावना मुझे स्वय ही लिखनी होगी, इसकी मुझे स्वप्न में भी कल्पना न थी। वह डायरी मुझसे बापू ने लिखाई थी। १५ अगस्त की रात को महादेवभाई की मृत्यु के बाद एक मेज़ के खाने में से चद कागज के पुर्ज़े मिले। उनपर महादेवभाई ने ९ अगस्त से लेकर रोज दिन की मुख्य घटनाए अपनी याद ताजी करने के लिए दो-दो, चार-चार लाइनो में लिखी थीं। उसी कागज़ पर १४ तारीख के नीचे मैंने १५ अगस्त की, महादेवभाई के महाप्रयाण की घटना के बारे में मुख्य बाते नोट कर डाली। हृदय दु ख से भरा था, आखें पानी से। सारा जगत् घूम रहा था। आखें बद करते ही महादेवभाई की अन्तिम यातना का चित्र सामने आ जाता था। सो शाम की प्रार्थना में भी आखें बद न कर सकी। महादेवभाई ने मुझे सगी बहन से बढ कर समझा था। कई बातो में वे हमारे आदर्शरूप बन गए थे। उनसे बात-बात में सीखने को मिलता था। बापू से सीखना एक बात थी, महादेवभाई से दूसरी। इसी तरह भाई (प्यारेलालजी) भी मुझे सिखाते थे, लेकिन वे तो डाट भी दिया करते थे। मगर महादेवभाई भल भी बताते तो प्यार से। उन्हे मैंने कभी गुस्सा करते नही देखा था।

महादेवभाई के एकाएक चल देने के बाद सारी रात आखो में कटी। पिछले चार साल की अनेक घटनाओ का विचार करती रही। पास में बापू की खाट थी। वे भी रात भर सो नही सके। १६ की सुबह की प्रार्थना के समय उन्होने मुझ से कहा, "महादेव का जितना बोझ उठा सकती है उठा ले। आज से तुझे नियमित डायरी रखना होगा। याद रख, एक दिन ये डायरिया छपने वाली है।" मैंने रात को जो लिखा था, सो लाकर उनके सामने रख दिया।

नियमित डायरिया रखने का मैंने प्रयत्न किया। जो भी लिखती थी वह बापू पढ जाते थे। जो सुधारने जैसा लगता सुधार डालते थे। कई बार मुझे बापू का इतना समय लेना खटकता था। मगर उनकी उदारता और प्रेम का पार न था। मुझे समझाते, "मैं तुझे इतनी मेहनत से सिखा रहा हूँ सो अन्य कारण से नही। मैं चाहता हूँ कि तू तैयार हो जाए और मेरा और प्यारेलाल का बोझ हल्का कर सके।" उन्होने मेरे लिए अग्रेज़ी महावरो की मेकमार्डी की किताब मगाई, नेसफील्ड की ग्रामर, सस्कृत की डिक्शनरी और भडारकर की पहली और दूसरी किताब और सिखाना शुरू किया। मगर सागर मे अगाध जल होते हुए भी हरेक पात्र अपने माप के अनुसार ही ले पाता है। बापू के अगाध प्रेम और अपार मेहनत के बावजूद मैं अपनी सब त्रुटिया निकाल न सकी। सस्कृत आज भी कच्ची है। अग्रेजी भी बापू की परीक्षा मे पूरी उतरे ऐसी नही। किसी पूर्व जन्म के पुण्य के कारण

उस महापुरुष के चरणो की धूलि सिर चढाने का अपूर्व अवसर मिला था। मगर उसी के साथ शायद पूर्व जन्म के सस्कारो के कारण ही कई स्वभाव-दोष रहे और उस अपूर्व अवसर का पूरा उपयोग न कर पाई। वापू के पास मै आई तो उनके आसपास के लोगो में सवसे छोटी थी। अपने घर में भी सव भाई-वहनो से छोटी होने के कारण लाड में पली थी। वापू ने भी वहुत लाड लडाया। मेरी लडकपन की सीधी-सादी वातो का प्यार से जवाव देते। दलील करने में प्रोत्साहन देते और जितना वजन महादेवभाई की वात को देते, उतना ही मेरी वात को भी। कई वाते वापू से कहते-पूछते महादेवभाई या भाई को स्वय सकोच होता तो मुझसे पुछवाते। परिणाम यह कि वापू के जीवनकाल में मै समझ न पाई कि वापू जैसे महान आत्मा का मुझसी तुच्छ व्यक्ति पर इतना इतना प्रेम करना और मेहनत लेना उनकी कितनी वडी उदारता थी। वे मेरे थे। मैने पिता की तरह उन्हे माना, उनसे सीखने का, उनकी सेवा करने का प्रयत्न किया, उनसे फिजूल दलीले भी की, उनका व्यर्थ समय लिया, उन्हे व्यर्थ कष्ट दिया। एक दिन वापू नहीं होगे, यह कभी खयाल ही नही आया। मगर वापू जानते थे, वे हमेशा नही रहने वाले। सो वे मुझे सिखाने का प्रयत्न कर रहे थे कि अव मै वडी हो गई हूँ। कई वार किसी छोटी-मोटी घटना से मै उद्विग्न हो जाती तो वापू कहते, "तेरी डाक्टरी की डिगरी छीन लेनी चाहिए। डाक्टर को स्थितप्रज्ञ होना चाहिए।" मेरा वडे-से-वडा दोष रहा है मेरी कोमल चमडी, मेरा छुईमुईपन और अतिशय स्वाभिमान। वापू ने समझाया, जनता में काम करना है तो यह सव ठीक करना होगा। मगर उनका यह प्रयत्न मेरे लिए वहुत कठिन सिद्ध हुआ। जैसे-जैसे काम वढता गया, उनके पास दलील करके समझाने का समय भी कम होता गया। मुझे लगा कि क्या वापू मुझे कम प्यार करने लगे है? मगर जल्दी ही अपनी भूल समझ पाई। मुझे वे अपने पाव पर खडा होना सिखा रहे थे।

दिल्ली में आखिरी दिनो में सुवह प्रार्थना के वाद वे अक्सर हम लोगो से चिट्ठियो का जवाव लिखवाते या लिखने को कहते। एक दिन मुझे कुछ पत्र दिये। एक पत्र था वापू के पुराने साथी के पुत्र का। उन्होने पूछा था कि अव हिन्द आजाद हो गया है। अव खादी पहनने की जगह विलायत से लाये कपडे पहनने में क्या हर्ज, इत्यादि। वे विलायत से कुछ कपडे लाये थे। नये खादी के कपडे खरीदने की जगह विलायत से लाये कपडे पहनें तो कपडे की वचत होगी। देश में कपडे की कमी है, वगैरा-वगैरा। वापू कहने लगे, "इसे लिखो कि मुझसे पूछ-पूछकर कव तक चलोगे? मै तो कभी नहीं कहने वाला कि खादी छोडो। सच्ची आजादी तो आई भी नहीं। मगर आजादी आ जाने पर खादी को छोडना, जिस सीढी से ऊपर चढे, उसे फेंक देने जैसा होगा। मगर मै कहूँ, वह मेरा धर्म, तुम्हारा नहीं। अपना पिता कहे वह धर्म पुत्र भी स्वीकार करे, यह आवश्यक नहीं है। अपने आप को सूझे वही व्यक्ति का धर्म है। हा, अपवाद एक है, गुरु। अगर गुरु कहे तो वह धर्म-पालन आवश्यक है।" मैने कहा, "वापू, आप तो सवके लिए गुरु के स्थान पर है न, इसीलिए सव आपको पूछते है।" वापू वोले, "ऐसा हो तो गुरु के साथ दलील नहीं

करनी पडती । उसका कहना अपने आप हृदय में उतर जाता है ।"

इतना कहकर बापू लेट गये । साढे तीन बजे उठकर प्रार्थना के बाद कुछ समय काम करके वे आधा-पौना घटा फिर आराम लिया करते थे । मैंने उन्हे कम्बल ओढाया और पीठ और पाव दबाने लगी । उनकी आखें बन्द थी । सिर पर सफेद खादी का रूमाल ओढे थे । मै समझी सो गये है, मगर उनके मन मे वही विचारधारा चल रही थी । क्षण भर बाद धीमे से बोले

"तने एकलव्य नी वार्ता याद छे (तुझे एकलव्य की कथा याद है)?" इस वाक्य में बापू हम सबको जीवन भर का सन्देश दे गए ।

मगर डायरी की बात मे यह दूसरी ही बात चल पडी । जेल से छूटने पर परिस्थिति ऐसी न थी कि जेल की डायरिया छपती । मगर १५ अगस्त १९४७ को परिस्थिति पलट गई। कुछ मित्रो ने डायरिया देखी थी । उनका आग्रह था कि उन्हे अब छपाना चाहिए ।। सस्ता साहित्य मडल के श्री मार्तण्ड उपाध्याय और हरिभाऊजी का खास आग्रह था । मैंने बापू से पूछा । उन्होने 'हा' कहा । मैंने कहा, "मगर आपको प्रस्तावना लिखनी होगी ।" बापू कहने लगे, "हा, वह तो है । मगर जल्दी तो नही है न?" मैंने कहा, "नही । दिसम्बर के अन्त तक लिख दे तो बस होगा ।" उस समय जनवरी १९४८ के शुरू मे मेरे अमरीका जाने की बात चल रही थी । मगर बापू को छोडकर जाने का मेरा मन नहीं होता था । कई कारणो से मेरा जाना लम्बाया । मैं खुश होकर बापू को समाचार देने गई । उन्हे वह खटका । बोले, "जाना ही है तो मैं चाहता हूँ कि जितनी जल्दी जाकर वापिस आवे उतना ही अच्छा है ।"

१३ जनवरी को मैं हवाई जहाज से अमरीका जाने वाली थी । उसी दिन बापू का दिल्ली वाला उपवास शुरू हुआ । मेरा हृदय प्रभु के प्रति कृतज्ञता से भरा था कि मेरा जाना लम्बाया और मुझे रास्ते मे से भागते-भागते लौटना नही पडा । जाना लम्बाने के साथ दूसरा परिणाम यह निकला कि डायरियो का काम और लम्बा गया । बापू प्रस्तावना भी न पढ पाये । मुझे पूरी पाडुलिपि सब फिर पढ जाना था, वह भी न हो सका ।

३० जनवरी को वज्रपात हुआ । दुनिया काप उठी । हम सब बिना खेवट की नौका के यात्री हो गए । जिस काम मे जिसे बापू लगा गए थे, उसीमे उसने अपने दु ख को और अपने आपको भूलने का प्रयत्न किया । डायरियो की तरफ देखने का भी समय न मिला ।

मार्च मे एक दिन सरदार पटेल से मिलने गई । उन्हे पटियाले का अपने काम का समाचार देना था । मै पहुची ही थी कि उन्हे हृदय का दौरा हुआ । ईश्वर को उनसे अभी और काम लेना था । खतरे मे से बचाने का उसने मुझे निमित्त बनाया और उनकी थोडी-सी सेवा करने का मौका दिया । दौरा कम होने पर सरदार मुझसे कहने लगे, "मैं बापू के पास जा रहा था । वही शुक्रवार का दिन था । वही समय होने वाला था । तूने मुझे क्यो रोक लिया ।" मैंने कहा, "जी नही, मै रोकने वाली कौन? बापू ने ही आपके सामने

दरवाजा वद कर दिया है?" सरदार ने वापू की मृत्यु पर आसू नही वहाये थे। अपना दु ख पी गये थे। आखिर वह फूट निकला। सरदार की सेवा में रहने के कारण डायरियो का काम फिर लम्वाया। आखिर २५ जून को मैंने हिन्दुस्तान छोडा। कुछ काम रास्ते में किया, कुछ यहा आकर और डायरिया पढकर डिप्लोमैटिक वैग में हिन्दुस्तान भेजी।

डायरिया वापू स्वय पढ गये थे। मगर वे होते तो शायद कई विचार और अधिक स्पष्ट करते। पूजीवाद और समाजवाद के वारे में उनके विचार खास महत्त्व रखते हैं। वे पूजीवाद के शत्रु थे, पूजीवादियो के नहीं। पूजीपतियो के अनुभव का, ज्ञान का वे उपयोग करना चाहते थे। मगर उनका कहना था कि पूजीपति अपने आप ट्रस्टी वन जावे और अपने ज्ञान और अनुभव का उपयोग अपने लिए या अपने कुटुम्व के लिए नहीं, देश के लिए करे। जो लोग ट्रस्टीशिप को अच्छा न समझते हो या उनको इसकी सफलता के वारे में कुछ शका हो उन्हे हिन्दुस्तान की रियासतो का उदाहरण देखना चाहिए। एक जमाना था कि राजकोट जैसी छोटी-सी रियासत में लोकसत्ता कायम करने के लिए वापू को उपवास करना पडा था। मगर आज पाच सौ रियासतो के लोग अपने देश की खातिर अपनी सत्ता प्रजा के हाथो में दे चुके है। वापू का कहना था कि जव जनता एक चीज चाहती है, जनता में जाग्रति आ जाती है और वह दृढता तथा शान्ति से अपनी माग पेश करती है, तव सत्ताधारी राजा हो या पूजीपति, विदेशी सरकार हो या देशी सरकार, उसे वह पूरी करनी ही पडती है। जो कानून प्रजा की माग से वनते है उनका वोझ प्रजा पर नहीं पडता। जव कानून ऊपर से वनाये जाते है तव उनका वोझ प्रजा को कुचल सकता है। मगर प्रजा की माग सच्ची होनी चाहिए। प्रजा को अपना धर्म समझना और उसका पालन करना चाहिए। वे मानते थे कि अपना धर्म पालन करने वालो को ही हक मागने का अधिकार है।

वापू की कल्पना के आदर्श सत्ताधीश कैसे होने चाहिए, यह विषय भी अत्यन्त रोचक है। वापू की कल्पना में सत्ताधीश लगभग पूर्ण पुरुष होना चाहिए। उसे सर्वथा नि स्वार्थ, सत्यमय, अहिंसामय, सतत जाग्रत, सयमी, अपरिग्रही, आत्मत्यागी, सासारिक लोभ और सत्ता-मोह से मुक्त, विनम्र और प्रजा का मुख्य चाकर वनकर रहनेवाला होना चाहिए। ऐसे सत्ताधीश को सत्ता खोजनी नही पडती, सत्ता अपने आप उसे खोज लेती है।

दिल्ली में आखिरी दिनो में एक दिन-सुवह घूमते समय वापू से मैंने पूछा, "वापू, आपने कहा है, आप दरअसल समाज-सुधारक है। विदेशी राज में आप अपना काम नही कर सकते थे, इसलिए आपको राजनीति में पडना पडा। अव विदेशी राज चला गया है। क्या अव आप अपना समय रचनात्मक कार्य में लगावेगे? समाजसुधार में अपनी सारी शक्ति खर्च करेगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "अगर मैं इस अग्नि-परीक्षा में से निकला तो मुझे पहले राजनीति को सुधारना होगा।" राजनीति सत्य और अहिंसा के आधार पर चल सकती है। धर्म से वह अलग या भिन्न नहीं, यह वापू को सवसे वडी शोध रही।

अगर जीवन का आधार सत्य और अहिंसा बनाना है तो बचपन से ही बच्चे की तालीम उसी तरह की होनी चाहिए। सो उन्होने नई तालीम हमारे आगे रखी। जन-साधारण को आजाद होना है, लूट से, शोषण से बचाना है तो विकेन्द्रीकरण का सिद्धान्त स्वीकार करना होगा। छोटे-छोटे उद्योग-धन्धो को बढाना होगा। बडी-बडी फैक्टरिया बनाने से सत्ता थोडे लोगो के हाथो मे चली जाती है, वे सत्ताधारी भले ही सरकार हो या पूजीपति। बापू को वह स्वीकार न था। सो उन्होने हमारे सामने ग्राम्य जीवन, ग्राम्य उद्योग का आदर्श रखा, चर्खा रखा, सारा-का-सारा रचनात्मक कार्यक्रम रखा। अमरीका जैसे देश में, जहा लोग फैक्टरियो के पुजारी रहे है, विशाल उत्पादन पर चलते आए है आखिर इस रास्ते का दोष देखने लगे है। रेडियो पर और दूसरे साधनो द्वारा फिर से देहात बसाने की बाते कर रहे है। एटम बम ने उनकी आखें खोल दी है।

मुझे टेन्नेसी वैली अथॉरिटी प्रोजेक्ट (टी. वी ए.) वालो ने उसकी नई तालीम (प्रोग्रेसिव एजूकेशन) की फिल्म बडे उत्साह और गर्व से दिखाई। मैंने देखा कि बापू की बताई नई तालीम में इससे बहुत ज्यादा मसाला है। मगर अपने धन की कीमत समझेंगे, या न समझकर पश्चिम के रास्ते बह जायगे, सो कौन कह सकता है? एक छोटी-सी मिसाल लीजिए। हमारे देश में करीब-करीब सब माताए अपने बच्चो को दूध पिलाती हैं। यहा पर वह छोड दिया गया था, अब उसके दुष्परिणाम देखकर फिर मा के दूध को वापिस लाने की भारी कोशिश हो रही है। यहा पर सब बच्चो को अस्पताल में मा से अलग नर्सरी में रखा जाता था, अब मा और बच्चे को साथ रखने का प्रयत्न हो रहा है। हम अपने अस्पतालो में आज भी बच्चे को मा से अलग रखने के प्रयत्न में है। जिन चीजो को पश्चिम हानिकारक समझ कर छोड रहा है, उन्हे हम ग्रहण करने की कोशिश में है। बापू हमारे कान पकड कर आज रोक नही सकते। क्या हम उनके बताये मार्ग को भूल जायगे? क्या हम पश्चिमी धारा में बह जायगे, या पश्चिम को और जगत् को रास्ता बताने वाले बनेंगे? जगत् हमारी तरफ देख रहा है और उसका कारण बापू है। बापू आज बुद्ध और ईसा की कोटि मे गिने जाते है। जवाहरलालजी की तुलना लिंकन के साथ की जाती है। उनके आदर्शवाद, विश्वबन्धु भाव और विश्वशान्ति भाव, सत्यनिष्ठा, सत्यपरायणता और न्यायप्रियता के कारण जगत् के नेताओ की श्रेणी मे जवाहरलालजी आज प्रथम स्थान रखते है। मगर अकेले जवाहरलालजी हिन्द का बेडा थोडे पार कर सकते है! जिनसे उन्हे काम लेना है, उन्हे स्वय इन ऊँचे आदर्शो को अपनाना है, हिन्द की प्रजा को अल्पदृष्टि छोड कर दीर्घ दृष्टि से काम लेना है और अपनी त्रुटियो को दूर करके बापू के बताये ऊँचे आदर्शो पर चलना है। बापू की तपश्चर्या हमारी मार्गदर्शक बने! ईश्वर हमें उस महापुरुष के देशवासी होने के लायक बनावे! उनके बताये मार्ग पर चलने की शक्ति दे, यही प्रार्थना है!

बाल्टीमोर, मेरीलैण्ड,
अमरीका]

— सुशीला नैयर

विषय-सूची

आवरण पृष्ठ

इस पुस्तक के आवरण का भावपूर्ण चित्र आगाखा महल के कारावास के समय का है। बापू, बा तथा अन्य जन प्रार्थना में लीन है। इस चित्र के लिए हम श्री धीरेन गांधी के आभारी है, जिनके 'A Glimpse into Gandhiji's Soul' अलबम से इसे तथा उपवास का एक चित्र लिया गया है।

—प्रकाशक

चित्र-सूची

बापू की कारावास-कहानी

[आगाखां महल मे इक्कीस मास]

लेखिका बापू के साथ

: १ :

प्रारंभिक

मुझे बापूजी के प्रथम दर्शन सन् १९२० के बाद हुए थे। असहयोग-आदोलन शुरू हो चुका था और बापूजी दौरे पर गुजरात गये थे। मेरे पिताजी, मैं जब चद महीने की थी, गुजर गये थे। बडे भाई (प्यारेलालजी) एम ए में असहयोग करके बापू के पास साबरमती आश्रम में चले गये थे। मैं उस समय बहुत छोटी थी और अपनी माताजी तथा दूसरे भाई के साथ गुजरात के एक देहात में रहती थी। मुझे याद है कि एक दिन मैं रास्ते पर खेल रही थी कि वहासे कुछ लोगो को इकट्ठे जाते देखा। उनमें हमारी माता समान बडी, चचेरी बहन थीं, गाव की एक विधवा, जिन्हें सब लोग 'फूफी' कहते थे। मैंने उनसे पूछा, "आप कहा जाती है?" वे कहने लगी, "महात्मा गाधी के दर्शन करने।" महात्मा गाधी का अर्थ उस समय मेरे लिये था मेरे बडे भाई। मैं भी उनके साथ चलदी। वे लोग तागे में जाने वाले थे, मगर तागा नहीं मिला। सो मैं उनके साथ पाच मील पैदल चली। शायद कुछ समय के लिए किसीने गोद में उठा लिया था।

गुजरात पहुचे तो भीड का पार न था। किसीने मुझे ऊचा उठाकर बताया कि वह महात्मा गाधीजी है, मगर मैं उन्हे देख भी न पाई। उनके साथी एक जगह बैठे नाश्ता कर रहे थे। दूर से उनके दर्शन करके हम लोग वापिस आगये। मेरे भाई उनमें नहीं थे। न भाई मिले, न महात्मा गाधी के दर्शन हुए। इससे निराशा होती, इतनी समझ अभी नहीं आई थी। खुशी-खुशी शाम को लौटे। उसके कुछ महीने या साल भर बाद हम लोग अपने चचा के पास रोहतक गये हुए थे, वहा महात्माजी आये। भाई भी उनके साथ थे। महात्माजी स्त्रियो की सभा में भाषण करेंगे, यह सुनकर मेरी माताजी वहा गई। उन दिनो हमारे घर में पर्दा था। पुरुषो की सभा में स्त्रिया जाय, यह चचाजी को पसन्द न था। मगर स्त्रियो की सभा में उन्होने जाने दिया। मा की उगली पकडे, भीड को चीरते हुए हम महात्माजी के पास पहुचे। स्त्रियो की सभा में इतना शोर था कि महात्माजी भाषण नही कर सके थे। सो वे फड इकट्ठा कर रहे थे। माताजी ने प्रणाम किया और कहा, "मैं प्यारेलाल की माता हू। आपसे मिलना चाहती हू।" उन्होने उन्हे लाहौर में मिलने को कहा।

कुछ दिन बाद हम लोग उनसे मिलने लाहौर गये। स्व० चौधरी रामभज दत्त की कोठी पर बापू का डेरा था। माताजी गई थीं बापूजी से अपना लडका वापस

मागने, किन्तु माताजी ने आकर बताया कि उनके सामने जाकर मुह से कुछ और ही निकल गया और वे बोली, "आप मेरे लडके को अधिक-से-अधिक पाच साल तक भले अपने पास रखिये, पीछे मेरे पास भेज दीजिये। मेरे पति के देहात के बाद यही मेरे घर का दीया है।"

बापूजी ने क्या उत्तर दिया सो मुझे पता नही। मुझे माताजी बाहर छोड गई थी, इधर-उधर खेलकर थकने पर मै चुपचाप बापूजी के कमरे में घुस गई। मेरे पावो में जूते थे। भाई मुझे भगा देना चाहते थे मगर बापूजी ने रोका और जूते निकालकर आने की आज्ञा दी। आई तो उन्होने मुझे अपनी गोद में बिठा लिया। वे मा से कह रहे थे कि तुम भी अपने लडके के पास क्यो नही आजाती? मा ने कहा, "घर-बार छोडकर कैसे आ सकती हू?"

बापू ने हसते-हसते मगर करुण स्वर में उत्तर दिया, "मेरा भी घर था।" फिर मेरे सिर पर हाथ रखकर कहने लगे, "यह लडकी मुझे देदो।" मा बोली, "यह तो मुझसे न हो सकेगा।" फिर बापू मेरे मिल के कपडे की हसी उडाने लगे। बोले, "देखो न, इस छोटी-सी लडकी को भी विदेशी कपडा पहनाया है! क्या बात है?" मा बचाव करने लगी, "नही, स्वदेशी है।" उससे बापू को सतोष होने वाला नही था। मै यह सवाद सुन रही थी। उस समय खद्दर की मीमासा मेरी समझ से बाहर थी, मगर न पहनने योग्य कपडा पहना है, यह समझकर मुझे अदर-ही-अदर बडी शरम-सी लग रही थी। मुझे उस समय यह स्वप्न मे भी कल्पना न थी कि एक दिन बापू के निकटतम सम्पर्क में आने और सेवा करने का मुझे सौभाग्य मिलेगा।

जब मै बारह साल की हुई तो मैट्रिक की पढाई के लिए माताजी के साथ लाहौर चली आई। स्कूल में भर्ती हुए बिना मैट्रिक पास करके मै कालेज में इटर (साइन्स) में दाखिल होगई। भाई ने कई बार चाहा कि मुझे अपने साथ साबरमती आश्रम लेजाए, लेकिन माताजी राजी न होती थी। उन्हे डर था कि लडका तो गया, वह लडकी को भी अपने रास्ते लगाकर उसकी समझ उलटी कर देगा और अपनी तरह बेघरबार की बना देगा। वे कहती थी, "लडका तो भिखारी हुआ, किन्तु लडकी भी भिखारिन बने, यह मुझसे सहन न होगा।"

किन्तु प्रारब्ध के आगे किसीकी नही चलती। १९२९ की गरमी की छुट्टियो में हम दिल्ली गये हुए थे। भाई वहा आए और फिर मुझे अपने साथ लेजाने की अपनी पुरानी बात चलाई। इस बार माताजी मान गई। उस समय से लेकर मै कभी-कभी गरमी की छुट्टियो मे भाई के पास आश्रम मे चली जाया करती थी।

लेडी हार्डिग कालेज से डाक्टरी का इम्तहान पास करके मै शिशु-पालन और प्रसूति विषयक विशेष शिक्षा के लिए कलकत्ते चली गई। इत्तिफाक से बापूजी उस समय बगाल के नजरबन्दियो को छुडाने के लिए कलकत्ते आए। श्री शरत बोस के यहा वुडबर्न स्ट्रीट पर उनको ठहराया गया था। वहा काग्रेस महासमिति (ए आई. सी सी) की बैठक

भी थी। वापू को रक्तचाप वढने की शिकायत तो रहती ही थी, ए आई सी सी की वैठक में उन्हे वहुत थकान लगी। उसी रोज वर्धा वापस जारहे थे। सामान वगैरह स्टेशन पर जाचुका था। वापूजी वैठक से वाहर आये। गद्दी पर वैठे फल के रस का गिलास हाथ में लिया, इतने में उन्हे चक्कर-सा आ गया। मैंने तुरन्त डा विधान राय वगैरह को वुलाया। मैंने मा से सुना था कि लहू का दवाव वढने पर भी मेरे पिताजी वाहर चले गये थे। रास्ते में उनकी नस फूट गई थी और वे चल वसे थे। सो मैं समझी कि वापूजी इतने थके हैं, जरूर लहू का दवाव वढा होगा। उन्हे आज सफर नही करना चाहिए। डा विधान राय ने देखा तो सचमुच लहू का दवाव वहुत वढा था। सो उस दिन बापूजी का जाना रुक गया। कुछ दिनो वाद जाने का समय आया तव भी उन्हे अकेले सफर करने की इजाजत देने की उनकी हिम्मत न हुई। मै वहा भाई और महादेव भाई से मिलने जाया करती थी। आखिर यह तय हुआ कि मैं उनके साथ देखभाल के लिये डाक्टर की हैसियत से जाऊ और डा विधान को सूचित करती रहू। चुनाचे मै एक महीने की छुट्टी लेकर उनके साथ सेवाग्राम गई। वहा से वापू को जुहू ले जाना पडा। मेरी छुट्टी खतम हो गई थी। और मागी। पीछे वापस जाने की वात छोडकर वही रह गई।

वापू राजकोट-सत्याग्रह के समय राजकोट जाते समय मुझे निजी डाक्टर की उपाधि देकर अपने साथ राजकोट लेगए। मैंने इसमें अपना परम सौभाग्य समझा। मगर साथ ही झेंप भी लगती थी—कॉलेज से अभी निकली एक लडकी और महात्मा गाधी की डाक्टर! अखवारवाले खवर पूछने आते तो मुझे उनसे वात करते नहीं वनता था, मगर डा विधान राय, डा गिल्डर और डा जीवराज मेहता अपनी उदारता और व्यवहार से मेरी झेंप दूर कर देते थे। वाद में विचार करते हुए वापूजी को लगा कि उनका डाक्टर तो केवल ईश्वर ही हो सकता है। डाक्टरी सेवा का वे उपयोग कर लेते थे, किन्तु अपना डाक्टर वनाकर ही किसीको अपने साथ रखना वे अपने जीवन-सिद्धात के विरुद्ध मानते थे। उन्होंने कहा, "मेरा डाक्टर तो केवल भगवान ही है, तू तो मेरी लडकी है। लडकी के पास डाक्टरी ज्ञान है तो वह उसके द्वारा अपने वाप की सेवा भी करेगी, किन्तु मै तेरे डाक्टरी ज्ञान का उपयोग गरीवो की सेवा के लिए ही करना चाहूगा।" पर यह तो आध्यात्मिक वात थी। जहातक वाह्य सवध था, उसमें कुछ भी परिवर्तन न हुआ और जनता और जगत के लिए मै उनकी निजी डाक्टर ही रही। इसका एक वडा विचित्र परिणाम आगे जाकर आया।

मै एम डी की परीक्षा के लिए फिर दिल्ली चली गई। अपने पुराने लेडी हार्डिग कालेज में काम ले लिया और साथ-साथ कुछ अनुसधान का कार्य किया और एम डी की परीक्षा पूरी की। मई मास (१९४२) में यह काम पूरा हुआ, लेकिन मेरी नौकरी की मुद्दत तो अगस्त के मध्य में पूरी होती थी। मेरा इरादा था कि मै ववई में होने वाली ए आई सी सी. की वैठक पूरी होने के वाद सेवाग्राम जाऊगी, किन्तु ४ या ६ अगस्त को अकस्मात एक मित्र के साथ, जो सरकारी नौकरी में थे, मेरी मुलाकात होगई। वे

पूछने लगे, "क्या तुम ए० आई० सी० सी० की बैठक में जाने वाली हो ?" मैंने कहा, "मैं तो बैठक पूरी होने के बाद सेवाग्राम जाऊंगी।" वे मुह चढाकर बोले, "तब वहा क्या होगा ?" मुझे खटका लगा, किंतु बहुत पूछने पर भी उन्होने और कुछ न बताया। बंबई की ए० आई० सी० सी० की बैठक में 'भारत छोडो' का प्रस्ताव आने वाला था। अफवाह गरम थी कि परिणाम में बापू और सब कांग्रेस के बडे-बडे नेता तुरत गिरफ्तार कर लिये जाएगे। मै सीधी अपने प्रिंसिपल के पास आई और बोली, "आप मुझे अभी गरमी की लम्बी छुट्टी देदेंगी तो मुझे अच्छा लगेगा। कुछ गडबड होने से पहले मै बंबई पहुच जाना चाहती हू।"

मेडिकल कालेज में गरमी की छुट्टी बारी-बारी से मिलती है, कुछको शुरू में और कुछको आखिर में। उन्होने सहानुभूति के साथ कहा, "हा, जरूर होआओ।" फिर फौरन ही उन्होने छुट्टी की अर्जी का फार्म मेरे पास भेज दिया और कहलवाया, "आज ही दरख्वास्त लिखकर भेजदो।"

यह हुई पाच अगस्त की बात। ७ अगस्त को मै दिल्ली से बम्बई को रवाना होगई।

: २ :

'भारत छोड़ो' प्रस्ताव

बिडला-हाउस, बम्बई
८ अगस्त १९४२

८ अगस्त को शाम के करीब ५।। बजे जब बॉम्बे सेंट्रल पर गाडी से उतरी तो स्टेशन पर मुझे लिवाने के लिए कोई आया नहीं था। मैंने सोचा, बिडला-हाउस टेलीफोन करके किसी को बुलालू। पब्लिक टेलीफोन का उपयोग करना मै जानती नही थी, इसलिए पूछताछ दफ्तर के बाबू से पूछकर वहा के टेलीफोन का इस्तेमाल करने के लिए भीतर गई। नम्बर देख रही थी कि इतने में पुलिस ओर मिलिट्री के कोई दस-बारह अफसर टेलीफोन करने आये। मुझे उन सब के चेहरे तने हुए लगे। मन में आशका हुई, कहीं गिरफ्तारिया शुरु तो नही होगई!

टेलीफोन पर मुझे कोई जवाब नही मिला। मै स्टेशन से बाहर आई। दो ही टैक्सी खडी थीं। टैक्सीवालो ने किरायेपर तग करना शुरु किया। आखिर एक शरीफ आदमी ने स्टेशन के बाहर जाकर मीटर के हिसाब से टैक्सी ला दी। मैंने उनसे पूछा, "बापू को पकडा तो नहीं है न?" उन्होने जवाब दिया, "नहीं, अभी तो शान्ति है।"

बिड़ला-हाउस पहुची तो भाई (प्यारेलालजी), बापू, महादेवभाई, सब कांग्रेस

बा बापू सरदार

(आठ अगस्त सन् '४२ को कांग्रेस महासमिति की बैठक से पहले)

बा

"तू न रह सकती हो तो चल।" पृष्ठ ९

महासमिति की बैठक में थे। अम्तुस्सलामबहन,* प्रभावतीबहन† और बा घर पर थीं। बाद में लीलावती बहन‡ भी आगई। यहा मेरा तार नहीं पहुचा था, इसलिए मुझे देखकर सबको आश्चर्य हुआ।

भाई को मैंने फोन पर बुलाया। बहुत मुश्किल से मिले। आये तो मेरी आवाज और नाम सुनकर कहने लगे, "मैं तो अभी-अभी महादेवभाई के साथ शर्त लगाकर आया हू कि तुम आ नहीं सकती।" मैंने बैठक में जाने की इच्छा प्रकट की। झटपट स्नान किया। खाना परोसा ही गया था कि मोटर लेने को आगई। दो केले हाथ में लेकर मोटर में जा बैठी। पडाल में पहुची तो 'भारत छोडो' प्रस्ताव पर मत लिये जा रहे थे। भाई मुझे मच पर लेगये। मैंने बापू को दूर से देखा। महादेवभाई मुझे देखकर भाई से कहने लगे, "उनसे कहो, तुम कैसे शर्त हारे!"

'वोटिंग' पूरा हुआ। बापू का भाषण शुरू हुआ। बापू पूरे २। घटे एक सास में बोले। अद्भुत भाषण था और बापू की वाणी में और दलील में अद्भुत शक्ति थी! भाषण पूरा हुआ। बापू उठे। मैंने प्रणाम किया। उन्हें बडा आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई। बोले, "तो तू ठीक मौके पर पहुची।" वल्लभभाई मिले। कहने लगे, "कल आती तो एक और काम का भाषण सुन सकती।" पिछले दिन बापू का जो भाषण हुआ था, उसीकी ओर सरदार का यह इशारा रहा होगा।

बापू, वल्लभभाई, महादेवभाई और मणिबहन के साथ मैं मोटर में बैठी। भाई दूसरी मोटर में आये। बापू समय पूछने लगे। उस समय रात के सवा दस बजे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ। उनको कल्पना तक नहीं थी कि वे सवा दो घटे बोले हैं। कहने लगे, "जब मैं बोलने को उठा था, मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कहने वाला हू। अब मेरी समझ में आरहा है कि कल रात मैं क्यों नहीं सो सका। मेरे मन पर बोझ था कि इतना कहना है, कैसे कह पाऊगा। मगर मैंने सोचा, अगर ईश्वर को मुझसे कुछ कहलाना होगा तो वह मेरी जबान खोल देगा, वरना मैं तो इस बात के लिए भी तैयार था कि सिर्फ यही कहकर बैठ जाऊ कि 'मुझे कुछ सूझता नही, मैं आपसे क्या कहू?' लेकिन ईश्वर ने मेरी जबान खोलदी। मैं मानता हू कि ईश्वर ही मुझसे बुलवा रहा था। क्षणभर के लिए तो मुझे यह भी डर लगा कि कहीं आज मेरा खातमा तो नहीं हो जाएगा! लेकिन फिर

---

* आश्रम की एक मुसलमान बहन, जो बरसो से गाधीजी के पास रही और आजकल अपहृत हिन्दू लडकियो को छुडाने के काम मे लगी है।

† बिहार के चम्पारन-सत्याग्रह में गाधीजी के पुराने साथी और बिहार के सुप्रसिद्ध नेता श्री ब्रजकिशोर बाबू की लडकी और समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण की पत्नी, जिन्हे बाल्यावस्था मे ही उनके पिता ने गाधीजी को सौंप दिया था और जो आश्रम मे उनके साथ रहती थीं।

‡ एक विधवा कन्या जिसने गाधीजी और आश्रम को अपना लिया था।

सोचा, ईश्वर को मुझसे काम करवाना है तो वह खुद शक्ति देगा और उसने दी भी । आज मैंने करीब-करीब सभी मतलब की बातें कह डाली है। अब कल की आम सभा में मेरे लिए कोई खास नई बात कहने को रह नहीं जाती। अब तो सिर्फ दोहराने की बात है।" बाद में उन्हें याद आया कि 'इडियन सिविल सर्विस' को जो दो शब्द आज कहने चाहिए थे, सो कहना भूल गये थे। बोले, "कोई हर्ज नही। कल सही। अभी तो यह सब सुनाने के बहुत मौके आने वाले है।"

बापू ने सोचा था कि आज सभा से लौटते वक्त श्री मथुरादासभाई* को देखते जायगे। लेकिन रात इतनी होगई थी कि इरादा छोडना पडा। बोले, "कल समय निकाल सका तो जाऊगा। मगर कल समय निकालना कठिन है।" इतना कहकर फिर सोचने लगे कि कल क्या-क्या करना है। सुबह कार्यकर्त्ताओ की सभा है, बाद में वर्किंग कमिटी होगी, फिर यह और वह, और शाम को पब्लिक मीटिंग वगैरा-वगैरा।

घर लौटे तो प्रार्थना के लिए आये हुए कुछ लोग अभीतक बैठे थे। प्रार्थना हुई। एक गुजराती बहन न भजन गाया—"मारू माथु नमाव प्रभु तारा चरणरजनी तले।" †

महादेवभाई ने इस बहन को गुरुदेव के कुछ गीतो का गुजराती अनुवाद करके दिया था। यह उन्हीमें से एक था। उन्होने खुद ही इन गीतो की राग बैठाई थी। बहुत मीठे स्वर में उस बहन ने यह भजन गाया था। महादेवभाई भी गारहे थे।

जब बापू सोये, साढे ग्यारह बज रहे थे। मै भाई के साथ टहलने लगी। भाई ने मुझे उस समय की स्थिति के बारे में कुछ बातें बताई। फिर हम दोनो महादेवभाई के कमरे में गये। वे अभी जागते थे।

मै बम्बई कैसे आई यह सुनकर सब मेरा मजाक उडाने लगे। बोले, "कैसी घबराकर भाग आई? क्या सरकार इतनी मूर्ख होगी कि महासमिति की बैठक हो जाने दी, लोगो में उत्साह भरने दिया और अब पकडले!"

डॉक्टर जीवराज मेहता का फोन आया। पूछ रहे थे कि कल हम किस वक्त बापू को देखने आए? मैंने बापू की डॉक्टरी परीक्षा की थी। आज के इतने परिश्रम के बाद भी बापू के खून का दबाव सिर्फ १८६ और ११६ था। हमेशा जितना चढा करता है, उसके मुकाबले आज का यह दबाव बहुत अच्छा कहा जा सकता है। फिर भी डॉक्टर मेहता और डॉक्टर गिल्डर को तो कल आना ही था। बापू से पूछकर उनको दोपहर दो बजे का वक्त दिया। बाद में जब डॉक्टर मेहता ने डॉक्टर गिल्डर को फोन किया तो वे हसकर बोले, "कल दो बजे किसे देखने जाओगे?" मगर किसीने नही माना कि सचमुच

---

*गाधीजी के भतीजे सहकर्मी, बाद मे बबई कारपोरेशन के मेयर हुए। गाधीजी के साथ उनके सस्मरणो के लिए देखिए "बापू की प्रसादी" (गुजराती सस्करण, नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद)

†हे प्रभो! अपने चरणो की रज के तले मेरा सिर झुका।

बापू पकडे जायगे।

एक बजे मैं अपने बिस्तर पर गई। भाई महादेवभाई के साथ कुछ देर बातें करते रहे। शहर में बहुत जोरो की अफवाह थी कि बापू को सुबह ही पकड लेंगे। फोन-पर-फोन आरहे थे। भाई ने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, कल हम क्या करेंगे?" महादेवभाई बोले, "फिकर क्यों करते हो, हाथ-में-हाथ मिलाकर हम एक साथ बाहर निकल पडेंगे और भगवान हमको कुछ-न-कुछ करने की शक्ति दे ही देगा।"

: ३ :

गिरफ्तारियां

बिडला-हाउस, बम्बई
९ अगस्त '४२

सुबह चार बजे जब सब प्रार्थना में आए तो महादेवभाई ने कहा, "रात दो बज तक फोन मुझे सताता रहा। दो बजे बाद मैं सोया। बस, यही चल रहा था कि गिरफ्तारी का सारा इतजाम होगया है। वे पकडने आरहे हैं, वगैरा।" इस पर बापू कहने लगे, "नही, कल के मेरे भाषण के बाद तो मुझे गिरफ्तार कर ही नही सकते। मैं उनको इतना मूर्ख नही मानता।" फिर बोले, "अगर इसके बावजूद भी मुझे पकडें तो इसका मतलब यह होगा कि उनके दिन पूरे हुए हैं।"

प्रार्थना के बाद मैं आकर बिस्तर पर लेट गई। तीन रात से रात को दो-एक घंटे की नीद मिली थी। बापू शौच को गये। मैंने भाई से कहा, "जब बापू घूमने को तैयार हो, मुझे जगा दीजिये।" मैंने अभी चादर ओढी ही थी कि महादेवभाई अन्दर आये और बोले, 'बापू, बापू, पकडने आगए!" बापू को गुसलखाने में ही खबर दी गई। उन्होने पुछवाया, "तैयारी के लिए कितना समय देंगे?" पुलिस कमिश्नर ने कहा, "आध घंटा।" बापू ने वारंट देखे। महादेवभाई, मीराबहन और बापू के नाम भारत-रक्षा कानून के मातहत नजरबन्दी के नोटिस थे। भाई और बा के लिए लिखा था कि वे भी चाहें तो बापू के साथ उन्हीं शर्तों पर चल सकते है। बापू ने बा से पूछा, "तू न रह सकती हो तो चल। लेकिन मैं खुद तो यह चाहता हू कि तू बाहर रह, सेवाग्राम जा, मेरा काम कर।" भाई से भी यही कहा। बोले, "मैं तो यह कहूगा कि यो ही मत आओ। काम करते-करते पकडलें तो बात अलग है।" फिर एक सूचना की, "हर एक सिपाही अपने कधे पर 'करेंगे या मरेंगे'[1] का बिल्ला लगाले ताकि आजादी का एक-एक सिपाही जो अहिसात्मक रूप से मरे, उस पर निशानी के तौरपर ये शब्द 'करेंगे या मरेंगे' मौजूद हो।"

---

[1] Do or die

बापू ने नाश्ता किया। बिड़लाजी वगैरा ने कुछ सवाल पूछे। बापू ने कहा, "इन सवालो का उत्तर कल शाम के भाषण में धनिको के लिए मैंने जो कहा है, उसमें आजाता है।" बाद में घनश्यामदासजी ने कहा, "बापू, उपवास की जल्दी न कीजियेगा।" बापू ने कहा, "नहीं, मैं जल्दी करना ही नहीं चाहता। जहातक हो सकेगा, टालूगा।"

फिर प्रार्थना हुई। महादेवभाई ने 'हरि ने भजता हजी कोई नी लाज जती नथी जोई रे'* भजन गाया। फिर रामधुन हुई। अम्तुस्सलामबहन ने कुरान की कुछ आयतें पढ़ीं। बापू ने दो-चार किताबें गीताजी, भजनावली, अरबी प्राइमर वगैरा इकट्ठी कीं और धनुष-तकली, पूनी का बडल आदि अपने साथ लिये। अम्तुस्सलामबहन ने कुरानशरीफ दिया। महादेवभाई ने अपना सामान इकट्ठा किया। मीराबहन सबसे आखिर में तैयार हुई। सबने बापू को प्रणाम किया। मैंने पूछा, "मुझे पकडें तो क्या मै आपके पास आने की माग कर सकती हू ?" बापू बोले, "हा, जरूर। तुम कह सकती हो, 'मै उनकी मेडिकल एडवाइजर (डॉक्टरी सलाहकार) रही हू। मुझे उनके पास भेजिये।'" भाई को उदास देखकर महादेवभाई बोले, "उदास क्यो होते हो ? फर्क इतना ही है न कि हम सवेरे वहा पहुंचेंगे और तुम शाम को। और हम तो बिना कुछ किये ही जारहे हैं, तुम कुछ करके आओगे।"

बापू की सूचना थी कि शाम की आम-सभा जरूर होनी चाहिये। इसलिए अन्दाज यह था कि भाई सभा में बोलेंगे और वहीं गिफ्तार कर लिये जायगे।

बापू अपनी लकडी लेकर चल पडे। श्रीमती रामेश्वरदास बिडला ने उन्हें कुकुम का तिलक लगाया। दो मोटरें तैयार थीं। अगली में बापू और मीराबहन बैठीं, पिछली में महादेवभाई। ऊपर से सब हसते थे, मगर सबके मन भरे थे। सब जानते थे कि इस बार की लडाई भीषण होगी। कोई नही जानता था कि फिर कौन, किससे, कब और कहां मिल सकेगा या मिलना होगा ही नहीं।

रात सभा से लौटने के बाद बाबला† और कनु महादेवभाई के साथ मजाक कर रहे थे। बाबला ने कहा "काका, अब हम आजाद हैं। बापूजी ने कह दिया है, अब सब आजाद हैं। सो अब हम आपकी भी नहीं मानेंगे।" महादेवभाई हसकर बोले, "लेकिन तुझ मेरी माननी ही कब पडती है! तुझे तो अपनी मा की ही बात माननी पडती है।" मानो भगवान ही उनसे यह बुलवा रहा था। कौन जानता था कि एक हफ्ते के अदर बाबला को केवल अपनी मा की ही मानने की आवश्यकता रह जायेगी!

जब पुलिस कमिश्नर बापू को पकडने आया, पौने छ बजे थे। बापू ने तैयारी में आध-घटे से दो-तीन मिनट ज्यादा लिये थे, उसके लिए माफी मागते हुए,

---

*हरि का भजन करते हुए किसी की लाज गई हो ऐसा नही देखा गया।

†महादेवभाई का लडका नारायण देसाई।

वे बोले, "I am sorry, I have kept you waiting a couple of minutes longer"*

चलते समय बिड़लाजी ने कहा, "ये लोग बकरी का आध सेर दूध मागने है।" बापू ने हसकर जवाब दिया, "चार आने रखवालो और दे दो।"

जब पुलिस आई थी, सन्नाटा था। मगर कौन जाने कहा से बात-की-बात में वहा एक हुजूम इकट्ठा होगया। जब मोटर चली तो बिड़ला-हाउस के रास्ते पर लोगो की खासी भीड़ मौजूद थी। टेलीफोन कटे पडे थे। रात को दो बजे से ही काट दिये गए थे। इसीलिए महादेवभाई दो बजे के बाद सोसके थे। फिर भी बापू की गिरफ्तारी की खबर शहर में बिजली की तरह फैल गई। बिड़ला-हाउस पर दल-के-दल लोग इकट्ठा होने लगे। कार्यकर्त्ता, मित्रगण, अखबारो के सवाददाता वगैरा सब चले आरहे थे।

हम लोग किसी भी वक्त पकडे जा सकते है, इस खयाल से हमने अपना सामान बाधना शुरू किया। मैंने थोडा-सा जरूरी सामान अपने बिस्तरे में और अटैची केस में रख लिया। मेडिकल बैग (दवाओ की सदूकची) भी साथ में रखली। मगर भाई को सामान बाधने की फुरसत कहा! एक के बाद एक मिलने वाले आरहे थे। मुश्किल से शाम तक वह अपना सामान बाध सके।

निश्चय हुआ कि बा भी आम सभा में भाषण करें। बा ने एक सदेश† बहनो के नाम और एक भाइयो और बहनो के नाम मुझे लिखवाया। भाई ने भी अपना एक छोटा-सा भाषण लिख डाला। उसमें आज सवेरे की घटना का वर्णन था और जनता से यह प्रार्थना की गई थी कि अब बापू को जेल से वापस लाना उसके हाथ में है। इतना सब याद रखें कि बापू दो चीजें अपने जीते-जी बरदाश्त नहीं कर सकेंगे—एक यह कि हिन्दुस्तान के लोग नामर्द बनकर बैठ जाय और दूसरे यह कि वे पागल बनकर अग्रेज मर्दो, औरतो और बच्चो को काटना शुरू करदें।

कोई दस बजे टेलीफोन आया। वर्धा का 'ट्रक कॉल' था। भाई फोन पर बात करने लगे। किशोरलालभाई के साथ बात होरही थी। भाई ने शुरू किया, "आज सवेरे ।" बस, सेंसर ने लाइन काटदी। बाद में दोपहर को फिर फोन मिला। वर्धा में पुलिस भाई की राह देख रही थी। विनोबा गिरफ्तार किये जा चुके थे। दूसरे भी, जिन्होने पिछले सत्याग्रह में कुछ भी भाग लिया था, पकड लिये गए थे। भाई के नाम वारट तैयार था।

---

*"अफसोस है कि मैंने आपको दो-एक मिनट ज्यादा रोका।"

†सदेश इस प्रकार था—"महात्माजी तो आपसे बहुत-कुछ कह गये है। कल उन्होने ढाई घटे तक महासमिति की बैठक में अपने दिल की बातें कही। उससे ज्यादा और क्या कहा जाय? अब तो उनकी सूचनाओ पर अमल ही करना है। बहनो को अपना तेज दिखाना है। सब कोमो की बहने मिलकर इस लडाई को सफल बनावे। सत्य और अहिंसा का मार्ग न छोडे।"

हमारा इरादा था कि आज यहा न पकडे गये तो कल शाम को वर्धा जायेंगे। माताजी वहा हमारी राह देख रही थीं। इस खबर ने जरा सोच में डाला। मगर सोच करने के लिए भी ज्यादा वक्त नही मिला। शाम को सरकार ने हमारे लिए फैसला कर दिया।

चलते समय महादेवभाई कल शाम की सभा के बापू वाले भाषणो के नोट्स भाई को देगये थे। कहा था, "इन्हें तुम ठीक करके आज ही अखबारो को दे देना।" भाई ने सोचा था कि स्नान के बाद कमरा बन्द करके बैठ जायगे और लिख डालेंगे। मगर वक्त कहासे मिलता! आखिर वह काम भाई ने किसी और को सौंपा। इतने में सादिक अली* आए। भाई ने उन्हें कुछ सूचनाए दी और एक सर्व-सामान्य सूचना-पत्र टाइप करने के लिए कहा। वे उसमें लग गये। मृदुलाबहन† आई और कुछ छपवाने को लेगईं। सुबह कार्यकर्त्ताओ की सभा के लिए लोग आए थे, मगर कुछ लोगो को लगा कि बिडलाजी पर इस सभा का बोझ अब नही डालना चाहिए। सभा दूसरी जगह रखी गई। आखिर यह तय हुआ कि अभी किसी और जगह भी कार्यकर्त्ताओ को इकट्ठा करना ठीक न होगा ताकि कही सब एक साथ पकडे न जाय। अच्छा यह होगा कि वे सब अपने-अपने मुकाम पर चले जाय और वहा काम करें। उनके पास लिखित सूचना पहुचा दी जायगी। सो भाई कार्यकर्त्ताओ की टुकडियो में जाकर उनसे पाच-पाच, सात-सात मिनट बातें करके उन्हें यह सब समझा बिदा कर आए।

शहर से आने वाले लोग बता रहे थे कि सारे शहर में आग-सी फैली हुई है। समूची वर्किंग कमिटी को, बम्बई प्रान्तीय काग्रेस कमिटी के खास-खास कार्यकर्त्ताओ को और स्वयसेवक दल के मुखियाओ को सुबह ही पकड लिया गया था। सरकार ने हडताल के खिलाफ दो से तीन साल की कैद की सजा का ऐलान किया था। फिर भी शहर में करीब-करीब मुकम्मल हडताल थी। दूकानें बन्द, ट्राम बन्द, बस-सर्विस बन्द! सुबह आठ बजे ग्वालिया टैंक पर झडावदन था। वहा तीन बार अश्रुगैस छोडी गई, लाठी-चार्ज किया गया, तब कही मुश्किल से लोगो को तितर-बितर किया जा सका। लेकिन थोडी देर बाद वे फिर जमा होगये। मृदुलाबहन आई। उनके हाथ पर लाठी के तीन निशान थे। और भी कई स्वयसेवक व कार्यकर्त्ता लाठी खाकर आए। टिंक्चर आयोडिन की मेरी छोटी-सी शीशी खाली होगई।

यह तय हुआ कि शाम को बा के साथ मैं, भाई और खुरशेदबहन‡ सभा में जाय। बा के पकडे जाने पर भी मैं उनके नजदीक ही रहू, ताकि उनकी सभाल रख सकू। इसलिए मुझे उनके साथ रहने को कहा गया। बा की सेहत इतनी नाजुक थी कि एक डॉक्टर का

---

* काग्रेस महासमिति के आफिस सेक्रेटरी।

† अहमदाबाद के मिलमालिक श्री अबालाल साराभाई की पुत्री।

‡ स्व० दादाभाई नवरोजी की पौत्री।

उनके साथ रहना निहायत जरूरी समझा गया और चूकि मैं वम्बई में किसी को जानती नहीं थी, इसलिए यह तय पाया गया कि खुरशेदवहन भी हमारे साथ रहें।

सुवह चलते समय वापू फिर कह गये थे, "तू मथुरादास को जरूर देख आना।" सो मैं खुरशेदवहन को साथ लेकर उनके घर गई। मथुरादासभाई वहुत खुश हुए। फिर आवेश में आकर वोले, "ये अग्रेज तो राक्षस हैं, वहन। ये राक्षस वापू को जीता वाहर नहीं आने देंगे।" मैंने समझाया, "आप शान्त होजाइये, नही तो आवेश से आपकी तवीयत ज्यादा विगडी तो मुझे आपके पास आने का पश्चात्ताप होगा।" उनकी पत्नी ने भी कहा, "आप वहुत ज्यादा वातें कर रहे हैं।" मगर उनको तो मथुरादासभाई ने डाटकर चुप कर दिया। वोले, "तू चुप रह। तुझे क्या पता! मैं कब किसीसे मिलता हू? मगर मैंने तो डॉक्टरो से भी कह दिया था कि तुम्हारी तमाम दवाओ से ज्यादा फायदा तो मुझको वापू से मिलकर होगा।" फिर मुझसे वोले, "अपनी स्टेथॉस्कोप लाई हो या नहीं?" मैंने कहा, "लाई तो हू।" वोले, "तो फिर निकालती क्यो नहीं हो?" मैंने उनकी तसल्ली के लिए उनकी छाती की परीक्षा की। सव एक्सरे देखे। इतनी वडी 'कैविटी' (दरार) है! 'हैमोप्टाइसिस' (थूक में खून निकलना) सख्त होता है। इसमें कितनी आशा रखी जा सकती है? फिर भी मैंने उन्हें आश्वासन दिया और चलने को तैयार हुई। मैंने कहा, "अव वापू के साथ आपसे मिलने आऊगी।" यह सुनकर वे फिर आवेश में आगये। मेरा हाथ पकडकर कहने लगे, "देखना, वहन, यह एक गम्भीर और पवित्र वायदा है।* यह देखो, यह (पत्नी) साक्षी है। खुरशेदवहन साक्षी है। ये सव होगे। यह तो (नर्स) नहीं रहेंगी। फिर भी इन्हें इनके घर से वुला लेंगे।"

मैं उनके पास पाच-दस मिनट के लिए गई थी, पौन घटे के वाद मुश्किल से लौट सकी। वाहर आने पर उनकी पत्नी ने पूछा, "अच्छे तो हो जायगे न?" मैंने कहा, "आप आशा रखिये, घवराइये नहीं।" मथुरादासभाई ने अपने सामने अग्रेज चित्रकार वाट्स का 'होप' (आशा) नाम का चित्र लटका रखा था। कह रहे थे, "जव मैं सचमुच निराश होजाऊगा तो इस चित्र को निकालकर फेंक दूगा।" मगर मुझे ऐसा मालूम पडा, मानो उनकी आशा भी आज तो आशा के इस चित्र की तरह एक कमजोर ततु के आधार पर लटकी हुई है।

वापस विडला-हाउस आई। देखा तो पुलिस मौजूद थी। सुना कि शहर में पोस्टर्स लग गये थे "वापू जिस सभा में वोलने वाले थे, उसमें कस्तूरवा भाषण करेंगी।" "यह शान्त वलवा १८५७ के वलवे से भी ज्यादा सफल हो!" वगैरा-वगैरा। सो पुलिस पूछने आई थी—"क्या वा सचमुच ही सभा में जायगी? अगर हा, तो हम उन्हें गिरफ्तार करेंगे।" जव उन्हें मालूम हुआ कि वा अकेली नहीं होगी, मैं भी उनके साथ रहूगी और उनके वाद सभा में भाषण करूगी तो उनका एक आदमी मेरे नाम का वारट लाने गया

---

*उनके शब्द थे—"Solemn promise"

और एक हमारे पास रहा। सभा का समय होगया था। जब बा और मैं रवाना होने लगे, तो पुलिस अफसर नाटक-सा करने लगा। बोला, "माजी, आपको घर में बैठना चाहिए। बहन, आपको सभा में नही जाना चाहिए," वगैरा। ब्रजमोहन बिडला से न रहा गया। बोले, "क्या यह शिष्टाचार आवश्यक है ?" इस पर वह हसने लगा। बोला, "आप जाती ही है तो मै आपको गिरफ्तार करता हू।" बिडलाजी की जो मोटर हमें सभा की जगह ले-जाने वाली थी, उसीमें जेल के लिए हमारा सामान रख दिया गया। श्रीमती बिडला ने फिर आरती सजोई और हम दोनो के टीका निकाला। मुझे अपने टीके पर हसी आई। मेरे लिए इसकी क्या जरूरत ? फिर सोचा, कल कहा थी, आज कहा हू! कल किसे पता था कि बम्बई जाते ही मै कहा पहुच जाऊगी!

मोटर चलने ही वाली थी कि पुलिस अफसर ने हममें से किसीकी बात को इधर-उधर से सुनकर अदाज लगा लिया कि हमारे बाद भाई (प्यारेलालजी) सभा में जारहे है। फिर क्या था! तुरन्त बोला, "तो आप भी आजाइये।" भाई का सामान भी मोटर में रखा गया। चम्पाबहन ने उनके टीका निकाला और हम तीनो चले। घनश्यामदासजी भाई से कहने लगे, "अच्छा है, अब हमें तुम्हारे हाथ-पैर टूटने की फिकर नहीं रहेगी।" लेकिन हमारे मन में निराशा थी। तीनो में से एक भी सभा में पहुच पाता तो अच्छा होता। डाह्याभाई वगैरा हमें दिन भर के समाचार थोडे में सुनाने लगे। सबका खयाल था कि हमें सीधे बापू के पास ही लेजायगे।

बावला और कनु ने प्रणाम किया। बावला भाई से सुबह ही कह रहा था, "प्यारेलाल काका, काका महादेवभाई अपना दुशाला भूल गये है। आप अपने साथ लेजाइये। उन्हें दे दीजियेगा।"

भाई से दोनो लडको ने पूछा कि वे क्या करें ? भाई ने उनको सलाह दी कि वे जरूरी कागजात लेकर वर्धा चले जाय। कनु ने चलने से पहले मुझे और भाई को 'करेंगे या मरेंगे' का मत्र लिखकर दिया। कहने लगा, "बस, मै तो सैकडो-हजारो ऐसे कागज बाटूगा। हनुमान की तरह लंका को सर करके पकडा जाऊगा, यो ही नहीं।" बावला भी उत्साह से भरा था। इस उत्साह से भरे वातावरण को लेकर वे दोनो हमारी गिरफ्तारी के बाद दूसरे दिन सेवाग्राम गये।

अम्तुस्सलाम बापू के कल वाले भाषण के पीछे पडी थी। बापू ने उसमें मुसलमानो के लिए जो बातें कही थी उनकी नकल करने में लगी थी। वह उसे पत्रिका के रूप में छपवा कर बटवाना चाहती थी। जिन्ना साहब के पास एक डेपुटेशन लेजाने की तैयारी करना चाहती थीं। उन्होने मुझे अपना पता लिखकर दिया। बोली, "तुम मुझे रोज एक पत्र बापू के समाचार का लिखा करना।" मैंने कहा, "मुमकिन होगा तो लिखूगी।"

लीलावतीबहन हैरान-परेशान इधर-उधर घूम रही थीं। कहने लगीं, "मै क्या करू ? बापू ने मुझसे कहा है कि तू अपनी पढाई न छोडना। लेकिन मै पढू कैसे ?"

भाई ने कहा, "तो मत पढना। अपने साथ के विद्यार्थियो को लेकर निकल पडना।"

कनुभाई को मजाक सूझा। बोले, "अच्छा, तो यह लो।" और एक कागज के टुकडे पर लिखकर देदिया, "पढ़ेंगे या मरेंगे!"

मोटर चली तो बा की आखो में पानी था। सुबह भी जब बापू पकडे गये, ऐसा ही हुआ था। उस समय भी मैंने बा को समझाकर आश्वस्त किया था। अब भी समझाया। बा को मैंने छुआ तो उनका शरीर गरम लगा। इस बीच मोटर आर्थर रोड जेल पर आ पहुची। हम उतरकर नीचे खडे हुए। सडक पर कुछ मजदूर जारहे थे। उन्होंने यों ही झाककर देखा और अपनी राह चले गये। मैंने सोचा--क्या ये बा को नहीं पहचानते? क्या ये नही जानते कि आज क्या होरहा है?

: ४ :

आर्थर रोड जेल

जेल का फाटक खुला। हम तीनो अन्दर गये। हमें ऑफिस में बैठाया गया। कुरसिया गन्दी थी। कडी, बेआराम, गदी गद्दिया उनमें लगी थी। सारा-का-सारा ऑफिस गन्दा और बेकरीने का नजर आरहा था। जेलर वगैरा सब एक मजा-सा लेरहे लगते थे, मानो एक बढिया नाटक देख रहे हो।

थोडी देर में हमारा कमरा तैयार होगया। ममा नाम की एक पैंतीस-चालीस बरस की मराठी महिला हमें लिवाने आपहुची। हम दोनो उसके साथ चली। हमारे पीछे का फाटक बन्द होगया। भाई बाहर ही रह गये। उस क्षण तक मुझे यह खयाल ही नहीं आया था कि भाई हमसे अलग होजायगे। मैंने पीछे मुडकर उन्हें देखा आर जगले की राह उनसे विदा ली। बाहर के कोलाहल की तुलना में यहा एक अजीब सन्नाटा-सा था। भीतर से एक ओर दरवाजा खुला और हम औरतो वाले विभाग में पहुचीं। पीछे से फाटक बन्द होगया। यह एक ठोस दरवाजा था, जिसमें से कुछ भी दिखाई नही दे सकता था।

आर्थर रोड जेल का वह स्त्री-विभाग मुख्य जेल में अलग किया हुआ एक छोटा-सा इहाता था। चारो ओर आठ-नौ फीट ऊची दीवारें थी। एक छोटा-सा बागीचा था। रहने की जगह एक कतार में चार कमरे बने थे। दरवाजो में लोहे की मोटी सलाखें लगी थी। आखिरी कमरा हमारा था। पहले दो कमरो में सजा याफ्ता औरतें थी। कोई तीस एक रही होगी। दो-तीन की गोद में तो बच्चे भी थे। तीसरा कमरा दिन में उनके काम करने की जगह बन जाता था और रात को खाली रहता था। शाम को साढे पाच बजे सबको अन्दर बन्द करके बाहर लोहे की सलाखो के दरवाजो में ताले डाल दिये जाते थे। सजायाफ्ता औरतो में एक सात बरस की सजा वाली थी। वह हमारी सेवा का प्रबन्ध करती थी। उसका नाम साकू था। उस वक्त तक मुझे पता नही था कि वार्डर कोन होते हैं। मगर बाद में पुरुष कैदियो के वार्डरो को देखा तो समझी कि वह सजा पाई हुई स्त्री

कैदिनो की वार्डर थी, लेकिन उसके कपडे दूसरी कैदिनो के जैसे ही थे, हालाकि मर्दो में वार्डर पीली पगडी पहनते है।

हमारे कमरे में एक घटी टगी थी, ताकि रात को जरूरत पडने पर हम उसे वजाकर किसीको वुला सकें। घटी साकू के कमरे में वजती थी। साकू हमारी अपेक्षा वाहर की दीवार से ज्यादा नजदीक थी, सो वह चिल्लाकर सतरी को वुलाती और सतरी ममा को, तव कहीं मदद आ सकती थी।

चारो कमरो के सामने एक तग-सा वरामदा था, मगर ए आर पी * के कारण उसमें वडी-वडी दीवारें चिन रखी थीं। इसी तरह कमरे की खिडकियो को भी, जिनमें लोहे की मोटी सलाखें थीं, तीन-चौथाई ईंटो से चिन रखा था। कमरे में न हवा आ सकती थी, न धूप। फर्श में सीलन थी, पीछे की तरफ फ्लश का पाखाना और एक छोटा-सा गुसलखाना था। दोनो खासे गन्दे थे। कुछ गदी नालिया चूती होगी, इससे वहा वदवू भी थी। पहले दिन तो हम दोनो—मैं और वा—वहुत थकी थीं, सोगई। मगर दूसरे रोज सुवह-ही-सुवह पता चला कि उस कमरे में वैठना सिर-दर्द मोल लेना है।

हमारे आते ही हमारे लिए लकडी के दो तख्त आगये थे। उन पर नारियल के रेशे से भरी हुई गद्दिया लगी थीं। गद्दियो पर जेल की चादरें। मुझे वे गन्दी लगीं। साफ-से-साफ दूसरी चादरें लाये, मगर मुझको वे भी गन्दी लगीं। आगाखा महल में आने के वाद तो वापू ने हमसे वैसी ही चादरो का इस्तेमाल शुरू करवाया और फिर तो वे कुछ साफ लगने लगी। मगर उस दिन तो उन चादरो पर मैंने अपना और वा का घर का विस्तर लगवाया।

वा को ९९ ६ वुखार था। उन्हें विस्तर पर लिटाया। ममा खाने को पूछने आई। वा को कुछ नहीं चाहिए था। मगर मुझको काफी भूख थी। दोपहर में तो दौड-धूप की वजह से नही-जैसा ही खाया था, उससे अगले दिन भी ट्रेन में खाने का ठिकाना न था। मगर जेल में हमें खाना नियम के मुताविक दूसरे दिन ही मिल सकता था। मैंने सोचा, इस वक्त इन्हें रोटी वनाने में कष्ट होगा। चलो, थोडा दूध पीकर ही सोजायगे। मुझे क्या पता कि जेल में दूध कितना दुर्लभ होता है! सो मैंने एक प्याला दूध मागा। कुछ देर वाद एक छोटी-सी कटोरी में पानी-सा पतला कोई तीन औंस ठडा दूध आगया। वेचारे जेलर ने अपने घर से भेजा था। मैं उसीको पीकर लेट गई। वा सोगई थीं। शाम के साढे छ वजे होंगे, अन्धेरा होने लगा था। मैंने सोचा, वा उठें तो प्रार्थना करें। किताव लेकर पढने लगी और मैं भी सोगई। तीन रात से पूरी नींद नहीं मिली थी। रास्ते की थकान, तिस पर आज सुवह से वातावरण खूव उत्तेजित रहा था, उसकी भी थकान थी लेटते ही नींद आगई। रात में वा तीन-चार वार पाखाने गईं। दूसरी या तीसरी दफा जव वे पाखाने से आरही थी, उनकी आहट से मेरी नींद खुली। वे लडखडाकर चल रही थीं।

---

*हवाई हमले से हिफाजत

में झट से उठी। उन्हें सुलाकर पढने की कोशिश की मगर ए आर पी की वजह से बत्ती पर काला कागज चढा था, जिससे खाट पर लेटे-लेटे पढा ही नही जाता था और उठकर बैठने की इच्छा नहीं होती थी। सो मै पडी रही। पहली रात ममा आई होगी। हमें सोता देखकर हमारे कमरे की बत्ती बुझादी गई थी और ममा हमें ताले में बन्द भी कर गई थी।

: ५ :

अनोखे अनुभव

आर्थर रोड जेल
१० अगस्त '४२

सवेरे सात-साढे सात बजे ममा ने दरवाजा खोला। उससे पहले मैंने और बा ने हाथ-मुह धोकर प्रार्थना करली थी। बा को आज भी बुखार था। कमजोरी भी बहुत थी। पतले दस्त होरहे थे।

हम लोगो ने कल ही बापू की गिरफ्तारी के बाद उपवास करने का विचार किया था। मगर फिर तय हुआ कि उपवास अगले दिन किया जाय, क्योंकि कल-ही-कल सबको खबर नहीं दी जा सकती थी। सो आज मैंने उपवास किया। बा को उनकी 'वेजिटेबल टी' (खास जडी-बूटियो की चाय) का काढा बनाकर दिया। उनके स्नान के लिए गरम पानी मागा तो उसे आने में दो घटे लगे। स्नान वगैरा से निबटकर बैठी थी कि जेलर आया। बोला, "अभी मैं आपको अखबार भेजूगा। जरा खुद देख लू, ताकि कसम खाकर कह सकू कि सेंसर करके दिये थे।" थोडी देर बाद जेलर और सुपरिटेंडेंट दोनो आए। बा की कुछ चीजें बिडला-हाउस में रह गई थीं। मैंने सुपरिटेंडेंट से कहा, "या तो आप हमें फोन करनेदें, या खुद फोन पर कहदें कि यह सामान हमें भेज दें।" वह बोला, "यह नही हो सकता। आप लोग बाहर की दुनिया से कोई सम्पर्क नहीं रख सकतीं।" मैंने पूछा, "तो अखबार कैसे भेजेंगे ?" बोला, "नही भेजेंगे। और जो कुछ आपको चाहिए, हम आपको बाजार से खरीद देंगे।" मैंने कहा, "मेरे पास रुपये नही हैं। आप या तो रुपये मगानेदें या खुद चीजें मगवाकर दे दें।" बोला, "ये दोनो बातें नहीं हो सकती।" इस पर मैंने तनिक चिढकर कहा, "तो मैं नहीं कह सकती कि हम कबतक आपके हुक्मो और कायदो का पालन कर सकेंगी।" बेचारा चुपचाप चला गया। कर ही क्या सकता था ? और मेरा भी तो जेल का यह पहला ही अनुभव था।

थोडी देर बाद एक डॉक्टर आया और हमारी ऊचाई, वजन और शनाख्त के तीन निशान नोट करके चला गया। कुछ देर बाद बडा डॉक्टर आया। मैंने बा को दिखाया। कहने लगा, "अभी दवा भेजता हू।" मैंने कहा, "थकान है, मानसिक बोझ है, दवा की इतनी जरूरत नहीं, जितनी खुराक सभालने की है। आप मुझे बा के लिए सेब मगादें। मैं उन्हें

सेब के रस के सिवा कुछ नही देना चाहती।" कहने लगा, "जेल में बहुत कम ऐसी चीजें मिलती है। आपको जो चाहिए बाजार से मगालें।" मैने कहा, "मगर मेरे पास पैसा नही। आप खुद खरीददें। कभी जिदा बाहर निकले तो आपका रुपया लौटा दूगी।" वह बोला, "मै क्या कर सकता हू। जेल में बीमारो को ही खास चीजें दी जा सकती है। बाकी की चीजें उन्हें खुद खरीदनी पडती है।" मै फिर चिढ गई। बोली, "जिन अस्पतालो में मैने काम किया है वहा बीमारो के लिए सब जरूरी चीजें मगा देते थे। कुछ चीजें ऐसी है जिनका खर्च आमतौर पर बीमारो को देना पडता है। लेकिन अगर वे नहीं दे सकते तो मै नीचे 'मुफ्त' लिखकर अपनी सही कर देती हू, तो बीमार को चीज मुफ्त में मिल जाती है। और मैने तो कहा है कि मुझे रुपये मगवा लेनेदें या अभी अपनी जेब से जरूरी चीजें मगवादें। किसी दिन आपका सब हिसाब चुका दूगी।" वह जरा नरम पडा। पूछने लगा, "क्या आप डॉक्टर है ? आप कहा काम करती थी ?" वगैरा। फिर यह कहकर कि "सेब आजायगे" वह चला गया। मगर सेब शामतक नहीं आसके। बा को दिन में चाय ही दी। बुखार और दस्त की शिकायत बनी रही। कमजोरी बढती गई।

कमरे की हवा इतनी बन्द थी कि वहा बैठने से सिर में दर्द होने लगता था। मैट्रन कहने लगी, "मेरे बरामदे में आकर बैठिये।" दरी वगैरा बिछाकर मै और बा वहा जा बैठीं। दोनो ने काता। मैट्रन से कुछ बातें की। वह गर्भवती थी। कोई सात महीने का गर्भ था। मैने हसी में कहा, "आपकी डिलीवरी (प्रसूति) में मै मदद कर दूगी।" पहले वह स्कूल-टीचर थी, मगर जेल की नौकरी में उन्हें घर की सभाल के लिए ज्यादा समय मिलता था, इसलिए दो-तीन साल से यही नौकरी कर रही थी। पति मिल में नौकर थे। जेल की नौकरी में वेतन तो करीब ७५) मासिक या ऐसा ही कुछ था, लेकिन रहने को घर मिला हुआ था और काम हल्का था। इसलिए यह नौकरी उन्हें पसन्द थी।

दोपहर बारह बजे मैट्रन अपने घर चली गईं। बा भीतर जाकर लेट गई। मै वही बरामदे में बैठकर पढती रही। कोई चार बजे फिर दरवाजा खुला। मैट्रन थी। सिपाही किसी का बक्स और बिस्तरा लारहा था। मै उत्सुक होकर उठी। एक और बहन आई थी, नाम था श्रीमती सीतलदास। मैने साथ जाकर उनका सामान रखवाया। फिर हम दोनो बा के पास जा बैठी। उनकी उमर कोई तीस-पैंतीस साल की रही होगी। चार बच्चो की मा थी। सबसे छोटा और एकमात्र लडका दो बरस का था। वह बीमार-सा रहता था। किसी जमाने में यह बहन लेडी हार्डिग में पढने गई थीं। एफ एस-सी करके चली आई। डॉक्टरी में नही गई। जेल में पहली ही बार आई थीं। उनके पति को उनका यह काम पसन्द नही था। खुद उनका इरादा भी जेल आने का नही था, क्योकि बच्चे की तबीयत अच्छी नहीं थी। मगर आज सुबह उन्हें लगा कि जब सबको पकड लिया है तो किसीको तो बाहर निकलना ही चाहिए। पति से बिना पूछे सुबह झडावन्दन में शामिल हुई। वहासे लौटकर विद्यार्थियो से मिलने निकली, तभी पुलिस ने पकड लिया। बेचारी घर सामान लेने गई तो जल्दी में सिर्फ एक प्याली दूध पीकर चली आई। सुबह से और कुछ खाया नही

था। मैट्रन ने मुझे बताया कि दोपहर बाद जो कैदी आते है, उनको दूसरे दिन खाना मिलता है। इसीलिए कल रात जो थोडा-सा दूध मेरे लिए आया था, वह भी जेलर के घर से आया था। सो उन्हें खाना नहीं मिल सकेगा। शाम को चार बजे मेरा और बा का खाना आया। मैं और श्रीमती सीतलदास दोनो खाने बैठीं। बा ने कुछ नहीं लिया। मेरे लिए थोडा-सा उबला साग आया था। बा के लिए जेल की मोटी रोटी, दाल, चावल, दूध और डबल रोटी आई। मक्खन भी था। हम दोनो ने बहुत कोशिश की, मगर वह खाना गले से उतारना कठिन था। एक-दो निवाले से ज्यादा निगल नहीं सकी। थोडा-सा दूध लेलिया। उपवास के बाद ऐसी खूराक से मुझे तो मतली होने लगी। हम दोनो बाहर घूमने निकलीं। श्रीमती सीतलदास ने कहा, "मैंने जेलर से अपने बच्चो का जिक्र किया है। छोटे-छोटे बच्चे है और सबसे छोटा बीमार है। मैंने कहा है कि मेहरबानी करके मुझे फोन पर अपनी आया को बीमार बच्चे के बारे में हिदायतें देने का मौका दें।" मैंने सोचा, बेचारी कितनी भोली है! समझतीं नही कि यह जेलखाना है। उनके मन को तैयार करने के लिए मैंने आज सुबह का किस्सा बताया कि कैसे जेलर ने हमसे बाहर की दुनिया से कोई सम्पर्क न रखने देने की बात कही थी। मगर उस भोली बहन ने इतने पर भी यह माना कि शायद उसे तो फोन करने ही देंगे।

जेलर का घर सामने था। हमें घूमते देखकर जेलर की स्त्री और लडकिया दूर खिडकी में से झाकने लगीं। फिर उन्होंने बा के समाचार पूछे। जेलर को तो अपने पेट के लिए सब कुछ करना था, लेकिन घर के स्त्री-बच्चो के दिल में बापू और बा के प्रति भक्तिभाव को वह कैसे मिटा सकता था?

बारिश होने लगी। इससे हमें भीतर आना पडा। कमरे में सोना कठिन था। हमने निश्चय किया, बरामदे में सोयेंगी। यहींसे जेल के नियमो को तोडना शुरू करेंगी।* श्रीमती सीतलदास को 'बी' क्लास में रखा गया था, हमें 'ए' में। फर्क यह था कि उन्हें सोने को लकडी का वह तख्त नहीं दिया गया था, जो हमें मिला था। मैंने मैट्रन के आने से पहले ही अपना और उनका बिस्तर बरामदे में जमीन पर लगवाया। बा का खाट पर। जब मैट्रन आई, हमने कह दिया कि हम ताले में बन्द होकर नहीं सोयेंगी। वह बेचारी घबराई। जेलर के पास गई। उसने कहलवाया, "भले बरामदे में सोयें।"

श्रीमती सीतलदास ने कल की काफी खबरें सुनाई। कल जिस सभा में हमें जाना था, वहा लोग रात के ८ बजे तक जमा रहे। मगर सभा न हो पाई। पुलिस ने कई बार अश्रुगैस छोडी और लाठिया चलाई। जैसे ही पुलिस का हमला खतम होता था, लोग फिर

---

*गाधीजी ने कुछ ऐसा इशारा किया था कि इस बार के सत्याग्रह मे, पिछले सत्याग्रहो के विपरीत, जेल मे जाकर सरकारी कायदा का सविनय भग जारी रखना, किन्तु जेल मे जाने के बाद खुद उन्हे इसमे शका उत्पन्न होगई और उनके साथी भी स्वतत्र रूप से इसी नतीजे पर पहुचे।

जमा होजाते थे। वैसे ट्रैफिक तो आज भी काफी हदतक बन्द था। हडताल भी थी। लोगों में काफी उत्साह था। श्रीमती सीतलदास को विद्यार्थियो से कुछ निराशा-सी हुई थी।

हम लोग जाकर बरामदे मे बैठ गई। मेरी तबीयत ज्यादा खराब थी। मचली होरही थी। मै लेट गई। श्रीमती सीतलदास 'हरिजन' लाई थी। उसे पढते-पढते मै सोगई। बा भी सोगई थी। बेचारी श्रीमती सीतलदास को अपने बच्चो की फिकर मे नीद कहा? हमने सोचा था, सात बजे उठकर शाम की प्रार्थना कर लेंगी, लेकिन बा उस वक्त भी सोरही थी। करीब पौने नौ बजे मैट्रन आई। कहने लगीं, "मै तो जल्दी आई थी कि सोने से पहले आपको खबर दे दू, लेकिन आप तो सो ही गई।" खबर यह थी कि बा को और मुझको रात को कही लेजाने वाले है। हमसे कहा गया कि ग्यारह बजे तक अपना सामान तैयार रखें। मैने उठकर अपना बिस्तर बाधा, दूसरा सामान ठीक किया। बा को नही जगाया। श्रीमती सीतलदास घबराने लगी। बोली, "मै तो सोचती थी, आप लोगो के साथ समय अच्छी तरह कट जायगा। मगर अब तो आप भी चली!" मुझे भी बुरा लगा। मैने समझाया, "आपको भी जल्दी ही यहासे हटायगे। शायद यरवदा में हम फिर मिलें।"

आज सुबह मेरे पास सेब मगवाने के लिए पैसे नही थे, यह सुनकर उन्होने अपना बटुआ मेरे सामने कर दिया, उसमें तीस-चालीस रुपये थे। मैने पाच रुपये का एक नोट लेलिया। जल्दी में वे साडिया कम लाई थी, रगीन कोई न थी। मैने अपनी एक उन्हें देदी। मन में सोचा, कही जेल में मर जाऊ तो इनका कर्ज तो सिर पर न रहेगा!

बा जागी, मैने उनका बिस्तर बाधा। उनको श्रीमती सीतलदास के बिछौने पर लिटा दिया। फिर हमने उठ कर प्रार्थना की। रामधुन चल रही थी कि पैरो की आवाज सुनाई पडी। प्रार्थना पूरी हुई। जेलर और मैट्रन हमे लेने आये थे। हम तैयार ही थी। चलदी। बाहर दफ्तर में एक आदमी बठा था, जो हमारे साथ जाने वाला था। मैंने पूछा, "कहा ले जाओगे?" कहने लगा, "बापूजी के पास।" गाडी साढे बारह बजे जाती थी। अभी ग्यारह ही बजे थे। दफ्तर में जेल की सख्त कुर्सी पर बैठे रहने मे बा को तकलीफ होरही थी। बा की तबीयत भी अच्छी नही थी। दस्तो की वजह से वे बहुत कमजोर होगई थी। मैने कहा, "आराम-कुर्सी मगा दीजिये।" इस पर हमारे रखवाले ने कहा, "स्टेशन पर चलिए। वहा वेटिंग रूम में आप आराम से बैठ सकेंगी।" फिर कहने लगा, "बापूजी से हमारा प्रणाम कहिए। मै सन् '३२ में उनके साथ था।" मैंने कहा, "तो कहिए, आप सब बापू के दल में कब आरहे है?" हसकर बोला, "आप लोगो की देखभाल के लिए भी तो कोई चाहिए न?" फिर कहने लगा, "राजनैतिक कदी इतनी तकलीफ नही देते। उनके साथ थोडी समझ से पेश आने की जरूरत है, लेकिन दगे के कैदी तो खतरनाक होते हैं। हिन्दू-मुस्लिम दगो के वक्त मैंने बहुतो को सभाला है।"

हमारा सामान जेल की मोटर में रखा गया। हम भी उसीमें बैठी। कुछ ही देर में स्टेशन पर पहुच गई। कौन-सा स्टेशन था, कुछ पता नही चला। वहा वेटिंग रूम में बैठे-बैठे मुझे नीद-सी आने लगी। मगर बा को नीद कहा? बैठे-बैठे बोली, "देखो, सुशीला,

लोग स्टेशन पर आते और जाते है। सरकार का सारा कारोबार इस तरह चल रहा है, मानो कुछ हुआ ही न हो। इस हालत में बापू कैसे जीत पायेंगे?" मैंने समझाया और भगवान पर भरोसा रखने को कहा। वे कुछ शान्त हुई। कोई बारह-सवा बारह बजे हम बाहर स्टेशन पर आई। बा को एक कुर्सी पर बैठाकर गाडी पर लेगए। स्टेशन पर भीड काफी थी। हम लोगो में किसीको ख्याल तक न था कि क्या होरहा है।

गाडी आई। पहले दर्जे के एक डिब्बे में मेरी और बा की जगह थी। बा नीचे सोई, मैं ऊपर। गाडी चली। कॉलिज में पढते समय मैंने व्रत लिया था कि जबतक हम आजाद न होजायगे, मैं तीसरे दर्जे में ही सफर करूँगी। मगर आज तो हम आजाद ही है। आजाद होकर पहले दर्जे में सफर कर रही हू। यही कुछ मैं सोचती रही। बा के लिए जो दो सेब आये थे वे हमारे साथ ही थे। मुझे बहुत भूख लगी थी। एक सेब खाकर सोगई। दूसरा बापू के पास पहुचा।

: ६ :

आगाखां महल

आगाखा महल, पूना
११ अगस्त '४२

सुबह आख खुली तो दिन निकल आया था। हमारा साथी आया और यह कहकर चला गया कि अब एक ही स्टेशन और है। मैंने बिस्तर बाधा। जब उतरने का स्टेशन आया तो बा गुसलखाने में थी। रात भर उन्हे दस्त आते रहे थे। गाडी को कोई पाच मिनट रुकना पडा। हम उतरी। एक हिन्दुस्तानी पुलिस अफसर हमें लिवाने आया था। मोटर तैयार थी। उसमें बैठाकर वे दोनो हमें लेचले। रात में बम्बई वाला साथी अपने दूसरे साथी से पूछने लगा, "यहाकी हालत कैसी है?" पूना वाले ने कहा, "हालत खराब है। मुझे खुशी है कि मैं अबतक अपनेको इस बला से दूर रख पाया हू। यहा गोलिया चली है और लाठी-चार्ज हुए है। मैंने अपने अफसर से कहा था कि विद्यार्थियो पर गोली न चलाई जाय। उनमें सात-सात, आठ-आठ बरस के बच्चे भी है। बच्चो पर गोलिया चलाकर सरकार लोगो की हमदर्दी खोबैठेगी और हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, सभीको कांग्रेसपरस्त बना देगी। मैंने विद्यार्थियो के लिए बेंत मारने की हल्की सजा सुझाई थी। लेकिन किसीने मेरी सुनी नही और गोलियो व लाठियो से काम लिया। नतीजा यह है कि हालत बदतर होगई है।" इस पर बम्बई वाला साथी बोला, "हा, बेंत मारना आदर्श चीज होती है।" मुझे इस वाक्य पर हसी आई। वह बोला, "डाक्टर हमसे सहमत नहीं।" मैंने कहा, "आपका यह सुझाव कि छोटे बच्चो के लिए बेंत की सजा आदर्श

चीज है, मुझको कुछ अनोखा-सा लगा, क्योकि आज हर आदमी यह जानता है कि छोटे बच्चो को कभी शरीरिक सजा देनी ही नही चाहिए और अच्छे मदरसो में तो बेंत की सजा कतई मना है।" वे दोनो बोले, "हा, लेकिन आप तो सभ्यसमाज की बात कर रही है और यहा हमें बर्बरता से काम है। यह न समझिये कि हमें बेंत मारना या दूसरा ऐसा कुछ करना पसन्द है, लेकिन हमें जो हुक्म दिया जाता है, उसकी पाबन्दी तो करनी ही पडती है।" इसके बाद बातचीत बन्द होगई। पहले वे दोनो आपस में कह रहे थे कि किसीको इस दमन-नीति में रस नही है। कोई नही चाहता कि वह गोली दागे, लाठी चलाये या गिरफ्तारिया करे, वगैरा-वगैरा।

पन्द्रह-बीस मिनट में मोटर एक सूनी-सी सडक के किनारे एक बडे फाटक पर आकर खडी होगई। फाटक बन्द था। मोटर दूसरे फाटक पर गई। सामने फौजी पहरा था। फाटक खुला। हम अन्दर घुसे, पीछे फाटक बन्द होगया। थोडे फासले पर कटीले तार लगे थे। वहा भी फाटक था और फौजी पहरा। यह दूसरा फाटक खुला और हमारे अन्दर जाने पर फिर बन्द होगया। दूर से मैंने देखा, मीराबहन बगीचे में फव्वारे के पास बैठी कुछ घिस रही थी। मगर उन्होंने हमें नही देखा। मोटर संगमरमर की सीढियो के सामने जाकर खडी होगई। बा और मै दोनो उतरी और ऊपर चली। बरामदा लम्बा था। सामने के और बगीचे की तरफ के बरामदे का शुरू का आधा फर्श संगमरमर का था और आगे जाकर आधा मामूली पत्थर का। एक कैदी झाड़ू लगा रहा था। उससे मैंने बापू का कमरा पूछा। वह बोला, आगे इसी लाइन में है। बापू का कमरा आया। उनका बिछौना एक कोच पर था। वे उस पर बैठे एक कागज पर गौर कर रहे थे। महादेवभाई उसी कागज को हाथ में पकडे पास खडे थे और बापू से कुछ कह रहे थे। हमें आया देख सब चकित-से रह गये। बापू के चेहरे पर एक तनाव की रेखा खिंच गई। बा से बोले, "तूने यहा आने की माग की थी, या वे ही तुझे लेआये ?" बा बेचारी चुप रह गई। कुछ समझ ही नही सकी कि क्या पूछ रहे है। बापू की भवे और तन गई। मैंने उत्तर दिया, "पकड-कर लाये है, बापू।" तब कही बापू की चिन्ता मिटी। मैंने प्रणाम किया। हसने लगे। बोले, "तू आपहुची।" मैंने बताया, बा की तबीयत अच्छी नही है। तुरन्त ही उनके लिए खाट मगवाई गई। बापू और महादेवभाई उनकी सभाल में लग गये।

बा की बीमारी अधिकतर मन के बोझ की वजह से ही थी। यहा आने पर बिना दवा के अपने आप उन्हे अच्छा लगने लगा। सरोजिनी नायडू आकर मिली। वे खाने की देख-भाल करती थी। सो खाने की बात पूछी। बोली, "तुम्हे कुछ खास चाहिए तो तुम पका सकती हो।" मैंने पूछा, "क्या हमें अपना खाना खुद पकाना होगा ?" कहने लगी, "और नही तो तुम यहा करोगी क्या ? अपना वक्त यहा किस तरह काटोगी ?" मै चुप होगई। मेरे लिए यह एक नई चीज थी कि खाना पकाने को वक्त काटने का जरिया बनाया जा सकता है। मुझे आजतक कभी इस सवाल का सामना ही नही करना पडा था कि वक्त कैसे काटा जाय। उल्टे वक्त हमेशा बहुत जल्दी खतम होजाया करता था।

आगाखा महल का फाटक खुला और फि
बंद हो गया।

द्वार पर अंकित महल का नाम
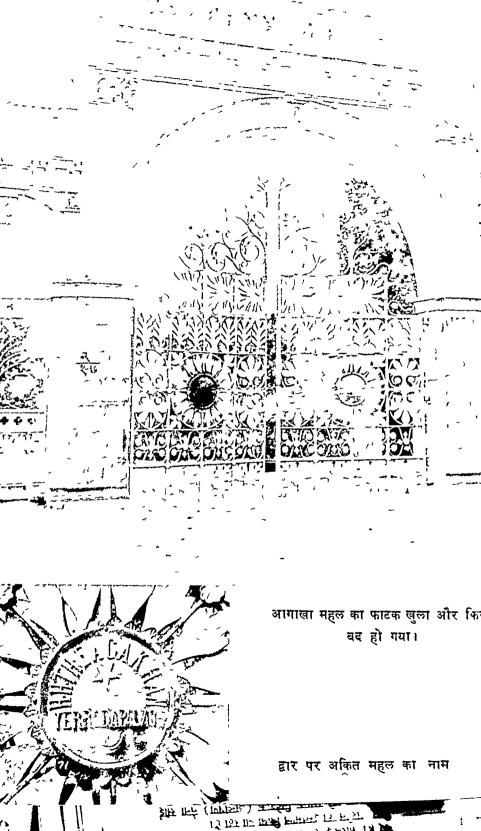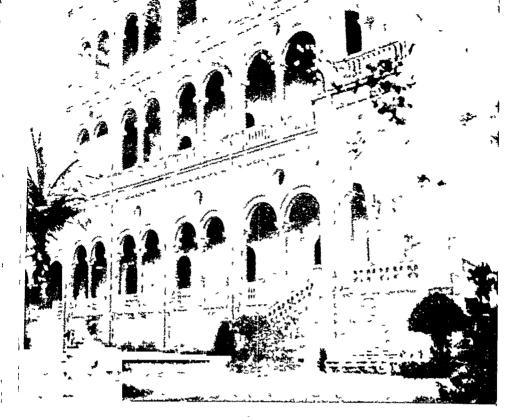
जहा बापू इक्कीस महीने रहे
(दाईं ओर से चौथा कमरा।)

कटीले तारो की बाड
(इसके बाहर ७२ सशस्त्र पहरेदारो की चौकी रहती थी।)

बा को सुलाकर सरोजिनी नायडू और महादेवभाई मुझे खाना खिलाने की मेज पर ले-गये। टोस्ट, मक्खन और ताजी चाय की प्याली में उस दिन मैंने जो स्वाद पाया, वह कभी किसी बडी-से-बडी दावत में भी नहीं मिला।

: ७ :

महादेवभाई के साथ चार दिन

महादेवभाई ने कहा, "दो रोज हमने बापू की मालिश की। हम तो मालिश करना जानते नहीं। आज बापू मुझे सिखाने वाले थे। अब तुम आपहुँची हो तो सँभालो अपना काम।" मैंने बम्बई में यह तय किया था कि बापू की मालिश वगैरा का काम भाई किया करेंगे और बा की सेवा मैं किया करूँगी। लेकिन भाई तो यहा पहुँचे ही नहीं थे। इसलिए जब महादेवभाई ने ऐसा कहा तो मैं चुपचाप बापू की मालिश करने चली गई। यहा मक्खिया और मच्छर बहुत है। इतनी नई, साफ और शहर के बाहर की जगह में इस कदर मक्खिया क्यो है, कुछ समझ में नहीं आरहा। बापू ने बताया कि पूना में सफाई का प्रबन्ध अच्छा नहीं है। पता नहीं, यह मकान कब से बन्द पडा था। अभी-अभी खोला गया है। इस वजह से भी इतने जीव-जन्तु यहा पर हो सकते है। मालिश में बापू सो-जाते है। मक्खी-मच्छर परेशान करते थे सो मालिश के समय महादेवभाई को मक्खिया उडाने का काम करना पडा। मैंने देखा, वे बहुत खुशी से यह काम कर रहे थे। वे बापू की हर सेवा में खुश रहते थे।

बापू को दोपहर का खाना करीब बारह-साढे बारह बजे मिला। मीराबहन और महादेवभाई ने बताया कि जिस रोज वे लोग यहा आये थे, उस रोज तो यहा खाने का कोई इन्तजाम था ही नहीं। बिडला-हाउस से जो आधसेर दूध आया था, वह बिगड गया था। इन लोगो ने आकर खुद खाने का सारा इन्तजाम किया। बापू खाना खाते समय शाम के खाने की कुछ बात करने लगे। महादेवभाई और मीराबहन ने एक-दूसरे की ओर देखा, क्योंकि शाम के पाच तो बज ही रहे थे। बापू ने घडी देखी और हँसने लगे। शाम का और सुबह का खाना एक होगया था! शायद सरकार ने सोचा होगा कि गाधीजी तो इस बार उपवास करने ही वाले हैं, फिर खाना पकाने के इन्तजाम की मेहनत क्यो कीजाय! या कैदियो के लिए खाना तैयार करने का उसका रिवाज ही नहीं रहा होगा।

आज हम लोगो ने तो खाना कोई एक बजे ही खाया होगा। खाना खाने के बाद महादेवभाई सब प्लेटें उठाकर उन्हे धोने चले गये। मैं भी उनके पीछे गई और थोडी मदद की। तीन बजे महादेवभाई नीचे रसोईघर में पहुँचे। बापू के लिए सब्जी काटी और चढाई। उसके बाद उनके लिए मौसम्बी का रस निकाला। नीचे गये, रसोईघर

से सब्जी लाये। मीराबहन को दूध निकालने में देर हुई थी। इसलिए शाम का खाना आज भी बापू को देर से मिला।

मैंने देखा, यहा भी इन लोगो को अखबार वगैरा कुछ नही मिलते थे। महादेवभाई को यहा मैंने एक बिलकुल नये रूप में देखा। खाना पकाने और बरतन धोने-जैसे कामो में उनकी दिलचस्पी देखने की चीज थी। शाम को प्रार्थना के बाद वे पलथी मारकर बरामदे में बैठ गये और रात को खाने के लिए सबके लिए टोस्ट बना डाले। खाना खाते समय .. की बातें करने लगे। और-और लोगो की चर्चा भी उन्होने की। जबतक किसीकी तारीफ की कोई बात न आती, महादेवभाई अनमने-से होकर सुनते रहते। लेकिन किसी अच्छी बात को सुनकर, जिससे वे सहमत होसके, वे उत्साह के साथ उसकी दाद देते थे।

दिन में बापू ने लार्ड लमली (बम्बई के गवर्नर) के नाम अपने पत्र की कच्ची नकल में काट-छाट करके उसे महादेवभाई के हवाले किया और बोले, "मुझे ऐसा लगता है कि यह तो आज जाना ही चाहिए।" इस पत्र में बापू ने एक घटना का उल्लेख किया था, जिसमें मेहता नाम के किसी कार्यकर्त्ता को स्टेशन पर पशु की तरह घसीटकर लारी में डाला गया था। इसी पत्र में सरदार वल्लभभाई पटेल और मणिबहन को यहा भेजने की दरखास्त भी कीगई थी। बापू ने लिखा था कि सरदार तो उनकी (बापू की) चिकित्सा में थे, मणिबहन सरदार की नर्स थी, सो दोनो को उनके पास भेज देना चाहिए। तीन-तीन मसविदो के बाद यह खत तैयार हुआ था। हम सब ऐसा मानते थे कि सरदार वल्लभ-भाई और मणिबहन जल्दी ही यहा आजायँगे। उन्हे किस कमरे में रखेंगे यह चर्चा हुई। हम मानते थे कि वल्लभभाई और मणिबहन दोनो यरवदा में है। भाई को भी जल्दी बापू के पास लेआवेगे, ऐसी हमारी मान्यता थी।

यहा अभी बरसात शुरू हुई है सो बरामदे में घूमना पडता है। मगर बरामदा बहुत लम्बा है। मकान के चारो तरफ गया है। एक चक्कर में एक-तिहाई मील की घुमाई होजाती है। मकान की निचली मजिल में हमे रखा गया है, ऊपर हमारे जेलर मि कटेली रहते है। नीचे वाला भाग भी सब नही खोल रखा। एक बडे कमरे में सरोजिनी नायडू है। वही दो सगमरमर की मेजें पडी है जहा सब खाना खाने बैठते है। एक कमरे में बापू है, एक में मीराबहन। एक छोटा कमरा बापू और सरोजिनी नायडू के कमरे के बीच है, वही महादेवभाई, मै, बा वगैरा कभी-कभी बैठते थे। अधिकतर तो बापू के कमरे में ही काम करते रहते थे। गुसलखाने दो ही है मगर बडे है। पाखाना फ्लश वाला है। बगीचा बहुत बडा है, पर कटीले तार लगाकर हमें बहुत थोडा-सा टुकडा दिया गया है। पानी नहीं पडता तब वही थोडा घूम लेते है। फूल बहुत सुन्दर है।

रात को मीराबहन ने बापू के पैरो की मालिश की, मैंने सिर की। यहा मच्छर इतने है कि मच्छरदानी लगाकर सोना पडता ह। बा अन्दर कमरे में सोई। सरोजिनी नायडू अपने कमरे में। बाकी के चार—बापू, मीराबहन, महादेवभाई और मै—बरामदे में सोए।

१२ अगस्त '४२

सवेरे उठते ही बापू ने पूछा, "महादेव, नीद कैसी आई ?" महादेवभाई बोले, "कोई दो बजे आख खुल ही जाती है। फिर साढे तीन बजे नींद आई होगी। जब आप और सुशीला प्रार्थना कर रहे थे, मैं आवाज तो सुन रहा था, पर उठकर आया नहीं।" इससे मुझे पता चला कि महादेवभाई अच्छी तरह सोते नहीं है। मीराबहन ने कहा, "सिर में मालिश करवानी चाहिए।" मैंने उनसे पूछा, "अगर आपको पसन्द हो तो रोज रात को आपके सिर को मालिश कर दिया करू।" इस पर वे बोले, "हमारा क्या है। मालिश की जरूरत नही रहती।"

मैंने कहा, "रात में जरूरत हो तो आप मुझे सोते से जगा सकते है।"

कहने लगे, "देखेंगे।" उन्हे मालिश की जरूरत है, पर सेवा लेने में सकोच होता है।

नाश्ते के बाद मैं और महादेवभाई बापू के साथ बरामदे में घूमे। महादेवभाई और बापू अनेक विषयो पर बाते करते थे। मेरे लिए यह घूमना सामान्य शिक्षण की एक क्लास ही होजाती है।

आज भी बापू को अपना खाना समय पर नही मिल सका। बापू ने कहा, "अब हम सब आपस में काम बाटले।" महादेवभाई बोले, "बाटना क्या है ? बटा हुआ ही है। सुशीला आपकी सेवा में रहेगी। मीराबहन पहले सुबह का साग बनाया करती थीं और मैं शाम का। अब सुबह का भी मैं बनालूगा।" बापू को महादेवभाई का बनाया साग ज्यादा पसन्द आता था, क्योंकि सोडे की मात्रा ठीक होने से वह ज्यादा गला हुआ रहता था। सो महादेवभाई दोनो समय साग बनाने को तैयार हुए थे। मैंने कहा, "नही, शाम का साग मैं बना दिया करूँगी और आप लोगो की प्लेटें भी धोदूगी।" मगर जब प्लेटें धोने का वक्त आया तो महादेवभाई मेरे पीछे-पीछे नल पर आपहुँचे और सब प्लेटें साथ रह-कर धुलवाई। इसी तरह मैं सब्जी चढाने गई तो वहा भी पीछे से आपहुंचे। साग काटने और चढाने में मदद की। मैंने कहा, "आप क्यो अपना समय ऐसे कामो में खोते है ?" बोले, "यहा और काम ही क्या है ? अबके मैं अपने साथ कोई सामान ही नही लाया, नहीं तो लिखने का काफी काम हो सकता था। लेकिन तीन-चार लेखो की सामग्री के सिवा मैं कुछ लाया ही नही।" मैंने कहा, "तो वे तीन-चार लेख तो लिख ही डालिए।" बोले, "लिख लूगा। बात यह है कि इस समय मेरा तो मन ही नहीं होता कि कुछ करूँ। जबतक बापू की उपवास की तलवार मेरे सिर पर लटक रही है, मैं कुछ कर ही नही सकता। सन् '३२ में बापू के छ दिन के उपवास में मैंने दस पौण्ड वजन खोया था, हालाकि उन दिनो मैं बराबर भोजन करता था। तभी छ दिन में बापू बेहाल होगये थे तो अब क्या होगा ?"

बापू ने वाइसराय के नाम जो खत लिखना शुरू किया था, आज दिन में उसमें फिर सुधार किये गए और मुझे उसकी नकल कर देने का काम मिला। यहा मच्छरो और मक्खियो

की वजह से दिन में भी कुछ काम करना हो तो मच्छरदानी में बैठकर ही करना पड़ता है। मैं अपनी खटिया पर जा बैठी, मच्छरदानी डालदी। खत लम्बा था, नकल करने में दो घटे लगे होगे। बापू ने महादेवभाई से कहा, "अब तुम इसे पढ जाओ, बुढिया (सरोजिनी नायडू) को भी पढाओ और कुछ सुझाव देना हो तो दो।" इसके बाद बापू उर्दू के अभ्यास में लग गये। कहने लगे, "अगर सरकार मुझे फिर छ साल की सजा सुना दे तो मैं बहुत काम कर दिखाऊँ।" यह सुनकर महादेवभाई के मन मे फिर वही विचार आगया, बापू छ साल तक हमारे साथ रहेगे सही ? सत्यमूर्ति का वाक्य याद आया, "गुलाम हिन्दुस्तान की अपेक्षा आज़ाद हिन्दुस्तान में आपकी ज्यादा जरूरत रहेगी।"*

रात बापू मुझसे कहने लगे, "तुझे लिखने-पढने का काम करने की इच्छा थी न! देख, कैसा खत तेरे हाथ आया है!" इस पर महादेवभाई कहने लगे, "अबकी जब बाबला हमारे साथ बम्बई आया तो रास्ते में मैंने उसे 'टु अमेरिकन्स' (अमेरिकनो के प्रति) नामक बापू का लेख टाइप करने को दिया। वह तो नाचने लगा। बोला, "काका, कितने दिनो के बाद आज मैं टाइप करने लगा हूँ और पहली ही बार यह कितनी बढिया चीज मेरे हाथ लगी है!" महादेवभाई को अपने लडके की बहुत याद आ-रही थी। कल मुझसे पूछा, "दोनो लडको का क्या हुआ ?" मैंने कहा, "भाई की सलाह से वर्धा जाना तय हुआ था।" कहने लगे, "मै तो चाहता था कि दोनो बम्बई से ही पकडे जाते। मगर ठीक है, मेरी गैरहाजिरी में उन्हे भाई की ही आज्ञा का पालन करना था। उन्होने सोच-समझकर ही वर्धा जाने की सलाह दी होगी।"

आज प्रार्थना में महादेवभाई ने 'दीनानाथ दयाल नटवर' भजन गाया। मि० कटेली, सरोजिनी नायडू, मीराबहन वगैरा सभी प्रार्थना में आते है।

आज बापू ने अपने नीचे से कोच निकलवा डाला। जमीन पर जेल का गद्दा बिछवाकर दिन-भर उसी पर बैठे।

१३ अगस्त '४२

बा को आज फिर पतले दस्त होगये। मैंने दवा का नुस्खा लिखकर मि० कटेली को दिया। उसपर लिखा था—कस्तूर बा गाधी के लिए। नीचे मेरे दस्तखत थे। महादेवभाई ने नुस्खा मि० कटेली को दिया कि या तो बाजार से या जेल के अस्पताल से दवा मँगादें। मि० कटेली बाजार से मँगवाने को तैयार होगए। मैंने महादेवभाई से कहा कि बाजार में लोग पढेंगे कि दवा किसके लिए है और नुस्खा किसने लिखा है तो वहा थोडी खलबली नहीं मचेगी ? इसपर महादेवभाई अपने माथे पर हाथ मारकर जेलर की मूर्खता पर हसने लगे। बापू ने हमारी हसी सुनी तो पूछा, "क्या बात है ?" महादेवभाई ने सब बात बताई। बापू बोले, "नही, हमें उन्हे सुझा देना चाहिए। हम व्यर्थ ही उन्हे तकलीफ में नही डालना चाहते। वे सब कुछ समझकर भी

*"Free India needs you more than subject India"

कोई खतरा न मानें और नुस्खे को ज्यों-का-त्यों बाजार में भेजना चाहे तो बात अलग है।" उस वक्त मैं और महादेवभाई, दोनो थोडी शरारत की धुन में थे। जाने देते नुस्खा! थोडा-सा मजा आता। लेकिन बापू थोडे ही ऐसा होने देने वाले थे! महादेवभाई ने मि० कटेलीसे कहा। वे बहुत खुश हुए। बोले, "मैं बापू का बहुत आभारी हूँ।" नुस्खा उन्होंने अपने हाथ से नकल किया और वह उनके दस्तखत से बाजार गया। दवा आई। मगर बा को एक ही खुराक दी जासकी। इससे उन्हें कब्ज होगया। इसलिए बन्द करनी पडी। बा की बीमारी तो बस बापू के पास पहुचने से ही अच्छी हो-गई लगती है।

बापू ने कल महादेवभाई से वाइसराय को लिखे खत की नकल पढ जाने और उसमें जो सुझाव हो, सो देने के लिए कहा था। महादेवभाई दिन भर उसे पढ नहीं सके, लेकिन वे जानते थे कि बापू सवेरे ही पूछेंगे, "खत पढा?" सो उस रात को वे दो बजे ही उठ बैठे। करीब डेढ-दो घटे तक बडे गौर से खत पढते रहे। फिर सोगये। अगले दिन उन्होंने उस खत के बारे में कई सुझाव दिये। बापू ने खत में सुधार किये और उसकी पक्की नकल करने के लिए खत महादेवभाई को देदिया। उन्हे करीब दो घटे नकल करने में लगे। पत्र लम्बा था, मगर बहुत अच्छा था। बापू ने वाइसराय को लिखा था कि उनको (बापू को) इस तरह पकडने में सरकार की भूल हुई है। सरकार ने जो प्रस्ताव नेताओ की गिरफ्तारी को जायज साबित करने के लिए छपाया है, वह असत्य से भरा है। उसमें काग्रेस पर जो हमले किये गए थे, उनमें से कुछ का जवाब बापू ने इस खत में दिया था और वाइस-राय को सलाह दी थी कि वह अब भी अपनी भूल को सुधारले तो अच्छा होगा।

पत्र वापस बापू के पास आया। उन्होंने हाथ में लेकर एक-आध मिनट महादेव-भाई के मोती-जैसे अक्षरो को देखा, फिर उन्होंने उसमें एक-दो जगह अपने हाथ से छोटे-छोटे सुधार किये और दस्तखत कर दिये। रात को पत्र कटेली साहब को दिया गया। बापू पूछ रहे थे, "नकल करने में कितना वक्त लगा?" महादेवभाई ने कहा, "दो घटे।" फिर बोले, "सुशीला ने सरकारी वक्तव्य में से अवतरण लेते समय एक जगह एक शब्द छोड दिया था। इसलिए मैंने सारा पत्र ध्यान से देखा। इस कारण भी वक्त कुछ ज्यादा लगा।" बापू मेरी तरफ देखकर बोले, "ऐसा क्यो हुआ? यह तो नहीं होना चाहिए।" मेरा मुह फक होगया। बापू के काम में तनिक-सी भी भूल होजाय तो वह असह्य लगता है। बापू भी इन छोटी-छोटी भूलो को बहुत महत्त्व देते हैं। कहा करते है, "मुझे यह भरोसा होना चाहिए कि जो काम तुझे सौंपा वह सपूर्ण होगा। मुझे उसमें पूछने और फिर से देखने जैसा नहीं रहना चाहिए।" महादेवभाई बाद में मुझसे कहने लगे, "इस तरह की नकल करते समय ऐसा हो ही जाता है।" मै समझ रही थी कि मुझे आश्वस्त करने के लिए ही वे ऐसा कह रहे हैं। उन्हे अफसोस होरहा था कि बापू के सामने मेरी शिकायत क्यो की। आजकल उनकी मनोवृत्ति कुछ ऐसी बन गई है कि किसीको या किसीके बारे में कोई अच्छी बात कह सके तो कहे, वर्ना चुप रह जायें। कोमलता उनके स्वभाव में हमेशा

से रही हैं। वे किसीका भी दिल दुखाना नहीं चाहते थे। इससे उन पर कभी-कभी यह इल्जाम आता था कि वे सबको सदा मीठी लगने वाली बात कह दिया करते है। इसलिए उनके कहे पर बहुत आधार नही रखा जा सकता। लेकिन इस बार की उनकी कोमलता तो पराकाष्ठा को पहुच गई थी। उनके मन में एक ही विचार था बापू के आदर्शों का—एकादश व्रतो का—जितना पालन हम कर सकेंगे, उतनी ही बापू के महान यज्ञ में हम उनकी सहायता कर सकेंगे।

सरोजिनी नायडू ने कल महादेवभाई से कढी बनाने को कहा था। आज उन्होंने कढी बनाई। बहुत अच्छी बनी थी। मैंने और महादेवभाई ने तीन बार ली। रोटी यहा कैदी बनाते है। चपातिया अच्छी नहीं बनती। महादेवभाई कहने लगे, "अगर दुर्गा यहा होती तो हमें ऐसी रोटी हरगिज न खानी पडती।" खाना पकाने के बारे में इधर-उधर की बाते होती रही। दोपहर खाने के बाद प्लेटें धोते समय महादेवभाई मुझसे बोले "ये लोग खाने-पीने की बाते करते है! मैं इन्हे कैसे बताऊँ कि मेरे मन में क्या चल रहा है? अगर मै और तुम दो ही यहा होते तो बापू के लिए जो सब्जी बनती है, उसके सिवा मै तो और कुछ भी न बनाता।"

खाने के बाद मैंने एक मौसम्बी उठाई। महादेवभाई ने लेने से इन्कार किया। बोले, "तुम खाओ।" मैंने आग्रह किया। पूछा, "आप क्यो नही खाते है?" तो कहने लगे, "असल में यह बापू के लिए है। अपने हिस्से की जो खूराक हमें मिलती है, उससे ज्यादा मैं कुछ नही लेना चाहता। मै बापू के साथ कई बार जेल में रहा हू, मगर फलो को कभी छूता भी नही था, क्योकि मै जानता था कि अगर मै अकेला होता तो मुझे ये फल मिलने वाले नहीं थे।" हमारे लिए जेल से केले आया करते थे, सो केले वे कभी-कभी खालिया करते थे।

शाम को हम लोग प्लेटें धोरहे थे। तब फिर महादेवभाई ने कहना शुरू किया, "मै परेशान हू। बापू कब क्या करेंगे, कुछ पता नही। खाना खाते समय भी मुझे तो यही विचार सताता है कि कितने दिनो तक हम चैन से खा सकेंगे! मन पर यह एक भयकर बोझ है।" महादेवभाई बहुत उदास नजर आते थे और ठडी सास लेरहे थे। मैंने पूछा, "चिंता बढाने वाला कोई नया कारण पैदा होगया है?" बोले, "जो पहले से है, वही क्या कम है और मुझे जो बाहर की खबरें मिल रही हैं, उन्हे बापू जानेंगे तो पता नहीं, उन पर क्या असर होगा?"

शाम को महादेवभाई बीच के कमरे में बैठे अकेले कात रहे थे। मै पास जा बैठी। मैंने पूछा, "महादेवभाई, आप यहा अकेले क्यो कात रहे है?" वे अभी भी उदास ही थे। मुझसे बातें करने लगे। उन्हे बाबला की याद आगई। बोले, "बाबला होता तो टाइप वगैरा करने में काफी मदद देता।" फिर बडे गर्व के साथ कहने लगे, "वह बापू के हिंदी-भाषणो की बहुत अच्छी रिपोर्ट लेने लगा है।" मैंने कहा, "हा, वह होशियार तो है ही, जल्दी ही आपके कामो में हाथ बटाने लगेगा।" इस पर बोले, "नहीं, अंग्रेजी वह काफी

नहीं जानता ।" मैंने कहा, "काफी जानता है और आप और ज्यादा सिखा भी तो लेंगे ।" इतने में बापू ने मुझे पुकारा ।

शाम को आसमान साफ था। हम नीचे बगीचे में घूम रहे थे। घूमते समय महादेवभाई बापू से अहिंसा के बारे में चर्चा करने लगे । बोले, "व्यक्तिगत अहिंसा के बारे में तो किसीको कोई शका है ही नहीं । सब मानते है कि व्यक्तिगत रूप में अहिंसा सब कठिनाइयो को हल कर सकती है, किंतु उसके सामाजिक प्रयोग के बारे में लोगो को अवश्य ही शका है । सो आप उसका प्रयोग करके दिखा ही रहे है ।" बाद में 'साहित्य में अहिंसा' की बात चल पड़ी । महादेवभाई ने बापू को रघुवश में से राजा दिलीप की गो-सेवा-सम्बधी कहानी सुनाई जिसमें दिलीप के गाय की सेवा करने का वर्णन है । उन्होने सुनाया कि किस तरह बाद में शेर गाय को खाने आता है और राजा का उसके साथ क्या सवाद होता है, वगैरा । फिर कहने लगे, "मै 'साहित्य में अहिसा' विषय पर एक पुस्तक लिखना चाहता हू । मेरे पास कई किताबो के नोट्स कही पडे है । उनके आधार पर छोटे-छोटे अध्याय लिखकर तीस-चालीस अध्यायो में इस विषय के बहुत प्रभावशाली नमूने इकट्ठा करूगा ।" बापू बोले, "इसी नाम की एक पुस्तक सेवाग्राम में हाल ही में हमारे पास आई थी ।" महादेवभाई ने यह देखी नहीं थी । बोले, "तब तो हमें उसे देखना चाहिए ।" फिर कहने लगे, "लेकिन हो सकता है कि इस सम्बन्ध की उस आदमी की धारणा मेरी धारणा से बिलकुल भिन्न हो ।"

आज प्रार्थना में महादेवभाई ने मराठी का तुकाराम का अभग गाया--'भक्त ऐसे जाणा जे देहीं उदास ।' प्रार्थना के बाद मैंने उनसे इस भजन का अर्थ समझाने को कहा । उन्होने समझाया । मेरे आने के बाद प्रार्थना में रामायण का गायन शुरू हुआ है । उत्तरकाण्ड का जो भाग जिस जगह से आश्रम में छूट गया था, वहीं से आगे शुरू किया गया है । ताल देने के लिए मजीरा नहीं है, सो बापू ने मीराबहन से चम्मच और कटोरी का उपयोग कर लेने को कहा है । उन्होने ऐसे कटोरी-चम्मच बजाकर भी दिखाया ।

कल सुबह घूमते समय हम लोग बगीचे में मकान के सामने की तरफ चले गये थे । ऊपर सामने वाले बरामदे में लकडी की जाली लगाई गई है । उसे रगकर यह दिखाने की कोशिश कीगई है कि वह पुरानी चीज है, ताकि कोई माने कि मुसलमानी घर में पर्दे के खयाल से लगाई गई होगी । मगर बापू को पूरा शक था कि यह नई चीज है । हमें कोई बाहर से देख न सके इस हेतु से लगाई गई है । कल उधर घूमने से यह शक सच्चा साबित हुआ । महादेवभाई को लकडी की जाली के कुछ ताजे छिल्के उधर पडे मिल गये । यह जाली बरसो पहले जब मकान बना था तब लगी होती तो लकडी के ये ताजे छिल्के आज यहा कहासे आते ! फिर आगे बढकर देखा । इस तरफ के प्रवेश को बद करने के लिए इधर भी जाली का एक ऐसा ही दरवाजा लगाया गया था । उस पर बाहर की ओर से रोगन नहीं हुआ था । या तो करना भूल गए होगे, या करना गैरजरूरी समझा होगा । लकडी साफ ताजी छिली हुई दिखाई देती थी । सरकार को डर रहा होगा कि इस बरामदे

में खडे होने पर बाहर वाले लोग तो बापू को देख सकेंगे, शायद भीतर बैठे-बैठे भी बापू लोगो को उकसा सकें !

चारो ओर कटीले तारो का एक अहाता खीच दिया गया है जिसमे से हमें बगीचे का थोडा ही हिस्सा मिला है। बाहर की दीवार से कटीले तारो का करीब ५० या ७५ गज का फासला रखा गया है, ताकि कही दरवाजे में से झाककर हम बाहर वालो के साथ सम्पर्क स्थापित न करलें! मगर कटीले तारो में जगह-जगह इतने बडे-बडे रिक्त स्थान है कि आदमी भागना चाहे तो आसानी से भाग सकता है। इन कटीले तारो के अदर छ सिपाही हमारी रखवाली के लिए रखे गये है। वे सेवा भी करते है। करीब एक दर्जन सजायाफ्ता कैदी सवेरे छ बजे से शाम के छ बजे तक यहा सफाई इत्यादि करते है। करीब पन्द्रह या बीस कैदी बगीचे में काम करने आते है। कटीले तारो के बाहर ७२ फौजियो का पहरा रहता है।

यहा आने वाले सब लोगो के लिए यह जगह एक खासी जेल है। हमारे जेलर मिस्टर कटेली यहा अकेले ही रहते है। अखबार तक नही पढ सकते। या तो उन्हे इजाजत नही है, या वह अपना फर्ज अदा करने में इतने मुस्तैद है कि जान-बूझकर अखबार नही पढते। चूकि हमें अखबार पढने की इजाजत नही है, इसलिए अगर वह पढें तो किसी समय भूलचूक से उनके मुह से कोई बात ऐसी निकल सकती है, जिसकी खबर हमें नही लगनी चाहिए।

महादेवभाई तो हमेशा जिसके सम्पर्क में आते है, उसका मन हरण कर ही लेते है। मि० कटेली के साथ भी उसकी खूब बन गई है। जब पहला पत्र तैयार हुआ तो महादेव-भाई उसे लेकर ऊपर मि० कटेली को देने चले गये। खत लेलेने के बाद बातो-ही-बातो में मि० कटेली ने कहा, "आप लोगो को ऊपर आने की इजाजत नही है। आपके यहा आने से पहले एक पुलिस अफसर आकर मुझसे कहने लगा कि इस जीने के सामने यह नोटिस लगादो कि कोई ऊपर न आये।" मैने इन्कार किया। कहा, "उनमें कोई ऐसा है ही नही, जो खुद ऊपर आये। नोटिस लगाने की जरूरत नही।" इस पर महादेवभाई ने कहा, "बस, हमें पता चल गया, अब नही आवेंगे।" और उस दिन से उन्होने ऊपर जाना बद कर दिया। महादेवभाई विवेक की मूर्ति थे!

मि० कटेली भले आदमी है, दयानतदार है। सरकार के प्रति अपना फर्ज पूरी तरह अदा करते है। उनकी पत्नी मर गई है। घर पर बूढी मा और बच्चे है। मा को बहुत याद किया करते है। बापू के प्रति भक्ति रखते हुए भी वे सरकार के प्रति अपना फर्ज अदा करने में कभी चूक नही सकते। बेचारो ने पहले तो बाहर से खाना मगवाना शुरू किया था, लेकिन वह सब ठडा होजाता था। इसलिए सरोजिनी नायडू ने उन्हे अपने साथ खिलाना शुरू किया है। खाने के लिए चुपचाप आते और खाकर चुपचाप ही चले जाते है। सारा दिन उनसे कोई बात करने वाला तक नहीं। सिपाहियो के साथ बात भी क्या करें? कभी-कभी महादेवभाई उनसे जरूर बात कर लेते है। मगर हम तो सब कैदी रहे।

कैदियो के साथ भी वेचारे कितनी वात कर सकते है ? सरोजिनी नायडू कह रही थीं, "वह भी उतने ही कैदी है जितने कि हम । फर्क यह है कि उनको जेल जाने का श्रेय नहीं मिलता जो हमें मिलता है ।"

सिपाही लोग भी अपने घर नही जा सकते । उनके जमादार का नाम रघुनाथ है । होशियार आदमी है । सन् '३२ में जब बापू पकडे गये थे तब भी वह यरवदा में उनकी सेवा किया करता था । इसी तरह जब-जब सरोजिनी नायडू यरवदा जेल में रहीं वह हमेशा बाजार से उनके लिए सामान वगैरा लाने का काम करता था । खासा चलतापुर्जा है । सामान लेने बाजार जाता है तो तनिक अपने घर में भी झाक आता है । सिपाही की वर्दी पहनकर नहीं निकलता, क्योकि आजकल बाज़ार में लडके अक्सर सिपाहियो की बुरी गत बनाते है । हाल ही में एक दिन वह जेल से हमारा 'राशन' लारहा था । लोगो ने गाडी रोकली । कहा कि आज हडताल है । तुम गाडी नहीं ले जासकते । रघुनाथ चुपके से उन्हे कह आया, "नही जाने दोगे तो तुम्हारे ही लोग भूखो रहेगे ।" वस, सामान लेआया । उसके कुछ भाई-भतीजे वगैरा काग्रेस में है । जेल भी गये है । अपने इस सम्बन्ध का भी वह फायदा उठा लिया करता है । महादेवभाई ने इसके साथ भी अच्छी दोस्ती गाठली है ।

कैदियो में जो चार रसोईघर में काम करने वाले है उनमें से दो काठियावाड के गुजराती है । एक नकली रुपये बनाने के इल्जाम में पकडा गया था । दोनो भाइयो ने मिलकर कोई पद्रह हजार रुपये वनाये थे । वाद में एकने सारा दोष अपने सिर लेलिया । रुपयो से बहुत-सी जमीन खरीद ली । कोई हजार-एक रुपया किसी डाक्टर को दिया । डॉक्टर ने उसे दिमागी दुर्वलता का सर्टीफिकट देदिया, सो सजा कम होगई । महादेवभाई से कहने लगा, "क्या हुआ जो मेरे दो-तीन साल जेल में चले गये । अब आराम की जिंदगी बसर करेंगे ।" फिर वोला, "साहव, आपके स्वराज में आप मुझे सिक्के ढालने के लिए बुला लेना ।"

दूसरा एक बूढा काठियावाडी कैदी था भूरा । उसे सब काका कहते थे । सिपाही तक उसे काका कहकर बुलाते थे । वह सब पर हुक्म चलाता था । वह हिंदू-मुस्लिम फसाद में पकडा गया था और बडे गर्व से कहता था कि वह दूसरो की रक्षा करते-करते जेल आया है । वाद में पता चला कि वह कई वार जेल आचुका है । हमेशा मार-पीट करके आता है । बडा बातूनी है । महादेवभाई जब नीचे सब्जी वगैरा काटने को जाते थे तो कैदियो के साथ काफी वातचीत कर आते थे । ये दोनो गुजराती वोलने वाले कैदी तो उन्हे अपना भाई ही मानने लगे थे । कहते, "आखिर हम गुजराती जो है !" महादेवभाई उनके साथ विलकुल वरावरी के आदमी की तरह वात करते थे । सो वे अक्सर कहा करते, "महादेवभाई, हम सूरत जिले में आपके घर आयगे ।"

महादेवभाई कहते, "हा भाई, जरूर आना ।"

कैदियो के साथ अपनी सम्पूर्ण एकता सिद्ध करने के लिए उन्होने अपने लिए

जेल के कपडे मगाने और पहनने का इरादा भी कर लिया था। एक दिन मूरा कहने लगा, "मैं छूटने वाला हू, कोई चिट्ठी देना हो तो देना। मैं लेजाऊगा।" मैंने कहा, "तुम्हारी तलाशी नहीं होगी ?" उसने तुरत एक अडे की शकल की छोटी-सी डिब्बी निकाली, उसको खोला, अन्दर कागज का टुकडा रखकर बद किया और झट से मुह में डाल गया। कहने लगा, "लेलो तलाशी।" कुछ दिखता नही था। उसके गलेमें कोई पाकेट-सी बनी होगी, जहा डिब्बी छिपा रखता था। जब हमने हार मानली, उसने झट उबकाई-सी ली ओर डिब्बी निकालकर खोलकर कागज हमारे हाथ में देदिया। महादेवभाई कहने लगे, "अगर बापू का उपवास वगैरा कुछ होगया और सरकार ने खबरें बाहर न जाने देने की नीति रखी तो इसके साथ मैं जरूर चिट्ठी भेजूगा। तुम्हारे पास कुछ रुपये है ?" मैंने कहा, "पाच रुपये हैं।" कहने लगे, "काफी है। बम्बई तक का किराया इसे देसकू तो काम निपटा। पीछे वहासे मित्र लोग सब इतजाम कर लेंगे।"

यरवदा से आते-जाते दोनो वक्त इन सब कैदियो की तलाशी लीजाती है। यरवदा जेल में इन्हे बाहर की तरफ अलग एक बारक में रखा जाता है, ताकि वे दूसरे कैदियो से मिल न पावें और इधर से उधर कोई खबर न पहुचा सकें। फिर भी वे रोज सुबह हमें इतनी खबर तो देते ही थे कि आज इतने नये कैदी आये है और आज इतने। जेल के फाटक पर नये कैदियो की सख्या रोज लिखी जाती है। दूसरे राजनैतिक कैदियों के लिए जगह करने के खयाल से आम कैदियो को काफी तादाद में छोडा भी जारहा है। उन बेचारो को इतना फायदा तो हुआ! अच्छा है।

वाइसरायके नाम खत पूरा करनेके बाद आज दोपहर बापू 'पैसिफिक अफेयर्स' पढने लगे। उसमें एक वाक्य आया—"Teleological connection between bourgeois democracy, revolution and industrialism अर्थात् ऐतिहासिक विकास में मध्यमवर्गीय लोकतन्त्र, क्राति और मशीन-प्रथा इन तीनो में क्रमिक सबध। बापू टीलियोलोजी (Teleology)* का अर्थ पूछने लगे। महादेवभाई से पूछा। शब्द-कोश देखा। काफी चर्चा हुई। आखिर बापू बोले, "इसे तो 'Argument in a circle' अर्थात् जो चीज साबित करनी है उसे बहस का आधार मानकर चलना कह सकते है। फिर चर्चा चली कि व्याकरण के अनुसार reek के साथ of आता है या with ? बापू ने कहा, "बुढिया से पूछो न !" महादेवभाई बोले, "वे नही बता सकेंगी। यह तो आपके और मेरे-जैसे स्कूल-मास्टरो का काम है कि व्याकरण देखें और विराम-चिह्नो का विचार करें।"

बापू मुझसे वेरीकोस (varicose)† का अर्थ पूछने लगे। मैंने बताया। कहने

---

*एक दार्शनिक सिद्धान्त, जिसका विकास निर्धारित दैवी उद्देश्य की सिद्धि के लिए होरहा है।

†स्थायी रूप से नाडी का बढना या फैलना

लगे, "नहीं, इसकी धातु क्या है? इसके क्या-क्या रूपातर होसकते है? कहा-कहा यह शब्द इस्तेमाल होसकता है, सो सब बताना चाहिए।" फिर कहने लगे कि तेरे लिए लैटिन सीख लेना जरूरी है। बोले, "मै तुझे 'लर्नेड डॉक्टर' (विद्वान डॉक्टर) बनाना चाहता हू।" मुझे शब्दकोश की भूमिका पढ जाने की सलाह दी, ताकि कोश को पूरी तरह समझकर देख सकू।

शाम को महादेवभाई इधर-उधर पडे लोहे के तारो को बटोरकर एक टोस्टर बनाकर लाये। बापू को दिखाया। बापू बहुत खुश हुए। बोले, "Necessity is the mother of invention" फिर बोले, "इसकी गुजराती क्या होगी?" महादेवभाई ने जरा सोचकर कहा, "गरज ए शोध नी जनेता छे।"*

महादेवभाई रोज कहा करते है, "सरदार आजायगे तो बापू को खूब हसाया करेंगे। वे आजाय और उनके आने तक प्यारेलाल न आयें तो फिर हम बडे जोर के साथ प्यारेलाल को माग सकते है।"

मीराबहन आज फिर मुझसे कहने लगीं, "महादेवभाई को सिर की मालिश की जरूरत रहती है।" मैंने कहा, "मैंने पूछा था, पर उन्होंने करवाई नहीं।" वे कहने लगी, "कल से तुम बापू का बिस्तर वगैरा लगा दिया करना। मै उस वक्त महादेव के सिर की मालिश कर दिया करूगी। मेरा खयाल है कि महादेव मुझसे मालिश करा लिया करेंगे।" मैंने मजूर किया। बाद में मै आज फिर महादेवभाई के पास गई और पूछा, "क्या आप सिर की मालिश करवायेंगे?" बोले, "क्या जरूरत है?" लेकिन आवाज से मुझे ऐसा लगा कि थके तो है ओर आधा मन कराने को भी है। मैंने कहा, "जरूरत तो आपको रहती ही है, घर पर भी तो आप मालिश करवाते ही है।"

बोले, "हा, बम्बई में लीलावती मल देती थी।" वे सकोच के कारण कहते नही थे और मुझे भी बहुत आग्रह करने में सकोच होता था। मैंने कहा, "जब मलवाना चाहे, आप मुझसे कह सकते है।" और मै चली आई।

शाम को महादेवभाई कह रहे थे, "अगर बापू के उपवास की यह तलवार मेरे सिर पर लटकती न होती तो मैंने कुछ पौण्ड वजन कमा लिया होता और थोडा शक्ति-सचय कर लिया होता।"

१४ अगस्त '४२

आज वाइसराय को पत्र गया। विचार हुआ कि पत्र के साथ बापू के भाषणो का सार भी भेजना चाहिए। मगर वह तैयार नही था, इसलिए बापू ने पत्र तो भेज दिया और महादेवभाई से सार तैयार करने को कहा। नोट्स तो थे नहीं। सब कुछ जबानी तैयार करना था। शाम से पहले महादेवभाई ने वह बापू के सामने रख दिया।

बापू ने कर्नल भण्डारी से सरदार और भाई की खबर पुछवाई। उत्तर मिला

*आवश्यकता खोज की जननी है।

कि सरदार के बारे में कोई रिपोर्ट नहीं है, इसलिए तबीयत अच्छी ही होगी। भाई यहां है या नही, इसका उन्हे पता नहीं था।

महादेवभाई आज फिर कहने लगे, "अब की मैं अपने साथ कुछ सामान ही नहीं लाया। दिल होता है कि गीताजलि भी होती तो उसके अनेक गीतो का गुजराती अनुवाद ही कर डालता।" मैंने कहा, "चलिये, काम नहीं लाये है तो मुझीको कुछ सिखा दिया कीजिये न!" बोले, "मै तुम्हे क्या सिखाऊगा। तुम्हीं मुझे थोडी-सी दवा-दारू सिखादो।" मैंने कहा, "अच्छी बात है, आप दवा-दारू सीखिये और मुझे दूसरी चीजें सिखा दीजिये।"

मुझे कल से थोडा जुकाम था और आज तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब थी। बुखार-सा लग रहा था। शाम को महादेवभाई बापू के लिए रस निकाल रहे थे। मुझसे कहने लगे, "तुम भी आज रस पीओ।" जबसे महादेवभाई ने बताया था कि जेल में फल हमारे लिए नही आते है, मैंने फल नही लिये थे। महादेवभाई बहुत इसरार करने लगे। मैंने टालने की कोशिश की। कहा, "मुझे रस पीने की जरूरत नही मालूम होती।" मैं दूसरे कमरे में गई। लौटकर देखती हू तो महादेवभाई ने रस का आधे से ज्यादा गिलास भरकर मेरे लिए तैयार रखा था। उसे गरम होने भी रख दिया था। कहने लगे, "नमक और नीबू के साथ गरम रस गले को बहुत फायदा पहुचाता है।" मै रस पीने बैठ गई। अगीठी जल रही थी। महादेवभाई ने भी अपने लिए टोस्ट सेक लिये और उसी समय बैठकर खालिये। घूमते समय आज महादेवभाई बापू को साबरमती आश्रम की किताबो के सम्बन्ध में कुछ कहते रहे। बापू ने आश्रम की पुस्तकें महादेवभाई को सौंपी थी और उन्होने उनकी एक सुदर लाइब्रेरी बनाली थी।

प्रार्थना में महादेवभाई ने आज तुकाराम का 'जे का रजले गाजले, त्यासी, म्हणे जो आपुले'—अभग गाया और बाद में उसका अर्थ भी समझाया। उन्होने बताया कि इसी अभग के जरिये सबसे पहले उनका तुकाराम के साथ परिचय हुआ था। गोखले ने एक जगह लिखा है कि एक बार वे रानडे के साथ रेलगाडी की यात्रा कर रहे थे। सबेरे गाने की आवाज सुनकर जाग उठे। रानडे ध्यानावस्थित होकर 'जे का रजले गाजले' अभग गारहे थे। प्रार्थना के बाद महादेवभाई ने 'रीडर्स डाइजेस्ट' में से 'द अमेजिंग मि० क्रिप्स' (हैरतअगेज क्रिप्स) नामक एक लेख बापू को पढकर सुनाया।

सोने का समय हुआ। मीराबहन कहने लगीं, "तुम्हे सोजाना चाहिए। बापू के सिर की मालिश नही करनी चाहिए। तुम्हे आराम मिलेगा और बापू जुकाम की छूत के खतरे से बचेंगे।" मुझे तो आराम की इतनी जरूरत नहीं थी। मगर मैं बापू को अपना जुकाम दू, यह कैसे होसकता था? इसलिए मैंने महादेवभाई से कहा कि वे बापू के सिर की मालिश करदें।

बापू पाखाने गये हुए थे। उस समय महादेवभाई सरोजिनी नायडू के साथ बात कर रहे थे। बाद में सरोजिनी नायडू ने मुझे बताया कि कैसे उस रात पहली ही बार महादेवभाई उनको अपने बापू के पास आने का किस्सा सुना रहे थे। किस तरह पहले बापू ने उन्हें

वकालत छोडने से मना किया था और फिर कैसे एक दिन उन्हे वापू का एक पोस्टकार्ड मिला जिसमें वापू ने उन्हें वुलाया था। एक वार कलकत्ते में मुझे भी महादेवभाई ने यह सारा किस्सा सुनाया था। उन्होने कहा, "फिर मुझे वापू का एक पोस्टकार्ड मिला। उसमें एक ही वाक्य था, "हू तमने मारी सोडमा इच्छु छु",* और वस मै चला आया!" यह कहते समय उनकी आखो में प्रेम के आसू छलक आये थे।

मेरे जाने के वाद वात फिर वापू के उपवास पर आकर रुकी। आजकल महादेव-भाई इसके सिवा दूसरी किसी चीज का ज्यादा देर तक विचार ही नहीं कर सकते। कहने लगे, "वापू के हरिजन-उपवास के दिनो में पडित सातवलेकर ने एक पचाग भेजा था, जिसमें करीव एक साल पहले से वापू के उपवास की निश्चित तारीख दी हुई थी। अव की फिर उन्होने उनसे वह पचाग मगवाया। उनका उत्तर आया कि वह खुद पहले से इस पचाग की तलाश में थे। १९४२ तक तो उसमें किसी उपवास का जिक्र नहीं था। उसके वाद वह पचाग छपना ही वद होगया था।

इस पर सरोजिनी नायडू महादेवभाई को अपने एक मित्र की वात सुनाने लगीं। उनके पास एक विशिष्ट अन्तर्दृष्टि थी, जिससे उन्हे भविष्य में और दूसरी जगह होने वाली वातो का पता चल जाता था। सरोजिनी नायडू ने उनके ऐसे कई किस्से सुनाये। एक वापू के हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य के लिए किये गए उपवास के वारे में था। दूसरा किसी के मरने के वारे में। इसी तरह जहाजो के डूवने आदि के किस्से थे। महादेव-भाई वापू का सिर मलने आये तो इनमें से कुछ किस्से उन्हे सुनाने लगे। मै अपनी खटिया पर पडी-पडी सुनरही थी। मैंने कहा, "मुझे तो भगवान अन्तर्दृष्टि की यह विभूति दे तो भी मै इसे लेने से इन्कार करदू। पहले से ही आदमी दुख आने वाला है यह जानकर दुखी क्यो हो?" भगवान हसरहा होगा! अगर अगले दिन सुवह की घटनाओ को हम जानते होते तो उस रात कौन सोने वाला था?

: ८ :

महादेवभाई का अवसान

१५ अगस्त '४२

प्रार्थना में वापू और मै, दो ही सुवह उठा करते है। महादेवभाई उठना चाहते है, मगर रात में नींद टूट जाती है तो फिर चार वजे नहीं उठ पाते। आज सुवह भी मैंने और वापू ने प्रार्थना की। प्रार्थना पूरी करके हम लोग वापस अपने विस्तरो पर गये, इतने में

---

*मै तुम्हे अपनी गोद मे चाहता हू।

महादेवभाई उठे । बा से प्रार्थना के बारे में पूछने लगे । बा ने उत्तर दिया, "हा, अभी-अभी खतम हुई ।" आज महादेवभाई का विचार प्रार्थना में आने का था, मगर उन्हे कोई आध घटे की देर होगई । इससे वह न आसके । छ बजे बापू उठकर आये तो महादेवभाई ने उनके लिए रस निकालकर तैयार रखा था । बाद में जाकर टोस्ट सेंके, चाय बनाई । सरोजिनी नायडू स्नान करके निकली तो मेज पर चाय आदि सब चीजें सजी हुई थीं । टोस्ट को काट-सेंककर खूब सुदर ढग से लगा दिया था और खुद हजामत बनाकर वहा बैठे थे । एक दिन बापू मुझसे पूछ रहे थे, "तुम दोनो में कौन अच्छे टोस्ट बनाता है, तू या महादेव ?" आज मैंने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, उस दिन बापू के पूछने पर मैं यह स्वीकार करने को तैयार नही थी कि आप मुझसे ज्यादा अच्छे टोस्ट बनाते है । मगर आज मुझे यह स्वीकार करना ही होगा और आपके सामने हार माननी ही पडेगी । सेंक-साककर आपने तो आज इनको इतने सुदर ढग से सजा भी दिया है!" महादेवभाई कहने लगे, "मुझे समय मिले तो मैं सब कुछ कर सकता हू, लेकिन रोज रात को नीद अच्छी नही आती । सुबह देर से उठता हू तो समय नही रह जाता । आज जल्दी उठा था, इसलिए इतना सब काम कर सका ।"

इतने में सरोजिनी नायडू आईं । वह भी महादेवभाई को शाबाशी देने लगीं । महादेवभाई हसने लगे । बोले, "हा, अब मुझे आसानी से खानसामा की नौकरी मिल सकती है ।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "हा, बापू की गृहस्थी में । इस गृहस्थो में तुम क्या नही हो?" महादेवभाई मेरे पास ही बैठे नाश्ता कर रहे थे । मैंने देखा कि उनकी प्लेट में एक टोस्ट पडा है, लेकिन उन्होने बीच में जो प्लेट रखी थी, उसमें से एक टुकडा और उठा लिया । मैं समझी, बापू महादेवभाई को कवि कहते है । बातो में भूल गये होगे कि उनकी अपनी प्लेट में भी टोस्ट पडा है । इसलिए वह टोस्ट मैंने उठा लिया । लेकिन महादेवभाई ने तो उसे खाने के इरादे से ही रखा था । मैं वापस रखने लगी तो मना किया । बोले, "नही, अब तुम्ही खाजाओ ।" कहावत मशहूर है कि दाने-दाने पर मोहर होती है । महादेवभाई का हिसाब खतम होचुका था, सो उनकी प्लेट में सामने रखा हुआ टोस्ट भी उठ गया ।

महादेवभाई की हजामत का जिक्र करते हुए सरोजिनी नायडू बोली, "आज जब मैं नहाने गई, मैंने महादेव को बडे आईने के सामने बैठा देखा । वे हजामत बना रहे थे, अपनी मूछो को छाट रहे थे और नाखून काटरहे थे । मैंने मन-ही-मन सोचा, "अरे, आज महादेव को यह हो क्या गया है ? अचानक उनको आज इस प्रकार सजने की कहा से सूझी ?" मगर वह तो कुदरत ही उनसे तैयारी करवा रही थी--

करले सिंगार चतुर अलबेली,
साजन के घर जाना होगा ।

जब मैं बापू के साथ घूमने को निकली तो बगीचे के सामने के कोने से महादेव-भाई निकलकर आये और कहने लगे, "लकडी की जाली का यह काम नया है, इसका दूसरा

सवूत मुझे मिला है। यह देखिये, लकडी की चीपो का यह ढेर लगा पडा है। अव मैं इसका ठीक-ठीक उपयोग करा लूगा।"

घूमते समय महादेवभाई वल्लभभाई की वातें सुनाने लगे। वताते थे कि वल्लभभाई कपडो के वारे में कितने शौकीन थे। वे वहुत सफल वैरिस्टर थे। महीने में आठ-दस दिन ही अदालत जाते थे। वाकी वक्त क्लव में वैठकर 'व्रिज' खेला करते थे। तिस पर भी महीने में हजार-पद्रह सौ रुपये कमा लेते थे। एक वार वे एक दोस्त के साथ वैठकर 'व्रिज' खेलरहे थे। दोस्त के हाथ में पत्ते थे। एकाएक दोस्त ने पीछे हटकर अपना सिर कुर्सी की पीठ पर टिका दिया। पत्ते हाथ ही में रह गये और उनके प्राण-पखेरू उड गये। तव से वल्लभभाई को ताश अच्छे नहीं लगते।" हम सव सुनरहे थे। कौन जानता था कि दो घण्टे के अदर ही महादेवभाई का भी यही हाल होने वाला है!

आज महादेवभाई वहुत प्रसन्न दिखाई देते थे। वापूने नींद के वारे में पूछा तो खुश होकर कहने लगे, "आज पहले दिन ही गहरी नींद आई। इसलिए जल्दी उठ भी सका और अपना सव काम सवेरे ही कर लिया। मैं तो आज प्रार्थना में भी शामिल होने वाला था, लेकिन जरासी देर होगई। प्रार्थना समाप्त हुई कि मैं उठा।" वह वहुत उत्साह में थे। दिन अच्छा शुरू हुआ है, इससे खुश थे। वापू कहने लगे, "सो तो है ही। तुम्हारी नींद सुधर जाय तो सव ठीक होजाय।" फिर इधर-उधर की वातें करते रहे। आज वगीचे की सफाई रोज से ज्यादा मुस्तैदी के साथ होरही थी। महादेवभाई कहने लगे, "आज इन्स्पेक्टर जनरल आनेवाले हैं, इसीलिए यह सव सफाई होरही है।" मैंने कहा, "इन्स्पेक्टर जनरल से मेरे लिए कुछ स्वास्थ्य-सवधी अखवार माग लीजियेगा।" वोले, "तुम खुद ही क्यो नही माग लेतीं?" मैंने कहा, "शायद उस वक्त मै मालिश में रहू, इसलिए आपसे कहा है।" वातो-वातो में मैंने कहा, "महादेवभाई, एक तरह से यह जेल अच्छी है। वापू भी वहुत थक गये थे, आप भी थके हुए थे। यहा जवर्दस्ती का आराम मिल रहा है। वाहर जाने के समय तक आप और वापू वाहर के काम के लिए काफी शक्ति का सग्रह कर लेंगे।" इस पर वे वहुत गभीर होकर मेरी ओर देखने लगे और वोले, "सो मैं नही जानता।"

घूमकर हम लोग ऊपर आये। मै मालिश के लिए वापू के साथ चली गई। इतने में आवाज से पता चला कि इन्स्पेक्टर जनरल आगये है। मै कमरे में कोई चीज लेने गई। महादेवभाई सरोजिनी नायडू वाले गुसलखाने में से निकल रहे थे। वगल में 'आर्ट आव लिविंग' (जीवन-कला) नाम की किताव थी, लेकिन वे चुपचाप चले गये। यह कुछ असाधारण-सी वात थी। नहीं तो उनसे कही भी मिलें, कुछ तो वे कहते ही थे। उनका यह भी खयाल रहता था कि भाई यहा नहीं हैं, इसलिए मेरे लिए भाई की कमी को जितना पूरा कर सकें, करें। खाने के समय भी हमेशा मेरी राह देखा करते थे।

मेरे आने से पहले वापू के खाने के वरतन और उनके कपडे कैदी धोते थे। महादेवभाई कभी अपने कपडे खुद धोते, कभी-कभी धुलवा लेते थे। मीरावहन अक्सर अपने कपडे खुद धोती थी। मीरावहन ने वताया कि कैदी लोग वापू का काम करते खुश होते है

तो उन्हे करने देना चाहिए । बापू की बातो से मै समझी कि उन्हें कैदियो और सिपाहियों से सेवा लेना पसद न था । कहते थे, "मै नही चाहता कि वे लोग हमें अपना सरदार समझे । हम भी उन्हीके जैसे कैदी है । मुझे तो अपना काम खुद कर लेना या अपने साथियो से करवा लेना ही प्रिय है ।" इसलिए मैने बापू के बरतन खुद साफ करने शुरू कर दिये । कपडे तो अपने मैं धोती ही थी, बापू के भी धोने लगी । बापू स्नान करके निकल आते तब मै कपडे धोती और स्नान करती थी । महादेवभाई बापू को खाना लाकर देते और फिर मेरी राह देखते रहते ।

दोनो गुसलखानो के बीच जो दीवार है, वह छत तक नही गई, इससे आवाज एक गुसलखाने से दूसरे में आसानी के साथ पहुँच सकती है । दाहिने हाथ वाला गुसलखाना बापू इस्तेमाल करते है और दूसरे भी चाहे तो कर सकते है । इस गुसलखाने में कमोड के ऊपर बत्ती है । बापू हमेशा पाखाने के समय में पढते है, इसलिए उन्होने यह गुसलखाना पसद किया है, वर्ना यहा एक आदमकद आईना भी है जो बापू के काम की चीज नहीं । दूसरे गुसलखाने का इस्तेमाल सरोजिनी नायडू करती है और प्राय बा और मीराबहन भी । करीब हर रोज ही मै स्नान पूरा करने पर होती या कपडे पहनती होती, तभी महादेव-भाई सरोजिनी नायडू वाले गुसलखाने से निकलकर पुकारते, "ए सुशीला, कितनी देर है तुमको ?" पहले ही रोज उन्हे बहुत भूख लगरही थी । बापू ने आग्रह करके मेरे निकलने से चार-पाच मिनट पहले उन्हे खाने के लिए भेज दिया । बाद में बापू ने मुझे पुकारा और कहने लगे, "तुम बहुत वक्त लेती हो । तुम जानती हो कि महादेव कब से तुम्हारी राह देख रहा है ?" मैने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, आप मेरी राह न देखा कीजिये । खाने के लिए समय पर चले जाइये । मै आपके बाद ही आजाऊगी ।" दूसरे दिन बापू के स्नानघर से निकलने के समय मैने खास तौर पर उनसे जाकर कहा, "आप खाना खाने जाय । मुझे देर लगेगी ।" लेकिन मै स्नान करके निकली तो देखा, महादेवभाई मेरी राह देखते बैठे थे ! वे जानते थे कि मुझे अकेले भोजन करना अच्छा नहीं लगता । खाने की मेज सरोजिनी नायडू के कमरे में है और उनसे मेरा परिचय तो यहा आने से पहले नही के बराबर ही था । इसलिए महादेवभाई खाते समय मेरा साथ देते और दूसरे जिस काम में भी साथ दे सकें देते थे ।

महादेवभाई सरोजिनी नायडू के कमरे में जाकर इन्स्पेक्टर जनरल से बातें करने लगे । मै बापू की मालिश कर रही थी । बातो के बीच-बीच में हँसी की आवाज आती रहती थी । मैने एक पेर पूरा करके दूसरा पेर शुरू किया, इतने में सरोजिनी नायडू ने मुझे पुकारा, "सुशीला, यहा आओ ।"

मैने सोचा, "इन्स्पेक्टर जनरल सबको देखना चाहता होगा । दूसरा पैर जल्दी से खतम करलू और पोछकर ही जाऊ ।" लेकिन इतने में तो दूसरी आवाज आई और साथ ही बा भागती-हाफती आकर बोलीं, "महादेव को कुछ होगया है । उन्हे फिट आगया है । मिरगी-सी दिखती है ।" मैने बापू का पाव छोड दिया । भागती हुई गई । सरोजिनी

नायडू ने फिर पुकारा। मैं उनके कमरे में पहुँची। इसमें ज्यादा-से-ज्यादा एक मिनट लगा होगा।

जाकर देखती हू तो महादेवभाई सरोजिनी नायडू के कमरे में पलग पर लेटे हुए थे, वेसुध। चेहरे पर ऐंठन होरही थी। मेरे देखते-देखते सिर से पैर तक जोरका एक झटका-सा लगा। मैंने नाडी देखी। नहीं मिलरही थी। रक्त का दवाव देखने की कोशिश की, वहा भी कुछ नहीं, हृदय पर स्टेथास्कोप रखा—खामोशी! हृदय की धडकन ही नहीं सुनाई पडरही थी। मैंने कहा, "वापू को वुलाओ। ये जारहे हैं।" ओठो पर कुछ झाग-से थे। सास कुछ रुक-रुक कर चलरही थी। मै अपनी दवा की पेटी लाई, लेकिन वह खुलती ही नहीं थी। मैं उसे खोलने की कोशिश कर रही थी, साथ ही हिदायतें भी देरही थी कि ब्राण्डी लाओ, हृदय के लिए दवा दो।

हाथ-पैर ठडे होने लगे थे। दवा कोई मौजूद न थी। भडारी लेने गये थे। सरोजिनी नायडू ने अन्द-कोलोन और शहद दिया और कहा, "यह ब्राण्डी का काम करता है।" मैंने तो ब्राण्डी मालिश के लिए मागी थी। लेकिन जव सरोजिनी नायडू ने यह मिश्रण दिया तो उसे मैंने महादेवभाई के मुह में डाल दिया। निगलने की ताकत अभी उनमें कायम थी। निगल गये। मिस्टर कटेली ने दवा की पेटी का ताला तोडकर उसे खोल दिया था। उसमें से कैल्शियम ग्लुकोनेट ही निकला। हृदय को वल पहुचाने वाली कोई भी दवा न थी। मैं दिल्ली से इतनी जल्दी में निकली थी और ववई में भी ऐसी भाग-दौड रही कि अपनी पेटी में ववत-जरूरत की दवाओ का सग्रह कर ही नहीं पाई थी। मैंने महादेवभाई का हाथ उठाया, विलकुल ढीला पडा था। नस में कैल्शियम ग्लुकोनेट का इजेक्शन देदिया। इतने में भडारी ब्राण्डी की वोतल लेकर आये। मैंने कहा, "कार्डिएक स्टिम्युलण्ट्स' कहा हैं?" तो फिर नीचे भागे। इस वीच मैंने ब्राण्डी मुह में डाली। लेकिन निगलने की ताकत वहुत मद पड गई थी। काफी देर तक वह मुह में ही पडी रही। वाद में वापू ने कहा, "मैं तो तेरा हाथ पकड लेना चाहता था, मगर फिर रहने दिया, तेरी जगह कोई और होता तो मैं ब्राण्डी हरगिज नहीं देने देता!"

महादेवभाई को उल्टी होने लगी। मगर उसे वाहर निकालने में मुश्किल पेश आई। मैंने जवडे को सहारा देरखा था। सिर एक तरफ कर दिया, ताकि हवा की नली में उल्टी का कोई हिस्सा न चला जाय। वापू तो मेरे वुलवाने के वाद दो-तीन मिनट में ही आगये थे। वे कभी महादेवभाई का हाथ पकडते, कभी सिर पर हाथ रखते। वे उनकी आख की तरफ टकटकी लगाकर खडे थे। कहते थे, "मुझे विश्वास था कि एक वार भी महादेव मेरी ओर देख लेगा तो उठकर खडा होजायेगा।"

जव सरोजिनी नायडू ने मुझे पुकारा था तो वापू समझे थे कि भण्डारी से मिलने के लिए वुलारही हैं। जव वे वुलाने आईं तव भी वापू ने यह नहीं सुना कि महादेवभाई को कुछ हुआ है। वे कुछ पढरहे थे। यही समझे कि भण्डारी के कारण ही मुझे वुलाते हैं। फिर जव मेरे कहने पर उन्हें वुलाने गये तव भी वे यही समझे कि भण्डारी से मिलने

के लिए ही उन्हे भी बुलाया जारहा है । बाद में जब यह सुना कि महादेवभाई को कुछ हुआ है, तब भी वे यह नही समझे कि कोई गभीर घटना हुई है । यही खयाल रहा कि जैसे पहले कभी-कभी चक्कर आजाता था, वैसे ही अब भी आया होगा । जरा देर में अच्छा होजायगा ।

सरोजिनी नायडू ने बापू को बताया कि कमरे के बीच में महादेवभाई खडे थे। भण्डारी और सरोजिनी नायडू दोनो कुर्सियो पर बैठे थे। महादेवभाई कुछ बातें कर रहे थे। मजाक चल रहा था। सब-के-सब खूब हस रहे थे। इसी हसी की आवाज-हमें बाहर सुनाई पडरही थी। कुछ देर बाद महादेवभाई ने भडारी से मेरे लिए स्वास्थ्य-सबधी अखबार मागे और फिर एकाएक कहने लगे, "मुझे चक्कर आता है।" भण्डारी ने कहा, "बदहजमी होगी, लेट जाइये।" महादेवभाई चलकर तीन-चार गज के फासले पर पड़े पलग पर जाकर लेट गये। भण्डारी ने नाडी देखी तो वह बहुत तेज और कमजोर थी। उन्होने सरोजिनी नायडू से कहा कि वे मुझे बुलायें और खुद फोन करके सिविल सर्जन को बुलाने ऊपर गये। महादेवभाई जब बात कर रहे थे, गरम वास्कट पहने हुए थे। खाट पर लेटते समय उन्होने उसे निकाल डाला होगा। जब मै पहुची, वह आधी निकली हुई थी।

उल्टी होने के साथ ही वे कराहने भी लगे। भयानक कराह थी, मानो किसी गुफा में से निकलरही हो! कराहट न बापू से सही जाती थी और न हममें से किसी से। सास रुक-रुककर चलती थी। ऐंठन तो जोर की नहीं थी, मगर कपकपी बीच-बीच में होती थी। एक बार तो चेहरा बिल्कुल टेढा होगया, मानो एक हिस्से को लकवा मार गया हो। मेरे मन में आया—क्या इस फिट के कारण ये अपग होकर रह जायगे? किंतु महादेवभाई के समान सुकृत आत्मा अपग क्यो होने लगा। एकाएक फिर एक जोर का झटका-सा लगा। जबडा इतने जोर से भिड गया कि मुझे लगा कि हड्डी टूट जायगी। उस वक्त मै जबडे को पकडे हुए थी। फिर वह ढीला पड गया। कराहना कम हुआ। सास और धीमी पडी। मैंने बापू से कहा, "बापू, जमनालालजी की तरह ये तो जारहे हैं।" जब मैने कहा, 'जारहे है' तब कही बापू समझे कि सचमुच स्थिति गम्भीर है और महादेव-भाई जारहे है। एक बार तो ऐसा आभास हुआ कि उन्होने आख खोली है और बोलने की कोशिश कर रहे है। मैने खुश होकर कहा, "ठीक है। वे सभल रहे है।" लेकिन वह निरा आभास ही था। फिर से आख बद होगई। सास तो रुक-रुक कर चलती ही थी, और भी धीमी पड गई। शरीर काला पडने लगा।

बापू तो सारा समय टकटकी लगाकर उनकी आख की तरफ ही देखरहे थे। अपनी सारी शक्ति एकाग्र करके इसी बात में लगारहे थे कि एक बार महादेव की आख उनकी आख से मिल जाय तो महादेव उठ बैठें। उन्होने बताया कि एक बार तो आख जरा खुली भी थी, लेकिन पथराई हुई थी। उसमें देखने की शक्ति नही थी। बोलने की तो कोशिश भी वे कैसे करते! सिर्फ कराह ही सुनाई देती थी।

लिखने में इतना समय लगा है, लेकिन यह सारा व्यापार तो विद्युत-वेग से हुआ था।

मुझे तो शुरू से अखीर तक एक ही क्षण-सा लगा। इधर मैंने ब्रान्डी का चमचा मुह में डाला और उधर भंडारी दवा लेकर पहुंचे। मै इंजेक्शन देने जारही थी कि उन्होंने रोका। कहा, "एक नस में भी दो।" सो एक पुट्ठे पर दिया, एक नस में।

महादेवभाई अब पसीने मे भीग रहे थे। शुरू से ही उनका चेहरा और हाथ संगमरमर की तरह सफेद पड गये थे। उस सफेद संगमरमर पर अब पसीने के मोती छिटक आये। इंजेक्शन का जरा भी असर नहीं हुआ। नाडी तो बंद ही थी, श्वास भी बंद होगया। सिविल सर्जन आये तब तक पछी उड गया था। सब खेल खतम होचुका था। पूछने लगे, "क्या 'हाइ ब्लडप्रेशर' था?" मैंने कहा, "नहीं।" बोले, "तो कारोनरी थ्रोम्बोसिस होगा? क्या इन्हें कभी दर्द उठता था?" मैंने कहा, "नहीं, लेकिन उन्हे चक्कर आया करते थे। इस हमले के वक्त भी कोरोनरी थ्रोम्बोसिस का मुख्य लक्षण दर्द मौजूद नहीं था।" "मुझे अफसोस है—" कहकर वे चले गये।

: ६ :

अग्नि-संस्कार

जब मैंने देखा कि सास भी बंद होगई है तो मै दूसरे कमरे में चली गई कि कहीं कोई मेरी आखो में पानी न देखले। मगर बा पीछे-पीछे आई और बोली, "महादेव का क्या हाल है?" मै क्या कहती? चुप रह गई। बा अधीर होउठीं। बडी हिचकिचाहट के बाद, मैंने बा के कधे पर हाथ रखकर कहा, "बा, वह तो गये!" बा चीख उठीं, "ए, महादेव गये? कहा गये? अरे महादेव, तुम कहा गये?" वे फूट-फूटकर रोने लगीं। बा के पीछे-पीछे बापू भी आपहुंचे। उन्होंने बा को दिलासा दिया। हम सब महादेवभाई के पास (वे अब कहा थे? उनके शव के पास) लौटे। महादेवभाई का एक पैर सीधा था, दूसरा मुडा हुआ। मैंने उसे सीधा किया। आखें आधी खुली थीं, उन्हे बंद किया। क्या कभी स्वप्न में भी मुझे यह विचार आसकता था कि महादेवभाई की आखें मुझे बंद करनी पडेंगी?" उनके चेहरे पर अपूर्व शांति थी, मानो कोई योगिराज समाधिस्थ होकर पडे हो! पास ही उनका अपना तौलिया पडा था। उससे मैंने उनका मुह साफ किया था। बापू कहने लगे, "महादेव की जेबें खाली करले।" मेरे लिए यह कठिन काम था। उनकी जेब में हाथ डाला तो मुझे लगा कि हाथ टूट जायगा! क्या महादेवभाई सचमुच चले गये? और मै उनकी जेबें भी खाली कर रही हू! कुर्ते की जेबें खाली थीं। वास्कट आधी उनके नीचे थी। बडी मुश्किल से मैंने उसे उनके नीचे से निकाला। एक जेब में से पेन निकला, दूसरी से गीताजी। बापू कहने लगे— 'वैष्णव जन' गाओ, रामधुन चलाओ। मै अपनी भजनावली निकालकर लाई। सरहद से लौटते समय दिल्ली के स्टेशन पर जब

मैं और भाई उनसे (महादेवभाई से) अलग हुए तब उन्होंने यह भजनावली मुझे दी थी। उसमें उन्होंने बीच-बीच में कोरे पन्ने लगवाये थे। देने से पहले, रात भर जागकर, उन्होंने उस भजनावली में अपने हाथ से वे भजन लिख दिये थे, जो मुझे प्रिय थे, पर भजनावली में नहीं थे। उनकी सूची भी तैयार करदी थी। आज वे सब स्मृतिया ताजी होउठीं। यह भजनावली मैंने महादेवभाई के सामने निकाली होती तो उन्हे अच्छा लगता। अब वे कभी यह जान भी न सकेंगे कि उनकी दी हुई भजनावली इस जेल में आपहुची है! मगर अब यह सब सोचना तो व्यर्थ था। महादेवभाई की खाट के पास बैठकर प्रार्थना की। गीताजी के अठारहवें अध्याय का पाठ किया।

बापू ने कर्नल भण्डारी से कहा, "वल्लभभाई और खेर वगैरा को यरवदा से मेरे पास भेज दीजिये। बाद में मैं विचार करूगा कि मुझे शव किसके हवाले करना चाहिए।" भण्डारी चले गये। उन्हे जाकर सरकार को खबर देनी थी और इजाजत लेनी थी कि आगे क्या करना चाहिए।

बापू कहने लगे, "अब मैं जाकर स्नान करलू। वल्लभभाई वगैरा के आने से पहले मैं तैयार होजाना चाहता हू।" वे स्नान करने गये, लेकिन फिर तुरत वापस आगये। बोले, "नहीं, मैं पहले महादेव को नहलादू, फिर खुद स्नान करूगा।"

मेजर अडवानी, (जो कर्नल भण्डारी के साथ आगये थे और अभी तक बैठे थे) मि० कटेली और कुछ सिपाहियो ने मिलकर शव को उठाया और गुसलखाने में लेजाकर बापू ने उसे टबके पास रखवा लिया। दैवयोग से महादेवभाई का सिर उत्तर की तरफ था। बाद में मुझे पता चला कि हिंदू रिवाज के मुताबिक शव का सिर उसी तरफ रखा जाता है। बापू ने उनके कपडे उतारने को कहा। धोती तो आसानी से निकल गई, मगर कटेली और अडवानी कुर्ता नही निकाल सके। वे उसे इतने भद्दे ढग से निकालने की कोशिश कर रहे थे कि मुझसे न रहा गया। मैं खुद जाकर मदद करने लगी और कुर्ता निकाला। शरीर इतना गरम और इतना कोमल था कि मेरा सिर घूमने लगा। बोली, "बापू, महादेवभाई कही जिदा तो नही है?" बापू बोले, "सो तो तू जान।" मैं फिर से स्टेथोस्कोप उठाकर लाई। लेकिन यह सब मूर्खता थी। हृदय की धडकन तो कभी की बद होचुकी थी। आईना लाकर महादेवभाई की नाक के सामने रखा। कुछ नहीं था। अडवानी से कहा, "आप भी जाचलें।" मगर वहा कुछ होता तब न? डॉक्टर होते हुए भी मैं अपनी समता खोबैठी थी। बापू कहने लगे, "जिदा है तो अभी गरम पानी डालने से उठ बैठेगा।" सिपाही तो चले ही गये थे। अडवानी और कटेली ने पूछा, "हम जायें?" बापू ने कहा, "हा, जाइये।" मैंने पूछा, "मैं भी?" बोले, "हा!" मैं आकर कमरे में खडी होगई। मगर मैंने देखा कि पानी का डिब्बा उठाते हुए बापू के हाथ जोर-जोर से काप रहे थे और सारा शरीर भी सिर से पाव तक कापरहा था। मुझे लगा, कहीं बापू गिर पडें तो? इसलिए उनकी मनाही होते हुए भी मैं फिर उनके पास लौट गई। उन्होंने मुझे रहने दिया। सचमुच ही उन्हे मदद की जरूरत थी। शायद पहले वे समझे होगे कि

मै खुद जाना चाहती हू, इसीलिए जाने को पूछरही हू ।

मैने पानी डालना शुरू किया। वापू तौलिये से रगट-रगडकर महादेवभाई का शरीर साफ करने लगे । मुह पर पानी डाला तो मजबूती से भिडे हुए ओठो पर पानी पडने से ऐसा आभास होने लगा मानो वे खुद जोर से ओठ वद कर रहे हो— ठीक उसी तरह, जिस तरह स्नान करवाते समय बच्चे अपना मुह और आख जोर से मीच लेते है । पानी पडते वक्त चेहरे पर मुस्कराहट का भी आभास होता था । वापू ने एक-एक अग साफ किया । मैने पैर साफ किये । महादेवभाई अकसर नगे पाव घूमा करते थे, इसलिए तलवो मे रग-सा चढ गया था । वापू ने उसे देखा । वोले, "पाव बिल्कुल साफ होने चाहिए ।" कैसा करुण दृश्य था ! पिता के हृदय की वेदना और प्रेम का वह सूचक था। मैने तौलिये मे साबुन लगाकर पैरो को अच्छी तरह घिसा । आखिर पैर साफ हुए । वापू कहने लगे, "अब तुम जरा इसे एक करवट पर लो तो मै इसकी पीठ साफ करदू ।" महादेवभाई का शरीर वैसे भी भारी था । शव और भी भारी होगया था । मैने स्नान वाले टब का पिछली तरफ से सहारा लेकर वडी मुश्किल से उसे एक करवट पर किया । करवट वदलते समय मुझे सास की-सी आवाज सुनाई दी । मैने चौककर कहा, "वापू, महादेवभाई ने सास ली है ।" वापू हसे । वोले, "तू पगली है, सब तेरी कल्पना है ।" मगर वह मेरी कल्पना नही थी । करवट पर आने से नीचे का फेफडा दब गया था और इस वोझ की वजह से उसके अदर की हवा बाहर निकली थी ।

स्नान समाप्त हुआ । कल महादेवभाई ने आज स्नान के बाद पहनने के लिए अपने कपडे धोकर रखे थे— उनमें से एक धोती मै उठा लाई । तौलिया तो उल्टी पोछने के काम आचुका था, इसलिए बदन सुखाने को वापूजी ने दूसरा तौलिया मागा । मेरी भाभी ने अपने सूत का एक तौलिया मुझे भेजा था । मेरा विचार था कि वह वापू के काम आये । बुढिया सुनेगी तो बहुत खुश होगी । लेकिन उसका दूसरा उपयोग लिखा था । मैने वापू को वह तौलिया लाकर दिया । उससे हमने महादेवभाई का शरीर पोछा । अब शव को बाहर लाना था । मि० कटेली सिपाहियो को वुलाने लगे । मुझे लगा, भूरा और मगन कैदियो को वुलवाना चाहिए । उन्हे अच्छा लगेगा । भूरा और मगन आये । दोनो ने अकेले ही शव को उठा लिया । वापूजी के और श्रीमती नायडू के कमरो के बीच में एक छोटा कमरा है । इसीमें बैठकर महादेवभाई आज सुबह हजामत बना रहे थे । परसो शाम को यही बैठकर कातरहे थे और बहुत लगन के साथ गारहे थे

"मारी नाड तमारे हाथे हरि सभालजो रे,
दिवस रह्या छे टाचा वेला वालजो रे ।"

—हे हरि तुम सम्हालना, मेरी नाडी तुम्हारे ही हाथ में है । अब दिन थोडे ही रह गये है ।

इस कमरे की कुर्सिया वगैरा निकलवाकर महादेवभाई के शव को यही रखा गया । वापू ने जेल की एक चादर नीचे बिछवाई और एक ऊपर ओढवाई । वोले, "He is a

prisoner and he must go as a prisoner."* उनका चेहरा शात था, मगर बहुत ही गभीर और विचारमग्न। आवाज धीमी थी, किंतु किसीके सामने उन्होंने अपनी आवाज में कपन या आखो में आसू नहीं आने दिये।

लाहौर में गिरधारीभाई ने मुझे चदन का एक टुकडा दिया था। उसे वह बारडोली से लाये थे और सबको बाटा था। तभीसे वह मेरे 'हैण्डबेग' में पडा था। मैंने उसे मीरा-बहन को दिया। उन्होंने घिसकर उसका लेप तैयार किया। बापू ने वह लेप महादेवभाई के माथे और छाती पर लगाया। बगीचे से फूल इकट्ठे किये गए। मीराबहन ने या किसी ने एक हार बनाया। बापू ने वह महादेवभाई को पहनाया। मीराबहन शव पर फूल सजाने लगी। बापू स्नान करने गये। स्नान के बाद शव के पास आकर बैठ गये। मुझसे कहने लगे, "अब तुम भी स्नान करलो। महादेव के कपडे तुम धोना। ये किसी और से नही धुलवायेंगे।" जिस तौलिये से उन्होंने महादेवभाई का शरीर साफ किया था, उसीसे अपना किया और फिर वह मुझे देदिया। बोले, "इसे धोकर महादेव के कपडो के साथ बाबला के लिए रख देना।"

मै स्नान करके निकली तो मीराबहन फूल सजा चुकी थी। उठाने पर ये फूल हिल जायेगे, इस खयाल से मगन और भूरा अर्थी पर डालने के लिए फूलो की जाली बना रहे थे। बापू शव के पास बैठे गीता-पाठ कर रहे थे। बारहवें अध्याय से शुरू किया था। मै आई तो गीताजी मुझे दी। अठारहवे अध्याय तक का पाठ पूरा किया।

इतने में भण्डारी आये। उनका चेहरा सूखा हुआ था। मुह से आवाज नही निकलती थी। बापू ने पुछवाया, "वल्लभभाई आते है क्या?" वे कहने लगे, "वे यहा नहीं है।" बापू ने फिर पुछवाया, "खेर?" वह भी नही आसकते थे। किसीने कहा, "एक लॉरी आई है और एक ब्राह्मण।" बापू चौके, "किस लिए?" किसीने उत्तर दिया, "यहा कुछ पूजा-पाठ कराना हो तो उसके लिए।" बापू कहने लगे, "यहा का पूजा-पाठ होचुका है।"

भण्डारी बापू के पास आये। वे सरोजिनी नायडू को आगे-आगे धकेल रहे थे। बापू ने पूछा, "क्या खबर लाये है?" भण्डारी हिचकिचाते हुए बोले, "मैंने सब इतजाम कर लिया है।" बापू ने पूछा, "क्या इतजाम किया है? क्या मै शव को मित्रो के हवाले कर सकता हू?" भण्डारी फिर सरोजिनी नायडू को आगे धकेलने लगे। उन्हे खुद कहने की हिम्मत न होती थी। सरोजिनी नायडू ने बताया कि सरकार शव किसीको देना नही चाहती। भण्डारी खुद जाकर घाट पर जला आवेंगे। बापू कहने लगे, "तो क्या हममें से कोई शव के साथ जासकते हैं?" उत्तर मिला, "नही।" बापू ने पूछा, "तो क्या मै यहा अपने सामने शव को जला सकता हू?" फिर बोले, "मै लाश को आपके सुपुर्द कैसे करू? क्या कोई पिता अपने पुत्र की लाश अजनबी

*"वह कैदी है और उसे कैदी की तरह ही जाना चाहिए।"

आदमियो के हाथ सौंप सकता है ?"*

भण्डारी फिर बंबई सरकार को फोन करने गये। बापू कह रहे थे, "श्रद्धानदजी के कातिल की लाश फांसी के बाद जनता को देदी गई थी। लोगो ने उसको शहीद बनाया। उसका जलूस निकला। उसमें से हिंदू-मुस्लिम फसाद भी खडा होसकता था, मगर सरकार ने परवाह नहीं की। आज वह महादेव का शव नहीं देने देगी। मैं सोच रहा हू कि क्या मुझे इस प्रश्न पर लड लेना होगा, या कडुआ घूट पीकर रह जाना होगा। मैं इसी बात पर अड सकता हू कि 'नहीं, शव को मित्र ही जलावेंगे।' मगर वह महादेव की मृत्यु को राजनैतिक रंग देकर उससे फायदा उठाने-जैसी बात होजायेगी। पिता अपने लडके की मृत्यु का ऐसा उपयोग कैसे कर सकता है ?"

सब लोग सास रोककर इतजार कर रहे थे कि भण्डारी क्या उत्तर लाते है। बाहर कटेली और अडवानी बैठे थे। भण्डारी ऊपर कटेली के कमरे से फोन कर रहे थे। मैंने कटेली और अडवानी को समझाने की कोशिश की कि भण्डारी पर जोर डालना चाहिए कि शव को यहा जलाने दें। बापू ने बहुत छोटी चीज की माग की है। इसका जवाब भी नकार में मिला तो उन पर क्या असर होगा, कौन जाने ? कहीं उपवास वगैरा पर पहुच गये तो हम सब मुश्किल में पड जाएगे। श्रद्धानदजी के कातिल वाली बात भी कही। वे दोनो ऊपर चले गये। थोडी देर के बाद भण्डारी आये। शव को यहा जलाने की इजाजत मिल गई थी। सरोजिनी नायडू ने और बाद में कटेली ने कहा, "भण्डारी को मुश्किल से यह इजाजत मिली।"

दाह-क्रिया के लिए जगह ढूढनी थी। सरोजिनी नायडू, भण्डारी और अडवानी वगैरा जाकर जगह देख आये। तारो के बाहर नजदीक ही घास का एक खेत था। उसमें से घास निकलवाकर जगह साफ करवाई। पास में एक तरफ दो-तीन ऊचे झाड थे। सामने पहाडियो का सुदर दृश्य दिखाई देता था। महादेवभाई को यह जगह बहुत पसद आती। घास साफ करके ब्राह्मण ने यहा थोडा जल छिडका, पूजा-पाठ किया। हमारी सीढियो के पास नीचे बगीचे में दरख्तो की टहनिया तोडकर उनकी अर्थी बनाई जारही थी। बापू शव के पास बैठे-बैठे या तो खुद गीताजी का पाठ करते थे या मुझसे करवाते थे। बा बापू के पास बैठी थीं। मीराबहन ने एक कटोरी में धूप, चदन वगैरा जलाकर सिर के पास रख दिया था और वही उसके पास बैठी-बैठी उसमें कपूर और चदन डालती जाती थी। महादेवभाई का शरीर तो विशाल था ही, लेकिन इधर कुछ अर्से से वे गरदन को एक तरफ थोडा टेढा करके चलते थे। शव बिल्कुल सीधा पडा था इसलिए और साथ ही शायद शरीर के स्नायुओ आदि के शिथिल होजाने के कारण वह जीते-जी जितने लम्बे लगते थे उससे ज्यादा लम्बे इस वक्त लगरहे थे। चेहरे पर अपूर्व शांति थी, अपूर्व शोभा। बापू शव की बाई ओर बैठे थे। मैंने देखा कि महादेवभाई की बाई आख

---

* "No father can hand over the body of his son to strangers"

आधी खुली थी। यह अकस्मात ही हुआ होगा। मैंने तो मृत्यु के बाद दोनो आखें बद करदी थीं। आख फिर से कैसे खुल गई, मैं नहीं जानती। ऐसा प्रतीत होता था मानो अपनी मृत अवस्था में भी महादेवभाई बापू के दर्शन करना चाहते हो।

बापू ने बारहवें से अठारवें अध्याय तक का पाठ पूरा होने पर फिर पहले अध्याय से शुरू करने को कहा। पहला अध्याय पूरा हुआ। दूसरा आधा हुआ था कि इतने में ब्राह्मण महाराज ने आकर कहा, "सब तैयार है।" गीता-पाठ बद हुआ। मुख्य ब्राह्मण के सिवा चार और ब्राह्मण थे। सबने कुर्ते उतारे। जनेऊ दाहिनी तरफ किये और शव को मत्र पढते-पढते उठाकर अर्थी पर रखा। बाद में वे शव को रस्सी से बाधने लगे। मैंने कभी देखा नही था कि शव को अर्थी पर कैसे रखा जाता है। रस्सी से बाधना मुझे चुभा। मै रोकने ही वाली थी कि बापू ने टोक दिया। बोले, "शव को बाधना ही पडता है।" ब्राह्मण ने एक शाल शव पर डाला जो मिल का बना था। मैंने बापू से पूछा, "क्या मिल की चादर डालनी है ?" कहने लगे, "बस चलने दो।" उन्होंने सोचा होगा कि कैदी की हैसियत से हमें इन बातो की नुकताचीनी करने का हक नही है।

अर्थी उठाकर सीढी से नीचे लाये। अब उसे उठाकर कन्धो पर रखने लगे। छ आदमियो ने मुश्किल से उसे कधो पर उठाया। बाकी सब पीछे चले। बापू ने आग की हडिया उठाई। वे बा को भी सभालरहे थे। शव चिता पर रखा गया। बा के लिए दूर एक कुर्सी रखी गई। उनके लिए अग्निदान की क्रिया को देखना असहनीय था। वे दु ख से पागल-सी होरही थी। आसू-भरी आखो से दोनो हाथ जोडकर आकाश की ओर देखती थी और बार-बार कहती थी, "भाई, तु ज्या जजे सुखी रहेजे। भाई, तु सुखी रहेजे। तें बापूजी नी घणी सेवा करी छे। बधा ने सुख पहोचाड्यु छे। तु सुखी रहेजे।"* ब्राह्मण का पूजा-पाठ समाप्त हुआ। शव पर लकडिया रखी जाने लगी। चेहरे पर लकडी रखने लगे तो मै और बापू यत्रवत अपने आप दो कदम आगे बढ गये। ब्राह्मण ने हाथ रोक लिया। अतिम बार महादेवभाई का दर्शन करके हम लोग पीछे हटे। लकडिया चिनदी गई। अत में बापू ने उन्हे अग्नि दी। यो पहली आहुति पूरी हुई।

बापू करीब घटा-डेढ घटा तो खडे ही रहे। फिर बहुत आग्रह करने पर कुर्सी पर बैठ गये। हमारी तरफ चिता चिनते है तो नीचे भारी लकडिया रखते है, बीच में पतली, ऊपर फिर भारी। यहा इन लोगो ने नीचे भारी लकडिया लगाई, ऊपर सब पतली। ? की लकडिया जल्दी से जलकर राख होने लगी। मैंने दो-तीन बार कहा कि इतनी ? से शव पूरा नही जल सकता मगर किसीने ध्यान नही दिया। मै चिता को देखरही थी। अग्नि की ज्वाला में नीचे एक पीला-सा बिदु नजर आरहा था। धीरे-धीरे वह बडा होने लगा। जब ऊपर की लकडिया जलकर खतम होने लगी, एकाएक उस पीले

*"भाई, तू जहा जाय सुखी रहना। भाई, तू सुखी रहना। तूने बापूजी की बडी सेवा की है। सबको सुख पहुचाया है। तू सुखी रहना।"

बिंदु की जगह पर अतडियो का समूह बेचैनी के साथ उभडकर इधर-उधर फैलता हुआ बाहर निकल आया। मै वरवस वोल उठी, "वापू, अतडिया !" दृश्य भयानक और करुणाकरण था। दो-चार आदमी दौडते हुए गये और हमारी जलाने की लकडी में से लकडिया लाकर ऊपर डालीं। ज्वाला भडक रही थी। सबके हृदय भरे थे। ऐसा लगता था, सब महादेवभाई के पीछे जाने वाले है। मैंने कटेली से कहा, "मान लीजिए कि हममें से कोई जिंदा बाहर न निकला तो आपको यह जगह महादेवभाई के लडके को दिखानी होगी।" अडवानी भी सुनरहे थे। ये लोग स्वय बहुत दु खी थे। किसीकी तैयारी नहीं थी आज की इस घटना का सामना करने की !

कोई तीन घटे वाद वापूजी शेष चिता को जलती रखने का भार ब्राह्मणो को सौपकर वापस आये। वा रोरही थीं। वापू उन्हे शात कर रहे थे। घर सूना था। हम सब अभीतक अपने आपको स्तब्ध-सा अनुभव कर रहे थे।

वापू आजकल वाइविल पढाया करते है। जब वे वेसुध महादेवभाई के पास आये और जब महादेवभाई अनत निद्रा में सोगये तब मै अपने मन में सोचरही थी कि ईसा अपने भक्तो को वचा लेते थे तो क्या वापू नही बचा लेंगे ? अब वह आशा खतम हुई। ऐसी आशा का अब कोई कारण नहीं रह गया था ! डाक्टर के नाते मन में इस तरह के विचार को स्थान देना भी शरम की वात थी। किंतु जब अपने प्रिय जनो पर आ बनती है— उनका विछोह होता है— तो आदमी समता खो बैठता है।

वापू कहा करते है, "भावना तो महादेव की खूराक थी।"*

वापू के उपवास की चिंता तो उनके सिर पर हमेशा सवार ही रहती थी। उन्होने मुझसे कई दफा कहा था, "मै ईश्वर से एक ही प्रार्थना किया करता हू कि मुझे वापू से पहले उठाले ! और साथ ही यह भी कहदू कि ईश्वर ने मेरी प्रार्थना को कभी ठुकराया नहीं है। हमेशा पूरा किया है।"

भण्डारी के साथ वात करते समय कौन जाने उनका कौनसा मर्म-स्थल छूगया होगा, क्या विचार मन में आया होगा कि जिससे एकाएक ऐसा होगया हो। और इजेक्शन वेचारा तो न नुकसान कर सकता था, न फायदा। जब खून का दौडना ही वद होगया था तब नस में दिये हुए इजेक्शन का कोई मतलब ही नहीं था। वह हृदय तक पहुचे कैसे ? हृदय तक पहुचने के लिए तो उसे सुई द्वारा सीधा हृदय की मास-पेशी में दिया जाता तो वह† काम देसकता था। फिर सिर पर भूत सवार हुआ। सीधा हृदय में इजेक्शन दिया होता तो वे उठ वैठते। इस विचार ने मुझे बहुत अशात कर दिया। मैंने वापू से भी कहा। वापू कहने लगे, "होता भी तो मै तुझे देने नहीं देता। जितना करने दिया, उसका भी मुझे अफसोस है। महादेव ने जीने का

---

*"Mahadev lived on his emotions"

†Intracardiac इजेक्शन

मोह छोड दिया था और मैंने तो हमेशा कहा है कि जो आदमी जीने का मोह छोड़ देता है, उसकी देह अपने आप छूट जाती है ।"

पहले भण्डारी वगैरा यहा दाहक्रिया करने का विरोध कर रहे थे । कहते थे, "कही पानी आजायगा तो क्या करेंगे ?" आकाश में बादल थे जरूर, लेकिन अर्थी के उठाने तक ही थोडी बूदें आती रही, मानो आकाश भी आसू बहाता हो । चिता जलाने को गये, उसके बाद बारिश बिलकुल नहीं आई । जब चिता की जगह पहुचे तो आकाश में अधेरा-सा लगा । मैंने ऊपर सर उठाकर देखा तो ऐसा मालूम हुआ, मानो टिड्डी-दल आया हो ! लेकिन वह टिड्डी-दल नही था, जगली मक्खियो का दल था । इससे पहले या इसके बाद यहा कभी इतनी मक्खिया देखने में नहीं आई थी ।

शव जलाकर लौटे । बापू ने सबको हुक्म किया कि अब खाना चाहिए । पाच बज चुके थे । दो घटे पहले जहा शव पडा था, जहा बैठकर आज सुबह महादेवभाई ने बापू के लिए रस निकाला था, वहीं बैठकर आज मैंने मौसम्बी का रस निकाला । बापू ने दूध और रस लिया । हम लोग सरोजिनी नायडू के कमरे में खाने को गये । टोस्ट, दूध, चाय वगैरा लिया, चायदानी पर नई 'टी कोज़ी' (Tea-cosy)—चायदानी का आवरण—पडी थी । महादेवभाई या कोई और सुबह चाय के लिए कभी-कभी जरा देर से पहुचा करते थे । सरोजिनी नायडू ने मुझसे कहा कि एक 'टी कोज़ी' बनादो तो चाय ठडी न हुआ करे । कल मैंने अपना एक पुराना रगीन ब्लाउज़ फाडकर 'टी कोज़ी' काटी । श्रीमती सीतलदास ने आॅर्थर रोड जेल से चलते समय थोडी रुई देदी थी । वही रुई भरकर 'टी कोज़ी' तैयार की । शाम की चाय के समय तक वह मेज पर पहुच गई थी । महादेव-भाई उस 'टी कोज़ी' को देखकर इतने खुश हुए कि उठाकर सिर पर पहनली । कहने लगे, "रग इतना ताजा है, इतनी अच्छी बनी है, मानो अभी बाजार से आई हो !" मैंने उनके सिर से वह खीचकर उतारली और कहा, "आप तो विदूषक बनरहे है !" अपनी मर्यादा में रहकर वह खुद खुश रहना और सबको खुश रखना चाहते थे ।

शाम को घूमने निकले । मैं और बापू दो ही थे । किंतु आभास ऐसा होता था, मानो महादेवभाई हमारे साथ-ही-साथ चल रहे है । क्या सचमुच उनकी आत्मा आज यहा भ्रमण कर रही होगी, अथवा बहुत पहले पुण्यलोक में पहुच गई होगी ?—भगवान ही जाने !

मेरे सिर पर फिर वही सवाल सवार था । मैंने बापू से कहा, "हृदय में एड्रेनेलिन दी होती तो महादेवभाई आज इस तरह न जाते ।" बापू कहने लगे, "नहीं, तेरे पास वह रहती भी तो मैं न देने देता ।"

एड्रेनेलिन में तो जीव-हत्या होती है । मैंने सोचा कि निरामिष बनावट भी तो होती है ! क्यो मैंने वह अपने साथ न रखी ? फिर विचार आया, अगर मेरे पास एड्रेनेलिन होती तो जैसे ही मुझे सूझता कि वही एक बचाने वाली चीज है, मैं बापू से बिना पूछे वह उन्हे देदेती, मगर बापू भी ठीक ही कहते थे । ऐसे सयोग तभी मिलते है, जब आयुष्य रहती है । भगवान को जो करना होता है, उसके साधन भी वह पैदा कर देता है—

"जैसी हो भवितव्यता, तैसी मिले सहाय।"

प्रार्थना हुई। महादेवभाई के बाद प्रार्थना कराने का काम मुज पर पडा। गला खराब था, तिस पर इतनी थकावट। भजन गाना, रामधुन चलाना, रामायण का पाठ करना, सब कठिन था। रामधुन मीराबहन ने उठाली। भजन और रामायण मेरे जिम्मे रहे। प्रार्थना के लिए जाने से पहले सिविल सर्जन आये— वही, जो महादेवभाई के देहात के बाद आये थे। जब चिता जलाकर लौटे तो मैंने भण्डारी को कई तात्कालिक आवश्यकता की दवाइयो की एक फेहरिस्त दी। वा को किसी भी समय कोरोनरी थ्राम्बोसिस (Coronary Thrombosis)* होसकता है, और बापू को कार्डिएक एस्थमा (Cardiac Asthma)। आज की घटना की तरह फिर गफलत में पकडे जाना मैं नहीं चाहती थी। साथ ही मुझे यह भी लगता है कि यहा की परीक्षा की घडी गई। अब फिर यहा ऐसी परीक्षा नहीं होगी। तो भी दवाइया मगवाली।

मुझे लगा, आज शाम को सिविल सर्जन बापू को देख जायें तो अच्छा हो, क्योंकि आज मैं इतना आत्मविश्वास खोबैठी हू कि अपने आपको निकम्मा महसूस करने लगी हू। मैंने भण्डारी से यह कहा। उन्होंने सिविल सर्जन को भेजा। वे वेचारे आये। हाल-चाल पूछकर और नाडी देखकर चले गये।

आठ-साढे आठ बजे बापू बिस्तर पर पडे। नौ बजे भण्डारी का सदेश मिला। महादेवभाई की पत्नी का पता पूछते थे। शव को स्नान कराने के बाद दोपहर को भण्डारी ने बापू से पूछा था कि क्या महादेवभाई के घर खबर भजना चाहते हैं? बापू ने कहा कि सरकार भेजनेदे तो तुरत भेजना चाहते है, मगर उनका सदेश तुरत सीधा और बगैर काट-छाट के जाना चाहिए। उन्होंने उसी समय तार का मजमून लिखा— चिमनलाल भाई के नाम। शुरू किया—Sorry, Mahadev died suddenly "खेद कि महादेव की अकस्मात मृत्यु होगई।" मगर फिर रुक गये। खेद क्यो? महादेवभाई अपने धर्म का पालन करते हुए गये हैं। इसलिए काटकर यह तार लिखा —

Mahadev died suddenly Gave no indication Slept well last night Had breakfast Walked with me Sushila jail doctors did all they could, but God had willed otherwise Sushila and I bathed body Body lying peacefully covered with flowers incense burning Sushila and I reciting Gita Mahadev has died yogi's and patriot's death Tell Durga, Babla and Sushila no sorrow allowed Only joy over such noble death Cremation taking place front of me Shall keep ashes Advise Durga remain Ashram but she may go to her

---

*हृदय की नाडियो मे रुकावट के कारण हृदय की नसो मे रक्त की कमी या रक्त न पहुचने की बीमारी।

people if she must　Hope Babla will be brave and prepare himself fill Mahadev's place worthily　Love—BAPU*

तार भण्डारी को दिया गया। बाद में बापू ने मुझको फिर भेजा और कहा, "उनसे दुबारा कहो कि तार ऐसा का ऐसा, तुरत और सीधा न जा सकता हो तो मुझे वापस लौटा दें। 'एक्सप्रेस' जाना चाहिए।" मैंने रसोईघर के पास जाकर भण्डारी को पकडा। वे एक अग्रेज पुलिस अफसर को तार दे रहे थे। मैंने उन्हे बापू का सदेश सुनाया। कहने लगे, "लेकिन यह बात मेरे हाथ में नहीं है।" मैंने कहा, "तार वापस देदीजिये।" भण्डारी बोले, "यह तो अब सीधा ही जारहा है। पुलिस अफसर को सौंप दिया है।" उन्होने फिर पुलिस अफसर से कहा कि तार अभी जाना चाहिए। मैंने दुबारा कहा, "यह जरूरी तार के रूप में जाना चाहिए— बिना कटे-छटे। वर्ना गाधीजी इसे भेजना नही चाहते।" वह तार लेकर चला गया। लेकिन जब रात को फिर पता मागा गया तो हमें आश्चर्य हुआ। बापू ने समझाया, "वह तार तो हमारी तरफ से गया था न? सरकार को अपनी तरफ से भी खबर भेजनी ही चाहिए! इसलिए अब पता मगवाया होगा।" हमने नाम-पता भेज दिया।

जब बिस्तर पर लेटी तो मेरी आख के सामने महादेवभाई की मृत्यु का ही दृश्य था। महादेवभाई के कमरे में से होकर सरोजिनी नायडू के गुसलखाने में जाना पडता था। उन्होने उस कमरे में दीपक रखने को कहा। जहा शव रहता है, वहा दस दिन तक दीपक रखने की प्रथा है।

बापू अपने बिस्तर पर पडे करवटें बदल रहे थे। बा रोज भीतर सोया करती थीं। आज बाहर सोईं। मैंने अपनी खाट बा को दी। महादेवभाई जिस खाट पर सोया करते थे, वह मुझे मिली। बापू कहने लगे, "तुझे डर लगता हो तो वह खाट मुझे दे दे और मेरी तू ले ले।" मगर मुझे महादेवभाई से डर क्यो लगने लगा? सोने से पहले मैंने महादेवभाई

---

*—महादेव की अकस्मात मृत्यु होगई। पहले जरा भी पता नही चला। रात अच्छी तरह सोये। नाश्ता किया। मेरे साथ टहले। सुशीला और जेल के डाक्टरो ने जो कुछ कर सकते थे किया, लेकिन ईश्वर की मर्जी कुछ और थी। सुशीला और मैंने शव को स्नान कराया। शरीर शाति से पडा, फूलो से ढका है, धूप जल रही है। सुशीला और मै गीता-पाठ कर रहे है। महादेव की योगी और देश-भक्त की भाति मृत्यु हुई है। दुर्गा बाबला और सुशीला से कहो, शोक करने की मनाई है। ऐसी महान् मृत्यु पर हर्ष ही होना चाहिए। अत्येष्टि मेरे सामने हो रही है। भस्म रख लूगा। दुर्गा को सलाह दो कि आश्रम मे रहे, लेकिन अगर वह जाना ही चाहे तो घर वालो के पास जासकती है। आशा है, बाबला बहादुरी से काम लेगा और महादेव का सुयोग्य उत्तराधिकारी बनने के लिए अपने को तैयार करेगा। सप्रेम,

—बापू

की मेज की दराज खोली और उसमें से एक कागज निकाला, जिस पर वे डायरी लिखते थे। छोटे-छोटे संक्षिप्त नोट लिखे थे। मैंने उसी कागज के नीचे १५ तारीख से डायरी लिखनी शुरू की। इस तरह १५ तारीख से डायरी नियमित शुरू हुई। उससे पहले की घटनाए तो बाद में अपनी याद से और महादेवभाई के नोट्स की मदद से मैंने लिखी है। यहा १५ तारीख की घटनाए भी असल डायरी पर से नकल की है। ब्यौरे की कुछ बातें उस रोज की थकान में मैंने नहीं लिखी थी। बाद में भाई के कहने से लिख डाली है।

: १० :

विषाद की छाया

१६ अगस्त '४२

२॥ बजे बापू उठे। मैं तो जागती ही थी। बापू क्षणभर भी नहीं सोये थे। मैं भी नहीं। बापू ने उठकर दतौन की। गरम पानी पिया। हमने प्रार्थना की। आज रविवार था। आठवें अध्याय में पढा कि जब सूर्य उत्तरायण होता है और शुक्ल-पक्ष होता है तब पुण्यात्मा देह छोडते है और फिर वे इस लोक में नहीं आते। आजकल शुक्ल पक्ष है और सूर्य भी उत्तरायण है!

प्रार्थना के बाद बापू आध घटे तक मुझसे बातें करते रहे। वे हमें शात कररहे थे और विपक्षियो का सामना करने की तैयारी करवारहे थे। मृत्यु के बारे में ज्ञान-वार्ता कर रहे थे। शायद भाई भी जावें तो उसके लिए मेरी मानसिक तैयारी करवारहे थे। मैंने कहा, "भले हम सब एक-एक करके चले जाय, पर आप अच्छे रहे और विजय-पताका फहराते हुए यहासे बाहर जाय, यही प्रार्थना आज तो हृदय से निकलती है।"

३॥। बजे बापू वापस बिस्तर पर गये। थोडी नींद ली। आज रात भर में उन्हे दो घटे की भी नीद नही मिली। मै भी प्रार्थना के बाद थोडी सोगई।

नाश्ते के बाद बापू चिता-स्थान पर गये। चिता अभी जलरही थी। अगारे धधकरहे थे। यह है हमारे प्रियतमो का अत!— मुट्ठी भर राख और अगार! प्रभु! धन्य हो तुम और धन्य है तुम्हारी लीला! एक सप्ताह पहले आज ही के दिन बापू और महादेवभाई आजादी की लडाई शुरू होने से पहले ही बबई में पकड लिये गए थे और आज महादेवभाई तो आजाद भी होगये। कौन कैद कर सकता है अब उनको?

बापू के कहने से चिता-स्थान पर खडे होकर बारहवें अध्याय का पाठ किया। "तुल्य निंदा स्तुतिर्मौनी' (निंदा और स्तुति को एक समान मानने वाला, मौन रखने वाला) पढते समय आख के सामने तुल्य निंदा स्तुतिर्मौनी महादेवभाई का शव पडा था। उस शव के चेहरे की अपूर्व शाति और कान्ति सामने मौजूद थी।

पाठ करके हम लोग वापस आये । बापू के लिए सुबह का साग बनाने का काम मीराबहन ने लेलिया, शाम का मैंने । रस निकालने का काम मेरा था । दोपहर को शाम के लिए साग चढाने नीचे रसोई-घर में गई तो भूरा और मगन मेरे पास आकर खडे होगये । बोले, "बहन, बडा गजब होगया ! हममें से कल किसीने खाया नही । जब कल फूल इकट्ठा करने को कहा गया, तो मैंने सोचा, माताजी बीमार थी, वे गई होगी । लेकिन जब हमें ऊपर बुलाया तो सच्ची बात का पता चला । बडा जुल्म हुआ है, बहन ! सभी कैदी और सिपाही कापते है ।"

सिविल सर्जन आज फिर आये । पूछ गये, क्या हाल है ? मैंने बताया कि बापू बहुत थके हुए है । कल की थकान और रात नींद का न आना, इसके कारण है । बापू की नाडी अटक-अटककर चलती थी (extra systoles), सो भी मैंने उनसे कहा । बेचारे क्या कर सकते थे ? कहने लगे, "मुझे आशा है कि दिन में कुछ नीद आयेगी और वे हल्कापन अनुभव करेंगे ।" इतना कहकर वे चले गये ।

हम सबको ऐसा लग रहा है कि महादेवभाई जिस 'लटकती तलवार' के डर से गये, वह तलवार उनके चले जाने के कारण हमारे सिर से अभी तो उठ-सी गई है । महादेवभाई के बलिदान ने बापू के उपवास को टाला है । बापू ने ऐसा कुछ कहा भी था, "महादेव का बलिदान कोई छोटी चीज नही है । अकेला भी वह बहुत काम करेगा ।"

सरोजिनी नायडू ने कहा, "अगर कभी किसीने दूसरे के लिए अपना जीवन दिया है तो वह महादेव है । यीशु प्रभु की तरह वह इसलिए मरे कि बापू जीसकें । मनुष्य दूसरे मनुष्य की इससे बढकर और क्या सेवा कर सकता है कि वह उसके लिए अपने प्राण ही न्यौछावर करदे ?"

शाम को घूमते समय बापू फिर चिता-स्थान पर गये । मुझे एक डिब्बी या बोतल लानेको कहा था । वे उसमें थोडी राख भरकर लाना चाहते थे । यो तो कल ब्राह्मण अस्थि, राख आदि इकट्ठा करने आवेगा ही, लेकिन कही रात में बारिश आगई तो राख का रग बिगड जायगा । इस विचार से बापू आज ही थोडी राख उठा लेना चाहते थे । मैंने अपनी स्वान स्याही की शीशी के साथ की गत्ते की डिब्बी लेली । चितास्थान पर उज्ज्वल, सफेद राख की छोटी-सी ढेरी पडी थी । बापू के कहने से मैंने सबसे सफेद राख जो वहा मिल सकती थी, अपनी उस डिब्बी में भरली । राख को मुट्ठी में लिया तो पता चला कि अभीतक उसमें जलते अगारे थे । एक चम्मच मगवाकर बिना अगारो वाली राख निकाली । तो भी छोटे-छोटे अगार आ ही गये, जिससे डिब्बी थोडी-सी जल गई । इन अगारो में से कुछ तो सचमुच अस्थिया थी, जो अगार-सी लगती थी ।

बापू ने डिब्बी अपने पास अपनी मेज पर रखी और उसमें से राख लेकर अपने माथे पर टीका लगाया । काल की गति क्या-क्या रग दिखाती है । तुलसीदासजी ने सच ही कहा है :

'जिन चरणन की चरणपादुका भरत रह्यो लव लाई ।
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई ।।
तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई ।।"

•

शाम को प्रार्थना के समय फिर कल का-सा हाल हुआ । मैं प्रार्थना में या बिस्तर पर आंख बंद कर ही नहीं सकती । करती हूं तो आंख के सामने मृत्यु-शय्या पर छटपटाते हुए महादेवभाई की तस्वीर ही सामने आजाती है ।

कटेली रात एक क्षण को भी नहीं सोसके। बेचारे को बहुत आघात पहुंचा है। किसीने कल्पना तक न की थी कि महादेवभाई इस तरह बात-की-बात में हमें छोड़कर चले जावेंगे ।

महादेवभाई के कपड़े इकट्ठे करके उनके बक्स में रखे । बापू ने बक्स का सामान उनके सामने रखने को कहा । 'बैटिल फॉर एशिया' नामक एक किताब थी । अगाथा हैरिसन द्वारा महादेवभाई को भेंट कीगई बाइबिल निकाली । ९ अगस्त का 'ईवनिंग न्यूज', 'पैसिफिक अफेयर्स' का एक अंक, गुरुदेव का 'मुक्तधारा' नामक नाटक, 'सिलवर स्ट्रीम', 'ए चाइनीज प्ले' और कुछ कपड़े, बस इतनी चीजें थीं ।

बापू कहने लगे, "इसमें तो छः महीने के अभ्यास का सामान है ।" बाइबिल पढ़ना शुरू किया । 'बैटिल फॉर एशिया' भी निकाली । 'मुक्तधारा' भी पढ़ना प्रारंभ किया ।

बापू मुझसे कहने लगे, "आज से, या जब से आई हो, तब से डायरी लिखना शुरू करदो ।" मैंने कहा कि कल से मैं लिखने लगी हूं । महादेवभाई की लिखी कुछ चीजें भी दिखाईं— नोट्स थे । बापू ने मेरी डायरी लेकर पढ़ी— एक-आध बात लिखना मैं भूल गई थी, उसकी ओर मेरा ध्यान दिलाया । जैसे, गीताजी का कितना पाठ किया था, वगैरा ।

१७ अगस्त '४२

आज तीसरा रोज है । बापू अच्छी तरह सोये । मैं आज भी नहीं सोसकी । मि० कटेली भी नहीं सोये । रात को ऊपर उनके टहलने की आवाज आरही थी ।

५ बजे बापू उठे । प्रार्थना की । नाश्ते के बाद चिता-स्थान पर गये । रात पानी की बूंदें आई थीं । राख का रंग काला पड़ गया था ।

मृत्यु के एक-दो दिन पहले महादेवभाई बकरी का एक चितकबरा बच्चा उठाकर बापू के पास लाये थे । वे उसे बहुत प्यार कर रहे थे । उसका मुंह चूम रहे थे । बच्चा बहुत सुंदर है । वह कुछ तो समझता होगा । जब हम चिता की जगह जाने के लिए नीचे आते हैं, वह आकर पांवों में लिपटने लगता है । मैं उसे उठाकर चितास्थान पर ले-गई । वहां मुझे बारहवें अध्याय का पाठ करना था (यह रोज सुबह का नियम बन

गया है) । बकरी का बच्चा भी जरा चिल्लाने लग गया था । मैं उसे छोडने लगी, मगर मीराबहन ने उसको मुझसे लेलिया । बाद में उन्होंने बताया कि पाठ शुरू होते ही वह इतना शात होगया था, मानो ध्यान लगाकर सुनरहा हो ।

स्नान के बाद बापू ने फिर महादेवभाई की राख का टीका लगाया । कह रहे थे, "यह राख मैं दुर्गा के पास लेजाऊगा । वह भले रोज इसका टीका लगाया करे ।"

ब्राह्मण आया हुआ था । बापू से पूजा, पिण्ड-दान, तर्पण इत्यादि करवाया । शांति-पाठ किया । सरोजिनी नायडू ने बाद में मुझे बताया कि पूजा करते समय बापू का चेहरा इतना गभीर और तना हुआ था कि देखा नही जाता था । मैं तो पूजा के समय पूजा की क्रिया को ही देखरही थी और शाति-पाठ को समझने की कोशिश कर रही थी । मैंने बापू की ओर ध्यान से नही देखा । २० मिनट में पूजा पूरी हुई । एक पिता के लिए अपने पुत्र की उत्तर-क्रिया करना बडे-से-बडे दु ख की बात होती है और बापू के निकट तो महादेवभाई पुत्र से भी अधिक थे । लेकिन बापू कौन साधारण पिता है ? कल कहरहे थे, "ईश्वर मुझे कैसा कसौटी पर कसरहा है! अगर मैं इन चीजो से विचलित होजाऊ तो मेरा काम कैसे चले ।"

दोपहर को खाने के समय बम्बई के गवर्नर का उत्तर आया । बहुत खराब था । भाषा भी उद्धत थी । वल्लभभाई को नही भेजा जासकता । अखबार वगैरा देने का भी अभी सरकार का कोई इरादा नही । यह उसका सार था । मैंने डरते-डरते पत्र बापू के सामने रखा—कौन जाने, उसका उन पर क्या असर होगा ? मगर इस उत्तर के लिए बापू की मानसिक तैयारी थी ।

आज सोमवार था । मौन था । दोपहर को मीराबहन ने कुछ पूछा । उत्तर में बापू ने लिखा, "मैं उपवास के बारे में नही सोच रहा । न यह सोच रहा हू कि बाहर क्या होरहा है । मैं तो अपने यहा के काम और अभ्यास वगैरा का ही विचार कर रहा हू ।" इन शब्दो से सबको बहुत आश्चर्य हुआ और आश्वासन भी मिला । महादेवभाई को बापू के उपवास की चिंता ही खाये जाती थी । उनके रहते बापू ने ये शब्द कहे होते तो उन्हे कितना चैन मिलता! शायद बापू के आज के इन शब्दो का कारण महादेवभाई की यह मृत्यु ही हो !

मृत्यु की घटना पर सोचती हू तो अनेक तरह के विचारो की आधी-सी मन में आने लगती है । निदान के बारे में तो कोई शक नही रहा । था तो स्टोक्स एडम्स सिन्ड्रोम (Stokes Adams Syndrom)*, लेकिन उसका कारण हम दावे के साथ नही बता सकते । फिर विचार आता है कि एड्रेनेलिन की सुई अगर सीधी हृदय में लगादी होती तो ! किंतु इस कोरे तर्क-वितर्क से फायदा क्या ? जो शक्य था, सो किया । जैसा कि आज बापू समझारहे थे, हमारी परिस्थिति में जितना कुछ होसकता था, हमने

*हृदय-सम्बन्धी एक विशेष रोग

किया। तो भी दिल से यह अरमान नहीं जाता कि ऐसे मरीज के लिए जितना होना चाहिए था, नहीं हुआ।

बापू ने मुझे 'मुक्तधारा' पढने को कहा। बोले, "पिछले पन्नो पर मैंने निशान लगाये है, शुरू में नहीं लगाये। तुम मेरे निशान देखकर शुरू के पन्नो में भी उसी तरह निशान लगा देना।" मैं 'मुक्तधारा' पढ गई, बहुत दिलचस्प है। बापू की फिलॉसफी उसमें भरी पडी है।

मालूम होता है, मि० कटेली ने मेरी यह बात याद रखी है कि हममें से कोई भी न रहे तो आपको यह चिता-स्थान बाबला को दिखाना है। आज उन्होंने चिता-स्थान के चारो कोनो पर खूटिया गडवाकर डोरिया बधवादी थीं, ताकि निशान रहे कि कौनसी जगह थी।

आज मैंने मालिश के समय बापू से पूछा, "महादेवभाई शायद यहीं घूमते होगे। मृत्यु के बाद भी वे आपसे दूर नही जासकेंगे।" बापू कहने लगे, "तू महादेव को पुण्यात्मा मानती है या नही?" मैंने कहा, "हा।"

"तो उसकी आत्मा क्यो भटकेगी?"

मैंने कहा, "तो क्या आप मानते है कि वे कही नया जन्म लेने को भी चले गये? कई लोग कहते है कि जब एक शरीर छूटता है तो दूसरा तैयार ही रहता है।"

बापू कहने लगे, "नही, कहा यह जाता है कि स्थूल शरीर छूट जाने पर आत्मा लिंग शरीर लेकर इहलोक से अन्य लोको में चला जाता है। बहुत अरसे तक वहा रहकर फिर समय आने पर जन्म लेता है।"

: ११ :

समाधि यात्रा

१८ अगस्त '४२

सुबह-शाम बापू महादेवभाई की समाधि पर जाते है। बापू इसे तीर्थयात्रा मानते है। न जाय, तो बेचैन होउठें। जब बारिश होती रहती है तब छाता लेकर भी जाते है। मैं थोडे फूल लेजाती हू। आखिरी दिन घूमते समय महादेवभाई बेलिया के पौधो को कलियो से लदा देखकर बोले थे, "अब फूल खूब आयेंगे।" ये फूल अब खिलरहे है। सो थोडे लेजाते हैं। जीतेजी हम लोग इन्सान की कदर नही करते। मृत्यु के बाद सभी श्रद्धाजलि चढाने को तैयार होजाते है। महादेवभाई की कीमत तो हम सब उनके जीतेजी भी जानते थे, मगर उनके जाने के बाद अब पता चलता है कि शायद उनके जीवन-काल में हमने उनकी पूरी कीमत नही समझी थी।

शाम को सिविल सर्जन आये। बापू गुसलखाने में थे। इंतजार करते रहे। मैंने यहा के मेडीकल स्कूल के बारे में पूछा। कुछ बताते रहे। फिर बातो-ही-बातो में कह गये, "इस वक्त हमारा ध्यान पढाई में नहीं है। पढाने में कोई मजा नहीं आता।" हम समझ गये। जब विद्यार्थी ही न आय, प्रोफेसर को लेक्चर में क्या रस आसकता है! बापू आये। "आप कैसे हैं ?" इतना पूछकर सिविल सर्जन चले गये।

हमारे पास कैलेण्डर नहीं था। मगर बापूजी ९ अगस्त को रविवार के दिन पकड़े गये थे। उस पर से उन्होने मुझे कैलेण्डर बनाने को कहा था। आज दोपहर मैं बनाने बैठी। बापू ने भी मदद दी। मुझे तीन बार कैलेण्डर बनाना पडा। कहीं-न-कहीं कोई भूल रह ही जाती थी। आखिर प्रार्थना के बाद कैलेण्डर तैयार हुआ। कैलेण्डर की खास जरूरत तो बा को एकादशी वगैरा बताने के लिए थी।

१९ अगस्त '४२

महादेवभाई की समाधि पर मैं रोज फूल लेजाती थी। आज मि० कटेली ने सिपाही से कहकर फूलो की एक पत्तल सजवाकर तैयार रखी थी। मि० कटेली पर भी महादेवभाई के आकर्षक व्यक्तित्व ने खासा प्रभाव डाला था। अपने फर्ज को अदा करते हुए वह जितनी सहानुभूति हम लोगो से रख सकते हैं, रखते हैं। बापू कह रहे थे, "महादेव की मृत्यु के समाचारो से बहुतो के दिल टूट जायेंगे।"

यह अक्षरश सच था। जो उनके सम्पर्क में इतने कम आये थे, उनको उनके जाने से इतना सदमा पहुचा है तो उनके निकट के मित्रवर्ग का और सगे-सम्बन्धियो का क्या हाल हुआ होगा, कौन कह सकता है! बापू रोज स्नान करके महादेवभाई की राख का टीका लगाते हैं। बा कह रही थीं, "शकर तो विभूति लगाते थे, लेकिन मनुष्य को ऐसा करते देखा नहीं था।" मगर बापू तो बापू ही हैं न!

हम सुबह समाधि पर बारहवें अध्याय का पाठ करते हैं। पाठ करते समय आख के सामने निद्रा में चिता पर सोते हुए महादेवभाई खडे होजाते हैं। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता ह, मानो वे भी हमारे साथ खडे पाठ कर रहे हैं! काम करते समय भी अक्सर उनकी मौजूदगी का आभास होने लगता है। अच्छा मालूम होता है। महादेवभाई की स्मृति हमारे सामने हमेशा ताजी रहे, ताकि हम उनके जीवन से सदा सबक सीखते रहे। उनकी अनन्य सेवा और भक्ति सदा सबके लिए पदार्थ पाठ रूप बने!

कई बार विचार आता है, "कौन जाने, भाई को अभीतक यह खबर भी मिली होगी या नहीं!"

शाम को घूमते समय बापू ने कहा, "महादेव के नाम पचास हजार रुपये जमा हैं। वे जनता के हैं। महादेव से मैंने उसका टस्ट बना देने को कहा था, मगर वह कर नहीं पाया। मैंने हमेशा कहा है कि हमें जनता के पसे को एक क्षण के लिए भी अपने पास नहीं रखना चाहिए। कौन जाने, कब मृत्यु आदबाये! इसके मामले में ऐसा ही हुआ न? अब मुश्किल पैदा होगी। शायद महादेव अपने कागजो में इसके बारे में कुछ लिख गया हो।

यहा उसके जितने कागज़ हैं सब देख लेना। शायद रामेश्वरदास, वावला और दुर्गा से भी इस बारे में कुछ पता चले। उनसे भी पूछना। आज मैं तुम्हें यह सब इसलिए कह रहा हूं कि कहीं बाद में इसे भूल न जाऊं। हममें से कोई भी बाहर न जासके तो दूसरो की जानकारी के लिए इस सम्बन्ध का एक नोट हमें अभी तैयार करके रखना चाहिए।"

आज मथुरादासभाई का पत्र आया। महादेवभाई की मृत्यु से उन्हें बहुत सदमा पहुचा है। लिखते हैं, "धन्य जीवन उनका! किंतु अत्यन्त वेग से पार किया। आपके निजी सम्पर्क में उनका स्थान कौन लेगा? परम कारुणिक भगवान बुद्ध का एक ही शिष्य था, वैसे ही महादेव आपके रहे।" मथुरादासभाई के अक्षर अच्छे थे। बापू कहने लगे, "बीमार होने से पहले मथुरादास के अक्षर जितने अच्छे होते थे, उतने इस पत्र में हैं।" मैंने कहा, "हा, आदमी को जब कोई सख्त आघात पहुचता है तो क्षण भर के लिए उसके शरीर में विशेष शक्ति आजाती है।" ईश्वर की लीला अपार है!

२० अगस्त '४२

आज सवेरे नहाने के बाद मैं और बापू फूल लेकर समाधि पर जाने को निकले। मीराबहन भी सवेरे तो आती ही हैं और मि० कटेली को तो दोनो समय कैदियो के साथ आना ही होता है। मि० कटेली थोडी हिचकिचाहट के साथ कहने लगे, "तीन दिन तक यहा आने की इजाजत भण्डारी साहब ने दी थी। अब हर रोज यहा आने में दिक्कत पेश होगी।" इन शब्दो से बापू को बहुत आघात पहुचा। मगर वे तो विशाल हृदय हैं, पीगये। बोले, "अच्छा, तो आज का यह आखिरी आना है!" मि० कटेली को भी बुरा लगा होगा। बोले, "मैं फूल वहा भिजवाता रहूगा। आप कहेंगे तो खुद जाकर चढा आया करूगा। भण्डारी ने आज मुझको अपने घर बुलाया था, क्योकि फोन पर ऐसी बात हो नहीं सकती थी। कहने लगे, 'इस तरह हर रोज तार के बाहर जाने देने में आपत्ति उठ सकती है। इस बार सरकार का रुख दूसरे ही ढग का है।'" बापू बोले, "हा, सो तो मैं जानता हू। मैं आपको या भण्डारी को मुश्किल में नहीं डालना चाहता। लेकिन अगर भण्डारी को आपत्ति न हो तो मैं इस बात को अवश्य ही आगे बढाना चाहूगा। जरा उल्लेख तो रह जाय कि वे किस हद तक जाते हैं। आपने इस समाधि के चारो ओर पत्थर रखवाये हैं, लेकिन इतना मैं आपसे कहदू कि इस पर भी आपत्ति की जासकती है।"

मि० कटेली चुपचाप सुनरहे थे। बापू फिर कहने लगे, "मैं तो यह मानता हू कि मैं जो कुछ कहरहा हू, सो ईश्वर मुझसे कराता है। नही तो, मैं क्या हू—एक दुर्बल आदमी! मेरी क्या शक्ति कि इतने बडे साम्राज्य के विरुद्ध लड सकू! और हिन्दुस्तान की प्रजा की क्या शक्ति, जिसके पास लाठी तक नहीं!"

मि० कटेली ने समाधि के चारो ओर पत्थरो की छोटी-छोटी दीवार खडी करदी है। चिता की जगह पर पत्थर रख दिये हैं। बा उसे देखकर बोल उठी, "यह तो कब्र का आकार होगया।" सब हस पडे। बात ठीक थी। आकार से कोई भी उसे कुछ समझ सकता था, लेकिन असल में तो उस जगह की निशानी रखने के लिए ही

यह किया गया है।

२१ अगस्त '४२

आज बापू ने लिखकर बताया कि सोमवार छ बजे तक का मौन लिया है। सब मिलाकर ६१ घंटे का मौन होगा। बुरा लगा, मगर कुछ कहना फिजूल था। प्रार्थना के बाद बापू सोगये।

नाश्ते के बाद हम रोज की तरह फूल लेकर चले। तारो वाला दरवाजा खुला। मगर हम उसके बाहर नहीं गये। सिपाही फूलो का पत्ता लेगया। दरवाजे के इस पार खडे होकर हमने गीताजी का पाठ किया। शाम को भी फूल लेकर गये। इस समय दरवाजा भी नही खुला। तार में से ही सिपाही फूल लेगया।

बापू के मौन से दम घुटने लगा है।

शाम को बकरी का दूध निकालना सीखा। मेरे पास अब खासा काम होगया। सवेरे नाश्ता तैयार करना, घूमने के बाद सुबह का साग चढाना, बा की मालिश, बापू की मालिश, कपडे धोना, बापू का खाना लाना, बरतन धोना, दोपहर को बापू के पैर मलना, दोपहर का साग चढाना, शाम को बकरी का दूध निकालना, रस निकालना, बरतन धोना, रात को फिर बापू के सिर और पैरो की मालिश करना, दबाना वगैरा। मैंने खाना लाना तो शाम को ही शुरू कर दिया है। दिन भर काम में जाता है, यह मुझे अच्छा लगता है। न निकम्मे विचारो के लिए समय रहता है, न निकम्मी बातो के लिए! घूमते समय सुबह-शाम महादेवभाई की ही बातें होती रहती है। बापू से पहले जाकर महादेवभाई उनके पूज्य बन गये हैं। भगवान भी भक्त के वश में रहते है। फिर बापू भक्त की समाधि को प्रणाम करें इसमें आश्चर्य की क्या बात है!

आज दोपहर को 'सिलवर स्ट्रीम' पूरा किया।

बा कहरही थी, "देखो, महादेव गये। ब्राह्मण की मृत्यु हुई, अपशकुनी है न! इतनी बडी ताकत के खिलाफ बापू लड रहे है, कैसे जीतेंगे!" बापू ने सुना तो कहने लगे, "मै इसे शुभ शकुन मानता हू। शुद्धतम बलिदान हुआ है, इसका परिणाम अशुभ नही हो सकता।"

: १२ :

पुण्यस्मरण

२२ अगस्त '४२

आज महादेवभाई को गये हफ्ता पूरा हुआ। आज सरोजिनी नायडू भी तार तक आईं। उनकी तबीयत अच्छी नही रहती, इसलिए वे रोज नीचे नही उतरती। हफ्ते में एक बार उतरने का विचार किया है।

वापू का मौन था। मैंने आज २४ घटे का उपवास किया। गीताजी का पारायण भी किया। गीताजी के पारायण का मत्र मुझे महादेवभाई से मिला था। विचार है हर शनिवार को उपवास और गीताजी का पारायण करूगी।

अणे साहव का समवेदना का तार आया। वापू वोले, "हजारो तार और खत आये होगे। उनमें से एक मथुरादास का खत और अणेजी का तार हमें दिया है, क्योकि मथुरादास मेयर रह चुके है, वम्वई सरकार के सव लोगो को जानते है और अणेजी तो आज सरकार के ही है।"

वापू का मौन था। वातावरण वहुत ही दम घोटनेवाला-सा वन गया है।

'वीमन कॉल्ड वाइल्ड' ('Women Called Wild') पढरही थी। हालिदे हदीद का वर्णन वापू को पढकर सुनाया। अच्छा था।

२३ अगस्त '४२

आज वापू को यहा आये पूरे दो हफ्ते हुए। महादेवभाई ने तो यहा एक हफ्ता भी नहीं विताया!

आज भी वापू का मौन है। अच्छा नही लगता। शाम को ८ वजे वापू का रक्त-चाप लिया। ठीक था— १५६/९६, नाडी ६६

आज सुवह कलेक्टर और प्रॉल नाम के नये सिविल सर्जन आये। दोनो मुह कुप्पा किये हुए थे। यत्रवत पूछते फिरते थे— "आप कैसे है?" सरोजिनी नायडू ने उत्तर दिया, "मेरी सेहत हस्व मामूल है।"

वस, उन्होने वाक्य पकड लिया। हरएक को पूछने लगे, "क्या आपकी सेहत हस्व मामूल है?" वापू से भी यही पूछा। सरोजिनी नायडू ने तो अपना कमरा सजाया था। नये फूल रखे थे। मगर वे लोग न एक मिनट के लिए कमरे में वैठे, न कोई वात की। सरोजिनी नायडू को वुरा लगा। वहा हरएक को उनका वरताव वडा वुरा लगा।

दिन भर एक ही विचार आता रहता है भाई, दुर्गावहन और वावला के क्या हाल होगे? भाई को कैसा लगता होगा? इस युद्ध का क्या नतीजा होगा? इसमें किस-किस की अतिम आहुति पडेगी? सव कुछ होने के वाद भी आखिर वापू विजय हासिल करें, तो वस है।

२४ अगस्त '४२

आज दस दिन पूरे हुए। सुवह-शाम हम फूल लेकर तार के पास जाते और वहा खडे रहते है। सिपाही फूल लेजाकर समाधि पर रख आता है। फूल हवा से उड जाया करते थे, इसलिए उन्होने सिर और पैर दोनो ओर पत्थर खडे करके वहा छोटी कदरा-सी वनादी है। एक दृष्टि से देखें तो ऐसा मालूम होता है, मानो वह महादेव का मदिर हो! दूसरी तरफ से देखने पर ऐसा लगता है कि वहा कोई शव पडा है, जिसका सिर और पैर उठे हुए है। तार और चिता-स्थान के वीच एक-दो झाडिया थी, जिनके कारण नजर चिता तक पहुच नही सकती थी। मि० कटेली ने उन्हे कटवा दिया है। अव तार के

पास से समूचा दृश्य नजर आता है। भविष्य के किसी चित्रकार के लिए बापू का तारो के भीतर से महादेवभाई को पुष्पाजलि चढाना चित्रकला का एक खासा अच्छा विषय होगा।

शाम को ६ बजे बापू का मौन छूटा। ६१ घटो के बाद! बहुत अच्छा लगा।

मेरे मन में आज यह विचार आरहा था कि दैव ने महादेवभाई को दस-पद्रह वर्ष और दिये होते तो उसका क्या बिगड जाता! बापू के साथ घूमते समय यही उद्गार मेरे मुह से सहज ही निकल गया। बाद में शाम को बापू ने कहा, "महादेव का काम पूरा होचुका था। उसने ५० वर्ष में १०० वर्ष का काम पूरा करलिया था। वह और क्यो ठहरता? भगवान उसे और क्यो ठहरने देता?"

मि० कटेली आज खबर लाये कि हम लाइब्रेरी से किताबें लेसकते है। पहले हमें कहा गया था कि नही लेसकते। बापू कहने लगे, "बाद में उन्हे शर्म लगी होगी कि वे किस हद तक जारहे हैं!"

आज भी भाई के आने की कोई खबर नही मिली। महादेवभाई के जाने के बाद लगता था कि अब भाई जल्दी ही आजायगे। मगर जैसे-जैसे दिन बीतरहे हैं, उनके आने की आशा कम होरही है। अदर से चिता भी होती है, कौन जाने, उनका क्या हाल होगा? कही उन्होने उपवास वगैरा तो नही शुरू कर दिया है, जो ये लोग उन्हे ला नहीं रहे?

२५ अगस्त '४२

कुछ दिनो से बापू के लिए साग ऊपर पकाना शुरु कर दिया था। मगर कोयला कम है, इसलिए आज से फिर नीचे रसोईघर में पकाना शुरू किया है। महादेवभाई तो वहीं से पकाकर लाते थे। सवेरे मै मालिश में होती हू। सब्जी काटकर बरतन में भर देती हू, बाद में कैदी रसोइया उसे लेजाकर चढा देता है। दो-चार दिन मै सुबह आग वगैरा देखने गई थी। अब तो बापू की मालिश से निपटने के बाद जब वे कमोड पर जाते हे, मै साग देख आती हू। बापू जब स्नान करके निकलते है तब कैदी रसोइया सब्जी ऊपर लेआता है। मै उस समय स्नान-घर में होती हू। बा आज कह रही थी, "देखो न, अब कैदी बापू का खाना लाते हैं। महादेव थे तो खुद लाते थे।"

कल मै रातभर सो नही सकी। एकाएक विचार आया—आज बापू के पास पडे हैं। मगर कौन जानता है, यह कितने दिन रहनेवाली चीज है? इस विचार ने रात के अधेरे में उग्र रूप धारण कर लिया। महादेवभाई की मृत्यु का दृश्य तो अभीतक आखो के सामने से हटता ही नही। सो इन दोनो चीजो ने मेरी नीद खाडाली।

घूमते समय अभीतक महादेवभाई की ही बातें हुआ करती हैं। आज बापू कहने लगे, "अब तुम्हे इस बारे में अधिक सोच-विचार नही करना चाहिए। न महादेव की, न हमारी इस लडाई की और न मेरी ही चिता करनी चाहिए। मै जान-बूझकर मरना नही चाहता। लेकिन ऐसी कोई परिस्थिति आ ही जाय तो कहा नहीं जासकता कि क्या करूगा। मै चाहता हू कि तुम कुछ विचार करो। लेकिन उसे जबतक कार्यरूप में परिणत

न किया जाय, वह निकम्मा है। इसलिए मैं चाहता हू कि तुम कुछ लिखो। मैंने पहले भी तुम्हे एक बार कहा था कि एक दफा 'मा ने शिखामण' (मा को सीख) नाम की गुजराती की एक पुस्तक मेरे देखने में आई थी। अच्छी पुस्तक थी। उस तरह की कोई चीज तुम्हे लिखनी चाहिए, जिससे बहनो और लड़कियो को स्वास्थ्य का आवश्यक ज्ञान मिल जाय। मैं खुद भी लिखना शुरू करनेवाला हू। नोटबुक मगवा लेना।"

२६ अगस्त '४२

आज भण्डारी आये। कहने लगे, "आप लोग जो किताबें मगवाना चाहे, मुझे बतायें। मैं खरीद लूगा। बाद में वे जेल-लाइब्रेरी के काम में आजावेंगी।" साथ में बहुत-सी किताबें और कुछ स्वास्थ्य-सबधी अखबार भी लाये थे।

शाम को बापू बिस्तर पर लेटे कि तभी मि० कटेली बम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी का भेजा एक हुक्मनामा लाये। उसमें लिखा था कि बापू को अखबार मिल सकते है। वे फेहरिस्त भेजें, और हम लोग अपने घर के लोगो को घरेलू विषयो पर पत्र लिख सकते है।

बापू रात ठीक तरह से सो नहीं पाये। जिस शर्त पर पत्र लिखने की इजाजत आई थी, वह उन्हे मजूर नहीं है।

बापू ने आज 'आरोग्य नी चावी' की प्रस्तावना लिखी। यह बापूजी की पुरानी किताब 'गाइड टु हेल्थ' ('Guide to Health') की नई आवृत्ति होगी। मुझसे कहने लगे, "मैं जो लिखता हू, सो तुम्हे पढ जाना है। कुछ सुझाव देना हो तो देना। मतलब यह कि जो काम महादेव करते थे, सो सब तुम्हे करना है। और यह तो तुम्हारा विषय भी है। इसे तुम महादेव से भी ज्यादा अच्छी तरह कर सकोगी।"

आज महादेवभाई होते तो अखबार मिलने की खबर से और इस बात से कि बापू एक किताब लिखने लगे है कितने खुश होते।

बा की तबीयत खूब अच्छी है। बापू के साथ सुबह-शाम आधा-पौन घटा तेजी से घूम लेती है, मगर दम फूलने लगता है। मैंने एक-दो बार कहा भी कि यह अच्छा नहीं। कम घूमें या धीमे घूमें, मगर बा या बापू कोई भी सुनने को तैयार नहीं।

मेरी आख में आज बहुत दर्द रहा।

२७ अगस्त '४२

आज बापू ने अखबारो की फेहरिस्त सरकार को दी। रोजाना, हफ्तावार और माहवार सब मिलाकर १६ अखबारो के नाम फेहरिस्त में थे। दोपहर को बम्बई सरकार के नाम पत्र लिखा कि वे बरसो पहले से गृहस्थ मिटाकर आश्रमवासी बन चुके थे। इसलिए सरकार की शर्त पर पत्र लिखने की इजाजत का वे कोई उपयोग नहीं कर सकते। पत्र में भाई का भी जिक्र किया था। लिखा था, "प्यारेलाल को आप मेरे पास भेजने को तैयार थे, मगर अभीतक उन्हे भेजा नहीं है और तिस पर मैं उन्हे पत्र भी न लिख सकू तो पत्र लिखने की इजाजत मेरे किस काम की? दुर्गाबहन वगैरा को मैं पत्र न लिख सकू, वल्लभ-

भाई को जो मेरे मरीज थे, उनकी सेहत के बारे में न पूछ सकू तो और किसको लिखू ?"

रात वाइसराय का उत्तर आया। भाषा मीठी थी, मगर असल में जवाब कोरा इन्कारी का था। मीराबहन भाषा को सराहने लगीं। बापूजी को भी मीठी भाषा अच्छी तो लगी, मगर हम जानते है कि ये लोग जहा बिना कुछ खर्च किये मीठी भाषा का उपयोग कर सकते है, कर लेते है।

२८ अगस्त '४२

बापू ने अरबी की भी प्राइमर और उर्दू की दो किताबें जेल से मगवाई है। रोज अरबी, उर्दू, कुरान-शरीफ और बाइबिल का नियमित अभ्यास करते है। कभी-कभी उर्दू पढते समय मुझे भी अपने साथ बैठा लेते है। आज उन्हे थोडी इमला लिखवाई।

घूमते समय भी बापू किसी विचार-धारा में ही मग्न रहे, यह अच्छा नहीं लगता, क्योकि दिन में भी वे प्राय चुपचाप ही बैठते हैं। मगर मै बातें भी क्या करू ? महादेव-भाई तो बहुत कुछ जानते थे। मेरा ज्ञान ही कितना है! सो आज सवेरे घूमते समय गीताजी के बारहवें और तेरहवें अध्याय के श्लोको का अर्थ कर गई।

शाम को घूमते समय मि० कटेली साथ थे। बापू उन्हे चम्पारन की बातें सुनाते रहे। उन्होने थोडे में चम्पारन के सत्याग्रह का सारा इतिहास उन्हे सुना दिया। हिन्दुस्तान में वह उनकी पहली लडाई थी।

शाम को प्रार्थना के बाद रामायण का कही कोई अर्थ समझ में नहीं आता तो बापू से पूछ लेती हू। वे बहुत रस के साथ बताते है। कह रहे थे, "रामायण तो हमारी खूराक है, उसकी भाषा इतनी मधुर है कि मै उससे कभी थकता ही नही।"

आज सुबह नल का पानी बद होगया था। इसलिए बापू ने रात को सोने से पहले स्नान किया। इससे सोने में कुछ देर होगई।

बा की छाती में कुछ दर्द है। आज घूमने नही गई। कल मेरे रोकने पर भी वे बापू के साथ ५५ मिनट तक तेजी से घूमी थी। शायद यह दर्द उसीका नतीजा हो।

२९ अगस्त '४२

बापू गुड खाया करते हैं। बाजार के गुड पर मक्खी वगैरह बैठती है, इसलिए उसे गरम करके शुद्ध करने है। उसमें मिट्टी, घास वगैरा के टुकडे भी पाये जाते हैं। इसलिए पहले उसे पानी में घोलकर छान लेते है, फिर पकाकर पानी सुखा देते है। साफ भी होजाता है, शुद्ध भी। आज मैंने पानी की जगह दूध डाला, अच्छी खासी टॉफी* बनगई।

मुझे पढने के लिए बहुत कम समय मिलता है। सुबह प्रार्थना के बाद न सोऊ तो एक घटा मिल सकता है।

---

* एक अग्रेजी मिठाई

आज शनिवार है। महादेवभाई को गये दो हफ्ते पूरे हुए। मैं उपवास करना चाहती थी, मगर बापू ने रोक दिया। बोले, "ऐसा करके हम मृत व्यक्ति के साथ न्याय नहीं करते। एक तरह से हम उसे बाव लेते हैं।" बाद में महादेवभाई की मृत्यु के क्या-क्या कारण होसकते थे, इसकी चर्चा करते रहे। इसलिए आज गीताजी का पाठ नहीं होसका। मुझे याद आया कि ऐसे ही एक दिन जमनालालजी बैठे थे। कहने लगे, "यह पुनर्जन्म की ही कोई बात होगी, नहीं तो कहा तुम, कहा हम और कहा बापू!" सच है। कैसे हम सब इकट्ठे हुए।

रात भर पानी बरसा था। सुबह भी थोडा बरसता था। फिर भी बापू महादेवभाई की समाधि पर पुष्पाजलि चढाने गये ही। जाना तो कटीले तारो की हद तक ही था। वहा छातो के नीचे खडे-खडे गीताजी का पाठ किया। फिर वापस आकर ऊपर बरामदे में घूमे।

आज रसोइया मगन और भूरा दोनो नहीं आये। उन्हे उनकी मुद्दत से पहले ही छोड दिया गया था। जेल में राजनैतिक कैदियो के लिए जगह की जरूरत थी।

: १३ :

महादेवभाई के बाद

३० अगस्त '४२

आज बापू को यहा आये तीन हफ्ते पूरे हुए। जैसे-जैसे दिन जाते है, महादेवभाई की कमी और अधिक महसूस होती है। बाहर जाने पर और भी होगी।

आज फिर कलेक्टर और सिविल सर्जन आये। सरोजिनी नायडू कहती थीं कि आज वे कुछ अधिक स्वाभाविक थे।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "छ महीनो के अदर हमें इस जेल से बाहर निकलना ही है। हमारी लडाई सफल हुई तो भी, और लोग हारकर बैठगये तो भी। मै नहीं जानता, लोग क्या करेंगे। लेकिन मै यह जानता हू कि लोग लडाई के लिए तैयार नहीं थे। हमने तैयारी की ही नहीं थी, लेकिन अहिंसा का काम करने का रास्ता दूसरा ही होता है। इसलिए हमें निराश होने का कोई कारण नहीं। हम नही जानते कि ईश्वर ने क्या सोच रखा है। जो भी हो, लेकिन जितने आज इस लडाई के लिए निकल पडे है, उनकी मर मिटने की तैयारी होनी ही चाहिए। वे आजाद हुए बिना चैन नहीं लेंगे। अगर आजादी के लिए लडते-लडते वे खत्म भी होगये तो खुद तो आजाद हो ही जायगे।"

मैंने पूछा, "उस हालत में हम लोगो को सरकार का सामना किस तरह करना होगा, जिससे या तो उसे हिन्दुस्तान को आजाद कर देना पडे या हमीं को खत्म कर डालना

पडे ?"

बापू कहने लगे, "सत्याग्रह करने के अनेक रास्ते होसकते है । अगर सचमुच हम मुट्ठी भर लोग ही सत्याग्रह करने वाले रह गये तब तो वे लोग हमें चुन-चुनकर मार डालेंगे ।"

मैंने कहा, "हा ठीक है, मगर यह सब तो छूटने के बाद की बातें हुई न ?"

बापू कहने लगे, "छूटे बगैर हम रह नही सकते । बिना मुकदमा चलाये वे बरसों तक हमें जेल में बद करके रख नही सकते । और अगर मुकदमा चलाते है तो किस बुनियाद पर चलायेंगे ? तुम्हे किस बिना पर पकडा ? बा को किस बिना पर पकडा ? उनके पास मुकदमा चलाने के लिए तो कोई सामान ही नही । क्या यह कहेगे कि तुम लोग सभा में जाकर भाषण करने का विचार कर रहे थे ? इरादे को जबतक कार्यरूप में परिणत न किया जाय, गुनाह नही माना जासकता ।"

३१ अगस्त '४२

आज बापू का मौन था । मौन के दिन वातावरण बहुत उदास-सा बन जाता है । विषाद तो सचमुच महादेवभाई के जाने से ही छाया हुआ था । बापू के मौन के दिन वह और भी गहरा लगने लगता है ।

शाम को मि० कटेली खबर लाये कि सरकार ने अखबारो की फेहरिस्त मजूर कर ली है । उन्होंने मुझसे उसकी एक और नकल मागी, ताकि वे अखबारवालो को लिखकर उन्हे मगा सके । बापू ने आठ अगस्त से लेकर इधर के सब अखबार मगाने को कहा ।

१ सितम्बर '४२

आज से नया वक्त शुरू होगया है । घडिया एक घटा आगे करदी गई है । कारण यह बताया जाता है कि लोग काम से जल्दी लौटा करे । 'ब्लैकआउट'* के दिनो में इससे लोगो को सुभीता रहेगा । यहा बैठे तो यह परिवर्तन निकम्मा-सा लगता है, इस लिए हमारी घडिया सब पुराने वक्त के अनुसार चलरही है ।

दोपहर को आज का 'टाइम्स आव इण्डिया' और 'बॉम्बे क्रानिकल' आये । टाइम्स के पाच-छ पुराने अक भी आज मिले, बाकी सब बाद में आयेंगे । अखबारो ने काफी वक्त लेलिया । मालूम होता है, जनता ने हिसा तो की है मगर उनकी जिम्मेदारी सरकार की अपनी है । जब सब नेताओ को पकड लिया गया तो लोगो को काबू में कौन रखता ?

मैंने पूछा, "बाहर निकलकर हम लोग क्या करेगे ? " बापू बोले, "तब की बात तब सोचेगे ।"

एक दिन मीराबहन ने कहा था, "यहा से बाहर निकलने पर क्या आप यह

---

*लडाई के दिनो मे हवाई जहाजो के डर से रात को बत्तिया बद रखने का नियम

आजादी के आखिरी युद्ध की घोषणा

(कांग्रेस महासमिति के ८ अगस्त १९४२ के ऐतिहासिक अधिवेशन में बापू के साथ महादेवभाई का अन्तिम चित्र)

महादेवभाई   पुत्र नारायण (बाबला)   श्रीमती दुर्गाबहन

महादेवभाई . परिवार के साथ

बाबला ने कहा, “काका, अब हम आजाद हो गये   बापूजी ने कह दिया है। अब हम आपकी नही मानेंगे।” पृष्ठ १०
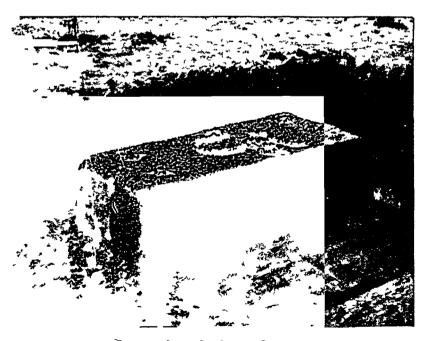
महादेवभाई की समाधि

“या तो भारत आजादी प्राप्त करेगा या महादेव के पास मेरी भी समाधि बनेगी।”—बापू, पृष्ठ ७१

चाहेंगे कि मैं जैसे गिरफ्तारी से पहले दौरा कर रही थी फिर वैसे ही करूँ ?"

बापू ने उत्तर दिया, "मेरा खयाल है कि अब से छ महीने बाद हिन्दुस्तान एक बिलकुल बदला हुआ देश होगा। आज मैं नहीं कह सकता कि उस समय मैं तुमसे क्या कराना चाहूँगा।"

२ सितम्बर '४२

आज भण्डारी आये। मैंने उनसे भाई की खबर पूछी। उन्होंने बताया कि वे अभी आर्थर रोड जेल में ही है। उनकी तबीयत अच्छी है। मैंने कहा, "जैसे-जैसे दिन बीतते जाते है, उनके यहा आने की सभावना तो कम ही होती जाती है न ?"

वे बोले, "नहीं, ऐसा कुछ नही है।"

आज 'बॉम्बे क्रानिकल' के दो-चार पुराने अक मिले। सरकार लोगो पर खूब जुल्म कर रही है। डर है कि लोग इससे और ज्यादा हिंसक बनेंगे। बापू को लोगो की हिंसा से दुख होता है। मगर वे यह भी मानते है कि सरकार ने उसे खुद मोल लिया है। इसलिए चुप बैठे है। दूसरी बात यह भी है कि अखबार आज सरकार के कब्जे में है। इनमें इकतरफा बयान ही ज्यादा आवेगे। ऐसे अखबारो के बयानो पर कितना विश्वास किया जासकता है, यह निश्चय करना भी कठिन है।

दोपहर को बापू मुझसे कहने लगे, "तुम्हे अपने एक-एक मिनट का हिसाब रखना चाहिए। हिंसा के इस समुद्र में अहिंसा को अपना स्थान ढूढ लेना है और यह हमारे जीवन को नियमित बनाने से ही होसकता है।"

भण्डारी आज कह गये थे कि मैं भाई को पत्र लिख सकती हू। मगर मै तो अभी किसीको पत्र लिख ही नहीं रही। बापू ने कहा है कि बम्बई सरकार की तरफ से उनके पत्र का उत्तर आने तक मैं राह देखू।

मीराबहन को बम्बई सरकार का उत्तर मिला है कि वे अपने मित्रो को पत्र लिख सकती है।

आज कृष्णाष्टमी है। बहुत दिन पहले बापू ने मीराबहन को हाथी दात की बनी हुई बालकृष्ण की एक मूर्त्ति दी थी। किसी ने वह बापू को भेंट की थी। मीराबहन पास में थीं। उन्होने वह मीराबहन को देदी। कई वर्षो से वह उनके बक्स में पडी थी। आज उन्होंने उसे निकाला और उसकी पूजा की। बा की बिन्दी के बारे में बात हुई। बापू को पता ही नही था कि बा भी बिन्दी लगाती है और बा दिन-रात बापू की आख के सामने रहती है।

३ सितम्बर '४२

आज अखबार देर से आये। वर्षा के कारण लाइनें टूट गई है। इसलिए डाक देर से आई।

बापू ने वाइसराय के नाम एक तार लिखकर दिया। उसमें बताया कि अखबारो की खबरो का उनके मन पर क्या असर हुआ है।

मैंने 'आरोग्य नी चावी' का हिंदी और अग्रेज़ी अनुवाद शुरू किया।

४ सितम्बर '४२

बापू ने वाइसराय को तार के बदले पत्र लिखने का विचार किया। मि० कटेली कहते थे कि तार यहा से नहीं जासकेगा। बम्बई की सरकार शायद अपने 'कोड' शब्दो में भेज सके। पहले बापू ने विचार किया कि भण्डारी से कहे कि वे फोन पर बम्बई सरकार से पूछलें। मगर बाद में विचार बदल गया। कहने लगे, "तार में सब विस्तारपूर्वक कह भी नहीं सकूगा। इससे पत्र भेजना ही ठीक होगा।" दोपहर को पत्र पूरा करके सोये। मुझसे कहा कि उनके उठने से पहले उसकी एक साफ नकल तैयार करके रखू। मैंने नकल तैयार की। उठने के बाद उसे फिरसे पढने लगे। पढते-पढते फिर विचार बदला और कुछ भी न भेजने का निश्चय किया। कहने लगे, "इस पत्र में मै कोई नई चीज़ नहीं देरहा। इससे उन लोगो को चिढ ही आसकती है। वाइसराय अगर मित्र है तो उसे चिढाना नहीं चाहिए। और मित्र नहीं है तो दुश्मन को लिखने से फायदा ही क्या? लोगो की हिंसा को देखकर यदि मै आन्दोलन बन्द करने का निश्चय करता तो बात दूसरी थी। मगर आज तो मेरे सपने में भी यह चीज नहीं है। तो फिर लिखने से फायदा क्या?" इतने में सडक पर से कुछ लोग जोरो के साथ 'महात्मा गाधी की जय' पुकारते हुए गुजरे। बापू बोल उठे, "इसके साथ मेरे पत्र का क्या मेल!"

बा की तबीयत अच्छी नहीं है। छाती में दर्द रहता ही है।

शाम को समाधि पर तार के इस पार खडे होकर सिपाही को फूल देते समय मैंने कहा, "इस तरह यहा खडे होने से खूब अच्छी तरह मालूम होजाता है कि हम कैदी है और कैद चुभने लगती है।"

मि० कटेली कहने लगे, "आप कभी जेल गई है?"

मैंने कहा, "यह मेरी पहली यात्रा है।"

वे बोले, "लेकिन यह जेल नहीं है, यह तो महल है।"

मैंने कहा, "बचपन में मैंने एक छोटी-सी कविता सीखी थी। उसका भावार्थ है, मेरे पास एक छोटा-सा कबूतर था। वह मर गया। क्यो मरा? मुझे लगता है, गम से मरा। मगर गम काहे का? उसके पाव में मैंने अपने हाथो से तैयार किया हुआ रेशमी धागा बाधा था। इस तरह यद्यपि धागा रेशमी था और प्यार-भरी उँगलियो ने उसे तैयार किया था, फिर भी वह बन्धन था और उसने बेचारे कबूतर को खतम कर डाला। इसी तरह यह महल कितना ही भव्य क्यो न हो, यह असल में जेल ही है। और जेलर कितना ही अच्छा क्यो न हो, आखिर तो वह जेलर ही है।" सब हसने लगे।

५ सितम्बर '४२

आज पारसियो का नया साल है। मि० कटेली सुबह ही बापू को दण्डवत प्रणाम करने आये। मीराबहन ने मि० कटेली के लिए नाश्ते की मेज पर सुन्दर फूल सजा दिये। बापू ने मुझे उनके लिए एक 'बटन-होल' (button-hole) तैयार करने को कहा।

इसी तरह बापू सेवाग्राम में मुझसे लॉर्ड लोथियन (Lord Lothian) के लिए 'बटन-होल' तैयार करवाया करते थे। वहा फूल नहीं थे। घास मे ही मैं बनाया करती थी और लॉर्ड लोथियन खुशी के साथ उसे अपने कोट में लगाया करते थे। बाद में जब उन्हे आर्डर ऑव दि थिसिल (Order of the Thistle)* मिला, वे नाइट बने, तो मुझे ऐसा लगा मानो बापू ने पहले से ही उन्हे थिसिल (Thistle) घास के बटन-होल पहनाकर उनको मिलने वाली इस पदवी की भविष्यवाणी करदी थी!

दोपहर को खबर आई कि हम काटेदार बाड के बाहर महादेवभाई की समाधि पर जासकेगे। शाम को हम वहा गये।

: १४ :

बा अस्वस्थ

बा का छाती का दर्द हृदय की बीमारी के कारण है। उनके हृदय की पीड़ा के लक्षण इसके सूचक है। दर्द आज अधिक था। मैंने मि० कटेली से कहा, "मुझे बा के लिए डॉक्टरी सलाह की जरूरत है।" उन्होंने भण्डारी को फोन किया। भण्डारी रात को आये। बाद में डा० शाह आये। वह आगा खा के रिश्तेदार है। भले आदमी है। एमिल नाइट्राइट (Amyl Nitrite) की नलिया रखने को कह गये। नाइट्रो ग्लिसरीन (Nitro Glycerine) की टिकिया तो मेरे पास थीं ही। लिक्विड कोरामीन (Liquid Coramine) भी मगवाली थी, ताकि वक्त जरूरत सामान तैयार मिले।

६ सितम्बर '४२

आज सिविल सर्जन और कलेक्टर फिर आये। भण्डारी ने सिविल सर्जन से कहा था कि बीमारो को देखकर आइए, इसलिए उन्होंने बा को, बापू को और सरोजिनी नायडू को देखा। कहने लगे, "बा के फेंफडो की झिल्ली का दर्द है।" मैंने कहा, "इस दर्द का न तो सास के साथ सम्बन्ध है, न खासी के साथ। दर्द का फैलाव (Distribution) हृदय से सबधित है।' तब उन्होंने 'हिस्टरी टिकट' पर लिख दिया, "दर्द फेफडे की झिल्ली का है। उसमें हृदय भी आंशिक कारण होसकता है। हृदय में कोई विशेष विकार या दोष नहीं है।"†

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। बा के हृदय की स्थिति साधारण कहना कैसी अजीब

---

*स्कॉटलेंड की एक सम्मानसूचक उपाधि का नाम।

†"Pain is pleuritic There may be some coronary element as well. Heart, n a. d."

बात है। बा को तो स्वास की नली की सूजन और उसके कारण कफ इकट्ठा होने की पुरानी शिकायत है। इस वास्ते सास लेने में कफ की घडघडाहट होती है। उन्होने कफ की आवाज को फेंफडो की झिल्ली की रगड की आवाज समझा होगा, भगवान ही जाने। दिल की मास-पेशियो की कमजोरी है। हृदय का बाया किनारा अपनी जगह से बढा हुआ है। दिल के परदे में सिकुडन के समय स्पष्ट आवाज होती है। बात तो यह है कि जब वह मन में दिल की बीमारी की शका रखते है तो उन्हें हृदय को जरा ज्यादा ध्यानपूर्वक देखना चाहिए था।

उन लोगो के जाने के बाद डा० शाह आये।

बा कल से बिस्तर पर है। डॉक्टरो के आने का इतना फायदा हुआ कि बा समझ गई कि सचमुच बीमार है और उन्हे खाट पर पडे रहना चाहिए, नही तो पूरी कोशिश करने के बाद भी मै आजतक उनको बिस्तर पर नही रख सकी थी।

७ सितम्बर '४२

आज सबेरे कर्नल शाह और भण्डारी आये। भण्डारी कहने लगे, "अबसे ये ही यहा आया करेगे, सिविल सर्जन नही। मुझे इन पर बहुत विश्वास है। इनके हाथ में शफा है।"

मैंने बा के दिल की धडकन का ग्राफ--नक्शा--बनाने को कहा। दोपहर को डॉक्टर कोयाजी आये और उन्होने वह नक्शा उतारा। सामान्यतया ऐसा चार जगह बिजली के तार लगाकर किया जाता है, उन्होने सिर्फ पहले तीन स्थान से ही किया। मैंने चौथे स्थान से भी लेने को कहा, मगर उन्होने कुछ ध्यान नही दिया।

सडक की ओर से 'महात्मा गाधी की जय' का नाद आरहा था। आज कोई बडी सभा हुई होगी।

कैदियो से भरी तीन लारिया सडक पर से गई। मालूम होता है, सरकार खूब जुल्म कर रही है। मगर अभीतक तो लोग भी हिम्मत दिखारहे है। कही-कही हिसा भी होती दीखती है। यह बुरी बात है। मगर नामर्दी इससे भी बुरी है।

आज भण्डारी कहरहे थे, "एक-दो दिन में आप अपने लिए मदद की उम्मीद रख सकती है।" शायद भाई आनेवाले होगे। बापू से मैंने जिक्र किया तो कहने लगे, "मुझे तो अब उसके आने की आशा बहुत कम है। जब सामने आकर खडा होजायेगा तब मानूगा कि आया।" उसके बाद बताने लगे कि उन्हे आज ही स्वप्न आया था कि भाई उनके सामने बैठे है। कहने लगे, "स्वप्न क्या, मै तो आधे से ज्यादा जाग्रत था। देखता हू प्यारेलाल सामने खडा है। उसके हाथ में एक कागज है। कहता था, 'मुझे तो आपके पास ये लोग (सरकार) रहने नही देगे। सब बाते मैंने इस कागज पर लिख डाली है, ताकि मुझे सब कहने का समय न मिले तो आप यह पढले।' पहले तो मुझे आभास हुआ कि महादेव बाते कर रहा है, मगर फिर देखता हू तो प्यारेलाल है। उसने कागज मुझे देकर जल्दी-जल्दी कहना शुरू किया। बाहर की सब खबरे दी। कहा, लडाई अच्छी चल रही

हैं। आर्य्यनायकम खूब काम करता है, श्रीमन्नारायण की कलम में अद्भुत शक्ति आगई है, वह भी बहुत काम कर रहा है। सरकार की तरफ से बहुत सख्ती होती है, इस चीज ने जनता के दिल में बडा घर कर लिया है। लोग सरकार के सामने जम गये हैं। आप पर भी खूब सख्ती करने वाले हैं। मुझे आपके पास रहने नहीं देंगे, मगर सुशीला तो आप के पास है ही। उसके माता-पिता-भाई आज सब आप ही है। उसपर दया रखना और मैं तो जहा भी रहूगा आप ही का काम करूँगा। मैं आपके ढग से काम कर रहा हू, करता रहूगा। मेरे काम से आपको कभी सिर नीचा नहीं करना पडेगा, आपको विश्वास दिलाता हू।' इतना कहकर वह गायब होगया। मैं जाग उठा।"

दूसरे दिन 'सर्वोदय' और 'राष्ट्रभाषा समाचार' इत्यादि मासिक पत्र आये, उनमें देखा कि भाई ने स्वप्न में जो बाहर की लडाई इत्यादि की खबरें दी थीं, करीब-करीब सही थीं। कॉमर्स कालेज वर्धा को सरकार ने बन्द करा दिया था। आर्य्यनायकमजी और श्रीमन्जी पकडे गये थे। खूब सख्ती चल रही थी, लेकिन लोग यथाशक्ति लडे जारहे थे।

८ सितम्बर '४२

आज बा की तबीयत थोडी अच्छी है। डा० शाह आये थे। डा० कोयाजी जो दवा बता गये थे, वह उनको नापसन्द है। कहने लगे, "दवा न देना, हृदय जब यथाशक्ति काम कर रहा है तो चलते घोडे को चाबुक क्या लगाना!"

दिन शान्ति से गुजरा। यहा तो इतनी शान्ति मिलती है कि उससे थक जाते है। बाहर जायेंगे तब क्या होगा, सो तो भगवान जाने, मगर जायेंगे तब न!

और कब जायेंगे, कैसे जायेंगे, इस सब पर भविष्य का आधार होगा। महादेवभाई अच्छे इन झझटो से मुक्त होगये। कई बार मन में शिकायत उठती है, उन्हें इस तरह दगा नहीं देना चाहिए था। मगर नहीं, वह अपना जीवन-कार्य पूरा कर गये, हमें अभी करना है।

९ सितम्बर '४२

बा की तबीयत आज भी अच्छी है। डॉक्टर शाह और भण्डारी आये थे। पहले तीन नक्शे उतारे गए थे। उनमें दिल की कोई खराबी दिखाई नहीं दी। मगर मैंने कई बार देखा है कि पहले तीन नक्शो में कुछ नहीं मिलता, मगर चौथे नक्शे में खराबी पकडी जाती है। मैंने कर्नल भण्डारी से कहा कि चौथा नक्शा भी लेना चाहिए। उस रोज डॉक्टर कोयाजी से भी कहा था, मगर न जाने क्यो, उन्होने नहीं लिया। डॉक्टर शाह कहने लगे, "सच तो यह है कि मैं इन और इस तरह के दूसरे नए-नए आडम्बरो में यकीन नहीं करता।"

जब सरोजिनी नायडू के गुर्दे की हालत की जाच कराने की बात हुई थी, तब भी उन्होने आधुनिक विज्ञान की प्रगति वगैरा में अपनी अश्रद्धा प्रकट की थी और बात टालदी थी।

१० सितम्बर '४२

आज 'बॉम्बे क्रानिकल' के सब पुराने अंक आगये। मालूम होता है, महादेव-भाई की मृत्यु को देश ने चुपचाप सह लिया है। यह चीज बापू को काफी चुभी है। घूमते समय कहने लगे, "आखिर तो महादेव इनके जेल में मरा है न? महादेव का खून इनके सिर है। मैं उस दिन गवर्नर को लिखने वाला था, मगर फिर काट डाला। जिन्दा रहा तो किसी दिन मैं जरूर उन्हें यह सुनाऊंगा कि महादेव की मृत्यु का कारण आप हैं। मैं मानता हूं कि वह जेल न आते तो कम-से-कम इस वक्त तो हर्गिज न मरते। बाहर वह कई तरह के कामों में उलझे रहते। यहां वह एक ही विचार में डूबे रहे, एक ही चिन्ता उनके सिर पर सवार रही। वही उन्हें खागई। उनपर भावना का कुछ इतना जोर पड़ा कि वह खतम होगये। देश ने कुछ भी नहीं किया। बैकुण्ठ मेहता की श्रद्धांजलि तो आने ही वाली थी और बरेलवी की भी; मगर महादेव तो सारे देश के थे और देश के लिए वह गये हैं। भगतसिंह की मृत्यु के बाद जब मैं लॉर्ड अर्विन से समझौता करके कराची जारहा था तो लोगों के झुंड-के-झुंड हर स्टेशन पर मेरे पास आते थे और चिल्लाते थे, "लाओ भगतसिंह को!" इसी तरह अब की भी वे सरकार को कह सकते थे, "लाओ महादेव को!" सरकार लाती तो कहांसे? कह देती कि जो लोग इतने भावुक, इतने विक्षुब्ध और इतने संवेदन-शील हैं, वे जेल में आते ही क्यों हैं? न आयें—वगैरा।" फिर बापू कहने लगे, "मगर लोग शायद सोचते होंगे कि आज सरकार के साथ ऐसा घमासान युद्ध चल रहा है कि उसमें दूसरी किसी चीज का विचार करने का अवकाश ही कहां रह जाता है?" मैंने कहा, "और आपने भी तो तार में लिखा था न कि जो किया जासकता था, किया गया! इसके कारण भी लोग शान्त रह गये होंगे। समझे होंगे कि यह तो स्वाभाविक मृत्यु थी, जो कहीं-भी हो सकती थी।" बापू ने कहा, "सो तो है, लेकिन मृत्यु हुई तो सरकार के जेल में न?"

बा अच्छी होरही है। बापू को आज एक पतला दस्त हुआ। दो-तीन दिन से आलू और सकरकंद खाना शुरू किया था। शायद उसका असर होगा।

१५ :

भाई आ पहुंचे

११ सितम्बर '४२

आज दोपहर मैं खाना खाकर उठी तो किसी ने कहा, प्यारेलाल आगये। मैंने ऊपर देखा तो वे सामने बरामदे में खड़े थे। बापू उनके आने की आशा छोड़ चुके थे। महादेवभाई को गये चार हफ्ते होने आये। ऐसा लगता था कि भाई को आना होता

तो जल्दी ही आते। सो बापू कल ही कह रहे थे, "अब तो मेरे सामने आकर वह खडा रहेगा तभी मैं मानूगा कि वह आया।"

महादेवभाई की मृत्यु से भाई को बड़ा धक्का लगा था। कहने लगे, "जाने की बात तो मैं किया करता था और चले गये वह!"

भाई ने बताया कि जिस दिन महादेवभाई की मृत्यु हुई उसी दिन सबेरे करीब साढे आठ बजे उन्होने पता नहीं क्यो उपवास करने का विचार किया था। (यहा आगाखा महल में करीब साढे आठ बजे महादेवभाई की तबीयत बिगडी होगी। भाई को तब कुछ पता न था कि यहा क्या होगया है।)

फिर कहने लगे, "मैंने विचार किया था कि इस बार तुझे यहा गीताजी और बाइबिल—न्यू टेस्टामेंट—सिखाऊगा।" और सयोग की बात कि यही दोनो चीजें यहा बापू मुझे सिखारहे है! बापू ने जब यह सुना तो कहने लगे, "टेलीपेथी (Telepathy) कितना काम करती है।"

मि० कटेली को करीब महीने-भर के बाद कोई बात करने को मिला। बहुत खुश थे। खाने के बाद काफी देर बैठकर भाई के साथ बातें करते रहे।

चर्चिल के भाषण से बापू को और हम सबको बडा आघात लगा। मन पर यह भी असर हुआ कि ऐसा भाषण लोगो को और भडकायेगा, और कडा बना-देगा।

महादेवभाई की मृत्यु पर बापू ने जो तार भेजा था वह आज अखबार में आया, मगर सेन्सर किया हुआ था। उसमें से दो-तीन वाक्य काट दिये गए थे। एक तो यह कि महादेवभाई देशभक्त और योगी की मृत्यु मरे है और दूसरा बापू का आशा प्रकट करना कि उनका लडका उनके स्थान को सुशोभित करने के लिए अपने आपको तैयार करेगा। बापू ने साफ कहा था कि अगर तार जैसा लिखा है वैसा ही न जासके तो वह भेजना नहीं है। जब मैंने काटे हुए वाक्य उन्हें बताये तो वे बहुत चिढ गये। मीराबहन कहने लगीं, "शायद प्रेस ने काट दिये हो। यहासे तो पूरा-का-पूरा गया होगा।" बापू कहने लगे, "बहुत करके यहीं—जेल वालो ने—सेन्सर किया होगा।" मीराबहन कहने लगीं, "जब हम बाहर निकलेंगे तभी सचाई का पता चलेगा।" बापू कहने लगे, "Don't you see I get out only as a free man Either India wins her freedom, or I go to lie by Mahadev's side"*

आज बापू का खून का दबाव खूब बढ गया (१८८।११२-११६) था। कहने लगे, 'बस कोई भी असत्य या बेईमानी की बात देखकर मेरा मिजाज बिगड जाता है।' यह इशारा चर्चिल के भाषण की तरफ था।

---

*"तुम समझती नही हो कि मैं आजाद होकर ही बाहर निकलूगा। या तो भारत आजादी प्राप्त करेगा या महादेव के पास मेरी भी समाधि बनेगी।"

१२ सितम्बर '४२

दिन में कुछ खास खबर नही थी। भाई इधर-उधर की बातें सुनाते रहे। बाहर की खबर सन्तोषजनक है। बापू का विश्वास है कि ईश्वर के हाथ के बिना ऐसा आन्दोलन बिना लीडरो के चल नही सकता—खास करके जब सब लीडरो को सरकार एकदम उठा लेगई हो।

घूमते समय मैंने कहा, "बापू, कोई चमत्कार ही हो तो आज हमारी सफलता होसकती है। मुसलमान तो ऐसे अकडे पडे है, सरकार भी उन्हे सिर चढारही है। ऐसी हालत में हमारी सफलता कठिन है।"

बापू बोले, "हा, सो तो है, मगर जहा सत्य रहता है वहा चमत्कार भी होते है। मैंने तो कहा ही है कि अहिसा नये ही ढग से काम करती है। लोग चुपचाप बैठ नहीं जायगे तो सब अच्छा ही होगा।"

१३ सितम्बर '४२

आज कमिश्नर और सिविल सर्जन के आने का दिन था। मगर सिविल सर्जन की जगह डा० शाह ही आये। वे भाई को जानते है, ऐसा कहने लगे। कमिश्नर भी जब आते है, कुछ-न-कुछ बातें करते है। सरोजिनी नायडू पहले दिन कमिश्नर और सिविल सर्जन से बहुत चिढ गई थी, मगर अब खुश है।

शाम को घूमते समय भाई बाहर की बातें सुनारहे थे। बापू कहने लगे, "अगर सरकार ने हमें पकडने की भूल न की होती तो आन्दोलन यह रूप कभी लेने वाला था नही। मै अकेला भी बाहर रहता तो सभाल लेता। मगर अब तो मै अकेला बाहर निकलना नहीं चाहता।" मैंने पूछा, "क्यो ?" कहने लगे, "उस वक्त इच्छा थी, श्रद्धा थी और शक्ति भी थी कि मै सभाल लूगा। मगर आज न इच्छा है, न श्रद्धा है, न शक्ति है।" मैंने कहा कि इसे जरा विस्तार से समझाइए। कहने लगे, "इच्छा होती है तो शक्ति भी आती है, श्रद्धा रहती है, मगर जब इच्छा ही नही तो शक्ति कहासे आसकती है ? मैंने तो अपनी इच्छा को भी ईश्वर के अधीन कर दिया है न ! तो उसे जब जो मुझसे कराना होगा करायेगा। यो कहो कि आज ईश्वर मुझसे कोई इच्छा नही करा रहा। ठीक है, ईश्वर को लगा होगा कि आदोलन ऐसे ही चल सकता है।"

प्रार्थना में मीराबहन ने भजन गाया। उसके बाद बापू का मौन शुरू हुआ।

१४ सितम्बर '४२

आज बापू का मौन था। महादेवभाई की समाधि पर जो पत्थर रखे थे उनका आकार कब्र का था। बापू को वह खटका। हम सबको भी। इस कारण दो रोज हुए उसे चौरस करवा दिया है। रघुनाथ वगैरा ने गोबर से वहा लीप भी दिया है। उस पर छेद करके फूलो का ॐ बनाया। और जगह भी फूलो के लिए छेद किये। सजाने पर बहुत सुन्दर लगता है। मैंने कहा, "बापू, महादेवभाई होते तो बहुत खुश होते।" और कहते, "बापू, कैसा सुन्दर दीखता है?"

बापू और प्यारेलालभाई

बापू बोले, "जहा सत्य रहता है वहा चमत्कार भी होते हैं।" पृष्ठ ७२

आज अखवारो मे पता चला कि वापू का तार दुर्गावहन वगैरा को भेजा ही नहीं गया था। ४ सितम्बर को वह दिल्ली मे डाक के जरिये भेजा गया। हम सबको इससे वहुत आघात लगा। सरकार ने दुर्गावहन वगैरा से तो माफी मागी है, मगर वह मागनी तो चाहिए वापू से।

वा अच्छी है, वापू की तवीयत भी ठीक है। वर्षा खतम होगई। दिन में खूब धूप होती है। रात को आकाश तारो से भरा होता है। वापू रात में कहने लगे, "मै इन तारो के नीचे सोमकू तो नाचने लगू।" मैने कहा, हमें भी आकाश-दर्शन करावें। कहने लगे, "हा, जितना याद है उतना तो करा ही सकता हू। यरवदा में मै वहुत आकाश देखा करता था।"

१५ सितम्बर '४२

आज समाधि पर गीता लेजाना भूल गई। वारहवा अध्याय कठ होगया है। इस कारण मैने सोचा उसके पाठ में कोई कठिनाई नहीं आवेगी, मगर पढते-पढते एकाध श्लोक आगे-पीछे होगया। घूमते समय वापू इस पर कहते रहे, "पूरा वारहवा अध्याय तो तुम्हारे लिए एक श्लोक के जैसा होजाना चाहिए, फिर उसमें भूल हो नहीं सकती। और फिर इस वात का घमड नहीं होना चाहिए कि तुमको सारा याद है। पादरियो को तो वचपन से ही वाइविल का अभ्यास कराया जाता है। तो भी वे किताव सामने रखकर प्रार्थना-समाज में वाइविल पढते है, क्योकि कहीं भूल होजावे तो सारे समाज का तार टूटता है।"

इसके वाद वातो-वातो में वाहर जाकर क्या होगा, इस वारे में मेरे मुह से कुछ निकल गया। पर तुरन्त ही मैने सुधार लिया "मगर वह तो वाहर जावेंगे तव न ! कौन जाने महादेवभाई के साथ ही सवको यहीं रह जाना हो।" वापू वोले, "वह तो है, और मुझे वहुत अच्छा लगेगा कि हम सव यहीं रह जाय।" मैने कहा, "आप नहीं। आपको छोडकर वाकी हम सव।" वापू इस वाक्य से कुछ चिढ-से गये। वोले, "हमेशा ऐसा कहना ठीक नहीं है। ऐसा करके तुम लोग मेरे शुभ सकल्प को ठेस पहुचाते हो। इसीमें महादेव गया और अव तुम भी वही कहरही हो।" मैने कहा, "आप नाराज न हो तो मै कहू कि क्यो मेरे मुह से ऐसा उद्गार निकला। कोई भी सेनापति— जनरल—खुद मरने की जगह पर नही जाता, अपने सिपाहियो और अफसरो को भेजता है। ऐसे ही आपका है। आप है तो आजादी की लडाई चलाते रहेंगे। अहिंसा की लडाई आपके साथ है।" यह सुनकर वापू कहने लगे, "मगर तू तो जनरल की भी सुपर जनरल (Super-General)—वडी जनरल—वनती है। यही मैने महादेव को कहा था। जनरल जानता है, उसे कहा किसे भेजना है और कहा खुद जाना है। तूने 'मुक्तधारा' पढी है ! वहा युवराज कैसे अपने भाई को रोक देता है। नहीं, मुझे ही इस काम में जाना चाहिए, तुमको नहीं।" फिर विलियम ऑव ऑरेन्ज (William of Orange) का किस्सा कहा, "ऐसे ही मुझे लगे कि मुझे जाना चाहिए

और तुम लोग मेरा विरोध करते रहो तो वह मेरी शक्ति क्षीण करने जैसा है । आज तो मैं कर्त्तव्यमूढ बनता नही हू । लेकिन मुझे भी लग सकता है कि देखो न, महादेव कहता था, सुशीला, बा, प्यारेलाल सब कहते हैं, तो शायद वे कहते हैं वही ठीक होगा । और धर्म-ग्रन्थो में भी कहा है, जो सौ को खिलाता है वह रहे और पचास खाने वाले मरजावें तो हर्ज नहीं, मगर खिलाने वाला भी चला जावे तो सब भूखो मरेंगे । इसलिए मुझे तो जिन्दा रहना चाहिए । मगर ऐसा है नही । जब खिलाने वाला कहता है कि मै तो इस तरह जिन्दा रहू तो भी खिला नही सकूगा, मैं खुद भार-रूप बन जाऊगा, तो उसे रोकने से क्या फायदा ! सब खाने वाले उसके जाने से अपने पैरो पर खडे होसकते हैं । मैं मरना चाहता हू, ऐसा नहीं है । देखती नहीं कि मै तो पन्द्रह वर्ष के लडके के उत्साह से उर्दू सीख रहा हू और दूसरा अभ्यास भी करता हू, तेरे साथ खेलता हू । जो भी रस लेने लायक चीजें है उनका रस मै खींच लेता हू । मगर जब ऐसा मौका आजाय कि मैं लाचार बन जाऊ तब मै क्या कर सकता हू !" मैंने कहा, "जी, कोई ऐसा मौका आ-सकता है जब कि आदमी अपना स्वाभिमान रखकर जिन्दा नही रह सकता । ऐसी हालत में जीने से क्या फायदा ? मगर ऐसा मौका न आवे, ऐसी इच्छा रखने में तो कोई हर्ज नहीं है ।" कहने लगे, "ऐसे तो महादेव भी मान गया था कि ऐसा मौका आसकता है कि उपवास करना धर्म होजाय । मगर यह बात उसके हृदय में बैठी नही थी । ऐसी इच्छा करने में दोष नही, मगर वह इच्छा तुम्हारे ही पास रहनी चाहिए ।" मैंने कहा, "ठीक है । आपका मतलब है कि आपके सामने उसकी बात नही करनी चाहिए । मूक इच्छा रखना ठीक है ।" बोले, "हा, मूक इच्छा ईश्वर के पास जाती है । अगर हम उसकी चर्चा करते है तो उसकी शक्ति कम होती है और मेरे रास्ते में वह रुकावट डाल सकती है । ईश्वर के पास अपनी इच्छा रखो । जो उसे करना होगा सो करेगा, जो मुझसे करवाना होगा वह करायेगा ।"

घूमने का वक्त पूरा होगया । भाई अब बापू की मालिश वगैरा करते है । मै बा का काम कर देती हू, सो खाने आदि का सब काम मिलाकर मेरा समय तो वैसा-का-वैसा ही भरा रहता है । दोपहर खाने के समय भाई के साथ बैठती हू । वह बहुत धीरे-धीरे खाते है । मै खाकर उतने समय में साग भी काट लेती हू । आज भी ऐसा ही किया । इससे बापू के पैर मलने को जरा देर से पहुची तो डाट पड गई । कहने लगे, "हमारे पास जब काम पडा हो तब हम खाना खाकर मेज पर बैठे नही रह सकते ।"

शाम को घूमते समय बाहर जो चल रहा है उसकी बातें होती रही । बापू बाइबिल—ओल्ड टेस्टामेंट—की बात कर रहे थे—"उसमें रक्तपात जगह-जगह आता है । ईश्वर की शरण जो लोग जाते है, मामूली भूलें करने वाले लोग जब ईश्वर का आश्रय मागते है तब ईश्वर उन्हे बचा लेता है । उनके दुश्मनो को मार डालता है, प्लेग भेज देता है इत्यादि । तो मै तो उसमें से इतना ही सार निकाल लेता

हू कि ईश्वर पर श्रद्धा वडी चीज है और ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसे जो करना है वह किसी को भी मार्फत करवा लेता है। हिन्दुस्तान में भी उसे जो करवाना होगा करा लेगा।"

१६ सितम्बर '४२

आज घूमते समय फिर वाहर की बातें होने लगी। भाई ने कहा, "जो फौज और पुलिस से आशा थी, वह तो कुछ फली नहीं। बाकी आम लोग आदोलन चलारहे हैं।" वापू कहने लगे, "मैंने फौज और पुलिस पर कभी आशा रखी ही नहीं थी। रूस में वेशक फौज और पुलिस जनता से आमिली, परन्तु वहा तो हिंसक क्रान्ति थी, हमारी अहिंसक क्रान्ति है। उसमें फौज, जो कि हिंसा की प्रतिमा है, कैसे आ-सकती है? वे लोग तव जनता के साथ आवेंगे जव सत्ता लोगो के हाथ में आ-जावेगी, क्योकि पीछे तो कोई चारा ही नही रह जाता। वे लोग तो जड है। पढे-लिखे सुशिक्षित लोग कमीशन लेकर वैठे है, परन्तु किसी ने अपना कमीशन छोडा? यह जडता की निशानी है।"

आज रामेश्वरी नेहरू की दोवारा गिरफ्तारी तथा अम्बालाल साराभाई की लडकियो तथा और जगह दूसरी स्त्रियो की गिरफ्तारी की खवर पढकर वापू ने कहा, "इसका मैं यह नतीजा निकालता हू कि कई जगह हिंसा की घटनाए होते हुए भी सव मिला-कर आदोलन अहिंसक है, वरना इस तरह इतनी स्त्रिया—और कुलीन स्त्रिया—इसमें हिस्सा नही लेसकती थीं।"

कातते समय वापू को वाइविल—न्यू टेस्टामेंट—पढकर सुनाती हू। ऐसा करने से मेरा भी वाइविल का अभ्यास होजाता है।

आज मैथ्यू की कथा पूरी हुई। वापू के मन पर उसका गहरा असर पडा। शाम को मीरावहन से वोले, "'जव मैं अद्‌भुत सलीव की ओर निहारता हू' ('When I servey the Wond'rous Cross') गासकोगी? आज मैथ्यू की कथा पूरी हुई सुनकर मेरा दिल भर आया है। मैं उससे भरा हुआ हू।" मीरावहन कोई भी ऐसा काम नही करना चाहतीं, जिससे उनके ईसाई धर्म और यूरोपियन जन्म की झलक आसपास के लोग देख सकें। इसीलिए वापू ने उनसे पूछा कि यह ईसाई गीत गासकेंगी या नहीं। मीरावहन ने कहा, "आपके सामने गाऊगी। वाहर जाकर औरो के सामने नही, क्योकि आपको तो कोई गलतफहमी नहीं होगी।" मीरावहन ने वहुत अच्छी तरह गाया। रात जव वापू पलग पर सोने गये तव मीरावहन ने आकर पूछा, "वापू, फिर गाऊ?" वापू ने 'हा' कहा और उन्होने दोवारा वही गीत वापू को सुनाया। उसकी ध्वनि को कान में रखकर वापू सोगये। उनके सोने के थोडी देर वाद वा ने गरम पानी मागा। हममें से कोई

---

*अग्रेजी के एक भजन की पहली कडी

पास न था, हम लोग अभी भीतर बैठे बातें और काम कर रहे थे। सो बापूजी ने खुद उठकर उन्हे पानी दिया। बा की आज की रात अच्छी नही कटी। खाने-पीने में कुछ बदपरहेजी हुई थी। सुबह उठने पर उन्हे उल्टी कराई। तब जाकर उनकी तबीयत कुछ ठीक हुई।

: १६ :

अहिंसा की कसौटी

१७ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय बा की तबीयत की चर्चा करते-करते बापू अपने दक्षिण अफ्रीका के अनुभव की बातें सुनाने लगे। पोलक ने उन्हे रस्किन का 'अन्टू दिस लास्ट'* ('Unto this Last') पढने को दिया था। पढकर बापू के मन पर उसका गहरा असर हुआ। दिमाग में वही विचार भरे थे। उसी रोज किसी मित्र के यहा खाना खाने गये थे। वहा बहुत गरिष्ट भोजन हुआ। पेट भारी होने के कारण रात में नीद नही आई—'अन्टू दिस लास्ट' के ही विचार आते रहे। बस आखिर में निश्चय किया कि अब मुझे ऐसा खाना नही खाना है, सादा जीवन बनाना है, जगल में जाकर रहना है। दूसरे ही दिन साथियो की सम्मति लेकर जमीन के लिए विज्ञापन देदिया। हफ्ते भर के अन्दर जमीन मिल गई। बस रात भर में ही जीवन पलट गया। फिनिक्स (Phoenix) आश्रम की वह जड है।"

शाम को घूमते समय बापू ने भाई को खाने के समय का पालन करने को कहा। आज उन्हे बहुत देर होगई थी। सरोजनी नायडू नाराज होगई थी। बापू ने कहा कि वे यहा कुटुम्ब की मा बनकर बैठी है। सबको मा की तरह प्यार से खिलाती है। उनको हमें शिकायत का मौका नही देना चाहिए।

'इन्डियन मेडीकल गजेट' के सम्पादक का ४ अगस्त का लिखा पत्र आज मिला है। मेरे लेख के प्रूफो के बारे में था। लिफाफे पर मोहनभाई के हाथ का पता लिखा था—C/o महात्मा गाधी, आगा खा महल, पूना। और हमें पत्रो पर हमारी नजरबंदी की जगह लिखना मना है। क्या मजाक है कि जिसे सब जानते है उसे छिपाने की कोशिश की जारही है!

१८ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय बापू मुझे कल की एक घटना पर शिक्षा देते रहे, "मै कहता हू कि वह मूर्खता थी। महादेव की मृत्यु से और कुछ नही तो इतना तो सीखते कि किसी

*जिसका अनुवाद बापू ने 'सर्वोदय' के नाम से किया है।

चीज से परेशान होना ही नही चाहिए। बारहवा अध्याय रोज पढने का क्या अर्थ है ? स्थितप्रज्ञ के लक्षणो का पाठ करने का क्या अर्थ है।" मुझे बडी शर्म आई। पहले से ही झेंप रही थी मगर इससे और बुरा लगा। कितना सोचा था कि अपने आपको सुधारा है। छुई-मुईपन निकाल डाला है। मगर पहली ही परीक्षा में फेल होगई।

दोपहर बापू जो पुस्तक लिखरहे है उसका कुछ तर्जुमा किया, फिर खाना। आराम नहीं किया। इससे शाम को जल्दी नींद आने लगी। बापू की राह देखते-देखते सोगई, आधा घटा सोचुकी थी तब बापू आये। उन्हे उठने में देर होगई थी। बोले, "तू वक्त पर उठाने क्यो नही आई ? मुझे तो काम में वक्त का ध्यान न रहे, पर तुझे तो मुझे कहना चाहिए था कि उठने का वक्त हुआ।" मुझे अपने सोजाने का अफसोस हुआ।

बाबला और दुर्गाबहन का बापू के नाम पत्र आया था। दुर्गाबहन का एक ही वाक्य उनके हृदय की स्थिति बताता था--'पत्थर की बनी हू। सह रही हू।' बाबला का सुन्दर पत्र था--"मेरे बारे में जो लिखा है वैसा करने का प्रयत्न तो करूगा, पर मै तो बिलकुल क्षुद्र हू। वहा कैसे पहुच सकूगा !' मैने मन में कहा, "भगवान तुम्हे पहुचायेगा, तुम्हारे पिता की आत्मा तुम्हे पहुचायेगी।"

शाम को घूमते समय बापू बताते रहे कि कैसे वे एक बार कुतुबमीनार देखने गये थे। दिखानेवाला इतिहास का बडा विद्वान था। वह बताने लगा कि कुतुब के बाहर के दरवाजे की सीढी से लेकर एक-एक पत्थर मूर्ति का पत्थर है। मुझसे यह सहन नहीं हुआ। मै आगे बढ ही नही सका और मुझे वापस लेचलने को उन्हे कहा। और मै वापस आगया। पीछे इस्लाम के बारे में बातें होती रही। बापू जानते है कि मुसलमानो ने कितने अत्याचार किये है, फिर भी मुसलमानो के प्रति वह इतनी उदारता और इतना प्रेम बताते हैं। मुसलमान उन्हे गाली देते है तो भी उनकी खातिर वह हिन्दुओ से लडते है। यह चकित कर देने वाली चीज है। उनकी अहिंसा की कसौटी है।

महादेवभाई ने मेरी भजनावली में कुछ भजन लिख दिये थे उनमें से एक था "जावे कि हो दिन आमार, विफले चालिये।" आज वह मेरे कान में गूजरहा था। मन में उठरहा था, "क्या है हमारा जीवन ! ईश्वर बापू को दीर्घायु करें ताकि वह अपना काम पूरा करें। हमारे जैसो की आयु भी भगवान उन्हे देदे तो उसका सदुपयोग होजावे।

१६ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय बापू फिर परसो वाली घटना की बात करने लगे। पोलक की बात बताने लगे, "वह बहुत जल्दी चिढ जाता था। वह और श्रीमती पोलक पहले मित्र थे। इथीकल सोसाइटी (Ethical Society) के सदस्य बने, वहा से मित्रता शुरू हुई, आखिर मैंने उनकी शादी कराई। वे सोचते थे कि कुछ पैसे होजायें तब शादी करें। मगर मैंने कहा, 'यह निकम्मी बात है, और पैसे की जरूरत हो तो मै भी तो

तुम्हारे पास पडा हू न ।' " इसी तरह बापू ने अपनी टाइपिस्ट, मिस डिक की जो स्काच थी, शादी मि० मैक्डोनाल्ड से कराई थी। इसी प्रकार बापू ने मि० वेस्ट की भी शादी करवाई थी। बापू बताने लगे, "पोलक का यह प्रेम-सम्बन्ध था। मगर वह कई बार अपना सतुलन खो बैठता था। वैसे तो श्रीमती पोलक दो की चार सुनाने वाली थी, मगर जब पोलक गुस्से में होता था तो उससे बडे प्रेम से पेश आती थी। कहती, "तुम्हे हुआ क्या है ?" और हस देती थी। मै कहा करता था कि यह क्या बात है कि पहले तो तुम इतने मित्र थे, और अब शादी होगई है तो क्या लडना ही चाहिए ? जैसे मैने तुम्हारी शादी कराई है वैसे ही तलाक भी करवाना होगा क्या ? श्रीमती पोलक की कार्य-कुशलता का नतीजा यह है कि वे आज एक दूसरे को पूजते है और मुझे छोड दिया है। ऐसा कइयो का हुआ है। कैलेन बैक मुझे कहा करता था, तुम इतनी तेजी से आगे बढरहे हो कि आखिर तुम्हे सब छोड देंगे, वे तुम्हारे साथ आगे बढ नहीं सकेंगे। मैने कहा कि तुम भी छोड दोगे ? तो कहने लगा, "मै कैसे छोड सकता हू। हम तो एक जान दो शरीर जैसे है, और मैने तुमको अपनी गरज के लिए ढूढा है, तुमने मुझे नहीं ढूढा। मै तो तुम्हे कभी नहीं छोड़ सकता।" मगर अब तो वह भी छूट गया है। उसके विचार भी मुझसे अलग पड गये है। यहूदियो के बारे में उसका इतना पक्षपात है कि क्या कहना ! वह मानता है कि जर्मनी यहूदियो का दुश्मन है और जर्मनी से लडने वाले अग्रेजो के साथ मै लडरहा हू। उसका वह समर्थन नहीं कर पाया। जब वह यहा आया था तब मैने उसे बहुत समझाया था कि क्यो मैने यहूदियो को हिसा से भरे हुए कहा है। आज तो वे हिंसा को ही अपने हृदय में पोषण देरहे है। मन में हिसा रहे तो बाहर की अहिंसा का कोई अर्थ नही रहता। वह मेरी बात कुछ समझा भी सही। मैने उसे इस आशय का एक खुला पत्र यहूदियो को लिखने को कहा था। उसने लिखा भी, मगर उसे ऐसा लगता था कि इस बारे में उसकी कौन सुनेगा। इसलिए अखबारो में भेजा नहीं। मैने कहा, भले न सुने, तुम अपना धर्म पूरा करो। भले ही फिलस्तीन में जाकर लडो और मर जाओ, यह मै सहन करूगा, मगर आज जैसे यहूदियो का चल रहा है वह असह्य है। हृदय में हिसा है तो बाहर इससे उल्टा बताने में कोई अर्थ नही।"

मैने कहा, "आप ठीक कहते है, ऐसी चीजो से परेशान नहीं होना चाहिए, यह मै समझती हू। मगर कई बातें हमारी बुद्धि स्वीकार करती है, तो भी कसौटी का मौका आता है तब फिसल जाते है।" बापू बोले, "वह तो अभ्यास से होता है। और 'अभ्यासे-प्यऽसमर्थोऽसि, मत्कर्म परमो भव।'"

मैने कहा, "सो तो ठीक है मगर जब-जब फिसलते है तो निराशा तो होती ही है। और आपको भी होती ही होगी।" वे कहने लगे, "मुझे क्या निराशा होगी, मै तो किसी चीज की आशा ही नही करता तो पीछे निराशा कैसे !" मैने कहा, "वह और भी अधिक दु ख की बात है, मगर मै अब ऐसी चीजो से परेशान नहीं होऊगी, ऐसी आशा

तो है ।" कहने लगे, "हा 'आशा तो है' इतना कहना पडता है । ठीक है, कहना कम करना अधिक, यही अच्छा है ।"

दोपहर बापू बा से कहरहे थे, "तू मुझे अपनी मालिश करनेदे । मैं सुशीला से अच्छी कर सकता हू । इसका धधा कहा मालिश करने का है ! वह तो डाक्टर है । हुक्म कर देती है कि इस मरीज को मालिश हो । इसको यह करो, उसको वह करो । यहा पर मालिश भी करे, सब्जी भी काटे, डाक्टरी भी करे, कपडा भी धोये !" मैंने कहा, "इस लम्बी-चौडी बात का अर्थ तो इतना ही है न कि आप मुझसे अच्छी मालिश जानते है । हम सब आपका यह दावा स्वीकार करते है ।" बापू हसने लगे । बोले, "मतलब यह है कि बा मुझे अपनी मालिश करनेदे ।" फिर दक्षिण अफ्रीका की बात बताते रहे कि कैसे १४ दिन के उपवास के बाद उन्हे स्मट्स ने बुलवाया था। चलकर गये और रास्ते में टागो में इतना दर्द हुआ कि चिल्ला उठे । बा भी उनके साथ थीं । वह बीमार थीं, मगर तो भी पीछे रहने से ना करती थीं । कहने लगे, "तब मैं बा की सब सेवा किया करता था, मालिश भी करता था ।"

शाम को महादेवभाई के समाधि-स्थान से लौटरहे थे तब बापू कहने लगे, "यहा आजाना मेरे लिए बहुत शातिदायक है और उससे जो प्रेरणा मुझे लेनी होती है मैं लेलेता हू ।" मैंने कहा, अब आप महादेवभाई से प्रेरणा लेते है, कभी वह आपसे लेते थे ! " कहने लगे, "क्यो नहीं, प्रेरणा तो एक बच्चे से भी लेसकते है, और बच्चा चला जाता है, तो भी क्या ? उसका स्मरण तो २४ घटे चलता ही है । जो राजाजी ने कहा है वह बिलकुल सही है । महादेव मेरा अतिरिक्त शरीर (Spare Body) था । कितनी दफा मैंने उसे मैक्सवैल के पास भेजा है, दूसरो के पास भेजा है । मान लेता था कि महादेव को काम सौंपा है तो वह कर लेगा ।" पीछे कोटमैन (Mr Coatman) के भाषण के विषय में बात करने लगे । कहने लगे, "पहले क्रिप्स बोला, फिर राइसमन और अब कोटमैन । एक-दो रोज में हैलीफैक्स भी ऐसी बात निकाले तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा । ऐसा लगता है कि ये लोग मुझे बदनाम करने के लिए एक गदा जाल रचरहे है । लुई फिशर अमेरिका में मेरे पक्ष की बात कर रहा होगा । उसको धोडालने के लिए भी यह सब प्रचार इन लोगो को करना चाहिए न । इन्हे झूठ से कहा परहेज है । इनका काम तो चलता है धोखेबाजी, पशुबल, झूठ और चापलूसी (Fraud, Force, Falsehood and Flattery) से । कोई और ऐब हो तो वह भी लगादो । मैं किस-किस को जवाब दू ? जो बातें मैंने खुली तरह से कहीं है उन्हे ऐसा रूप दिया जाता है, मानो मैंने कोई खुफिया साजिश रची हो ! उसका मैं क्या करू ? मगर ईश्वर है न, वह तो सच्ची बात जानता ही है !" मेरे मुह से निकल गया, "मगर अभी तो ईश्वर भी हमारे ही विरुद्ध गया न। देखिये, कैसे महादेवभाई को लेगया ।" बापू बोले, "यह तेरी अश्रद्धा बुलवाती है । वह अपना काम पूरा कर गया । बुद्धिवाद से तू कह सकती है कि वह २५ वर्ष और जिन्दा

रहता तो ईश्वर का क्या जाने वाला था, हमें तो फायदा होता ही। मगर श्रद्धा से देखो तो हम कहा ईश्वर की सब कृतियो को समझते है! महादेव ने अपना डेस्क हमेशा साफ रखा, सो उसने अपना जीवन-कार्य पूरा किया। आगे चलकर वह क्या कर पाता या न कर पाता वह हम क्या जानें !" मैने पूछा, "बापू ! आपको इतनी चोट किसी और की मृत्यु से नहीं लगी होगी।" बोले, "नही, मगनलाल, जमनालाल, महादेव तीनो अपनी-अपनी जगह स्तम्भ थे। अद्वितीय थे। लेकिन और किसीको मैं अपना दूसरा शरीर नहीं कह सकता, मगर उससे भी तो ज्यादा महत्त्व की चीजें दूसरी होसकती है। जो मगनलाल कर सकता था और उसने किया, वह महादेव कभी नहीं कर सकता था। महादेव कितना उसकी मृत्यु पर रोया है ! जो महादेव कर सकता था वह जमनालाल नही, मगनलाल नहीं। जो जमनालाल कर सकता था, महादेव या मगनलाल नहीं। तीनो के जाने से जो जगह खाली हुई वह भर नहीं पाई।"

बापू प्रार्थना से पहले और पीछे रामायण का अर्थ करते रहे, बा के लिए चुनी हुई चौपाइयो का गुजराती अनुवाद भाई से करवाते है। फिर उसे खुद सुधारते है। उसको दुरुस्त करने में आज बहुत समय गया।

दोपहर बम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी को बापू ने पत्र लिखा। उसमें पूछा कि महादेवभाई की मृत्य के बारे में बापू का तार पत्र क्यो बनाया गया था ? इतनी देर से क्यो दिया गया, और इसके लिए खेद-प्रकाश तक नही किया, यह कैसी बात ? जेल से पत्र लिखने के बारे में बापू ने सरकार को जो पत्र लिखा था, उसका सरकार ने उत्तर नही दिया। यह शिकायत भी इस पत्र में की।

रात बापू थके थे। खून का दबाव २००/११२/११६ था। चिन्ता हुई। रात वे सोये भी अच्छी तरह नही। विचार चल रहे थे।

आज महादेवभाई को गये पाच हफ्ते पूरे हुए। समाधि पर के सारे फूल बदले, नया ॐ बनाया (रोज मुरझाए हुए फूल ही बदलते थे), लाल देहलिया (Dahlia) के फूलो का स्वस्तिक बनाया। मन में आया, महादेवभाई यह देख सकें तो कितने खुश हो ! मगर प्राणी कहा जाता है यह कौन जानता है !

सरोजिनी नायडू भी आज समाधि-स्थान पर आई। शनिवार को वे आती है। बा भी आना चाहती थी, मगर उन्हे चलने की इजाजत नही। "अगले शनिवार को सही," इतना कहकर बैठ गई। दोपहर बा कुछ निराश थी। बाहर जायेंगे तो क्या करेंगे, यह बात चलती थी। एकाएक बोली, "मेरा तो पता नही कि जाऊंगी या नही। मैं तो अब हू और शाम को नही, ऐसा होसकता है।"

बापू बोले, "ऐसा तो सबके लिए कहा जासकता है। यह सुशीला अभी एम डी होकर आई है, तो भी होसकता है कि अब है और शाम को नहीं। महादेव का ऐसे ही हुआ न ! तू और मैं जो बीमार पडे है, बैठे रहे। तुझे तो अच्छी होना ही है। जो चाहिए सो सेवा ले। चिन्ता न कर।"

२० सितम्बर '४२

बापू का खून का दबाव सवेरे उतर गया, १६०/१०० था, दोपहर को १८६/६२ होगया। घूमते वक्त बताते रहे कि रात उनके मन में क्या विचार चलते थे। बाद में सूरदास और तुलसीदास की बातें करते रहे।

दोपहर मैंने सरोजिनी नायडू के कहने से गाजर का हलवा बनाया और बैंगन का भरता। तीन घंटा रसोई में लग गया। थक गई। दोपहर दूसरा काम था। शाम को सवा चार बजे सोगई। पांच बजे उठी। पौने पांच बजे बापू को खाना देना था, ५-१० पर देसकी। बुरा लगा। बापू कहने लगे, "अगर ऐसी थकी थी तो ३-३० पर बाइबिल पढना छोडकर सोजाना था और किसीको कह देना था कि समय पर जगादे। ऐसी छोटी-छोटी बातो से हमारी परीक्षा होजाती है।"

रामायण के एक-एक शब्द के अर्थ पर बापू किसी समय दस मिनट लगा देते है। कहरहे थे, "मै ऊपर-ऊपर से कोई काम कर ही नहीं सकता।" यह बापू की विशेषता है। प्रतिभाशाली व्यक्ति (Genius) की व्याख्या की बात होने पर एक दिन मैंने कहा, "मेरा चित्रकला का शिक्षक कहा करता था कि जीनियस (प्रतिभाशाली) वह है जो कभी एक ही गलती दोबारा नही करता।"* बापू कहने लगे, "नहीं, प्रतिभाशाली की सच्ची व्याख्या है बारीक-से-बारीक विगत में उतरने की अपार शक्ति।"†

शाम को घूमते समय फिर कल की बात निकली। के भाषण से बापू को भारी आघात पहुचा है। दोपहर सरकार को पत्र लिखना शुरू किया था कि उनके लिए बापू के तथा कांग्रेस के सामने इतना झूठ चलाना ठीक नही है। मगर पीछे के भाषण की बात सुनी तो कहने लगे, " ऐसा कह सकता है तो और किसीको मै क्या कहू? अंग्रेजो के दोष इससे धुल जाते हैं। का और मेरा कितना सम्बन्ध रहा! वाइसराय को मैंने ही कहा था को अपनी कौंसिल में बुलाओ, वह बुद्धिशाली है, मेहनती है, विश्वासपात्र है। आज मै कहू कि वह झूठ बोलता है तो वाइसराय कहेगा कि तेरे पक्ष की बात कहे तो वह भला, नही तो बुरा। मैं अपनो के बारे में कुछ कह ही नही सकता। मैंने कभी ऐसा किया ही नहीं है। अम्बेडकर साहब से तो दूसरी आशा ही नहीं थी। वह मेरा हमेशा विरोधी रहा है। वह मुझे मार भी डाले तो मुझे अफसोस न होगा। फीरोजखां नून तो गाली ही देसकता है। ये सब मेरे विरुद्ध भले कुछ कहे। मगर ऐसे कहे वह तो ऐसा हुआ कि राजाजी मेरे विरुद्ध इस तरह कहे तो उसे मै क्या उत्तर दू? . मेरा मित्र रहा। उसे एक बार सत्याग्रह में मैंने डिक्टेटर भी बनाया था, मगर सरकार के घर बैठकर लोग पुरानी बातें भूल जाते हैं। सो सरकार को अब कुछ लिखने के लिए मेरी कलम नही चलती।" अत बापू ने वह पत्र लिखना छोड दिया।

---

*"Genius is one who does not commit the same mistake twice"

†"Infinite capacity to go into the minutest detail"

शाम को बापू ने ७-३५ पर मौन लिया, खून का दवाव आज फिर वढा—१९६/११२ था।

२१ सितम्बर '४२

आज बापू का मौन था। दोपहर भारत-सरकार के गृह-मंत्री को उन्होने पत्र लिखा। जो झूठ चलरहा है उसका प्रतिवाद किया था। उन्होने यह भी लिखा कि देश में जितनी वर्बादी हुई है उस सवकी जिम्मेदार सरकार है। वह कांग्रेस के लीडरो को इस तरह न पकडती तो कुछ भी हानि होनेवाली नहीं थी। सरोजिनी नायडू की सूचना थी कि इस सब झूठ का विरोध करने की जरूरत नहीं, यह आपकी शान के खिलाफ है।

रात फिर बापू का खून का दवाव बहुत ज्यादा था— २०८/१२६। महादेवभाई का वाक्य याद आरहा था, "बापू तो ज्वालामुखी है। कब वह भडक उठेगा, कहा नहीं जासकता।"

२२ सितम्बर '४२

आज सवेरे गीता-पाठ करते-करते मैं कई जगह अटकी। बापू ने भाई को कल से गीता का क्रम चलाने को कहा।

प्रार्थना के बाद बा के सिर में दर्द था, बापू खुद दवाने लगे। पांच-सात मिनट तक दबाया। जिनको मैं पत्र लिखना चाहूं उन रिश्तेदारो की मि० कटेली ने सूची मुझसे मांगी थी। शाम को मुझे बापू ने बताया कि उन्हे क्या उत्तर देना चाहिए।

बापू का सरकार के नाम नया पत्र अभी गया नहीं। बापू ने खुद पत्र लिखने इत्यादि के बारे में जो पत्र बम्बई सरकार को २७ अगस्त, १९४२ को लिखा था उसका उत्तर अभीतक नहीं आया। मि० कटेली ने उसके लिए फिर से याद दिलाया था। आज उत्तर आया कि सरकार बापू के पत्र का उत्तर नहीं देगी, ऐसी बात नहीं, मगर अभी समय लगेगा।

आज बापू का खून का दवाव कुछ कम रहा—१८०/१०६। रोटी-मक्खन आज बन्द किया।

२३ सितम्बर '४२

आज सवेरे भाई ने प्रार्थना चलाई। घूमते समय मैं गीता याद कर रही थी। बापू के कहने से बोलकर याद करना शुरू किया। १६-१७ अध्याय कंठ कर लिये। बापू मानते हैं कि घूमते समय काम की बात करना तो उनके लिए अच्छा नहीं, मगर कुछ बात न करे, ध्यानावस्थित ही रहे, तो वह भी उनके लिए अच्छा नहीं। सो बापू कहते थे कि मैंने गीता याद करना शुरू किया। यह अच्छा हुआ। गीता उन्हे प्रिय है और उसका उन्होने इतना अभ्यास किया है कि वह सुनने में या उसकी बात करने में उन पर किसी प्रकार का श्रम नहीं पडता।

दोपहर भारत सरकार के मंत्री को बापू का पत्र गया। मैंने नकल की, उसमें थोड़ी

गलती होगई थी। बापू नकल भेजना चाहते थे। कहने लगे, "इसमें तू सीखेगी और आगे के लिए होशियार होजावेगी।" मगर मुझे वह ठीक न लगा। मेरे बहुत कहने पर दूसरी नकल करनेदी।

मैंने 'इण्डियन मेडीकल गजेट' के सम्पादक को पत्र लिखा। मि० कटेली को, अपने घरवालों को पत्र लिखने के बारे में जवाब दिया। बापू ने मसविदा बना दिया था। मैं उसकी नकल कर रही थी। इतने में मीराबहन आई और कहने लगीं, "ऐसा करने में कोई अर्थ नहीं हैं। बापू का मामला अलग प्रकार का है। वे इस तरह किसी को भी पत्र लिखने से इन्कार कर सकते हैं। मगर हम उस श्रेणी के नहीं हैं।" मैंने कहा, "बापू को मेरा यही जवाब देना ठीक लगता है।" शाम को बा कहने लगीं, "तुम माताजी को क्यों नहीं लिखती हो? बापूजी कहते हैं कि उन्होंने तुम दोनों भाई-बहन को घर लिखने को कहा है।" मैंने समझाया कि बापू न लिखें तो हम कैसे लिखें! सरकार बापू को उनकी शर्त पर पत्र लिखने नहीं देती, उस पर हम अपनी नाराजगी केवल इसी तरह बता सकते हैं कि हम भी न लिखें। बापू को यही ठीक लगता है।

भाई ने भी कटेली को उत्तर दिया कि सरकार की शर्त पर वह पत्र नहीं लिख सकते। उनके लिए अपने घरवाले ही केवल कुटुम्बीजन नहीं हैं, इत्यादि।

हम लोगों ने जवाब लिखा। उसके बाद बापू के पत्र के उत्तर में सरकार का पत्र आया कि वे सेवाग्राम में किस-किस को लिखना चाहते हैं उनकी सूची दें। मगर वे घरेलू मामलों के बारे में ही लिख सकते हैं। सरोजिनी नायडू, मीराबहन वगैरा को मैंने यह पत्र दिखाया तो सब उत्सुकता से पूछने लगीं, "अब क्या वे लिखेंगे?" मैंने कहा, "नहीं, मुझे नहीं लगता कि वे इस शर्त पर लिखें।"

दोपहर घर से पत्र मिले। बहुत अच्छा लगा। यहां पर एक पत्र मिल जाये तो मानो बड़ी बात होगई। माताजी का मिले तो बस खुशी का कहना क्या! उन्हें हमारे पत्र न मिलने से आघात पहुंचता होगा, इस विचार से मन में दुःख होता है। बा कहने लगीं, "एक बार तो लिखो, फिर न लिखना। बूढ़ी मां को लिखना ही चाहिए।" मैंने कहा, "बा, ऐसे नहीं लिखा जासकता। मां को न लिखने की इच्छा का संयम आसान बात नहीं। मगर तय किया है कि नहीं लिखना तो नहीं ही लिखना।

२४ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय मैंने बापू से पूछा, "मीराबहन वगैरा को मेरा घर पत्र न लिखना एक हास्यास्पद चीज लगती है। शायद ऐसा भी लगे कि मैंने अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए ऐसा किया है। बा भी रात को कहती थीं कि घर पर पत्र क्यों नहीं लिखती। मैंने तो ऐसी किसी भावना से न लिखने का सोचा नहीं। आपको मेरा न लिखना ही ठीक लगा, सो न लिखने का निर्णय किया। मगर बा के कहने से मैं ऐसा समझी कि आप चाहते हैं कि मैं लिखूं।" इस पर बापू ने कहा, "मैं नहीं चाहता कि मेरे कहने के कारण तुम न लिखो। मगर तुम मुझसे पूछो कि मुनासिब क्या है तो मैंने बताया है कि तुम्हें नहीं लिखना चाहिए।

तुम्हे यहा पर अकेले थोडे रखनेवाले थे । यहा रखा तो मेरे कारण । तो तुमको लगना चाहिए कि जब मेरा स्थान ही बापू के कारण से है तो जो हक बापू नही लेते उसे मै कैसे लेसकती हू । सरोजिनी नायडू को वह चीज लागू नही होती। वह कोई आश्रमवासी तो है नही, बहुत चीजो में मेरा विरोध भी कर लेती है । मै तो गुणो को ही देखता हू । मै खुद कहा दोषरहित हू कि किसीके दोष देखू ! वह तो अपना स्वतन्त्र स्थान रखती है । उसने अपना मार्ग निकाल लिया है । मीराबहन तो आश्रमवासी रही। घर-बार, माता-पिता का त्याग करके आई। उसको तो जो चीज प्यारेलाल को लागू होती है उससे भी ज्यादा लागू होती है । वह यद्यपि अपने को मेरी लडकी कहती है, मगर उसका भी तो अपना स्वतन्त्र स्थान बन गया है । अपने आप उसको लगता कि उसे नही लिखना चाहिए तो अलग बात थी । तुमने मुझसे पूछा तो मैंने तुम्हे तुम्हारा धर्म बताया । पहले तो मैंने तुमसे यही कहा कि मेरे सरकार को लिखे पत्र का उत्तर आजाने दो । बाद में यह सूत्र बताया कि बापू न लिख सके तो तुम भी नही लिख सकती। अगर तुम उसे समझ गई हो तो तुम्हे अपने आप ऐसा लगना चाहिए कि मै नही लिख सकती । फिर किसी की हसी की परवाह नही होनी चाहिए, नही तो बूढे, उसके लडके और गधे की ईसप-वार्तावाला हाल होगा । तुम्हारे मन में इस बारे में अगर शका है तो मै कहता हूँ कि लिखो। कटेली को कल जो लिखा है वह वापस लिया जासकता है । मगर मेरा कहना दिल में बैठ गया हो कि बापू न लिखे तो मै भी नही लिख सकती, तो फिर शका का स्थान नही रहना चाहिए । जब मैने यह पोशाक अख्तियार की तब मुझे तो हसी का काफी डर था। खास करके मुसलमानो से, क्योकि उनके धर्म में यह है कि शरीर टखनो तक ढ़का होना चाहिए। मै मद्रास जारहा था, रास्ते में मौलाना मुहम्मदअली को सरकार ने पकड़ लिया। बेगम मुहम्मदअली मेरे साथ थी और बुरका ओढे थी। वह मद्रास तक मेरे साथ आई। मुसलमानो को यह पसन्द नही आया कि वह मेरे साथ इस तरह घूमें । सो मद्रास से वे अलग हुई । वहा सभा में जो लोग आये सब विदेशी कपडे पहने हुए थे । मुझे दु ख हुआ । मै क्या करूँ ? लोगो ने कहा, खादी मिलती नहीं । सो मैंने सोचा कम-से-कम कपडे से कैसे काम चला सकते है, यह मै ही करके दिखाऊ । उमर सोबानी से सलाह की और नई पोशाक धारण करने के बारे में उन्हे विचार करने को कहा, खासकर मुसलमान के नुक्तेनिगाह से । उन्होने मेरा विचार पसन्द किया और खुद लुगी पहननी शुरू की। मैने एक बार जब नई पोशाक पहनने का निश्चय किया तो फिर किसी की हसी-मजाक की परवाह नही की । विचार किया, और उसे अमल में रखा । यानी नई पोशाक धारण करली। उसमें तीनेक महीने लग गये होगे। उससे पहले तो मैं काफी कपडे पहनता था।" मैने कहा—जी हा, महादेवभाई बताया करते थे कि कैसे वे आपका खाना पकाते थे, आपको खिलाते थे और सब बडे-बडे कपडे भी धोते थे। बापू हसने लगे, "हा, तब कपडे धोना सचमुच बडा काम था। अब तू जो धोती है वह तो खेल है। और इस सारे काम के साथ महादेव को

लिखना-पढना, 'यग इण्डिया' का काम करना, लोगो से मिलना वगैरा यह सब करना होता था। उसके पास एक मिनट की फुरसत नहीं रहती थी।" मैंने कहा, "तब आप साथियो के आराम के बारे में इतना आग्रह भी नहीं रखते थे। आज तो हम लोगो को समय पर सोना, आराम करना, खाना यह सब आपके ध्यान में रहता है और उस पर आपका जोर का आग्रह रहता है। आपकी अपनी शारीरिक शक्ति कम होगई है। इसलिए दूसरो में भी आप कम शक्ति का अनुमान करते है।" बापू बोले, "यह ठीक है, इसीलिए मैंने कहा है कि अब मैं आश्रम चलाने के लायक नहीं रहा हू। मैं तो अपने गज से ही सबका माप निकालूगा न! मैं प्रार्थना सोते-सोते कर लेता हू। सब ऐसा करने लगें तो कैसा दृश्य बन जाय? मगर लोग मुझे नहीं छोडते है तो चलाता हू। जितना कर सकता हू करता हू।"

सरोजिनी नायडू की बात करते-करते गोखले की बात बताने लगे। गोखले का उनके बारे में मत बताने लगे। कहने लगे, "मैं तुझसे बहुत सी बाते कर लेता हू जो किसीसे नहीं करता। करने की है भी नहीं। ऐसे ही गोखले मेरे साथ सब बाते कर लिया करते थे। उनके मित्र तो बहुत थे, मगर ऐसा कोई नहीं था कि जिसके सामने निसकोच अपने मन की सारी बाते वे कह सके। मुझे उन्होने विश्वास-पात्र समझा और एकएक आदमी का पृथक्करण करके बता दिया।"

कुछ देर बाद बोले, "आज तेरा गीता का पाठ नहीं होसका, मगर यह भी तो गीता ही है न। मैं जो बाते कर लेता हू, वे निकम्मी तो होती ही नहीं। उनमें से जो कुछ ले सकती हो लेलेना।"

मुझे बाइबिल का वाक्य याद आया—"कानोवाले सुनें, आखोवाले देखें।"* बापू के पास तो ज्ञान का सागर पडा है। जितनी जिस इन्सान की शक्ति है, उतना सीख सकता है। उस सागर में से हरेक अपना प्याला भर सकता है, किसीका प्याला छोटा हो, या टूटा हुआ हो तो उसमें बापू क्या करे!

२५ सितम्बर '४२

आज बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर लिखा। इसलिए इमला नहीं लिख सके। सुबह कलेक्टर और डा० शाह आये। शाह पहले आये। बापू का खून का दबाव बढा और यह सुनकर बापू से कहने लगे, "मि० गाधी, मैं समझता था कि आप तो बडे तत्त्वज्ञानी है। जिन चीजो के बारे में आप कुछ कर नहीं सकते, उनकी चिन्ता क्यो?"†

कलेक्टर सबको पूछ जाता है, "कोई खास बात तो नहीं है?" जब वे लोग

---

* "Those that have ears let them hear, those that have eyes let them see"

† "Mr Gandhi, I thought you were a great philosopher You must not worry about things you can do nothing about?"

आये तब भाई वहा न थे। इनके मिलने के लिए भाई की खोज होने लगी मगर वे मिले ही नहीं। बापू ने बाद में कहा, "जब ये लोग आते है तब हम सबको एक जगह रहना चाहिए, ताकि उन्हे हमें खोजने की तकलीफ न उठानी पडे। हमें भूलना नहीं चाहिए कि हम कैदी है।"

आज सुबह बापू छ बजे उठे। मैं तो चार बजे प्रार्थना के समय जाग उठी थी। मगर वक्त का पता नही था। सबको सोता देखकर पडी रही। पीछे सोगई। बापू जब उठे और सुना कि मैं प्रार्थना के समय जाग गई थी, मगर वक्त का पता न होने से पडी रही तो नाराज होगये, "क्यो पडी रही थी? यह कोई बात है! नीद खुल जाय तो उठना ही चाहिए।" अपने आप पर भी वे बहुत नाराज होने लगे कि क्यो प्रार्थना के समय वे उठ नहीं सके। नाश्ते में दूध नही लिया। खाली फल का रस लिया।

बा को आज मैंने शहद में विटामिन की गोली दी। बापू ने कल कहा था कि शहद में मिलाकर देना। मैं समझी स्वाद खराब न लगे, इसलिए शहद में देने को कहा होगा। मगर बापू चाहते थे कि बा को पता ही न चले ऐसी तरह देना है। घूमते समय इसी बारे में बात करते रहे।

शाम को घूमते समय मैंने १६, १७, १८ अध्याय गीता के जबानी सुनाये। मैंने बापू से कहा, "महादेवभाई बताते थे कि एक बार जेल में वे आपसे अलग रखे गये थे। तब वे रोज घूमते-घूमते सारी गीता का पारायण किया करते थे। करीब डेढ घण्टा लग जाता था। ऐसा करते-करते उन्हे गीता याद होगई थी। उन्होंने तय किया था कि जब-तक आप से अलग रहेंगे तबतक रोज गीता का पारायण करेंगे।" बापू ठंडी सास लेकर बोले, "हा, उसने मुझे यह सब बताया था और अब हमेशा के लिए अलग होगया।"

२६ सितम्बर '४२

आज शनिवार था। महादेवभाई को गये छ हफ्ते पूरे हुए। उनकी समाधि पर सब गये, फूल सजाये। उसमें आधा घटा लगा। घूमते समय गीता-पाठ किया। बापू थके-से लगते थे। गरमी काफी बढ गई है, यही कारण होगा। खून का दबाव ठीक था, मगर खून के दबाव के होजाने से भी तो थकान होती है न।

आज सरोजिनी नायडू का जन्म-दिन है। उसके लिए उन्होने शाम को आइसक्रीम बनवाई थी। दोपहर के खाने के समय बापू के लिए सलाद अच्छी तरह सजाई। नास्टर्शम* के पत्ते और फूल, बीच में टमाटर, मूली, खीरे के टुकडे बहुत सुदर दीखते थे। बापू को भी आइसक्रीम खिलाई। बकरी के दूध की बनाई गई थी। कल मुझसे गाजर का हलवा बनवाया था, रामनाथ (रसोइया) ने बालाई बनाई। वह हलवे पर लगाई गई। मटर का पुलाव बना; भाई ने जिन्जर केक और कढी बनाई। कटेली साहब ने सूरती

---

*एक प्रकार का पौधा जिसके फूल और पत्ते का स्वाद राई की तरह तीखा और चरपरा होता है।

मिठाई का पार्सल मगवाया था। मीराबहन ने कमरे में नये फूल सजाये। बिजली के चूल्हे तक के चारो ओर फूल रखे गये। सरोजिनी नायडू खूब उत्साह में थीं। ठाटबाट से तैयारी कीगई थी। इस कारण खाना आधा घटा देरी से परोसा गया। वे बहुत खुश थीं। उनका एक गुण है कि जो भी लोग कुछ काम करें उनकी तारीफ करना, सबको रिझाकर काम करवाना। दोपहर को सब कैदियों को जो वहा काम करने आया करते थे, और सिपाहियो को चिवडा और केले बाटे। उन्हे बहुत अच्छा लगा। बापू से बाते करते समय कहने लगीं, "सचमुच समझ में नहीं आता, माताएँ ऐसी पगली क्यो होती है !"*

शाम को घूमते समय अग्रेजी न जानने वालो की बाते चलीं। चर्चा मीराबहन ने चलाई थी। मैंने कहा, "जमनालालजी भी तो अग्रेजी नहीं जानते थे, मगर वह अपना काम खासा चला लेते थे।" बापू कहने लगे, "मगर जमनालाल अग्रेजी की बाते सब समझ लेता था। अग्रेजी में प्रस्ताव वगैरा आते थे, उनमें वह एक भी चीज छोडता नहीं था। व्याकरण नहीं जानता था, मगर शब्दो का उपयोग ठीक जानता था। इसलिए अपने भाषणो वगैरा का तर्जुमा दुरस्त किया करता था। उसके जैसा बारीकी से हरेक चीज को पकडनेवाला आदमी भाग्य से ही कही मिलता है। जमनालाल किसी चीज को वर्किंग कमेटी में छोडता नहीं था। वह बुद्धिशाली था और व्यवहार-कुशल भी। वह अपनी जगह पर अद्वितीय था।"

रात को मैं और भाई महादेवभाई की बाते करते-करते ११ बजे तक बैठे रहे। जीवित के हम गुण और दोष देखते है। कई बार दोषो को देखकर गुणो को भूल भी जाते है। मगर मृत के दोष अपने आप लोप होजाते है। गुण-ही-गुण स्मृति में रह जाते है। महादेव भाई का चित्र आज हमारे सामने तो एक आदर्श और सम्पूर्ण जीवन का चित्र है। उसमें कोई कमी दिखाई नही देती।

: १७ :

घूमते-फिरते सामान्य शिक्षण

२७ सितम्बर '४२

घूमते समय मेरे हाथ में अक्सर कैंची रहती है। फूल काटने के लिए रखती हू। बापू कहा करते है कि कैंची से ही फूल काटने चाहिए, मरोड-कर फूल तोडने में हिंसा और जगलीपन है। घूमकर लौटने पर उसे अपने

*"Really I don't know why mothers are so silly"

ठिकाने रख देती हू। कई दफा हाथ के नाखून उससे काटने लगती हूँ। आज बापू कहने लगे, "यह या तो व्यर्थ ही हरकते है, या तुझे सचमुच ही नख काटने की जरूरत है ?" मुझे कहना पडा कि जरूरत तो नही थी। बापू बोले, "तो इसको मै सहन नही करूगा।" मैंने नाखून काटना बन्द कर दिया। एक-दो चक्कर लगाये कि फिर यन्त्रवत मेरा नख काटना शुरू होगया। तुरन्त मुझे स्मरण हुआ कि बापू ने मना किया है। बन्द किया, मगर बापू ने काटते देख लिया था। कहने लगे, "मेरी आख बहुत-सी चीजें देख लेती है, मगर मै हमेशा टोकता नही हू। अगर ऐसा करूँ तो तेरा और मेरा दोनो का खात्मा होजाय।" मैने कहा, "आपने जिस प्रकार आज कहा है, उस प्रकार कहे तब तो घबराहट नही होती, मगर जब आप चिढ जाते है तब मै परेशान होजाती हू। मेरी ग्रहण-शक्ति कुठित होजाती है। गुस्से में मै कभी कुछ सीख ही नहीं सकी हू। और हर किसीसे भी मै नही सीख सकती।" बापू ने कहा, "यह तो बच्चो की-सी बात हुई। उन्हे रिझा करके सिखाना पडता है। तू कबतक बच्ची-सी रहेगी ? कान पकडकर तुझे क्यो नही बताया जासकता ? अगर तू इस चीज को अपना गुण मानती है तो यह भी तेरी भूल है। मै चाहता हू कि हरेक से सीखने की शक्ति रख। दत्तात्रेय के २४ गुरु थे। उन्होंने पवन, पानी, वृक्ष आदि हरेक गुरु से कुछ-न-कुछ सीख लिया था।" मुझे याद आया कि जब मैंने अग्रेजी पढना शुरू किया था तब जो भी हमारे वहा आजाता था उससे मै एक पाठ सीख लेती थी। मैंने कहा, "हरेक से न सीख सकना गुण नही मानती हू। मैंने तो जो मन में आया सो कहा। सबसे और हर हालत में मै ग्रहण करने की कोशिश तो करती ही हू। आप कभी कोई बात चिढकर बताते है तो पीछे से तो उसका भी असर होता ही है मगर उस वक्त दिमाग सुन्न होजाता है। छुटपन से कभी किसीसे मै गुस्से से नही सीख सकी।" बापू हँसने लगे, "तो एक से तो सीख।... की तो मै बहुत-सी चीजें देखता हू। पर उसे कभी कुछ कहता ही नही, कहने से कुछ फायदा भी नही ! . भी बहुत-सी ऐसी बाते कर लेती है, जो मुझे अच्छी नही लगती। उसे भी अब कुछ नही कहता। एक वक्त था कि उसे काफी कह लेता था और वह मुझसे कहती थी कि और भी बताते जाओ। मगर अब वह सिलसिला टूट गया है। तुझे बताता रहता हू। जबतक तू सुनेगी, बताऊँगा।" मैंने कहा कि मै सुधारने की कोशिश तो करती ही हूँ। बापू बोले, "तभी तो मै बताता हू। जो बताना ही चाहिए उतना कहकर सन्तोष मान लेता हू। काफी छोड भी देता हू।" मैंने कहा, "आप छोड देते हैं, तो उससे मन में धोखा-सा पैदा होता है कि अब सीखने-जैसा कुछ रहा ही नही, हमने सब सुधार लिया है।" बापू बोले, "अगर ऐसा हो तो वह होने देना चाहिए। मै अभी बाइबिल में जोब (Job) का वर्णन पढ रहा हू। वह ईश्वर का परम भक्त था। ईश्वर ने शैतान को बुलाकर कहा कि तू उसकी परीक्षा कर सकता है, पर एक बात है, सब कुछ करना, मगर उसे मार न डालना। शैतान एक बार हारकर आता है। ईश्वर उसे दुबारा भेजता है। जोब को 'किस्मत से राम मिला जिसको' इस भजन

में बताई तीनो जगह मिलती है। पीछे वह चिल्ला-चिल्लाकर ईश्वर की शिकायत करता है। लोग उसे समझाने जाते है तो चिढता है, "मेरे पास एक वाचा रह गई है। मैं ईश्वर के पास चिल्लाकर शिकायत करता हू तो उसमें तुम्हारा क्या जाता है ?" जब जोब-जैसा भक्त भी कडी परीक्षा सहन नहीं कर सका तो साधारण लोगो की तो बात ही क्या है ?" मैंने कहा, "मैं प्रयत्न तो करती ही रहती हूँ कि मैं छुई-मुई न बनी रहू। यद्यपि कई बार असफल होजाती हू, तो भी कुछ तो सुधार होगा ही। माताजी ने तो कुछ नहीं कहा, मगर कई और कहा करते है कि बापू के पास जाकर तुझे इतना तो फायदा हुआ है कि तेरा गुस्सा बहुत शान्त होगया है।"

बापू हसने लगे, "तो उसका यश भी मुझे मिलता है तुझे नहीं।" फिर गम्भीर होगए और कहने लगे, "यह हम लोगो की विशेषता है। अच्छा होता है तो यश मुझे देंगे, किन्तु बुरा होता है तो दोष नहीं देंगे। अग्रेजो का इससे उलटा है। वे अब मुझे सबसे अलग करके सारे तूफान की जड मुझे ही साबित करने की कोशिश कर रहे है। मुझे अपना सबसे बडा दुश्मन मानते है।"

मैंने कहा, "वे भी एक दिन समझेंगे, इसमें शक नहीं है।"

बापू बोले, "यह तो है, मेरे जीतेजी नहीं समझे तो मेरे पीछे जोन आव आर्क (Joan of Arc) जैसा होनेवाला है। और मेरी मृत्यु से लोगो की शक्ति तो बढने ही वाली है।"

मैंने कहा, "मानिये कि सरकार आपको मार डाले तो इससे जरूर एक शक्ति पैदा होगी, मगर आप खुद उपवास करके या स्वाभाविक मृत्यु से चले जायें तो उसमें इतनी शक्ति पैदा नहीं होसकती।"

बापू बोले, "हा, यह मैं मानता हूँ। इसीलिए तो बैठा हू। भगवान् को जो करना होगा करेगा। मेरा अध्ययन भी ऐसा बन गया है। बाइबिल है तो उसमें भी बस ईश्वर की ही महिमा भरी है। और उसमें भी मैं अब भजनो के हिस्से पर आ-गया हू। लुई फिशर की किताब† भी उसी तरह नियमित रूप से थोडी-थोडी रोज पढता हू और रामायण को तो मैं सर्वोपरि ग्रन्थ मानता हूँ।"

मैंने बीच में कहा, "आपके राम में और तुलसीदास के राम में बहुत साम्य है। राम के पास बन्दर थे, आपके पास बिना हथियारवाले स्त्री-पुरुष और बालक। राम भी भक्त-वत्सल थे। जैसे वह सबके साथ मनुष्य होकर रहते थे, वैसे आप हमारे बीच रहते है।"

बापू बोले, "यह तो दूसरी बात हुई। रामायण की भाषा मुझे पकड लेती है। सगीत भी पकड लेता है। मैंने अपना अभ्यास ऐसी चीजो का ही रखा है। दूसरी चीजें जान-बूझकर छोडदी है, नहीं तो मैं साहित्य तो बहुत पढ सकता हू। रस तो भरा ही पडा

---

†'Men & Politics' by Louis Fisher

है। कोई रस सूखता नही है। मगर मैंने अपने काम की चीजें चुनली है। मै सरकार को भी आज पत्र लिखता हूँ तो सिर्फ उसकी जानकारी के लिए, दलील करना मैंने छोड दिया है। भाषा का डक निकल गया है। शुद्ध अहिंसा ही उसमें भरी है। मैं देखता हू कि बाहर कुछ हिंसा भी होती है। मगर अधिकतर तो अहिंसा ही चलरही है। इसीलिए मैंने निश्चय किया है कि इस बार आदोलन बन्द नही करूगा। यह आन्दोलन अग्रेजो के प्रति मेरे प्रेम का नतीजा है। मै उसे बन्द करूँ तो उनके प्रति और सबके प्रति अपना धर्म चूकू।"

शाम को घूमते समय गीता का क्रम चला। ८-२० पर रात बापू ने मौन लिया।

२८ सितम्बर '४२

सवेरे साढे तीन बजे बापू ने प्रार्थना के लिए उठाया। मैंने बापू को पीने के लिए गरम पानी दिया। फिर दतौन करने जारही थी कि इतने में भाई अपना हजामत का सामान लेने आए और बस खडे-के-खडे ही रह गये। हृदय के पास जोर का दर्द हुआ। दर्द बाए कधे में जाता था। नब्ज धीमी थी। नागपुर जेल में भी ऐसा ही दर्द उन्हे हुआ था। मगर उसके वर्णन से मुझे ऐसा लगा कि दर्द हृदय से सबन्ध नही रखता, छाती के स्नायुओ से रखता है। मगर आज का दर्द एजाइना पेक्टोरिस (Angina Pectoris)* जैसा लगा।

मैंने उन्हे लिटाया। कम्बल ओढाया। बा के लिए ऐसे दर्द के लिए जो दवा आई हुई थी उसका असर देखने के लिए मैंने वह उन्हे सुघादी। बाद में भी उन्हे छाती में कुछ खिचाव-सा लगता रहा। मगर दर्द चला गया। मै काफी डर गई थी। मगर हृदय को मजबूत करके सब करती रही। सोचती थी, ईश्वर अब और क्या करने वाला है।

प्रार्थना के बाद बापू फिर सोगये। सुबह घूमते समय गीता पढी। भाई को बहुत कहा कि आज आराम करले, मगर वे नही माने। कहने लगे, "अब तो कुछ है ही नही। मै तो भूल भी गया हू कि कुछ हुआ था।"

डा० शाह आये। भाई से कहने लगे, "मैंने तुम्हे जवान-तन्दुरुस्त आदमी समझकर छोड दिया था। डाक्टरी परीक्षा तक नही की थी। मगर अब तुम परेशान करने लगे हो!" उन्होने अच्छी तरह परीक्षा की, मगर कुछ मिला नही।

शाम को समाधि-स्थान के लिए फूल इकट्ठे कर रही थी, इतने में बापू निकल गये। मैंने उन्हे जाते देखा नही। समाधि पर पहुचकर थोडी देर उन्हे मेरी राह देखनी पडी। समाधि की दीवार सजाने के लिए भी फूल लेगई थी। मीराबहन नाराज होगई। बोलीं, "क्यो इतने फूल लाती हो? बापू का भी समय जाता है।" फूल सजाने की सारी खुशी मारी गई।

शाम को कुछ जुकाम-सा लग रहा था। मीराबहन ने गले पर मालिश की।

---

*हृदय का खतरनाक दर्द, जो प्राय प्राण-घातक सिद्ध होता है।

सोने को कुछ देर से गई। सरोजिनी नायडू से बातें होरही थीं कि बापू के जन्मदिन को क्या करना है।

गर्मी बहुत पड़ने लगी है। दोपहर को तो दम-सा घुटता है।

२६ सितम्बर '४७

सुबह समाधिस्थान से लौटरहे थे तब धुंध थी। उसमें दूर के आधे छिपे वृक्ष देखकर भाई बोले, "यह चित्रकारी में कितना अच्छा दिखे। अब तुम फिर चित्रकारी शुरू करदो। उससे पहले ड्राइंग अच्छी तरह सीख लेना।" मैंने कहा, "मेरे पास इतना समय कहां है?" इस पर कहने लगे कि हार मान बैठने की तेरी मनोवृत्ति बन गई है। हंसी की बात थी। इतने में हम बापू के पास पहुंच गये। मैंने उनसे कहा, "भाई कहते हैं, ड्राइंग सीखो, चित्रकला, संगीत व साइन्स का गहरा ज्ञान हासिल करो, भाषाएं सीखो। मैं कहती हूं, यह सब नहीं होसकता तो नाराज होते हैं। या तो मैं चुपचाप सुनती रहूं, उत्तर न दूं यह समझकर कि यह सुनने की बात है करने की नहीं, या साफ कहदूं कि आप जो कहते हैं वह मेरे-जैसा तो कर नहीं सकता, कोई विलक्षण शक्तिवाले लोग भले कर सकें।"

बापू कहने लगे, "वह जो कहना चाहता है, वह यह है कि सच्ची शिक्षा में बचपन से ही संगीत सिखाया जाना चाहिए। इससे कंठ का विकास होगा। चित्रकला, ड्राइंग इत्यादि ही से हाथ का विकास कराया जायगा, इसका अर्थ यह नहीं कि हर कोई संगीत और चित्रकला के विशारद होजावेंगे। मगर वे इन चीजों को समझ सकेंगे, थोड़ा-बहुत गा-सकेंगे, थोड़ी बहुत चित्रकारी कर सकेंगे। यही भाषाओं के बारे में है।" मैंने कहा, "छुटपन से सब किया हो तो अलग बात है। मगर आज मैं किस-किस चीज के पीछे भागूं?" बापू कहने लगे, "हां, आज तो तू एक ही चीज के पीछे पागल बन सकती है। वह है डाक्टरी, जिसके पीछे इतने साल खर्च कर चुकी है।"

भाई बोले, "डाक्टरी के बारे में भी मैं कहता हूं तो यह ऐसा ही जवाब देती है। अच्छा डाक्टर बनने के लिए इसे रसायन-शास्त्र का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, रोग के कारण शारीरिक विकार को समझने के लिए रेडियोलॉजी (Radiology)* और पैथोलॉजी (Pathology)† का खास ज्ञान होना चाहिए। एक्सरे की मशीन में साधारण खराबी होजाय तो उसे ठीक करना आना चाहिए या नहीं? डाक्टर के पास समय नहीं रहता, इसलिए भले वह सब काम खुद न करे, किसी और से करवाले, मगर उसका ज्ञान तो इतना होना ही चाहिए कि जरूरत पड़े तो सब कुछ खुद कर सके।"

मैंने कहा, "मैं तो मानती हूं कि इनमें से हर-एक चीज का पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए आजीवन मेहनत की आवश्यकता है। नहीं तो डाक्टरी की इतनी शाखाएं

---

*शरीर के भीतर के चित्र उतारने का शास्त्र

†रोग-निदान

बनती ही क्यो ? एक आदमी सब कुछ करना चाहे तो रोगी को न्याय नही देसकता। बायोकेमिस्ट्री, रेडियोलॉजी, पैथोलॉजी इत्यादि की रिपोर्टो पर से निर्णय पर आने की कला तो डाक्टर जरूर जाने, मगर हरएक शाखा का सूक्ष्म ज्ञान और उसकी कुशलता रखना मै असम्भव मानती हूँ। डाक्टर एक विषय का विशेषज्ञ हो और अन्य सब विषयो का एक सामान्य डाक्टर के जितना ज्ञान रखे। विशेषज्ञ न हो तो काम चलाना ही पडता है। सेवाग्राम मे मेरे पास सूक्ष्मदर्शी यत्र है, मगर जो सब परीक्षाए एक अच्छी खासी प्रयोगशाला मे होसकती है, सेवाग्राम मे आज नही होसकती। अगर रोगी को न्याय देना हो, प्रत्येक वस्तु की सर्वोत्तम चिकित्सा करनी हो तो सब विशेषज्ञ मिलकर काम करे ताकि एक फीस मे से मरीज को सबकी सेवाए मिल सके। मगर हरएक सब चीजो के विशेषज्ञ बनना चाहें तो वह कठिन काम है।"

बापू बोले, "यह सब तो हुआ, मगर मै पूछता हूँ कि क्या आज ये सब बाते अप्रस्तुत नही है ? जब बाहर जायगे तब देखा जायगा। हमारे सामने भगीरथ काम पडा है। हम पुरानी दुनिया मे वापस नही जाना चाहते। या तो आजाद हिन्दुस्तान मे बाहर जायगे या यही मर मिटेंगे, यह हमारा सकल्प है, यदि प्रभु ने उसे फलित किया तो।" मैने कहा कि फलित क्यो नही करेगा? बापू बोले, "कैसे करेगा, क्यो करेगा, अगर हम जो इस भगीरथ काम के मुखिया है वही अपना समय फिजूल बातो मे खोदेते है। हमारा तो एक-एक क्षण, एक-एक सास उसी काम की साधना मे जाना चाहिए। हम एक-एक शब्द तौलकर बोले, अनावश्यक बात बिल्कुल न करे, तब कही हम अपने काम के निकट पहुच सकते है। आज हमारे सामने जेल है। हम यहा अपने समय का उपयोग कैसे करे, यह सवाल है। मै देखता हूँ, यहा कितना ही समय नष्ट होता रहता है। मुझे यह चुभता है। मैने खुद तो अपना कार्यक्रम बना लिया है। अपने-आप वह बन गया है। बाइबिल है, लुई फिशर की किताब है, उर्दू है, कुरानशरीफ है। इन सबका अभ्यास नियमित चलता है। सुशीला का भी कार्यक्रम बना है, उसे वह पूरा करे। सो आज तुरत हमारा क्या धर्म है, हमें उसीका विचार करना चाहिए।"

इसके बाद प्रसग बदलते हुए बापू ने कहा, "मै तेरे साथ मीराबहन की बात करना चाहता था। कल फूलो की बात पर तू इतनी घबराहट मे क्यो पडी थी ? यहातक कहने लगी कि मै अब फूल इकट्ठे नही करूँगी। ऐसा क्यो ? जो हमारा धर्म है उससे क्यो चूकें ? कोई भले ही कुछ कहे।" मैने कहा, "इसमे धर्म की बात नही, फूल लेजाकर हम मृत की तो कोई सेवा नही करते, अपने सन्तोष के लिए लेजाते है। मीराबहन नाराज हुई तो मैने सोचा अब नही लाऊगी।" बापू कहने लगे, "हा, किन्तु यदि फूल चढाकर उसमें से हम कुछ प्रेरणा लेते है, हमारी निष्ठा को कुछ दृढता मिलती है तो ठीक है। अगर ऐसा नही है तो यह फिजूल ही है। मगर मै तो यह कहना चाहता हूँ कि छोटी-छोटी बातो से उद्विग्न क्यो होना चाहिए और इतनी जिज्ञासा भी क्यो रखनी चाहिए कि हमारे बारे में किसीने क्या कहा था ! हम उसी हदतक जानने की इच्छा रखें जहातक वह हमारे

आत्म-सुधार के लिए आवश्यक है, दिखावा की खातिर नहीं।"

रात मेरे सिर में खूब दर्द था। मीराबहन ने प्यार से आकर सिर पर दर्द की दवा लगाई। विलायती मगनेशिया के जुलाब की एक मात्रा पिलाई, बिस्तर में सुलाकर दबाने लगीं। मैंने इन्कार किया, मगर उन्होंने नहीं माना। मैंने कहा, "मीराबहन, बस कीजिए। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। इससे मैं परेशानी महसूस करती हूँ। मैंने इस किस्म की सेवा किसीसे नहीं ली।" वह बोलीं, "तब तो और भी जरूरी है कि तुम ऐसी सेवा लो।" बहुत प्यार से मुझे चादर ओढाई। दो-चार मिनट छोटे बच्चों की तरह थपकी देकर कहने लगीं, "अच्छी, नन्ही बकरी!"* सब हँस पड़े। मीराबहन बकरियों को इतना प्यार करती हैं कि अपनी कोमलतम भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्हें बकरियों का सहारा लेना पड़ा।

३० सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय मैंने बापू से मीराबहन की बकरीवाली बात कही। कहने लगे, "मीराबहन में एक बड़ा गुण है। उसके निकट मनुष्य, पशु, वृक्षों और फूलों में कोई फर्क नहीं है। उसे बकरियों से बातें करते तो तूने सुना होगा। फूल-पत्तों से भी वह बातें करती है। और कल रात उसने बिना किसीके कहे वह सब तेरे लिए किया।" मैंने कहा, 'उनमें गुण तो भरे ही हैं, नहीं तो अपने राजा-समान पिता के घर को छोड़कर वह यहां भागकर क्यों आतीं।" बापू बोले, "हां, यह बात तो है।"

आज मैंने उपवास किया। खाली सूप पिया। शाम को अच्छा लगता था। मीराबहन पूछने आईं कि कोई सेवा या मदद चाहिए तो बताना। सरोजिनी नायडू कहरही थीं, "मीरा तुम्हारे लिए कल रात बहुत चिन्तित थी। वह तुम्हें बहुत चाहती है और मुझे मालूम ही न था कि वह प्यारेलाल को भी इतना चाहती है।" मैंने उन्हें कल रात की बकरी-वाली बात बताई। कहने लगीं, "बकरी के साथ उपमा देने से अधिक प्रशंसा वह किसी-की और क्या करती?"

: १८ :

जेल में बापू का पहला जन्म-दिन

आज हम सबने काफी समय यह सलाह करने में खर्च किया कि बापू के जन्म-दिन को हमें क्या करना है। सरोजिनी नायडू ने बात शुरू की। पीछे सब अपने-अपने सुझाव देने लगे। रात को मैं आई तो आठ बजकर दस मिनट होगये थे। बापू कुछ समझ गये होंगे। कहने लगे, "तुम लोग क्या हवाई महल बनारहे

---

* 'Nice Little goat!'

थे ?" वे हसरहे थे। मैंने हसी में कहा, "बहुत अच्छी-अच्छी चीजो की बाते कर रहे थे। उनमें बाइबिल भी थी। सरोजिनी नायडू विचार कर रही है कि यहा जो लोग है उनके सामान्य ज्ञान की परीक्षा लीजाय, इसलिए पर्चा तैयार कर रही है। उसमें बाइबिल के उद्धरण भी आवेगे।"

बा की रात अच्छी नही गई। बापू को शक था कि कुछ खाने में बदपरहेजी हुई होगी।

१ अक्तूबर '४२

कल बापू का जन्म-दिन है। बापू के घूमने जाने के बाद फूल लटकाने के लिए दीवारो में कीले लगादी गई। बापू ने दोपहर को कहा, "देखो, सबसे कहदो, सजावट नही होनी चाहिए। सजावट हृदय के भीतर की हो।" मैंने हँस दिया। सरोजिनी नायडू ने मुझे बापू को यह सदेश देने को कहा था कि वे कल दोपहर तीन बजे का समय खाली रखें। जब मैं यह सदेश देरही थी तब बापू ने सजावट न करने की बात कही। फिर पूछने लगे, "तीन बजे क्या है?" भाई कहने लगे, वह तो अत्यन्त गुप्त वस्तु है। सरोजिनी नायडू से मैंने बापू का सजावट न करने का सदेश कहा तो हँसने लगी, बोली, "बापू हमको, खासकर मुझे, अपना दिल बहलाने से नही रोक सकते।"

मीराबहन ने यह सुना तो कहने लगी, "बापू ऐसा कहते है तो फूल सजाने की बात छोडदें।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "नही, तुम सब दोष मुझ पर डाल देना। मुझे यह आदेश कहा दिया गया था कि जेल में भी गाधीजी के हुक्म का पालन करूँ।"

बा दो तीन-दिन पहले कहरही थी, "बापू के जन्म-दिन पर हम हमेशा गरीबो को खाना बाटते है। इस बार ऐसा नही कर सकेगे।" मैंने कहा, "क्यो नही ?" बा ने उत्तर दिया, 'बापू कहते है, यह जेल है और सरकार का पैसा इस तरह खर्च नही किया जासकता।" मैंने बा को बताया कि हम लोग अपने-अपने पैसो से सामान मगवारहे है, सरकार के पैसे से नही, और सबको बाटेंगे। बा खुश हुई। मालिश के समय बापू की गादी के ऊपर कील ठोकने के निशान देखकर बोली, "यहा फूल नहीं लगाना। दरवाजे में तोरण भले बाधो। यहा यह सब ढोग नही चाहिए।" सिपाही उस वक्त तो चला गया, मगर पीछे से कील लगा गया। लेडी ठाकरसी के यहा से सब्जी की टोकरी लेआया। पहले शहद आया था, फिर गुड भी। गुड की टाफी मैंने कल ही बनाली थी। बापू से सरोजिनी नायडू कहने लगी, "बापू, कल आपको एक सभ्य मनुष्य की तरह भोजन मिलेगा।"

बापू हँस दिये। पूछा, "वह कैसे ?"

श्रीमती नायडू ने उत्तर दिया, "विशेष प्रकार का सूप, फूल गोभी, रोटी, कच्ची सब्जी आदि सभी वस्तुए बारी-बारी से और ठीक तरीके से परोसी जायगी।" बापू हस दिये। सरोजिनी नायडू को इन्कार न कर सके।

हमारे जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट बहुत-से फूल लाये। हम लोगो ने उनके हार बनाये। बापू

के सोने के बाद बापू के दरवाजे में बैठने की जगह पर, दीवार पर, सामने अलमारी पर, महादेवभाईवाले कमरे में और सरोजिनी नायडू के कमरे के दरवाजों पर मालाएं लटकाईं। सीढियों पर मैंने और भाई ने "जीवेम शरद शतम्" यह पूरा मंत्र सफेद रांगोली में लिखा। भाई ने पहले कोयले से लिखा। उनके अक्षर ज्यादा अच्छे हैं। मैंने उस पर रांगोली डाली। एक-एक सीढी पर मन्त्र की एक-एक पंक्ति थी—

जीवेम शरद शतम्,
पश्येम शरद शतम्,
शृणुयाम शरद शतम्,
प्रब्रवाम शरद शतम्,
भूयश्च शरद शतात्।

दूसरी तरफ सीढी पर उसी तरह—'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतंगमय' यह मंत्र भाई ने लिखा। इसका आगे का मुख बाहर की ओर था और प्रथम मंत्र का भीतर की ओर। विचार था कि एक ओर से बापू को घूमने के लिए नीचे लेजावेंगे और दूसरी ओर से वापस लायेंगे ताकि एक मंत्र उतरते समय सीधा सामने हो, दूसरा चढते समय। दोनों तरफ की सीढियों की बीच की जगह पर रांगोली से चित्र बनाये थे। बरामदे में 'सुस्वागतम्' लिखा। यह सब लिखते-लिखाते मुझे रात के १२ बज गये। मुझे डर लगा और भाई भी डरे कि कहीं बापू उठ गए तो नाराज होंगे। कहने लगे, "अब जो रह गया है सो छोडदो, सुबह देखा जायगा।"

सुबह उठी तो देखा रांगोली खतम होगई थी। अतः जो रह गया था, रह ही गया। सरोजिनी नायडू ने रात को साढे ग्यारह बजे चाय बनाकर पिलाई। कहने लगीं, इससे ताजा होजाओगी। जिस टोकरी में मैं महादेवभाई की समाधि पर रोज फूल लेजाती थी, उसमें फल, बादाम, टाफी की बोतल, शहद की बोतल आदि सामग्री रखी गई। उसे फूलों से मीराबहन ने सजाया। उनमें कला-वृत्ति स्वाभाविक रूप में है। सब जगह फूल सजाने का भार उन्होंने लिया था। सरोजिनी नायडू के जिम्मे सामान्य देखरेख थी। वे बैठी-बैठी कल के लिए रात के साढे बारह बजे तक मटर के दाने निकालती रहीं।

मीराबहन ने सवेरे खाने के समय बकरी के बच्चे को बापू से प्रणाम कराने को लाने का विचार किया था। भाई ने सूचना की कि उनके गले में 'सहनाववतु'* वाला मन्त्र लिखकर लटका दिया जाय। मीराबहन को यह विचार अच्छा नहीं लगा। पहले तो वे इधर-उधर के ऐतराज करती रहीं मगर सरोजिनी नायडू ने बताया कि उनके खयाल से जो विचार मूल में मीराबहन का था, उसमें दूसरे लोग दखल न दें तो अच्छा है। भाई

*आश्रम में भोजन करते समय इससे आरंभ किया जाता था। वह मंत्र यह है :
सहनाववतु, सहनौभुनक्तु, सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै॥

ने उनकी अरुचि देखकर फौरन ही अपनी सूचना वापस लेली। मुझे यह थोडा चुभा। मैंने भाई से कहा, "यह अफसोस की बात है कि मीराबहन ने आपकी सूचना नापसद की, उससे तो बापू खुश होते और बकरी के बच्चो से प्रणाम करवाना बहुत शोभायमान होता।" भाई ने उत्तर दिया, 'हा, बकरी के बच्चो के साथ ऐक्य की बात से बापू बहुत खुश होते, मगर उसे छोडना ही ठीक था। आखिर आज के दिन की खासियत तो यही है न कि हम सबके साथ एकरस हो, परस्पर मिठास हो और जो चीज किसी और को पसन्द न हो उसे खुशी से छोडदें।"

रात को मेरे सोजाने के बाद मीराबहन अपने-आप भाई के पास आई और बकरी के बच्चे के लिए 'सहनाववतु'वाला मत्र लिखने का अनुरोध किया। वह साबुन का एक खाली डिब्बा लाई। उसमें से पान की शकल के गत्ते काटकर भाई ने उन पर 'सहनाववतु' मत्र लिखा और नीचे लिखा 'मोटा भाई घणु जीवो' (बडे भाई आपकी बडी उम्र हो)। ये गत्ते बकरी के बच्चे के गले में लटकाये जावेंगे। बापू बकरी का दूध पीते है, तो बकरी के बच्चो के बडे भाई हुए न। मै रात बारह-साढे बारह बजे बिस्तर पर पडी थी, आखें जलती थी। भाई ने मिट्टी की पट्टी आख के लिए बनादी थी, आख पर रखकर सोई; पर नीद नही आई। एक बजे के बाद सोसकी। नीद ही उड गई थी। ३–२० पर बापू ने प्रार्थना के लिए उठाया। मिट्टी की पट्टी से आख को बहुत आराम मिला था।

२ अक्तूबर '४२

सरोजिनी नायडू और मीराबहन, दोनो ने उन्हे प्रार्थना के लिए आज जगाने को कहा था। मै गई तब सरोजिनी नायडू तो जग ही रही थी। वह रात भर सो ही नहीं सकी। मीराबहन को गहरी नीद से जगाना पडा। बापू के लिए पहला आश्चर्य तो इन दोनो का प्रार्थना में आना और दरवाजे और दीवार पर लगे हुए फूल देखना था। मीराबहन ने भजन गाया, "जागिये रघुनाथ कुवर।" उन्हे सुबह का एक यही भजन आता था, ऐसा उन्होने मुझसे कहा। प्रार्थना के बाद मैंने देखा कि एक सिपाही रागोली भर रहा था। बा भी आज प्रार्थना के लिए उठी थी। मीराबहन ने प्रार्थना से पहले बापू को प्रणाम किया, मैंने, भाई और बा ने प्रार्थना के बाद। बापू प्रार्थना के बाद सोगये, बा भी। सरोजिनी नायडू, मीराबहन, भाई और मैंने स्नान किया। मै बापू के लिए मौसम्बी का रस निकालरही थी तभी बापू उठकर भीतर आये।

प्रार्थना के समय दीवार पर फूल देखकर बापू ने बा से कहा, "तू नही रोक सकी न इनको?" बा ने कहा, "मैंने मना तो किया था मगर नहीं माने।" बापू ने सरोजिनी नायडू से कहा, "मुहब्बत भी किसी पर लादनी नही चाहिए।" सरोजिनी नायडू ने दीवार पर से फूल उतरवा दिये और सीढी के पास रख दिये।

नाश्ते के लिए बापू आये तो फल की टोकरी सजी हुई सामने रखी हुई थी। सरोजिनी नायडू ने आकर फूल का हार पहनाया और मीराबहन ने सूत का। हमारे जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० कटेली ने भी फूल का हार पहनाया। साथ में ७४) रु० हरिजन

काम के लिए भेंट किये और सादर प्रणाम किया। मैंने अपने सूत का हार वनाया था। भाई आये, कहने लगे मुझे भी वनादो। वह रस निकालने लगे। मैंने उनके और वा के सूत के हार वनाये। रागोली के ७४ निशान सूत के हारो पर लगाये। नीचे एक गेंदे का फूल वाध दिया। भाई ने पूछा, "क्या महादेवभाई का सूत नहीं है ?" मैंने जल्दी मे निकालकर एक हार उसका भी वनाया।

वापू नाश्ता कर रहे थे, इतने में मीरावहन और भाई एक-एक वकरी के वच्चे को लिये हुए आपहुचे। दोनो वच्चो के गले में फूल-पत्तो के हार और 'सहनाववतु' मत्रवाले गत्ते लटकरहे थे। मीरावहन ने उनकी ओर से एक छोटी-सी सुन्दर स्तुति कही और वकरी के वच्चो से हाथ जोडकर प्रणाम कराया। फिर वापू के हाथ से उन्हे रोटी दिलवाई। मगर उससे पहले ही उन्होने एक-दूसरे के गले के फूलो और कोमल पत्तियो के पहनाये हुए हारो को ही खाना शुरू कर दिया था। वापू वहुत हसे। मैंने उन्हे अपने और वा के सूत का हार पहनाया। वा ने कहा था कि उनके सूत का हार भी मैं ही पहना दू। भाई ने अपना हार पहनाया। इसके वाद घूमने को निकले। रास्ते में वापू ने हमारी रागोली और सीढी पर लिखे मत्र देखे। सारी फूल मालाए और टोकरी के फूल महादेवभाई की समाधि पर लेगये। वहा दीवार पर सव सजा दिये। रोज की प्रार्थना की। प्रार्थना से पहले भाई ने महादेवभाई के सूत का हार वापू को पहनाया। वापू और भाई की आखो में पानी आगया। आज खास तौर से प्रार्थना के समय ऐसा आभास होता था मानो महादेवभाई हमारे साथ ही खडे प्रार्थना वोलरहे है।

घूमते समय वापू ने पूछा, "तूने भर्तृहरि की कथा सुनी है ?" मैंने कहा, "जी हा, सुनी तो है।" वापू वताने लगे, "योगी होने के वाद अन्त में भर्तृहरि को अपनी पत्नी के पास भीख मागने जाना था। जाता है तो अपने भाई का और उसके प्रति अपने वर्ताव का स्मरण करके कहता है, 'अरे जखम जोगे नहीं जशे'।* यही वात महादेव के चले जाने के घाव पर भी लागू होती है।" यद्यपि वापू अपना दुख व्यक्त नहीं करते, मगर महादेवभाई के जाने से उन्हे वहुत गहरा घाव लगा है।

वा को मालिश और स्नान करवाकर मैं सरोजिनी नायडू की मदद के लिए गई। उन्होने मटर का पुलाव वनाने को कहा था। वैंगन का रायता वना दिया। वापू के खाने की तैयारी की। मीरावहन ने खाने की मेजपोश के किनारे फूलो की वेल और फूलो का सुन्दर स्वस्तिक वनाया। दरवाजे पर लाल रागोली का सुन्दर स्वस्तिक वनाया था। एक तश्तरी में फूलो से सजाकर फल रखे। मीरावहन ने कच्ची सब्जी भी सुन्दर ढग से सजाई। टमाटर को गुलाव के फूल के आकार में काटा था।

साढे दस वजे कलेक्टर और डा० शाह आये। डा० शाह तो अच्छी तरह

*'योगी होने पर भी यह घाव मिट नही सकता।'

बातें करते रहे। कलेक्टर ने तो इतना ही कहा "अपनी वर्षगाठ के दिन आप कैसे है ?" बापू कुर्सी पर बैठे थे ताकि उसके आने पर खडे होकर हाथ मिला सकें। नीचे गद्दी पर बैठकर उठना उनके लिए कठिन रहता है। कलेक्टर के आने पर खडे हुए, हाथ मिलाया। मुझे यह अच्छा नहीं लगा, बापू क्यो कलेक्टर की खातिर खडे हो ? मगर बापू तो मर्यादा की मूर्ति है। जो करना चाहिए उसमें कभी नहीं चूकते। वे दूसरा कर नहीं सकते थे। कैदी की हैसियत से उन्हें कलेक्टर का मान रखना चाहिए था। नाश्ता करते हुए बापू ने कहा कि मै जन्म-दिन पर उपवास किया करता हू और दूसरो से भी उनके जन्म-दिन पर करवाता हू। आज मुझे फल और सब्जी पर ही रहनेदें। मैंने कहा, "नहीं, फल और दूध लीजिए।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "साग तो खाना ही होगा।" आखिर एक रोटी को छोडकर बाकी सब कुछ लिया। खाने के बाद पैर के तलवो पर मालिश करवाकर बापू सोगये। बा भी आज उत्साह में थीं। उन्होने कल आज की तैयारी में सिर धोया था। आज नया टीका लगाया, बालो में फूल लगाये। खाया भी अच्छी तरह। मै और मीराबहन दोपहर काफी सोये, बा भी। सब थक गये थे।

सरोजिनी नायडू ने दोपहर को आराम नहीं किया। सिपाहियो और कैदियो के लिए दाल, सेव, पेडे, जलेबी और केले मगाये थे। सबका हिस्सा करके उन्होने रखा। यह सब अपने, मीराबहन के और मेरे पैसे से मगाये थे। तीन बजे सब कैदी आकर लाइन में बैठ गये। बापू ने आकर उन्हे दर्शन दिये— नमस्कार किया। बा ने सबको खाने का सामान बाटा। वह बहुत खुश थीं। बापू भी कैदियो को खाते देखकर बहुत खुश हुए। आज सुबह सब सिपाही बापू को प्रणाम करने आए थे। सबको बापू ने कुछ-न-कुछ फल दिये थे। घूमते समय बापू कहरहे थे, "सिपाहियो को तो फल दिये, मगर कैदियो को तो कुछ दिया ही नहीं।" मैंने कहा—देंगे। आप देखते रहिये। दोपहर को कैदियो को खाने की चीजें मिलती देखकर वे बहुत खुश हुए। जेल में कैदी लोग मामूली-मामूली चीजो के लिए भी तरस जाते हैं। कटेली साहब ने सबके लिए आइसक्रीम बनवाई। बापू के लिए तो बकरी के दूध की बनाई और अपने हाथ से मशीन चलाई। आज बापू ने शाम को खाने के समय तीस वर्ष के बाद थोडी आइसक्रीम सरोजिनी नायडू के आग्रह के वश होकर खाई। हम सबने पेट भरकर खाई। सब सिपाहियो और कैदियो को भी दी। बापू खुश हुए। बोले, "इन लोगो को जेल में ऐसी चीजें देखने को भी नहीं मिलतीं।" शाम को महादेवभाई की समाधि पर नए फूल रखे।

शाम को प्रार्थना में 'वैष्णवजन तो' भजन गाया। प्रार्थना के बाद मै बापू को बरामदे में लेगई। फव्वारे और रेलिंग पर दीपमाला थी। सुन्दर दृश्य था। बा ने कहा, "शंकर (महादेवभाई) के वहा भी दीया रख आना।" मै और भाई सिपाहियो के साथ वहा सात दीये रख आये।

रात हम सबने और आइसक्रीम खाई। इससे मेरा पेट बिगडा। बापू रात बिस्तर पर लेटे तब कहने लगे, "यह सब जो तुम लोगो ने किया है, उसके औचित्य में मुझे

शक है ।" उन्हें लगता था कि हम कैदी है और कैदियो को ऐसे उत्सव क्या मनाना था ?

३ अक्तूबर '४२

सुबह प्रार्थना के बाद मैं फिर सोगई । रात की आइसक्रीम ने कुछ तबीयत बिगाडी थी । घूमते समय बापू ने सुबह न उठ सकने के बारे में कुछ पूछा तो कारण बताना पडा, (हालाकि सरोजिनी नायडू ने कहा था, "हुआ क्या, रोज-रोज थोडे ऐसा होता है । अब इस बारे में बापू और मीरा को न बताना । मीरा तो सालभर के बाद भी आइसक्रीम को दोष दिया करेगी ।") बापू सुनकर हस दिये । बोले, "मेरे कहने से तू न खाती तो इतना असर नहीं होसकता था । मगर अब तकलीफ हुई । इसलिए शायद आगे ऐसी भूल न करेगी ।" फिर बापू बताने लगे कि जिन लोगो ने ये सब खाने की चीजें निकाली है उन्होने अपने आप उनके लिए छोटे-छोटे बर्तन भी बनालिये हैं । आइसक्रीम कभी बडे बर्तनो में नहीं खाई जाती है । अलग नहीं पी जाती । शेरी (दक्षिणी स्पेन की सफेद शराब) का गिलास अलग होता है, पोर्ट (दूसरी तरह की शराब) का अलग । व्हिस्की कभी अकेली नहीं पी जाती, सोडा मिलाकर पीते है । हम नकल करनेवाले यह सब तो जानते नहीं, प्याले भर-भरकर गटक जाते है और पीछे तकलीफ उठाते है ।" फिर कहने लगे, "मैंने रात भी कहा था कि यह सब जो तुम लोगो ने किया है, करने जैसा नहीं था । सरोजिनी नायडू काम तो बहुत बढिया कर लेती है, मगर सच्ची सस्कृति की कीमत देकर । जो चीज मै कहता हू उसमें सच्ची सस्कृति है । जो सब तुम लोगो ने किया, उसका मजाक भी उडाया जासकता है । किन्तु यदि हम जेल में सरकार का दूध-मक्खनतक न खाय, सूखी रोटी खाय तो उसका कौन मजाक उडा सकता है ? मैंने यह सब सहन किया, अड जाता तो तुम लोग नहीं कर पाते । मगर मैंने देखा कि आखिर तो इसमें शुद्ध प्रेम ही भरा है, अत होने दिया और कैदियो को तो देना अच्छा ही लगता है, मगर यह सब हमारी मर्यादा से बाहर है ।"

दोपहर पाच बजे पता चला कि जिन बकरी के बच्चो को कल मीराबहन बापू के पास लाई थीं, उनमें से एक मर गया है । चार बजेतक अच्छा था, पाच बजेतक खतम होगया । किसी जहरीले साप के काटने का शक था । सबके मन में आया कि वह कल बापूके हाथ से रोटी खाने के लिए ही जिन्दा रहा था । कैदी और सिपाही लोग सब कहरहे थे कि उसकी गति तो अच्छी ही होगी ।

आज महादेवभाई को गए सात हफ्ते पूरे होगए ।

४ अक्तूबर '४२

मेरा अग्रेजी व्याकरण अभीतक बहुत कम होपाया है । ७ तारीखतक कैसे पूरा होगा ? ऐसा लगता है कि हो नहीं सकेगा । यह चुभता है । बापू कहरहे थे कि मै उनका सब काम छोडदू और सारा समय व्याकरण को दू । मगर उनका तो मेरे पास आजकल काम है ही बहुत कम । बा का है, वह तो छूट नहीं सकता । दिनभर थोडा-थोडा निकलता रहता है । पढाई का समय ही नहीं मिलता । बीच में आख के

कारण दो दिन निकल गये। 'यह सब मेरी पहली एम डी की परीक्षा के जैसा हुआ।

आज बापू को यहा आये आठ हफ्ते पूरे होगये हैं। देखें और कितने पूरे करने पडते है।

बापू की सलाह से मैंने मि० कटेली से कहा था कि वह मेरे घरवालो को खबर देदें कि उनके पत्र मिल गए है और मैंने न लिखने का निश्चय किया है। उन्होने बम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी को लिखा, क्योकि वह स्वय सीधे नही लिख सकते थे।

५ अक्तूबर '४२

भारत सरकार के गृह-विभाग का आज उत्तर आया कि सरकार यह सन्देश नहीं पहुंचा सकती, मैं खुद ही उन्हे इस बारे में लिख सकती हू। बापू ने लिखने को कहा।

बा को दो रोज से अच्छी नींद नही आती। गर्मी काफी है, मच्छरदानी में दम घुटता है। आज बा कमरे में बिना मच्छरदानी के सोई। कमरे में हवा खूब आती है। भाई उनके पास सोये। बा को लगता है कि बापू रात को उठें, किसी चीज की जरूरत हो तो भाई शायद जल्दी न उठें, मैं तो उठ ही जाऊंगी, इसलिए मुझे बापू के पास से नहीं हटने देती। बा आज बहुत अच्छी तरह सोईं। आधी रात के समय बापू ने मुझे जगाकर पूछा कि क्या बा सोरही है? उसकी कुछ आवाज ही नही आती। मैंने कहा, "सोती नहीं तो आप क्या समझते है?" बापू ने कहा, "कौन क्या कह सकता है?" मैं देख आई। बा गहरी नींद में सोरही थीं। बापू के मन में डर पैदा होगया है कि कहीं बा को भी न यहा खोना पडे। किन्तु यदि बा का यह निश्चय कायम रहेगा कि अच्छा होकर बाहर जाना है तो सब अच्छा ही होगा।

६ अक्तूबर '४२

कल बापू का मौन था। कल ही कर्नल शाह के आने का दिन था मगर वे नहीं आये, इसलिए आज आये। कल फिर भडारी के साथ आवेंगे।

बापू ने कहा, "इस वक्त मेरे जन्मदिन के लिए कुछ भी बाह्य समारोह मत करना।" देशी तिथि के अनुसार कल उनका जन्मदिन होगा। हमने कातने का प्रोग्राम रखने और खाने की जगह फूल सजाने की इजाजत उनसे लेली।

सरकार ने मि० कटेली को लिखा था कि वह खतो के बारे में मेरा सन्देश मेरे घरवालो को नही पहुचा सकती। मैं इस बारे में खुद लिखू। मेरे पत्र का मसविदा भाई ने बनाया। बापू ने उसे नापसन्द किया। कहने लगे, "बिल्कुल सामान्य और सक्षिप्त होना चाहिए।"

आज माताजी आदि के पत्र मिले। बापू घूमते समय कहने लगे कि बम्बई सरकार के दफ्तर में तेरी साख जम गई मालूम होती है। मैं समझी नही। पूछा—कैसे? कहने लगे, "इस वक्त खत जल्दी देदिये हैं, कुछ काटा-छाटा भी नहीं। उन्हे लगता होगा कि यह तो ठीक चलती है, हमारा काम भी कर लेती है। तेरे बिना

बा को वे लोग यहा रख नहीं सकते।" बा बीमार रहती है। डाक्टर साथ हैं इसका सरकार को बहुत सहारा है ।

७ अक्तूबर '४२

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्म-दिन था । सवेरे प्रार्थना में बा उठीं । बापू ने आज केवल अनपका खाना खाने का निश्चय किया था । नाश्ते में सतरे-मोसम्बी का रस लिया । सवेरे प्रार्थना से पहले गरम पानी और शहद लिया, दोपहर को भी । ११ बजे टमाटर का रस, बादाम-काजू, गाजर-मूली पीसकर व किशमिश भिगोकर साफ करके सामने रखीं । सब चीजें सतरे के छिलके की कटोरिया बनाकर उनमें सजाकर रखी थीं । सुन्दर लगती थीं । खाने की जगह पर राष्ट्रीय पताका और 'भारतमाता की जय' फूलो में लिखा बहुत सुन्दर लगता था ।

मीराबहन, बा, भाई और मैंने बापू को सूत के हार पहनाये । बा के कहने से मैंने बापू को टीका भी लगाया । दोपहर आधे घटेतक कताई का दगल हुआ । बापू, भाई, मीराबहन और मैं चार कातनेवाले थे । मेरा नम्बर पहला आया ।

भडारी और शाह आये । हमने भडारी से एक हिरण देने को कहा । वह हमारी कटीली बाड के बाहर अलग हाते में रहता है। हम घूमने निकलते हैं तो हमारी तरफ ही देखता रहता है । हमने सोचा हमारे पास आजायगा तो उसे भी लाभ होगा, हमें भी। भडारी 'हा' कह गये, मगर बाद में सरोजिनी नायडू नाराज हुईं। कहने लगीं— वह तो बगीचा उजाड देगा। उसका जिम्मेदार कौन होगा ? सो भडारी ने भी विचार बदल दिया ।

शाम को बापू ने फल, काजू, बादाम और टमाटर का रस लिया । फलो की तश्तरी बहुत सुन्दर सजाई थी । बा ने भी आज दूध और फल ही खाये ।

शाम की प्रार्थना में मीराबहन ने 'प्रेमल ज्योति'* भजन गाया । सरोजिनी नायडू ने 'सध्याकालीन प्रार्थना का आह्वान'† नाम की अपनी कविता पढी। मैंने और भाई ने कुछ श्लोक पढे। बडे अच्छे थे। प्रार्थना के बाद भाई 'छान्दोग्य-उपनिषद्' में से बापू को कुछ मत्र बतारहे थे, जिनका भावार्थ था कि जिसकी सब क्रिया यज्ञमय होगई है वह ११६ वर्ष तक जीता है ।

बापू ने व्याकरण की परीक्षा के लिए मुझे १५ दिन का और समय दिया। श्लोको के बारे में मजाक करने लगे, "कुछ समझी या भट्टजी के बैंगनोवाली बात रही !" मैंने जानबूझकर अज्ञता प्रकट की। मैंने कहा—नहीं समझी। बोले, "यह तो मत्र है न, इसका जप करने से सिद्धि मिलती है। जैसे गायत्री मत्र से, मगर समझकर कोई करे तो ! तुझे ११६ वर्षतक जीना है क्या ?" मैंने कहा, "जी नहीं, वह आपके लिए है । हमारे

*Lead kindly light

†Call to Evening Prayer

जैसे ११६ वर्ष जीकर क्या करेंगे ?" फिर मैंने पूछा, "मगर मत्र के जप के बारे में क्या आप सचमुच ऐसा मानते है कि वह फलदायी है ?"

बापू ने कहा, "मै तो रामनाम के बारे में कह सकता हू। वह मेरा नित्य का अनुभव है, रोज नया, आज भी हुआ। मैंने बहुत लडके-लडकियो से कहा है कि रामनाम जपो। वे कहते है कि गदे विचार आते है, तो मै कहता हू कि उनको निकालने का प्रयत्न न करो। उन्हे कहोगे कि 'जाओ-जाओ' तो यह भी उन विचारो की एक तरह से पूजा ही हुई। उसके बजाय दूसरे अच्छे विचार भरो, रामनाम जपो। गदे विचार अपने आप भाग जावेंगे। मै आठ वर्ष का था, भूत-प्रेत से डरता था, तब मेरी धाय रभा ने कहा, 'राम नाम जपो तो सब भूत भाग जावेंगे।' उस वक्त से यह चीज शुरू हुई। पीछे रामायण दाखिल हुई। इस प्रकार उन छुटपन के सस्कारो ने गहरी जड पकडी। उस वक्त भूत भागे कि नही, यह मुझे याद नहीं, मगर आज किसी भी अनावश्यक विचार को भगाने के लिए रामनाम का अद्भुत असर होता है। जो मुझे कहते है कि असर नही होता उन्हे मै कहता हू कि और जपो। असर हुए बिना रहेगा नहीं।" फिर स्टीवेंसन इजीनियर का किस्सा बताने लगे। उसे कहा गया कि यहा इतना पानी है कि इसे कोई भर नही सकता, पुल बाध नही सकता। उसने कहा कि कितना भी गहरा हो उसे आखिर भरना ही है। और उसने वहा पुल बनाकर ही छोडा।

—

: १६ :

ईद का त्यौहार

८ अक्तूबर '४२

सुबह घूमते समय आज मैंने फिर गीता के अर्थ शुरू किये। २५ श्लोक होगये। बापू कहने लगे कि यदि नियमित करे तो बहुत होजाय, मगर तू कभी तो करती है और कभी नहीं करती। मैंने कहा, "समय मिले तो कर लेती हू, पर कोई बात करनेवाले आपके साथ घूमते हो तब कैसे होसकता है ?" बापू कहने लगे, "हम अपने लिए बचाव कभी न ढूढें। दूसरे के दृष्टि-बिन्दु को देखने की कोशिश करें। ऐसा करने से एक तरह की सरलता आजाती है। ग्रहण-शक्ति बढती है। यह चीज आजाय तो तेरे बहुत ऊचा चढने के रास्ते में से रुकावट निकल जाय।"

दोपहर को बापू के कमरे के कालीन वगैरा निकाल कर सफाई करवाई। बहुत धूल निकली। बापू सफाई से बहुत खुश हुए।

बा की तबीयत थोडी अच्छी है।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने बाहर के जगत के साथ कोई सम्बन्ध नही रखा। उसमें से मै तो रस के घूट लेरहा हू।"

९ अक्तूबर '४२

चार-पाच रोज से सख्त गर्मी पडती है। आज शाम को खूब बादल आए। एसा लगा, जोरो से पानी बरसेगा। मगर दो-चार छींटे आने के बाद बादल चले गये।

महादेवभाई की समाधि को आज लीपा और नए फूल सजाए। बहुत सुन्दर लग रहा था।

भाई रामायण का अनुवाद कर रहे है। बापू ने उसमें मुझे चौपाइया लिखने को कहा था। आज मैंने लिखना शुरू किया, मगर मेरी व्याकरण की किताब अभी पूरी नहीं हुई। इसलिए बापू ने रामायण लिखना छोडने को कहा। मैंने कहा—पद्रह मिनट की तो बात है। मुझे लिखना अच्छा भी लगता है, लिखने दीजिए। बापू बोल उठे, "क्या तेरे पास पद्रह मिनट की कोई कीमत ही नहीं है ? और तुझे बहुत चीजें अच्छी लगती है। इसका अर्थ क्या ? रस तो मै भी बहुत चीजो में रखता हू। मगर मै अपने मन को रोक लेता हू। इसके बिना आदमी कुछ भी कर नही पाता।"

१० अक्तूबर '४२

दिनभर गर्मी कुछ कम रही, शाम को खूब बढी। बादल भी घिर आये। मगर जब कल के काले बादल बिना बरसे ही चले गये तो आज के बादलो पर क्या आशा रखी जासकती है ?

बा काफी अच्छी है। अब वह सब जगह घूमती है। हर काम में कुछ-न-कुछ उन्हे कहने को रहता है। खाने-पीने को भी मन होआता है।

शाम को महादेवभाई की समाधि पर थोडे फूल लेगये। मुझे लगा, आज धूप नहीं थी, सुबहवाले सूखे नहीं होगे। मगर वे तो सूख गये थे। स्वस्तिक बनाने को तो फूल नहीं थे, मगर एक क्रॉस बन गया। बापू को वह बहुत अच्छा लगा। बापू ने ही बनाया था।

आज कई दिनो के बाद फिर महादेवभाई की मृत्यु का चित्र सारे समय मेरे सामने रहा।

शाम को बापू 'तस्माय परिहार्येऽर्थे, नत्वशोचितुमर्हसि'वाले श्लोक का मनन करने को कहरहे थे। अपने लोगो में जो दोष है उन्हे हमें बिना समता खोये खूबसूरती से सहन करना है, ऐसा बतारहे थे।

मेरे गले में आज फिर दर्द है।

११ अक्तूबर '४२

आज सवेरे महादेवभाई की समाधि पर मै नए फूल रखने लगी। उसमें मुझे पाच-सात मिनट लग गये। साधारणत सुबह हम प्रार्थना में ही समय देते है। फूल शाम को सजाते है, वे दूसरी सुबहतक ताजे रहते है।

बापू आज अपने सिर की चमडी को छूने से भी दर्द होता बताते थे। पहले सोचा कि खून का दबाव बढा होगा। मगर देखा तो खून का दबाव १६६/१०० ही था। तो

फिर इस दर्द का कारण कब्ज होना चाहिए। कल रात उन्होने नींद भी अच्छी नहीं ली थी। यह भी कारण होसकता है।

सरोजिनी नायडू ने बापू से कल ईद की सेवैंया खाने को कहा था। बापू ने कहा, "मुझे खजूर खानेदो। हजरत मुहम्मद की तो वही खुराक थी न!" वे मान गई। बा को पता लगा तो पूछने लगी, "आप कल फलाहार क्यो कर रहे हो?" बापू सोमवार का मौन लेचुके थे। लिखकर बताया, "ईद के कारण।" बा ने कहा, "मुसलमान तो कल सब कुछ खायेंगे, आप क्यो उपवास-सा करते हो?" बापू ने लिखा, "दक्षिण अफ्रीका में तो तुम जानती हो न, महीना-भर मैंने रोजा रखा था। इस समय तो एक भी रोजा नहीं रखा' तो कल ईद के रोज कुछ तो त्याग करलू। पैगम्बर की प्रिय खजूर और दूध लूगा और मेरी प्रिय रोटी और साग छोड दूगा।"

बा आज राजनीति की बहुत सारी बातें कर रहीं थीं। कहती थी, "एमरी कहता है कि गाधी और जिन्ना एक-दूसरे से बात भी नहीं करते, मगर गाधी तो जिन्ना के घर गया था। महादेवभाई ने सब लिखकर रखा है। मै तो लिखित सबूत सबके आगे प्रकट करनेवाली हूँ।" मैने कहा, "बा, इसीलिए तो सब एमरी को झूठा कहते है न?" कहने लगी, "हा, ये लोग बडे खराब है।"

रात मैने बापू का काम भाई पर छोड दिया। मीराबहन के सिर में दर्द था, सो उनके सिर में मालिश की और सरोजिनी नायडू की टागो की भी मालिश की। रोज मीराबहन उनकी मालिश किया करती थीं। सवा दस बजे सोई।

शाम को ईद का चाद बापू ने सबसे पहले देखा। मौन थे। मुझे बुलाकर दिखाया। फिर मैने सबको बताया। एक मुसलमान सिपाही है, मुहम्मद खा। उसे चाद बताकर बापू ने उसे मौसम्बी दिलवाई। सब चाद को देखकर ऐसे खुश होरहे थे मानो रमजान हमीं लोगो ने रखा था।

१२ अक्तूबर '४२

आज ईद थी। सवेरे बापू ३-१० पर प्रार्थना को आये। प्रार्थना के बाद सोगये। आज उन्होंने सिवा उबले दूध के बाकी सब बिन-पका खाना खाया। खजूर, टमाटर, सतरा, मूली, बादाम वगैरा। शाम की प्रार्थना पर भाई ने कुरान की आयतें पढीं और सरोजिनी नायडू ने अपनी एक कविता। शाम की प्रार्थना के बाद बापू बा को पढारहे थे। आज फिर एक भजन का स्वर उन्हे सिखारहे थे। सरोजिनी नायडू हसने लगीं। बोली, "७४ वर्ष के बूढे नव विवाहित दम्पती का स्वाग-सा रच आनन्द लेरहे है।"

मैने उन्हे ७ तारीख के 'टाइम्स ऑव इण्डिया' अखबार में से ६१ वर्ष के पुरुष और ७६ वर्ष की स्त्री की शादी की खबर पढकर सुनाई। हसने लगीं। बोलीं, "इसके सामने तो ७४ वर्ष की स्त्री बच्चो के समान है।" बहुत हसी होती रही।

मीराबहन ने महादेवभाई की समाधि पर रोज न आकर हफ्ते में एक बार आने

की इजाज़त बापू से मागली। बापू ने खुशी से देदी।

घूमते समय बापू फिर मेरे ऐसे समय बम्बई पहुँचने और यहा आने की घटना पर आश्चर्य कर रहे थे। बोले, "अब इसे ईश्वर का चमत्कार न कहा जाय तो क्या कहा जाय ? इसी तरह यह भी तो ईश्वर का चमत्कार ही है न कि इतनी बड़ी सल्तनत से मैं लडरहा हू, वे इतना धमकाते भी है मगर मुझ पर कुछ असर ही नहीं होता। न डर है, न निराशा, न गुस्सा ही आता है, बद्दुआ कभी मेरे हृदय से उनके लिए निकलती ही नहीं।"

: २० :

सत्याग्रह मे आत्महत्या ?

१३ अक्तूबर '४२

मकान के सामने एक फव्वारा है। वहा घूमते समय बापू हम सबके साथ मकडी के जाले देखते रहे। कैसे मकडी इतना पानी पार करके जाती होगी। इस प्रश्न पर गहराई से विचार होता रहा। बापू किस-किस चीज में रस लेसकते है, यह चकित करनेवाली चीज है।

बा खत लिखना चाहती थीं। बापू ने उनके लिए कनु के नाम एक पत्र का और धनुष तकली पर लगानेवाले राल का मसाला मगवा देने के बारे के पत्र का मसविदा बनाकर दिया। मैंने उनकी साफ नकल करके बा के दस्तखत लिये और पत्र भेजे। बा बहुत खुश थीं कि अब उत्तर में और पत्र आवेगे।

महादेवभाई की समाधि पर फूलो का ॐ बनाया। वह बहुत अच्छा लगता था। स्वस्तिक चिह्न की जगह क्रास बनाना शुरु किया है। फूल कम होगये है, इसलिए यह परिवर्तन शुरु हुआ है। मगर बापू को अब क्रास ही अच्छा लगता है।

१४ अक्तूबर '४२

ऋतु एकदम बदल गई है। गर्मी बढी है। फूल एकाएक मानो झुलस ही गये है, सैकडो एक साथ सूख रहे है। महादेवभाई की समाधि पर आज एस्टर (Astor) के फूलो का ॐ बनाया। कर्नल भण्डारी और कर्नल शाह दोनो आज आये। शाह तो कल भी आये थे। बापू को मालिश वगैरा में इस कारण देर होगई।

बापू बा को आज दोपहर गीता सिखारहे थे। रात को एक घटा गुजराती लिखाते है, गाना भी। बा कहरही थी कि पहले से मैंने इस तरह सीखा होता तो कितना सीख लेती। मगर बापू ने कभी इस तरह उन्हे समय दिया ही नहीं। अब भी देते रहे तो अच्छा है।

घूमते समय बापू अपने जीवन की बातें बतारहे थे। कहने लगे, "किसी पर

ही ईश्वर का इतना अनुग्रह होता होगा, जितना मुझ पर हुआ है, नही तो वेश्या के घर जाकर कौन बच सकता है ? मगर मुझे तो वहा मन में किसी तरह का उद्वेग, शरीर में किसी तरह का सचारतक नही हुआ ।"

मि० कटेली ने बाहर की हरी बाड में से निकलकर सामने की तरफ जाकर घूमने का रास्ता बडा करवा दिया है । उधर छाया रहती है, सो सवेरे उधर घूमने जाते है । बापू को कटेली साहब का अपनेआप उनके आराम का इतना ध्यान रखना अच्छा लगा । सिपाही लोग बगीचे की पगडडिया भी अच्छी बनारहे है ।

रघुनाथ जमादार को आज कुनैन का दूसरा इजेक्शन दिया । पहला परसो दिया था । उसे बहुत सख्त किस्म का मलेरिया है । अच्छा होरहा है । यहा मेरी डाक्टरी अपने साथियो, सिपाहियो और हमारा काम करनेवाले सजायाफ्ता कैदियो तक सीमित है । कोई बीमार सलाह लेने आता है तो अच्छा लगता है ।

१५ अक्तूबर '४२

आज महादेवभाई को गये दो महीने पूरे होगये । जगत चलता ही रहता है । मनुष्य आता है और चला जाता है, किन्तु जगत की गति में फरक नहीं पडता ।

थोडी-थोडी सर्दी शुरू हुई है, अब सवेरे घूमते समय 'हिमालय' में सर्दी लगती है । सामने की ओर मि० कटेली ने जो घूमने का रास्ता तैयार करवा दिया है, वह हमारे यहा के कुटुम्ब में 'हिमालय' कहलाता है ।

घूमते समय जेल में उपवास की नौबत आवे और जेल-अधिकारी जबर्दस्ती खाना खिलावें तो मनुष्य क्या करे, इस प्रश्न की चर्चा उठी । बापू बोले, "बाह्य उपायो को सोचना ही क्यो ? जिसकी सचमुच जीने की इच्छा उठ गई है, उसका शरीर अपने आप गिर जायगा । अलकार में कहू तो वह योगाग्नि पैदा करके उसमें भस्म होजायगा । इतना प्रतिरोध करेगा कि उसमें टूट जायगा ।" भाई ने कहा, "सिद्धात में यह ठीक है, मगर कहातक मै खुद यह कर पाऊगा, इसमें मुझे शका है । तब बाह्य उपाय भी सोच रखना चाहिए न ?" बापू बोले, "जो बाह्य उपाय का ही विचार करता रहता है, वह अन्दर की अग्नि पैदा कर ही नही पाता । मगर कोई बाह्य उपाय का आश्रय ले और ऐसी हालत में आत्महत्या भी करे तो मै उसे दोष नही दू गा ।"

भाई ने बाह्य उपायो में अपने उस्तरे से खून की कोई बडी नाडी काट लेने की बात की । मैंने पूछा, "यदि कोई रात को चुपचाप अपनी एक बडी नाडी काटले और खून निकल-निकलकर ही वह सुबहतक मर जाये तो क्या वह ठीक होगा ? जेल में उपवास का हेतु मरना नहीं है । हेतु तो सत्ताधारियो का हृदय बदलना है । सामनेवाला देख भी नहीं पाता और हम चुपचाप आत्महत्या कर लेते है तो उसमें सामनेवाले का हृदय-परिवर्तन कैसे होगा ?"

बापू बोले, "इस समय हृदय-परिवर्तन की बात नही होरही है । आज प्रयोग बहादुर की अहिसा का नहीं, कमजोर की अहिसा का है । यहा भी नेता के पास तो

हृदय-परिवर्तन की बात रहती है। मगर सर्वसाधारण लोगों के लिए ऐसा मौका आ-सकता है कि वे किसी अपमान को बरदाश्त न कर सकें और उससे बचने का उनके पास दूसरा साधन नहीं है तो वे मर जायें। तब उनका कार्य अहिंसक ही होगा, चाहे उस कार्य की आत्मा शायद अहिंसक न हो।" मैंने पूछा, "यह कैसे?" बापू समझाने लगे, "एक आदमी को फासी की सजा मिलती है। जो सिपाही उसका रखवाला है उसकी रक्षा करता है। उसे फासी मिलनेतक अपनी जान देकर भी उसकी रक्षा करता है। उसका कार्य तो अहिंसक है, मगर वह कहा जानता है कि उसमें अहिंसा है।

"तो इस दुर्बल की अहिंसा को मुझे आजमाना है। मैंने देखा है कि सारे देश को मैं बहादुर की अहिंसा आज नहीं सिखा सकूगा। मगर यह दुर्बल की अहिंसा कुछ फल लावे तो दुर्बल प्रजा के हाथ में अपनी रक्षा के लिए एक साधन आजाता है और उसमें से बलवान की अहिंसा भी निकल सकती है। अगर दुर्बल की अहिंसा फल ला-सकती है तो सच्ची बहादुर की अहिंसा की ताकत का अन्दाज लगाया जासकता है।"

बा काफी अच्छी है। बापू के पास से सीखती है, मेरे साथ भी पढती है, भाई के साथ भी। इससे उनका मन बहला रहता है।

१६ अक्तूबर '४२

राजाजी के भाषण की रिपोर्ट अखबारों में पढी। मगर वह रिपोर्ट शायद दुरुस्त न भी हो। एक-दो दिन में पता लग जायगा।

बा की खासी बढी है। बेचारी का एक दर्द बैठता है और दूसरा खडा होजाता है।

सरोजिनी नायडू अभीसे फिक्र में है कि मीराबहन के जन्म-दिन को क्या-क्या किया जाये। मीराबहन जिस रोज बापू के पास आई थीं, उसे अपना जन्म-दिन मानती है। वह है सातवा नवम्बर। इस वर्ष दिवाली भी उसी रोज पडती है। सरोजिनी नायडू कुछ खाने की चीज बनाने को कहती थीं। एक डलिया में साबुन-तेल वगैरा रखकर मीराबहन को देने का विचार है।

आज कलेक्टर और डा० शाह आये। मीराबहन के सिर में दर्द रहता है यह सुनकर डा० शाह पूछने लगे, "दात में तो कोई तकलीफ नहीं है?" मगर उनके सिर दर्द का कारण दूसरा ही है। कर्नल शाह हर दर्द का कारण दातों में ढूढते है।

आज महादेवभाई की समाधि को लीपा था। शाम को नए फूल सजाए। गुलाबी एस्टर का ॐ और सफेद एस्टर का क्रॉस बनाया। बहुत सुन्दर लगते थे। पाव के पास फूल सजारहे थे। अचानक उनका आकार गुजराती 'जो' बन गया। बापू को बहुत अच्छा लगा। कहने लगे, "महादेव के पाव के पास यह अच्छा लगता। मेरे कानों में महादेव की 'जो' की ध्वनि गूजने लगती है।"

१७ अक्तूबर '४२

कल से बा ने मेरे साथ बापू की आरोग्य-सम्बन्धी किताब* के सिवा गीता पढना भी शुरू किया है। बापू के साथ भी खूब पढती है । तबीयत अच्छी नहीं तो भी पढने का शौक खूब रखती हैं । इसका एक उपयोग यह भी है कि बा को सिखाते समय बापू के लिए थोडा दिल-बहलाव होजाता है ।

'टाइम्स' ने राजाजी के भाषण पर आज एक अग्रलेख लिखा है । ऐसा अखबार ऐसी चीज़ से फायदा उठाने का मौका भला क्यो छोडने वाला था !

: २१ :

बा की पहली सख्त बीमारी

१८ अक्तूबर '४२

आज बा को बुखार है। मलेरिया हो या शायद ब्राको निमोनिया (Broncho-Pneumonia)। फेफडो में पुराने ब्रान्काइटिस (Bronchitis) वगैरा के निशान है। नया कुछ नहीं सुनाई देता। मगर इस तरह के ब्रान्काइटिसवाले फेफडो में नए निशान ढके रहते हैं। नई बीमारी ढूढनी कठिन होजाती है। मि० कटेली ने डा० शाह को बुलाने को पूछा। मैंने और बापू ने पहले तो कह दिया कि आवश्यकता नहीं है। मगर बाद में मैंने कहा, "आपको लगे कि उन्हे बताना चाहिए तो भले बताइए।" मि० कटेली ने शाम को टेलीफोन किया। रात आठ बजे डा० शाह आये और तबीयत कैसी है, यह पूछकर चले गये। मुझसे कहने लगे, "मुझे लगा कि मुझे देखने आना चाहिए। मैं जानता हू, मेरे लिए कुछ करने को रहता नही, मगर न आता तो मुझे चिन्ता लगी रहती। इसलिए आगया।" मैंने कहा, "आप आगये यह अच्छा हुआ। बा इतनी कमजोर है कि उनके बारे में चिन्ता होती ही है।"

आज दशहरा है। सब कैदियो के लिए सब्जी बनाई। बाकी उन्हे कच्चा सामान दिया। उन्होने अपना पकाकर खाया।

शाम की प्रार्थना में सरोजिनी नायडू ने कालीदेवी के बारे में अपनी लिखी एक कविता पढी। अच्छी थी। मैंने कई बार कहा है कि कुछ नया लिखिए, महादेवभाई के विषय में अथवा बापू के विषय में, मगर वे नही लिखती। शायद प्रेरणा नहीं होती होगी।

---

*बापू ने जेल म आरोग्य-सबधी अपनी पुरानी किताब को फिर से लिखना शुरू किया। मुझसे रोज जितना वे गुजराती मे लिखे उसका हिंदी और अंग्रेजी अनुवाद करने को कह रखा था। बा बापू का लिखा मेरे साथ पढा करती थी।

बा को सुबह १०० २ बुखार था तो भी बापू से पढ़ा। बाद में खाट पर जा लेटीं। उनके सिर में बहुत दर्द था। खांसी-जुकाम तो है ही।

दोपहर खाने-पीने में विधि-निषेध की बातें होरही थीं। मैंने बापू से कहा, "आदमी कोशिश करे तो धीरे-धीरे काफी चीजें पचा सकता है, आदत पड़ने में थोड़ा समय जाता है सही। मिसाल के तौर पर अब मैं घर जाऊं या घर से आश्रम आऊं तो खाने के बारे में आदत बदलने में कुछ समय लगता है। दोनों जगह का खाना अलग किस्म का रहता है। मगर कुछ दिन पीछे उस खाने से कुछ तकलीफ नहीं होती।" बापू कहने लगे, "जल्दी से आदत बदल सकना गुण है। ऋतु बदलती है तो हमें अपनेआपको उसके अनुकूल करना पड़ता है। वह स्वाभाविक अनुकूलता हुई। मगर जिस तरह की तुम बात कर रही हो वह अस्वाभाविक है। इस तरह नए खाने के अनुकूल होने के लिए ताकत खर्च करना तो शक्ति को फिजूल खोना है। अनुचित भी है। इस तरह करने से आखिर शरीर क्षय होता है और बुद्धि का भी क्षय होजाता है। शरीर का क्षय तो आखिर होने ही वाला है, मगर मैं मानता हू कि बुद्धि का क्षय नहीं होना चाहिए। अब देखूगा कि मेरे साथ आखिर क्या होता है। हो सकता है कि मेरी बुद्धि का अन्त में क्षय हो। अगर ऐसा हुआ तो कहूगा कि मुझे उससे बचने के लिए जो कुछ करना चाहिए था वह मैंने नहीं किया।"

१६ अक्तूबर '४२

बा की रात काफी बेचैनी में गई। डा० शाह सुबह फिर आए, बा सोती थीं। शाम को आने को कह गये। शाम को आये तो कहने लगे, "आप बा के शरीर को पहचानती हो। दवा वगैरा जो देनी हो तो देती जाओ। मैं दखल नहीं दूगा।" मैंने कहा, "ठीक है, मुझे मदद की जरूरत होगी तो आपको कह दूगी।" उनकी नम्रता और शराफत आदमी को मुग्ध कर लेती है।

बा को सल्फा (Sulpha) दवा की गोलिया देना शुरू किया है। शाम को बुखार ९९ होगया। आशा है, जल्दी अच्छी होजायगी।

आज सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "बा प्यारेलाल को बहुत प्यार करती हैं। मैं नहीं समझती कि उनके अपने लड़को ने भी मा की कभी इस तरह सेवा की होगी, जैसी प्यारेलाल कर रहा है। वह भी उन्हें अपने लड़के की ही तरह प्यार करती हैं। कहना होगा, मुझे भी प्यारेलाल का बहुत सहारा है। वह कुछ खास मेरे लिए करते नहीं हैं, मगर उनमें कुछ ऐसा आकर्षण है, जो खीच लेता है।"

शाम को भाई से कहने लगीं, "मैंने आज तुम्हारी बहुत तारीफ कर डाली है। अपनी बहन से पूछो।" भाई कहने लगे, "अगर मेरी निन्दा की होती तो पूछने में अर्थ भी रहता। तारीफ के बारे में जाकर क्या पूछू ?"

बापू का मौन शाम को सवा सात बजे खुला। बा की तबीयत इस वक्त अच्छी लगती है।

२० अक्तूबर '४२

आज बा की तबीयत काफी अच्छी है, मगर रात नींद कम आई । साढे तीन बजे सबेरे भाई ने मुझे जगाया, "बा घबराती है । नाडी बहुत तेज है, गिनी नहीं जाती ।" मै घबरा उठी। देखा तो नाडी अच्छी थी, बहुत तेज भी नही थी, १०० के अन्दर थी । बा कहने लगीं, "मुझे नीद की गोली दो ।" नींद की गोली तो थी ही नहीं, मगर सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) की गोली थी । एक दिन इसी तरह बा को नींद नही आती थी तब नींद के नाम से मैने वही गोली देदी थी । विचार के असर से ही उस रोज वे सोगई थी । आज भी मैंने वही गोली दी । शहद और गरम पानी पीने को दिया । बापू ने प्रार्थना बा के कमरे में करवाई । प्रार्थना के बाद बापू को सुलाकर मै आई कि भाई को छुट्टी दिला सकू । मगर देखा तो बा और भाई दोनो छोटे बेटे और मा की तरह साथ पडे सोरहे थे । छ बजे से पहले बा जाग गई । घूमने के बाद उन्हे स्पज किया । पानी पिलाया । दवाई दी । पीछे मैंने उन्हे धीमे-धीमे भजन सुनाना शुरू किया । सिर पर धीमे-धीमे हाथ भी फिराती जाती थी । बा सोगई । छोटे बच्चे को लोरी देकर सुलाने-जैसी बात थी । मुझे याद आया, मेरी टाइफाइड की बीमारी में कई बार माताजी ने मुझे इसी तरह सुलाया था । साथ ही ध्यान आया कि मैंने अपनी मां की कभी कुछ सेवा नहीं की ।

घूमते समय बापू बा की बीमारी की बात कर रहे थे कि कैसे वह एक क्षण में जा-सकती है ।

२१ अक्तूबर '४२

रात बा को फिर नीद नही आती थी । ११-३० पर मैंने नीद की एक गोली दी । बस फिर तो रातभर सोई और दिनभर भी । खाने के लिए भी जगाना पडता था ।

आज मेरा व्याकरण पूरा करने का आखिरी दिन था । कल बापू परीक्षा लेंगे । जेल की नीरसता में ऐसी चीजो से ही वे दिल बहलाते है ।

आज भडारी और डाक्टर शाह आए । बा का हाल पूछकर चले गये ।

२२ अक्तूबर '४२

आज बापू घूमते और कातते समय मुझसे व्याकरण के प्रश्न पूछते रहे। बाद में कहने लगे, "आधा घटा व्याकरण पढने के लिए रोज रखना ।" व्याकरण की दूसरी कितावें भी मगवारहे है। कहते है कि व्याकरण पर पूरा काबू पाना अच्छा है, जरूरी है। बापू को व्याकरण का बहुत शौक है ।

दिन में आज भी गर्मी थी । रात को ठड होजाती है । चादनी रातें है। रात को सोते है तो फव्वारे के पानी का नाद सुनाई देता है । आजादी में ऐसी जगह पर थोडे दिन आराम मिले तो सबको कितना अच्छा लगे! मगर आज तो यह सब काटता है ।

: २२ :

सच्ची वैज्ञानिक के प्रति भावना

२३ अक्तूबर '४२

आज वा वहुत उदास है ।

वापू मैडम क्यूरी की किताव पढरहे है । कहरहे थे, "वह तो सच्ची तपस्विनी थी । मेरे मन में होता है कि पैरिस जाकर उसका घर देख आऊ । हमारे किसी वैज्ञानिक ने इतना दु ख नहीं भोगा । नतीजा तो मै यह निकालता हू कि हम पर अग्रेजी की मेहरबानी होने के कारण हमने अग्रेजो के ढग से ही काम करना सीखा । शोध-विभाग इत्यादि के सफेद हाथी खडे कर लिये । इतना पैसा खर्च होता है । इतनी वडी प्रयोग-शालाए टाटा ने खडी कीं, सरकार ने भी की, पर काम वहा पर कितना होता है ?"

शाम को वापू कहने लगे, "व्याकरण सीखनेवाला किसी चीज का सार समझकर सन्तोष नहीं मानता।" वात कवि वर्ड्स्वर्थ की 'ड्यूटी' (Wordsworth's 'Ode to Duty') नाम की कविता के अर्थ की चर्चा में से निकली थी । कहने लगे, "व्याकरण जाननेवाला एक-एक शब्द के अर्थ को गहराई से समझता है । वारीकी से हरेक पहलू समझने की आदत डालता है । ऐसा करते-करते एक-एक शब्द के विचार में घण्टो वीत सकते है ।"

वा की वापू को काफी चिंता है, मगर करें क्या ? सेहत के कारण वा छूट तो आज सकती है, मगर छूटकर वे और घवरायगी । वापू के विना उन्हे वाहर जरा भी अच्छा नही लगेगा । शायद वापू का वियोग सहन ही न कर सकें और चल भी दें । जिस रोज वापू पकडे गये थे उसी रोज वा को दस्त आने लगे थे । दो दिन वाद यहा पहुचते ही अपने आप अच्छे होगये । दो-एक रोज वा और यहा न आतीं तो शायद खत्म होगई होतीं ।

२४ अक्तूबर '४२

कल रात वापू वहुत कम सो पाये । वा उदास थीं । वापू उनकी चिन्ता से सो नहीं सके । आज अपने पलग का रुख वदल दिया ताकि सारा समय वे वा के पलग पर नजर रख सके ।

मैडम क्यूरी की किताव से तो वस वापू चिपक गये है । उसकी एक लडकी दिल्ली में वापू से मिलने आई थी—वह थी ईव क्यूरी, इस किताव की लेखिका । आज वापू वहुत अफसोस से कहरहे थे, "मुझे दु ख है कि मैंने उस लडकी के साथ अच्छी तरह जान-पहचान नहीं करली ।" शाम को मुझसे वोले, "तुझे इस किताव का हिन्दी में सुन्दर

अनुवाद करना है।" पीछे भाषा में गहरे उतरने का महत्त्व और उसकी आवश्यकता बताते रहे।

सुबह गीता-पाठ में मुझे कई बार नीद आजाती है। आज बापू ने दुःखित होकर कहा, "मैं सोचता हू कि गीता को छोड ही दिया जावे।" मैंने मन में निश्चय किया और बापू से कहा कि अब ऐसा कहने का आपको कभी अवसर नही दूगी।

सरोजिनी नायडू आज कहरही थी, "प्यारेलाल मुझे मेरे लडके बाबा की याद दिलाता है और तुम लीलामणि की।" मैंने कहा, "यह तो अच्छी बात हैं। आपको अपने घर का-सा वातावरण मिल गया।" वे बेचारी काफी हदतक हम सबकी मा बनकर बैठी है। मा की तरह हम सबके खाने-पीने की देखभाल रखती हैं।

मीराबहन के दाद होगया है। कहासे उसे लेआई है, इसका पता नही चलता।

भाई ने बताया कि कल बापू बा के बारे में बहुत चिन्तित थे। उनसे कहने लगे, "बा की मुझे बहुत चिता रहती है। महादेव के जाने के बाद मुझे कबूल करना पडता है कि मेरा मन कमजोर पड गया है। कई बार चिता होने लगती है कि कही बा को भी न खोना पडे। मन में तैयारी तो मैंने इसकी भी कर रखी है, लेकिन जहातक मुझसे बन सकेगा, मै अब और किसीको नही खोना चाहता।"

बा अखबार में एमरी, क्रिप्स वगैरा के भाषण देखती हैं तो बहुत चिढ जाती है। हमारे लोगो पर सरकारी सख्तियो की खबर पढती है तो दुःखी होती है। आज कहने लगीं, "यह सरकार बहुत घमड कर रही है। सारी हालत आज तो डावाडोल हैं। कब और कैसे इसका अत होगा?"

फिर कहने लगी, "लेकिन पाप का घडा भरने पर ही फूटता है। इसलिए जितना झूठ ये बोलना चाहे, बोलनेदो। आखिर भगवान तो हैं न!"

इन विचारो ने और इन सरकारी झूठे आरोपो के प्रति गुस्से ने उनके मन में इतना घर कर लिया है कि कही भी मौका हो तो वे इस विषय पर बात करने लगती है। एक रोज डा० शाह से कहने लगी, "ये लोग इतना झूठ क्यो बोलते है? उन्हे मना कीजिए न?" बेचारे डा० शाह क्या कहते! बोले, "मा-मा, आपको गुस्सा नही करना चाहिए। वह आपकी तबीयत के लिए अच्छा नही है। झूठ बोलते है तो बोलनेदो। जब कोई झूठ ही बोलने पर तुला हो तो क्या एक और क्या बीस! एक ही बात है।"

४ नवम्बर '४२

आज दस दिन के बाद डायरी उठाती हू। मुझे शक होगया था कि मुझे भी दाद होगया है। बा की मालिश वगैरा का काम छोडकर सारा समय 'मैडम क्यूरी' को पढने में लगाती हू। बडी उत्साहवर्धक किताब है। बापू ने पूरी पढी है। मुझसे फिर कहरहे थे कि तुम्हे इसका अनुवाद हिन्दी में करना होगा। क्यूरी-दम्पती ने इतने कम साधनों के साथ इतनी बडी शोध की, इसकी तुलना हमारे यहा आज जो शोध का काम होता है उसके साथ करते हुए बापू कहने लगे, "हमने तो अग्रेजो से यह सब काम सीखा

हैं न, सो उनकी तरह पैसा उडाना भी सीखा। उडाने के लिए पैसा हो या न हो, शोध हम क्या कर पाये हैं? मैं एक भी शोधक हिन्दुस्तान में ऐसा नहीं जानता, जिसने क्यूरियो की तरह तगदस्ती भोगी हो। पश्चिम में तो ऐसे असख्य लोग पडे हैं। तभी तो वे विज्ञान को इतना देसके हैं।"

मैंने सोचा था कि दो दिन की डायरी इकट्ठी लिख डालूगी, मगर तीसरे दिन बुखार आगया और ऐसे जोर का कि उसने मुझे निकम्मा बना दिया।

भाई ने हफ्ताभर दिन-रात काम किया। बापू का सारा काम और मेरी बीमारी से कुछ थोडा-बहुत बा का काम भी उनके सिर पर आपडा। मेरी देखभाल तथा दूसरे अनेक कामो के कारण एक मिनट की भी उन्हे फुर्सत नहीं मिलती थी। जब यह निश्चय होगया कि मुझे मलेरिया है, टाइफाइड नहीं, तब सबकी चिंता दूर हुई।

बुखार में ही डा० लाजरस का खत आया। मैंने अपनी अगस्त और आधे सितम्बर की तनखा मगवाई थी। कहती हैं, "तुम्हारा इस्तीफा हमने सात अगस्त से स्वीकार कर लिया है।" मगर मैंने इस्तीफा सात अगस्त से दिया ही नहीं था। परसो उसके पत्र का उत्तर लिखकर बापू को दिया था। आज होसका तो उसे भेज दूगी। तीन-चार सौ रुपए हजम कर गई हैं। कॉलेज कैसे मेरे हक की छुट्टी मार सकता है?

मेरी बीमारी में सरोजिनी नायडू बापू की काफी सेवा करने लगी हैं। भाई कह-रहे थे, "ऐसा लगता है कि बापू की सेवा की छूत उन्हे भी लग गई है। उनमें सेवा-भाव तो काफी है। हम लोग मेज पर खाने को बैठते हैं तो जूठे बर्तनतक उठाने लगती हैं। कोई चीज चाहिए तो सबसे पहले उठकर लाने को चल देती हैं। हम लोग सकोच में पड जाते हैं। हरएक की आवश्यकता को, इच्छा को, वे पहले से ताडकर पूरा करने का प्रयत्न करती हैं। मि० कटेली की सेवा तो इस तरह कर रही हैं कि कोई मा क्या करेगी! अपराधी बदियो, सिपाहियो, सबको खिलाती रहती हैं। एक कैदी को बुखार आगया तो मेरे पास आईं और बोलीं, "मुझे इसके लिए कोई ताकत की दवा लिख-दो।" एक सिपाही के घर लडका हुआ। उसके बच्चे के कुरते के लिए उन्होंने रेशमी कपडा देदिया। ये सब चीजें उनके स्वभाव का एक अग हैं।

कल रात मीराबहन और सरोजिनी नायडू मेरे कमरे में आकर ऊची आवाज से कविता पढरही थीं। मीराबहन राबर्ट बर्न्स की कविताओं में से कुछ गाकर भी सुनारही थीं। मीराबहन का कविता पढने का ढग बहुत अच्छा और प्रभावकारी है।

: २३ :

मीराबहन की सालगिरह

५ नवम्बर '४२

आज बापू ने लार्ड लिनलिथगो को लार्ड हेलीफैक्स के लडके की मृत्यु पर शोक-समवेदना का पत्र भेजने के लिए लिखा। बापू अग्रेजो की बहादुरी की स्तुति कर रहे थे, "कोई उमराव नहीं है जिसके अपने लडके युद्ध में न गये हो, तभी तो जनता में भी त्याग-वृत्ति पैदा होसकती है, उत्साह आसकता है।" मैने कहा, "मगर वहा तो जबरन सबको फौज में जाना पडता है न! वे अपने लडको को घर पर रख कैसे सकते है?" बापू कहने लगे, "वह अलग बात है, मगर वे रखना चाहे तो कई तरीके निकाले जा-सकते है।"

डा शाह आज फिर कुनीन का एक इन्जेक्शन मुझे देगये। उन्हे खुद मलेरिया आ-रहा है। कहते थे, "मुझे भी आज इन्जेक्शन लेना चाहिए था, मगर औरते ज्यादा बहादुर होती है। मै इन्जेक्शन लेने का इरादा नहीं कर पाया।" फिर अहमदाबाद में जब वे जेल-सुपरिन्टेण्डेन्ट थे, तब के अपने अनुभव सुनाते रहे और बताते रहे कि सरकारी दफ्तरो में कितनी ढील से काम लिया जाता है।

इतने दिन के बाद आज शाम को बापू मुझे महादेवभाई के स्थान पर लेगए। अच्छा लगा। वहा पर अब छोटे-छोटे शखो का ॐ बनाया है। फूलो के ॐ जितना सुन्दर वह नहीं लगता, मगर फूल तो सूख जाते है, रोज ताजे नहीं मिलते। मिलते है तो शखो पर लगा देते है।

शाम को बापू के एक पत्र की नकल नहीं मिलरही थी। बापू भी चिन्ता में थे। इतने में वह मुझे मिल गई। बापू को बताया तो हसी में कहने लगे, "यह शुभ चिह्न है। अभी जब मै उसके पाने की आशा छोडने लगा था तो सोचा था कि याद से उसे फिर लिख डालूगा। इतने में तू आगई। देखने में चाहे आज निराशाजनक परिस्थिति हो, तो भी छ महीने में हमारा बेडा पार होनेवाला है।"

रात को मीराबहन भाई के साथ चर्चा कररही थीं। कहने लगीं, "साम्यवाद और गाधीवाद में एक समानता है। दोनो गरीब-से-गरीब की सेवा करना चाहते है। दोनो की समता की बाते लोगो के सामने रखी जावे तो वे बहुत प्रभावकारी हो।" भाई ने कहा, "ठीक है, पर यह समता साम्यवादियो के लिए बहुत महत्त्व नहीं रखती। वैसे तो साम्यवाद की सब या बहुत-सी अच्छी चीजें बापू के कार्यक्रम में आजाती है, परन्तु भेद साधनो में

टहलते समय बापू के साथ मीराबहन

"इसके भोलेपन और उसकी कल्पना-शक्ति का कोई पार नहीं है" पृष्ठ ८१७

है। साम्यवाद आज एक खास पद्धति और जीवन-मीमांसा का नाम है।" मीराबहन कहने लगीं, "हां, मगर बापू पूंजीपतियों के पीछे काफी हाथ धोकर नहीं पड़े। पूंजीवाद को मिटना होगा। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत असली रूप में चलनेवाला नहीं।" भाई समझाते रहे कि सम्पत्ति का अर्थ क्या है, 'पूंजीवाद को मिट जाना होगा'— इसका अर्थ क्या है और कहने लगे कि बापू के साधन अलग हैं। सत्य और अहिंसा के जरिये बापू को काम करना है, इसलिए उनका काम करने का ढंग भी अलग है और होना ही चाहिए। दूसरा रास्ता ही नहीं है।

मीराबहन साम्यवाद का सिद्धांत समझने के पीछे पड़ी हैं। मार्क्सवाद का खूब अभ्यास करती हैं।

दो रोज से रात को खासी सरदी पड़ने लगी है, मगर मौसम धोखेबाज है। शाम को कई बार खासी गर्मी लगने लगती है। अब तो दिवाली आनेवाली है। दिवाली तो हमारे यहां सर्दी की ऋतु का त्योहार ही माना जाता है। दिवाली के नाम से घर की स्मृति ताजी होजाती है और कॉलेज की भी। बेचारी माताजी को हम लोगों की उस दिन बहुत याद आवेगी।

६ नवम्बर '४२

परसों दिवाली है। कल मीराबहन बापू के पास आईं। दिवाली के दिन उनकी अठारहवीं सालगिरह है। सरोजिनी नायडू ने विचार किया था कि मीराबहन का जन्म-दिन और दिवाली का समारोह साथ कर दिया जाय। मीराबहन के लिए उन्होंने आन्ध्र की खादी की एक बारीक साड़ी निकाली और उसे मीराबहन को ओढ़नी बनाने के लिए भेंट करने का विचार किया। बिन्दी और इलायची मंगाईं और अपनी 'बांसुरी बजैया कृष्ण' पर लिखी हुई एक कविता, इन सबका अपनी तरफ से एक बण्डल बनाया। मैंने बाजार से सीता और राम की एक-एक मूर्त्ति मंगाई और अगरबत्ती का एक पैकिट। बादाम वगैरा डालकर टॉफी बनाई और उसका एक पैकिट बनाया—यह सब मेरी और भाई की भेंट थी। मि० कटेली ने मीराबहन के लिए इकतारा बनवाया, फिर कपड़े धोने के साबुन, स्नान करने के साबुन, तेल, दंतमंजन वगैरा का एक बण्डल बनाया। भाई ने एक खत टाइप किया। भारत सरकार के गृह-विभाग ने मीराबहन को लिखा था कि आपके नाम से एक पार्सल आया है। उस पर लिखा था, *"देवत्व के पश्चात् दूसरा दर्जा स्वच्छता का ही है। वह हम भेजते हैं।" यह सब रात को हमने छिपाकर रख दिया। मीराबहन को जरा भी शंका न हुई कि हम लोग कुछ कर रहे हैं।

बा को कल दोपहर बापू की राह देखते-देखते बहुत भूख लग आई थी। बापू आधा घंटा देरी से खाने को पहुंचे। बा उनकी बाट तो जोहती रहीं, मगर उनके देर से

---

*"Cleanliness is next to Godliness"

आने के लिए बहुत नाराज़ हुई। बापू ने कारण बताने की कोशिश की, पर बा माननेवाली थोडे ही थी!

आज सुबह मैं करीब आधा घटा घूमी। अब शरीर में शक्ति आगई है। इससे थकान नही हुई। रघुनाथ जमादार को आज फिर बुखार आगया। बापू कहने लगे, "कुनीन के इन्जेक्शन के बाद भी बुखार आता है तो इन्जेक्शन किस काम के? वह एक बार इन्जेक्शन लेचुका है।" मैंने बताया कि जहा मलेरिया के मच्छर भरे पडे है, वहा दुबारा मच्छर के काटने से दस दिन में नया मलेरिया आसकता है। कुनीन हमेशा तो खून में बैठी नहीं रहती। रोग से लडने की हम अपनी ताकत बढाले, जिससे मच्छर के काटने से भी बुखार न आवे, तो दूसरी बात है। लेकिन इससे बापू की शका मिटी नही।

महादेवभाई की समाधि पर दीमक इतनी बढ गई थी कि पार न था। गोबर की लिपाई बन्द करने से सब दीमक चली गई। इस बार मिट्टी में थोडा चूना डालकर लीपा था। लिपाई के बाद समाधि बडी सुन्दर दिखाई देती है। ऊची सफेद शखो की कतार के साथ जमीन भी सफेद होगई है।

७ नवम्बर '४२

आज सुबह नाश्ते के समय सरोजिनी नायडू ने मीराबहन से कहा, "तुम्हारे लिए एक चिट्ठी और पार्सल आया है। दूध पीकर जरा खोलो तो। कैसे मौके पर आया है।" नाश्ते के बाद मीराबहन ने पार्सल खोला। पहले तो वे मान गई कि पत्र सरकारी लगता है, मगर बाद में समझ गई। बोली, "हा, कल रात प्यारेलाल टाइप कररहा था।" पार्सल खुलरहे थे तो बापू भी आपहुचे। घूमने जाने के लिए उठे थे। सब हसरहे थे। इतने में मीराबहन का हाथ लगा और इकतारा गिर गया। मैंने जल्दी से पीछे से रघुनाथ को देदिया कि ठीक करा लाओ। कही मीराबहन फूटा देखें तो उसे अपशकुन न समझने लगें! शाम को रघुनाथ नया इकतारा लेआया। मीराबहन बहुत खुश थी।

दोपहर को कैदियो को चाय तथा कुछ खाने-पीने की चीजें— केले आदि दीगई। बापू आकर उनसे पूछने लगे, "जानते हो, यह क्यो मिलरहा है? मीराबहन यहा आकर हम लोगो-जैसी बन गई है। उस दिन को आज सत्रह साल हुए है। दिवाली भी है। सरोजिनी नायडू ने सोचा कि तुम्हे यह सब दिया जावे।" एक कैदी आज पहले ही दिन आया था। बापू को उसने पहले कभी नही देखा था। वह उठकर बापू के पाव छूने को आया। बस फिर तो ताता लग गया। लोग उठ-उठकर पाव छूने के लिए आने लगे।

बाद में सरोजिनी नायडू कहने लगी, "बापू को इन गरीब कैदियो को पार्टी देना अच्छा लगता है। उन्हे राजाओ की पार्टियो में रस नही आता, मगर इन लोगो की पार्टियो में आता है। हम इन लोगो का खयाल रखते है, इससे बापू को खुशी होती है।"

आज सुबह घूमते समय बापू गीता के बारहवे अध्याय की चर्चा कररहे थे-

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात् ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्याग- स्त्यागाच्छांतिरनंतरम् ॥

कहने लगे, "अभ्यास का अर्थ हठयोग, ज्ञान का श्रवणमननादि और ध्यान का अर्थ मैं करता हूं उपासना। बा जैसी स्त्री, जिससे पूछो कि तीन सौ में पहले क्या, तो दो सौ नहीं बता सकेगी, मगर हवेली (मंदिर) में जाकर उसे दिया जलाना हो या झाड़ू लगाना हो तो उस काम को वह बहुत प्रेम से करेगी। वह भक्ति हुई। ऐसे लोगों के लिए है ध्यान। और चौथा तो कर्म-फल है ही। श्रेय का अर्थ मैं करता हूं आसान। ज्ञान से ध्यान आसान है और सबसे आसान है कर्मफल-त्याग।"* ध्यान का यह अर्थ मुझे विनोबा ने बताया था। जब मैंने 'अनासक्ति योग' लिखा तो उसे विनोबा को पढ़ने को दिया था। उसके कई स्थलों पर हमारी चर्चा हुई थी। उसमें यह श्लोक चर्चा का विषय था।"

८ नवम्बर '४२

आज महादेवभाई की समाधि पर शंखों का नया ॐ बनाया। बापू ने गीली मिट्टी तैयार कराई। मिट्टी का ॐ बनाकर उसमें शंख लगाने थे। बापू सुबह ठीक साढ़े सात बजे नीचे जाते हैं, आज सवा सात पर निकले। मीराबहन को बुलाया। वे आईं और उन्होंने मिट्टी नापास की। कहने लगीं, "बहुत ढीली है। कल बनाएंगे।" मगर बापू आज ही बनाना चाहते थे। आखिर ॐ बनाया और बड़ा सुन्दर बन गया।

जब बनाकर निकले तो आठ बज गए थे। पौन घंटा लगा। बापू बहुत खुश थे—"आज के शुभ दिन मैं नाकामयाब होकर नहीं जाना चाहता था।" घूमते समय मीराबहन मिलीं। बापू ने उन्हें बताया कि ॐ सुन्दर बना है। फिर उन्हें तार में से दूर से दिखाने भी लेगए। मीराबहन कहने लगी, "हां बापू, बन तो सकता था, मगर कच्चा बनता। इसलिए मैं बनाना नहीं चाहती थी।" बापू कहने लगे, "मुझे उसकी परवा नहीं। भले एक दिन ही टिके, मगर हम बनाकर देखें तो सही। अनुभव करना अच्छा है।"

शाम को बा ने मुझसे कहा कि बापू के जन्मदिन पर जैसी रांगोली दरवाजे पर की थी वैसी करो और ॐ बनाओ। मैंने चूने का ॐ बना दिया, मगर बा को पसन्द नहीं आया। सिपाहियों ने तुलसी के पास लाल रांगोली के चित्र बनाये थे। वे बा को अच्छे लगे। अपने दरवाजे के सामने लाल चित्र उन्हें पसंद आया।

---

*इस अर्थ में कुछ कमी रह जाती है। 'ध्यानात्कर्मफलत्याग' का अर्थ यहां जैसा श्री बेलवलकर ने बताया है, इतना ही है कि उपासना में कर्म-फल-त्याग सहज ही प्राप्त होता है, क्योंकि उपासक अपना सबकुछ देवार्पण करता है। इसीमें वह परम आनन्द का अनुभव करता है। और कोई फल वह चाहता ही नहीं। इसमें उसे अनंत शांति मिलती है। 'विशिष्यते' का अनुसंधान ऊपर ही खतम होजाता है। भाई ने बापू को यह बताया तो उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया।

शाम को प्रार्थना के बाद महादेवभाई की समाधि पर मैं, भाई और सरोजिनी नायडू गए। शखो के वीच-वीच में अगरवत्तियो की कतार लगाई। अधेरी रात में वह इतनी सुन्दर लगरही थी कि क्या कहना! सरोजिनी नायडू कहने लगी, "ओहो, यह तो एक खूबसूरत-सी कविता दीख पडती है।" आकर हमने वापू को वताया। कहा, "आपको दिखाने के लिए हमें एक दिन फिर ऐसी ही वत्तिया लगाकर जलानी होगी।"

श्री कटेली वाहर गये हुए थे। कौन जाने कितने दिनो के वाद आज निकले होगे। लौटे तो सरोजिनी नायडू ने उनसे भी कहा, "आज आपने एक सुन्दर दृश्य खोदिया है।"

: २४ :

एक और उत्सव

९ नवम्बर '४२

आज वापू की और हमारी गिरफ्तारी को पूरे तीन महीने होगए है। वापू को विश्वास है कि हमें छ महीने से अधिक यहा नही रहना होगा।

आज गुजराती का नया वर्ष शुरू होता है।

भंडारी और शाह साढे दस वजे आए। वापू ने उन्हे मीरावहन के लिए वनाई गई टाफियो में से कुछ दी।

सरोजिनी नायडू ने वा को एक साडी भेंट की। मेरे लिए भी एक साडी और ब्लाउज़ निकालकर लाई, मगर मैंने लेने से इन्कार कर दिया। उन्होने वहुत आग्रह किया, पर मुझे इस तरह भेंट लेना उचित नही मालूम पडा, खासकर इस परिस्थिति और इस वातावरण में। वापू ने मेरा समर्थन किया।

कल से कातना शुरू किया है। वापू कहरहे थे, "अव तू इतनी अच्छी होगई है कि कातना शुरू करना चाहिए।" रात को आजकल वापू के सोने के समय ही सोजाती हू, यानी नौ सवा नौ वजे और सुवह छ वजे उठती हू। वीच में प्रार्थना के लिए एक घंटा उठ जाती हू। उसके वाद सोना नहीं चाहिए, मगर वापू आग्रह करने लगते है और मुझे भी वुखार से डर लगता है। इसलिए बहुत कम काम करती हू। काफी समय आराम में जाता है।

१० नवम्बर '४२

सुवह घूमते समय वापू कहने लग, "महादेव को मेरा वारिस होना था; पर मुझे उसका वारिस होना पडा है। मीरावहन को महादेवभाई की समाधि पर मेरा जाना खटकता है, मगर मेरे लिए वह विलकुल सहज वन गया है। मै न जाऊ तो वेचैन हो-जाऊ। वहा जाकर मैं कुछ करना नही चाहता, समय भी नही देना चाहता, मगर हो-आता हूं, इतना ही मेरे लिए वस है। अगर मै जिन्दा रहा तो यह जमीन आगाखा

से मागलूगा। वह न दे, यह सभव होसकता है। मगर किसी रोज़ तो हिन्दुस्तान आजाद होगा। तब यह यात्रा का स्थान बनेगा। मै वहा जाता हू तो महादेव के गुणो का स्मरण करने के लिए, उन्हे ग्रहण करने के लिए। मै उसकी स्मृति को खोना नहीं चाहता। और जिस तरह से वह यहा मरा, उससे उसके, उसकी स्त्री और लडके के प्रति मेरी वफादारी भी मुझे बताती है कि मुझे वहा नियमित रूप मे जाना चाहिए। होसकता है कि मेरी जिन्दगी में यह जगह मुझे न मिल सके और इस जगह को यात्रा-स्थल बनते मे न देख सकू, मगर किसी-न-किसी दिन वह जरूर बनेगा, इतना मै जानता हू। आज तो मै सब काम उसका काम समझकर करता हू। बाहर जाऊगा तब भी उसीका काम करूगा।"

मीराबहन ने आज कहा कि वह बा की मालिश नहीं कर सकती है। उनके पास सुबह समय नहीं रहता। कल से मै करूगी।

११ नवम्बर '४२

आज से मैने बा की मालिश शुरू की। मीराबहन की तबीयत आज ऐसी है कि वह कोई भार उठा ही नहीं सकतीं।

शाम को घूमते समय चर्चिल के आज के भाषण की बात आई। मैने कहा, "थोडी-सी विजय होगई तब तो ऐसा बोलने लगे है, आगे क्या होगा?" बापू कहने लगे, "अग्रेज लडाई जीतले, पीछे हमारी लडाई और तीव्र बनेगी। आज तो अखबारवाले भी कुछ खास नही कह सकते। बाद में वे काफी काम कर सकेगे। अग्रेज जितने आज बिगडे है उससे ज्यादा और क्या बिगडेंगे? मगर पिछली लडाई में इनकी जीत हुई थी। उसके बाद रौलट ऐक्ट आया था। अब भी ऐसा होसकता है। मगर मै मानता हू, ऐसा कुछ वे करेंगे नहीं। करेगे तो उनकी बडी बदनामी होगी। वे बदनामी की भी परवा न करे, ऐसा होसकता है, मगर हम ही चिन्ता क्यो करे? हम तो आजाद होगये। उस रात उन दो लडको ने महादेव से कहा था न कि हम आजाद होगये। वह ठीक था। मै उसे मानता हू। जितना ज्यादा ये लोग जुल्म करेंगे, जितना बिगडेंगे, उतनी ही जल्दी हमारी आजादी आयेगी। मै नही चाहता कि इस कारण वे पशु बनें। मगर मेरे कहने या न कहने से होता क्या है!"

आज अखबार में जयप्रकाश के जेल में से भाग जाने की खबर थी।

१२ नवम्बर '४२

बापू ने जब अहिसा इत्यादि एकादश व्रत आश्रम में प्रचलित कर दिये थे तब के अपने अनुभव और दूसरो द्वारा उनकी टीका की बाते आज बतारहे थे। फिर उनके प्रयोगो की बात करने लगे---आत्मवचना बहुत आसान चीज है। आदमी का माप तो छोटी-छोटी चीजो में से ही निकल आता है।

१३ नवम्बर '४२

सरोजिनी नायडू की लडकी पद्मजा का मगल को जन्मदिन है। बापू कहने लगे, "हमें उसके लिए कुछ करना चाहिए।" आखिर निश्चय हुआ कि खादी के रूमाल बनाये

जावे। बापू को यहा एक बहन ने दो जोडे धोतियो के भेजे थे। बापू ने धोतियो में से थोडे-थोडे टुकडे निकाल लिये थे। ओढने का टुकडा वैसा-का-वैसा रखा था। धोती में से निकला हुआ एक टुकडा काम आया। उसमें से पाच रूमाल बनाए। उस पर कढाई करने वगैरा का काम मेरे सिर आया। दो दिन उसमें लगे। कल विचार हुआ कि कुछ चाकलेट बनाकर उनके साथ रूमाल भेजे जावे तो अच्छा रहेगा।

वाइसराय ने राजाजी को बापू से मिलने की इजाजत नही दी। इस बारे में बाते होती रही।

१४ नवम्बर '४२

आज महादेवभाई को गए पूरे बारह हफ्ते होगए। जो लोग जीवन में सबको सुख देते है, वे मरते समय भी किसीको दु ख नही देते और जल्दी ही इस जग से चल बसते है। जिन्हे अपना किया भुगतना है, वे अपने लिए भाररूप होकर दूसरो के लिए भी भाररूप होजाते है और लम्बे अर्सेतक पृथ्वी का बोझ बढाया करते है। ईश्वर का यह कैसा विधान है!

आज चाकलेट बनाये और पाचो रूमाल पूरे किए।

बापू ने वाइसराय को पत्र लिखा। वे उसे आज ही भेजना चाहते थे, मगर समय पर तैयार न होसका। अच्छा ही हुआ। अब इसमें और सुधार होसकेगे। रात को वह पत्र बापू ने भाई को दिया और उसके विचार तथा भाषा-सम्बधी त्रुटियो को दूर करने को कहा।

शाम को घूमते समय जनरल स्मट्स की बाते चली। भाई कहने लगे कि यह सत्याग्रह की खूबी है न, कि आठ वर्ष की सख्त लडाई के बाद इस तरह मिठास और सुगधि रहे। बापू कहने लगे, "वह तो है ही। आठ वर्ष में स्मट्स को मेरी ओर से कोई कटु अनुभव हुआ ही नही। उसके पास मै जब भी जाता था हसाकर आता था।" भाई डा. राधाकृष्णन्‌वाली पुस्तक में बापू पर स्मट्सवाले लेख की बात करने लगे। किताब में लिखना तो आसान है, मगर गोलमेज कान्फ्रेंस के अवसर पर भी उसने हिम्मत से अच्छा वक्तव्य निकाला था और आज फिर ऐसा ही किया है। आज वह बापू के परम मित्रो में से एक है। फिर लार्ड अर्विन की बात आई। बापू कहने लगे, "अर्विन ने खूब सख्ती करके अत में थककर कहा था, 'क्या मै सारे हिन्दुस्तान को कब्र बनादू?' आखिर उसने समझौता कर लेना ही उचित समझा। वेजवुड बेन ने भी तार द्वारा समझौता कर लेने का आग्रह किया। सो वह हुआ। सत्याग्रह में आखिरी शक्ति भगवान की रहती है। हम क्या जानते है कि इस समय उसने क्या ठानी है?"

रात को महादेवभाई की समाधि का नक्शा बनाने की बात बापू ने कही। बोले, "अगर हममें से कोई भी जिन्दा बाहर न जावे तो यह नक्शा हमारे सामान में महादेव की पत्नी और लडके को मिले।"

१५ नवम्बर '४२

आज महादेवभाई को गए पूरे तीन महीने होगए। हम यहा आए थे तब कल्पना भी नहीं की थी कि यहा महीने गुजारने पड़ेंगे। वाइसराय को १४ अगस्तवाला पत्र भेजकर महादेवभाई बहुत खुश थे। उन्होंने कहा था, "अब बापू इस पत्र के उत्तर की राह तो देखेंगे ही। उसमें दस-पन्द्रह दिन लग जावेंगे और पन्द्रह दिन में तो बहुत कुछ हो-सकता है।" उनके सिर पर एक ही विचार भूत के समान सवार था—कौन जाने बापू कब उपवास की बात पर आजावे ?

बापू कल कहरहे थे, "मैं नहीं चाहता कि मैं इस जेल में मरू, मगर ईश्वर को क्या स्वीकार है, यह कौन जानता है ?"

भाई रात को बारह बजेतक वाइसरायवाले पत्र पर लगे रहे। सुबह बापू ने उसे देखा। बाद में वाइसराय को जो पहला खत लिखा था उसकी और भारत सरकार के गृह-विभाग के मत्री को भेजे गये पत्र की नकले मागीं। उन्हे मालिश में साथ लेगए। खाना खाते समय कहने लगे, "वाइसराय को पत्र नहीं जाएगा।" कल सरोजिनी नायडू ने कहा था, "बापू को पत्र नहीं लिखना चाहिए। बापू का पहला पत्र सम्पूर्ण था। अब बापू क्यो बार-बार लिखकर इन लोगो को मुह लगाए? बापू इतने महान है कि उन्हे इन लोगो को बार-बार नहीं लिखना चाहिए। उन्हे चुपचाप बैठे रहना चाहिए। आखिर अग्रेज मजबूर होकर बापू के पास आयेंगे।" उस समय तो बापू ने उनकी बात पर खास ध्यान नहीं दिया, मगर बाद में रात को उस पर और विचार किया। सुबह पुराने पत्र पढे तो उन्हे उनकी बात ठीक लगी। पत्र लिखनेका विचार छोड दिया। सरोजिनी नायडू उधर से गुजररही थीं, उन्हे बुलाकर कहने लगे, "अम्माजान, मुझे तुम्हारे सामने स्वीकार करना होगा कि कल जब तुमने वाइसराय को जानेवाले मेरे नए पत्र के बारे में राय जाहिर की तो मैंने उसे कोई महत्त्व न दिया। मैंने गर्व में सोचा कि अम्माजान तो बूढी होगई है। ये बाते ठीक तरह नहीं समझतीं। बाद में मैंने इस बारे में फिर सोचा। आज सुबह मैंने सुशीला से वाइसराय वगैरा के साथ का पुराना पत्र-व्यवहार लाने को कहा। मालिश में उसे साथ लेगया। मालिश के शुरू में १५ मिनटतक मैं काफी काम कर लेता हू। वह पत्र-व्यवहार पढने के बाद तुम्हारी दलील का वजन मैं समझा और मैंने अपनेआप सोचा कि अम्माजान तो जवान होरही है—हम बूढे होरहे है और सठियारहे है। सो वह खत अब नहीं जाएगा।" बीच-बीच में हसी भी खूब चलती थी। जब बापू ने कहा, "मैंने गर्व में सोचा" तो सरोजिनी नायडू ने मजाक में उत्तर दिया, "हा, जवानी के गर्व में सोचा।"

रात बापू उर्दू लिखरहे थे। मीराबहन आईं और कहने लगीं, "हा बापू, यह ठीक है। आप अपनी उर्दू को न छोडिए।"

मेरे चित्रकारी के रग आज आए है। मीराबहन ने उनसे एक सुन्दर चित्र बनाया।

आज भडारी और शाह आए तब मैं स्नानघर में थी। बापू ने बताया कि उन्हे

सर्पगधा के उपयोग के बारे में मुझसे कुछ पूछना था। सो मैंने सब कुछ लिखकर भेज दिया। थोडी-सी दवा भी भेजदी। अब वह रविवार को आया करेंगे। दूसरे दिन मोटर नहीं मिल सकती। उनके बच्चो को स्कूल जाना होता है।

१६ नवम्बर '४२

आज बापू का मौन था। कल शाम को भाई के कहने से जल्दी मौन लेलिया था, सो आज प्रार्थना से पहले छूट गया। कल और आज बापू ने पद्मजा के लिए जो रूमाल बनाए थे उन पर चार भाषाओ—गुजराती, बगाली, हिन्दी और तमिल—में 'प' लिखा। पाचवा मैंने उर्दू में लिखकर उन्हे बताया। रूमाल और चाकलेट पैक करके आज सरोजिनी नायडू को पार्सल देआई। वह उसे पद्मजा के पास कल जन्म-दिन पर भेजेंगी।

बा की तबीयत आज फिर कुछ बिगड़ी है। भाई की रात भी बहुत खराब गई। उन्हे कुछ दिनो से रात को बहुत कम सोने को मिलता है। कारण कई है। एक कारण बा की तबीयत भी है। यह चिता की बात है।

१७ नवम्बर '४२

आज पद्मजा का जन्म-दिन था। सुबह सरोजिनी नायडू स्नानघर में थी तब मीराबहन ने उनका कमरा सजाया। पीछे उन्होने 'खाखरे' बनाए। मैंने पुलाव और साग बनाया। कैदियो को आज खिचडी, आमटी, केले, मूली, साग, पापड इत्यादि खाने को दिये गए। सिपाहियो को भी खाना मिला। दिनभर धूमधाम में गुजरा। पकाने में इतनी देर लगी कि कैदी लोग दो बजे खाने को बैठे—सिपाही उससे भी आधा घटा बाद। कैदियो का खाना सिपाहियो ने पकाया, सिपाहियो का सरोजिनी नायडू ने और उनका याने घर के लोगो का मैंने और मीराबहन ने।

१८ नवम्बर '४२

कल पद्मजा के जन्म-दिन के लिए जो खाना पकाया था वह मैंने उन्हे खुश करने के लिए थोडा खाया था। मैं तो कई दिनो से कच्चा साग ही खाती हू, मगर सरोजिनी नायडू ने आग्रह किया तो थोडा पका साग इत्यादि चख लिया ताकि उन्हे बुरा न लगे। आज सुबह घूमते समय बापू कहने लगे कि वह नही करना चाहिए था। पीछे बताने लगे कि अक्सर उन्हे खाने के कमरे से हम लोगो के हसने की आवाज आया करती है। हम लोग भूल गए लगते है कि यहा हम किस हेतु से आए हैं। हसना बुरा नही है, पर हसने के योग्य वातावरण होना चाहिए। ऐसे व्यर्थ ही खाने की मेज पर बैठे इधर-उधर की बातो में पडने से क्या फायदा? यह थकान उतारने का सच्चा तरीका भी नही। यहा हमें गम्भीर रहना चाहिए।

एक कैदी की आख के पास फोडा था। आख सूजकर बन्द होगई थी। दोपहर उसे चीरा लगाया। बापू बडी दिलचस्पी के साथ सारा समय पास खडे रहे और जो मदद दे-सकते थे, देते रहे। अत में पट्टी बाधी तो वह कुछ छोटी निकली। दूसरी उसके साथ जोडी तब काम पूरा हुआ। बापू कहने लगे, "मेरा आपरेशन करती तो तू कभी छोटी

पट्टी लेकर शुरू न करती। पहले से पट्टी बटी रखनी चाहिए थी।"

कैदी ने ऑपरेशन बडी बहादुरी से कराया। भाई को डर था कि वह चीरे के नाम से ही डर जाएगा। शायद बेहोश भी होजाए। इसीलिए सलाह देरहे थे कि उसे लिटाकर चीरा लगाना चाहिए। मगर बापू कहने लगे, "नहीं, ये लोग तो बहादुर होते हैं। तुम्हे जैसे सुविधा हो वैसे करो।" मैंने उसे बिठाकर ही चीरा लगाया। बाद में इस पर बापू कहने लगे, "सर्जन सोच समझकर ही निश्चय करता है, फिर उस पर पक्का रहता है। किसीके कहने से बदलता नहीं।"

डा० लाजरस का उत्तर आया कि मैं सात को दिल्ली से चली थी और आठ की आधी छुट्टी डा० एचीसन से ली थी। इस तरह उसने मेरी सारी छुट्टी मान्ली है।

१९ नवम्बर '४२

बा को आज दिल की धडकन का दौरा हुआ। मालिश करने से दब गया।

बापू ने डा० लाजरस को सख्त उत्तर देने को कहा है। अब वह तैयार करना होगा।

२० नवम्बर '४२

कल डा० गिल्डर इत्यादि सबके पकडे जाने के बारे में बापू बाते कररहे थे, "सरकार की नीति इस समय लोगो को त्रस्त करने की है, जैसे भी बने भयभीत करना। यह उसके लिए बुरी बात है। इसमें उसका अपना अहित है।"

भाई पन्द्रह मिनट घूमकर चले गए। बापू और मैं घूमते रहे। बापू दक्षिण अफ्रीका की बाते करने लगे—कैसे कैलेनबैक को उनके पास उनका एक साथी, खोजा मुसलमान, जो खुद बहुत व्यभिचारी था, लाया। उनके जीवन पर बापू कोई असर न डाल सके मगर कैलेनबैक का जीवन, जोकि उसी मुसलमान के जैसा गदा था, बिलकुल पलट गया। फिर बापू बा के प्रति अपना भाव बताने लगे—कैसे बा ने हमेशा उनका साथ दिया, सब रिश्तेदारो ने भी बा को यही शिक्षा दी कि वे उनके पीछे चले। बाद में कैलेनबैक वगैरा का स्त्रियो के बारे में क्या मत था, बापू का अपना क्या मत था, यह बताते रहे। कैसे बापू अपने ब्रह्मचर्य के प्रयोगो पर आए, उनका सिद्धात, उनका प्रयोग, स्त्रियो के साथ उनका व्यवहार—यह सब समझाया। उनकी राय में नवविध बाढ के अन्दर रहकर जो ब्रह्मचर्य रखा जासके, वह उनकी दृष्टि से सच्चा ब्रह्मचर्य नहीं है।

दोपहर को मैं सोगई। आख खुली तो डा० लाजरस के पत्र का उत्तर सोचती रही। फिर सरोजिनी नायडू को इजेक्शन दिया। जिस कैदी को चीरा लगाया था उसकी पट्टी की। उसकी सूजन तो सब चली गई है और घाव भररहा है। बापू कल भी पट्टी के समय आकर खडे होगए थे और आज भी। मुझे लगता है कि महादेवभाई ने भी रोगियो की सेवा का शौक बापू से ही लिया होगा।

बा की तबीयत आज अच्छी रही। उदास तो वह है ही। लोहा देना बन्द किया है, क्योंकि लोहे से कब्ज बहुत रहने लगा है।

आज डा० शाह और कलेक्टर हूलन आए। कुछ नई दवाइया उनसे कहकर मगवाई।

सरोजिनी नायडू की तवीयत अच्छी नही है। आज दस्त होगए, थकान है। वजन तो कम हो ही रहा है। उनके लिए यहा भोजन अनुकूल नहीं है। वे मासाहारी भी है, यहा शाकाहारी वनी है। मगर शरीर को यह परिवर्तन अनुकूल नहीं है, ऐसा लगता है। बापू ने समझाने की कोशिश की कि मास खाए, मगर वे नहीं मानती। आखिर इतना मानी कि अडे हफ्ते में दो दफा खाएगी।

बापू ने अकवर इलाहावादी की कविता पढनी शुरू की है और बहुत रुचिपूर्वक पढते हैं। अकवर की टक्कर का व्यगमय कविता लिखनेवाला कवि हिन्दी में शायद कोई नही हुआ है, इस बात की भी चर्चा बापू आज सुबह कररहे थे।

२१ नवम्बर '४२

कल रात मैं थोडी देरतक पढने को वैठ गई। नीद नहीं आई थी। दिन में काफी सोई थी। बिस्तर पर पडे इधर-उधर के विचार आरहे थे। मुझे लगा कि समय का उपयोग क्यो न करलू। पढने को वैठ गई। इस पर बापू नाराज हुए। बोले, "सोने के समय सोना ही चाहिए।"

शाम को डा० शाह, नेत्र-चिकित्सा-विशेषज्ञ डा० पटवर्धन को लेकर आए। भाई की आख दिखानी थी। ऊपर डार्क रूम बनाया था। सरकार ने भाई को अस्पताल में ले-जाने की अनुमति नही दी। बापू ने पूछा कि क्या वे ऊपर आसकते है? डाक्टर ने इन्कार कर दिया। मैंने समझा—मुझे तो आने ही देंगे। पूछा तो उसके लिए भी मना कर दिया। डा० शाह वार-बार कहरहे थे, "आशा है, आप लोग वुरा नहीं मानेंगे। यह मेरे हाथ की वात नही।"

वाद में बापू कहने लगे, "वात यह है कि सरकार नही चाहती कि डाक्टर मुझसे मिले। मिलेगा तो वह मेरे असर के नीचे आसकता है। और ऊपर न जाने देने का दूसरा कारण यह भी है कि कहीं कोई दूर से मुझे देख न ले।"

करीव एक घटा आखें देखने में लगा। देखकर वाहर से ही डाक्टर चले गये।

वा की तबीयत अच्छी है। सरोजिनी नायडू की अच्छी नहीं मालूम होती, मगर वह तो हिम्मतवाली हैं। वीमारी की उपेक्षा करके उसे दवा देना चाहती हैं।

लार्ड हेलीफैक्स के लडके की मृत्यु पर बापू के समवेदना के सदेश की पहुच का आज वाइसराय की तरफ से समाचार मीठी भाषा में आया।

भाई ने वताया कि रात को प्रार्थना के वाद बापू अकवर की कविता—'कहो करेगा हिफाजत मेरी खुदा मेरा—' की नकल करते रहे। उन पर उसकी गहरी छाप पडी है। कहरहे थे कि गीता की तरह इसे घोलकर पीजाना चाहता हू। कल रात सोते समय उसे जबानी याद करने की कोशिश कररहे थे। एक पद याद नही आता

था। भाई से पूछने लगे। उन्हे भी याद न था। पद बहुत सुदर है। बापू के भाव की पूरी-पूरी प्रतिध्वनि उसमें से आती है।

: २५ :

सतयुग की कल्पना

२७ नवम्बर '४२

आज सवेरे घडी देखने में भूल हुई। इसलिए प्रार्थना के लिए ३-१० पर उठ गए। मगर सुबह उठने का वक्त हुआ तो बापू को लगा कि उनकी घडी पीछे होगई है। सो सवा पाच बजे उठ गए। इतने में भाई ने आकर बताया कि अभी तो सवेरा है, सो फिर सोगए और सबसे आखिर में जागे।

घूमते समय बापू पहले तो उर्दू के कवियो की बातें कहने लगे। भाई उन्हे गालिब की कविता के बारे में बताते रहे। ऐसे ही इकबाल, जौक, अकबर वगैरा की बाते चलती रहीं। बाद में बात चली कि कैसे अब अग्रेजी बोलनेवाले प्रदेश पूर्वी अफ्रीका की तिजारत को अपने काबू में रखने की योजना में लगे हैं। बापू कहने लगे, "इस योजना में इग्लैण्ड ही अकेला नहीं, अमेरिका भी इसके साथ है। अमेरिका आज इतना पैसा लडाई में उडारहा है कि जिसका हिसाब नहीं, क्योकि न उडावे और जर्मनी जीत जावे तो अमेरिका को तो वह निगल ही जावेगा। अमेरिका जब इतना खर्च करता है तो उसे और पैसा चाहिए ही। अमेरिका के पास आबादी तो है, पर उसकी वास्तविक शक्ति उसके पैसे में है। मगर मै मानता हू कि अमेरिका पर हिन्दुस्तान का असर इतना है कि अमेरिका हमें लूटने में नही शामिल होगा, और हो भी तो भले हो। योद्धा को जैसे सामना करनेवाले को देखकर ज्यादा जोश और उत्साह आता है, वही मेरा हाल है। मै चाहता हू कि जर्मनी और जापान की जीत न हो। जिस शत्रु को हम जानते है उसके साथ निपटना ज्यादा आसान है। जर्मनी और जापान के पास नया कुछ भी नहीं है। पुराने ढग की भी जो चीजें है वे भी सडी-गली है। उन्हीको उन्होने अपना आदर्श मान लिया है। दूसरी ओर अभी रूस है। उसके पास भली-बुरी, कैसी ही हो, कुछ नई चीज है। अगर रूस आज मिट जावे तो गरीबो के पास कौनसी आशा रह जावेगी ? रूस ने पाशविक बल का बहुत इस्तेमाल किया है, तो भी वह बल और सत्ता जनता के हाथ में है न। यह चीज आजकल के मेरे पढने से मुझ पर और स्पष्ट होरही है। किस बहादुरी से वे लोग आज लडरहे है। अगर अग्रेज जीतेंगे तो रूस की बहादुरी के कारण। अब मै जवाहर-लाल की चिन्ता को समझ सकता हू। वह मुझसे कहता है, "गरीबो के लिए तो दो ही चीजें है, या तो तुम्हारा रास्ता या रूस का। तुम्हारा प्रयोग तो जब सफल होगा तब देखेंगे, मगर रूस ने तो सफल कर दिखाया है।" रूस मटियामेट होजावे, यह कैसे

कि मानो घडी को देखकर कुछ पक्षी बारी-बारी से आकर नीचे तार पर बैठते है। उनमें दो उल्लू है। वे शाम के ६-१० पर आते है।

मीराबहन आज यह विचार कर रही है कि सारी दुनिया में कैसे क्राति होसकती है। उनकी मान्यता है कि पहले कुछ नेता रूस जावे, फिर हर गाव से कुछ किसान वहा भेजे जावें, वे आकर बाकी लोगो में प्रचार करे। मीराबहन का दिमाग आज रूस और मार्क्स से ही भरा हुआ है। बापू कहरहे थे, "यह एक छोटी-सी मिसाल है कि कैसे उनका मन एक बालक की भाति कल्पना के घोडे पर सवार होकर कहा-से-कहा पहुच जाता है, नहीं तो आज इस जेल में बैठे हुए रूस जाने का प्रश्न ही कैसे उठ सकता है ? और फिर क्या हम इतने कगाल है कि रूस जाने के सिवा और कुछ कर ही नही सकते ?"

२७ नवम्बर '४२

प्रात घूमते समय बापू भाई के साथ फिर इतिहास और ऐतिहासिक प्रक्रिया की चर्चा करने लगे। चर्चा मार्क्स के शिक्षण पर आई। बापू कहने लगे, "मार्क्स का कहना है कि पाच इद्रियो से जिसे पहचाना न जासके उसको मानने की जरूरत नहीं, मगर मै कहता हू कि इन्सान कितनी ही होशियारी से काम करे तो भी कुछ-न-कुछ छिद्र रह जानेवाला है। यह अज्ञात तथ्य मनुष्य के हिसाब को गलत सिद्ध कर सकता है। इसे ही गीता ने 'दैव' के नाम से पुकारा है—'दैवचैवात्र पचमम्'। मार्क्सवादी उत्तर देंगे कि आज हमने कुदरत पर पूरी तरह काबू नही पाया, मगर कभी नही पाएगे, यह मानने का आपको अधिकार नही है। तो मै कहता हू कि जब पाओगे तब की बात तब, मगर आज आपको इस अज्ञात तथ्य को अपने सामने रखना ही होगा।"

फिर रूस की बात करने लगे, "रूस ने इतना किया है तो भी मै कहता हू कि रूस का काम तबतक टिक नहीं सकता, जबतक कि उसके साधन शुद्ध नहीं होते। मेरे सामने तो एक ही चीज है—'सत्य', वह भी पूर्ण सत्य—भले ही वह पाचो इद्रियो के द्वारा न अनुभव किया जासके। तो भी वह है, जैसे कि यूक्लिड की लाइन भले ही कल्पना में रहे तो भी उसका अस्तित्व तो है ही। सो सत्य है और उसे हमें ढूढना है। उसे ढूढने का एक ही साधन है—अहिंसा। उसमें हमें चाहे हजारो वर्ष लग जाय, लेकिन हम उसे प्राप्त करेगे तो हमारा काम पायदार होगा—टिकनेवाला होगा।" पीछे मार्क्सवाद की पुस्तक की बात चली। बापू कहने लगे, "उसने अच्छी किताब लिखी है, तो भी उसमें कई त्रुटिया है। वह पुस्तक आज अमर होगई है, क्योकि लेनिन ने उसमें बताए सिद्धात पर अमल कर दिखाया। पूर्णतया तो वे भी नहीं कर पाए, तो भी उन्होने काफी कर लिया है। इसी तरह हमें भी अब करके दिखाना है।"

भाई पूछने लगे, "प्रकृति के नियम स्वतत्र, सनातन और शाश्वत है। उनका स्रोत मनुष्य का मस्तिष्क नहीं। इसी तरह आज पूजीवाद का कानून जो मार्क्स बताता है, वह भी सत्य माना जाता है। क्या वह उपरोक्त अर्थ में ठीक है ? या यह कहा जाय कि ऐसे

कानूनो की उत्पत्ति मनुष्य की कल्पना में से होती है और उसका समर्थन करनेवाली ऐतिहासिक युक्ति इन्सान बाद में ढूढ लेता है ? अर्थात् ये सब कानून मनुष्य के बनाए हुए है और मनुष्यो से अलग इनका कोई स्वतत्र अस्तित्व नहीं है ?" बापू कहने लगे, "कुदरत के कानूनो का तो स्वतत्र अस्तित्व है। मनुष्य हो या न हो, सूर्य की गति कायम रहेगी। गुरुत्वाकर्षण शक्ति काम करती रहेगी, मगर पूजीवाद के कानून का तो आधार ही मनुष्य है। मनुष्य के अनुभव, मनुष्य के मन पर जो प्रतिक्रिया हुई, उसमें से वह कानून निकाला गया है। इसलिए उसकी मै कुदरत के कानून से तुलना नहीं करता हूँ। उसको इस तरह तीनो काल में सच्चा नहीं मानता हू।"

आज शुक्रवार था, इसलिए कलक्टर और डा० शाह आए। शिष्टाचारवश पूछकर चले गए कि आपको कोई शिकायत तो नहीं है ?

रात को बापू के लिए एक नई बकरी आई। बहुत सुन्दर है। मीराबहन बडी खुश है। उसे बापू के पास लाई। कहती थीं, "बहुत अच्छी नस्ल की बकरी है। इसकी नाक रोमन है।" भगवान जाने, बकरियो के रोमन नाक कैसी होती होगी।

२८ नवम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू से भाई ने कहा, "लोग पूछते है कि अहिंसा के द्वारा तुम लोग धनवानो के फदे में से धनहीनो को कैसे छुडवा सकते हो ?" बापू कहने लगे, "मै तो इसके उत्तर में यह कहूगा कि अगर धनहीन को अपनी शक्ति का ज्ञान होजावे तो फदे में फसा नहीं रह सकता। मै तो खुद धनहीनो में से हू। मुझसे कोई भी जैसे चाहे, काम नही करवा सकता। माना कि पहले तो मै नौकरी करके रोटी कमाता था, फिर मुझे ज्ञान हुआ कि नौकरी क्यो ? मेरे पास चर्खा है। मै कातूगा और उसकी कमाई से गुजारा करूगा। किसी के सामने लाचार नही बनूगा। जो मै कर सकता हू, वह सब कर सकते है।" इस विचार-श्रेणी पर ही समाज-क्रांति की मैने अपनी कल्पना की नींव रखी है।

भाई ने बताया कि कुछ लोगो ने उनसे चर्चा करते हुए पूछा था, "युवक वर्ग तो उत्साह और आवेश पर ही चलता है। उनके सामने हम अपनी कल्पना की एक पूरी तस्वीर रख सके तो अच्छा हो।" इसका भाई ने क्या उत्तर दिया था, यह भी बताया तो बापू ने कहा, "तो यह चीज तुम लिख डालो। उसमें अपूर्णता रह जायगी तो उसे देख लेगे।" भाई ने चर्चा करनेवालो से कहा था कि हम बाद में इस काम के लिए शासन-तत्र की मदद भी लेगे, इत्यादि। बापू ने कहा, "इस उत्तर में विचार-दोष है। आज हमारे पास सत्ता नहीं है। सत्ता इस्तेमाल करने की बात क्यो करना ? वे लोग तुम्हे जवाब देंगे कि ऐसे तरीके से तुम्हें सत्ता मिल नहीं सकती। काग्रेसी मिनिस्ट्री (मत्रिमण्डल) आगई। वह तो एक सयोग की बात थी—ऐसा समझो। वाइसराय भी इस बात पर तुले थे कि समझौता करना है। वह खुद १९३५ के कानून के निर्माता है। उन्हें लगा कि यह चल जावे तो अच्छा है। ऊपर से भी उन पर

दबाव था कि कुछ करो। सो मिनिस्ट्री आई। मगर बाद में वे लोग उसके गर्भित अर्थ को समझे। ऊपर से तो गवर्नर तारीफ करते थे, मगर खुफिया-रिपोर्ट में जाता होगा कि ये लोग खरीदे नहीं जासकते। इनके साथ हमारा काम नहीं चल सकता। सब मत्रिमण्डल केन्द्रीय काग्रेस पार्लमेण्टरी बोर्ड के द्वारा चलाए जाते थे। सो वह बहुत दिन चलनेवाली चीज नही थी। आज तो युद्ध के कारण हम मिनिस्ट्री में से निकले, वरना कौन जाने, कैसी परिस्थिति में निकलना पडता। सत्ता हाथ में आजावे फिर तो ऐसे सुधार करने में कुछ कठिनाई नहीं आती और फिर इन चीजो के बारे में शका करनेवाले भी नहीं रहेगे। राजकोट एक छोटी-सी जगह थी। वहा जब हमें सफलता मिली थी, उसके बाद गडबड नही होगई होती तो काठियावाड का तो रूप ही बदल जाता और सारे हिन्दुस्तान पर उसका असर पडता। मगर आज सत्ता हमारे पास है नहीं।"

आज महादेवभाई को गए पद्रह हफ्ते होगए। समाधि पर एक हफ्ते से ॐ नही बनाया। लिपाई वगैरा होरही है। पत्थर लगाए है, सो हम फूल रखकर ही चले आते है।

श्रीमती नायडू और मि० कटेली के लिए आज पूरिया बनाई, मीराबहन और बा के लिए मेथी के पराठे। शाम को मीराबहन की तबीयत बिगडी। पेट खराब था। सिर में दर्द और ९९.६ बुखार, ऊपर से मचली होती थी। सुबह ही वे कहरही थीं कि जी आज अच्छा नहीं है। बाद में खाना वगैरा खाया तो उससे जी और बिगड गया।

२९ नवम्बर '४२

आज सुबह भण्डारी और शाह आए। कटेली साहब ने बात की कि सरोजिनी नायडू की लडकी को हमने टॉफी बनाकर भेजी थी। वे लोग मजाक करने लगे, "हमें क्यो नही दी?" श्रीमती नायडू मुझसे कहने लगीं कि अब फिर ये लोग आवे तो उनके लिए टॉफी तैयार रखना।

सुबह घूमते समय भाई के साथ खुराक वगैरा के बारे में बाते होती रहीं। उनकी खुराक काफी नही और सो बहुत ही कम पाते है।

शाम को घूमते समय भाई के साथ कलवाले प्रश्न पर आगे चर्चा करते हुए बापू बोले, "मै मानता हू कि अहिंसा के द्वारा सब प्रश्न हल होसकते है। यह भी मानता हू कि अगर कोई देश तैयार होसकता है तो हिन्दुस्तान ही इस तरह से प्रश्न हल करने को तैयार होसकता है।

"मनुष्य-स्वभाव ऊर्ध्वगामी है, क्योंकि मै जानता हू कि मेरी दलील को काटने का काफी सामान मनुष्य-समाज की आज की परिस्थिति में पडा है। सब-के-सब त्यागी नहीं बनने वाले। जापान के चिथडे अगर आज उन्हे मुफ्त मिले तो सब लेगे। उनमें अनेक त्रुटिया है। मार्क्स पूजीवाद की चर्चा करता है और कहता है कि आखिर ये लोग जावेगे कहा? ऐसे ही मै कहता हू कि आज का मनुष्य-स्वभाव हमें लेजायेगा कहा? अगर अहिंसा को न अपनावे तो लडाई-पर-लडाई होती ही रहेगी। सुधरा हुआ मनुष्य-समाज इस

चीज को कैसे सहन कर सकता हूं ? और धनवानो के वर्ग में से मार्क्स-पद्धतिवालों ने बड़े-बड़ों को मार डाला। छोटे-छोटे धनवान तो उन्हें भी रखने पड़े, क्योंकि उन्हें भी मारने जाते तो उनकी अपनी पार्टी में बहुमत और अल्पमत के बीच झगड़ा उठ खड़ा होता। सो जैसे हमारे यहां पाटीदार पड़े हैं, ऐसे उनके यहां कूलाक पड़े हैं। सत्ता तो उनके हाथ में है ही नहीं। अहिंसा-पद्धति के द्वारा हम बड़े धनवानो को भी मार नहीं डालते, अगर उनकी सत्ता धनहीन वर्ग पर से उठ जाती है।"

भाई कहने लगे, "आप इसे एक दर्शन का रूप देकर इस पर एक पुस्तक लिख डालिए।" बापू कहने लगे, "मुश्किल यह है कि यहां पर मार्क्स भी मैं हूं और लेनिन भी मैं हूं। पुस्तक तो मेरे मस्तिष्क में पड़ी है। जब मौका आता है तब मैं उसमें से मतलब की बात निकाल लेता हूं।" भाई कहने लगे, "आप तो परिस्थिति देखकर क्या करना है इसका निश्चय कर लेते हैं। आपके मस्तिष्क में वह सब है, मगर आपके बाद लोगों का मार्ग-दर्शन कौन करेगा ? आज तो मौका आने पर आपकी ज्ञानेन्द्रिय जाग्रत होजाती है और आप काम कर लेते हैं। मौका न हो तो बरसोंतक चुप ही बैठे रहते हैं।" बापू कहने लगे, "हां, वह ठीक है। मौका आने पर मेरी छठी ज्ञानेन्द्रिय जग उठती है और बाद में फिर सोजाती है। मगर तुम जो कुछ कहरहे हो वह मैं कर नहीं सकता। वह मेरी शक्ति से बाहर है। काका ने भी यही कहा था। मैंने कहा, 'काका, मैं स्मृतिकार नहीं हूं।' कुछ प्रेरणा हुई तो कह दिया। जबतक परिस्थिति मेरे सामने आकर खड़ी न होजावे, मैं निश्चय नहीं कर सकता कि क्या करूंगा। तो मैं स्मृति कैसे लिखूं ? अभी इस लड़ाई में ही मैंने पहली लड़ाइयों से उल्टा किया है। पहले यह था कि कैदियों की तरह का बर्ताव जमलदारो के साथ करना है, उनका हुक्म मानना है। वह अहिंसा में से निकला था। आज उसी अहिंसा में से उससे उल्टा निकला है, मगर इन दोनो का विरोध मात्र ऊपर का विरोध है, सच्चा विरोध नहीं। सो यह अहिंसा की कार्य-पद्धति तो धीरे-धीरे विकसित होरही है और होती रहेगी। मेरी इच्छा होते हुए भी मैं स्मृति नहीं लिख सकूंगा।"

पीछे मिल के कपड़े की बातें होने लगीं। बापू ने कहा, "सब जानते हैं कि मैं तो मिलो का खात्मा चाहता हूं, मगर आज मैं उनके लिए वायुमण्डल तैयार कर रहा हूं। जो खादी नहीं पहनते, वे भी जानते हैं कि असल चीज तो खादी ही है। मगर वे अपना शौक नहीं छोड़ सकते या कुटुम्ब में महंगी खादी खरीदने की शक्ति नहीं रखते, पर उनमें से अधिकतर का मन खादी के लिए तैयार है। इस तरह वातावरण तैयार होरहा है। समय आने पर बाकी काम कानून से होजायगा।"

शाम को ७-२५ पर बापू ने मौन लिया। मीराबहन आज भी बीमार ही है। ज्यादा लम्बी बीमारी न चले तो अच्छा है।

३० नवम्बर '४२

आज बापू का मौन था। सो घूमते समय भाई ने रूस की बात के सिलसिले में ही कुछ प्रश्न बापू के विचारार्थ उनके सामने रखे। उनमें से दो तो ये थे (१) सत्याग्रही

जड़वत क्यो लगते है ? (२) चर्खा और दूसरे ग्रामउद्योग हिन्दुस्तान की गरीबी को दूर करने के लिए काफी है, भले ही वे दुर्भिक्ष से लोगो को बचाने में समर्थ न हो ? ग्रेग ने जो उत्तर दिया है, वह सतोषजनक नही है ।

श्री कटेली ने कुछ सब्जिया बोई है। शाम को हम उनका साग-भाजी का बगीचा देखने गए। गोभी बोई है, मगर उसके तैयार होने में अभी दो महीने और लगेंगे। तबतक छ महीने के हिसाब से तो हमारे यहा से जाने के दिन आजावेगे। मन में आता है कि चार महीने के करीब तो गुजर गए, अब दो महीने में क्या एकाएक कोई चमत्कार हो उठेगा कि परिस्थिति बदल जायगी ? मगर बापू की श्रद्धा है कि कुछ होगा और हम दो महीने में जेल से निकल जाएगे। कहते है, विश्वास से पर्वत भी हिल जाते है।

मीराबहन आज अच्छी है। आशा है कि कलतक बिलकुल चगी होजावेगी।

बा के नाम आज पार्सल आया। उसमें जमीकद था, काला शहद और खजूर। नक्षत्र-मण्डल पर एक पुस्तक भी थी। सब चीजें शातिकुमारभाई ने भेजी है। पहले भेजी थी तो सरकार ने यह कहकर कि बा ने ये चीजें नही मगवाई है, पार्सल लौटा दिया। पीछे शातिकुमारभाई ने पुछवाया। अब पार्सल फिर वापस आया है। बा खुश है।

भसालीभाई की कोई खबर नही। बापू का तार और पत्र वगैरा सब सरकार हजम कर गई लगती है।

बापू रात को १२ बजेतक सो नही सके। बहुत थके-से थे। विचार भी चलते थे।

सर्दी काफी पडने लगी है। रात को और सुबह ठड होती है। बाद में दिन भर सर्दी भाग जाती है। बादल दो-एक रोज आए और बिना बरसे चले गए। आज आकाश बिलकुल खुला है।

पुराने फूल करीब-करीब खतम होगए है। माली नए फूल लगा गया है। कोई महीने भर में नए फूल निकल आवेगे।

महादेवभाई की समाधि पर ॐ आज भी नही बना सके। एक-दो लिपाई और होगी, तब जगह तैयार होगी।

: २७ :

ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त

१ दिसम्बर '४२

आज महीने के शुरू का दिन बुरा गया। शाम को घूमते समय बापू ने भाई के इन प्रश्नो का उत्तर दिया—"राजनैतिक प्रश्नो में तो हमें वैधानिक अकुश चाहिए तो फिर आर्थिक क्षेत्र में हम सरक्षको की दया पर क्यो रहे ? क्यो न इन पूजीपतियो पर

भी कानून का बधन हो और सबको कानून से ट्रस्टी बनना पडे ?"

उत्तर में बापू ने कहा, "मैंने ऐसा नहीं कहा कि आगे जाकर वैधानिक अकुश नहीं होगा। आखिर कानून से उनका भी कमीशन—वेतन बधेगा। सिर्फ इतना ही है कि मैं उनका हनन नहीं करना चाहता। उनकी शक्ति का उपयोग कर लेना चाहता हू, जैसे कि जमनालालजी थे। उनकी सम्पत्ति का उपयोग समाज के लिए हो तो भले ही वह सम्पत्ति जमनालालजी की कहलाए। रूस में पूजीपतियो का सर्वनाश किया गया और उनसे कहा गया, "आपको यहा रहना है तो किसान बन जाओ।" मगर मैं कहता हू कि तुम्हे किसान बनने की जरूरत नहीं। तुम्हारे हृदय का परिवर्तन होजाय तो मेरे लिए बस है।" भाई कहने लगे, "सच्ची ट्रस्टीशिप की स्थिति न आए तबतक इस बीच के समय में क्या हम सिद्धान्त में ढील नहीं देदेते?" बापू कहने लगे, "अहिंसा में समझौते को हमेशा स्थान रहा है। समझौता अहिंसा का शरीर है—ऐसा कहा जा सकता है। मगर इस चीज में समझौते की बात नहीं आती। ट्रस्टीशिप कोई आरजी चीज नहीं है। वह तो स्वय एक आदर्श है। पूजीपतियो के लिए ट्रस्टीशिप की यह मेरी बनाई अतिम स्थिति है। इससे आगे जाने की गुजायश नहीं। हमारी (काग्रेस की) सस्था स्वतत्र इच्छा से सघटित लोगो से बनी है। हम पूजीपतियो से स्वत अपने हको का त्याग करने को कहते हैं। हम आज उनके सामने यह नहीं रख सकते कि तुम पाच सैकडा कमीशन लो या दो सैकडा। जितना त्याग वे स्वय करे उससे मुझे सतोष होजायगा मगर कोई ऐसा निकले कि वह दो सैकडा लेना चाहे तो मैं उससे यह थोडा कहूगा कि नहीं, तुम दस सैकडा लो। इस तरह अच्छा वातावरण पैदा होजाएगा। मानो कि एक पूजीपति टेढा निकला। कहने लगा कि जाओ, मैं कुछ नहीं छोडता। तो मैं कहूगा कि तुम्हे छोडना पडेगा—कानून से मजबूर होकर छोडना पडेगा। आखिर पूजीपति अल्पमत में है। उन्हे बहुमत के सामने झुकना ही है। मुझे उनसे बहुत-सी चीजें छीननी होगी, जैसे कि खिताब है, वर्ग-भाव है। मगर मैं उनकी पूजी छीनना नही चाहता। उसका समाज के लिए उपयोग चाहता हू।"

आज मीराबहन अच्छी है। डा० शाह आए थे। देखकर चले गए। श्रीमती नायडू के हाथ को रात में पोस्त का सेंक दिया। बा को त्रिफला लेने से बहुत फायदा हुआ है।

२ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय भाई ने बापू से कहा, "हमें यह हिसाब निकालना चाहिए कि सामान्य मनुष्य की आवश्यकताए क्या-क्या है, उन्हे पूरी करने के लिए मेहनत की कितनी इकाइयो (Man-hours of labour) की आवश्यकता है? हाथ से काम करके वह पूरी होसकती हैं या मशीन का आश्रय लेना पडेगा? लेना पडेगा तो किस हदतक?" बापू कहने लगे, "इस बारे में काफी विचार होचुका है। पूरा काम नहीं हो पाया, इतना मैं मान लेता हू, मगर मैंने विनोबा, कुमारप्पा, कृष्णदास,

प्रभुदास और नारायणदास से काफी हिसाब करवाया है। वह हिसाब 'हरिजन' में समय-समय पर छप भी चुका है। एक बात के बारे में मैंने पूरा विचार नहीं किया। वह है जमीन। जमीन के बिना अकेले चर्खे और अन्य ग्राम-उद्योगो से लोगो की गरीबी दूर नहीं की जासकती। जमीन का प्रश्न कसे हल होगा, यह मै पूरी तरह से आज जानता नही हू।"

भाई कहने लगे, "मार्क्स के सिद्धात का बहुत-सा हिस्सा ज्यो-का-त्यो स्वीकार किया जासकता है। हा, जहा वे हिसक बल के उपयोग की बात बताते है, वहा हम अहिसक बल रखदें। लोग क्यो मान लेते है कि अहिसक बल उतना काम नही देसकता ? आज का अनुभव हमें इससे उलटा सिखाता है। मरने की तैयारी तो दोनो में चाहिए ही। इतना हो तो अहिसक का आत्म-बलिदान सामने के पक्ष को हिसा की अपेक्षा कही अधिक प्रभावित कर सकता है।"

बापू बोले, "मरने की तैयारी तो आवश्यक है ही, मगर आज तुम देखोगे कि मरने की तैयारी भी उन लोगो की अहिसावादियो से ज्यादा है। और केवल मरने की तैयारी से काम नही चलता। जापान के 'हाराकिरी' (आत्मघात) करनेवालो को देखो। वे लोग मरने को कोई चीज नही समझते, साथ ही उन्होने हिसा को धर्म बना रखा है। जब दोनो के मरने की तैयारी एक-सी होजायगी तब हम प्रत्यक्ष रूप में देख सकेगे कि अहिसक बल हिसक से बहुत आगे बढ जाता है। आज तो कबूल करना होगा कि हिसको में मरने की तैयारी और शक्ति बहुत अधिक है।"

भाई कहने लगे, "हिंसा से वे लोग जो परिणाम लाना चाहते है, वे उनके साधनो के आतरिक दोष के कारण स्थायी नही होसकते, पूर्ण नही होसकते और अत में समय भी ज्यादा लेते है। रूस को लीजिए। उसकी मान्यता है कि शासन-तत्र (State) को आखिर अनावश्यक होकर निकल जाना ह, मगर वास्तविक परिस्थिति उससे उलटी है। वहा शासन-तत्र तो दिन-प्रतिदिन ज्यादा मजबूत होता जारहा है। स्टालिन इसका कारणभूत नही माना जासकता। एक भी साम्यवादी के मुह से यह उत्तर नही निकल सकता, क्योकि इन लोगो की फिलॉसफी मे व्यक्ति को कोई महत्त्व नही दिया जाता। जो होरहा है, जो हुआ है, वह उनके साधनो के दोष के कारण हुआ है। ये दोष उनके साधनो के गर्भ में रहे है।"

बापू ने कहा, "किसी कच्चे मार्क्सवादी पर ऐसी बातो का प्रभाव पड सकता है, मगर पक्के जयप्रकाश-जैसो पर नही, जो आज सत्ता को बलपूर्वक छीनने की तैयारी कर रहे है।"

भाई कहने लगे, "आप ठीक कहते है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम उनका हृदय पलट नहीं सकते। हमे उनके साथ मिलकर काम करना होगा और उनकी विचार-धारा में अहिसा को जिस हदतक दाखिल किया जासकता ह, करना होगा। क्या इसका अर्थ यह भी होसकता है कि जो आदर्श वे हमारे सामने रखते है, वही सच्चे है ?"

बापू बोले, "मैं यह नहीं कहना चाहता। कारण साफ है। वे लोग अपने अनुभव से कहते हैं कि अहिंसा चलनेवाली चीज नहीं। वे हमारी अहिंसा को भी आखिरी हिंसा की तैयारी के रूप में ही देख सकते हैं। मगर मैं कहता हूं कि मुझे आप लोगों की मान्यता से कुछ लेना-देना नहीं है। मेरे सामने एक चीज आगई है। उसकी कितनी शक्ति है, वह क्या-क्या कर सकती है, यह बतौर एक वैज्ञानिक के मुझे देखना है। क्यूरी ने जब रेडियम की शोध की थी तो पहले उनके पास रेडियम प्रत्यक्ष नहीं आगया था। उनके प्रयोगों से उन्हें पता चल गया था कि रेडियम-जैसी कोई चीज है सही, मगर जगत कहता था, "जबतक तुम रेडियम हमारे हाथ की हथेली पर रख नहीं देतीं, उसके लक्षण और गुणों का ठीक-ठीक वर्णन नहीं कर सकतीं, तबतक हम नहीं मानेंगे।" सो वह काम करती गई। आखिर थोडा-सा रेडियम उन्होंने तैयार किया, उसके गुणों की भी शोध की। तब जगत माना। पीछे दुनिया को उसी चीज का गुणाकार करके आवश्यकतानुसार रेडियम तैयार कर लेना पडा। वही बात अहिंसा के साथ भी लागू होती है। जगतके सामने जबतक एक सम्पूर्ण प्रयोग नहीं आजाता तबतक उसे वह शंका की दृष्टि से देखेगा। शंका रखने का जगत को हक है। मैं इस प्रयोग को पूरा करने का प्रयत्न कर रहा हू। परिणाम क्या होगा, यह मैं नहीं जानता।"

दोपहर को भसालीभाई की खबर गुजराती अखबार में मिली। बीस रोज उपवास को होचुके हैं। श्री मुशी उनसे चिमूर के रास्ते पर जाकर मिले थे। बापू कहरहे थे, "यह कैसी दुःख की बात है कि अंग्रेजी अखबारों में दम ही नहीं है, नहीं तो भसाली-भाई की खबर छापे बिना वे कैसे रह सकते हैं ? आज अखबारों में जो चलरहा है वह लोकमत को ठीक रास्ते पर चलाने के लिए नहीं, सरकार का मुंह रखने के लिए ही होरहा है।"

शाम को घूमते समय कुछ दिन पहले के इस प्रश्न के उत्तर में कि सत्याग्रही जड-वत-से क्यों लगते हैं, बापू ने कहा, "सत्याग्रही जडवत लगते हैं, यह मैं स्वीकार कर लेता हूं। इसके कारण को ढूंढो तो पहली याद रखनेवाली बात यह है कि किस वर्ग में से मेरे पास सत्याग्रही आए। लेनिन के पास काम करनेवाले धनहीन थे, क्योंकि वह उनके लिए काम कर रहा था। कुछ भी हो, लेनिन को उनसे संतोष मानना था। इसी तरह मेरे पास जो कार्यकर्ता हैं उनसे मुझे भी संतोष मानना है। दूसरी बात यह है कि जबतक वे लोग मेरे अंकुश के नीचे रहकर काम करते हैं, उन्हें जडवत लगना ही है। कारण यह है कि सत्याग्रह का संचालक मैं रहा। मुझसे आगे उनमें से कोई कैसे जासकता है ? वे लोग अपनी बुद्धि चलाने लगें तो उनका राजाजी-जैसा हाल होगा। मैंने राजाजी से कहा था कि जबतक मैं हूं, तुम मुझे समझाने का प्रयत्न करो। न समझा सको तो अंत में तुम्हें मेरी बात मानकर चलना चाहिए। वे कहने लगे, "कभी नहीं।" तो मैंने कहा, अच्छी बात है। ऐसे ही कह तो जवाहरलाल भी देता है कि 'कभी नहीं' मगर पीछे करता वही है जो मैं कहता हूं। ये सत्याग्रही भी दूसरे विषयों में तो जड-से नहीं हैं। एक सत्याग्रह

के विषय में है। मोतीलालजी-जैसे भी जबतक मेरे साथ काम करते थे, अपनी नही चला सकते थे। के० टी० शाह को देखो, मेरे साथ था, तो हर बात मुझसे पूछकर लिखता था। उसका तेज ढका रहता था। मेरा विरोधी बना तो एकदम लोगो को वह एक महान् अर्थशास्त्री और तेजस्वी आदमी लगने लगा। ऐसे ही कुमारप्पा है। आज वह मेरे साथ जड़वत लगेगा, अलग होजावे तो चमकने लगेगा। आर्यनायकम क्या कर सकता है? गुरुदेव के पास वह बडा विद्वान था, मगर मेरे पास आकर वर्धा शिक्षण-प्रणाली में पडा। वहा उसे मुझसे पूछ-पूछकर काम करना है, क्योकि वर्धा शिक्षण-प्रणाली की उत्पत्ति मेरे मस्तिष्क में से हुई।" इस प्रकार की दो-चार मिसालें बापू ने और दी, जहा बापू को छोड देने के बाद लोग एकदम ऊपर चढ गए-से लगते थे। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि सत्याग्रहियो की जडता देखने में जडता-सी लगती है, पर यह वास्तविक जडता नही है।

आज सरोजिनी नायडू के विवाह को ४४ वर्ष हुए। वे आइसक्रीम बनाना चाहती थी, मगर मैं और भाई नही खानेवाले थे, इसलिए उन्होंने भाई से सबके लिए फलो के रस का एक पेय तैयार करवाया। सबने बडी प्रसन्नता से पिया।

३ दिसम्बर '४२

आज दस दिन के बाद भसालीभाई के विषय में बापू के तार का सरकार ने उत्तर दिया, "आपको प्रो० भसाली के साथ तार या पत्र-व्यवहार करने की इजाजत नही दी जासकती, मगर मानवता की दृष्टि से आप उनका उपवास छुडवाना चाहे तो आपकी सलाह उन्हे सरकार की तरफ से पहुचादी जावेगी।" बापू की तो ऐसा उत्तर पाने के लिए तैयारी थी ही। तो भी अच्छा तो किसीको नही लगा।

आज 'हिन्दू' अखबार में प्रो० भसाली के उपवास की छोटी-सी खबर थी। उसमें से नई बात यह मिली कि उपवास के शुरू होते ही श्रीमती जानकीदेवी बजाज ने बापू को उनके उपवास के बारे में पत्र लिखा था। वह पत्र सी पी सरकार की मार्फत दिल्ली सरकार के पास गया। उसने उसे बापू के पास भेजने से इनकार किया। खबर सुनकर बापू कहने लगे, "इस वक्त सरकार चाहे जो करे, मेरे मन में निराशा तो आती ही नही है। जो जहा पडा है, अपना-अपना काम अपनी शक्ति के अनुसार पूरी तरह मन से कर रहा है। मुझे इससे बहुत सन्तोष होता है।"

आज सुबह घूमते समय फिर ट्रस्टीशिप पर चर्चा छिडी। भाई कहने लगे, "आप कहते है कि पूजीपतियो के हृदय का परिवर्तन होगा और उससे आज की सारी अर्थ-व्यवस्था बदल सकेगी, मगर समाजवादी कहते है कि पूजीवाद और निजी मिल्कियत की प्रथा मिटेगी तथा वातावरण बदलेगा तभी एक वर्गविशेष के रूप में पूजीपतियो का हृदय भी बतौर एक वर्ग के बदलेगा। जब आप भी कई बार कहते है कि दलील से ये लोग नही समझेंगे, परिस्थिति इन्हे अपनेआप समझा देगी तो आप मार्क्सवाद के उस सिद्धात

का समर्थन नहीं करते कि भौतिक वातावरण मूल वस्तु है। विचारप्रणाली और आदर्श-वाद उसका फल है, उसकी प्रजा है।"

बापू कहने लगे, "मैं इसे स्वीकार नहीं करता कि पंच महाभूत-जगत से परे कोई तत्त्व ही नहीं है, परन्तु इतनी बात है कि उस पर तत्त्व का अस्तित्व पांच इन्द्रियों द्वारा सिद्ध नहीं होसकता। वह स्वयप्रमाण है। मनुष्य के आतरिक अनुभव द्वारा उसका साक्षात्कार किया जासकता है। जबतक हम यह चीज मानते हैं तबतक हम यह बात स्वीकार नहीं कर सकते कि मनुष्य का आचरण और स्वभाव उसके बाह्य वातावरण पर ही निर्भर है।"

मैंने पूछा, "ट्रस्टी बनने पर भी उन लोगों के मन में घमंड तो रह जावेगा न कि हम धनपति हैं, हमने इतना त्याग किया है, और धनहीन उनकी दया और उनका धन दान-रूप में स्वीकार करें तो क्या अपने स्वमान की हानि न करेंगे?"

बापू बोले, "दान का सवाल ही नहीं उठता। ट्रस्ट के ट्रस्टी थोड़े ही ऐसा समझते हैं कि उन्होंने दान किया! मैंने दक्षिण अफ्रीका में अपनी सब जायदाद का ट्रस्ट किया था, मगर न मेरे और न किसी के मन में भी कभी आता था कि मैंने दान किया है।"

मैंने कहा, "मगर आज हमारे पास ट्रस्टीशिप का कोई नमूना है तो जमनालाल-जी का है। जमनालालजी की बहुत चीजें सेवा के काम में इस्तेमाल होती थीं। कितनी ही जायदाद उन्होंने दे भी डाली। तो भी उनके मन में यह तो था ही कि वे देते हैं—दान करते हैं।"

बापू कहने लगे, "जमनालालजी ने महा प्रयत्न किया, मगर वह पूरी तरह से ट्रस्टी बन नहीं सके। वह उनकी अपूर्णता का नतीजा था।"

भाई बोले, "एक व्यक्ति जिसके पास इतने साधन रहे, सत्सग रहा, अच्छा अनुकूल वातावरण रहा, उसके लिए अपने-आपको बदलना इतना कठिन सिद्ध हुआ तो सारे-के-सारे पूंजीपति वर्ग का बदलना कितना कठिन होगा?"

बापू कहने लगे, "नहीं, शुरू में रास्ता निकालनेवालों को मुश्किल आती है, मगर बाद में उसका अनुकरण करनेवालों के लिए वही चीज सरल बन जाती है। मैं मानता हूं कि मनुष्य-स्वभाव ऊर्ध्वगामी है। मैं डार्विन के सिद्धांत को नहीं मानता कि मनुष्य बंदर में से निकला है।"

भाई ने कहा, "तो क्या आप यह मानते हैं कि सब जीव अलग-अलग (Separate Creation) बने?"

बापू ने उत्तर दिया, "मैं नहीं कह सकता कि मैं क्या मानता हूं, मगर बंदर से मनुष्य का विकास हुआ है, यह नहीं मानता।"

मैंने कहा, "तो अगर डार्विन का सिद्धांत सही है तो आपके उसको न मानने से हानि होसकती है, क्योंकि गलत जगह से शुरू करने से हमारे नतीजे भी गलत होंगे।"

बापू कहने लगे, "वह होसकता है।

इस पर भाई इसका उभय पक्ष सामने रखकर बोले, "वह तो तब न, जब हम मानें कि साइस ने जो कहा है वह अंतिम वचन है। आज तो साइस का आधार ही बदलरहा है। हम क्या जानते हैं कि अन्त में क्या रह जायेगा, क्या नही ?"

बापू ने कहा, "इसका अर्थ यह होता है कि जबतक हमारी मान्यता गलत सिद्ध नही होती, इस श्रद्धा से चले।"

: २८ :

गोलमेज परिषद् के कुछ संस्मरण

दोपहर और शाम को बापू से भाई गोलमेज परिषद के बारे में कुछ बाते पूछते रहे। हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य के लिए क्या-क्या कोशिशें हुई, कैसे हिन्दू-मुस्लिम को एक-दूसरे से समझौता करने को कहकर दूसरी तरफ से सरकार चुपके से साम्प्रदायिक निर्णय तैयार कर रही थी। एक रोज बापू को मुसलमानो ने अपनी सभा में बुलाया। वहा पर सब बापू की चापलूसी करने लगे, "आपके लिए क्या मुश्किल है साहब, आप श्री जिन्ना की १४ मागें पूरी करदें।" आगाखा ने शुरू किया, "आप बडे महात्मा है। आपके लिए इतना कर देना एक खेल है " वगैरा-वगैरा। बापू ने कहा, "आपको इस तरह मेरी हसी उडाना शोभा नही देता। मै कौन हू ? आपके तो इतने अनुयायी हैं। मेरे पीछे कौन है ? मुझे काग्रेस ने एक काम के लिए भेजा है। दूसरा काम करने का मुझे काग्रेस ने अधिकार नही दिया। इसके लिए डा० अन्सारी की मदद की मुझे जरूरत है।"

शौकतअली भी कहने लगे, "सरकार, आप इतना करदें। आपके लिए यह कौन-सी बात है ?" बापू कहने लगे, "शौकतअली, तुम्हारे लिए यह मुनासिब नही है। तुम आज कहा मेरे पीछे चलते हो ? फिर मै तुम्हारा 'सरकार' कैसे रहा ?" वह कहने लगे, "नही सरकार, आप इतना करदें, फिर हम आपके पीछे ही है।"

बापू ने आगे बात चलाते हुए कहा, "श्री जिन्ना तो पूरे राजनैतिक तरीके से पेश आए। एक बार उन्होंने मुझे अपने निवासस्थान पर बुलाया था। अगीठी के सामने मेरे साथ जमीन पर बैठ गए। कहने लगे, "आप तो बडे महात्मा हैं। ये तो मामूली चीजें हैं। आप इनको मजूर करले।" मैंने कहा, "मै यह सब तबतक नही कर सकता जबतक डा० असारी से पूछ न लू। हिन्दू-मुसलमान के मामले में वही मेरा रहनुमा है। उसके बिना मै एक कदम नही उठा सकता।" उन्हे वह मजूर न था। फिर मजलिस में आए। बेगम शाहनवाज भी वहा थी और वे भी उसी रग में रगी हुई थी। उसी तरह मुझसे कहने लगी, "आप महात्मा है। इतना कर देने में क्या मुश्किल है ?" तब मै रो पडा। मैंने कहा, "और सब तो इस रग में पूरी तरह रगे जाचुके है, मगर औरत होकर तुम भी इसमें हिस्सा लेती हो—यह मुझसे सहन नही होता।" हिन्दू-मुसलमानो के समझौते की बातचीत टूटी

और दूसरे रोज सुबह ही सरकार का साम्प्रदायिक निर्णय हमारे हाथों में आगया। वह रातोंरात थोडे ही तैयार हुआ था। वह तो तैयार पडा ही था। ऊपर से मुह-दिखावे के लिए हम से कहा जाता था कि आपस में फैसला करो, और ऐसा किया जाता था कि आपस में फैसला हो ही न सके। विलायत से आने से पहले मैं लॉयड जार्ज, वाल्डविन आदि से मिला था।"

लॉयड जार्ज से मिलने वापू जब गए थे तब का एक मनोरजक किस्सा उन्होंने कुछ दिन पहले सुनाया था। वापू वहा रात के १२-१ पर गए। एक पालतू बिल्ली, जिसके गले में एक पट्टा पडा था, आकर वापू की गोद में बैठ गई। वापू वहा करीब दो घटे बैठे। सारा समय वापू उसकी पीठ पर हाथ फिराते रहे और वह बैठी गुर्राती रही। लॉयड जार्ज ने कहा, "दो रोज पहले यह बिल्ली एकाएक यहा आपहुची। मैंने सब मित्रो से पूछा कि किसकी है? लेकिन पता नहीं चला।" दूसरे रोज लॉयड जार्ज के यहा से आदमी पूछने आया, "क्या वह बिल्ली आपके साथ आई है?" वापू ने कहा, "नहीं।" बिल्ली वापू के आने के बाद एकाएक गायब होगई थी। बडा प्रयत्न किया गया, परन्तु कुछ पता नहीं चला कि वह कहा चली गई।

वापू कहने लगे, "लॉयड जार्ज ने सब बाते धीरज से सुनीं, पूरी सहानुभूति दिखलाई। कहने लगे, "आपका केस तो सम्पूर्ण है। जब आयरलैण्ड का सवाल चलता था तब सत्ता मेरे हाथ में थी। आयरलैण्ड की माग का विरोध किया, मगर बाद में मैंने देखा कि अब उनके साथ समझौता होना ही चाहिए और वैसा ही किया। यहा भी एक-दो हफ्ते में फैसला होना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। मगर आज मेरे पास सत्ता नहीं। मैं किसी का नुमाइन्दा नहीं हू। मेरी आवाज अरण्यरोदन के समान है। मैं किसी चीज में दखल नहीं देता।"

वापू ने आगे कहा, "वाल्डविन तो मुझसे मिलना ही नहीं चाहता था। सर सैमुएल होर ने उनसे मिलने का प्रबध कर दिया। वह भी लार्ड लिनलियगो की तरह बाह्य शिष्टाचार खूब बरतता था। वाल्डविन के पास तो मैं पद्रह मिनट भी नहीं बैठा। मैंने अपना केस रखने की कोशिश की। बताया कि हम तो ऐसा मानते है कि अग्रेजी राज्य में हिन्द का हमेशा अहित ही रहा है। आप लोगो से हमने कुछ सीखा है, मगर वह आप लोगो के सम्पर्क में आने के कारण। आप राजा न होते और हम आपके सम्पर्क में आते तब भी सीखते—तब शायद ज्यादा सीखते। आपके पास सुन्दर भाषा है। उसमें इतना काम किया गया है, इतना साहित्य लिखा गया है। उसकी हमें कदर है। हम हिन्दुस्तान में सीमित होकर नहीं रहना चाहते। सारे जगत के साथ सम्बध रखना चाहते है, मगर आजाद होकर। हमें स्वतत्रता चाहिए। अग्रेजी भाषा में 'इन्डिपेन्डेन्स' शब्द का जो अर्थ है, वह स्वतत्रता हमें चाहिए, किसी खास तरह की नहीं, क्योकि हम मानते है कि हिन्दुस्तान में अग्रेजी राज बुरी चीज है। वह कहने लगा, "इसमें हमारा मतभेद है। मुझे तो अपनी कौम का और भारत में अपने शासन का गर्व है।" मैंने कहा, "ऐसा है तो मुझे आपसे और

कुछ नहीं कहना ।"

"वेजवुड वेन उसी समय हिन्द-मंत्री के पद से हटा था । उससे मैंने पूछा, "यह अल्पमतवालो के प्रतिनिधि आपने किस तरह चुने है ? मुसलमानो में डा० असारी को कैसे छोडा जासकता था ? यह हुआ कैसे ? मैं समझता था कि हिन्द सरकार ने अन्सारी के रास्ते में रुकावट डाली होगी, क्योकि विलिंगडन से जब मैंने कहा कि अन्सारी को जाना चाहिए तो उसने कहा था कि मैं उन्हे नहीं जाने देसकता ।" मगर वेजवुड वेन ने कहा, "इस बारे में मुझे कबूल करना चाहिए कि भूल मेरी हुई । मुसलमानो ने कहा कि अन्सारी को नहीं बुलाना चाहिए । वह आवेगा तो हम नहीं बैठेंगे । मैंने उनकी बात मानली, मगर अब मैं देखता हू कि वह मेरी भूल थी । लेकिन अब हो क्या सकता है ?" वेजवुड वेन ने भी स्वीकार किया कि मेरा केस सही था । उन्होने मेरे साथ खुलकर बात-चीत की ।

"सर सेमुएल होर से तो बहुत बार मिलता था । इतना मुझे कहना चाहिए कि वह मेरे साथ साफ दिल से बात करता था । यह नहीं था कि मेरे साथ एक बात और दूसरे के साथ दूसरी बात । सबके साथ उसने एक ही बात की । वह साफ कहता था, "सत्ता तो हमारे हाथो में है । तुम लोग मुझे सलाह देसकते हो । उस पर अमल करना न करना हमारे हाथ की बात है । वह तुम्हे हम पर ही छोडना होगा ।" मैंने कहा, "आजादी तो जब आवेगी तब, मगर आज इतना तो हो कि उस आनेवाली आजादी की कुछ झलक आपके कामो में दिखाई दे । कानून चाहे कुछ भी हो, लेकिन प्रथा तो ऐसी बने की हमारे कामो में हमारी सलाह से आप चले । अभी घनश्यामदास और पुरुषोत्तमदास हमारे अर्थ-शास्त्री है । अर्थशास्त्र में वे हमारे नुमाइदे है । हिन्द के अर्थशास्त्र के मामलो में आप उनकी सलाह से चले ।" मगर वह कहने लगा, "यह तो हो नहीं सकता ।"

"सेकी तो बिलकुल अवसरवादी आदमी था । जयकर-सप्रू वगैरा उसकी तारीफ करते थे । मुझे इससे आश्चर्य होता था ।"

भाई कहने लगे, "कई लोग आजतक टीका करते है कि क्यो अकेले आप गोल-मेज परिषद में गए । वे नहीं समझते कि वहा का काम कितना कठिन था । अगर आप अकेले नहीं होते तो सब बिगडने ही वाला था ।"

बापू बोले, "इसमें तो शक ही नहीं । इतना कठिन काम था कि अगर मैं अकेला न गया होता तो हमारी धज्जिया उड गई होतीं । ऐसे मौको पर अकेला आदमी ही काम कर सकता है ।"

भाई कहने लगे, "अल्पसंख्यको के बारे में जब समझौते की बातचीत टूटी तब जेम्स मिल्ज तो करीब रोने जैसा होगया था । कहने लगा, "ये लोग कहते है कि अब हमने गाधी का खात्मा कर दिया है ।" मगर जब आपने साम्प्रदायिक निर्णय पर भाषण दिया तब वह खुश होगया, नाचने लगा और कहने लगा, "अमेरिका से तार आते है कि हम अब समझे ।" और श्वेब्र ने तो यहातक कहा था कि इस्लाम कबूल करने के सिवा बापू ने जो

कुछ उनकी ताकत में था, वह सब उन लोगों को संतोष देने के लिए किया। मगर कुछ फायदा न हुआ। और सच्ची बात तो यह है कि अगर बापू मुसलमान होने को तैयार होजाते तो भी मुझे यकीन नहीं कि वे लोग उन्हें स्वीकार कर लेते।"

: २६ :

चर्खा और ग्रामोद्योग

४ दिसम्बर '४२

सरकार के पत्र का बापू ने उत्तर दिया कि उन्हे पहले भसालीभाई के उपवास का सच्चा कारण जानना चाहिए। जबतक उन्हे यकीन न होजाय कि भसालीभाई का उपवास गलत है, वे उन्हे उपवास छोडने की सलाह नही देसकते। अखबारो की रिपोर्ट सही मानी जावे तो उनके उपवास का खास कारण है। इतने महत्त्व के तार का जवाब सरकार ने दस दिन बाद दिया। इस पर बापू ने अफसोस जाहिर किया।

सुबह घूमते समय चर्खे और ग्रामोद्योग के बारे में चर्चा चल पडी। बापू कहने लगे, "अकेले चर्खे और ग्राम-उद्योगो से शायद हम यह नहीं कर सकेगे। साथ में जमीन का सवाल भी हल करना होगा। जमीन के बारे में मेरा ज्ञान अपूर्ण है। सिर्फ पशु और मनुष्यो की मेहनत से ही हम जमीन में से कितना धन पैदा कर सकते है, यह हिसाब हम आजतक नहीं निकाल सके। मगनलाल होता तो बहुत-कुछ होगया होता। खेती के साथ-ही-साथ गोरक्षा का भी सवाल पडा है। मेरे पास रायबहादुर गगाराम के खत आया करते थे। वह बडा इजीनियर था। उसने मुझसे कहा, "मुझे मशीन दाखिल करने दो। देखोगे कि कितनी जल्दी मै साबरमती को नफा देनेवाली सस्था बना देता हू। मै आपका विशेषज्ञ बनूगा। पीछे मै आपकी शक्ति का उपयोग कर लूगा। मैने ना की, क्योकि मै जानता हू कि पशु और आदमी की मजदूरी से यह काम होसकता है, मगर उसे सिद्ध करने के लिए वह करके बताना चाहिए। सरकार ने बारडोली में मशीन एक हदतक दाखिल की है। मै अपने प्रयोग सब उनसे नहीं करवाना चाहता, मगर मुझे तो यह खुद करके देखना ही है।"

भाई कहने लगे, "यही तो मै आपसे अगले रोज भी कहरहा था कि हमें अपनी आवश्यकताओ का माप निकालना चाहिए और फिर हिसाब लगाना चाहिए कि क्या अकेले मनुष्य और जानवर की मेहनत से वे पूरी होसकेगी या हमें मशीन की मदद लेनी होगी। मशीनें लेनी ही होगी तो हम उन छोटी-छोटी मशीनो को पैदा करेगे जो मजदूरो की जगह न ले, बल्कि उनकी मजदूरी की शक्ति बढाए।"

बापू बोले, "हिसाब एक हदतक मैने लगाया है। सबको पूरा अन्न चाहिए, आधा सेर दूध और फल, साग-भाजी, घी, तेल, खाड—सबको मिलनी चाहिए। कपडा

तो चाहिए ही, साथ ही घर भी अच्छे होने चाहिए। सो इतनी कम-से-कम जरूरतों की मैंने हद बाधी है। यह पूरी होनी चाहिए। अमेरिका की तरह मै हरेक के लिए मोटर पैदा करने का ध्येय नही रखता, सबके पास खाली समय भी चाहिए ताकि वे अभ्यास करके अपनी बुद्धि का विकास कर सके।"

मैंने कहा, "यह तो आपकी कम-से-कम मर्यादा है। अगर बाद में इतनी मजदूरी और समय हमारे पास रहे कि हम मोटर बना सके तो क्यो न बनावे ?"

भाई कहने लगे, "हमें कोई मर्यादा तो रखनी ही पडेगी। हम बडी मशीनें दाखिल करेगे, तो वे पीछे हाथ की मेहनत, छोटे उद्योगो और छोटी मशीनो को खाजाएगी।"

मैंने कहा, "मै तो यह समझी हू कि जीवन के लिए जो चीजें आवश्यक है, जैसे रोटी, कपड़ा, उनके लिए हमें हाथ की मेहनत का ही आश्रय लेना है। बाद में दूसरी चीजें रह जावेगी। उनके लिए मशीन इस्तेमाल करने में कोई हर्ज नही। इतना ही नहीं, बल्कि उसकी आवश्यकता है, जैसे कि डाक्टरी सामान की बात ले, सूक्ष्मदर्शक यंत्र है, शीशे का नाजुक सामान है, यह सब हम हाथ से ही थोडे बना सकते है। उन सबको छोडना अथवा विज्ञान की प्रगति का त्याग करना शक्य नही, योग्य भी नही।"

बापू कहने लगे, "यह ठीक है।" भाई कहने लगे, "नही, हमें इनमें से कई चीजों का त्याग करना ही पडेगा। विज्ञान के विकास से प्रगति ही हुई है, ऐसा भी हम कैसे निश्चय कर सकते हैं? डाक्टरी ने लोगो का स्वास्थ्य सुधारा नही है।"

मैंने कहा. "जहा डाक्टरी ने सच्ची प्रगति की है, वहा उसने कई बीमारियां जड से उखाडदी। लोगो की आयुष्य बढी है, मृत्यु-सख्या कम हुई है।"

भाई कहने लगे, "विज्ञान से जितनी बीमारियो का इलाज हुआ है, अस्वाभाविक जीवन के कारण उनसे अधिक बीमारिया पैदा होगई है।"

शाम को घूमते समय फिर ट्रस्टीशिप पर चर्चा चली। भाई कहने लगे, "धनवान अपनेआप अपने धन का त्याग करदें और समाज के सेवक बन जावे तो अच्छा है, मगर वह तो बिल्ली के गले में घटी बाधने-जैसी बात हुई। बिल्ली के गले में घटी हो तो चूहे अपनेआप बच जावे, मगर सवाल यह कि बाधे कौन ?"

बापू कहने लगे, "ऐसा कुछ है ही नहीं। हमें धनिक वर्ग मिटाना है। उसके लिए धनवानो को मार डालने की आवश्यकता नही। उनके धन, उनकी कला और शक्ति का उपयोग हम लोगो के लिए कर लेते है। यह आसान-से-आसान और सस्ते-से-सस्ते रास्ते है।"

भाई बोले, "इसका अर्थ यह हुआ कि आखिर कारबार चलाने के लिए शासनतत्र को कोई-न-कोई एजेंट चाहिए ही। दूसरो को ढढने के बदले हम उन्हीं धनवानों को लेलेते है। उनसे कहते है कि आजतक तुमने अपने लिए पैसा इकट्ठा किया, उसे सम्भाला। अब वही काम तुम शासनतत्र के लिए करो। फर्क इतना होगा कि अब पैसा तुम्हारे नाम नही जमा होगा, बल्कि शासनतत्र के नाम होगा। तुम्हारे नाम भी हो तो ट्रस्टी की

हैसियत से। तुमको आत्म-रक्षा के साथ-साथ नई समाज-रचना में हिस्सा लेने का अनमोल अवसर मिलता है। इससे तुम्हें संतोष होना चाहिए, नहीं तो तुम्हें मिटना होगा।"

बापू कहने लगे, "यह बात तो ठीक है, लेकिन अहिंसा के बारे में जिनकी अश्रद्धा है, वे इन दलीलों को स्वीकार नहीं कर सकते। है भी ठीक, उनकी जगह मैं भी ऐसा ही करता।"

भाई ने कहा, "यह ठीक है, आज पक्के साम्यवादियों का तो एक छोटा-सा गिरोह है, मगर एक बड़ा गिरोह ऐसे लोगों का है जो समाजवादियों के और हमारे बीच में है। उन्हें अहिंसा में अश्रद्धा नहीं, मगर उनके सामने हम शुरू से अंत-तक एक पूरी तस्वीर नहीं रख सके कि हम किस प्रकार की समाज-रचना करना चाहते है, वह कैसे बनेगी और कैसे उसे सफल बनाने की आशा रखते हैं। इसलिए वे लोग डावा-डोल हैं। यह सवाल-जवाब उनकी मदद के लिए है, जो काम तो करते हैं, मगर कच्ची बुद्धि से।" बापू ने इस दलील के साथ अपनी सहमति बताई।

आज बापू को बहुत कब्ज था। स्नान से पहले उन्होंने एनीमा लिया। वैसे तबीयत ठीक थी।

५ दिसम्बर '४२

आज महादेवभाई को गए १६ हफ्ते पूरे होगए है। जब वक्त जाने लगता है तो बस भागने लगता है। इस जेल में बैठे हुए भी पता नहीं लगता कि कब हफ्ता खतम हो-जाता है। शाम को महादेवभाई की समाधि पर शंखों का ॐ बनाया। करीब सारा समय उसीमें गया। घूमने को दस ही मिनट मिले। मैंने बापू से कहा, "आज सवा छ बजेतक घूमिए।" मगर वे नहीं माने। ऐसा करने से उनका सारा कार्यक्रम बिगड़ता था। वे यंत्रवत समय पर चलते है। कल ही सुबह कहरहे थे, "मै अपनेआपको पूरी तरह नियम में रखता हू। यहा पर नियम की कोई आवश्यकता नहीं, मगर तो भी मेरा सारा कार्यक्रम घड़ी की तरह चलता हैं। अहिंसक व्यक्ति के लिए व्यवस्थित चित्त और व्यवस्थित कार्य-क्रम अत्यावश्यक है। इसके सिवा अहिंसा काम नही कर सकती।"

आज सुबह घूमते समय भाई ने पूछा, "कांग्रेस मिनिस्ट्री के पास तो सत्ता नाममात्र की ही थी। तो भी जितनी थी, उससे हम पूंजीपतियों को तो छू भी नहीं सके। पूरी सत्ता मिल जावेगी तब भी अहिंसक मर्यादा में रहकर हम क्या कर पायगे? यह समझ में नहीं आता, क्योंकि देश में और स्वयं कांग्रेस में धनवानों का स्वार्थ इतना फैला हुआ है कि उन्हें उखाड़ फेंकना बहुत कठिन काम है।"

बापू ने उत्तर दिया, "अहिंसा के द्वारा यह चीज निकाली जासकती है, ऐसी मेरी मान्यता है। शुरू-शुरू में जब सत्याग्रह की लड़ाई यहां छिड़ी, सारे देश में एकदम कैसी जागृति की लहर फैल गई थी। मोतीलालजी-जैसों को भी लगा कि बस सच्ची साहबी त्याग में ही है। उन्हें लगता था कि अब आजादी आरही है, मगर जब नहीं

आई और मै अंकुश रखता ही गया तब वे लोग कुछ पीछे भी गए। दूसरा आनद भवन बना और पहले से भी ज्यादा शानदार बना। उसमें जवाहरलाल भी शामिल हुआ। खादी तो रही, मगर खादी की आत्मा चली गई।

"पीछे काग्रेस के चुनाव के समय लोगो में इतना उत्साह भर आया था कि काग्रेस का चुनाव में ऐसा कहना चाहिए कि कुछ खर्च ही नहीं हुआ। कई लोगो ने मन में शका की थी कि काग्रेस इन चीजो में सफल नहीं होगी। काग्रेस के पास चुनाव लडने के लिए पैसा कहा है, मगर जब लडे तो सब हैरान रह गए। सब जगह जबर्दस्त बहुमत से काग्रेस जीती, और उडीसा-जैसी जगह में, जहा हमारा काम सुव्यवस्थित नहीं था, जोरदार जीत हुई। तो तात्पर्य यह कि हरेक इन्कलाब के साथ एक खास जागृति और उत्साह की लहर आती है, जो बहुत काम कर लेती है। इसके असर के नीचे लोग अपनेआप खुशी से त्याग कर सकते है। आम जनता की जागृति को देखकर उसके दबाव और प्रवाह के सामने पूजीपति खडे नहीं रह सकेगे। साथ ही पूजीपतियो का बल आज काग्रेस सरकार की बन्दूक पर निर्भर है। जब वह बन्दूक नहीं रह जावेगी तो उन्हे जनता की माग पूरी करनी ही पडेगी। वे समझ जावेगे कि अब इसके सिवा और चारा ही नहीं।

"वे अपनेआप त्याग न करे तो दूसरा तरीका गृह-युद्ध का है। मुझे बहुत बार ऐसा लगता है कि जब सच्ची आजादी आवेगी तब हिन्दुस्तान को गृह-युद्ध की मजिल में से गुजरना पडेगा, मगर गृह-युद्ध के डर से थोडे ही हम समाज-सुधार के कामो को रोक सकते है! गृह-युद्ध की नौबत आई और लोगो में अहिसा है जैसा कि मै मानता हूं, तो अराजकता आई तो भी वह नाममात्र को होगी। दस-पद्रह दिन में फिर से देश में अमन-चैन होजावेगा। मगर हम में अहिसा नहीं है तो लम्बे गृह-युद्ध का संकट आसकता है। प्रलय के बाद अगर मेरा कोई प्रतिनिधि जिन्दा रहा तो वह फिर से अहिसा का राज्य खडा करने का प्रयत्न करेगा।"

भाई कहने लगे, "अगर सत्ता हमारे हाथ में आजावे तब तो क्राति का जोश काम कर सकता है। मगर क्राति हमेशा रहनेवाली चीज नहीं है। लोगो का उत्साह हमेशा रहनेवाली चीज नहीं है। लोग फिर से सोजाते है। इसलिए सत्ता अगर एकदम से हमारे हाथ में आवे तब बहुत कुछ काम क्राति का जोश कर लेगा। बाकी का लोकमत कानून द्वारा करवा लेगा, लेकिन अगर सत्ता धीमे-धीमे आवे तो यह चीज काम नहीं दे-सकती। पूजीपति नए वातावरण में अपने पाव धीमे-धीमे जमा लेगे और फिर उन्हें हिलाना कठिन होगा।"

बापू ने कहा, "यह ठीक है। सत्ता धीमे-धीमे आवे तब तो गृह-युद्ध भी आने ही वाला है, ऐसा समझो।"

भाई कहने लगे, " ..इस चीज को क्यो नहीं समझते ?"

बापू बोले, "तुम्हे समझना चाहिए कि ... ने अहिसा को छोड दिया है।"

भाई ने कहा, "अहिसा को नहीं, उन्होने क्राति को भी छोड दिया है।"

बापू कहने लगे, "वह तो होना ही था। हिंसक शान्ति . मानते नहीं है, और अहिंसा को छोडा तो अहिंसक शांति को भी छोडना ही था।"

भाई बोले, "अंग्रेज जावे तो एक तो यह होसकता है कि सत्ता प्रजा के हाथों में आजावे। दूसरे यह होसकता है कि निजाम जैसा कोई भी राजा, जिसने हवाई जहाजों और टैंकों के बनाने की फैक्टरियां खोल रखी है, टीपू सुल्तान की तरह दक्षिण में तो कम-से-कम अपनी सत्ता कायम करने की कोशिश करे ही।"

बापू कहने लगे, "यह सब होसकता है। मुझसे पूछो तो मुझे लगता है कि यद्यपि यह सम्भव है, मगर ऐसा बनेगा नहीं। अंग्रेजों के पास आज कुछ नहीं है। मात्र अपने नाम से वे काम चलारहे हैं। निजाम के अलावा दूसरे राजाओं के पास 'नाम' तो कुछ नहीं, मगर कांग्रेस के पास है। पचास वर्ष से कांग्रेस देश की सेवा कर रही है। जब कांग्रेस वैधानिक नीति पर चलती थी तब भी उसकी नीति खुली थी। पिछले बीस वर्षों से तो कांग्रेस ने अहिंसा की ही नीति अख्तियार की है और जनता को अहिंसा की तालीम दी है। दूसरी ऐसी कोई संस्था नहीं जिसने इतने समय से जनता की ऐसी अनन्य सेवा की हो। सो कांग्रेस के पास नाम है। यह ठीक है कि राजा लोग गुंडों को इकट्ठा करके रखते हैं। उनके द्वारा अपना काम करवाते हैं, मगर समय आने पर गुंडे भी कांग्रेस के साथ खडे होनेवाले हैं।"

सुबह चार बजे बापू ने अण्डी का तेल लिया। कल के एनीमा से भी कब्ज मिटा नहीं था।

६ दिसम्बर '४०

आज सुबह और शाम को घूमते समय फिर वही चर्खे और ग्राम-उद्योग का पुराना सवाल उठा। बापू कहने लगे, "मैं पहले मानता था कि यह जरूर होसकता है। मगर जैसे-जैसे गहरा विचार करता हूं, कठिनाइयां सामने आती हैं। अगर आदमी को मात्र कपडा ही पैदा करना हो तो वह खुद कातकर जरूर कर सकता है, मगर हिसाब लगाने पर पता चला है कि कपडा मनुष्य की आवश्यकताओं का बहुत छोटा हिस्सा है। चर्खे पर दिन भर मेहनत करके मजदूर को उसकी आवश्यकता के लिए काफी पैसे नहीं मिलते। हम मजदूरों का मेहनताना बढाना चाहते हैं, मगर सब जगह बढा नहीं सकते। इस पर से विनोबा तो इस नतीजे पर आया है कि सब अपने हाथ से कातें, तकली पर कातें और अपना कपडा तैयार करें। आज जो हम दूसरों से कतवाते हैं, वह ठीक नहीं है। उससे आगे बढ़कर अब वह तुनाई पर आया है। विनोबा का प्रोग्राम कब पूरा होगा, यह मैं नहीं जानता। सब लोग तुनाई करके तकली द्वारा अपना कपड़ा तैयार करने लगेंगे, इसमें मुझे शक है, लेकिन विनोबा ने अपनी कल्पना के समाज में तकली व तुनाई से वस्त्र-स्वावलम्बन के प्रश्न को हल किया है।

"पहले हम इस नतीजे पर पहुंचे कि अकेले चर्खे से तो काम नहीं होसकता। तब ग्राम-उद्योगों को साथ लिया, मगर उनको साथ लेने पर भी अनेक कठिनाइयां हैं। अब

मैंने सोचा है कि जमीन को साथ रख सके तो काम निपटेगा। जमीन में से कितनी उपज मनुष्य और पशु की मेहनत से निकल सकती है, इसका हिसाब लगाने का रहा । आज सत्ता हमारे हाथ में नहीं है। जमीन को कैसे हाथ में लेना और बाटना होगा, इन प्रश्नों के बारे में हम कुछ नही जानते। इसीलिए मै तो आज जानता नही हू कि अत में मै कहा जाकर खडा हूंगा ।"

भाई बोले, "यह दु ख की बात है कि हिन्दुस्तान में इतने बडे-बडे अर्थ-शास्त्रियो के होते हुए भी उनमें से एक भी अच्छी तरह चर्खे और ग्राम-उद्योग के अर्थ-शास्त्र में गहरा नही उतरा।"

बापू कहने लगे, "उसका कारण है। के टी. शाह को लो। जब वे आए तो ऐसा लगता था कि वे हमें काफी देसकेंगे। वे ग्राम-उद्योग की भावना से उस वक्त भरे थे। एक हदतक तो आगे बढे, मगर पीछे रुक गए। राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण की योजना के समय जवाहरलाल मुझे उसमें खीचना चाहते थे। मगर मै नही खिचा। मैंने देख लिया कि इसमें मेरा स्थान नही है। हमारी चीज का उस योजना के साथ कोई मेल नही था। कुमारप्पा भी अपनेआप भाप गया कि इसमें से कुछ फायदा नही निकलेगा और अलग रहा, मगर सतीश बाबू उसमें गए। सतीश बाबू ने मेहनत की, मगर जो रिपोर्ट लिखी वह मुझे फडवानी पडी। फिर से लिखवाई। मामला वही पर रुक गया। बाकी के अर्थशास्त्रियो में से एक ही था, जिसने हमारी चीज को समझने और समझाने की कोशिश की, मगर वह भी बहुत आगे नही बढ सका। बात यह है कि वे लोग अपने ढाचे को नही छोड सकते। अपने ढाचे में इस नई चीज को ढालना चाहते है। सो प्रगति अपनेआप रुक जाती है। यह चीज मुझे सोच में डालती है। क्या मेरी कल्पना में ही कोई आतरिक दोष है ? क्या चर्खे और ग्राम-उद्योग से सारे देश का काम चलाने, मशीन की जगह हाथ की मेहनत से काम निकालने की कल्पना ही मूर्खता से भरी है ? अगर ऐसा सिद्ध हो तो मै अपनी भूल स्वीकार करलूगा। आज तो मै श्रद्धा से चलरहा हू। हाथ से हम कितनी हदतक अपना काम पूरा कर सकते है, यह देख तो लू। पीछे जो होना होगा, वह होगा। यह सब मै बतारहा हू यह समझाने के लिए कि मै कितना जाग्रत हू और मेरा मन नए विचारो के प्रति कितना खुला है। मगर मैं इन विचारो से अपनी श्रद्धा को डगमगाने नही देता। मै तो इसी श्रद्धा से चलरहा हू कि हाथ की और पशुओ की मेहनत से हम अपना सब आवश्यक काम निकाल सकते है। अगर मै इस श्रद्धा से न चलू तो मै जिन सस्थाओ को चलारहा हू वे भी उखड जावे। मशीनो की मै चिन्ता नही करता। इनकी चिन्ता करनेवाले दूसरे पडे है। मैंने कहा है कि रेल का नाश होजावे तो मेरी आख से एक आसू नही निकलनेवाला, बैलगाडी से काम चलावेगे। मगर आज मै हिन्दुस्तान को यह समझा सकू कि रेल का त्याग करो, इसमें मुझे शक है। सो मै अपना काम किये जाता हू। परिणाम जो आना होगा वह आवेगा।"

भाई ने कहा, "ग्राम-उद्योगो को सफल बनाने के लिए एक खास तरह का

आर्थिक ढाचा चाहिए। एक खास तरह की समाज-रचना चाहिए। उसमें हमें कितनी ही चीजो का त्याग करना होगा। अपनी जरूरतो की मर्यादा बाधनी होगी। आपको जो ग्राम-उद्योगो के सफल होने में शका है वह आज के प्रतिकूल वातावरण में है कि अनुकूल वातावरण में भी यह चीज सफल नहीं होसकती ?"

बापू कहने लगे, "मेरे सामने यह सवाल ही नहीं उठता। मेरे सामने तो प्रतिकूल वातावरण पडा है। इसमें से मुझे रास्ता काटना है। वह मै श्रद्धापूर्वक कर रहा हू।"

भाई बोले, "हम जरा समझले कि हम कहातक जासकते है, तो हमारा रास्ता साफ होजावेगा। रेल को हम निकालना चाहते है तो इसीलिए कि वह माल को खीचकर हमारा शोषण करती है। शीघ्र सफर करने के साधन हम रेल को निकालकर भी रख सकते है, जैसे मोटर, हवाई जहाज। वे सार्वजनिक नहीं है। माल ढोने के लिए नहीं है--इसीलिए उनसे हानि कम-से-कम होगी।"

बापू कहने लगे, "मोटर और हवाई जहाज रखोगे तो अपनी योजना की अपनेआप जड काटोगे मगर जैसे तुम कहते हो ऐसा कुछ हो भी तो आज तो मेरे सामने वह चीज नहीं आती।"

भाई ने कहा, "समुद्र-किनारे हम पवन-चक्की का उपयोग कर सकते है। पर्वतो के इलाको में पन-चक्की का, गरम प्रदेशो में सूर्य-चक्की का उपयोग कर सकते है। ये सब हमारी योजना में आसकते है न ?"

बापू कहने लगे, "हा और नहीं। एक तरफ तो मै पवन-चक्की से बहुत आगे बढ गया हू। मैने कहा, आवश्यकता हो तो अवसर आने पर हम गाव-गाव में बिजली लावेगे। वल्लभभाई बारडोली आश्रम में बिजली लाए। मुझसे कहा था कि मै साबरमती में बिजली दाखिल करनेवाला हू। मैने कहा, करो, तुम्हे छुट्टी है। मै खुद नहीं करूगा। मुझे मेरे रास्ते जानेदो। मुझे १९०८ के साल से दो चीजें विरासत में मिली है। हाथ की मेहनत और पशुओ की मेहनत। मै अपनी श्रद्धा और अपनी चलाई हुई सस्थाओ की श्रद्धा को अटल रखकर उन्ही पर मेहनत करना चाहता हू और कर रहा हू। दिमाग में कई खयाल भरे है, मगर मै उन्हे ऊपर नहीं आने देता। जिन विचारो का आज उपयोग नहीं, उन्हे बाहर निकालकर क्यो अपनेआप को तकलीफ दू और दूसरो की बुद्धि को चक्कर में डालू ?"

भाई बोले, "आपके दिमाग में तो विचार है, मगर दूसरो के दिमाग में नही है। वे समझते है कि आप तो चर्खे से आगे बढना ही नहीं चाहते और इससे आगे विचार किया ही नही जासकता।"

बापू कहने लगे, "भले ऐसा सोचे, मगर काम तो करते है न, वह काफी है।"

भाई ने कहा, "काम करनेवाले तो काम करते है, मगर दूसरे कितने ही ऐसे भी है कि जो हमारी विचार-प्रणाली में दाखिल होना चाहते है, इसे स्वीकार करना चाहते है। अगर उन्हे पता लगे कि आप किस हदतक मौका आने पर आगे जासकते है

तो वे उत्साह से आगे बढें और आपके साथ चले। आज वह निरुत्साह होकर पीछे हट जाते है।"

बापू कहने लगे, "उसमें भी कोई हर्ज नही। हम कुछ कर सकते है, यह सिद्ध होगा तो उनकी निराशा अपनेआप दूर होजावेगी। आज तो मै हाथ की मेहनत और जानवर की मेहनत इन दोनो से क्या शक्य है, इसीमे उतरना चाहता ह। इससे आगे विचार करने की इच्छा ही नही होती।"

रात को ७-२५ पर बापू ने मौन लिया। खुराक में आज बादाम बढाए है। इनसे कब्ज दूर होगा, ऐसा लगता है।

७ दिसम्बर '४२

आज बापू का मौन था। घूमने के समय बाते नही हुई। दोपहर के समय बापू के सोने के लिए बिस्तरा धूप मे लगाया। लकडी की जाली के कारण पूरी धूप तो आती नही, तो भी काम चल गया।

महादेवभाई की समाधि पर परसो सफेद शखो का ॐ बनाया था। मगर किसी बकरी या गाय को लगा होगा कि सफेद मूली का खेत है। कल आकर सब तोड गई। आज शाम को फिर नए सिरे से बनाया। घूमने को दस ही मिनट बचे।

रात में सरोजिनी नायडू को फिर पोस्त का सेक दिया और गरम पानी में उनकी बाह रक्खी। वे कहती है कि इससे उन्हे लाभ हुआ है।

मीराबहन की तबीयत अच्छी है। दो-तीन रोज से उन्होने भैस का दूध छोडकर गाय और बकरी का दूध लेना शुरू कर दिया था। आज कहने लगीं कि गाय का दूध पतला है और बकरी के दूध से बू आती है। घर की गाय हो तो अच्छा दूध मिल सकता है। बकरी का दूध फौरन ही पिया जाय तभी अच्छा होता है। यह तो यहा हो नही सकेगा। फिर भैस का दूध ही उन्हे लेना पडेगा।

८ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय फिर ग्राम-उद्योगो और चर्खेवाले सवाल की चर्चा आगे चली। देश की जरूरतो का माप निकालने के सिलसिले में बापू कहने लगे, "तुम्ही यह हिसाब क्यो न करो? माना कि मुश्किले है, मगर जो आदमी ठीक दृष्टि-बिन्दु से काम करता है, वह उन्हे हल कर लेता है। मार्क्स के सिवा पश्चिम में और बहुत-से अर्थशास्त्री होगए है। मगर मार्क्स ने सारे प्रश्न को नए ढग से देखा। उसने सारे मनुष्य-समाज को एक कुटुम्ब के रूप मे देखा, इसीलिए वह कुछ नई चीज जगत को देसका।"

भाई बोले, "नही, इस काम के लिए तो अर्थशास्त्रियो की टोली चाहिए। सारे हिन्दुस्तान के साधन-सम्पत्ति का हिसाब लगाना आसान बात नही। आप खादी का हिसाब करते-कराते है। उसीमें कितनी उलझनें पैदा होती है। तब इस इतनी बडी चीज का तो कहना ही क्या!"

बापू कहने लगे, "उलझनें आती है तो भी मुझे ऐसा नही लगता कि कोई दूसरा

यह काम मुझसे अच्छा कर लेगा। हिन्दुस्तान की पूरी साधन-सम्पत्ति का हिसाब तो एक नहीं, सौ अर्थशास्त्री भी नहीं लगा सकते। कौन कह सकता है कि हिमालय में से ही कितनी शक्ति हमें मिल सकती है? कोई बताने का दावा करे तो मैं उसका विश्वास न करूं, मगर तुम्हारे जैसा आदमी यदि मन लगाकर काम करे तो कुछ कर सकता है।"

बापू ने बात आगे चलाई, "मैं क्यों किसीके पास जाऊं? फिर यह काम भी मेरा नहीं। मेरा काम तो हाथ और पशुओं की मेहनत से होनेवाले काम का हिसाब निकालना है। जब इसमें असफल होजाऊंगा तब ज्ञात होजाएगा कि हिन्दुस्तान की जरूरतें इस प्रकार पूरी करने की आशा रखना मेरी मूर्खता थी। तब दूसरी चीज का विचार करने का समय आवेगा।"

भाई कहने लगे, "चीन में तो खेती में जानवर भी इस्तेमाल नहीं किये जाते।"

बापू बोले, "हां, दक्षिण अफ्रीका में मैंने भी हाथ से ही खेती करवाई थी। काफी काम हुआ था, मगर मुझे लगता है कि पशु का और आदमी का इतना निकट का संबंध है कि पशु की मदद हमें लेनी चाहिए। इससे पशुओं की रक्षा भी होती है। गो-रक्षा का सवाल तो खेती और ग्राम-उद्योगों के साथ जुड़ा हुआ है ही। मुझे विश्वास है कि पशु और आदमी की मेहनत हिन्दुस्तान की जरूरतें पूरी कर सकती है। मैंने अनेक जन्म लिये हैं और लूंगा, पर इससे मेरे विश्वास पर आंच नहीं आसकती। ऐसे ही ग्राम-उद्योगों और चर्खे के बारे में भी मेरा दृढ़ विश्वास है।"

भाई कहने लगे, "आप मानते हैं कि पहले मनुष्य की जिन्दगी सादी थी, बीच में उसने अनेक रंग देखे, मगर उन सबसे थककर उसने फिर सादी जिन्दगी अख्तियार करली। मगर अंतिम स्थिति पहली स्थिति की पुनरावृत्ति नहीं है। उससे ऊपर की मंजिल है। पहली सादगी अज्ञान की थी, दूसरी ज्ञान की।"

बापू ने कहा, "यह ठीक है।"

: ३० :

भावी समाज रचना का आधार

९ दिसम्बर '४२

आज बापू को यहां आए चार महीने पूरे होगए। बापू कहा करते हैं कि यहां हम छः महीने से अधिक नहीं रहनेवाले हैं। मगर दो महीने में छूट जाने की कोई सूरत नजर नहीं आती। रात को बा कहरही थीं कि अभी छः महीने नहीं, बल्कि एक वर्ष लगेगा।

आज सुबह घूमते समय युद्ध की और युद्ध के बाद क्या होगा इसकी बातें चल-रही थीं। भाई कहरहे थे, "आप मानते हैं कि इस युद्ध का परिणाम अच्छा ही आवेगा, मगर मुझे इसमें शंका है। सामान्य नियम यह है कि जिन देशों की जीत हो वहां क्रांति

फासिज्म की दिशा में और पराजित देशो में क्राति साम्यवाद की ओर होती है।" बापू कहने लगे, "मुझे तो शका होती ही नहीं है कि परिणाम अच्छा आवेगा।" इसके बाद यह चर्चा छिडी कि राजा लोग हर तरह के आदमियो को खरीद लेते है। बापू ने कहा, "इन लोगो ने तो अभ्यास ही इस चीज का किया है कि मनुष्य-स्वभाव कहातक नीचे जासकता है। कहातक ऊपर जासकता है, इसका अभ्यास करने में उनका क्या प्रयोजन था, यह अभ्यास मै कर रहा हू।"

शाम को घूमते समय भाई कहने लगे, "आप इस चीज को नही मानते कि भौतिक वातावरण के असर से मनुष्य के विचार बदलते है। आप मानते है कि मनुष्य के विचारो का वातावरण पर असर पडता है और वह बदलता है। ऐसे ही आप कहते है कि पाचवी शक्ति दैव को हम बाहर नही कर सकते। मार्क्सवादी कहते है कि व्यक्ति भले बदले, मगर वर्ग की चाल नही बदलती। यह इतिहास हमें सिखाता है और ऐतिहासिक प्रक्रिया में दैव भी आजाता है।"

बापू बोले, "नही, मानलो कि हिटलर आज बीमारी से मर जावे तो वह दैवयोग ही होगा न, मगर उसका असर इतिहास पर पडेगा। ऐसे ही मानो कि सब पूजी-पति खतम होजावे या भूचाल आवे और उसमें दफन होजावे तो बडे शहर ही न होगे। तब वर्ग-विग्रह का प्रश्न दूसरा रूप धारण करेगा या नही?"

इसके बाद 'मन पहले कि प्रकृति' इस पर चर्चा हुई। बापू ने कहा, "प्रकृति और पुरुष—दोनो अनादि है। इसलिए कौन पहले था, यह नही कहा जासकता। प्रकृति पुरुष के विचारो को बनाती है, यह मै नही मानता।"

१० दिसम्बर '४२

कल भसालीभाई के बारे में मुशी का लेख था। उसमें उन्होने भसालीभाई की साधुता का वर्णन किया था। साथ ही बताया था कि कैसे एक समय वे नीम के पत्ते खाते थे, एक समय अपना मुह सी लिया था और एक नली से पेट में खुराक पहुचाते थे। मुझे लगा कि यह सब कहना आज अनावश्यक था। इससे भसालीभाई को कोई फायदा नही पहुच सकता था। उल्टा लोगो को लग सकता था कि यह तो कोई पागल है। उनके उपवास की कीमत उससे कम होसकती है। भाई कहते थे कि वह कहना आवश्यक है। बापू से हमने पूछा। वे बोले, "आवश्यक भी होसकता है और अनावश्यक भी।" मै यह नही समझ सकी। मैने पूछा, "आप लिखें तो क्या करे?" वे कहने लगे, "मै एक काल्पनिक चीज के बारे में कुछ कह नही सकता। मुझे भसाली के साथ पत्र-व्यवहार करना चाहिए। उसकी मनोवृत्ति जानकर ही मै लिख सकता हू।" मैने कहा, "अखबारो की बात को सही मानकर आप क्या लिखेंगे?" बापू ने कहा, "मै इस तरह विचार ही नही कर सकता।"

मीराबहन को अपने कमरे में बदबू आती है, इसलिए उन्होने खाने के कमरे के एक हिस्से को खडे पर्दो से अलग कर लिया है।

शाम को घूमते समय भाई बापू से चर्खे के बारे में फिर पूछने लगे। कहने लगे, "क्या आपने अपने पुराने मत में फेरफार किया है?" बापू कहने लगे, "मेरा मन आज भी वही है जो बीस वर्ष पहले था। मगर मेरी कल्पना और प्रयोग आज जगत् को विश्वास दिला सके, इस हदतक वे सिद्ध नहीं हुए। जितना हम कर पाए हैं, उससे मुझे तो पूरी तस्वीर की झाकी मिल ही जाती है। मेरी श्रद्धा उससे पक्की होती है। चर्खे और ग्राम-उद्योगो का उलटा उद्योगीकरण है। उससे तो लोगो का कल्याण हो ही नहीं सकता, यह बात सिद्ध है, मगर चर्खे के द्वारा कल्याण होसकता है, यह जगत् के सामने रख सकूं, इस हदतक सिद्ध नहीं कर पाया। एक ओर पूंजीवादी पद्धति का उद्योगीकरण, दूसरी ओर साम्यवादी पद्धति के उद्योगीकरण का प्रयोग। वह प्रयोग भी आज अधूरा है। उसमें से क्या निकलेगा, यह देखना है। मुझे लगता है कि अन्त में वह भी निष्फल होगा, मगर मैं खुले मन से उसको देखरहा हूं और पूरी श्रद्धा से अपना प्रयोग आगे चलारहा हू। कौन सफल होता है, यह समय आने पर सिद्ध होजावेगा।"

११ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय भाइ बापू से कहने लगे, "दैव पाचवा है तो सही, मगर दैव तो सदा था। वर्गों का स्वभाव भी दैव में आजाना चाहिए। इतिहास हमें सिखाता है कि व्यक्ति का हृदय भले ही पलट जावे, मगर जबतक समाज की आर्थिक रचना न बदलेगी तबतक एक वर्ग की हैसियत से पूजीपति अपने स्वभाव को नहीं छोड सकेंगे।" बापू बोले, "व्यक्ति और वर्ग में भेद करना भूल है। जो एक व्यक्ति कर सकता है, वह सारा समाज कर सकता है।"

भाई ने कहा, "मगर यह तो आपने भी कहा है न कि व्यक्ति की मनोगति (Psychology of the Individual) और समाज की मनोगति (Mass Psychology) में फर्क होता है।" बापू कहने लगे, "वह ठीक है, मगर व्यक्ति समाज की विचार-प्रणाली को बदल सकता है। अहिंसक इन्सान इस चीज को समझ लेगा कि सामाजिक रूप में अहिंसा की क्या शक्ल होगी और अपना काम करने में इस चीज का उपयोग करेगा।"

भाई कहने लगे, "मार्क्सवादी मानते हैं कि भौतिक वातावरण को बदल देने से, उदाहरणार्थ निजी जायदाद रखने की प्रथा को मिटा देने से, पूजीपति वर्ग के विचार अपनेआप बदल जावेगे। मैं समझता हू कि इसमें काफी सत्य भरा है। आपकी वर्धा-शिक्षण-योजना भी क्या ज्ञान के प्रकृतिमूल होने के सिद्धात (Materialistic theory of knowledge) का समर्थन नहीं करती ?"

बापू बोले, "वर्धा-योजना हाथ की मार्फत दिमाग को विकसित करना चाहती है। यह तो अलग बात हुई, मगर मार्क्स के अनुयायी और मार्क्स खुद भी हाथ को शिष्ट-समाज के जीवन में कोई स्थान ही नही देते। उनके पास तो मशीन हाथ का स्थान लेती

हैं। उनके मत से मशीन के बिना मनुष्य-समाज सुखी हो ही नहीं सकता। हाथ पर आधार रखकर तो उसे गुलामी में ही रहना है, यह मार्क्स की मान्यता है। मेरी मान्यता उससे बिलकुल उलटी है और इसी शोध में मैं लगा हुआ हू कि देखू तो सही कि हाथ से क्या-क्या होसकता है।"

भाई कहने लगे, "मार्क्स की शोधें बड़े महत्त्व की हैं। मार्क्स ने समाज की व्याधि का जो निदान किया है, वह सचोट है, मगर उसका जो इलाज बताया है, वह ठीक नहीं। उसके सामने हिंसक बल ही था। अहिंसक बल का उसे पता ही नहीं था। आपने गीताजी को अहिंसा के समर्थन की पुस्तक बताया है, यद्यपि सामान्यतया इससे उल्टा माना जाता है। इसी तरह हम मार्क्स की शोधो का उपयोग अहिंसक समाज-रचना के लिए नही कर सकते ? आखिर तो उसने गरीब का पक्ष लिया है। वह तो अहिंसक काम ही है न ?"

बापू ने कहा, "आज जो दलील हम करते है वह मार्क्सवादियो की बुद्धि पर असर डालने के लिए है, क्योकि मैं देखता हू कि उनमें बहुत अच्छे-अच्छे आदमी भरे है। जैसे जवाहरलाल है, आचार्य नरेन्द्रदेव है, जयप्रकाश है। हम क्यो इन लोगो को खोए ? अगर हम उन्हे खींच सकते है तो खीचें। इसके सिवा इन चर्चाओ का कोई अर्थ ही नहीं है, और मैं कहता हूं, उन लोगो पर तुम मार्क्स के साथ अहिंसा के समन्वय का प्रयत्न करके कोई असर नहीं डाल सकोगे। गीताजी की जो टीका मैंने लिखी है, वह गीता-जी में से हिंसा का पाठ लेनेवालो के लिए नहीं है। जो अहिंसा का पाठ लेते है उनके लिए भी इतनी नही, मगर दोनो के बीच के वर्ग के लिए वह लिखी गई है।"

भाई बोले, "दूसरे मार्क्सवादियो की बात छोड़दें। मैं कहता हू कि मैं भी पक्का मार्क्सवादी हू। जो मार्क्सवादी कहलाते है, उनसे अधिक मैं मार्क्स को मानता हू। मगर मैं देखता हू कि मार्क्सवाद को हम पूरा-पूरा सफल बना सके तो भी मुझे उससे सतोष नहीं होगा। मैं तो देखना चाहता हू कि मार्क्स ने जो बताया है, उसे हम कहातक अपने ढाचे में डालकर उसका उपयोग कर सकते है।"

बापू कहने लगे, "मैं मार्क्स को इस तरह नही देखता। मैं यह भी नही मानता कि उसने बिलकुल कुछ नया दिया है। उसके पहले रस्किन ने भी वही काम किया। मार्क्स और रस्किन की विशेषता यह है कि उन्होने सारी मानव-जाति को अपने सामने रखा। वे वर्ग की कैद से निकल गये और गरीबो का पक्ष लिया। इसलिए मार्क्स का समाज-व्यथा का पृथक्करण पुराने अर्थशास्त्रियो के मुकाबले में इतना तेजस्वी बना, मगर तुम मुझे बताओ तो सही कि मार्क्स की कौन-सी बात तुम्हे इतना मुग्ध करती है ?"

भाई बोले, "मार्क्स ने समाज की व्याधि के जो निदान किये है उनमें और मार्क्स से पहले जो निदान किये गये थे, उनमें उतना ही फर्क है जितना कि जरगरी (Alchemy) और रसायनशास्त्र (Chemistry) में। उसने स्पष्ट रूप से बताया है कि आर्थिक वातावरण हमारे जीवन के हर पहलू—कला, साहित्य, कानून, नीति, यहातक कि धर्म, को भी किस प्रकार ढालता है और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद

(Dialectical Materialism) की क्रिया द्वारा कैसे समाज का विकास होता है। एक तरह से रस्किन ने भी यही काम किया है—उसने भी गरीबों का पक्ष लिया। मैं मार्क्स को रस्किन का पूरक मानता हू। युद्ध की क्रिया को ही लीजिए। उसके लिए अनेक जादू-टोने के-से उपचार बताए जाते थे। मगर युद्धों की जड में जो आर्थिक कारण प्रविष्ट है, उसे कोई नहीं देखता था। 'सम्पत्ति या शान्ति'* (Property or Peace) का हमें आगे स्पष्ट ज्ञान ही नहीं था। हम इनमें अब परस्पर स्पष्टत वैर देखते है। साम्राज्यवाद पूजीवाद का अनिवार्य फल है, यह मार्क्स ने हमें दिखाया है।"

बापू कहने लगे, "मैं इस तरह आर्थिक उलझनो को सब पापो का मूल नही मानता और युद्ध का कारण आर्थिक उलझनें है, यह कहना भी ठीक नहीं है। गत युद्ध का क्या कारण था ? निकम्मे कारण थे। इस दफा जब युद्ध छिडा तो चैम्बरलेन प्रधान मत्री था। वह युद्ध को टालने का प्रयत्न कर रहा था। एक रात मे वह क्यो बदल गया ? उसे डर लगा होगा कि अब युद्ध को टालने से अपनी पार्टी का साथ खोना पडेगा। मै मानता हू कि उसकी जगह कोई अच्छा राजनीतिज्ञ होता तो युद्ध टल जाता। मैंने तो अग्रेजो को कहा ही है कि उन्हे क्या करना चाहिए और हेलन क्या ट्राय के युद्ध का कारण नहीं थी ? दूर क्यो जावे। राजपूत-युद्ध तो आधुनिक इतिहास में आजाते है। उनका कारण आर्थिक कदापि नहीं था।"

भाई बोले, "किसी एक युद्ध का कारण आर्थिक भले न हो मगर पूजीवादी समाज में जो लाक्षणिक युद्ध होते है उनको ले तो उनकी जड में आर्थिक कारण मिलेगा। कुछ भी हो, हम मार्क्स के निदान से लाभ उठाकर उसकी दवा छोडकर उन्हीं रोगो की दवा अहिसक उपायो से करने की पद्धति क्यो नही अख्तियार कर सकते ? मार्क्स के सामने अहिंसक बल रहता तो शायद वह भी यही करता।"

बापू ने कहा, "ये तो तुम्हारे मार्क्स के बारे में मौलिक विचार हुए। तुम जो कुछ मानते या समझते हो उसे लिख डालो।"

वापस लौटते समय भाई कहने लगे, "आपने तो भरी सभा में १२४ वर्षतक जिन्दा रहने का वचन देदिया है न ! उस पर आपको कायम रहना होगा। अगर आप ऐसा करे तो ट्रस्टीशिप की आपकी बात सच सिद्ध होगी, नहीं तो हवा में उड जायगी।"

आज दो दिन के बाद बाजार खुला। रघुनाथ सामान लेने गया। वह दो दिन बाजार नही गया तो ऐसा महसूस करता था, मानो किसीने उसे पिंजरे में बद कर दिया हो। खबर लाया कि बिस्कुट नही मिल सकते। आटा नहीं है। थोडे दिनो में डबल रोटी भी आनी बद होजाएगी।

---

* अंग्रेजी लेखक ब्रेलसफोर्ड की एक पुस्तक का शीर्षक।

शाम को घूमते समय भाई कौशिक आख्यान की बात करने लगे कि कैसे एक कसाई केवल माता-पिता की सेवा के लिए ही कसाई का धधा करता था। दरअसल वह ज्ञानी था। तब मैंने दोस्तोवस्की के 'क्राइम ऐंड पनिशमेण्ट' ('अपराध और दण्ड') को लेकर कहा कि कैसे सोनिया नाम की एक लडकी अपनी सौतेली मा के बच्चो और शराबी पिता के भरण-पोषण के लिए वेश्या का धधा करती है। मगर उसकी आत्मा अलिप्त रहती है। बापू इस पर कहने लगे, "उपन्यासो को छोडो। जापान में आज यह सब होरहा है।" भाई तब फादर सर्जीयस की टाल्स्टाय-कथा पर आए और बताया कि कैसे वर्षो की तपस्या के बाद उसे अपनी तपश्चर्या और पवित्रता का घमण्ड होता है और उसका पतन होता है। फिर उसे प्रेरणा होती है कि एक औरत के पास जाओ और नम्रता सीखो। वह दिन-रात अपने बच्चो की और शराबी पति की सेवा करतीहै, मगर उसे खयालतक नही आता कि वह त्याग कर रही है।

इससे ताईस (Thais)* की बात निकली कि कैसे आध्यात्मिक अभिमान वहा भी पतन का मूल बनता है। बापू कहने लगे, "यह तो है ही। घमण्ड आया और सारी मेहनत बेकार गई।" भाई बोले, "मैंने कही पर आपका वाक्य देखा है। वह कभी नही भूलता। 'हजारो वर्ष की अखण्ड साधना तथा लाखो वर्षो की अखड तपश्चर्या को एक क्षण का आध्यात्मिक अभिमान नष्ट कर देता है।'"

चीर-फाड की बाते होती रही। भाई कहने लगे—डा० शाह कहते थे कि पता नही, लोग हिरन का शिकार कैसे करते है। उसकी आखो में तो इतनी करुणा होती है कि देखातक नही जाता। इसी तरह घायल पक्षी की बात है।

बापू कहने लगे कि छुटपन में वे डाक्टर होना चाहते थे, मगर पिताजी का विरोध था और मा का भी। पिता तो मर गए, मगर मा के कारण उन्होंने डाक्टरी छोड-कर बैरिस्टरी ली। बाद में जब बैरिस्टर होने के बाद १९०६ में विलायत गये तब उन्होंने फिर डाक्टरी सीखने का विचार किया। पता चला कि चीर-फाड के बिना वह हो नहीं सकता। सो छोड दिया। डाक्टरी सीखनेवाली दो छात्राओ ने भी चीर-फाड के कारण ही कॉलेज छोड दिया था। उस बारे में एक मुकदमा चला था। बापू ने वह सब पढा था। उसकी बात बताते रहे। बापू एक समय डाक्टर होने की इतनी आकाक्षा रखते थे, यह मुझे डाक्टरी के धधे के लिए गर्व की बात लगी।

रात को सोने के समय बापू का रक्त-चाप बढ जाता है। आज से विचार किया कि प्रार्थना के बाद वे मौन ले और इसका असर देखा जावे। आज तो मौन ठीक नही चल पाया। आशा है कि कल से ठीक चलेगा।

१२ दिसम्बर '४२

आज शनिवार है। महादेवभाई को गये अठारह हफ्ते पूरे हुए। सरोजिनी नायडू

---

* अनातोले फ्रास का उपन्यास

सुबह समाधि पर आईं। बापू ने कहलाया था कि न आवे, क्योंकि उनकी तबीयत अच्छी नहीं रहती। मगर वे कहने लगीं, "नहीं, मुझे आना ही है, नहीं तो मुझे लगेगा कि मैंने अपना फर्ज अदा नहीं किया।"

क्रासवर्ड प्रतियोगिता (Crossword Puzzle) के बारे में बापू कहने लगे, "यह एक तरह का जुआ है। बिना मेहनत पैसे बटोरने के लिए ही यह आडंबर है। इसमें से खूब लोग पैसे कमाते हैं।"

इस पर बीमा और जुए की बाबत भाई ने कहा, "बीमा और जुए में फर्क यह है कि बीमा अनिश्चित को निश्चित और जुआ निश्चित को अनिश्चित बनाता है।" बापू से उन्होंने पूछा, "आप क्या समझते हैं कि राष्ट्रीय सरकार अगर राष्ट्रीय बीमा को सर्वव्यापी और अनिवार्य करदे तो आप उसका समर्थन करेंगे? वृद्धावस्था का बीमा, प्रसूतिकाल और रुग्णावस्था के संबंध में सहायता (Maternity and sickness benefits), इस प्रकार के कार्य अच्छे हैं?"

बापू कहने लगे, "अनिवार्य बीमा करने की बजाय सरकार इसके लिए मुफ्त में ही व्यवस्था करे तो मुझे उज्र नहीं होगा। आज काम करनेवालों को तो पता भी नहीं चलता कि सरकार अपनेआप उनकी तनखाह में से कुछ काटकर उन्हें प्रॉविडेण्ट फंड का लाभ देती है। वह करने जैसी चीज होसकती है, लेकिन सोचने की है।" भाई बोले, "रूस के बारे में और चाहे जो कहा जाय, पर इतना तो अवश्य है कि कितनी ही चीजें रूस ने ऐसी कर दिखाईं, जिनकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि कब हम गरीबों को देसकेंगे। सबके लिए खाना-पहनना, डाक्टरी सहायता, वृद्धावस्था में पेन्शन, प्रसूतिकाल में सरकारी सहायता तथा अन्य कितने ही सुधार रूसियों ने तेजी से कर दिखाए है।"

बापू कहने लगे, "हां, वह तो ठीक है, मगर मैं तो देख रहा हूं कि यह चलेगा कितने दिन? सामान्य नियम है कि जो चीज तेजी से आती है वह तेजी से चली भी जाती है।"

भाई ने पूछा, "आप जिस तरह की समाज-रचना करना चाहते हैं, वह बाकी जगह दूसरे ढंग से चले तब भी टिकी रह सकती है या कि आप यह मानते हैं कि जगत को हम उस प्रकार का न बना लेंगे तो जगत हमें हजम कर जावेगा?"

बापू कहने लगे, "दोनों बातें संभव हैं। हम इस प्रयोग में सफल होने पर उसे अपने यहां चला सकेंगे। रूस को देखो। उसने विरोधी जगत में नए समाज की रचना कर दिखाई है न।"

भाई ने कहा, "रूस का प्रयोग अधूरा है। उसका कहना है कि शेष जगत के साम्यवादी न बनने के कारण उसका प्रयोग अधूरा है। वह सम्पूर्ण जगत को साम्यवादी बनाने का ध्येय रखता है।"

बापू बोले, "जो हो, रूस का भी युद्ध के बाद क्या बचता है यह देखना

है। परन्तु मै तो आज यह देखता हूं कि जगत में जो सभ्यता कायम हुई है, उसका नाश होरहा है। वह चल नहीं सकती। मेरा प्रयोग उस प्रपच में से निकलने का एक रास्ता दिखाता है, मगर इस प्रयोग को अभी हम पूरी तरह आजमा नहीं सके। दूसरे देशो में भी मेरी जो कीमत है वह इसी कारण कि वे देखते है कि मेरे पास कुछ नई चीज है। वे हमारी ओर आंख लगाकर बैठे है। अगर हम अपना प्रयोग सफल कर दिखाए तो वे अपने-आप इसे अपनावेगे।"

भाई कहने लगे, "रूस ने उद्योगीकरण के आधार पर अपना नया समाज खडा किया है। उसे देखकर दूसरो के मुह में पानी आया। मगर हम सादी जिन्दगी के आधार पर अपना नया समाज खड़ा करे तो भी हमारे प्राकृतिक धन पर दूसरे क्या नहीं ललचाएगे? वे यह भी कह सकते है कि तुम्हे जिस चीज की जरूरत नहीं, जिसका तुम उद्योगीकरण द्वारा उपयोग नहीं करते हो, उसको हमें इस्तेमाल करनेदो और इस प्रकार अंत में वे हमें हजम कर सकते है। इस भय से बचने का आपकी सम्मति में क्या उपाय है?"

बापू ने कहा, "जब ऐसी परिस्थिति पैदा होगी तब इसके बारे में हम विचार कर सकेगे। आज से कल्पना के आधार पर वह नहीं किया जासकता।"

रात को बापू ने प्रार्थना के बाद मौन लेकर कुछ काम किया। भाई का लिखा हुआ सुधारने की दृष्टि से पढा। पढने के बाद रक्तचाप बढ गया, सोने के समय उतर गया। हर रोज काम के बाद रक्तचाप रहता था। बाद में बापू बातें किया करते थे। सोने के समय रक्तचाप बढ़ जाता था। इसका अर्थ यह निकलता है कि प्रार्थना के बाद बापू को बहुत मगज-पच्ची के काम में अथवा किसी चर्चा में नहीं पडना चाहिए।

: ३१ :

सत्ता और अहिंसा

१३ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू से भाई ने पूछा, "आप कहते है कि सत्ता लोगो के हाथ में आजावेगी तो ट्रस्टीशिप को हम कानूनन दाखिल कर देंगे। हमें यह काम लोकमत और प्रजातत्र के द्वारा करना होगा। क्या इसका अर्थ यह हुआ कि ट्रस्टीशिप का सिद्धात हम उसी दर्जेतक अमल में लासकेगे जहातक हम पूजीपतियो को इसके लिए तैयार कर सकेगे? क्या इसका मतलब यह है कि आर्थिक सुधार किश्तो के रूप में आवेगे? इसके द्वारा हम जनता को उस तरह उत्साहित न कर सकेगे जिस तरह रूसियो ने निजी मिल्कियत की प्रथा को एकदम मिटाकर किया है। इसीलिए तो एकसत्तावाद (Dictatorship) की आवश्यकता मानी गई। सुधारक जनतन्त्रवादी नहीं होसकता। सवाल यह है कि

हम निजी मिल्कियत की पद्धति को रखकर सामाजिक अन्याय को जिंदा रहने देंगे या एकसत्तावाद का कडुवा घूंट भरकर उसकी जड़ निकाल देंगे ?

"अगर अहिंसा द्वारा, जैसा कि आपने कहा था, हम प्राण की आहुति भी माग सकते हैं तो पूंजीपतियो से निजी मिल्कियत के अधिकार को ही क्यो नहीं एकदम उन्वा देते ? हम उन्हें नए तत्र में सम्मानित स्थान दें, परन्तु पूंजीपति की हैसियत में नहीं, प्रतिभासम्पन्न समाज-सेवी की हैसियत में। क्या अहिंसा की शक्ति की कोई मर्यादा है ?

"आप मानते हैं कि सत्ता हमारे हाथ में किश्तो में आवे तो क्रांतिमूलक जोश मर जावेगा। परिणाम-स्वरूप हम बड़ा भारी परिवर्तन आसानी से नहीं कर पावेंगे। यही बात क्या आर्थिक क्षेत्र में भी लागू नहीं होती ?"

बापू कहने लगे, "रूस में पूंजीपतियो के जाने से जनता की आमदनी बढ़ी। इससे उनका उत्साह बढ़ा। हमारे यहा भी आर्थिक सुधार से नीचे मजदूरो की आमदनी तो बढ़ेगी ही। रूस में तो जनता को पूंजीवादी वर्ग की सम्पत्ति पर ही अधिकार मिला, पर यहा तो सम्पत्ति के साथ उनकी बुद्धि, अनुभव और कार्य-कुशलता, सब उनको मिला। यह तो उससे भी बड़ी क्रांति की बात हुई। पूंजीपतियो ने वर्षो से धन-उपाजन की कला सीखी है। वह कला जब जनता की सेवा में लगाई जावेगी तो जनता की आर्थिक स्थिति तेज़ी से सुधरेगी। जबतक हमारे पास सत्ता नहीं तबतक तो हम जितना पूंजीपति वर्ग को समझा सके उतना ही उनसे करवा सकते हैं, मगर जब सत्ता हमारे हाथ में आजाती है तब भी जितने के लिए लोग तैयार हो उतना ही सुधार हम कानून की मार्फत भी कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर आज सफाई के कानूनो पर कौन अमल करता है ? जनता तो उन कानूनो के लिए तैयार नहीं है।"

मैंने पूछा, "तो तैयारी पूंजीपतियो की होनी चाहिए या जनता की ? जनता तो तैयार है ही। रहे पूंजीपति, सो वे अपनी पूंजी छोड़ने को क्यो तैयार होगे ?"

बापू कहने लगे, "दोनो की तैयारी होनी चाहिए। पूंजीपति भी स्वय ही समझदारी के साथ त्याग के लिए तैयार होसकते हैं और नहीं तो उन्हें लोकमत के सामने झुकना पड़ेगा। आज लोकमत यहातक सगठित नहीं हुआ है।"

भाई ने कहा, "सत्ता लोगो के हाथ में आवे, इसका अर्थ क्या ? सत्ता का अर्थ क्या ?"

बापू बोले, "वोटिंग की ताकत। इतना व्यापक वोट लोगो के पास होगा कि वे बहुमत में होकर जो चाहेंगे करवा लेंगे। मिसाल के तौर पर वे चाहेंगे तो कानून भी बनवा सकेंगे।"

भाई कहने लगे, "वह सत्ता लोगो के हाथ में आवे किस तरह ? मार्क्स के अनुयायी कहते हैं कि आजकल का पार्लमेण्टरी तरीका इस चीज के लिए निकम्मा है।"

बापू बोले, "इसकी तालीम लोगो को बीस वर्ष से मिलरही है। हमारा शस्त्र है अहिंसक असहयोग। यह शस्त्र बीस वर्ष से घड़ा जारहा है।"

भाई कहने लगे, "पूरी सत्ता हमारे हाथ में यानी जनता के हाथ में आवे तब तो यह सब शक्य है। मगर आज की परिस्थिति में तो ऐसा लगता है कि पूरी सत्ता कांग्रेस के हाथ में शायद न भी आवे। कांग्रेसी मिनिस्ट्रियों को ब्रिटिश सरकार के साथ काम करना पडता था। शायद हमें मुस्लिम लीग के साथ सत्ता बांटनी पड़े। यह भी होसकता है कि हमारे हाथ में सत्ता आवे ही नहीं।"

बापू ने कहा, "हम इस सवाल में आज न उतरें कि सत्ता लोगों के हाथ में आ-सकती है या नहीं। मैं मानता हूं कि हमारे यहां ऐसा प्रजातंत्र पैदा होगा जिसमें पूरी सत्ता लोगों के हाथ में ही होगी, मगर वह मेरी भूल होसकती है। आज हम दलील की खातिर यह मानलें कि ऐसा राजतंत्र पैदा होगा। इसके बाद वह किस तरह काम करेगा— इसका हमें विचार करना है।"

भाई कहने लगे, "साम्यवादी कहते हैं कि हम आपकी सब बातें समझते हैं, मगर जब सत्ता छीनने का विचार करते हैं तब समझ में नहीं आता कि अहिंसा के द्वारा सत्ता पर कब्जा कैसे जमाया जासकता है? फिर आपने तो एक बार कहा भी था न कि हो-सकता है कि अहिंसा के द्वारा सत्ता पर कब्जा न लिया जासके!"

बापू ने कहा, "हां, परन्तु शासन-तंत्र से बाहर रहकर अहिंसावादी लोग सत्ता पर असर डाला करें। वह काफी है। मानो कि सत्ता विरोधियों के हाथ में है तो भी अहिंसा-वादी उनसे काम लेसकते हैं। कांग्रेस में ही अपने से मतभेद रखनेवालों के हाथ में सत्ता है तो भी वही परिणाम लाया जासकता है। यही तो अहिंसा की विशेषता है।"

बापू ने आगे कहा, "और सत्ताधारी को हिंसा का उपयोग करना ही पडता है, यह मैं नहीं मानता।"

भाई कहने लगे, "आखिर राज्य के मूल में ही दण्ड-सत्ता (Coersive Power) का भाव निहित है।"

बापू बोले, "मगर किस तरह की दण्ड-सत्ता? मानो कि एक परिवार में पिता को सत्ता दीजाती है। वह बच्चों को थोड़ी चुभेगी? सत्ता भी फूल की सी होसकती है, जिसका दबाव किसी पर पड़े ही नहीं।

"कांग्रेस की सत्ता लोगों ने खुशी से स्वीकार की। बाद में नरीमैन और खरे-जैसे व्यक्ति भी निकले। और बिहार को लो। वहां के लोगों को समझाने में मुश्किल आती ही नहीं। कांग्रेस की सत्ता किसीको चुभनेवाली थोडे ही है। लोग अपनी खुशी से मुझे सत्ता देते हैं, मेरी मानते हैं। आज न मानना चाहें तो मैं अलग होजाऊंगा। आज मैं बिहार चला जाऊं तो लोग अपनेआप मेरे पीछे चले आवेंगे। उन लोगों में एक तरह की भक्ति और श्रद्धा रही है। यह आम जनता का भाव रहा है। इसीलिए धनिक वर्ग भी उसी तरह से चलता है। खिलाफत के जमाने में कांग्रेस की अथवा मेरी सत्ता किसको चुभती थी? अली भाइयों को क्या इसका तनिक भी बोझ लगता था? इसीसे तो मैं उनका 'सरकार' बना न? ऐसी ही राजतंत्र की सत्ता भी होसकती है।"

भाई कहने लगे, "उसके लिए बड़ी उग्र तपश्चर्या चाहिए। भागवत के एकादश स्कन्ध में समाज का जिसे कानून बनानेवाला बनना है उसके लिए तैयारी का वर्णन है। उसे सारे कौटुम्बिक सम्बन्ध तोड़कर वानप्रस्थी बनना है, भयङ्कर कष्ट उठाकर शरीर को शून्यवत् बनाना है, फिर सन्यास लेकर राग-द्वेष-रहित बनना है। मान, अपमान, स्तुति और निन्दा में समभाव रखकर अनिकेत और मौनी बनना है। यदि शरीर इतना कष्ट न सहन कर सके तो उसे अग्नि में जला देने का व्रत लेना है। तब ऐसा सन्यासी सत्ता का अधिकारी होगा। स्वार्थ जैसी चीज वह जानता ही नहीं है। उसका कहा कोई टाल ही नहीं सकता। मतलब यह कि सत्ता का सच्चा अधिकारी पैदा होना चाहिए। पीछे सत्ता अपनेआप आवेगी और वह किसीको चुभेगी भी नहीं। किसीको तपश्चर्या का चित्र डरावना लगे तो मैं कहूंगा कि हिंसा-पथ पर क्या कम कुर्बानी की आवश्यकता है? रूस को देखिए। बर्फ जमने की सर्दी से भी ४० डिगरी नीचे की सर्दी में वे लोग आज लड़ रहे हैं। खाना, पीना और सोना सबका त्याग कर रहे हैं। अहिंसा-पथ पर तो शायद इससे कम ही कुर्बानी करनी पड़े।"

बापू बोले, "यह होसकता है, मगर तैयारी उससे ज्यादा कुर्बानी की होनी चाहिए। इस मामले में कोई छोटा रास्ता है ही नहीं, होना चाहिए भी नहीं। यह वर्णन ठीक है। समाज में जागृति आनी चाहिए, मगर सारी जनता को इतना त्याग करने की आवश्यकता नहीं रहती। यदि एक आदमी की भी साधना पूरी होती है तो काम निपट जाता है। मुहम्मद या ईसा रोज-रोज थोड़े पैदा होते है। एक दफा आए और काम शुरू होगया। पीछे लोग अपनी शक्ति के अनुसार उनकी मदद करते रहते है और काम चलता रहता है।"

मैंने पूछा, "तब तो ऐसे आदर्शमय राजतंत्र को ईसा या मुहम्मद जैसा महान् व्यक्ति ही चला सकता है। वह कहां से मिले?"

बापू ने कहा, "तुम विचार करो तो ऐसे सवाल अपनेआप हल होजावेंगे। ईसा ने अपने बारह शिष्य तैयार किये थे। उसके पीछे काम अपनेआप चलने लगा। आदर्शमय प्रजातंत्र को चलाने के लिए हमेशा महान व्यक्ति की आवश्यकता नहीं। लोगों को अपनी ताकत का आभास होना चाहिए। जैसा कि मैंने कहा है, क्यों मानते हो कि सोना-चांदी ही पूंजी है? मजदूरी भी पूंजी है। सोना-चांदी से भी बढ़िया पूंजी है। यह ज्ञान मजदूर वर्ग को होजावे तो काम निबट जाता है। वह होसकेगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता। यही बात अहिंसक प्रजातंत्र पर लागू होती है।"

भाई कहने लगे, "ठीक है, युग-कर्त्ता तो कभी-कभी ही आता है। वह सिलसिला चला देता है। पीछे युग अपनेआप चला करता है। यह भी बात है कि युग का भी अंत होता है। आलसी और स्वार्थी पैदा होजावे तो वे सत्ता को सम्भाल नहीं सकेंगे, खो बैठेंगे, मगर वही चीज हिंसा के आधार पर खड़ी हुई सत्ता पर भी लागू होती है।"

शाम को घूमते समय भाई ने बापू से पूछा, "शासनतंत्र की संज्ञा क्या है?"

बापू कहने लगे, "किसी विशेष शासनतंत्र सज्ञा को पूछो तो मै बता सकता हूं। सामान्य अर्थ तो शासनतत्र का यह है कि वह कानून बनानेवालो और उन पर अमल करानेवालो का समूह ही होता है ।"

भाई अराजकवादियो की बात करने लगे, "वे लोग राज्य को नहीं मानते, मगर समाज-व्यवस्था को मानते है । देखा जाय तो शासनतत्र दरअसल है दण्ड का साधन ही ।"

बापू बोले, "मार्क्स का तो यह कहना है ही कि जब साम्यवाद पूरी तरह सफल होजावेगा तो शासनतत्र का कुछ काम नही रह जावेगा । वह अपनेआप सूख जावेगा। अराजकवादी का तो अर्थ ही यह है कि हरेक आदमी जो चाहे कर सकता है ।"

मैने पूछा, "क्या आप भी मानते है कि आदर्श समाज में शासनतत्र की जरूरत नही रहेगी ? "

बापू कहने लगे, "मै मानता हू कि शासनतत्र तो रहेगा ही, मगर वह शासन-तत्र यही कहो न कि ऋषियो की हकूमत होगी । प्राचीन काल में तो लोग ऋषियो को मानते ही थे न। आधुनिक काल में ऋषि का अर्थ उस व्यक्ति से है जो सबसे अधिक सुशिक्षित, सेवाभावी, सेवा की योग्यता रखनेवाला हो । ऐसा पुरुष अपनेआप सत्ता लेकर नही बैठ जावेगा, मगर लोग स्वय समझ लेगें कि उसके बिना काम नही चलेगा। वे स्वय उसे चुनकर सत्ता उसके हाथ में सौप देंगे ।"

आज दोपहर भसालीभाई की अखबारो में खबर थी। डा०मनु त्रिवेदी की उनके बारे में रिपोर्ट थी। अणे साहब ने उन्हे उपवास छोडने का तार दिया था और कहा था कि वे अपनी जगह से चिमूर के सम्बन्ध में जाच-पडताल कराने की कोशिश कर रहे है। भसालीभाई ने उत्तर दिया था, "आप सफल हो, मगर मै इस तरह उपवास नही छोड सकता । आप आवे और हम चिमूर जाकर लोगो को आश्वासन दें ।" अणे साहब ने फिर तार दिया, "इसका कोई फायदा न होगा, मगर आप उपवास छोडें तो मै आऊ।" भसालीभाई ने उत्तर दिया, "आप आवें, हम साथ जाकर चिमूर के लोगो की फरियाद सुनेंगे । मै उपवास छोडूगा ।"

परिणाम क्या होगा, यह तो ईश्वर ही जानता है। भसालीभाई बच जावे तो बडी बात होगी । डा० मनुभाई लिखते हे, "तबीयत कमजोर बहुत है। उठकर बैठ भी नही सकते । जल्दी ही हालत ऐसी होजावेगी कि उपवास छोडने पर भी वे न बच पाएगे ।"

१४ दिसम्बर '४२

आज सोमवार था । बापू का मौन । उन्होने भाई के एक-दो प्रश्नो का उत्तर लिखा। बाकी के बारे में फिर लिखेंगे। चर्चा नही हुई, मगर भाई घूमते समय कहरहे थे, "हमें चर्खे और ग्राम-उद्योग के प्रयोग के साथ पूर्ण न्याय करना है तो उसके लिए एक ऐसा छोटा-सा इलाका चाहिए कि जहा मिल और उद्योगीकरण का विरोधी प्रभाव न

पहुच सके। तब हमें पता चलेगा कि कहातक हम मशीनो के बिना लोगों की जरूरतें पूरी कर सकते हैं। इन प्रयोगो मे काम न चल पाएगा तो फिर ऐसी छोटी-छोटी मशीनें दाखिल करने का सवाल उठेगा जो घर-घर में रह सके।"

शाम को बापू का रक्तचाप ठीक था, परन्तु सोने के समय कुछ बढ गया।

सुबह भडारी आए थे। बापू स्नानघर में थे। उन्हे नहीं मिल सके। कलकत्ते से सर्पगधा का ऐलकोहॉलिक एक्स्ट्रैक्ट दो औंस आया है। वह भी भडारी साथ लाए थे। मैंने आठ औंस मगाया था।

सुबह बडी ठण्ड थी। बापू की मालिश अगीठी पास रखकर कीगई। सरोजिनी नायडू ने भडारी के साथ बाते कीं और बिजली का एक रेडियेटर भेजने को कहा। उनके अपने घर में सेक की किरणें देने का यत्र था, जो उन्होने अपने कमर के दर्द के लिए मगवाया था। उन्होने वहीं भेज दिया। सरोजिनी नायडू ने ग्रामोफोन मागा था, वह भी आगया।

घूमते समय एक कुत्ता पडा मिला। मीराबहन ने देखा कि उसे चोट आई हुई थी, सो उसके घाव धोकर मरहम लगाया। कुत्ता इतनी अच्छी तरह से वह सब करवारहा था कि क्या कहना! बस फिर तो वह मीराबहन के पीछे-पीछे ही लगडाता फिरता था। रात को सिपाही उसे नीचे लेगये।

भसालीभाई की खबर थी कि श्री मुशी बम्बई से वर्धा गए है। उन्होने भी अणे साहब को तार दिया था, "आप आवे, भसालीभाई का उपवास छुडाने में मेरी मदद की आवश्यकता होगी तो मै भी आजाऊगा। आशा है, हम सफल होगे।" बम्बई से कुछ बहनें भसालीजी के दर्शनार्थ वर्धा गई है।

१५ दिसम्बर '४२

बापू ने दो-तीन दिन से उर्दू का अभ्यास कम कर दिया है। 'आरोग्य की चाबी' लिखने में ज्यादा समय देने लगे हैं। इस महीने में उसे पूरा करना चाहते हैं। रविवार के 'बाम्बे क्रानिकल' में "जोड ईश्वर की ओर लौट आते है" शीर्षक लेख था। उस पर से मीराबहन को विचार आया कि उन्हे पत्र जोड साहब को लिखना चाहिए। सो एक पत्र में उन्होने लिखा—"मैं आप जैसी विद्वान तो नहीं हू, मगर आपके साथ मेरी सहानुभूति है। मैं भी आपकी-सी मानसिक दशा में से गुजर चुकी हू। मुझे हिन्दू दर्शनशास्त्र से शाति मिली है। आप भी अनुकूल वातावरण होने पर हिन्दुस्तान आवे। यहा की नदिया, हिमालय-जैसे पहाड और अन्य प्राकृतिक साधन आपको नया सदेश सुनाएगे। यहा आकर मेरा बाहरी और भीतरी जीवन बदल गया है।"

बापू का रक्तचाप आज बहुत अच्छा था। १४०। ९०। शाम को प्रार्थना के बाद एक घटा काम किया। बाद में शौचादि से निवृत्त होने गए, पर रक्तचाप वैसा ही रहा। कारण का विचार करने लगे। कहने लगे, "आज बहुत दिनो बाद मूली खाई थी। वह कारण होसकता है, मगर उससे अधिक सम्भव यह है कि आज तेरी डायरी पढते

समय मैंने देखा कि मुझे काफी अनावश्यक विचार आया करते हैं तो मैंने मन को समझाया कि अनावश्यक विचार आने ही न पाए। इसका असर रक्तचाप पर पड़ा होगा।"

: ३२ :

विविध चर्चाएं

१६ दिसम्बर '४२

आज बापू ने बताया कि डायरी के बारे में उन्होंने कल जो नोट लिखा था उसका अर्थ क्या था। कहने लगे, "मैंने तुमसे कहा था कि मैं भसाली के बारे में लिख नहीं सकता; क्योंकि मेरे पास पूरी सामग्री नहीं है। वही चीज राजाजी के बारे में लागू होती है। मैं क्या जानूं कि राजाजी के मन में क्या है। वे मेरे परम मित्र हैं। उनकी बुद्धि के लिए मेरे दिल में बहुत मान है। वे इस चीज को इतनी दृढ़ता से कर रहे हैं तो इसमें अवश्य ही कुछ होगा, ऐसा मुझे मानना ही चाहिए। उनकी बात मेरी समझ में नहीं आती तो उनसे पूछूं, उनके साथ लड़ूं, झगड़ूं मगर इस तरह यहां बैठे अखबारों की रिपोर्टें पढ़-पढ़कर मुझे कोई राय नहीं कायम करनी चाहिए। मेरे मन में भी इस बारे में कोई विचार न आवे तो अच्छा। मगर यहां तो अक्सर बोलते-बोलते विचार-मथन (Loud thinking) होता है। तुम लोगों के सामने कहदूं तो कम-से-कम वह लिखा नहीं जाना चाहिए। यह डायरी या तो मेरी जिन्दगी में अथवा मेरे बाद किसी रोज प्रकट होनेवाली है। इसमें काट-छांट होगी, मगर तो भी यह महत्त्व की चीज है। यहां हम आगए, इतने दिन रहे। हमने यहां कैसे समय बिताया, यह जानने की सबको उत्सुकता होसकती है। तो हम उसमें कच्चे और अधूरे विचार न रखें।

"राजाजी सोचते हैं कि इस तरह से वे मुसलमानों से पाकिस्तान की मांग ही छुड़वा देंगे। मुझे उन्होंने कहा कि हम दोनों एक ही चीज चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के टुकड़े न हों। मैं कहता हूं कि उनका तरीक़ा गलत है। वह अहिंसक नहीं है। हम यदि पाकिस्तान को बुरी चीज मानते हैं तो हमें साफ-साफ ऐसा कहना चाहिए। आख़िर मुसलमान भी हमारे भाई हैं। उनमें कोई बुरी बात पैदा होजावे तो हमें उसे छुड़वाना है। उन्हें भी हमें सुधारना है। कल के अखबार में एक मुस्लिम भाई ने लिखा है न कि और चाहे जो हो, अगर पाकिस्तान आया तो मुसलमानों का नाश है। जगत के किसी भी हिस्से में मुसलमान इतने कट्टर नहीं हैं जितने कि यहां। उनके सामने और कहीं भी हिन्दू धर्म की-सी सहिष्णुता नहीं थी; मगर उस सहिष्णुता का यह अर्थ आवे कि वे हिन्दुओं का देश छीनना चाहें तो हिन्दू कह सकते हैं कि इनके प्रति अब सहिष्णुता नहीं रहनी चाहिए। दूसरे देशों ने जो किया वही हम भी करेंगे। वे कहेंगे, आखिर हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है और मुसलमान बाहर से आए, तो कितने? यहीं से ही तो ये लोग मुसलमान हुए। किसीका

लड़का मुसलमान होजावे और भाइयो मे झगड़े कि पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा दो तो वह बेशर्मी की हद हुई। या कोई आदमी मुसलमान होजावे और अपनी औरत से भी कहे कि मेरे साथ तू भी मुसलमान हो जा, नहीं तो तुझे मार डालूंगा, वह भी बेशर्मी है। . को ही लो। वह मुसलमान हुआ था तो इतना ही कर सकता था कि अपनेआप ही को लेकर निकल जावे। मगर सच तो यह है कि मुसलमानो में भी वर्ग-विभाग तो है ही। जिन्हे मुसलमान बनाते है, उन्हें अपने बराबर का नहीं समझते। के साथ भी कई इकरार तो किये, मगर उन्हे पूरा नहीं किया। तो वह भागा और आर्यसमाजी बना। वहा हिन्दू का हिन्दू रहा और मास-शराब लेने की छूट मिली। बस, और क्या चाहिए था! आर्यसमाजी रहकर ही वह मरेगा।'

दिन में बापू ने 'आरोग्य की चाबी' का काफी हिस्सा लिखा।

बा की तबीयत खासी अच्छी है। शाम को बगीचे के एक-दो चक्कर मीराबहन के साथ लगा ही आती है। कौन जाने उन्हे दिल का दौरा कब होजावे। मेरे पास इसकी दवा इस समय नहीं है। कई दफा मगाई है, मगर डा० शाह कहते है कि मिलती ही नहीं।

बापू का रक्तचाप आज कल का-सा तो नहीं था, मगर खासा अच्छा था।

मैंने चर्खा कातने का समय प्रार्थना के बाद से हटाकर दोपहर को रख लिया ताकि रात को बापू के लिखे का अनुवाद कर सकू। बापू का बिस्तर लगाना, बा को दवा वगैरा देना—यह सब पद्रह मिनट लेलेता है। पौन घटा बच जाता है। बा को पहले प्रार्थना के बाद ही दवा का लेआना अच्छा नहीं लगा। पीछे बापू ने समझा दिया तो समझ गई।

१७ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू और भाई इतिहास की किताबो की बाते करते रहे। बापू बताने लगे कि जब बैरिस्टरी पास करके वे विलायत से लौटने लगे तब बहुत निराश थे कि वापस जाकर करेगे क्या! जबान तो खुली ही नहीं थी। हिन्दुस्तानी कानून के बारे में वे कुछ जानते नहीं थे। इसलिए बहुत घबराहट में थे। उन्होने बताया, "वापस आने से पहले मै श्री एस पिन्कट के पास चला गया। वे मद्रास के सिविल सर्विसके आदमी थे। कजरवेटिव पार्टी के थे, मगर भले थे। मैंने उन्हे अपनी उलझन बताई। वे कहने लगे, "तुम्हे चिता करने की आवश्यकता नहीं। वकील का धधा कठिन नहीं है। कानून का खयाल न करो। अपनी सामान्य बुद्धि को इस्तेमाल करो तो तुम्हारा काम चल जावेगा। मनुष्य-स्वभाव पहचानने की योग्यता भी कुछ होनी चाहिए।" इस दृष्टि से उन्होने मुझे श्रीमती सेमल पेनिक (Mrs Semmel Penick) और लवाल (Laval) का मुखमुद्राशास्त्र (Physiognomy) पढने की सलाह दी। लवाल की पुस्तक मिल गई। पहली नहीं मिली। उन्होने के और मेलेसन (Kay and Malleson) की 'सिपाहीविद्रोह का इतिहास' को भी पढने की सलाह दी। यह इतिहास बहुत रसपूर्ण था।"

बापू फिर बताने लगे, "जब विलायत गया तब मैट्रिक कर चुका था। पोरबदर के शासन-प्रबधक के पास मै छात्रवृत्ति मागने गया। उन्होने कहा, "बी० ए० पास करके जाओ तब कुछ समझने लायक होगे। तब तुम्हे छात्रवृत्ति भी दूगा।" मैने कहा, "मैं इतने वर्ष कैसे खोऊ ?" सो छात्रवृत्ति के बगैर ही गया। १६०६ में जब मै दक्षिण अफ्रीका से शिष्टमण्डल लेकर विलायत गया तब वहा जितने प्रसिद्ध आग्ल-भारतीय थे, जो हिन्दुस्तान में आकर काम कर गए थे, सबके पास गया। सबने मदद की। उस समय मै काग्रेस के रग में रगा नही था। इसलिए उन लोगो को मेरा कोई डर नही था। दक्षिण अफ्रीका के विषय में उन्हे कुछ विरोध करने जैसा नही था। ईश्वर ने उस समय काफी लोगो की मदद मुझे दिलाई।"

भाई कहने लगे, "इसके सिवा ब्रिटिश उपनिवेशो में रहनेवालो के प्रति सिविल सर्विसवालो का एक तरह का मुरब्बीपन का भाव होता है कि यह हमारी प्रजा है, जैसे कि जेल में कोई पुराना कर्मचारी मिल जाए तो जो पुराना कैदी पहले उसके साथ रह चुका हो, वह उसका कैदी कहा जाता है, उसे कोई कुछ नही कह सकता।"

दोपहर में एक दु खद घटना होगई। बापू के पैर की मालिश पूरी की तो बापू कहने लगे कि वे सोकर उठेंगे तो मुझे नही जगावेगे, क्योकि क्या पता, मै कब सोऊँ। मैने कहा कि अभी सोजाऊगी तो मान गए। मै भीतर हाथ धोने आई तो भाई के साथ बातो में लग गई। मुझे लगा कि बापू एक घटा सोते है। मै पाच मिनट में जाकर सो-जाऊगी तो काफी है। मगर आज बापू पद्रह मिनट में ही उठ गए। उसी वक्त मै सोने गई। इससे उन्हे कुछ आघात लगा। कहने लगे, "अगर कोई कहकर न करे तो मेरा पारा चढ जाता है। यह चीज मुझसे सहन नही होती।"

मैने कहा, "मगर यह चीज तो इतनी छोटी थी कि मैने उसको 'वचन' का महत्त्व ही नही दिया था, वरना बातो में न लगती।"

बापू कहने लगे, "तो बडी चीज कौनसी होती है ? हमारा स्वभाव ही ऐसा बन जाना चाहिए कि मुह से जो बात निकले, उसे करना ही है, नही तो वह बात मुह से निकले ही न।"

मीराबहन ने आज अपने चाचा एलेक (Alec) को पत्र लिखा। सरोजिनी नायडू को बहुत पसन्द आया।

भाई बापू का खाना तैयार करते थे। नतीजा यह होता था कि उन्हे खुद खाने को बहुत देर होजाती थी। आज से वह काम मैने लेलिया है। बुखार आने से पहले तो मैं ही करती थी, मगर बुखार में क्रम बदला और वैसे ही चलता रहा। आज से फिर पुराना क्रम शुरू होता है।

१८ दिसम्बर '४२

आज सवेरे भाई बापू से पार्क्स (Parks) की पुस्तक 'मार्क्सवाद—एक पोस्टमार्टम' की बाते करते रहे। बापू कहने लगे, "पार्क्स मार्क्स की टीका भले करे, मगर मार्क्स ने बडा

काम किया है, इसमें शक नहीं। उसका समाज-व्यवस्था का निदान ठीक हो या न हो, इतना अवश्य है कि उसने कुचले जानेवाले गरीब वर्ग के लिए कुछ करने की सोची। मार्क्स के अर्थशास्त्र को मैं नहीं मानता। मैं नहीं मानता कि समाज की सभी कठिनाइयों का हल अर्थशास्त्र में है, लेकिन इतना मैं मानता हू कि गरीब कुचले जाते हैं। उनके लिए कुछ करना चाहिए। यह बात मैंने बचपन से देखी है। इसे समझने में मुझे कठिनाई आई ही नहीं। मेरे लिए वह स्वयंसिद्ध-सी चीज रही है। बचपन में ही मैं अपनी मा से दलील करता था—भंगी को छूने से हम क्यों अपवित्र होजाते हैं? उस दिन से मैं भंगियों का बना। मार्क्स ने जो देखा उस पर उसने विचार किया। वह प्रतिभाशाली आदमी था, विद्वान् था। सो प्रतिभाशाली भाषा में अपने विचार लिख सका है।"

भाई बोले, "वह विद्वान् था, साथ ही दार्शनिक और अर्थशास्त्री भी था। इसी कारण वह सफल होसका।"

भाई जल्दी वापस चले गए। बाद में बापू कल शाम की एक घटना की चर्चा मेरे साथ करते रहे। कहने लगे, "अगर हम अपनी घरेलू समस्याओं का हल अहिंसा द्वारा नहीं निकाल सकते तो जगत् में कुछ भी नहीं कर पाएंगे।"

शाम को घूमते समय फिर भाई ने खादी के बारे में सवाल उठाए, "हमारा अर्थ-शास्त्र, हमारी समाज-रचना कैसी हो कि जिससे हम खादी को सफल बना सकें?"

बापू के मन में अभीतक कल शाम की घटना का विचार चलरहा था। कहने लगे, "मुझे अर्थशास्त्र से कुछ नहीं पड़ी है। मैं मानता हू कि कार्यकर्ता यदि योग्य होंगे तो प्रतिकूल वातावरण में भी अपना रास्ता निकाल लेंगे और वह तभी होसकता है जब हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में अहिंसा का इस्तेमाल हो और हमारा जीवन सुव्यवस्थित हो चले। मैं चाहता हू कि हम सब बाकी समय इस चीज की साधना में लगाएं। अगर हम अपनी समस्या हल कर सकते हैं तो जगत् की समस्याओं का हल भी निकाल सकते हैं। उसके सिवा अहिंसा द्वारा हम समाज पर कोई असर नहीं डाल सकते। अगर मैं इस काम में असफल होता हू तो समझूगा कि मैंने अपना दिवाला निकाल दिया है।"

मीराबहन ने त्रिफला छोड़ दिया है। कहती हैं कि त्रिफला से मुझे नुकसान हुआ है। बा ने भी आज त्रिफला नहीं खाया।

शाम को महादेवभाई की समाधि पर नया ॐ बनाया। मोटी मिट्टी की तह में घोंघे गाड़ दिए। ॐ का चित्र कागज पर बनाकर लेगए थे। इससे घोंघे लगाने में कम समय लगा। घूमने के लिए आधा घंटा मिल गया। बा आज कहरही थीं, "मैं रोज अखबार पढ़ती हू। लोग भूखों मररहे हैं। हम क्यों ज्यादा चीजें मंगाते हैं? यहा तो सरकारी आदमी हैं। हुक्म चलाया कि इतना लाओ और उतना ही आगया, भले दूसरे भूखों मरें। जेल से यदि सामान आए तो वहा कैदी भूखों मरते हैं।" मुझे विचार आया कि यदि सब लोग इस चीज का ध्यान रखें तो खुराक-संबंधी आधी उलझन तो एक दिन में सुलझ जावे।

१६ दिसम्बर '४२

आज शनिवार है। महादेवभाई को गए १६ हफ्ते होगए। आदमी जाता है तो पीछे समय दौडता ही जाता है। सुबह समाधि पर सरोजिनी नायडू और मीराबहन आई। ॐ सुन्दर ही दिखता है। मिट्टी का पलस्तर फटने लगा है।

बा ने एक तुलसी का गमला बरामदे में मगवा रखा है। उस पर रोज दिया जलाती है और उसकी पूजा करती है। दशहरे और दिवाली के समय उसकी मगनी-व्याह भी किया था। पौधा अब सूखने लगा है। मीराबहन कहने लगी, "एक दूसरा पौधा भी है। मै वह लेआऊगी।" बापू बोले, "नही, यह ६ फरवरीतक चलेगा। ६ फरवरी हमारी यहा की आखिरी तारीख है। उसके बाद हम यहा रहेंगे तो एक दूसरी ही हालत में रहेगे।" क्या नई परिस्थिति पैदा होगी, यह तो भगवान जानें मगर ऐसी बातो से काफी चिता होजाती है।

गर्मी बढने लगी है और रात को एक या दो शाल ओढने से काम चल जाता है।

आज सरोजिनी नायडू और श्री कटेली के लिए रोटी बनाई। बा ने भी खाई और दोपहर को सोगई---चर्खा रात को काता। कपडे भी नही धोए।

बापू की 'आरोग्य की चाबी' आज पूरी होगई। अब उसे फिर से पढना और उपसहार लिखना बाकी है। इस समय पुस्तक बहुत छोटी है। बापू कहरहे थे, "इस समय मै अपने अनुभव से बाहर गया ही नही हू।"

: ३२ :

झूठे आरोप

२० दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू कहने लगे, "मैने तुम्हारी डायरी के बारे में प्यारेलाल के साथ बात की थी। क्या उसने तुम्हे बताया ? तुम्हारी डायरी पढते-पढते मेरे मन में आया कि इसमें बहुत-सी चीजें ऐसी है जो नही होनी चाहिए। इस डायरी को किसी दिन प्रकट होना है। उस समय कई चीजो का दुरुपयोग होसकता है, जैसे कि व्यक्तियो की टीका। वह टीका करने का मुझे अधिकार नही है। मॉन्टेग्यू ने अपनी डायरी में उन सभी लोगो की टीका की है जिनसे वह मिला था और जिन पर उसकी छाप पडी थी। यह टीका क्या थी, उन सब की हसी थी, उपहास था। मेरी दृष्टि में यह भद्दी चीज है। ऐसा नही होना चाहिए।

"अपनी लडाई की चर्चा जो कुछ भी मै करू, वह भी नही लिखना चाहिए; क्योकि मेरे विचार तो बनरहे है। मै खुद बनरहा हू। तब ऐसे अधूरे विचार लिखने से क्या लाभ ?

"तीसरी चीज है प्यारेलाल के प्रश्न और मेरे उत्तर। वे भी नहीं दिये जाने चाहिए। मेरे विचार वहा भी कई बार पक्के नहीं होते।

"फिर डायरी पढकर जब मैं उस पर अपने दस्तखत देता हू तो वह भी पक्की बन जाती है। मुझे यह ठीक नहीं लगता।"

मैंने कहा, "डायरी पढने के लिए आप ही ने मागी थी। आप जैसा कहें, मैं करने को तैयार हू। कहे तो लिखना बन्द करदू। जो कुछ आपने छोडने को कहा है, उसे छोडकर यहा लिखने को रहा क्या? ऋतु का वर्णन, पक्षियो का बयान भी अच्छा होसकता है, मगर मुझे इसमें रस नहीं। डायरी मैंने आप ही के कहने पर आरम्भ की थी। भाई के आनेतक सक्षिप्त थी। उन्होने विस्तार में लिखने को कहा तो मैंने वैसा किया। आपके विचार भले अधूरे हो, मगर किस तरह उनका विकास हुआ, इसका लेखा रहे तो अच्छा है। छापने की दृष्टि से नहीं, मगर आपके लिए, हमारे लिए। अगर आप यह उचित समझें तो न छापने लायक सामग्री को एक लकीर से और अनावश्यक या गलत सामग्री को अच्छी तरह काट सकते हैं।"

बापू कहने लगे, "तुम दोनो विचार करके मुझे बताना कि क्या करना ठीक होगा। मैंने अपने विचार तुम्हारे सामने रख दिये हैं। उनका प्रभाव तुम दोनो पर क्या हुआ है, यह जानकर ही जो करना होगा, करूगा।"

साढे दस बजे डा शाह आए। दोपहर में भडारी भी आए। बेचारो के लिए इस प्रकार आना-जाना बोझ-सा होजाता है।

अखबारो में बापू के प्रति झूठा प्रचार तो चलता ही है। अग्रेज इतना झूठ कैसे बोल सकते है, यह समझ में नहीं आता।

शाम को बादल आए। पहाडी पर वर्षा हुई होगी, क्योंकि हवा में नमी थी, मगर यहा पानी नहीं बरसा। रात को इतनी गर्मी थी कि मोटी सूती चादर भी ओढना कठिन था।

भाई बापू से कहने लगे, "आरोग्य की किताब पूरी होगई है तो आप आश्रम का इतिहास हाथ में लेले। आपने बहुत पहले ही कहा था कि आश्रम का इतिहास लिखेंगे और जैन धर्म के बारे में भी कुछ-न-कुछ लिखेंगे।"

बापू बोले, "जैन धर्म के बारे में तो रायचन्दभाई के सहयोग से कुछ लिखने का विचार किया था, मगर वह बात बहुत वर्षो से मेरे मन से निकल गई है। मुझे लगता है कि मैं उसका अधिकारी नहीं हू। मुझे जैन धर्म के विषय में ज्ञान ही क्या है? उसके लिए खूब अभ्यास करना चाहिए, जैन शास्त्र पढने चाहिए, दूसरो की टीकाए भी देखनी चाहिए। यह सब देखकर ही मैं उसे उठा सकता हू। आज वह मेरे दम की बात नहीं। आश्रम का इतिहास लिख सकता हू, मगर वह भी ६ फरवरी के बाद। आज मेरा मन घोडे की रफ्तार से चलरहा है। नवीं फरवरी यहा की आखिरी तारीख है। तबतक मैं अपना काम पूरा कर लेना चाहता हू। इसलिए मैं अपनी सब प्रवृत्तियो को समेटरहा हू। 'आरोग्य

की चाबी' पूरी हुई, अब इतने दिन इसके दोहराने के लिए मिलेंगे, यह मुझे अच्छा लगता है। नया शुरू करना तो अगर नवीं फरवरी के बाद ही यहा रहने का हो और मेरी सम्पूर्ण मनोवृत्ति बदल जाय तभी होसकता है।"

मैंने हसी में कहा, "फरवरीतक कुछ होनेवाला नही है। यहीं आराम से पडे होगे।" बापू कहने लगे, "यहा पडे-पडे यदि हमारा एक-एक विचार, एक-एक काम, खाना-पीनातक स्वराज्य के निमित्त हो तो खैर है, भले ही यहा पडे रहे।"

मैंने कहा, "आप फरवरीतक का प्रोग्राम बनाते है तो हमें भी वही करना चाहिए।"

बापू कहने लगे, "आज तो मैं ३१ दिसम्बरतक का ही प्रोग्राम बनारहा हू। ९ फरवरीतक भी मेरा मन नही जाता। तुम्हे भी वही करना चाहिए।"

२१ दिसम्बर '४२

आज सोमवार था। भाई एक दिन मुझसे कहरहे थे कि सोमवार को एक रेखा-चित्र बना दिया करो। आज महादेवभाई की समाधि पर गए तो सामने की पहाडियो पर सूर्य का प्रकाश बादलो से निकलकर सुन्दर छटा दिखारहा था। मैं पेस्टल रग लेकर जा बैठी। आज पहली ही बार पेस्टल हाथ में लिये थे। तस्वीर बनाने मे कुछ समय लगा। सरोजिनी नायडू को तस्वीर पसद आई। उन्होंने वह लेली।

दोपहर में खूब बादल थे। शाम को पानी बरसने लगा। बापू दिन मे अपनी आरोग्यवाली पुस्तक दोहराते रहे। शाम को वे बरामदे में घूमे।

मीराबहन ने वाइसराय को पत्र लिखा है। इसमें सरकार के झूठे आरोपो का, जैसे कि 'गाधी जापानियो के साथ मिला हुआ है' या 'मीराबहन गाधी और जापान के बीच सलाहकार है', उत्तर था। पत्र के साथ उन्होंने उस पत्र की नकल भी भेजी जो उन्होंने उडीसा से बापू को लिखा था। उस पत्र-व्यवहार में उन्होंने जापानी हमले के मौके पर जो प्रश्न उठ सकते है, बापू से पूछे थे। उन्होंने उसका उत्तर दिया था। यह पत्र दैवयोग से मीराबहन के पास यहा था। आज काम आया।

रात को सोने के समय भाई वाइसराय के भाषण के बारे में बात कररहे थे। बापू को वह बहुत खराब लगा था। बापू कहने लगे, "वे मानते है कि अब तो हम जीतने ही वाले है। उनके अपने धन-उपार्जन के साधन मर्यादित है और हमारे अमर्यादित है। उन्हे हिन्दुस्तान पर कब्जा रखना ही है, पहले से भी ज्यादा पक्की तरह। अगर हिन्दुस्तान एक हो तब उन्हे फायदा होसकता है, इसलिए अब वे भौगोलिक ऐक्य की बात करते है और ऐसा कहने में उन्होंने अपने बारे में कई-एक छिद्र रख लिये है।"

भाई कहने लगे, "आप ठीक कहते है, मगर हमें क्या पता कि ईश्वर किन-किन साधनो का उपयोग करके हमारा काम कररहा है। अखड हिन्दुस्तान की बात भले ही किसी हेतु से करे, मगर हिन्दुस्तान के दो टुकडे न हो, यह हम भी चाहते है।"

बापू ने कहा, "वह तो है ही। सत्य, अहिसा और ईश्वर में दिन-प्रतिदिन

मेरी श्रद्धा बढ़ती ही जाती है।"

शाम को वर्षा हुई। भाई के कमरे की छत चूने लगी। ऐसा लगता है कि घर का वह सिरा बाद में बनाया गया है। इसलिए जहा वह मुख्य महल के साथ लगता है, वहा से छत चूने लगी है। कमरा पानी से भर गया। दरी वगैरा उठानी पड़ी।

२२ दिसम्बर '४२

आज दिन भर वर्षा रही। सुबह घूमने के समय पानी बन्द होगया था। भाई देर से सोकर उठे। इसलिए महादेवभाई की समाधि पर से ही वापस चले गए, घूमे नहीं। उन्हे तैयार होना था। बापू बा की बाते करते रहे। पीछे बरसात में निक्कर पहनने की सलाह देते रहे। कीचड में मेरी सलवार के पायचे भर गए थे।

दोपहर को भाई मेरी डायरी देखते रहे। उस बारे में मुझे कुछ हिदायते दीं। शाम को घूमते समय बापू के साथ डायरी की बात हुई। मैंने कहा, "आप देखते जावे। मुझे जो लिखना होगा, वह लिखती रहूगी। आपको जो अनावश्यक लगे, आप काटदें।"

भाई कहने लगे, "आप इसे भाषा और रिपोर्टिंग की दृष्टि से देखें।"

बापू मीराबहन के वाइसरायवाले पत्र को सुधारते रहे। मीराबहन यह नहीं कहना चाहती थीं कि उन्हे एक अग्रेज की हैसियत से यह सब झूठ देखकर दुख होता है, क्योंकि वे अपनेआपको अग्रेज मानती ही नहीं हैं। बापू ने समझाया कि अग्रेज की हैसियत से नहीं लिखना चाहतीं तो उनके पास वाइसराय को लिखने का कोई हक ही नहीं है। अत में मीराबहन ने लिखा, 'अग्रेज माता-पिता के घर जन्म लेने के कारण मुझे यह देखकर दु ख होता है कि अग्रेज सरकार इतना झूठ बोलरही है।'

प्रार्थना के बाद अनुवाद करती रही। पीछे भाई के पास बैठी रही। सोने को खासी देर होगई, दस बज गए। यहा दस बजे देरी लगती है। बाहर तो दस से पहले शायद ही कोई सोता हो!

२३ दिसम्बर '४२

सुबह खूब धुध थी। दिन भर बादल आते-जाते रहे, मगर पानी नहीं बरसा। रात को आकाश खुल गया।

सुबह समाधि से लौटते समय बापू महादेवभाईवाली गीताजी के पन्ने उलट-रहे थे। आखिरी पन्ने पर 'आउज बिल्ला'वाली आयत लिखी हुई थी। पूछने लगे, "ये किसके अक्षर है? महादेव के या प्यारेलाल के?" मैंने बताया कि १ अगस्त को बम्बई से चलते समय महादेवभाई ने भाई को वह आयत लिख देने को कहा था, सो भाई के अक्षर हैं। बापू कहने लगे, "बस छ दिन उसने यह आयत गाई।" फिर थोडा ठहरकर बोले, "लगता ही नहीं है कि महादेव सदा के लिए गया। कल रात को स्वप्न में वह लडकी कहती है, 'महादेवभाई कहा है?' मैं उत्तर देता हू, 'बहन, मैं तो उसे श्मशान में छोड आया हू।' पीछे वह पागल-सी होजाती है। कहती है, 'लाओ महादेवभाई को! उसे वहा क्यो छोड आए?'"

कल और आज बापू ने बिजली के गरम किरण-यत्र से मालिश करवाई; क्योंकि सूर्य का प्रकाश नहीं था। बरामदे में बैठा नहीं जासकता, इसलिए भीतर ही बैठते हैं। बादल होते हैं तो बूदें भीतरतक आने लगती है।

आज मीराबहन के पत्र को बापू ने फिर देखा। एक-दो वाक्य वे बदलना चाहती थीं। एक था—'मैं विश्वास के साथ कह सकती हू।' इसके बदले में वे चाहती थीं—'मैं ऐसा कहने की स्थिति में हू।' बापू ने समझाया कि दूसरा पहले से कम वजनदार है। वे उससे उल्टा मानती थीं। आखिर समझ गईं।

दोपहर को मैं सोमवारवाले रेखाचित्र को सुधारती रही। इससे आज दोपहर के और सब काम छूट गए। प्रार्थना के बाद अनुवाद किया। थोडी डायरी लिखी। सुबह भी प्रार्थना के बाद अनुवाद किया था। इसे इस महीने में पूरा करना चाहती हू।

रात को मीराबहन अपने पत्र की और पुराने पत्रव्यवहार की साफ नकल जो भेजनी है, बापू को देगईं। बापू ने उसे नई फाइल में रखवाया ताकि बिगड न जावे। बापू के सोने के बाद मीराबहन भाई के साथ बैठकर अपने इसी पत्र की नकले सुधारती रहीं।

आज पानी नही बरसा, मगर सर्दी भी नही हुई। इससे लगता है कि शायद पानी फिर आजावे।

२४ दिसम्बर '४२

आज सुबह ६ बजे उठी। बहुत बुरा लगा। सुबह का सारा वक्त बर्बाद होगया।

मीराबहन का वाइसराय के नाम पत्र आगया। उसमें काग्रेस वर्किंग कमेटी पर लगाये गए आरोपो का जवाब भी था। सरोजिनी नायडू ने आपत्ति की कि कमेटी को मीरा का या किसीका सर्टिफिकेट नहीं चाहिए। बापू ने समझाया, "मीराबहन दूसरा नहीं लिख सकती है। उसने पत्र में यह लिखा है कि 'मेरे और काग्रेस के विषय में जो झूठ चलरहा है, उसका मुझे दु ख हुआ है।' बाद में काग्रेस का नाम ही न ले तो उसका अर्थ होजाता है कि मै ही एक भला आदमी हू।" इस बारे में सरोजिनी नायडू की भाई के साथ भी कुछ चर्चा हुई।

सुबह ज्यादा सोई थी। इसलिए दोपहर को नहीं सोई, मगर उस समय काम बहुत कम कर पाई। कोई-न-कोई पास आकर बात करने लगता था। बापू ने बाद में कहा कि दोपहर को साढे बारह बजे से एक बजेतक नियमपूर्वक आख मींचकर बिस्तर पर पडे ही रहना चाहिए।

शाम को खाने के समय भसालीभाई की बात चली। मीराबहन के पास आशा-देवी का पत्र आया था। उन्होंने लिखा था, "बच्चो के शिक्षक का शरीर कमजोर है, मगर मन प्रफुल्लित है। उनके पास जाकर मन खुश होजाता है, शाति मिलती है।" बच्चो के शिक्षक यानी भसालीभाई। बाकी सबके समाचार थे। बापू खुश हुए। आज सुबह ही घूमते समय वे बात कररहे थे, "भसाली की मृत्यु की खबर आवेगी तो मेरा हृदय काप

भले ही उठे, मगर खुशी मे नाचेगा भी। ऐसी सम्पूर्ण अहिंसक मृत्यु आजतक हुई ही नहीं है। भसाली को मैं जानता हू। उसके हृदय में वैरभाव का लेश भी नहीं है। हमारे लोगो में इतना मैल भरा है कि उसे निकालने के लिए कइयो को तो जल मरना होगा।"

२५ दिसम्बर '४२

आज क्रिस्मस का दिन है। कल शाम को बापू मीराबहन से कहरहे थे, "कोई क्रिस्मस का भजन आता हो तो गाओ।" उन्हे कोई याद न था। रघुनाथ आज स्तोत्र सग्रह (Hymn Book) ढूढने गया। आखिर, यरवदा जेल की बडी नर्स से 'मुक्ति फौज स्तोत्र सग्रह' (Salvation Army Hymn) नामक पुस्तक मिली। शाम की प्रार्थना में मीराबहन ने उसमें से एक भजन गाकर सुनाया जिसकी पहली पक्ति थी—"जब गडरिये रात को भेडो के झुड की रखवाली करते है।" (When shephards watch their flock by night)

श्री कटेली और सरोजिनी नायडू के लिए पुलाव पकाया। बा को मेथी की रोटी। उन लोगो ने भी एक-एक रोटी ली। सुबह ११ बजेतक रसोई के काम में रही।

खाने के बाद शाम को सोने के समय मीराबहन ने 'जब मैं अद्भुत सलीब को देखता हू' (When I survey the Wond'rous Cross) गाकर सुनाया। बापू को यह गीत बहुत प्रिय है। मुझसे कहा था कि मैं मीराबहन से उसे सीखलू। मैंने उनसे तीन-चार बार कहा है, मगर वे आजतक सिखा नही पाई।

२६ दिसम्बर '४२

आज बापू मीराबहन से कहरहे थे, "नया वर्ष तो ईसा के जन्म के साथ सबध रखता है। ईसवी साल कहलाता है। तो वह ईसा के जन्म-दिन 'क्रिस्मस डे' से क्यो नही शुरू होता?" वे नहीं जानती थी। कहने लगीं, "हा, नए वर्ष और क्रिस्मस डे के बीच में इतने दिन क्यो रखे गए, सो समझ में नहीं आता। और आश्चर्य है कि आजतक यह प्रश्न हम लोगो के मन में नहीं उठा।"

पीछे बापू 'बाक्सिग डे' का अर्थ पूछने लगे। मीराबहन ने बताया कि 'बाक्स' का अर्थ 'बाक्स' नही, बल्कि 'रुपए-पैसे की भेंट' है जो नौकरो को देते है। दूर के रिश्तेदार जो क्रिस्मस की भेंट नही देते, 'बाक्स' देते है।

दोपहर को इतनी गर्मी थी कि बापू बाहर नहीं बैठ सकते थे। एकाएक तूफान आया। जोर की वर्षा आरम्भ होगई। दरवाजे वगैरा बन्द कर लिये, मगर दस-पद्रह मिनट में ही सब शात होगया। फिर गर्मी शुरू होगई।

भसालीभाई की कोई खबर नही, मगर 'वदे मातरम्' में 'हे देवी अेनी रक्षा करो' नामक प्रार्थना थी। आगे भी दो-चार बार निकली है। स्पष्ट है कि वह भसालीभाई के लिए है। इसका अर्थ यह है कि वे अभीतक है।

आज मीराबहन ने पिछली तरफ से प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाया है। उसमें

महादेवभाई की समाधि भी छोटी-सी दिखाई है, सुदर है।

आज दारला* के गोली से मारे जाने की खबर से सब चकित थे।

: २४ :

उपवास के बादल

२७ दिसम्बर '४२

आज इतवार है। इतवार को फिकर लग जाती कि शाम को बापू का मौन शुरू होगा। बाहर भी मौन चुभता तो है ही, मगर यहा तो बहुत ही बुरा लगने लगता है।

बापू स्नानघर से निकले तो भडारी आए। बेलगाव जेल में कितने ही लोग पेट के दर्द से मर गए है। अखबार में था कि ग्यारह मरे है, मगर दरअसल ज्यादा मरे है। भडारी से पूछा तो कहने लगे कि उनके पास रिपोर्ट नही आई।

आज सबेरे सूर्योदय का दृश्य बहुत सुदर था। मै चित्र बनाने जा बैठी, मगर चद मिनटो मे दृश्य बदल गया। दिन में भी अधिकाश समय चित्र में ही लग गया। शाम को उसे पूरा किया। महादेवभाई की समाधि का और आसपास का दृश्य था। उसमें एक छोटी-सी चिता जलती हुई दिखाई थी। आग वगैरा दिखाने के लिए मीराबहन की मदद ली। सुबह भी आकर वे सलाह देरही थी। चित्र सबको अच्छा लगा, मगर बापू इसे देखकर बहुत विचार में पड गए। घूमने का समय भी होगया था। मैंने अभीतक कुछ भी खाया न था। बापू इस पर नाराज थे कि मै कार्यक्रम के अनुसार नही चली। समाधि पर पहुचे तो कहने लगे, "खाकर नहीं आई न?" मैने कहा, "जाकर खाऊगी।" बोले, "ठीक है, मै कितने दिन का मेहमान हू तुम लोगो को टोकने के लिए!" मै उल्टे पाव वापस खाना खाने आगई। विचार आने लगे, "बापू के इतना गम्भीर होजाने का कारण क्या मेरा समय पर खाना न खाना ही था अथवा उनके मन में और कुछ चलरहा है?"

आजकल रात को मच्छर बहुत होते है। बापू पौने आठ बजे ही उठकर सोने की तैयारी करने लगे। मच्छरो के कारण कुछ काम करना कठिन था, मगर बापू उस समय बडे विचार में पडे दीख पडते थे। मैंने शाम को पूछा, "क्या आज आप बहुत विचार में है?" कहने लगे, "विचार तो हमेशा आते है। आज कुछ और ज्यादा होगे।"

रात में बा की तबीयत ठीक नही रही। छाती में दर्द होआया, नीद अच्छी नहीं आई।

भाई की तबीयत भी अच्छी नही थी। उनके मन में भी क्या जाने क्या-क्या विचार चलरहे थे। रात को प्रार्थना के बाद बाहर खाट पर जाकर पडे थे। बाद में भी बडे चुपचाप-

---

*फ्रेच एडमिरल

से थे। मैंने सोते समय आधा-पौन घंटेतक उनका सिर वगैरा दबाया, मगर जब गई तब-तक सोए नहीं थे। रात में भी शायद नींद अच्छी नहीं आई।

दोपहर को कुछ स्वरतक अनुवाद किया, परन्तु काम अधिक नहीं होपाया।

बापू ने रात को पौने आठ बजे ही मौन लेलिया।

२८ दिसम्बर '४२

आज बापू का मौन था। मुझसे सरकार के साथ का पत्र-व्यवहार मांगा। पीछे वाइसराय के नाम एक पत्र लिखते रहे। रात को पौने आठ बजे मैंने और मीराबहन ने पत्र मांगा। बापू ने टालते हुए कहा, "अब कल सुबह पढना।"

भाई से कहने लगे, "इसमें सबसे ज्यादा बोझ तुम पर पडनेवाला है।" मैं तो कुछ समझी नहीं, मगर भाई कुछ भाप गए-से लगते थे। बापू सोगए। पीछे भाई मुझसे पूछने लगे, "तुम्हारे अन्दाज से बापू कितने दिन का उपवास सहन कर सकते है?" मैंने पूछा, "क्यो? क्या पत्र में ऐसा कुछ है? मीराबहन तो कहती थीं कि जितना उन्होंने पढा है, उसमें तो कोई ऐसी बात नहीं थी।" कहने लगे, "नहीं, यो ही पूछरहा हू।" मैंने कहा, "राजकोट में तो पाचवे रोज तबीयत बिगड गई थी। उसे देखते हुए तो लगता है कि बहुत नहीं चला सकेगे।" भाई पीछे बम्बई काग्रेस महासमिति का और इससे पहले कार्यसमिति का प्रस्ताव लेकर ध्यान-पूर्वक पढरहे थे। सारा-का-सारा वातावरण कुछ भारी-सा लगरहा है। बात-बात में बापू कहने लगे, "पहली तारीख से मैं ईश्वर में लीन होना चाहता हू।" मेरी समझ में कुछ नहीं आया। मगर बापू ईश्वर में लीन होना चाहते हैं तो भले हो, मेरी दृष्टि में तो वे हमेशा ईश्वर में ही लीन रहते हैं—और लीन होना चाहते हैं तो अच्छा है।

दोपहर में थोडा-सा चित्र का काम किया। उसमें जो वृक्ष था, वह बदल दिया।

शाम को मीराबहन ने मुझे वह भजन अच्छी तरह सिखाना आरम्भ किया है। इसमें समय तो लगेगा मगर अच्छा लगेगा।

२९ दिसम्बर '४२

सुबह पौने छ बजे उठी। बापू ने जो पत्र रात को लिखा था, वह पढने के लिए लेनेको आई, मगर भाई पढरहे थे। स्नानादि के बाद आकर पत्र लिया। इतने में बापू उठ गए थे। उनके लिए फल का रस निकाला। पीछे पत्र पढा। उसमें उपवास की बात आ ही गई थी।

जब मैं उठकर आई तब भाई बापू के पत्र के बारे में अपनी टीका लिखरहे थे। घूमते समय बापू ने उनकी एक-एक बात को लेकर उसका उत्तर दिया।

सुबह साढे दस बजे बापू ने भाई से कहा कि सरोजिनी नायडू को भी पत्र पढा देना चाहिए। भाई ने उन्हे यह पढ सुनाया। सुनते-सुनते उनकी आखो में पानी भर आया। कहने लगीं, "पत्र बहुत ही अच्छा है। उसमें बडी करुणा भरी है, दु खी हृदय की पुकार है, मगर पत्र गलत है। बापू के उच्चतम बलिदान का समय अभी नहीं आया।"

दोपहर को बापू ने फिर अपने पत्र के बारे में कई प्रश्नो का उत्तर दिया। मीरा-बहन ने, मैंने और भाई ने कुछ प्रश्न किये। २१ दिन की अवधि के बारे में भी कुछ चर्चा हुई।

बा कहने लगी, "वाइसराय को पत्र लिखें, परन्तु उसमें उपवास की बात न लिखें।"

बापू कहने लगे, "उपवास के बारे में ही तो लिखना चाहता हू, वह कैसे छूट सकता है? जानती हो न कि इससे पहले एक पत्र ऐसा ही लिखकर मैंने उसे फाड डाला था।" फिर कुछ रुककर कहने लगे, "मेरा तो दिन-प्रतिदिन यह विश्वास बढता ही जाता है कि हम सब ईश्वर के हाथो में खिलौने हैं।"

सरोजिनी नायडू कहने लगी, "उपवास की बात करना ठीक नही है। आपको चाहिए कि अपनेआपको ईश्वर में खोदेने का प्रयत्न करे, जिससे आप अपने स्वय से कह सके "हमारा काल उसके हाथ में है जो कहता है कि इस सारी योजना का मैं स्रष्टा हू।*"

रात को प्रार्थना के बाद रक्त-चाप लिया तो २००/११२ था। बापू बा को रामायण समझाकर सोने चल दिये। रात को साढे दस बजे से एक बजेतक लगातार जागते रहे। विचारधारा चलरही थी।

रात को बापू के सोजाने के बाद मीराबहन मुझसे और भाई से आकर कहने लगी, "हम सबका धर्म है कि हम अपने शरीर को अच्छा रखें। अपने स्वास्थ्य को हमें पहला स्थान देना चाहिए। उपवास आये या न आये, कुछ-न-कुछ अवश्य आनेवाला है और हम सब बापू की जो भी थोडी बहुत मदद करने लायक है, वह तभी कर सकेंगे जब हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।' निराशाभरे भावो को मन से निकाल देना चाहिए और समझ लेना चाहिए कि उपवास यदि आया भी तो उसका परिणाम अच्छा ही होगा। मृत्यु की आशका को तो हमें कदापि स्थान न देना चाहिए।" यह सब वे भाई को देखकर कहरही थी। भाई कल से चिंता के कारण बिलकुल थके-मादे-से लगते हैं। चिंता सबको है, मगर भाई की तो मारे चिंता के नींद ही उड जाती है। इससे उन पर चिन्ता का असर ज्यादा देखने में आता है।

३० दिसम्बर '४२

बापू ने अपने पत्र में काफी फेरफार किये। मुझसे कहने लगे, "सुबह उठकर तू हमारे साथ घूम लेना, तब पत्र की नकल तैयार करना।"

---

*"You should try to be lost in God, so that you are able to say to yourself—
'Our times are in His hands
Who saith a whole I planned'."

दोपहर में अनुवाद करती रही। तेरह पन्ने रह गए हैं। कल पूरा होना ही चाहिए, होजाएगा।

मीराबहन ने आज भी वही भजन पन्द्रह-बीस मिनटतक सीखा।

सरकार ने मीराबहन के दोनों पत्र हवाई डाक द्वारा विलायत भेज दिये हैं। पौने दो रुपया खर्च लिया है।

३१ दिसम्बर '४२

आज इस वर्ष का अंतिम दिन है। बापू ने सुबह साढे पांच बजे ही उठकर वाइसराय के नाम लिखा गया अपना पत्र, जिसमें हेरफेर किये गए थे, पढना आरम्भ किया। पढकर कहने लगे, "अब तो नया पत्र लिखने-जैसी बात होगई है। जल्दी नही कर सकती।" प्रात चार बजे भाई से कहने लगे, "कितना अच्छा हुआ कि तुमने वह वाक्य पकडा। मुझे आश्चर्य है कि सरोजिनी नायडू को वह क्यो नहीं सूझा! मगर मैंने कहा था न कि सबसे ज्यादा बोझ तुम पर पडनेवाला है। तुमने पूरी तरह महादेव का स्थान लिया है।" मुझसे कहने लगे, "तू सुबह ही घूमले। मैं नाश्ते से पहले ही पत्र सुधार लूगा। जब मैं घूमने जाऊंगा तब तुम उसकी साफ नकल तैयार करना।" मगर जब पत्र पढा तब कार्यक्रम बदला। राजाजी को बापू के साथ मुलाकात करने की इजाजत देने से इन्कार करते समय जो बयान सरकार ने निकाला था, वह भाई से मागा। भाई ने निकालकर दिया। फिर एमरी के कामन्स सभावाले भाषण की कतरन मागी।

घूमने के समय बापू की मीराबहन से निजी बातचीत होरही थी। मै और भाई वापस आगए। अच्छा हुआ कि मैंने पत्र के बहाने सुबह घूम लिया था। आकर मै अनुवाद करने लगी। भाई अखबार की फाइल में से वह कतरन निकालने में लग गए।

दोपहर सोने के बाद बापू ने पत्र लिखा। छोटा-सा था, मगर बहुत ही अच्छा था। सबको बहुत पसद आया। वह बहुत व्यक्तिगत था, इसलिए बापू ने उसे अपने हाथ से नकल करके भेजा। भाई बोलते गए और बापू लिखते गए। साढे चार बजे तैयार होगया और डाक में गया। आज नए साल के शुरू होने से पहले इतना अच्छा पत्र गया, इससे सबको खुशी हुई। सब कहते थे कि यह पत्र बापू के अपने निजी ढग का है।

मीराबहन से बापू ने पुराना साल खतम होने के साथ पुरानी बाते भूलकर नए साल में नया युग शुरू करने को कहा और कहा कि सबके साथ एक परिवार के रूप में रहे।

आज बा की साडी की किनारी बनाना खतम किया, 'आरोग्य की चाबी' का हिन्दी अनुवाद पूरा किया और मेकमार्डो की पुस्तक में से बाइबिल में से उतारे हुए अशो को पूरा पढ लिया।

कल से बापू ज्यादा ध्यानावस्थित होना चाहते हैं। यथासम्भव बाते नहीं करेंगे। मन को दुनिया से खींचकर एकाग्र करलेंगे। कहते थे, "मुझे अग्निपरीक्षा की तैयारी करना है। मैं समझू तो सही कि ईश्वर मुझसे क्या चाहता है?"

शाम को सरोजिनी नायडू के साथ बा बाते कर रही थी । सरोजिनी नायडू ने कहा, "आप चिंता न करे । ईश्वर बापू से उपवास करने को नहीं कहेगा और बिना ईश्वर के आदेश के वे उपवास करेगे नहीं ।" बा कहने लगीं, "यह तो मै जानती हू कि ईश्वर नहीं कहेगा, मगर बापू मानलेगे कि ईश्वर ने कहा है तो फिर क्या होगा ?" सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "नही, ऐसा नही होसकता ।"

बापू का रक्त-चाप आज रात को बहुत अच्छा था—१६०/१०० । कहने लगे, "यह न समझना कि मन का बोझ हल्का हुआ है, इसलिए रक्त-चाप कम है । मैंने खुराक में हेरफार करके इसे कम किया है ।" बापू ने दूध कम करके नाश्ते में दूध की जगह गरम पानी पिया था ।

१ जनवरी '४३

आज नया साल शुरू होता है । बापू ने कल अपने पत्र में लिखा था, 'नया साल हम सबको शाति देनेवाला हो ।'* यही ध्वनि सबके मन से निकलती है, मगर क्या आनेवाला है, यह तो भगवान् ही जाने !

सरोजिनी नायडू सुबह की प्रार्थना में आईं । मैंने सुबह प्रार्थना से पहले स्नानादि कर लिया । यह क्रम चल सका तो रोज ऐसा ही करने का विचार है ।

घूमते समय बापू कहरहे थे, "हमें घूमते समय या तो गीताजी-जैसी चीज का अभ्यास करना चाहिए या मौन रखना चाहिए ।"

बापू दिन भर अपने अभ्यास में लीन रहे । स्लोकमवाली पुस्तक पढरहे थे, कुछ उर्दू पढी । मौन नहीं था, मगर पहले कहते थे कि अनावश्यक बात नही करना चाहते ।

मीराबहन ने एक गत्ते पर नया कलेण्डर लगाकर उसके एक तरफ हिमालय का और एक तरफ गगाजी का दृश्य बना दिया । सुन्दर लगता था । ऊपर लिखा था ॐ और उसके नीचे 'हे राम' । गत्ते के किनारे पर भी पेस्टल से हल्का-सा काम कर दिया था । सब सुन्दर लगता था । बापू के बैठने की जगह के सामने वह टाग दिया ।

सरोजिनी नायडू ने मेरी पहली तस्वीर आज टागली है । अच्छी दीखती है ।

बा की तबीयत अच्छी है । आज सब लोगो का दिन अच्छा गया । सोने के समय मीराबहन ने बापू को वही प्रिय भजन गाकर सुनाया ।

बापू के कलवाले पत्र की नोटबुक में नकल की । मेरी क्यूरीवाली किताब का अनुवाद शुरू किया । दो-चार वाक्य ही किये । काम जरा कठिन है । थोडा व्याकरण किया । 'आरोग्य की चाबी' का अग्रेजी अनुवाद बीच में ही पडा है । उसे फिर से नहीं शुरू किया । एक-दो दिन में होजावेगा ।

बापू को स्लोकम की पुस्तक बहुत पसन्द आई है ।

अखबार में चिमूर के विषय में आज सरकार का बयान निकला है । बहुत खराब

---

*"May the New Year bring peace to us all !"

है। कहते है कि वहा पर जाच-पडताल की आवश्यकता नहीं। वहा तो सारी जनता ने सामूहिक रूप से झूठी सौगंध खाकर गवाही दी है, लोगों की साजिश है। सबको बहुत बुरा लगा। भाई का तो खून खौलरहा था।

दोपहर को बापू ने कल की तरह सारा समय अखबार देखने में और स्लोकम की किताब पढने में लगाया। थोडी देरतक अनुवाद भी देखा। मीराबहन को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि बापू अखबार आदि पढते है। वे अपने मौन के दिनो में न अखबार पढती थीं, न किसीसे बात करती थीं। केवल वेदादि ही पढती थीं। वे समझती थीं कि बापू भी वैसा ही करेगे। बापू से मैंने पूछा तो कहने लगे, "मैं मीराबहन की तरह नहीं करना चाहता। मगर सामयिक (Topical) बातो की चर्चा भी नही करना चाहता, क्योकि इससे मन में उद्वेग उठता है। मन दौडरहा है, अधा बन जाऊँ, आखें बद करलू, मौन लेलू, तो पढना भी छूट जावेगा। मन को शून्य में स्थिर कर सकू तो बडी बात है।"

भाई कहने लगे, "इसके दो असर होते है। सामान्य आदमी तो पागल होजाता है, मगर जाग्रत रहते हुए शून्य में जिसका मन स्थिर होजाय, उसका विचार ही कर्म होजाता है।"

३ जनवरी '४३

आज सुबह महादेवभाई की समाधि से लौटकर बापू कहने लगे, "गीताजी के पाठ में ठीक जगह पर वजन नहीं आता। इससे पाठ उतना मधुर नही होपाता जितना कि होना चाहिए।" मैंने कहा, "या तो हम आपके सामने जब पढें तब आप बतावे अथवा स्वय बतावे।" कहने लगे, "बताएगे। और फिर तुम मुझसे आगे बढ जाओगी। ऐसा होचुका है। जिन्हे मैंने सिखाया है, वे मुझसे आगे बढ गए है।" फिर बताने लगे कि कैसे दक्षिण अफ्रीका में कैलेनबैक को जूते बनाना सीखने भेजा। उन्होने बापू को सिखाया। बापू ने दूसरे सब लोगो को सिखाया और वे सब बापू से अच्छे जूते बनाने लगे।

मैंने कहा, "मगर आपके प्रमुख विषय 'बौद्धिक क्षेत्र' में तो कोई भी आपसे आगे नहीं बढ सका।" बापू ने कहा, "बढा है, महादेव को लेलो। वह गुजराती अनुवाद मुझसे अच्छा कर लेता था।" भाई कहने लगे, "आपकी गुजराती बहुत अच्छी होती है—भावपूर्ण और सक्षिप्त।" बापू कहने लगे, "हा, वह है। कारण, मैं भाषा का प्रेमी हू। मैं अपनेआप को साक्षर (विद्वान) नहीं मानता, मगर भाषा का प्रेम मेरे मन में हमेशा रहा है। इसलिए भाषा का सहज सगीत अपनेआप आगया है, जो कि गुजराती के लिए ही नहीं, बल्कि सब भाषाओ के लिए है। अग्रेजी के लिए भी मेरे मन में उतना ही प्रेम है। यह चीज ग्रहण करने के लायक है। पोलक तो अँग्रेज था, मगर उसने अग्रेजी मुझसे ली है। मुझसे यह नहीं होता कि भाषा को बिगाडा जाय। महादेव तो जब आया तब अपने क्षेत्र में सम्पूर्ण था, मगर मैं मानता हू कि और कही उसकी भाषा नहीं खिलनेवाली थी।"

इतनी बात करने के बाद कहने लगे, "प्रसगवश इतनी बात आज होगई।

आगे से इतनी चर्चा भी नहीं करने दूगा ।"

भडारी आए । बापू के साथ थोडी बात की । बेलगाव जेल में २१-२२ व्यक्ति मर गए थे, पर अब वहा शाति है । मृत्यु का कारण समझ में नहीं आता । कै-दस्त होते थे, फिर ज्ञान-ततुओ पर असर हुआ । चेहरे में और गले में सुइया चुभने लगती थीं । बाद में सांस लेना भी बन्द होजाता था और रोगी मर जाता था । सब लोग एक साथ एक जगह बीमार नहीं पडे थे । बापू सोचते है, "बाहर खुराक की तगी से लोगो की बुरी हालत होरही है । ऐसे समय पर गरीबो की सेवा कौन कर सकता है, सिवा काग्रेस के ? गरीबो से परिचय ही कौन रखता है ? मगर काग्रेस तो पडी है जेल में । तब फिर खाने के लिए फसाद उठ खडा होगा तो आश्चर्य नही होगा ।"

दोपहर में सोने के बाद बापू ने मौन लिया । शाम को खाने के समय छोडा । रोज ऐसा करने का विचार कर रहे है ।

आज मीराबहन ने थोडे समयतक फिर वही 'अद्भुत सलीब' (Wond'rous Cross) गीत सिखाया । आज उन्होने सरोजिनी नायडू के लिए एक और चित्र बनाया है । पेंसिल से बनाकर ऊपर थोडा-सा रग लगा दिया है । अच्छा बना है ।

रात को मैंने काफी रेकार्ड बजाए । दो-तीन भजन बापू को पसद है । उन्हींसे शुरू किया । करीब घटा भर बजाती रही ।

४ जनवरी '४३

सुबह ही मीराबहन ने कहा, "आज बादल है ।" मैंने उन्हे बादलवाले दिन एक चित्र बनाकर देने को कहा था । सो रग उठाकर चल पडी । सुबह घूमने का पौन घटा चित्र में लगाया । पीछे दोपहर में कुछ समय दिया । आज दूसरा कुछ काम न हो-सका । कुछ थकान-सी भी लगती थी । कुछ करने को मन नहीं होता था । एक कर्ज सिर पर से उतरा । सोमवार चित्रकला के लिए स्थिर करने का विचार किया था ; मगर दूसरे दिन का दृश्य सुदर होगा तो सोमवार का ही दिन स्थिर करना कठिन होजायगा ।

क्यूरीवाली पुस्तक का अनुवाद भाई ने मुलतवी करने को कहा । कहने लगे, "अब नए युग में ही शुरू करना ।" सो अभी तो 'आरोग्य की चाबी' का अग्रेजी अनुवाद और व्याकरण, ये दो चीजें हाथ में है । इन्हे इस महीने में पूरा होना चाहिए ।

बापू का मौन साढे सात बजे खुला । बा को रामायण समझाकर वे सोने को चले गए ।

कई अखबारो ने नए वर्ष की 'उपाधिवितरण-सूची' नहीं छापी । इस पर मद्रास सरकार ने चिढकर मद्रास के कुछ अखबारो से कहा है कि उन्हें सरकारी विज्ञप्ति आदि लेने जाने की जरूरत नहीं ।

मुशी का बडा अच्छा बयान निकला । सरकार द्वारा चिमूर के विषय में निकाले गए बयान का उत्तर है । सरकार ने चिमूर की खबरो को अखबारो में छापने की मनाही करदी है । लेने वहा कोई जा भी नही सकता ।

५ जनवरी '४३

आज मीराबहन ने फिर चित्र बनाना शुरू कर दिया, परन्तु शाम की रोशनी अच्छी न होने के कारण ठीक बना नहीं। दृश्य अच्छा है। रंग ठीक होजावेंगे तो अच्छा लगेगा। शाम को वे भजन नहीं सिखा सकीं।

रोज की तरह सारा दिन निकल गया। बापू दोपहर में मौन लेते हैं। वातावरण में एक तरह की अनिश्चितता है, भारीपन है। जितना समय निकल जाय उतना ही अच्छा है।

रात को बापू मुझे महाभारत की दो कथाएं सुनाने लगे। दोपहर में बा को भी सुनाई थीं। कहने लगे, "पक्षी की आंख पर अर्जुन की एकाग्रता और युधिष्ठिर का क्रोध करना—इन पाठों को याद रखना। दोनों का अर्थ गूढ़ है। अभी से ये अर्थ तेरी समझ में आजाए तो जीवन की बहुत सी समस्याएं हल होजाएं।"

सुबह घूमते समय बापू भाई से पूछने लगे, "'ऐन्शिएंट मैरिनर' का संदेश क्या है?" उन्होंने बताया। फिर कवियों की बातें होती रहीं—कॉलरिज, वर्ड्सवर्थ इत्यादि की कविता, उनकी शैली, उनका जीवन—इसकी चर्चा हुई।

६ जनवरी '४३

सुबह घूमते समय बापू भाई को महाभारत की वही दो कथाएं सुनाने लगे, फिर स्लोकम की किताब की बात करने लगे। कहने लगे, "उसमें जो ज्ञान है वह ग्रहण करने योग्य है, मगर भाषा की दृष्टि से किताबें पढ़ते रहने से मनुष्य भाषा का गुलाम बन जाता है। भाषा तो मनुष्य की दासी है। एक बार इतना पता होना चाहिए कि हम कहना क्या चाहते हैं, पीछे भाषा तो अपनेआप आजाती है।"

दिन फिर रोज की तरह गया। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का पहली तारीख का अंक आज पाया। उसमें भसालीभाई की काफी खबरें थीं। उपवास को तो ५० रोज होगए थे। उनकी हालत खराब थी। बेसुधी थी और पेशाब में खून वगैरा आता था। अब क्या हाल होगा—भगवान जाने। जीवित भी है या नहीं, यह भी नहीं कहा जासकता। बापू के प्रति उनका संदेश बहुत हृदय-स्पर्शी था—"बापू से जब कह सको तब कहना कि उन्होंने मुझे जीवन में भी उबार लिया है, मृत्यु में भी उबार लेंगे।"

७ जनवरी '४३

दोपहर में थोड़ा अनुवाद किया। फिर एक चित्र बनाने बैठी। उस पर करीब दो घंटे लग गए। मुझे ड्राइंग का थोड़ा अभ्यास कर लेने की आवश्यकता है। ड्राइंग कच्ची होने के कारण चित्र बनाने में अधिक समय लगता है।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "'ऐन्शिएंट मैरिनर' को रहस्यवादी कविताओं में गिन सकते हैं क्या?" भाई ने उत्तर दिया, "हां।" तब रहस्यवाद की व्याख्या पर बात चली। पीछे चर्चा उठी कि हमारे कवियों में रहस्यवादी कौन-कौन थे। भाई कहने

लगे, "मीरा तो रहस्यवादी थी ही। उसमें और सेंट थेरेसा में क्या फर्क था!" बापू ने कहा, "तब तो हमारे लगभग सभी कवि रहस्यवादी कहे जासकते हैं।" बाद में दूसरे अंग्रेज कवियो की बाते होने लगी। भाई ने एक वाक्य बोला, जिसमें अधिकाश अंग्रेजी के शब्द थे और बाकी गुजराती के थे। बापू कहने लगे, "आज से इस बात का नियम बना लेना चाहिए कि अंग्रेजी शब्द कभी भी इस्तेमाल नही करेगे। यह भद्दी बात है।"

मीराबहन ने आज से मुझे 'लीड काइंडली लाइट' गीत सिखाना आरम्भ किया।

कल रात से सर्दी फिर आरम्भ होगई है। कुछ दिनतक रह जाय तो बडा अच्छा हो।

कटेली साहब प्रार्थना से पहले आए। उन्होने बापू को बताया कि नया चाद निकला है। सब देखने को चले।

८ जनवरी '४३

आज भी खूब सर्दी है। बापू बाहर धूप में बैठने को निकले है।

मीराबहन ने कल शाम के चन्द्रोदय के दृश्य का एक काल्पनिक चित्र बनाया है। अच्छा है।

शाम को पद्रह-बीस मिनटतक पेंसिल से पहाडियो का चित्र खीचा।

९ जनवरी '४३

आज यहा आए पूरे पाच महीने होगए। बापू को वाइसराय को पत्र लिखे दस दिन होगए है। बापू ने कटेली साहब को पत्र लिखा कि उस पत्र की आजतक पहुच भी नहीं आई। जरा पता लगाए कि बम्बई से पत्र कब आगे गया।

आज शनिवार था। ६ दिन बाद महादेवभाई को गए भी पाच महीने होजावेगे।

शाम को मीराबहन ने समाधि का एक चित्र बनाया। एक और बनावेंगी।

सरोजिनी नायडू ने आज फिर खाना बनवाया। ढाई घटे लगे। काफी थकान होगई। मन में आया करता है कि आखिर समय और जीवन का क्या उपयोग होरहा है?

: ३५ :

निश्चय और तैयारी

१० जनवरी '४३

भाई ने बताया कि कल रात मीराबहन बापू से आकर कहने लगी कि अगर सचमुच उपवास आना हो, तो क्या यह उचित न होगा कि वे अमुक-अमुक तैयारिया

करलें ? जवाब में बापू ने कहा कि उन्हें जो तैयारियां करनी हों, करलें।

आज सुबह घूमते समय बापू भाई से कहने लगे, "मैं देखता हूं कि उपवास तो आ ही रहा है। मैं इतने दिनों से भले ही ऊपर से सब कामों में भाग लेता रहा होऊं, मगर दरअसल भीतर अपने ध्यान में ही लगा रहा हूं। मुझे अभीतक अंतरात्मा की स्पष्ट आवाज नहीं सुनाई दी कि कब उपवास करूं। लेकिन अंतरात्मा इतना तो कहती है कि तुम इसमें से निकल नहीं सकते। सब तरह से इस बारे में विचार करके इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जब शुरू में सेवाग्राम में उपवास की बात निकली थी तब वह अंतरात्मा का ही नाद था। मैंने काफी चर्चा की, काफी समय दिया, काफी ढील दी, मगर देखता हूं कि उपवास तो नसीब में है ही। तुमसे यह सब इसलिए कहरहा हूं कि तुम अपनी मानसिक तैयारी करलो। पहले सोचा था कि जबतक समय नहीं आता, किसीसे बात न करूं, मगर फिर विचार किया कि अगर तुम स्वस्थ बन सको और मौका आने पर काम करने के लिए तैयार होसको तो अच्छा है। सेवा और देखरेख की तो मुझे उपवास के समय आवश्यकता पड़ेगी ही। भसाली की तरह मैं नहीं रह सकता। भसाली की तपश्चर्या भी मेरे पास कहां है ? इसलिए अगर तुम लोग स्वस्थ होसको तो अच्छा है, नहीं तो मेरा काम अधिक कठिन बन जावेगा। मुझे डर है कि इस समय बा हिम्मत नहीं रख सकेगी, वैसे तो बा बहादुर है। समय आने पर धीरता से काम लेसकती है। मीरा कहती है कि सरोजिनी नायडू मेरे कारण अभी से बीमार-सी होगई है। इस तरह अगर तुम सब हार जाओगे तो भी समय आने पर मुझे तो उपवास करना है ही। आज जो कुछ भी बाहर होरहा है, उसकी हमें कुछ खबर नहीं मिलती। इसके अर्थ दो होसकते हैं। एक तो यह कि हिंसा के फैलते रहने पर भी आम जनता अहिंसक है और उसी ढंग से काम कर रही है, मगर उसका उलटा मानने के लिए भी काफी सबूत देखने में आता है। होसकता है कि जो मानसिक स्थिति आज बा की है, वह बाकी देश की भी हो। सम्भव है कि हिंसावाले ही अपने ढंग से अपना काम कर रहे हैं और उसमें कुशलता का परिचय भी देरहे हैं। इसके विपरीत अहिंसक लोग अपंग होकर बैठ गए हैं। इसका प्रतिकार भी मैं उपवास द्वारा ही कर सकता हूं। मन में यह भी उठता है कि क्या मेरा जीवन कार्य समाप्त होगया है ? मैं देश की प्रगति को रोक तो नहीं रहा ? मेरे पास जो कुछ था, वह दे चुका। अब पुरानी चीज ही दोहरा सकता हूं। भसाली जाएगा तो मेरी दृष्टि में सत्याग्रह की सम्पूर्ण मिसाल छोड़कर जाएगा। सोचता हूं कि मेरे संदेश की पूर्णाहुति में उपवास की आवश्यकता क्या नहीं है ? क्या मुझे अब सत्याग्रह की एक सम्पूर्ण मिसाल देश के सामने रखकर अपना जीवन-कार्य पूरा कर लेना चाहिए ?"

भाई बोले, "आपको इस तरह नहीं सोचना चाहिए। इससे तो मस्तिष्क में उलझनें पैदा होजाती हैं। शुद्ध अंतर्नाद के सुनने में भी कठिनाई आती है। जीवन-कार्य पूर्ण होजाएगा तब प्रभु अपनेआप उठा लेगा।"

बापू कहने लगे, "यह ठीक है। मैं विचार करता भी नहीं। यह बुद्धि का विषय

नही, हृदय का विषय है। यह तो मैंने यो ही तुम्हारे सामने विचार रख दिया है। मैं अतर्नाद को सुनने का प्रयत्न कर रहा हू।"

भाई ने बताया कि पूर्णाहुति के बारे में बापू के साथ उनकी कुछ और भी दलील हुई थी। भाई ने उनसे कहा था, "आपको इस तरह विचार ही नही करना चाहिए। इस तरह पूर्णाहुति की बात को पकडले तो जीवन में पुरुषार्थ को स्थान नही रह जाता। पूर्णाहुति का विचार मन में आना स्वाभाविक है, मगर मै देखता हू कि आपने जो छ महीने की अवधि की बात की थी, वह आपके विचारो पर प्रभाव डालरही है। यह चीज मुझे अशात बनाती है। अगर आपको ईश्वर का स्पष्ट आदेश होता कि उपवास करो तो मुझे आपसे कुछ भी नही कहना था, मगर आज ऐसा नहीं है। आज आप उपवास करे तो ईश्वर आपसे पूछ सकता है कि 'अपनी निश्चित की हुई अवधि में मेरे आदेश को स्थान दिया है क्या? जब आवश्यकता थी, मैंने तुझे जगाकर चेतावनी दी थी। तब तूने आज क्यो कानून अपने हाथ में लेलिया है? मैंने जो विष का प्याला भेजा था, उसे अमृतवत् पीकर सतोष क्यो नहीं माना? उससे आगे क्यो बढा? आत्मा का प्रतिदिन सूली पर लटकना क्या आहुति नही?' मुझे काफी बाते कहनी है, मगर फिर कहूगा।"

इस सब का बापू का उत्तर था, "मैंने जो कुछ करने का निश्चय किया है, उसे तुमने छुआतक नहीं है, इसीलिए इस तरह की दलीले करते हो। वरना, ऐसी बाते करते ही नहीं।"

११ जनवरी '४३

आज बापू का मौन था। कल शाम को मौन शुरू होने के बाद मीराबहन बापू से आकर कहने लगीं, "आप उपवास का विचार करने से पहले एकात में कुछ दिन इस विषय पर विचार करे तो क्या अच्छा न होगा? आध्यात्मिक बातो पर भला मैं आपको क्या सलाह देसकती हू, परन्तु एकातवास का कुछ अनुभव अवश्य लिया है। उस अवस्था में मुझे कुछ शाति मिली थी और चाहती हू कि आप भी उसका कुछ अनुभव ले तो अच्छा है। मुझे डर-सा लगता है कि आप अपनेआप में अतिशय आत्मविश्वास का आभास तो नही पाते? इसके कारण किसी गलत निर्णय पर तो नही पहुच जाएगे?"

बापू ने लिखकर उत्तर दिया, "मै जो कुछ कर रहा हू या करूगा, वह हद से ज्यादा आत्मविश्वास का परिणाम नहीं होगा। अतरात्मा की धीमी-सी आवाज ही मेरा पथ-प्रदर्शन कर रही है। अब रही एकात और शाति की बात। जितनी शाति और एकात पिछले दिनो में मुझे मिला, वह मेरे लिए काफी था। मगर मुझे एकात या मौन का डर नही है। मैंने तो लम्बे अर्सेतक मौन लिया है और मुझे वह अच्छा भी लगता है। रही एकातवास की बात। दक्षिण अफ्रीका के जेलो में मैंने उसका अनुभव किया है और मुझे वह भी अच्छा लगता था। मै अब दोनो को आजमाने की तैयारी में फिररहा हू। तुम सबसे बातचीत करलो और वे मान जावे तो तुम प्रबंध करलो।"

मीराबहन खुश होगई। मुझसे और भाई से बातें करने लगी, "बापू कहें तो

उनके लिए बगीचे में आम के पेड के नीचे एक झोपडी बनावें।"

जिस कमरे में मीराबहन पहले रहती थीं, उसमें बापू की बैठक का प्रबन्ध करने का विचार किया। बापू का कमरा गुसलखाने के करीब होने के कारण मीराबहन को लगता था कि बापू को एकात नहीं मिलता। बा को परिवर्तन पसद न था। सरोजिनी नायडू भी इसके विरुद्ध थीं। मुझे भी अच्छा नहीं लगता था, पर भला मैं इन बातो को क्या समझती? मैंने सोचा कि बापू को इसमें फायदा हो तो क्यो न ऐसा करें।

दिन भर बापू का मौन था। शाम को साढे सात के करीब मौन पूरा होजाने के बाद बापू ने बा से बाते कीं। उन्होने सारी योजना को रद्द किया, मगर बापू कहने लगे, "इसमें से जितना पचा सकूगा उतना अमल में लाऊगा। मीराबहन की सूचना को मैं फेंक देना नहीं चाहता।"

सरोजिनी नायडू बहुत खुश हुई। कहने लगीं, "मीरा समझती नहीं है कि एकात मन का होता है। बापू को बाहरी दिखावे की जरूरत नहीं है। वे तो भीड-भडक्के में रहकर भी एकात-सेवन कर सकते है और करते है।"

थोडी देर पेंसिल से चित्र खींचा। पेंसिल पर रग लगाने का प्रयत्न किया, मगर कुछ अच्छा नहीं बना। उसे पूरा रगदार बनाना होगा।

आज सरोजिनी नायडू के कमरे में सफाई हुई। कल शाम से सामान निकाला जा-रहा है। आज दोपहर १२ बजेतक पूरा हुआ।

१२ जनवरी '४३

आज सुबह डिब्बे में नई टॉफी भररही थी। यह ताड के गुड की बनाई गई थी। बापू मजाक करने लगे, "यह तो तू भी खासकती है।" मैंने कहा, "जिस दिन आप कहेंगे कि उपवास टल गया, उसी दिन खूब अच्छी टॉफी बनाकर हम जलसा करेंगे।" बापू गम्भीर होकर कहने लगे, "उपवास तो आया ही समझो।"

सुबह घूमते समय फिर वही बात चली। बोले, "कल रात मैं बारह बजेतक नहीं सोया।" भाई कहने लगे, "क्यो?" बापू ने उत्तर दिया, "मुझे जागना ही था, मगर मैं देखरहा था कि तुम कब सोने आते हो। टाइप करने की आवाज आती थी और मुझे गुस्सा आता था कि इस वक्त क्यो टाइप कराया जाता है। वह तो चार बजे उठ जानेवाला है। तुम भले कहो कि शरीर ने आजतक काम दिया है तो आशा रखें कि आगे भी काम देगा। ऐसी आशा वही मनुष्य रख सकता है जिसने स्वास्थ्य के नियमो का सतत् पालन किया हो। तुम्हारी तरह सदा उल्लघन करके भी ऐसी आशा का पल्ला पकडना तो घमड की बात हुई। यह एक विचार था, मगर मैं तो अपना ही विचार कर रहा था। देखता हू कि उपवास का विचार मन में उठता ही रहता है कि मैं इससे बच नही सकता। वाइसराय का उत्तर क्या आता है, यह देखना है। यह तो नहीं कह सकता कि वह निराशाजनक होगा। मगर इस उपवास को टालने का एक ही उपाय है। वह यह कि वाइसराय का बहुत ही अनुकूल उत्तर आजावे। मगर मेरी मानसिक

तैयारी इससे उलटे की होनी चाहिए ।"

भाई ने कहा, "आपके उपवास के क्या कारण हैं और उनका निवारण कैसे होगा—यह मैं समझना चाहता हू ।"

बापू कहने लगे, "लोग भूखों मररहे हैं, यह क्या कम कारण है ? मेरे जैसा आदमी ऐसी परिस्थिति में आराम से बैठकर कैसे खासकता है ? मानो कि आज एक लाख आदमी इसीलिए उपवास करने लगें कि लाखो-करोडो का भूखो मरना उनसे सहन नहीं होता तो मैं कहता हू कि परिस्थिति एकदम बदल सकती है और साथ ही भुखमरी भी बहुत कुछ कम होजावेगी। मगर मैं जानता हू कि ऐसा नहीं हो-सकता। मेरी तरफ देखकर कोई मेरा अनुकरण करे तो मूर्खता होगी, मगर तुम सबको मुझसे अलग रहकर यह जान पडने लगे कि नहीं, हम यह नहीं देख सकते, तो दूसरे भी उपवास कर सकते हैं । परन्तु आज वह शक्य नहीं है। तब, मुझे क्या करना चाहिए ? मैं तो अपना धर्म-पालन करू । बाद में जो होना होगा सो होगा। जीवित रहने का सकल्प करके मैं यह करना चाहता हू। आमरण उपवास जैसी चीज भी मेरे पास है, मगर यह उपवास वैसा नहीं है।"

मैंने पूछा, "आपने वाइसराय को जो पत्र लिखा था, उसमें आपने लोगो के भूखो मरने की बात तो लिखी थी, मगर वह बात पत्र में मुख्य नहीं थी। मुख्य तो था आपका अपने जीवन के प्रत्येक पहलू में सत्य और अहिंसा को आत्मसात कर लेना। इसका पालन कैसे हो, यह भी पत्र में था । अगर उसको अमल में लाने का दूसरा कोई साधन न हो तो जेल में बैठे-बैठे आपके पास उपवास के सिवा चारा नही था। आपको लगता था कि उपवास द्वारा ही अपने मिशन को आगे बढा सकते हैं। मगर अभी आप उस बडी चीज के लिए नहीं, बल्कि भुखमरी के लिए उपवास करने की बात करते हैं । दोनो में कुछ विरोधाभास नहीं होता क्या ?"

बापू कहने लगे, "नहीं, भुखमरी को अहिंसक कैसे सहे ? बडी समस्या तो है ही, मगर इसी बीच एक नई चीज पैदा होगई है । जनता के पास खाने के लिए कुछ है ही नही। गेहू नही, ज्वार नही, चावल नही, बाजरा नहीं। लोग खाए क्या ? करें क्या ? और मेरे जैसा आदमी भी क्या करे ? चुपचाप बैठकर क्या देखा करे ? इस परिस्थिति में अहिंसा मूर्त्त रूप में खडी होगई है। अहिंसा इसी तरह अपना काम करती है । अव्यक्त अहिंसा की पूजा अव्यक्त ब्रह्म की पूजा की तरह कठिन है। मगर अहिंसक एक-एक परिस्थिति का उपयोग करता जाता है तो दूसरा कदम अपनेआप उसके सामने आ-जाता है । दक्षिण अफ्रीका में जब मैंने सत्याग्रह शुरू किया तो एक छोटी-सी चीज को लेकर किया था। ट्रासवाल के रजिस्ट्रेशन ऐक्ट के सामने वह था। मित्रो ने कहा भी कि इतनी छोटी-सी बात के लिए क्या लडना था! मगर मैंने कहा कि जो बुराई देखता हू, उसके विरुद्ध मुझे लडना ही चाहिए । वह चीज धीरे-धीरे अपने-आप विस्तृत होती गई और अत में सारे दक्षिण अफ्रीका में फैली।"

भाई ने कहा, "इसका अर्थ यह हुआ कि अनाज की लूट या देश से अनाज बाहर भेजना फौरन बंद होजावे तो आपका उपवास टल सकता है।"

बापू कहने लगे, "वह एक चीज है।" भाई ने पूछा, "और कौनसी चीजें है? उपवास के और क्या-क्या गुह्य अर्थ है? निवारण के क्या-क्या साधन है? यह सब मैं अपना मस्तिष्क साफ करने के लिए समझना चाहता हू।"

बापू बोले, "यह मैं अभी नहीं बताऊंगा। मैं अपनी शक्ति का सचय करना चाहता हू। मेरा पत्र तैयार होगा तो सभी देखेंगे। तुम्हारे लिए इतना ही काफी होना चाहिए कि भुखमरी अकेली ही उपवास करने के लिए सबल कारण है।

सरोजिनी नायडू ने बापू से दो-तीन दिन से कहा था कि वे उनसे बात करना चाहती है। आज दो बजे बापू ने उन्हें बुलाया। उन्होंने शुरू किया, "बापू, आप गुस्ताखी क्षमा करना, मगर मैं आज आप से साफ-साफ बातें करना चाहती हू। मैं समझती हू कि आपका उपवास करना गलती है। १९२४ के हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य के लिए किये गए आपके उपवास की मेरे दिल में पूरी कदर है। मगर राजकोटवाला उपवास मेरी समझ में नहीं आया। यह भी नहीं आता और आपको याद रखना चाहिए कि आपके कहने से हजारो जेलो में बैठे है। आप आखें बंद करलेंगे तो उनका क्या होगा? आपके साथी जेल में है। उन्होने आपको सारी सत्ता सौंपदी है। कई लोग आज लड़ाई करने के पक्ष में न थे तो भी वे आपके पीछे चले। उनकी पीठ पीछे क्या आपका उपवास करना उचित है? आप आज स्वतन्त्र नहीं। बाहर निकलकर आप सब जिम्मेदारियो से मुक्ति लेकर उपवास कर सकते है, मगर यहा नहीं। मैं जानती हू कि किसी रोज आपकी मृत्यु उपवास में होगी, मगर अभी अंतिम बलिदान का समय नहीं आया। जिम्मेदारियो से मुक्त होकर आप उपवास करने का निश्चय करना चाहेंगे तो मैं आपको दोष नही दूगी। उस समय यदि आप मृत्यु का भी आवाहन करेंगे तो मैं आपका साथ दूगी।"

बापू हसने लगे, "उपवास में भी साथ दोगी?" सरोजिनी नायडू ने उत्तर दिया, "हा, उपवास में भी, यद्यपि मुझे उपवास में विश्वास नहीं।"

बापू मजाक करते बोले, "हा, और दो दिन बाद खाना मागने लगोगी!"

वे बोलीं, "नहीं, मैं मरूगी, मगर खाना नहीं मागूगी। मैं मानती हू कि ईश्वर इतना निर्दय नहीं कि आपसे उपवास कराके लोगो को मझधार में छोड देने की प्रेरणा करे। इस दृष्टि से आपको सत्य और अहिंसा को सामने रखकर उपवास का विचार करना चाहिए। इस समय उपवास करना जनता के प्रति हिंसा होगी। बाहर जाकर यदि आप किसी और को अपना चार्ज सौंपकर उपवास करेंगे तो आपकी मृत्यु सम्भवत देश को तारनेवाली बने।" इतना कहकर सरोजिनी नायडू बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये ही चली गई।

शाम को मैंने थोडी देर चित्र बनाया, फिर घूमने चली गई। बापू ने सूचना दी है कि बा को छोडकर वे और सबके साथ मौन बरतेंगे। गीताजी सीखना हो तो

: ३६ :

वाइसराय को पत्र

१४ जनवरी '४३

आज एक नया कलेण्डर आया। उस पर हिन्दुस्तान का नक्शा है और बापू का चित्र है। बापू बा को भूगोल सिखाने के समय नक्शे का उपयोग कर सकते है। बापू का चित्र अच्छा नहीं। उस पर मीराबहन ने कागज लगा दिया। बा अब नक्शे की सहायता से भूगोल सीखने लगी। आज बापू ने बा को पूरी बाल महाभारत सुनाने का काम पूरा कर लिया। कल से क्या शुरू करेंगे, यह सोचने लगे। मैंने 'बलिदान' शुरू करने की बात कही। भाई ने 'शरणागति-रहस्य' पढने को कहा।

बापू कल से वाइसराय को पत्र लिखरहे है। उन्होने कहा है कि जबतक पूरा न होजाय तबतक उसे कोई न पढे। भाई का टाइप करने का काम लगभग पूरा होगया है। मुझसे उन्होने कहा है कि मै अपना सारा समय उन्हें दू। मैंने स्वीकार किया है, मगर नतीजा यह हुआ कि आजतक न तो मै अपना ही कुछ काम कर सकी हू और न उन्होने ही मेरे समय का उपयोग किया है।

आज भसालीभाई द्वारा उपवास छोड देने के विषय में सरकारी बयान और डा. खरे ने इस सबध में जो हिस्सा लिया था आदि सब देखा। सार्वजनिक जाच-पडताल की माग छोड देनी पडी, इसका मुझे दु ख हुआ, मगर भाई कहने लगे, "इस विषय में हमें कोई निर्णय करने का अधिकार नही है। वहा के लोगो को सतोष हुआ, इतना ही काफी समझना चाहिए।"

बापू से मैंने पूछा, उन्होने भी कहा, "हमें यहा बैठे-बैठे इस बारे में कुछ भी फैसला करने का अधिकार नही है।"

एक-दो रोज से कूने स्नान (Kuhne bath) का प्रयोग होरहा है, मगर मुझे कुछ अधिक जचा नही।

१५ जनवरी '४३

शाम को मै बैठी स्केच बनारही थी कि इतने में भाई बापू का पत्र लेकर पहुचे। वही उपवास की बात थी, जो पहली फरवरी से इक्कीस फरवरीतक चलनेवाला था। बापू ने कहा है कि हम सब इस पत्र को पढकर अपना-अपना स्वतत्र मत लिखकर उन्हें देदें।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने कहा था कि वाइसराय को दूसरा

पत्र भेजने के समय या पहले पत्र का उत्तर आने पर मैं मौन छोड़ूंगा। सो आज पत्र लिखना पूरा होने पर मौन छोड़ा।"

डा लाजरसवाले पत्र की बात करते-करते बापू वाइसरायवाले पत्र की चर्चा करने लगे, "सभ्य लोगों का एक तरीका यह भी है कि ऐसे पत्र का उत्तर न देना चाहिए। उनके काम से जो हमें समझ लेना हो, समझलें।" मैंने कुछ कहने की इजाजत लेकर कहा, "वाइसराय को पत्र मिले मुश्किल से दस दिन हुए होंगे। आपके पहले ही पत्र का उन्हें रूखा-सा उत्तर देना था तो भी उन्होंने पद्रह दिन लिये थे। इस समय अगर वे कुछ करने का विचार कर रहे होंगे तो आपका यह दूसरा पत्र पाकर चिढ न जावेंगे? क्या आपको उन्हें और समय न देना चाहिए?"

बापू कहने लगे, "मानलो दस ही दिन हुए। तब भी कम-से-कम पहुच तो आनी चाहिए थी। इन लोगों का यह तरीका है कि यह तो पहुच है, बाकी उत्तर फिर देंगे और फिर इस पत्र से चिढना क्या था? उपवास की बात तो पहले पत्र में ही थी। यह तो उसीके सिलसिले में लिखा जाता है।"

मैंने कहा, "तो भी इससे नुकसान होसकता है। इसके अतिरिक्त दूसरे पत्रों की भाति यह हृदयस्पर्शी नहीं है।"

बापू कहने लगे, "इसे हृदयस्पर्शी बनाने की आवश्यकता नहीं है। यह तो ठडे कलेजे से पहले पत्र के सिलसिले में लिखा हुआ पत्र है।"

घूमकर आए तो सरोजिनी नायडू आई। हाथ के दर्द के कारण वे पत्र पर अपना मत जबानी सुना गई। उनका भी कहना था, "वाइसराय को और समय देना चाहिए। भसालीभाई के उपवास छोड़ने की घटना से भी पता चलता है कि सरकार कुछ हिली तो है। उन्हें अपने रास्ते चलने देना चाहिए। दूसरे, इस पत्र की भाषा आपकी हमेशा की भाषा नहीं। यह कुछ रुक-रुककर लिखा गया है और अपूर्ण लगता है। लगता है कि आपने शात चित्त से पत्र नहीं लिखा। आप यह क्यों लिखते हैं कि आप नमक और पानी लेंगे। आप उपवास करनेवाले हैं। जो ठीक लगे सो लें। किसीसे कहने की क्या जरूरत है? इसके अतिरिक्त यह क्या लिखना कि वे आप पर दया न करें? दया करके जो कुछ किया जाता है, कई बार गलत होता है। आपकी भाषा मेरी ही समझ में नहीं आती तो वाइसराय कैसे समझेगा?"

बापू कहने लगे, "तुम्हारी समझ में अच्छी तरह आती है। दया न करने की बात लिखने की जरूरत इसलिए है कि मेरी इस बारे में हरिजनों के लिए उपवास के समय टीका होचुकी है। अम्बेडकर ने कहा है कि उसने वह फार्मूला मेरी जान बचाने की खातिर स्वीकार किया था।"

सरोजिनी नायडू बोली, "हा, मगर वाइसराय यह सब क्या समझेंगे? मैं कहती हू कि उपवास ही करना है तो महादेव की समाधि पर जाना बद कर दीजिए। वहा जाने से क्या फायदा? मैं जानती हू कि उन्होंने आपकी खातिर प्राण-त्याग किया।

इसे मैं अदालत में साबित तो नही कर सकती, मगर बात सही है। अगर आप अब उपवास करते है तो महादेव का बलिदान बेकार गया। अगर आप उपवास करनेवाले है तो उस समाधि पर रोज क्रास बनाने का क्या अर्थ है? मैं फिर कहती हू कि आप स्वतत्र नही है। आपको उपवास करने का हक नही है।"

बापू ने कहा था कि होसके तो पत्र कल जाना चाहिए। भाई कहने लगे, "आप कहते है कि पत्र अतर से निकला है। ऐसा होते हुए भी आपको उसे लिखने में चार दिन लगे। हमें आप कुछ घटो में राय देने को कहते है! यह कैसे हो?"

बापू बोले, "करीब २४ घटे है।" भाई ने कहा, "तो हम रात भर जागे!" बापू बोले, "वह तो तुम करने ही वाले हो।"

मगर कल शनिवार है। पत्र ग्यारह बजे जाना चाहिए। तबतक शायद तैयार न होसके और जा न सके। मीराबहन बापू को अपना मत लिखकर देगई। उन्होने सुबह पढने को तकिये के नीचे रख लिया। भाई तो दो बजेतक या उससे भी देर से सोए।

बापू ने फिर मौन लेलिया। जबतक इस पत्र का फैसला न होजाए तबतक मौन रखेंगे।

१६ जनवरी '४३

मीराबहन की टीका सुबह बापू ने पढी। उन्होंने लिखा था कि वाइसराय को पहले पत्र का उत्तर जल्दी भेजने के लिए लिखिये। अभी उपवास की बात न लिखियें। बापू ने लिखकर उत्तर दिया कि अब जो पत्र जावेगा, उसमें उपवास की बात तो आनी ही चाहिए। पत्र को दो-चार दिन रोककर भेजा जावे, यह मै समझ सकता हू, मगर बीच में दूसरी तरह का पत्र नही जासकता।

पीछे भाई ने अपना अभिप्राय लाकर दिया। उन्होंने बापू के लिए पत्र का एक मसविदा भी बनाया था। लिखा था कि पत्र भेजना ही हो तो इस तरह का भेजिये। इस मसविदे का भाव भी वही था जो मीराबहन का था, मगर एक नए ढग में लिखा गया था। साथ ही उसमें यह भी स्पष्ट किया गया था कि उपवास बगाल की भुखमरी की खातिर नहीं है। उस भुखमरी की जड में जो है, उसकी खातिर कर रहे है।

घूमते समय बापू से भाई इसी बारे में बातें करते रहे। बापू मौन थे, सुनते रहे। बाद मे भाई कहने लगे, "सब कुछ चिकने घडे पर पानी डालने-जैसा था।"

बापू ने अपने पत्र को फिर से पढा। 'कोई मुझ पर दया न करे' आदि वाक्य काट डाले। 'क्यो उपवास करते है,' यह बतानेवाला भाग निकाल दिया। भाई को लगता था कि यह स्पष्टीकरण तो रहना ही चाहिए। तब बापू ने कहा कि तो फिर रहनेदो। भाई के मसविदे में से बापू ने दो वाक्य लेलिये। वे वाक्य इस चीज को स्पष्ट करते थे कि भुखमरी तो परिस्थिति को और अधिक असह्य बनाती है, वह उपवास का मूल कारण नही।

मैंने वापू से पूछा था, "आप भुखमरी को इतना महत्त्व क्यों देरहे है? सरकार कह सकती है कि 'भुखमरी मिटाने के काम में आपकी मदद सहर्ष स्वीकार की जाती है, मगर छूटने के बाद 'भारत छोडो' की हलचल न मचाना।' तब आप क्या करेंगे?"

वापू ने उत्तर दिया, "हम ऐसे मदद नहीं कर सकते। मदद करने का या भुखमरी मिटाने का एक ही उपाय है कि सरकार सत्ता लोगो के हाथ में रखदे।"

वापू ने भाई का मसविदा लौटाया। उसके नीचे लिखा था, "मैं तो ऊपर लिखा हुआ सब हजम कर गया हू। फाडने के वदले तुम्हें वापस देरहा हू।"

'शरणागति-रहस्य' में वापू को कुछ बहुत तथ्य न मिला। उन्होंने वह भी वापस लौटादी। लिखा, "'शरणागति-रहस्य' में मैं कुछ पाता नहीं हू। निरा पांडित्य है।"

भाई ने पूछा था कि वाइसराय का उत्तर न आने का अर्थ 'उसकी कुछ न करने की नीयत का सूचक' मानकर आप उसके साथ अन्याय तो नहीं करते? इसका इससे उदार अर्थ करना क्या शक्य नहीं? उपवास की चर्चा किये विना आप उत्तर के लिए फिर क्यो न लिखें? जवाव में वापू ने एक नोट लिखकर भाई को देदिया। उसमें लिखा था—"मैं ऐसे समझा हू कि वाइसराय के मौन का मैंने जो अर्थ किया है, उसे तुम जानना चाहते हो। अग्रेज अमलदारो की यह नीति है कि जव किसीको सख्त जवाव न देना हो तो उनके काम में से उसका जवाव समझ पडे। यह नीति वहुत वार तो सभ्यता का रूप धारण करती है। याद करने पर ऐसे वहुत से उदाहरण मिलते हैं। इस अनुभव का अवलम्वन करके मैंने यह वाक्य लिखा है। मानो कि उन्होंने जवाव देने का विचार किया ही है तो मेरा ऊपरवाला वाक्य मुझे वचा लेगा और वाइसराय को भी। अगर वह सचमुच सतोष देना चाहे तो मेरे उस वाक्य के आधार पर मुझे मेरा पत्र वापस लेने को कह सकता है और मुझे वह वापस लेना पडेगा। अगर उसका विचार मुझे सतोष देने का न हो तो मेरा यह वाक्य उसे विकट परिस्थिति में से वचा लेगा।"

दोपहर खाने के वाद मीरावहन वापू से कहने लगीं, "आप अभी पत्र न भेजें। २६ जनवरी को स्वतत्रता के अवसर पर भेजें और उपवास की तारीख हमारे यहा ६ महीने पूरे होजाने पर ९ फरवरी को रखें।"

वापू मान गए। वा से कहने लगे कि अव तो सवका आशीर्वाद मिल गया है। मैंने कहा, "हरगिज नहीं, मगर और कुछ नही कर सकते तो थोडा समय और मिल सके तो अच्छा है, इस विचार से मीरावहन ने वात की है।" इतने में सरोजिनी नायडू आगईं। कहने लगीं, "किसीने आपके उपवास में सम्मति नहीं दी। उपवास करना गलती है। आपको यह नही करना चाहिए।"

वापू हसने लगे।

सरोजिनी नायडू मुझसे कहरही थीं, "मेरी आत्मा कहती है कि वापू को

उपवास नही करना पडेगा। मैंने कहा था न कि भसाली मरेगा नहीं, वही हुआ।" मैंने कहा, "इस समय भी आपकी अतरात्मा की यही आवाज निकले, यही प्रार्थना है।"

शाम को घूमते समय बापू भाई को अपनी बात फिर समझाते रहे। जो सुबह नोट में लिखकर दिया था, चीज वही थी।

रात को मीराबहन ने सोने से पहले 'लीड काइडली लाइट' गाया। मुझे बडा अच्छा लगा। अब वे हफ्ते में दो बार प्रार्थना पर भजन गाएगी और बाकी पाच दिन सोने से पहले बापू को अग्रेजी भजन सुनावेगी, यह तय हुआ है।

१७ जनवरी '४३

बापू आज गीताजी सिखारहे थे। बाद में कहने लगे, "तू चित्रो में इतना समय क्यो देती है? तुझे दूसरे कामो से छुट्टी इसीलिए दी थी कि तू प्यारेलाल की मदद करे। तेरे पास दो मुख्य काम है एक तो डाक्टरी में परिश्रम करना। मैं तुझसे अलौकिक काम चाहता हू। बा की खासी क्यो न जावे? 'पुरानी छाती-खासी की जड नहीं जाती'—यह सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता। मालवीयजी, शिवप्रसादजी और कई दूसरो को डाक्टरो ने जवाब देदिया था। मगर वैदिक इलाज से वे अच्छे हुए। मुझे वैदिक पर मोह नहीं। मैं उसकी त्रुटिया जानता हू। मगर तुझे समझना चाहिए कि इस तरह किसी बीमारी को असाध्य मान लेना ठीक नहीं है। बा है, सरोजिनी नायडू है—इन्हे तुझे अच्छा करना ही चाहिए और इतनी शक्ति होनी चाहिए कि रोगी को अपना कहा मनवाले और उसे अपनी ओर आकर्षित करले। दूसरा काम भाषा का है। भाषा की भी आवश्यकता डाक्टरी के लिए तो है ही, मगर उससे भी अधिक मेरे काम के लिए है। मैंने तुझे कहा है कि महादेव का काम तुझे करना है। मैं नहीं जानता कि तू कहातक कर सकेगी। प्यारेलाल तो है, मगर अकेले के लिए वह काम शायद बहुत होजावे। तुझे तैयार होना चाहिए। इसीलिए मैंने तुझसे व्याकरण पर पूरा अधिकार पाने को कहा है।"

बा बहुत उदास है। उपवास की तलवार सिर पर लटकरही है। शाम को अकेली बगीचे में जा बैठती है। मीराबहन समझारही थी कि सरकार बापू को अधिक दिनतक उपवास नही करने देगी। मगर इस आशा पर हम क्या भरोसा कर सकते हैं।

भाई आज भी बापू का पत्र लेकर बैठे थे। उन्हे उससे सतोष नहीं है। विचार भी चलते है—'सरकार ने उपवास को भी महत्त्व नही दिया तो?'

उनके दात में कल से दर्द है। दात खराब है, मगर निकलवाते नही है। क्या किया जाय? हमारे देश में अपने दातो का बडा मोह होता है।

सुबह भडारी आए थे। उनसे थोडी किताबें मगा देने को कहा। उनमें से एक 'ले मिजेराब्ल' है। यह बापू के लिए थी। शाम को आगई। बापू ने पढना भी शुरू कर दिया।

१८ जनवरी '४३

आज सोमवार का मौन था। सुबह मैं थोडी ड्राइग करती रही। महादेवभाई

की समाधि का चित्र खींच रही थी। घूमी नहीं। मीराबहन आकर ड्राइंग के विज्ञान के बारे में कुछ बता गईं। मैंने ड्राइंग कभी की नहीं है। चित्रकला में यह अज्ञान बहुत बाधा डालता है।

बापू अपना पत्र और भाई के सुधारोंवाला मसविदा लेकर कुछ समयतक विचार करते रहे। सोमवार के कारण बा को भी आज खिलाना नहीं था, इसलिए दोपहर को जल्दी सोगए। उठे तो कटेली साहब वाइसराय का उत्तर लेकर आए। पत्र अच्छा था। मित्र-भाव का था। पत्र-व्यवहार का रास्ता खोलता था। शायद इस तरह कोई रास्ता निकल सके। सरोजिनी नायडू को बहुत अच्छा लगा। मीराबहन को कुछ कम और मुझे उनसे भी कम। बापू तटस्थ थे। उनका भाव था कि पत्र में शायद कुछ निकले या न निकले।

बापू ने उत्तर लिखना शुरू किया। साढे तीन बजे वे आधे घंटेतक रोज ध्यान में बैठते हैं। उत्तर उससे पहले तैयार करके देदिया। सबने अपनी-अपनी राय दी। रात को बापू उसे फिर से थोड़ी देरतक देखते रहे। कहते थे कि कल उत्तर जाना चाहिए। सुबह पूरा करेंगे।

सोने से पहले मीराबहन ने दो अंग्रेजी भजन गाए—'ओ गॉड आवर हेल्प इन एजेज पास्ट' और 'व्हेन आइ सर्वे दि वडंरस क्रॉस'। बापू कहने लगे, "बस मुझे तो दूसरे भजन के बराबर और कोई अंग्रेजी भजन लगता ही नही है।"

रक्तचाप बहुत बढा था। पौने आठ या साढे सात बजे देखा तो २०४ ११६ था।

१९ जनवरी '४३

बापू रात अच्छी तरह सो नही पाए। सुबह प्रार्थना के बाद भी नहीं सोए। उठकर पत्र तैयार करने लगे। मुझे लिखवाते रहे। सात बजे पत्र पूरा करके नाश्ता किया। घूमने गए। मालिश, स्नानादि के बाद खाना खाकर जल्दी से पत्र की नकल अपने हाथ से तैयार करने लगे। मैं खाना खाकर आई तो एक वाक्य लिख चुके थे। बाकी मैंने लिखवाया।

बापू का मौन अब छूट गया है। अच्छा लगता है, मगर दोपहर को आधा घंटा ध्यान में अब भी बैठते हैं। दोपहर को दो-तीन घंटे मौन भी रखना चाहते हैं।

बापू का रक्तचाप सुबह खूब बढा था। शामतक कम होगया। उनका मन शांत है। न तो आशा ही लगाए बैठे है, न निराशा की भावना उनके मन में है। भगवान् को जो करना होगा, वह होगा—यह उनका भाव है।

मेरा गला कल से खराब है। थोड़ा बुखार-सा भी लगता है।

२० जनवरी '४३

सुबह की प्रार्थना के समय मैंने बापू से पूछा, "यहा अभी कितने दिनतक प्रार्थना करनी होगी?" कहने लगे, "बहुत दिनतक। मैं तो जितना ही विचार करता हूं,

वाइसराय का पत्र उतना ही मुझे खराब लगता है। मेरे आज के पत्र का वह शायद सख्त उत्तर देगा।"

दिन में बापू 'ले मिज़ेराव्ल' पढते रहे। दोपहर में बा को भूगोल सिखाया और कथा पढकर सुनाई। शाम को उन्हे रामायण भी रोज की तरह समझाई। घूमते समय मुझे गीताजी सिखाई, रात को भाई के साथ बाते की।

मै आज भी जल्दी सोई। दिन में कलेक्टर हूलन और डा. शाह आए थे।

बा का थूक आटोवैक्सीन बनाने के लिए और सरोजिनी नायडू का मल परीक्षा के लिए भेजा।

२१ जनवरी '४३

आज सर्दी फिर से शुरू हुई है। जाते-जाते बुझते दिये की तरह टिमटिमा रही है।

दिन में कुछ खास घटना नही हुई। बापू ने भाई से कुछ बाते कीं और कहा कि मुझे डाक्टरी के अभ्यास पर अधिक समय लगाना चाहिए और व्याकरण का खूब अभ्यास करना चाहिए। पहला मेरी खातिर और दूसरा बापू के काम की खातिर। भाई मुझे आकर कहने लगे, "ये दोनो चीजें अच्छी तरह सीखलो। लिखने का भी खूब अभ्यास करो। बाहर जाकर यह अभ्यास करने का मौका नही मिलनेवाला।"

सर्दी काफी थी। दोपहर को बापू बाहर बैठने गए।

सिपाही शकर को चेचक के टीके के बाद जोरो का बुखार आया। गाठें भी फूल गई। आज सुबह चुपचाप अपने घर चला गया है।

२२ जनवरी '४३

आज शुक्रवार के रोज से गीताजी का नया पारायण शुरू होता है।

आज भी खूब सर्दी थी। दोपहर में सब लोग धूप में सोए।

शाम को डा शाह आए। कहने लगे, "श्रीमती नायडू के मल में पेचिश के जतु (Hystolytica amoeba cysts) काफी मिले है।" मैंने तो पहले से ही दवा मगाली थी। सोचा था कि उनकी परीक्षा करके इलाज शुरू करूगी। सुना है कि उन्हे दिल की बीमारी भी है। इससे मामला और पेचीदा होजाता है।

दोपहर को थोडी देरतक व्याकरण का अभ्यास किया। बा को थोडा-सा अनुवाद पढकर सुनाया। साढे चार बज गए।

आज बैडमिटन और पिग-पौंग की जाली लगवाने की बात चलरही थी। सरोजिनी नायडू ने मुझसे पूछा तो मैने कहा, "विचार तो अच्छा है, मगर खेलनेवाले कितने है?" वे कहने लगी, "तुम, प्यारेलाल, मीरा, बापू और बा। बापू अब उपन्यास पढते है, तो खेलेगे क्यो नहीं!" सब हसने लगे।

२३ जनवरी '४३

आज शनिवार था। मीराबहन और सरोजिनी नायडू महादेवभाई के समाधि-

स्थान पर आए। मगर बा नहीं आसकीं। कल रात मे उनकी तबीयत अच्छी नहीं है।

घूमते समय बापू पूछने लगे, "उपन्यास का साहित्य में क्या स्थान है?" भाई कहने लगे, "साहित्य के तीन विभाग है कविता, नाटक और काल्पनिक उपन्यास-कथा। सो उपन्यास का बडा स्थान है।" बापू कहने लगे, "कैसी विचित्र बात है! काल्पनिक चीजो को तो बडा स्थान दिया है और जीवन की असली चीजो को स्थान ही नहीं दिया!" भाई बचाव करने लगे, "उपन्यासो में आदर्श व्यक्त किये जाते है। उनका आधार अनुभव पर होता है। स्टो के 'टामकाका की कुटिया' नामक उपन्यास ने क्राति कराई और परिणामस्वरूप गुलामी खतम हुई। अप्टन सिन्क्लेयर के 'जगल' उपन्यास के कारण नया कानून बना। उपन्यासो के बहुत उपयोग है।"

बापू बोले, "सदुपयोग किस चीज का नहीं होसकता? मगर देखना तो यह चाहिए कि सर्वांश में कोई चीज फायदा करती है या नुकसान। मेरी समझ में तो उपन्यासो ने बहुत नुकसान किया है।"

भाई ने कहा, "मगर तुलसीकृत रामायण-जैसा धर्मग्रथ भी तो काल्पनिक ही है न?" बापू कहने लगे, "इस तरह की दलील में मै नहीं पडना चाहता। यह तो वितडावाद हुआ। तुलसीदास को कोई उपन्यास के तौर पर नहीं पढता। मै तो सामान्य उपन्यासो का स्थान समझने के लिए बात कर रहा था।"

बीच में 'टाम काका की कुटिया' की बात होते समय लिंचिग* की प्रथा पर चर्चा छिडी। बापू ने समझाया और कहने लगे, "मुझे अफ्रीका में लिच ही करने लगे थे न! ईश्वर ने बचा लिया।

"आखिर में चैम्बरलेन ने तार दिया कि मुझ पर हमला करनेवालो को सजा मिलनी ही चाहिए। मुझे बुलाकर वजीर ने पूछा तो मैंने कहा कि मुझे कोई शिकायत नहीं है। उस दिन से उसके मन में और सारे दक्षिण अफ्रीका में मेरी कीमत बढी।"

आज सरोजिनी नायडू के लिए कुछ पकाना था। सवा घटा रसोई में काम किया। बा ने भी मेथी की रोटी खाई। तबीयत पहले से भारी थी। शाम को हल्का-सा बुखार आगया।

शाम को मीराबहन के साथ भाई का टाइप किया हुआ पत्र-व्यवहार मिलाया, जिससे गलती न रह जाय। एक पत्र उन्होने मुझे लिखवाया। सगीत के लिए समय न रहा।

रात को चन्द्रमा के निकलने का दृश्य आज तीन रोज से बहुत सुदर होता है।

---

*जनसमुदाय का आवेश मे आकर बगैर कानूनी कार्रवाई के किसी व्यक्ति को जगली सजा देने की अमेरिका आदि प्रदेशो मे प्रचलित प्रथा। 'लिंच' नामक न्यायाधीश के नाम पर यह शब्द निकला। उसके बारे मे कहा जाता है कि वह फासी पर अभियुक्त को चढाने के बाद फैसला सुनाया करता था।

आज मैंने बापू के सोने के बाद उनके गुसलखाने में बैठकर एक छोटा-सा स्केच बनाया। सुबह रगो का ठीक पता चलेगा। तब शायद कुछ और सुधार करना पड़े।

भाई ने बताया कि मालिश के समय अपने उपवास के सिलसिले में बापू ने रॉबर्ट ब्राउनिंग की कविता 'रेबी बेन एज्रा' की इस कड़ी 'Heaven's success found or earth's failure'† को दोहराते हुए अपने उपवास की भावना को व्यक्त किया. "जगत जिसे सफलता कहता ह, उसकी मैंने जीवन में कभी लालसा नहीं रखी। जगत की निन्दा के डर से मैंने कभी अपने ध्येय को नहीं छोड़ा।"

२४ जनवरी '४३

सुबह घूमते समय बापू ने सलाह दी कि गीता-उच्चारण की जगह अब गीताजी के दो-चार श्लोको का रोज व्याकरण-सहित अर्थ करना ज्यादा अच्छा होगा। बीस मिनट में चार श्लोक हुए। भाई ने पूछा, "'प्रसादमधिगच्छति' में 'प्रसाद' का क्या अर्थ करते हैं ?" मैंने उत्तर दिया, "ईश्वर का प्रसाद।" बापू बोले, "हा, ठीक है।" भाई कहने लगे, "इन श्लोको में तो पातजल सूत्र को दोहराया गया है। इसलिए प्रसाद का जो अर्थ पतजलि ने किया है, वही लेना होगा। 'प्रसाद' अर्थात् मन की प्रशाति (Serenity, limpidity)।"

भाई को लगा कि साख्य का हवाला देने में गलती हुई है, मगर बापू ने बात आगे चलाई। बोले, "पतजलि का सांख्य के साथ सबध नहीं है। फिर गीता के दूसरे अध्याय को साख्य योग कहा तो है ; लेकिन गीताकार ने सबका समन्वय किया है। तिलक महाराज ने तो इस बारे में बहुत लिखा है। 'योग' शब्द पर ही एक बड़ा अध्याय लिखा है। ईश्वर-कृपा से मन की प्रसन्नता प्राप्त होती है। प्रसन्नता से दु ख का नाश होता है, अन्यथा हो नहीं सकता। ईश्वर का स्थान न हो तो अतिम श्लोक में 'ब्राह्मी स्थिति' का उल्लेख क्यो हो ? ब्रह्म से निकली 'ब्राह्मी स्थिति', और ब्रह्म ईश्वर नहीं तो क्या है ?"

सुबह भडारी और डा. शाह आए। सरोजिनी नायडू को नियमित दवा लेने के लिए कहते रहे। थोड़ी देर बैठे। खबर थी कि कल से डबल रोटी और मोसम्बी मिलना बद होजावेगा। सरोजिनी नायडू ने भडारी से कहा। उन्होंने कहा कि बन पड़ा तो वे दोनो चीजो का प्रबध कर देंगे।

दोपहर थोड़ा-सा समय रातवाले चित्र को पूरा करने में लगाया। शाम को दस-पद्रह मिनटतक कलवाले चित्र की तैयारी के लिए ड्राइग की। सुबह उन लाइनो को देखना कठिन होजावेगा। मीराबहन के साथ आज भी कल की तरह पत्र-व्यवहार पर काम किया। इसीलिए आज भी व्याकरण नही कर सकी। कल तो करना ही चाहिए।

---

†चाहिए या तो वह सफलता जो ईश्वर की कसौटी पर खरी उतरे, नहीं तो सासारिक हार।

शाम को घूमते समय गीताजी के चार श्लोकों का अध्ययन किया।

२५ जनवरी '४३

आज सोमवार था। सोमवार को चित्रकला के लिए समय रखा है। सुबह सूर्योदय का दृश्य बनाने का विचार था, मगर समय पर तैयार न होसकी। स्नानादि के बाद साढे नौ से साढे दसतक आगाखा महल की छत से पर्णकुटी का दृश्य बनाया। खाने के बाद फिर करीब घटा भर उसी पर काम किया। दोपहर आराम के बाद अखबार देखा। कल स्वतत्रता-दिन है। उसके लिए 'वदेमातरम्', 'झडा ऊचा रहे हमारा' और 'सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा'—ये तीन गीत तैयार करने थे। 'वदे मातरम्' का बाकी पाठ तो याद था, मगर 'सुखदा वरदा ' पर आकर बिगड जाता था। इसे सुधारने में मुझे करीब एक घटा लगा। 'हिन्दोस्ता हमारा' के दो-तीन स्वर बापू को प्रिय है। उसे याद करने में समय लगा। उसका भी आधा तो मुझे आता था, परन्तु दूसरे आधे को ठीक करने में काफी मेहनत करनी पडी। 'वदे मातरम' के लिए मीराबहन, भाई और मै—तीनो साथ बैठे। पीछे मै अकेली अभ्यास करती रही। रात मे प्रार्थना के बाद बापू का मौन छूटने पर उनको तीनो गान सुनाए। उन्होने दोषो को सुधार दिया। इतने मे सवा आठ बज गए। बापू का काम करके थोडी देर भाई के साथ बैठकर पढती रही। करीब पौने दस या दस बजे सोगई।

: ३७ :

जेल में पहला स्वतत्रता-दिवस

२६ जनवरी '४३

आज स्वतत्रता-दिवस मनाने के लिए सरोजिनी नायडू ने परसो बापू को 'स्वाधीनता की प्रतिज्ञा' लिखने को कहा था। कल उन्होने मौन में वह लिखी। वह सुदर छोटी-सी प्रतिज्ञा तैयार हुई। सरोजिनी नायडू कहने लगी, "यह सम्पूर्ण है। इस प्रतिज्ञा को मै अतर्प्रेरणा का परिणाम मानती हू। यह सीधी हृदय से निकली है।"

बापू कल रात उसका अनुवाद करने बैठरहे थे। मैने कहा, "आप सोजावें। मै सुबह ही आपको देदूगी। आप उसे दुरस्त कर लीजिए।" मगर सुबह तो घूमने से पहले बिलकुल समय नहीं रहा। कुछ खयाल भी नहीं रहा। मैने विचार किया कि मालिश से बापू आवें, उससे पहले उन्हें देदूगी, मगर आज मैने स्नान भी पूरा नहीं किया था कि उनकी मालिश पूरी होगई। मैने काम करते-करते मन म विचार किया कि अनुवाद करना है, मगर लिख नही पाई थी। स्नान करके निकली तो सरोजिनी नायडू ने कुछ पकाने को कहा। उसमें लग गई और अनुवाद की बात

भूल गई। याद रहती कि बापू को तैयार करके देना ही है तो पाच-दस मिनट निकाल ही लेती।

बापू का उपवास था। उन्होंने दो बार ---सुबह और दोपहर---गुड, गरम पानी और मोसम्बी का रस लिया। मैंने चाय ली। भाई ने पूरा उपवास किया---केवल पानी लिया। सरोजिनी नायडू और कटेली साहब के लिए मटर का पुलाव, शलजम का साग और बेसन की मिठाई बनाई। सब बनाकर आई, बापू के पाव मले तब उन्होंने अनुवाद मागा। मैंने कहा, "पाच मिनट में लिखकर देती हू।" बापू पाच-दस मिनट में ही सोकर उठ गए। मैंने अनुवाद तैयार कर लिया था। उसे देखने लगे। जहा सुधार की आवश्यकता थी, सुधारा। मैंने अग्रेजी पाठ सामने रखकर अनुवाद किया, इसीलिए कहीं-कहीं शब्द छूट गए थे। अग्रेजी प्रतिज्ञा का अनुवाद इस प्रकार है

"हिन्दुस्तान हर माने में सत्य और अहिसा के जरिए पूरी तौर पर आजाद हो, यह मेरा तात्कालिक उद्देश्य है और बरसो से रहा है। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए मैं आज स्वतन्त्रता-दिन की इस तेरहवीं बरसी के दिन फिर से प्रण करता हू कि जबतक हिन्दुस्तान अपने उद्देश्य को न पाले तबतक न मै खुद चैन लूगा, न जिन पर मेरा कुछ भी असर है, उन्हें चैन लेने दूगा। मेरी यह प्रतिज्ञा सफल हो, इसके लिए मैं उस महान् अदृश्य दिव्य शक्ति से, जिसे हम गॉड, अल्लाह या परमात्मा रूपी परिचित नामो से पुकारते है, सहायता की प्रार्थना करता हू।

२६ जनवरी, १९४३."

झडा बनाने के लिए हल्दी और सोडा डालकर नारगी रग तैयार किया। हरा पेस्टल लगाकर बनाया। सफेद टुकडे पर पेंसिल से मीराबहन ने चर्खा बनाया। बगीचे में आम के पेड के नीचे छोटा-सा स्तम्भ गाडा। उस पर ठीक तरह से मीराबहन ने झडा बाधा। झडा भी उन्होंने ही तैयार किया था।

सभा की अध्यक्षता बापू ने सरोजिनी नायडू को सौंपी। वे कहने लगीं, "आपके रहते यह स्थान कौन लेसकता है ?" अत में मान गई।

छ बजे बापू घूमकर लौटे। सरोजिनी नायडू ने उनसे झडाभिवादन करवाया। पहले हमने 'सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' गाया, फिर बापू ने झडा फहराया। झडा-वदन गीत गाया गया। स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा दोहराई गई और फिर 'वदे मातरम्' का गायन हुआ। खासा अच्छा दृश्य बन गया। सरोजिनी नायडू कहने लगी, "लाखो आदमी होते तो भी करना तो यही था न।" भाई बोले, "जरा इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगते!" वे कहने लगी, "जबतक बापू है तबतक इन्कलाब जिन्दा तो है ही।"

प्रार्थना में 'वदौं श्री हरि-पद सुखदाई' गाया। आज रात को मै जल्दी सोगई। बहुत थकी थी।

बापू को मेरा चित्रकला में अधिक समय देना पसंद नहीं। उन्होंने समझाया, मगर समय की मर्यादा रखकर चित्र बनाना जरा कठिन काम है।

रात में बापू कहने लगे, "मैंने आज विचार किया था कि सब मिलकर कातें, मगर सब काम में थे, इसलिए कहा नहीं।" मैंने कहा, "विचार तो मुझे भी आया था, मगर मैं चुप रही।" मीराबहन कहने लगीं, "अभी कातेंगे।" मगर आठ बज चुके थे। बापू को सोने को बहुत देर होजाती, इसलिए कल मिलकर कातने का निश्चय किया। बापू को यह ठीक लगा। कल ढाई से तीन बजेतक कातने का प्रोग्राम बना। बापू बोले, "मैंने तो कहा है न कि सूत के धागे से स्वराज्य बंधा है, लेकिन उसे माननेवाले बहुत कम हैं। पर हम तो कातें।"

: ३८ :

उपवास के निश्चय से चिंता

२७ जनवरी '४३

आज कलेक्टर और डा शाह आए। डा शाह सरोजिनी नायडू के खून की परीक्षा-रिपोर्ट भी लाए थे। रक्तहीनता नहीं है। उनकी अशक्ति का कारण उनकी पुरानी पेचिश है। कलेक्टर एक मिनट के बाद पूछताछ करके चला गया। उससे पूछने से पहले ही बापू ने कह दिया, "हमेशा की तरह आज भी कोई शिकायत नहीं है।"

बा को शाम के समय कुछ थकावट लगरही थी। बुखार नहीं था। उन्होंने खुराक कम की है। शायद उसीका असर हो।

ढाई से तीनतक सबने मिलकर काता। कातते समय मैं सोचती थी कि रोज कातें तो कितना अच्छा हो। कातना पूरा होने पर बापू ने भी ऐसा ही विचार प्रकट किया, "हम लोग सिवा प्रार्थना के कुछ भी मिलकर नहीं करते। स्वराज्य एक के श्रम से नहीं, सबके श्रम से आनेवाला है। रोज मौन रूप होकर इसी प्रकार कातना अच्छा होगा।" मीराबहन को थोड़ी हिचकिचाहट थी, मगर बाद में मान गईं।

आज मेरे तार १७७ निकले और मीराबहन के १७८।

२८ जनवरी '४३

दोपहर में खाने के बाद बापू बा को 'बलिदान'[1] पढ़कर सुनारहे थे। उसमें

[1] विक्टर ह्यूगो के 'नाइन्टी थ्री' का हिन्दी अनुवाद।

राजमहल में जनसभा भरने का वर्णन सुनाते समय कहने लगे, "सत्ता पाने के लिए हमें बहुत कष्ट सहने होंगे, कुर्बानियां करनी होंगी। तुम सब लोग आराम की जिन्दगी बसर करना चाहो तो सत्ता कैसे अपने हाथ आसकती है? उपवास तो एक छोटी चीज है। हजारों-लाखों आदमी इस तरह कष्ट सहन करें तो कुछ होसकता है।" बा ने बहुत शका-भरे ढग से सिर हिला दिया।

सोकर उठे। पानी पीरहे थे कि इतने में भाई वाइसराय का पत्र लेकर आए। चिकनी-चुपड़ी बातें थीं, कठोर न थीं। बापू इसके लिए पहले से ही तैयार थे। बा को बताया कि ऐसा उत्तर आया है। वे काफी घबरा गईं। "अब क्या होगा?"—बार-बार यही कहने लगीं।

ढाई से तीन बजेतक सबने (सरोजिनी नायडू को छोड़कर) मिलकर काता।

शाम को बापू वाइसराय को उत्तर लिखने लगे। आठ बजे तैयार करके सबको पढ़ सुनाया और कहा कि जिसे जो कहना हो, लिखकर सुबह ही देदे। कल पत्र जाना चाहिए।

भाई को बापू के काम से छुट्टी मिल गई। मीराबहन ने और भाई ने एक-एक नकल करली। मैं बापू के पांव और सिर की मालिश वगैरा पूरी करके मुंह-हाथ धोकर भीतर गई तो पौने दस बजे थे।

उन लोगों ने उसी समय नकल पूरी की थी। करीब एक घंटा लिया था। मीराबहन अपनी नकल लेकर अलग जा बैठीं। मैंने बापूवाली पहली नकल लेली। भाई अपनी की हुई नकल लेकर बैठ गए। मुझे जो कुछ सूझा, वह भाई को बताकर मैं तो ग्यारह बजे से पहले सोने चली गई। बारह बजे बापू की पेशाब की बोतल साफ करने उठी तो मीराबहन और भाई बैठे थे। मैंने भाई से पूछा तो कहने लगे, "दो बजेतक सोऊंगा।" मगर बाद में पता लगा कि दो बजे सरोजिनी नायडू गुसलखाने गई थीं, उस समयतक भाई लिखरहे थे। वे उनसे कुछ बातें करती रहीं, फिर दो ताजे अंजीर उनके पास रख आईं और पूछने लगीं, "कुछ गरम चीज पीने को चाहिए?" उन्हें नहीं चाहिए थी। करीब तीन बजे वे सोए। मीराबहन बारह-साढ़े बारहतक सोगई थीं।

बापू अच्छी तरह सोए। मानो उन्हें कोई चिन्ता ही न हो।

२९ जनवरी '४३

प्रार्थना के लिए आज पांच बजे उठे। प्रार्थना के बाद बापू भाई और मीराबहन के मतों को लेकर अपने पत्र सहित बैठे। साढ़े दस-पौने ग्यारह बजेतक उन्होंने पूरा कर दिया।

खाने को जाने से पहले भाई उसे उठाकर देखने लगे। बापू कहने लगे, "यह पत्र मेरा नहीं, तुम्हारा है। तुम्हारे पत्र के सब फेरफार मैंने लेलिये हैं। भाषा

मेरी है, तर्ज मेरा है। इस भूमिका के साथ अब यह पत्र पढ़ो और कहो कि क्या तुम इसमें अपना पत्र पाते हो ?" पढ़कर भाई कहने लगे, "पाता हू, मगर मुझे अभी और फेरफार चाहिए ।"

भाई और मीराबहन आदि खाना खाकर आए और पत्र देखने लगे। बापू ने लिखवाया। दोनों ने एक-एक नकल करली। मैं तीसरी नकल खादी कागज (हाथ बने कागज) पर करती गई। उन लोगों को लगता था कि अपने हाथ की नकल हो तो वे अधिक विचार कर सकते हैं। कोई खास परिवर्तन करना तो था नहीं। छोटी-मोटी तब्दीलिया कीगईं। आज बापू ने पत्र लिखा, उसमें एक आवश्यक चीज लिखना भूल गए थे। वह यह थी कि, "काग्रेस की तैयारी है कि भले सरकार जिन्ना साहब को वजारत कायम करने को कहे।" यह बात कल के पत्र में थी—आज छूट गई। भाई ने उसकी तरफ उनका ध्यान खींचा। मेरे हाथ की खादी कागज-वाली नकल बापू भेजरहे थे, सो उसी पर उन्होंने नीचे 'पुनश्च' करके छूटे हुए वाक्य को लिख दिया। छोटे-मोटे सुधारों के कारण और जल्दी में लिखे जाने के कारण इस नकल में कुछ काटे हुए शब्द थे, मगर नकल बापू ने भेजी। दूसरी नकल तैयार करने का समय न था। बापू आज की डाक खोना नहीं चाहते थे। कहने लगे, "यह नकल पुनश्च और सुधारों के साथ जाय। वे लोग तो जानते ही हैं कि मैं टाल्स्टाय का अनुयायी हू। टाल्स्टाय तो सुधारों समेत ही अपने लेख भेज दिया करते थे।"

पत्र भेजा तो समय १-३५ होगया। बापू पानी पीकर गुसलखाने गए। दो बज गए। पैर मलवाये। दस मिनटतक सोए तो क्या, यों ही आख मीचकर आराम करते रहे। मैंने चर्खे तैयार किये। बापू और भाई—दोनों को ढाई बजे कातना था। मीराबहन को आज बापू ने छुट्टी देदी थी। हम तीनों ने ही आज काता। मेरे तार आज १८० हुए।

आज खूब बादल छाए रहे। हवा ऐसी चलरही है, मानो फिर से सर्दी शुरू होगई हो।

शाम को मैंने नोटबुक में वाइसराय के पत्र की और बापू के आजवाले उत्तर की नकल की। उत्तर की नकल अभी पूरी करने को है।

पत्र जाने के बाद बापू बात करने लगे कि अगर जिन्ना साहब की वजारत-वाली बात रह जाती तो उन्हें बड़ा अफसोस होता। भाई ने याद दिलाया कि १९३० में दाडी मार्च के अल्टीमेटमवाले पत्र में नमक का कर रद्द करनेवाला पैरा टाइप करने में रह गया था। अगद (रेजिनल्ड रेनाल्ड्स) वह मुहरबद लिफाफा लेकर जारहा था, मगर दिल्ली की गाडी चूक गई सो स्टेशन से वापिस आया। वैसे-का-वैसा मुहरबद लिफाफा भाई के हाथ में देदिया। रात को क्या जाने कैसे भाई को अतर्प्रेरणा हुई कि मुहर को तोड डाला। अदर से पत्र देखा तो नमक करवाली कलम न थी। दूसरे दिन नई नकल तैयार करके

भेजी। इस सारी घटना में ईश्वर का हाथ था। परिणाम भी शुभ ही आया।

३० जनवरी '४३

आज शनिवार है, महादेवभाई की समाधि पर सरोजिनी नायडू और मीराबहन गई। फूल बहुत थे। कल रातवाले भी अभी सूखे नही थे। इसलिए जिन फूलो का क्रॉस बनाते है, उन्हें क्रॉस के सिर पर ज्योतिर्बिम्ब (Halo) के रूप में सजा दिया।

सर्दी बहुत होगई है, अच्छा लगता है।

कल बापू ने विचार किया था कि आज वाइसराय को कलवाले पत्र की टाइप की हुई नकल भेजेंगे। कल रात भाई ने टाइप किया। नकल जितनी चाहिए उतनी साफ न थी। भाई कहने लगे कि दूसरी साफ नकल करता हू। बापू ने नकल के साथ भेजने के लिए नोट लिखा। उसे खादी कागज पर साफ-साफ लिखने बैठे, लेकिन कागज पर दो बार धब्बे पड जाने से तीसरा कागज लेना पडा। बापू ने कहा कि यह अतिम बार है। इस बार भी बिगडा तो खत नही भेजेंगे। इतने में मीराबहन आगई। उन्होने दूसरे कागज का धब्बा चाकू की नोक से साफ कर दिया। बापू फिर लिखने बैठे। पूरा करके मीराबहन के हाथ में दिया। देखा तो दो शब्द ही छूट गए थे। बापू ने कहा, 'नही भेजेंगे।" इतने में भाई आए। साफ नकल का समय न था। आज शनिवार है, इसलिए पत्र जल्दी जाना चाहिए। बापू का पत्र लेकर वही पुरानी नकल भेजने का विचार किया, मगर बापू ने कुछ न भेजने का विचार कर लिया था। सो सब रह गया।

सरोजिनी नायडू की तबीयत आज अच्छी है। बा की भी अच्छी है। बा के पास आज कनु का पत्र आया है इसलिए बहुत खुश है। बा का रक्तचाप भी आज बहुत दिनो के बाद शाम को १६२/१०० आया।

आज मुझे बिलकुल अच्छा नही लगरहा है। विविध विचार उठा करते है। विचार आते है कि कैसे लोग जेल में घबराते है और पागल से भी बन जाते है।

३१ जनवरी '४३

सरोजिनी नायडू का वजन बराबर कम होरहा है। कमजोर होती जारही है। ६-७ दस्त रोज हो ही जाते है। आतो की पुरानी पेचिश (Chronic amoebic dysentery) है और उसके साथ उनका दिल भी कमजोर है। इसलिए आम तौर पर इस रोग में जो दवा दीजाती है, उसे देते हुए डर लगता है। थोडा घूमें तो शाम को पाव में सूजन आजाती है। जिगर दबाने से दुखता है।

मैंने और डा. शाह ने उन्हे कारबार्सोन (Carborsone) दिया था, मगर उससे उन्हे मरोड उठने लगे। अब क्या होता? उनके चलने-फिरने और खुराक पर

हमारा कोई वस नहीं था।

मैंने निश्चय किया कि मुझे कह देना चाहिए कि इन्हें अभी छोड़दो। यहां और जोर आनेवाला है। ऐसा न हो कि उसमें ये और अधिक बीमार पड़ जावें। कमजोरी की हालत में बीमार पड़ जावेगी तो भारी खतरा उठाना पड़ेगा। सो मैंने कटेली साहब से कहा। बाद में भंडारी और डा शाह आए, उनसे भी कहा। डा शाह भी कहने लगे कि उनका स्वतंत्र मत तो सरोजिनी नायडू को बिना इलाज के छोड़ देना था, क्योंकि उनका इलाज आसान न था। सरोजिनी नायडू भंडारी और डा शाह पर बहुत नाराज हुईं। कहने लगीं, "मैं तो अच्छी हू। तुम लोगो को आज की परिस्थिति में मुझे छोड़ने की बात नहीं करनी चाहिए।" मगर जब दवा की बात आई तो कहने लगीं, "मैं दवा नही खाऊंगी, बिस्तर पर नहीं पड़ूंगी और न खास खुराक ही खाऊंगी।"

भंडारी बापू से कहने लगे कि उन्हें कटेली साहब ने उपवास की बात बताई थी। उन्हें बहुत चिन्ता होरही थी। बापू कहने लगे, "यह तो कटेली साहब ने आपको घरेलू तौर से खबर दी है। मगर जो हो आप चिंता क्यो करते हैं? आपको तो सब आदेश ऊपर से ही मिलेंगे। मेरे जैसा आदमी इन लोगो के झूठे इल्जामो का और क्या जवाब दे सकता है? मैंने उनसे कहा है कि वे इन इलजामो के लिए सबूत दें। मैं जो कहता हू, सब साबित करने को तैयार हू। मगर वे लोग सबूत नहीं देसकते। तब मैं लाचार होजाता हू—देश भर का दु ख, भुखमरी आदि मैं चुपचाप कहांतक देख सकता हू?"

आज भी सर्दी खूब थी। स्नान के बाद बापू बाहर जाकर बैठे। ढाई बजे कातने के लिए अंदर आगए।

मैंने आज डायरी की पहली नोट बुक में से जो कुछ निकालना, काटना-छांटना था, वह पूरा किया। रात के दस बजे सोने को मिला। बापू को पेशाब की बोतल समय पर न देसकी। वे उठकर गुसलखाने गए। बुरा लगा। नींद भी काफी देर से आई।

१ फरवरी '४३

सुबह मीराबहन कलेण्डर की तारीख बदलने आईं तो कहने लगी, "आज पहली तारीख है। लाल रग में लिखी होगी।" मुझे विचार आया कि तारीख ही लाल रग में नहीं, बल्कि महीने का नाम भी लाल रग में लिखा है। यह खास महीना है। कौन जाने, यह महीना क्या-क्या रग दिखाएगा!

बापू का आज मौन था। मैंने महादेवभाई की बाहर बिखरी हुई चीजो को एकत्रित करके बंद कर दिया। भाई की सलाह थी कि उनके कपड़े उनके बिस्तर में डालकर उनका बक्स मैं इस्तेमाल करलू। बापू को भी वही पसंद था। सो उनके कपड़े उनके बिस्तर में बांध दिये। बक्स की चीजें ठीक कर रही थी कि इतने में सरोजिनी नायडू आईं और कहने लगी, "तुम्हें ठीक तरह खाना चाहिए और तंदुरस्त रहना चाहिए, क्योंकि उपवास में बापू की सम्भाल की जिम्मेदारी तुम्हारी होगी। हम सब मदद करेंगे

पुजारिन है। पक्षियो, पौधो और जानवरो के बारे में जो पूछना हो उससे पूछो। इन चीजो का वे अभ्यास करती है और उसमें से रस के घूट लेती है।"

दोपहर में ढाई से तीन बजेतक काता। बापू पहले की तरह फिर रामायण में काट-छाट करने लगे है। कल काट-छाट द्वारा निकाला हुआ भाग ही पढा। तुलसीदास के रामजी की बरात के लम्बे-लम्बे वर्णन सुनते-सुनते बा थक गई थीं। इसीलिए बापू ने उनमें से बहुत-से अंश छोड दिये है।

आज वाइसराय के उत्तर की आशा थी, मगर नहीं आया।

शाम को घूमते समय मैंने बापू से पूछा, "आप उपवास से क्या आशा रखते है?" बापू कहने लगे, "जो काम शुद्ध भाव से किया जाता है, उसका परिणाम अशुभ नहीं हो-सकता है। जो होगा, अच्छा ही होगा। बात इतनी है कि मै राजकोट की तरह कोई गलती न कर बैठू। वहा मैंने वाइसराय को अपने और ठाकुर के बीच चलती हुई लडाई में ईश्वर का स्थान देदिया था। वह भारी भूल थी। इसीलिए मैंने वहा सब मिली हुई चीजें फेंक-दीं। वह भूल न करता तो राजकोट के उपवास का अद्भुत असर होनेवाला था। उप-वास में मनुष्य का मस्तिष्क कहातक साफ रहता है, कहा नहीं जासकता। पता नहीं कि ईश्वर ने क्या सोचा है? मै लोप भी होजाऊ तो वह अशुभ परिणाम नहीं कहा जासकता। इसका अर्थ यह है कि भगवान दूसरी तरह से काम करना चाहता है। हमें ईश्वर के कामो की आलोचना करने का अधिकार नहीं।"

सर्दी थोडी कम हुई है, मगर रात को एक बजे से सुबह सूर्योदयतक फिर बढी थी।

कटेली साहब आज भी रात को बहुत कम सो सके। दिन में उनका दर्द कम रहता है, मगर रात को बढता है।

शाम को मै और भाई घूमने के बाद बैडमिन्टन खेलने गए। रघुनाथ भी हमारे साथ खेलने आया। मीराबहन ने खेलना छोड दिया है। हम खेल चुके तब सिपाही लोग खेलते रहे।

६ फरवरी '४३

आज शनिवार है। सुबह सरोजिनी नायडू समाधि पर आई। बापू कहरहे थे कि उनकी नियमितता अद्भुत है। कुछ भी हो। वे शनिवार को नहीं चूकती है। मीराबहन भी आई। बा नहीं आई। वे आजकल थकी-सी रहती है। उन्हे चिंता खाए जाती है।

बापू ने बाइबिल के 'न्यू टेस्टामेंट' का मफेटवाला अनुवाद मगाया है। मुझसे कहरहे थे, "शाम को 'न्यू टेस्टामेंट' पढना। तू बाइबिल लेकर बैठेगी, मैं अनुवाद हाथ में रखूगा। 'ओल्ड टेस्टामेंट' अब अपनेआप पढना।" मगर शाम को पहले तो उन्होंने मुझे खेलने भेज दिया। पीछे रामायण की काट-छाट दिखाकर मुझसे दूसरी दो रामायणो में निशान लगाने को कहा। उसमें सारा समय चला गया।

वाइसराय का उत्तर आज भी नहीं आया। शाम को घूमते समय बापू कहने लगे,

चितक बापू

"आप उपवास मे क्या आशा रखते है ?"

"पता नही कि ईश्वर ने क्या सोचा है। हमे ईश्वर के कामो की आलोचना करने का अधिकार नही।" पृष्ठ २०८

"शायद उत्तर भेजें ही न। उत्तर की जगह उन्हें जो कुछ करना होगा, उसकी सूचना मोदी भडारी इत्यादि के पास भेज देंगे।" भाई मे कहने लगे, "मान लो, इस उपवास के कारण मैं लोप हो जाऊ तो तुम लोगों से मैं क्या आशा रखूगा, यह समझ लो। महादेव की मैं भाट की तरह स्तुति करता हू, मगर मेरा मन उसकी शिकायत भी करता है। उसकी मिसाल सम्पूर्ण या आदर्श नही मानना चाहिए। वह इस विचार का जप करते-करते चला गया कि 'मैं बापू के बाद क्या कर सकता हू ? बापू से पहले चला जाऊ तो अच्छा है।' मगर उसे तो कहना चाहिए था कि 'नहीं, मुझे तो जिदा रहना है और बापू का काम करना है'। यह दृढ सकल्प उसे मरने से रोक भी लेता। मैं अगर इस उपवास में लोप हो जाऊ तो मैं अपना सदेश अधूरा छोड जाऊगा। सत्याग्रह के विज्ञान को मैं पूरी तरह देश के सामने अभी नही रख सका। मेरे बाद मेरा सदेश जनता तक कौन पहुचावेगा ? जो लोग मेरे साथ रहे ही नहीं, मुझे जानते ही नही, वे लोग यह काम करेगे या तुम लोग ? मैं मानता हू कि वह तुम्हारा काम है। यह कहना कि हम क्या कर सकते है, उचित नहीं। ईश्वर पर श्रद्धा रखोगे तो वह तुम्हे शक्ति देगा कि तुम मेरे सदेश को कैसे पूरा करो। मेरा कहना है कि जैसे मैंने किया है, जो सिद्धात मैंने सबके सामने रखे है, जिन पर मैं आचरण करता हू, उन सबको तुम लोग अपने जीवन में धारण करो। तुम्हारा मार्ग अपनेआप तुम्हारे सामने खुलता जावेगा। तुम्हे और सुशीला को इसकी तैयारी करनी चाहिए। तुमने एक बार पूछा था कि सत्याग्रही जडवत् क्यो लगते है। मैंने उस दिन जो उत्तर दिया था, उसे स्मरण रखो। मेरे बाद वे जडवत् नही रहेगे। जबतक कोई रास्ता बताने वाला होता है तो सभी उसकी ओर देखते है और जब वह नहीं होता तो वे अपनेआप अपने पैरो पर खडे होते है। सो जब हमारे लोग अपनेआप अपने पाव पर खडे होगे तो भगवान् उन्हे अगला कदम सुझा देगा। आज से उसका विचार भी नहीं करना चाहिए।"

भाई कहने लगे, "इतना तो है ही कि आपके काम के लिए ही जीना अथवा मरना है। इससे अधिक आज क्या कहू ? पूछने को बहुत है, मगर आज हिम्मत ही नहीं होती। आपको कुछ और विशेष सदेश देना हो तो मुझे बता दें या लिख दें। मैं भी कुछ बाते आपके सामने लिखकर रखूगा।"

: ३९ :

वाइसराय का उत्तर

७ फरवरी '४३

हम सबने सोचा था कि शनिवार को वाइसराय का उत्तर न आया तो फिर सोमवार को ही आएगा। आज दस बजे डा शाह आए। मैं उनसे बात करने को निकली तो सामने से कटेली साहब आ रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा, "आपको नीचे उतरने

की इजाजत किसने दी ?" हसकर पूछने लगे, "बापू कहा है ?" बापू मालिश करवा रहे थे। वहा जाकर मि कटेली ने उन्हे एक बडा और एक छोटा लिफाफा दिया। बताया कि कल रात दस बजे एक एलची बम्बई से आया था। वह यह पत्र लाया था और आज सुबह ११ बजे उन्हे देने को कहा था। कटेली साहब ११ बजे के करीब बापू को पत्र दे गए। मैंने बापू को सुनाया। वाइसराय का उत्तर बहुत खराब था, गुस्से से भरा था। छोटे लिफाफे में लेथवेट का पत्र था। उसने पत्र-व्यवहार छापने के बारे में लिखा था। कटेली साहब ने कहा था कि उत्तर भेजना हो तो खास एलची के द्वारा भेजने का हुक्म है। गाडी दोपहर दो बजे और रात को आठ बजे जाती थी। बापू ने दो बजे वाली गाडी से जाने के लिए एलची को तैयार रखने को कहा। खाना खाकर भाई को उत्तर लिखवाया। सब पूरा हो जाने पर केवल आधा घटा बाकी रहा। इतने समय में साफ नकल नही हो सकती थी। एलची को आठ वाली गाडी से भेजने का निश्चय हुआ।

बापू आराम करने को लेटे, मगर कोई-न-कोई बात करने को आ जाता था, इसलिए वे सो न सके। भाई को लेथवेट के पत्र का उत्तर लिखवाया। माला फेरी, चर्खा काता। कातते समय भाई और मीराबहन ने कुछ सूचनाए कीं। सवा तीन बजे सब काम करके उठे। पहले भाई से कहा था कि वे मुझे पत्र लिखवा दें, मगर फिर विचार बदला। भाई ने लेथवेट वाला पत्र टाइप किया। मैंने फल का रस निकाला। साढे चार बजे बापू खाने बैठे तब मुझे लिखवाने लगे। बोलते-बोलते कई सुधार भी किये। एक घटे में सब काम पूरा हुआ। घूमते-घूमते बापू ने उस पत्र को फिर से पढा। वापस आकर मैंने और मीराबहन ने अपनी नकल पत्र के साथ मिलाई। पौने सात बजे तैयार करके कटेली साहब को दिया और प्रार्थना में बैठे। बापू का उत्तर बहुत अच्छा था। अपने-आप हृदय से निकला था। एक सास में बापू ने उसे लिखवा डाला था।

कटेली साहब कल रात इतना चले कि रात भर घुटने के दर्द के मारे सो नहीं सके। दिन में भी नहीं सोए। आज रात को उन्हे मार्फिया का इजेक्शन दिया। सो गए।

सरोजिनी नायडू बडी सहयोग की भावना मे थीं। मुझसे कहने लगीं, "सुशीला, तुम मुझे हुक्म देने में हिचकिचाहट न करना। मै तुमसे आदेश लेकर काम करने वाली हू। जिम्मेदारी तुम्हारी है। बताओ, क्या-क्या चाहिए ?" मैंने बताया।

८ फरवरी '४३

सुबह भडारी और डा. शाह आए। मैंने उन्हे आवश्यक चीजो की एक सूची दी। सलाह दी कि उपवास से पहले बापू के खून की परीक्षा और हृदय का चित्र वगैरा हो जाए। डा. शाह नाराज होकर बोले, "इससे क्या फायदा होगा ? मेरा तो इन चीजो में विश्वास ही नहीं। मै पुरानी फैशन का हू। मै लेबोरेटरी के बजाय अपने हाथ-पाव और आखो वगैरा पर अधिक भरोसा करता हू।"

मैंने कहा, "आप बड़े हैं। मेरी जो बात आप चाहें, रद्द कर सकते हैं। मैंने तो सलाह दी है कि यह करवाना चाहिए।"

डा. शाह कहने लगे, "नहीं-नहीं, मैं प्रयत्न करूंगा कि तुम्हें सब कुछ मिल जावे। मगर समय लगेगा। मुझे हुक्म है कि किसीसे उपवास का जिक्र न करूं, इसलिए मेरी परिस्थिति जरा कठिन है।"

भंडारी भी कह रहे थे, "यह सब क्यों करवाना चाहती हो? क्या पहले उपवासों में यह सब करवाया था?"

भाई कहने लगे, "हां।"

दोनों बहुत घबराए हुए थे।

आज बापू का मौन था। सबने समय पर खाना, दिन में अपना-अपना काम करते रहे। कल उपवास शुरू होगा, इससे सबके दिल बैठे हुए थे। शाम को मैं खाना ला रही थी तो मन में आया, "फिर कब इस तरह बापू के सामने खाना रखेंगे?"

भाई टाइप करने में लगे रहे। शाम को बापू को खाना देकर साढ़े चार बजे हम लोग खाना खाने बैठें। इतने में पौने पांच बजे। कर्नल भंडारी और अरविन सरकार का उत्तर लाये थे। उत्तर पढ़कर बापू ने मौन न छोड़ते हुए अरविन को लिखा—"इसमें मेरे साथियों का उल्लेख है, इसलिए मुझे अपने साथियों से बात करनी होगी। अगर आप बगैर तकलीफ के ६ बजे आ सकें तो अच्छा होगा।" अरविन ६ बजे आने को कहकर चले गए। ६ बजे आए और बापू ने अपना उत्तर उन्हें दिया। उसे पढ़कर अरविन ने कहा, "आपने लिखा है कि यदि जरूरत हो तो आप अपना उपवास एक दिन के लिए स्थगित कर देंगे। आप जरूर ऐसा करें, इससे हमें बहुत मदद मिलेगी।"

बापू ने यह स्वीकार कर लिया।

: ४० :

उपवास : अग्निपरीक्षा

पहला सप्ताह

१० फरवरी '४३

सरकार को दिये गए नोटिस के अनुसार बापू ने आज सुबह के नाश्ते के बाद उपवास शुरू किया। उपवास शुरू होते समय हमेशा प्रार्थना की जाती है। आज भी बापू के नाश्ते के बाद हम सबने छोटी-सी प्रार्थना की। बापू का दिन का कार्यक्रम रोज की तरह चला। सुबह-शाम घूमना, समाधि पर फूल चढ़ाना, दिन में पढ़ना-लिखना, कातना—सब रोज के निश्चित समय पर बापू ने किया।

मुझे बुलाकर कहने लगे, "उपवास में मेरी सेवा की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी

तुझ पर आने वाली है। इसलिए तू लिखना-पढना और डायरी लिखना इस वक्त भूल जा।" भाई को बुलाकर बोले, "इन दिनो की डायरी तुम्हे रखनी हो तो रखो। सुशीला से उसकी आशा न रखना। इन दिनो में डाक्टरी का काम सारा समय ले लेगा। मै नही चाहता कि वह नीद वगैरह से समय निकालकर लिखने का काम करे।" मुझसे कहने लगे, "तू अगर लिखने का काम करेगी तो मै तेरी सेवा नही लूगा।" इसी वजह से उपवास की यह डायरी भाई के नोटो और डाक्टरी कान्फरेसो वाले अपने नोटो के आधार पर तैयार की है।

सरकार ने बापू को कहलाया था कि वे अपने लिए कोई डाक्टर चुन सकते है। बापू ने कहा, "सुशीला मेरे पास है। मेरे लिए वह बस है। अगर उसे मदद लेनी होगी तो वह माग लेगी।" मै विचारने लगी कि क्या बापू के उपवास की देखभाल की जिम्मेदारी अकेले मुझे ही उठानी चाहिए? स्थिति बिगडे तो क्या एक लडकी की बुलेटिन को सरकार वजन देगी? उपवास में दवा तो देनी नही होती, कोई खास इलाज तो करना नही होता, तो भी छोटी-छोटी बातो में डाक्टरो की मदद ली जा सकती है। सबसे बडी सेवा तो यह होती है कि देश और सरकार को बापू की स्थिति से ठीक-ठीक वाकिफ रखा जाय। मैने अपने विचार और उलझने बापू के सामने रखी। वे बोले, "हा, तेरा बोझ हलका करने के लिए दूसरो को बुला लेना अच्छा होगा।"

सो मैने सरकार को लिखा है कि वह डा० गिल्डर, डा० विधान राय और डा० जीवराज मेहता को भेजे। पहले के उपवासो में भी वे बापू की देखभाल कर चुके थे। मालिश इत्यादि के लिए प्राकृतिक चिकित्सा-गृह के डा० दीनशा मेहता को बुलाने का विचार किया।

११ फरवरी '४३

आज सुबह बापू चलकर महादेवभाई की समाधि पर आए। बाद में मालिश इत्यादि का कार्यक्रम चला।

डा० गिल्डर को आज सुबह यरवदा जेल से आगाखां महल में लाया गया। डा० साहब ने जेल में आकर दाढी बढा ली थी। उसे देखकर हम सब खूब हसे। मैने कहा, "डा० साहब, सिनेमा में जैसे लुई पास्चर लगते है, वैसे ही कुछ-कुछ आप दिखाई देते है।"

बापू ने दिन भर पानी पिया। अभी तक पानी पीने मे बहुत ज्यादा तकलीफ नही होती। मतली अभी शुरु नही हुई, मगर कमजोरी लगने लगी है।

कर्नल भण्डारी ने उपवास के दरम्यान मुलाकातो आदि के बारे मे बापू को निम्नलिखित सरकारी फैसला सुनाया:

(१) किससे मिलना है, यह फैसला गाधीजी को करना होगा। वे जिसे चाहे, बुला सकते है।

(२) जिस विषय पर वे चाहें, बात कर सकते हैं। इस बारे में कोई बंधन नहीं होगा ।
(३) मुलाकात के समय एक सरकारी अफसर हाजिर रहेगा।
(४) बातचीत की रिपोर्ट अखबारों में नहीं छप सकेगी।

इसके जवाब में बापू ने सरकार को लिखा कि मुलाकात मांगने का बोझ उन पर न डाला जाय। जो उनसे मिलना चाहें, सरकार उनसे बिना पूछे उन्हें इजाजत दे दे। जो आश्रमवासी सेवाकार्य में लगे थे, जिन्होंने पहले उपवासों में उनकी सेवा की थी, उन सभी को इस उपवास में उनकी सेवा की इजाजत दी जाय। इसके अलावा श्री मथुरादासभाई की तबीयत के बारे में भी खबर पुछवाई। अखबार में खबर थी कि भमालीभाई भी बापू के साथ उपवास कर रहे हैं। बापू ने सरकार से प्रार्थना की कि वह उनका एक संदेसा टेलीफोन से भमालीभाई को उपवास छुड़ाने के बारे में भेज दे।

१७ फरवरी '४३

बापू की कमजोरी बढ़ रही है। वजन करीब दो पौण्ड रोज के हिसाब से घट रहा है, मगर पानी पी सकते हैं। किसी-किसी वक्त मतली तो होती है, मगर उलटी नहीं हुई। समाधि तक चलकर फूल चढ़ाने के लिए आज उनमें शक्ति नहीं थी। हम लोग फूल चढ़ाकर समाधि पर प्रार्थना कर आए।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' को आज सरकारी नोटिस मिला कि उपवास की खबर बड़े-बड़े शीर्षकों में न छापे। कोई शीर्षक दो कालम की चौड़ाई से अधिक न हो और सरकारी खबरों के अलावा उपवास के बारे में और कोई भी खबर बिना सरकार द्वारा सेन्सर कराए न छापी जाय।

दिल्ली में असेम्बली के बजट-सेशन के लिए कई नेता आये हुए थे। सब लोग श्री हृदयनाथ कुंजरू के मकान पर मिले और फैसला किया कि नेताओं की एक कान्फरेन्स जितनी जल्दी हो सके, बुलाई जाय। इस बारे में राजाजी व सर तेजबहादुर सप्रू को तार दिये गए। अखबारों से पता चलता है कि सारा देश बापू के उपवास की खबर से दहल गया है।

गर्मी एकाएक बढ़ गई है। बापू की खाट बरामदे में रखी थी। आज दोपहर को उसे भीतर लाना पड़ा।

अम्माजान (सरोजिनी नायडू) हम सबकी सम्हाल बहुत प्यार से कर रही हैं। अपनी बीमारी भूल गई हैं। कमर कसकर बापू की सेवा करने को तैयार हैं। सारा समय बापू के पास बैठती हैं। हमारे जेल सुपरिन्टेण्डेण्ट श्री कटेली साहब घुटने के दर्द के बावजूद भी दिन भर ऊपर-नीचे चक्कर काटा करते हैं। कर्नल शाह और कर्नल भंडारी भी आते हैं और बापू की तबीयत का हाल पूछकर चले जाते हैं। इन सरकारी अफसरों पर दोनों ओर से बोझ पड़ रहा है। बापू के प्रति हर हिंदुस्तानी के दिल में मुहब्बत और

इज्जत होना स्वाभाविक है, मगर साथ ही इन सरकारी नौकरो को सरकार को भी खुश रखना है। अपनी रोटी का सवाल है।

१३ फरवरी '४३

कल शाम से बापू की मतली बढ गई है। इसी कारण रात उन्हे अच्छी नींद भी नहीं आई।

अखबारो से पता चला कि दुर्गाबहन, नारायण और कनु कल रात पर्णकुटीर आ गए है। शाम को कटेली साहब ने कहा, "उन लोगो ने यहा आने को अर्जी दी है। बापू बुलावे तो उनका आना आसान हो जाएगा।" बा बापू से कहने लगीं, "बुलाइये न। बेचारी दुर्गा को आश्वासन मिलेगा।" बापू बोले, "मै किसीको बुलाऊगा नहीं, यह सरकार को लिख चुका हू। उसे जिसे आने देना हो, आने दे।" बा जरा निराश हुईं और थोडी नाराज-सी हो गईं। कटेली साहब से कहने लगीं, "सरकार से कहो कि श्रीमती गाधी दुर्गा, नारायण व कनु को बुलाती हैं। गाधीजी की सेवा के लिए इनकी जरूरत है।" बापू से बोलीं, "आप चाहे तो न बुलाए। मुझे भी तो कुछ हक है।" बापू हसने लगे। बोले, "सरकार तेरा हक माने तो चला।"

खबर मिली कि आज शाम को डा० विधान राय अपने एक सहायक के साथ कलकत्ते से रवाना हो गए है।

कर्नल भण्डारी तीन बार आए। मुलाकातो के बारे में चर्चा चल रही थी।

१४ फरवरी '४३

मतली और उल्टी के कारण बेचैनी अधिक हो गई। पानी पीने में भी कठिनाई आने लगी है। पानी में कुछ नीबू के रस की बूदें और नमक या सोडा डालकर पीने का प्रयत्न करते है। बेचैनी और कमजोरी के कारण पढना वगैरा भी कम हो गया है।

खबर मिली कि भसालीभाई ने उपवास छोड़ दिया है।

सुनते है कि ढेरो खत और तार उपवास के बारे में आ रहे है, मगर सरकार उन्हे कही जमा कर रही है। अखबारो में देखा कि डा० विधान राय आज की जगह कल यहा आवेगे। आज शायद बम्बई में रुक गए है। किसी अखबार वाले ने उनसे पूछा कि क्या गाधीजी उपवास पूरा करेगे? डा० राय ने उत्तर दिया, "१९३८ में उनका जो उपवास हुआ था, वह छोटा-सा था। आज तो उपवास लम्बा है और गाधीजी की उम्र भी ज्यादा है, सो चिता तो होती ही है। इस समय की परीक्षा कठिन है।"

बम्बई के सर्जन-जनरल कैंडी आज पूना आए है। बापू के कान में दर्द है। फुसी-सी लगती है।

कई मित्र और रिश्तेदार पूना आकर बैठे हुए है और मुलाकात करने के विषय में सरकार की इजाजत की राह देख रहे है।

सुनते हैं कि ठक्कर बापा भी आज यहां आ गए हैं।

१५ फरवरी '४३

मतली, उल्टी और बेचैनी सता रही है। नींबू और नमक के साथ भी पानी पीने में कठिनाई आ रही है।

सुबह जरनल कैंडी, भंडारी, शाह और मजिस्ट्रेट साहब बापू को देखने आए। रात को डा० विधान राय आए। उनसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। बाहर की ताजा हवा मिली।

आज दुर्गाबहन, नारायण और कनु को भी आगाखां महल में आकर रहने की इजाजत मिल गई है। उनके आने से बहुत अच्छा लगा। उनको महादेवभाई की समाधि पर ले जाते समय सबके दिल भरे थे, आखें भीगी थीं। दुर्गाबहन के लिए बापू के पास आना इस समय दवा-रूप है। वे लोग उपवास पूरा होने तक यहीं रहेंगे।

कर्नल भंडारी और शाह आज तीन बार आए। प्रार्थना में लीन हो जाने पर बापू की तकलीफ अपनेआप कुछ कम हो जाती है। प्रार्थना तो हमेशा सुबह-शाम होती ही है। इस उपवास में गीता-पारायण नहीं करवाते।

दिन भर बापू का मौन रहा।

१६ फरवरी '४३

सुबह डा० गज्जर बापू के रक्त व गुर्दे के काम आदि की परीक्षा के लिए आए। बापू की हालत और बिगड़ी है। अशक्ति इतनी है कि पानी का गिलास पकड़ना भी कठिन हो रहा है। उन्हें पहियेदार खाट पर सुला रक्खा है। यह खाट पेट का आपरेशन हो जाने के बाद रोगी के काम आती है। उठाने-बिठाने के समय चाबी घुमाने से खाट अपनेआप उठ जाती है।

बापू की अशक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आवाज बहुत कमजोर हो गई है, मगर डाक्टर इत्यादि आते हैं तो सबसे हंसकर बात करते हैं। शांतिकुमारभाई मिलने आए थे। उनसे बापू ने कहा, "कोई ऐसा न माने कि आज जो बाहर चल रहा है, उसमें मेरी सम्मति है। बम फेंकने में तो मेरी इजाजत हो ही नहीं सकती। रेल, तार, टेलीफोन आदि तोड़ने-फोड़ने के बारे में सत्याग्रह हो सकता है, मगर मेरी कल्पना आम कल्पना से बिलकुल जुदा किस्म की है, यह अगर मैं बाहर होता तो बताता। उसमें छिपी नीति की गुंजाइश है ही नहीं। वह केवल मौत का निशाना बन जाने का साधन-रूप है। जो लोग ऐसा सत्याग्रह करना चाहें, वे खुले तौर पर ऐलान कर दें कि अमुक समय पर हम तार काटने आवेंगे। आप अपनी पुलिस और फौज को बुला लें। एक-एक, दो-दो, आदमी वहां जाएं और गोली खाकर प्राण दे दें। हजारों-लाखों को जहां तैयार करना हो, वहां छिपी नीति का स्थान नहीं।

"जो लोग छिपकर काम कर रहे है, उनसे मै कहूगा कि वे अपनेआपको सरकार के हवाले न करे; क्योकि हो सकता है कि उन्हे बरसो तक जेल में रहना पडे। उन्हे अपनेआप भीतर से लगे कि यह बात ठीक है, छिपी नीति से देश को नुकसान होता है तो वे खुले तौर पर अपनेआप को सरकार के हवाले कर दें।"

शातिकुमारभाई ने पूछा, "छिपकर अहिंसा का काम किया जा सके तो क्या वह भी नही करना चाहिए ?"

बापू बोले, "मेरी तो मान्यता यह है कि गुप्त नीति की जड में ही हिंसा है। इसलिए छिपाकर बुलेटिन निकालना भी हिंसा है। अपने मित्रो को मेरा यह सदेश पहुचा देना।"

अखबारवालो ने डा० बिधान राय से पूछा, "क्या गाधीजी बच जाएगे ?"

डा० राय का उत्तर था, "गाधीजी कभी-कभी डाक्टरो को चक्कर में डाल देते है, सो निश्चित रूप से मै कुछ नहीं कह सकता।" आज बुलेटिन लिखते समय हम ६ डाक्टर मौजूद थे---जरनल कैण्डी, डा० बिधान राय, डा० गिल्डर, कर्नल भण्डारी, कर्नल शाह और मै। हमारी बुलेटिन सरकार के पास चली जाती है। पहले डा० गिल्डर और मेरे दस्तखतो से ही जाती थी। अब सबके दस्तखतो से जाती है। सरकार को जो ठीक लगता है सो छापती है।

बापू का आज का दिन कल से अच्छा रहा, मगर स्थिति तो भी चिन्ताजनक है।

शातिकुमारभाई के साथ वातचीत करते हुए बापू ने कहा, "हमारी शोभा अहिंसक मार्ग पर चलने में ही है। हमारे सामने चार आदमियो की बात नही, चार सौ की नहीं, चार हजार की नहीं, बल्कि चालीस करोड की है। मैंने तो सीधा रास्ता बताया है। कुछ भी न कर सको तो अपना कपडा खुद पैदा करो। विदेशी माल बिलकुल इस्तेमाल न करो। इतना समझ लो कि अग्रेजी माल और विदेशी माल में कोई फरक नही है। तुम्हारे पिता बुर्श विदेश से मगवाते है। मैंने कारण पूछा तो कहने लगे, "वहा अहिंसक मिलता है---यहा अहिसक नही मिलता।" मैंने कहा---तो फिर बुर्श छोडकर दातुन इस्तेमाल कीजिए, मगर मेरे घर में ही बुर्श इस्तेमाल होता है। सुशीला और प्यारेलाल के पास बुर्श है और भूल नही करता तो महादेव का भी बिना बुर्श काम नही चलता था। इन लोगो के बक्स में शायद और विदेशी चीजें भी मिल जाएगी, जैसे कि पेन है, घडी है, इत्यादि। तुम्हारे बक्स में भी होगी। सो मेरा अपना ही घर फूटा है।

"मैंने जो अहिसा का मार्ग बताया है, उस पर लोग न चल सकें तो अपने रास्ते पर चले। पर मेरा नाम न इस्तेमाल करे। मै जबतक बाहर न निकलू, तबतक कुछ कह नही सकता। मै तो जो था, वही हू, सरकार भले वह न पहचाने। मगर सरकार पहचाने या न पहचाने, ईश्वर तो पहचानता है। मेरा मत्र 'श्री राम' नही, 'हे राम' है। वह मेरा साक्षी है। मै जानता हू कि वह मुझे पहचानेगा।

"इतना समझ लो कि मेरा उपवास किसीके सामने (विरुद्ध) नहीं है। मैं न्याय मागता हू। सरकार किसी निष्पक्ष आदमी को सबूत के साथ मेरे पास भेजे। वह मुझे समझा सके या मैं उसे समझा सकू तो मुझे उपवास नहीं करना। बाहर जाकर मुझे यदि लगे कि इतने सालो में कुछ भी काम नहीं हुआ और न होगा तो मुझे उपवास करके मरना पडेगा। वह अलग बात रही।

"आज हजारो लोग भूखो मर रहे है। मैं बाहर जाऊ तो बहुत कुछ कह और कर भी, मगर इस बार सरकार की नीति अलग ही किस्म की है। उसे क्या पडी है। लोग मरे चाहे जियें। वाइसराय भला है, एमरी भी भला है। ये दोनो और चर्चिल एक गुट्ट ही है। एक ही स्कूल में रह है। इसीलिए तो वाइसराय की मुद्दत इतनी बढाई गई है। इन तीनो ने निश्चय किया है कि काग्रेस को झुकाना है।

"लोगो को तोड-फोड करना हो तो वह भी खुले तौर पर करना चाहिए। हिंसा करनी हो तो वह भी खुले तरीके से। मारना है तो मारो। मगर याद रखो, इस रास्ते से हिन्द कभी आजाद नहीं होगा। कभी स्वराज नही मिलेगा। जर्मनी-जापान हिंसा का रास्ता ले सकते है। वे छोटे-छोटे रास्ते है, मगर हमारे देश हिन्द के चालीस कोटि लोग हिंसा-मार्ग ग्रहण करे तो दुनिया का नाश है। हम सीधे रास्ते पर चले तो जगत् को भी वही रास्ता बता सकते है।

"मैंने सीधे-से-सीधा रास्ता बताया है। और सब छोड दो। घर में जो चीज बन सकती है, वह बनाओ और इस्तेमाल करो। सूत कातो और बुनो। एक-एक देहात को स्वतत्र, स्वावलम्बी बनाओ, पीछे कोई सरकार तुम्हे दबा नही सकती। और आज तो सरकार को भी वह अनुकूल होगा।

"कोई ऐसा न माने कि बाहर जो चल रहा, है वह सब मुझे पसद है। मै यह भी नहीं कह सकता कि वह अहिंसा की ढाल में आता है।"

प्रश्न—'तो जो लोग छिपकर काम कर रहे है, वे अपनेआपको सरकार के हवाले कर दें ?"

बापू ने कहा, "छिपकर काम करना मेरी इच्छा के विरुद्ध है। मुझे तो यह अच्छा लग ही नही सकता। मैंने हमेशा छिपी नीति की निन्दा की है। मगर मेरे कहने से कोई अपनेआपको सरकार के हवाले न करे। मेरे विचारो को हजम कर लें तो ऐसा करे। इसका यह भी परिणाम हो सकता है कि उन्हे कई सालो तक अदर रहना पडे।

"जब हम पकडे गए तब जवाहरलाल ने मुझसे गाडी में पूछा, "अहिंसा में गुप्त नीति को स्थान है ?" मैंने कहा, 'नही।' मैंने पकडे जाने पर कहा था, 'पकडे जाने पर मेरी सरदारी पूरी हुई। अब जिसे जो ठीक लगे सो करे। इतना जरूर है कि अहिंसा की चहारदीवारी में रहकर जो हो सके, वही करना।' जो लोग बाहर है, वे अपनी मति के अनुसार चलते रहें। अहिंसा को चला सके तो चलावे। यह लडाई यदि अहिंसक

तरीके से चल सकेगी तो हम बहुत आगे बढ सकेंगे । मै समझता हू कि तोड-फोड का तरीका हमारे लिए नहीं है । अहिंसा के नाम पर यह सब चले तो ठीक नहीं ।"

दूसरा सप्ताह

१७ फरवरी '४३

आज मतली थोडी कम हो गई है, पर कमजोरी और पानी पीने में तकलीफ बढती जा रही है । बापू कभी सादा पानी पीते ही नहीं । कहते थे---सादा पानी पीने की आदत ही छूट गई है । हम लोगो को पानी का गिलास एक सास में पीते देखकर उन्हे आश्चर्य हुआ करता है । उपवास के पहले भी सामान्यत सादा पानी पीने से उन्हें मतली-सी लगती थी । सो फल का रस या पानी में नीबू और शहद डालकर लेते थे । पर उपवास में शहद नहीं लिया जा सकता । फल का रस भी नहीं पी सकते । इसलिए उपवास का निश्चय करते समय उन्होंने ऐलान किया था कि पानी न पी सके तो उसमें थोडा-सा फल का रस डाल लेंगे; क्योंकि पानी के बिना आदमी २१ दिन नहीं जी सकता । बा और दूसरे लोग बापू से कह चुके है कि अब तो वे फल का रस पानी में डालकर लिया करे, मगर वे मानते नहीं । कहते है कि अभी समय नहीं आया । इधर पानी कम जाने से पेशाब कम आ रहा है । शरीर में जहर इकट्ठा हो रहा है । सबकी चिंता बढ रही है ।

आज बापू के हृदय की गति का चित्र (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम) लिया गया । खून इत्यादि की रिपोर्ट अभी नहीं आई । शरीर में पानी इकटठा न हो, इसलिए नमक और खाने का सोडा बद किया है । उसकी जगह पोटेशियम के नमक मगाए है ।

सुनते है, वाइसराय की कौन्सिल के तीन मेम्बरो---श्री एच पी. मोदी, श्री एन आर. सरकार और श्री अणे---ने इस्तीफा दे दिया है । इस्तीफे का कारण है बापू के उपवास के विषय में सरकार की नीति के साथ उनका मदभेद । इस्तीफा मजूर भी हो गया है । श्री एन. आर. सरकार ने एक छोटे-से वक्तव्य में कहा है, "हिन्दुस्तान के सबसे बडे आदमी के बारे में सरकार की नीति से मतभेद होने के कारण मैंने इस्तीफा देने का निश्चय किया है । वह सबसे बडा आदमी हमारे स्वराज्य के ध्येय की जागती मूर्त्ति है । वह सामाजिक और जीवन के ऊचे-से-ऊचे आदर्शों को सामने रखने वालो में सबसे आगे है । उनका जीवन हिन्दुस्तान में अलग-अलग कौमों की मित्रता के लिए और हिन्दुस्तान व ब्रिटेन की मित्रता के लिए अत्याश्यक है । हमारी क्षुद्र शक्ति उनका जीवन बचाने के लिए कुछ काम न कर सकी, मगर मुझे विश्वास है कि जहा हम निष्फल हुए है, वहा सर्वशक्तिमान ईश्वर स्वय उनकी रक्षा करेगा और हमारे लिए उन्हे बचा लेगा । मेरी यही प्रार्थना है कि देश की सेवा के लिए वे बहुत वर्ष जियें ।"

आज ठक्कर बापा, अमतुलबहन और श्रीमती ठाकरसी बापू से मिलने आए । डाक्टर गिल्डर और मैं दिन-रात बापू के पास ही है । रात की ड्यूटी मेरी रहती है और

दिन की डाक्टर साहब की। मुलाकातियों से ज्यादा बातें न करने देने का काम डाक्टर साहब के सिर डाला गया है। जैसे-जैसे बापू की शक्ति कम होती जाती है, कोशिश की जा रही है कि वे बोलचाल कम करें जिससे शक्ति कम खर्च हो। उद्विग्न करनेवाली बातें नहीं होने देते, मगर काम कठिन है। इतने पुराने-पुराने साथी—मित्र मिलना चाहते हैं। सब जानते हैं कि उपवास के बाद बापू से नहीं मिल सकेंगे। उन्हें रोकना या जल्दी चले जाने को कहना कठिन है, मगर क्या किया जाय! डाक्टरों को तो यह कठिन काम करना ही पड़ता है।

बापू के पास जाने से पहले और पीछे बा और सरोजिनी नायडू लोगों के साथ बातें करती हैं, भाई भी करते हैं। इससे मिलने आने वालों को कुछ अच्छा लगता है। वे भी समझते हैं कि बापू को शक्ति-संग्रह करना चाहिए।

मुझे डाक्टर साहब दिन में कुछ नींद लेने के लिए भेज देते हैं। इसलिए अक्सर दोपहर की मुलाकातों के वक्त मैं मौजूद नहीं होती।

ठक्कर बापा से बातें करते हुए बापू ने कहा, "किसी हुकूमत ने ऐसा नहीं किया जैसे कि इस हुकूमत ने किया है। इसने मर्यादा छोड़ दी है। झूठ की तो पहले से ही भरमार है। वाइसराय ने भी हद ही कर दी है।

"मैं कहता हूं कि मुझ पर मुकदमा चलाइए, मेरे गुनाह का सबूत दीजिए। अगर मेरी भूल मुझे मालूम पड़ेगी तो मैं माफी मांगूंगा। ये लोग मुझ पर कितनी तोहमत लगाते हैं। मैं कहता हूं कि मैं गुनहगार नहीं हूं। रूस में भी मुकदमा चलता है। मगर मुझे उसका भी मौका नहीं दिया जाता। मुझे न्याय चाहिए।"

ठक्कर बापा बोले, "और वाइसराय कहता है कि अपने गुनाह के परिणाम से बचने के लिए आप उपवास करते हैं।"

बापू ने कहा, "बस, ऐसे हैं! नीचता की हद नहीं रही।" फिर कहने लगे, देवदास मुझे देखने की ही खातिर आने की सोचता हो तो उसे संयम रखना चाहिए। वहां काम कर रहा हो तो यहां आने की जरूरत नहीं।"

१८ फरवरी '४३

कल रात को नींद अच्छी आई, बेचैनी कम हो रही है, मगर डाक्टर लोग इससे खुश नहीं हैं। पेशाब कम आ रहा है। यह नींद भी शरीर में जहर इकट्ठा होने का चिह्न हो सकती है। सुबह की परीक्षा में डा० विधान राय, डा० गिल्डर, मेजर जनरल कैण्डी, लेफ्टिनेण्ट कर्नल भण्डारी, लेफ्टिनेण्ट कर्नल शाह और मैं थे। हम सबके दस्तखतों से सरकार को यह बुलेटिन भेजी गई—

"नौ घण्टे की नींद लेने के बावजूद भी गांधीजी ताजगी महसूस नहीं करते। उनका मन और दिमाग हमेशा की तरह चौकन्ना नहीं है। हृदय बहुत दुर्बल है। स्थिति ज्यादा चिन्ताजनक है।"

रक्त-परीक्षा इत्यादि की रिपोर्ट आई। शरीर में पानी और जहर इकट्ठा हो रहे है। खबर मिली कि बम्बई सरकार के सलाहकार ब्रिस्टो और देवदासभाई पूना आने के लिए चल पड़े है। बाद में किसीने बतलाया कि यह तय करने के लिए ब्रिस्टो पूना आए थे कि अगर गांधीजी की मृत्यु हो जाय तो उनके शव को किस रास्ते से श्मशान ले जाना होगा। अर्थात्, सरकार की तैयारी है कि बापू को उपवास में मरने ही देना है।

किसीने कहा, "गांधीजी ने तो कहा है कि अपनी शक्ति के अनुसार उपवास करेगे। अब उनकी शक्ति समाप्त हो गई है, इसलिए उपवास क्यो नहीं छोड देते?" बापू ने समझाया कि शक्ति के अनुसार उपवास करने का यह अर्थ नहीं कि खतरा आने पर उपवास छोड देना। उसका अर्थ इतना ही है कि यह उपवास आमरण नहीं।" उन्होने उपवास से पहले अन्दाज लगाया था कि २१ दिन का उपवास करने की उनकी शक्ति है, सो २१ दिन तो पूरे करने ही हैं। ईश्वर को रखना होगा तो रखेगा। ले जाना होगा तो ले जाएगा। अगर उनका अपनी शक्ति का अदाज गलत सिद्ध होगा तो उन्हे परिणाम भुगतना होगा।

भाई ने आज टॉटेनहम को जाने वाला खत तैयार करने के लिए और सब कामो से छुट्टी ली। दोपहर में वह खत तीन बजे गया। ठक्कर बापा मिलने आए। बापू उनसे बाते करते हुए कहने लगे, "प्यारेलाल ने एक खत तैयार किया है। उसमें मेरे शब्दो का हवाला देकर बताया है कि जो हिंसा चली है, उसमें मेरा बिलकुल हाथ नही।"

फिर बातचीत में कहने लगे, "बाहर जो चल रहा है, वह मुझे बिलकुल पसद नहीं, मगर तो भी यहा बैठा तो उसकी खुली टीका या निन्दा करने को तैयार नही, क्योकि उनके बारे में मुझे जो कुछ कहना है, उससे कहीं ज्यादा मुझे सरकार की नीति की टीका करनी है। सरकार लोगो को इतना उकसाए, उनसे हिंसा करवाने पर ही तुली हो तो वह इसमें सफल हो सकती है। आम जनता कोई फरिश्ता नहीं है। अहिंसा का मार्ग बताने वाला कोई हो नही तो वह सहज ही हिंसा के प्रवाह में बह सकती है। मगर सरकार की हिंसा जनता की हिंसा से कही ज्यादा है। ऐसी हालत में केवल लोगो का यहा बैठकर टीका या निन्दा करना ठीक नहीं।

"अहिंसा के बारे में मेरे विचारो में जरा भी फर्क नहीं आया। अगर है तो इतना कि अहिंसा में मेरी श्रद्धा दृढ हुई है। हा, एक बात में फर्क कहा जा सकता है। अब मैं यह नहीं कहता कि देश भर में अहिंसा का वातावरण हो, तभी अहिंसा चल सकती है। मैंने सोचा कि अगर देश में कहीं भी हिंसा होने पर—सरकार तो किसी भी एक आदमी से हिंसा करा सकती है—मुझे अहिंसा का प्रयोग बन्द करना पडे तो मैं अहिंसा की शक्ति को कभी सिद्ध ही नहीं कर पाऊगा और हिंसा का जवाब तो मैं अहिंसा के प्रयोग को सिद्ध करके ही दे सकता हू।"

दिन बढने के साथ यूरीमिया का जहर भरने के चिह्न भी बढते जा रहे है। रात

को बापू कहने लगे, "कुछ अच्छा नहीं लगता। पेट में भी तकलीफ है, सिर में भी।" 'हे राम' वाला चित्र सामने टगा था। उसकी बातें करते हुए बोले, "बस यही एक आधार है। ईश्वर, तू जो करता है, जो करेगा, वही ठीक है। मैं तेरी इच्छा के अधीन हू, न कि तू मेरी इच्छा के। यही नाद अदर से निकलता है।"

रात को गरम मिट्टी की पुल्टिस गुर्दों पर लगाई।

१६ फरवरी '४३

रात को बार-बार मुह में राल आने से थूकना पडता था। इसलिए अच्छी तरह सो नहीं सके, किंतु सुबह तबीयत के बारे में पूछा तो कहने लगे, "बहुत अच्छा लगता है।" आसपास की बातो में आज बहुत रस ले रहे थे। मगर कमजोरी बढ रही है। पानी का गिलास हाथ में लेते हैं तो हाथ इतना कापता है कि गिलास मानो गिर जाएगा। मगर अपने हाथ से पानी पीने का आग्रह आज भी रखा।

डा० विधान राय, डा० गिल्डर और मेरे नाम पर सब मुलाकातियो से प्रार्थना की गई कि मुलाकात करने आकर वे बापू की शक्ति का व्यय न करें। पहले मुलाकातियो को २० मिनट देते थे। कमजोरी बढने पर डा० गिल्डर ने समय आधा कर दिया। कल तो तीन-तीन मिनट की मुलाकात ही दी। आज इतनी भी शक्ति नही लगती।

शाम को तबीयत फिर ज्यादा बिगडी। कान का दर्द भी बढ गया। बात-बात में कहने लगे, "किसी तरह चैन नही पडता। पानी पीता हू तो भी शान्ति नही होती। गले तक खट्टा-खट्टा भरा है।"

रामदासभाई सपरिवार बापू से मिलने आए।

भाई को बुलाकर बापू ने कहा, "महादेव के काम को पूरा न्याय देना हो तो मेरी शरीर-सेवा का लोभ छोडना होगा। वह तो जब चाहो कर सकते हो। लोगो से मिलो, बातचीत करो।"

श्री वैकुण्ठ मेहता आए। उनसे दो-तीन मिनट बात करके बापू कहने लगे, "और जो कुछ कहना हो, प्यारेलाल से कहो।" बातचीत खादी-कार्य के बारे में थी। बापू ने उसके बारे में कहा, "अगर जनता आज भी मेरे बताए मार्ग पर चलने को तैयार हो तो हफ्ते-दो हफ्ते के अन्दर हम आजादी ले सकते हैं। अगर उसके लिए आज जनता तैयार नही है तो फिर बहुत धीरज रखना होगा।"

दिल्ली में आज तीन रोज से हडताल चल रही है।

नेताओ की कान्फरेन्स आज दिल्ली में शुरु हुई। श्री नलिनी सरकार, मोदी और अणे ने वक्तव्य निकाले, "गाधीजी के उपवास के बारे में क्या करना, इस महत्त्व के प्रश्न पर हमारा सरकार से मतभेद हुआ। इस पर हमें लगा कि हम सब सरकारी पद पर नहीं रह सकते।"

लदन में इण्डिया लीग ने सभा कराई। लॉर्ड स्ट्रैबोलगी ने कहा, "ब्रिटिश सरकार

को चाहिए कि वह समझौते का रास्ता ढूंढने का फिर से प्रयत्न करे।" सभा ने प्रस्ताव पास किया कि गाधीजी को बिना शर्त तुरत रिहा कर देना चाहिए।

रात को बापू की स्थिति और भी चिन्ताजनक हो गई। पानी नहीं पी सकते थे। पानी अदर जाए तो गुर्दे काम करने लगें, पेशाब के साथ शरीर से जहर भी निकलने लगे। कार्बोनेटेड पानी पिलाने का प्रयत्न किया, मगर वह भी बहुत कम पी सकते हैं।

२० फरवरी '४३

बापू की स्थिति और बिगडी है। सुबह जब जनरल कैण्डी आए तब बापू सो रहे थे। सरोजिनी नायडू से कहने लगे, "अगर यह आदमी दो साल और जिए तो हिन्दुस्तान के लिए कितना फरक पड जाएगा। यह कैसे दु ख की बात है कि ऐसे आदमी की जान खतरे में पडे और इस कारण से कि जनता पर उसका इतना जबर्दस्त सच्चा प्रभाव है और वह प्रभाव डालने की उसमें योग्यता है।"

कुछ चर्चा हुई कि क्या नस में पानी और ग्लूकोज नहीं चढाया जा सकता? क्या ऐनीमा के पानी में ग्लूकोज नहीं डाल सकते? मैंने कहा, "गाधीजी वैसा करना कभी स्वीकार नहीं कर सकते। सरकारी डाक्टर ५० सी सी. की एक बडी पिचकारी ले आए। उनका रुख मुझे कुछ ऐसा लगा कि बापू की इजाजत न हो तो भी नस में या ऐनीमा में ग्लूकोज दे देना है। आखिर डाक्टर का धर्म तो मरीज को किसी प्रकार बचाने का ही है न! पर मुझे यह रुख भयानक लगा। मैंने डाक्टर गिल्डर से चुपके से कहा, "इन्हे समझा दीजिए कि बापू के साथ ऐसा करना बहुत खतरनाक होगा। इससे उनकी मृत्यु भी हो सकती है।" डा० गिल्डर ने फौरन बात उठा ली और इस तरह जबर्दस्ती ग्लूकोज इत्यादि देने का जोरो से विरोध किया। डा० बिधान राय आ गए। वे भी हमारे विचार से सहमत थे कि बापू के साथ धोखा नहीं किया जा सकता। जबर्दस्ती भी नही हो सकती। हमने तय किया कि अगर सरकारी डाक्टर ऐसा कुछ करेगे तो हम तीनो अपना लिखित विरोध सरकार के पास भेजेंगे। सरकारी डाक्टरो ने वह पिचकारी कटेली साहब से अपने पास रखने को कहा।

बापू के उठने पर हम सबने उनकी डाक्टरी परीक्षा की। परीक्षा के बाद जनरल कैण्डी ने बापू से एक मिनट बात करने की इच्छा प्रकट की। मै उन्हे फिर भीतर ले गई। भाई और कनु बापू के पास थे। जनरल कैण्डी मुझे कुछ घबराहट में लगे। मैंने पूछा, "क्या आप अकेले बापू से बात करना चाहते है?" उन्होने सिर हिलाकर 'हा' कहा। हम सब बाहर चले गए।

थोडी देर में जनरल कैण्डी पिछले दरवाजे से बाहर निकलकर पिछले बरामदे की तरफ चल दिये। हम लोग उनका इन्तजार कर रहे थे। डाक्टर गिल्डर को क्षण भर लगा कि वह रास्ता भूल गए है। उन्होने दो बार पुकारा, "जनरल, इस तरफ।" मैंने रोका, जनरल कैण्डी जानबूझकर उधर गए है।

उनकी आखों में आसू भरे है। डा० विधान राय शरारन करके उनके पीछे देखने गए। आवाज देने लगे, "जनरल, जनरल, रास्ता इधर है।" कैण्डी रुक गए। डा० विधान ने पूछा, "उन्होने क्या कहा?" आखें पोछते हुए जनरल कैण्डी ने कहा, "कुछ नहीं।" और आगे चल दिए।

बापू ने हमें बाद में बताया कि हमारे जाने के बाद जनरल कैण्डी कमरे में घूमने लगे। वे इतने उद्विग्न थे कि बोल नहीं सकते थे। थोडी देर बाद आकर बापू के पास कुर्सी पर बैठ गए, मगर बोल नहीं सके। फिर उठकर कमरे में चक्कर लगाने लगे। आखिर हिम्मत करके आए और कहने लगे, "मि० गाधी, एक डाक्टर की हैसियत से मुझे आपसे कहना चाहिए कि आपकी उपवास करने की शक्ति की मर्यादा खत्म हो गई है।" बापू चुपचाप सुनते रहे। मगर कैण्डी आगे नहीं बोल सके—रो पडे। बापू ने उन्हें आश्वासन दिया, "क्यो घबराते हो? मै ईश्वर के अधीन हू। मैने अपनेआपको उसके हाथो में रख दिया है। उसे ले जाना होगा तो ले जाएगा। मै जाने को तैयार हू। काम लेना होगा तो रख लेगा।"

हम लोग जनरल कैण्डी को पिछले बरामदे में छोडकर बडे कमरे की एक मेज के पास जा बैठे। यहीं पर रोज बुलेटिन लिखी जाती है। कर्नल भण्डारी और शाह कहने लगे, "आज की बुलेटिन बहुत जोरदार शब्दो में लिखनी होगी।" हम लोगो ने एक मसविदा तैयार करना शुरू किया। करीब दस मिनट में जनरल कैंडी शात होकर वापस आए। हमेशा की तरह हमने उन्हीं के हाथ में बुलेटिन लिखने के लिए कागज और कलम दी। उन्हे कुछ दिक्कत हो रही थी। करीब आधा मसविदा तैयार हुआ था। वह उनके सामने रख दिया। उन्होने उसमें से वाक्य ले लिये। हमारे मसविदे के वाक्य "ऐसे चिह्न प्रकट हो रहे है कि शायद कुछ अवयवो को स्थायी नुकसान हो जाय" के स्थान पर उन्होने लिखा—"खतरे के चिह्न प्रकट हो चुके है।" बाद में हमें पता चला कि सरकार ने कैण्डी को गाधीजी को यह बता देने को कहा था कि उनकी जान खतरे में है, ताकि अगर मृत्यु हो जाय तो सरकार अपनी सफाई पेश कर सके। सरकार का अपना रवैया बदलने का इरादा बिलकुल नहीं था। सो बेचारे कैण्डी के सिर यह आपद्-धर्म आ पडा। इससे वे बडे सकट में पडे।

देवदासभाई सपरिवार आए। ब्रेल्वी भी आए। शातिकुमार और ठक्कर बापा से जो बाते हुई थीं, उसी ढग की ब्रेल्वी के साथ हुई। ब्रेल्वी ने पूछा, "अगर आप बाहर होते तो जनता की हिंसा के बारे में क्या कहते?"

बापू बोले, "जनता के बारे में जो कुछ भी कहता, उससे बहुत अधिक मुझे सरकार के लिए कहना पड़ता। मगर वह मै आजादी में ही कर सकता हू, जेल से नहीं। यह भी समझ लो कि किसी भी चीज के बारे में पूरी जाच-पडताल किये बिना मै कोई राय दे ही नहीं सकता। यह चर्चा करना कि कोई खास काम अहिंसा में गिना जा सकता है या नहीं, उससे स्वराज मिलने में मदद मिल सकती है या नहीं, यह एक बात है, और खुले

तौर पर किसी चीज की टीका या निन्दा करना दूसरी बात है। ऐसा करने से पहले हर पहलू से उसकी पूरी जाच-पडताल करनी चाहिए। अगर मैं आजाद होता तो जो कई बातें हुई कही जाती हैं, उनकी टीका और निन्दा करता। इतना ही नही, बल्कि उन्हे होने ही नहीं देता। उनकी जगह मै ज्यादा असरकारी रास्ता जनता के सामने रखता। वह ज्यादा असरकारी होता, क्योकि वह शुद्ध अहिसा का मार्ग होता। मेरी लडाई की कल्पना आज बाहर जो हो रहा है, उससे अलग किस्म की थी। मगर जो लोग बरसो से अहिसक मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहे है, उन्हे भयानक हिसा के द्वारा कुचला जाय, यह क्या बात है? सरकार गुस्से से पागल बनकर बेहथियार कमजोर स्त्री-पुरुषो पर कभी नही हुए ऐसे जुल्म करे और परिणाम में वे लोग निराश होकर पागल बन जाए और बिना सोचे-समझे कुछ उल्टा-सीधा कर बैठें तो इतिहास उनकी हिसा को सरकार की हिसा के मुकाबले में अहिसा ही कहेगा, जैसे कि मैंने 'हरिजन' में लिखा था न कि पोलैण्ड के लोगो की जर्मनी के हमले के सामने हिसक लडाई लगभग अहिसक ही कही जा सकती है।"

ब्रेल्वी पूछने लगे, "अगर आप पकडे न जाते तो क्या आपने कौमी एकता के बारे में भी कुछ करने की सोची थी?" बापू बोले, "करने को तो बहुत-कुछ सोचा था और आशा थी कि कुछ कर भी पाऊगा, मगर विधाता ने कुछ और ही सोच रखा था। जिन्ना साहब के साथ मुलाकात तय होने वाली थी। मै शायद खास मुलाकात तय किये बिना ही उनसे मिलता और पता चलाता कि हमारे मतभेद किस-किस चीज पर थे और उन्हे दूर करने का कोई रास्ता है या नही, मगर वह सब होने का नही था।"

देवदासभाई ने बापू को बताया कि तोड-फोड में लगे रहकर भी हमारे लोगो ने इस बात का ध्यान रखा था कि किसीकी प्राण-हानि न होने पावे। उन्होने यह भी बताया कि इसके लिए क्या-क्या कोशिशें की गई थी।

बापू ने उत्तर दिया, "कुछ भी हो, अगर मै बाहर रहता तो ऐसी चीजें भी न होने देता। जो चीज छिपी रीति से ही चल सकती है, उसकी जड में विफलता भरी है। गुप्त नीति सत्य की विरोधिनी है, इसलिए अहिसा की विरोधिनी भी है। इसीलिए मेरी योजना में उसके लिए स्थान नही हो सकता। कई बार मुझे ऐसा लगता है कि तोड-फोड के कार्यक्रम की तात्त्विक चर्चा भी मुझे नही चलने देनी चाहिए थी। सम्भव था कि आज जो हो रहा है, वह न होने पाता।"

•

नेताओ की दिल्ली कान्फरेन्स में डा० जयकर ने प्रस्ताव पेश किया कि हिन्दुस्तान के हित की और देशो की परस्पर मित्रता की खातिर गाधीजी को तुरत छोड देना चाहिए। प्रस्ताव पास हो गया।

सप्रू साहब ने अपने भाषण में कहा, "ब्रिटेन के इतिहास से एक पाठ सीखने को मिलता है। वह यह कि ब्रिटिश सरकार हमेशा बागियो से समझौता करती है, वफादारो से नही। गाधीजी को गृह-मत्री ने बागी कहा है, मगर हम यही आशा रखते हैं कि

इन वागियो के साथ भी सरकार समझौता करेगी ही और जब वह दिन आवेगा तब हमारे जैसो को कोई पूछेगा भी नहीं।" अत में उन्होंने ब्रिटेन और सयुक्त राष्ट्रो से अन्तर्मुख होकर विचार करने की सलाह दी और कहा, "आज वे अपना धर्म भलीभाति समझ लें।"

डा० जयकर ने अपने भाषणो में कहा, "उपवास को एक तरफ रखकर भी सरकार को चाहिए कि वह गाधीजी को छोड दे। न्याय की खातिर और शाति की खातिर उन्हे छोडना जरूरी है। उपवास करके गाधीजी अन्याय के सामने अपनी आवाज उठा रहे हैं। सरकार ने उन्हें बेकार बनाकर बैठा दिया है। गाधीजी उसके सामने शिकायत करते हैं। गिरफ्तारियो से पहले उनके लेखो और भाषणो के पढने से साफ जाहिर है कि वे झट से कोई हलचल चलाने वाले नहीं थे। चलाते तो मजबूर होकर चलाते। यह भी स्पष्ट है कि लडाई के दरम्यान वे हिन्दुस्तान का राज्यतत्र एकदम बदलने की नहीं कह रहे थे। वे कह चुके थे कि ब्रिटिश और अमरीकी फौजें लडाई के अर्से में हिन्दुस्तान में रह सकती हैं। वाइसराय के साथ के पत्र-व्यवहार में गाधीजी की भाषा एक बागी की भाषा नहीं है। गाधीजी और दूसरे काग्रेसी नेताओ को जेल में डाले छ महीने गुजर गए हैं। हुकूमत ने सिवा उसी इलजाम को बार-बार दोहराने के आज तक किया ही क्या है?"

०

बापू को वाइसराय का उत्तर मिला। उसमें लिखा था कि १० फरवरी को सरकार ने जो वक्तव्य निकाला था, उसमें अपनी नीति स्पष्ट कर दी थी। उसके बाद कोई नई घटना नहीं हुई। उपवास की जिम्मेदारी गाधीजी की थी। उसे छोडने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की है, हुकूमत की नहीं।

२१ फरवरी '४३

कमजोरी इस कदर बढ गई है कि बापू लेटे-लेटे ही नली से पानी पीने का प्रयत्न करते हैं। नली से चूसने के लिए भी शक्ति चाहिए। सो कभी-कभी चमचे से भी पानी मुह में डालना पडता है, मगर इस तरह बहुत कम पानी पिया जाता है। कल दिन भर में केवल चालीस औंस पानी पी सके। इसमें भी दो औंस खट्टे नीबू का रस था।

रात में नींद बहुत कम आई। करीब साढे चार घटे ही सोये होंगे। दिन में किसी चीज में रस लेने की इच्छा नहीं थी। यूरीमिया का नशा-सा लगता था। सास में ऐसीटोन की बू तो थी ही, यूरीमिया की बू भी कल शाम से लगती है। हृदय और नाडी बहुत कमजोर हो गई हैं। इस कमजोरी में वजन लेने के लिए उठना कठिन है। परसो १९ तारीख तक वजन १४ पौण्ड कम हो चुका था। आज की बुलेटिन में था—"यूरीमिया बढ रहा है। अगर अब उपवास छूटने में देर हुई तो जान बचाना कठिन हो जायगा।"

सुबह डा० शाह आए तो कहने लगे, "मैं और कौण्डी कल रात को बैठे सोच रहे थे कि यहा क्या हो रहा होगा और तुम लोगो का किसी समय भी टेलीफोन आ सकता है।

हमने यहा आने की भी सोची, मगर फिर सोचा कि इससे तुम लोगो को कष्ट होगा। आखिर दस बजे पलग पर जा पड़े। डर था कि रात को न जाने कब उठकर भागना पडे।"

मैंने कहा, "जी हा, पास वालो को तो चिता रहती ही है, मगर दूर वालो को तो और भी फिक्र रहती है।"

मेजर शाह बोले, "बेचारा कैण्डी तो बडी ही फिक्र में है । मुझसे कहता है कि काग्रेस को छोडो, मगर यह आदमी तो काग्रेस से ऊपर है। काग्रेस भले खतम हो जाय, यह आदमी नही खतम हो सकता। उसे खतम होने देना भी नही चाहिए। उसे बचाना ही चाहिए।"

दिन में अनुसूयाबहन, रामेश्वरदास बिडला, शकरलाल बैंकर इत्यादि मिलने आए। आज सबको दर्शन के लिए ही लाया जा रहा था। बापू में बात करने की शक्ति ही नहीं थी। दिन भर अधिकतर चुपचाप ही पडे रहे।

शाम को करीब चार बजे बापू की हालत एकाएक बिगडी। उस समय उनके कमरे में मै अकेली ही थी। उन्होने पानी पीने का प्रयत्न किया। नली से खीचकर पीने में बहुत थक गए। मुश्किल से एक-दो घूट ही पी सके। थककर लेट गए। एकदम जोरो की मतली आई। छटपटाने लगे, बेचैनी से हाथ-पैर पटकने लगे। आखें करीब आधी बन्द थी। मुझे ऐसा लगा, मानो बेसुध हो रहे है। नाडी पर हाथ रखा तो इतनी कमजोर थी कि मुश्किल से हाथ आती थी। मेरा हृदय धडकने लगा। अभी जाने क्या-क्या होने-वाला है! महादेवभाई की भाति क्या बापू भी आखो के सामने चले जायेंगे? मै जानती थी कि अगर पानी पी सके तो बच सकते है। सो हिम्मत करके पूछा, "बापू, वह समय नहीं आ गया है कि जब पानी में मोसम्बी का रस डालकर आपको दिया जाय?" कुछ देर तक उन्होंने उत्तर नहीं दिया। आखिर धीरे से सिर हिलाकर 'हा' कहा। मैंने डा० गिल्डर को बुलवाया था। वे आ गए। बापू को जो हुआ था वह समझाकर मैंने दो औंस मोसम्बी का रस निकाला और दो औंस पानी में मिलाकर औंस वाले गिलास से धीरे-धीरे बापू के मुह में डाला। इसका असर जलते कोयलो पर पानी पडने-जैसा हुआ। बेचैनी कम होने लगी। बापू ने आखें खोलीं। इतने में बा कमरे में आईं। मुझे लगा कि शायद बा की प्रार्थना सुन-कर ही ईश्वर ने बापू को बचा लिया। बा जब बापू के कमरे में नहीं होती थीं तो अक्सर बालकृष्ण या तुलसी माता के सामने बैठी प्रार्थना किया करती थीं। जब बापू की स्थिति बिगड रही थी, बा यह सब कुछ न जानते हुए प्रार्थना में बैठी थीं।

थोडी देर के बाद फिर बापू को मोसम्बी का रस और पानी दिया। रात तक करीब १५-१६ औंस रस और उससे तिगुना पानी भीतर जाने से बापू की नाडी काफी सुधर गई। रात को उन्होने करीब साढे पाच घटे नींद ली।

बा जिस हिम्मत से मानसिक और शारीरिक श्रम बर्दाश्त कर रही है, वह सचमुच आश्चर्यजनक है।

२२ फरवरी '४३

आज बापू का मौन था। कई मित्र लोग प्रणाम कर गए। उनमें श्री मथुरादास-भाई, अमतुलबहन, श्री अम्बालाल साराभाई और स्वामी आनन्द थे। आश्चर्य की बात है कि जो बापू पूंजीवाद के कट्टर दुश्मन हैं, उनको पूंजीपति अपना पिता मानते हैं और बापू भी उनके प्रति उतना ही प्रेम दिखाते हैं, जितना कि स्वामी आनद के प्रति, जिन्होंने अपना सर्वस्व बापू के अर्पण किया है। मथुरादासभाई उनके भानजे हैं और अमतुलबहन एक मुसलमान कुटुम्ब की लडकी, लेकिन बापू दोनो को समान प्यार करते है। बापू के पास जो आता है, वह यही अनुभव करता है कि बापू मुझे बहुत प्यार करते हैं, वे मेरे मित्र हैं, हितेच्छु हैं, उनके सामने मैं अपना हृदय खोल सकता हूं।

आज भी बापू पानी में मोसम्बी का रस मिलाकर लेते रहे। कमजोरी बहुत है, मगर हम लोगो की चिन्ता कम-से-कम है। डाक्टरी दृष्टि से ज्यादा पानी भीतर जाने से खतरा कम हो गया है, मगर कुछ कहा नहीं जा सकता। मोसम्बी के रस की मात्रा वे कम-से-कम करना चाहते हैं।

देश तो कल की बुलेटिन से चिन्ता में पडा ही हुआ है। सरकार ने गांधीजी को छोड देने के बारे में नेताओ की अपील अस्वीकार कर दी थी। सो सर तेज ने देश से अपील करते हुए वक्तव्य निकाला कि वह बुरे समाचार के लिए तैयार रहे और यदि बापू चले जावें तो उनकी मृत्यु की चोट को स्वाभिमान, गभीरता और हिम्मत के साथ बर्दाश्त करे।

सावरकर इत्यादि कुछ दूसरे लोगो ने गांधीजी से प्रार्थना की कि सरकार तो नहीं मानती, आप ही देश की खातिर अपना उपवास छोड दें। मगर ये लोग बापू को समझते नहीं। बापू ने ईश्वर के नाम से उपवास शुरू किया है। मृत्यु को सामने देखकर उसे छोडेंगे नहीं। उनका एक ही मत्र है, 'ईश्वर को मुझसे काम लेना होगा तो मुझे बचा लेगा।'

२३ फरवरी '४३

रात में बापू को अच्छी नींद नहीं आई। दिन में थोडा-थोडा करके कई बार सोए। जबान मैली, नाडी कमजोर, अशक्ति बहुत है। डाक्टरो की मीटिंग में अब अक्सर मीठी चर्चा हुआ करती है। बेचारे कैंडी साहब नहीं समझ पाते कि बापू मोसम्बी का रस इतना कम क्यो लेते है। ज्यादा लें तो शरीर को पोषण भी मिले, मगर बापू को शरीर को पोषण देना ही नहीं है। उन्हे तो इतना ही रस लेना है कि जिससे पानी पी सके।

आज सुबह जनरल कैंडी पूछने लगे, "आज कैसे है?" डा० गिल्डर बोले, "थोडे अच्छे है। प्रफुल्लित लगते है।" कैंडी भीतर गए। नाडी वगैरा देखकर बाहर आए। कहने लगे, "उनकी मुस्कान तो हमारा स्वागत करने के लिए है, उनकी अहिंसा का चिह्न है। शारीरिक स्थिति में तो मुझे कोई सुधार नहीं दिखाई पडता। नाडी ज्यादा कमजोर

लगती है ।" कर्नल शाह बोले, "हां, मेरा भी यही खयाल है ।" जनरल कैण्डी मुझसे कहने लगे, "पानी में मोसम्बी का रस ज्यादा क्यों नहीं डाल देती हो ?" मैंने कहा, "वह हो नहीं सकता । बापू हमेशा पूछते हैं कि कितना रस लिया और कितना पानी । वे कम-से-कम रस लेना चाहते हैं ताकि उपवास, यानी शरीर को खुराक न देना, चलता रहे । खुराक का उपवास है, पानी का नहीं । चूंकि सादा पानी पी नहीं सकते, इसलिए उसमें रस की कम-से-कम मात्रा डाल देने देते हैं ।"

कर्नल शाह बोले, "फल क्यों नहीं खाते ?" शाह बेचारे बहुत भोले हैं । मैंने कहा, "जब फल का रस ही कम-से-कम लेते हैं तो फल कैसे खा सकते हैं ? वह लेने लगें तो उपवास टूटता है ।"

कैंडी बोले, "मैं फल खा सकता हूं, मगर रस लेने से तो मुझे मतली-सी होती है ।" शाह ने कहा, "फल लेने से जीभ भी साफ हो जाएगी ।" मैंने कहा, "डा० राय ने नीबू के टुकडे से जीभ साफ करने की सलाह दी थी, मगर बापू ने इन्कार किया । उपवास की सब व्यथा सहने की उनकी तैयारी है । फल के रस के उपयोग की छूट पानी पी सकने के लिए ही है ।"

वे लोग चुप हो गए, मगर व्यथा बर्दाश्त करने की बात उनकी समझ में नहीं आई । वे क्या जानें कि उपवास की सारी कल्पना ही इस आधार पर है कि आप व्यथा बर्दाश्त करके सामने वाले की आत्मा को जाग्रत किया जाय । उसको उसकी गलती दिखाने के लिए अपनी जान खतरे में डाल दी जाय ।

बापू का दिमाग साफ है । सिर का चक्कर और दर्द आज नहीं है । आवाज बहुत कमजोर है । वे अधिकतर चुपचाप पडे रहे । कई मुलाकाती आए । उनमें होरेस अलेक्जैण्डर भी थे । वे अनेक अंग्रेज मित्रों की तरफ से शुभेच्छा और प्रेम का संदेश देने आए थे । बापू ने उनसे थोडी बातें कीं ।

तीसरा सप्ताह

२४ फरवरी '४३

आज बापू की स्थिति और थोडी सुधरी है । सुबह डाक्टरी परीक्षा के बाद कैंडी कहने लगे, "आज तो हम बुलेटिन में अच्छी खबर दे सकते हैं । कल की उनकी मुस्कराहट झूठी थी, ऐसा तो मैं नहीं कह सकता, मगर वे कल मेहनत करके मुस्कराते थे । आज सचमुच अधिक प्रफुल्लित लगते हैं ।" शाह बोले, "तो भी हमें चौकन्ना रहना होगा । खतरा गायब नहीं हो गया ।" कैंडी ने कहा, "हां, वह तो ठीक है । यह सुधार क्षणिक हो सकता है । दीपक का आखिरी टिमटिमाना भी हो सकता है ।" फिर सरोजिनी नायडू से कहने लगे, "हमने तो माना था कि गांधीजी जा रहे हैं, मगर उनकी हालत सुधर रही है । वे आश्चर्यजनक व्यक्ति हैं, चक्कर में डाल रहे हैं । आम गज से उनका माप

नहीं लिया जा सकता।"

होरेस अलेक्जेण्डर बम्बई के गवर्नर सर जॉन कालविल से मिले थे। सर जॉन कालविल को बापू की बडी चिंता थी। होरेस ने उनके साथ बैठकर एक फार्मूला तैयार किया। यदि बापू पसद करे तो वे उसे दिल्ली सरकार के पास ले जाएगे। फार्मूला का सार यह था कि सरकार अपने किसी नुमाइदे को बापू और काग्रेस पर लगाये गए आरोपो व सबूत के साथ बापू के पास भेजे। अगर बापू को सतोष हो गया तो वे अपनी भूल स्वीकार करेंगे। देवदासभाई आज यह फार्मूला बापू के पास लाए। बापू ने उसे गौर से देखा, फिर कहने लगे, "इसमें एक कमी है। इतना और डालना चाहिए कि सरकार, अगर मुझे सरकारी सबूतो से सतोष न हुआ तो एक न्याय की जाच कमेटी नियुक्त करेगी और वह सब पहलुओ की जाच-पडताल करके अपना फैसला सुनाएगी।" यह नया फार्मूला हमारे जेल सुपरिन्टेण्डेन्ट श्री कटेली को बताकर होरेस के पास भेजा गया। बापू की बडी बहन गोकीबहन आज उनसे मिलने आई। मुलाकात का दृश्य बडा करुण था।

२५ फरवरी '४३

बापू ने कल से मोसम्बी के रस की मात्रा और भी कम कर दी है। आज सुबह अपनेआप कहने लगे, "आज कमजोरी ज्यादा लगती है।"

कैंडी आए तो उन्हे बहुत निराशा हुई। कहने लगे, "फल का रस कम क्यो कर दिया है? आज तो सुधार देखने में नही आता। यह बहुत निराशाजनक है।"

मैंने कहा, "सुधार तो हुआ ही नही, कमजोरी भी बढी है।" कैंडी बोले, "इतवार के दिन वे मौत के मुह में थे। क्या फिर वैसी हालत चाहते है? मृत्यु के साथ खेलना अच्छा नहीं।"

डा० राय बोले, "हा, वे खुद कह रहे थे कि इतवार को उन्हे लगता था कि जा रहे है। मोसम्बी का रस डालकर पानी पीना और जिन्दा रहना या मृत्यु, दो चीजें उनके सामने थीं। उन्होने पहली बात पसद की। उन्होने कहा कि वे मरना नहीं चाहते। मगर इसका अर्थ तो यह नही होना चाहिए कि सारे समय काल के गढे के किनारे खडे होकर ही उसमें झाक्ते रहे।"

मैंने उन्हे बापू का दृष्टिबिन्दु समझाने को कोशिश की, "उनका हेतु मृत्यु से खेलना या मृत्यु की खाई के किनारे से मडराना नही है। उन्होने शुरू से कहा है कि पानी न पी सके तो उसे पीने लायक बनाने के लिए वे कम-से-कम-कम मात्रा में मोसम्बी के रस का उपयोग करेगे। जब इतवार को मैंने देखा कि वे किसी तरह पानी नहीं पी सकते तो मैंने पानी में मोसम्बी का रस डालने की इजाजत मागी, सो उन्होने दे दी। अब वे उसकी मात्रा कम कर रहे हैं।"

डा० राय बोले, "हा, यह ठीक है। उन्हे खुद आश्चर्य हो रहा था कि इतने थोडे रस का उन पर इतना बडा असर कैसे हुआ!" आज सुबह बापू हसकर कैंडी से कह रहे

थे, "अब मै कहा उपवास कर रहा हू ?" मैने कहा, "डाक्टरी दृष्टि से आप उपवास ही कर रहे है। आप अपने शरीर को जलाकर शक्ति का उपयोग कर रहे है। मोसम्बी का रस ही आपके शरीर से जहर निकालने मे मदद देता है। उसके सहारे आप पानी पी सकते है। पानी शरीर से जहर निकालता है।"

कैण्डी ने कहा, "उपवास तो है ही। मोसम्बी के रस मे रक्खा क्या है ? जहातक मुझे याद है, उसमें ९८ प्रतिशत पानी होता है, थोडा-सा रग और जरा-सा ग्लूकोज।"

मै बोली, "यह ठीक है, लेकिन इस जरा-से ग्लूकोज की भी वे कम-से-कम मात्रा लेना चाहते है।" कैण्डी कहने लगे, "यह भूल है। पिछले दिन सकट का समय आ गया था। रस का असर होने मे २४ घटे लगे। अगर फिर ऐसा मौका आवे, उसी तरह हालत बिगडे तो शायद उसमें से निकल ही न सकें या पूरी तरह न निकल सके।" डा० राय से कहने लगे, "इतवार को जो हालत हुई थी, उसके बारे में आपकी क्या राय है ? डाक्टरी भाषा में, उस दिन जो हालत बिगडी, वह क्या चीज थी ?" डा० राय बोले, "डा० गिल्डर मौजूद थे। वे कह सकेगे।" कैण्डी कहने लगे, "हा, मगर उस दिन के चिह्न का विचार कीजिए। सख्त मतली, बेचैनी, नाडी की कमजोरी, मुझे याद आ रहा था कि हृदय को खून पहुचाने वाली नाडी तो कही बन्द नही हो गई।" डा० राय बोले, "हो सकता है, चिह्न तो ठीक बैठते है।" कैण्डी कहने लगे, "मुझे तो डर लगता है। दूसरा हमला ज्यादा खतरनाक हो सकता है।" मुझसे बोले, "क्या आप उन्हे जबर्दस्ती ज्यादा रस नही दे सकती ?" मैने उत्तर दिया, "उनके साथ जबर्दस्ती कौन कर सकता है ?" कैण्डी पूछने लगे, "क्या वे खुद नियम बांधते है, खुद कानून बनाते है ?" मैने उत्तर दिया, "जी हा।"

वे बोले, "उनसे कहना कि वे बडे खराब मरीज है। हम लोगो को मरीजो के बनाए कानून पालने की आदत नहीं।" सभी हसने लगे।

शाह पूछने लगे, "उन्हे धोखा नही दे सकती हो ? चुपचाप ज्यादा रस डाल दिया करो।" मैने कहा, "उन्होने हम सबको हमारे ईमान पर रखा है। उनके साथ धोखा नहीं हो सकता।" कैण्डी कहने लगे, "मगर डाक्टर मरीज की जान बचाने के लिए झूठ बोले तो उसमें कौनसी बात है! अच्छा, यह बताओ कि रस नापती कैसे हो ?" मैने कहा, "औंस वाले गिलास में।" वे बोले, "कल मै नया औंस का गिलास लाऊगा। पुराना गिरकर टूट गया है। समझी ?" मैने कहा, "फायदा क्या होगा ? उसी नए गिलास से पानी भी नापा जाएगा। एक मात्रा रस और तीन या चार मात्रा पानी।"

शाह बोले, "डा० राय हमें बता रहे थे कि महाभारत में कहा गया है कि पाच तरह के मौके आ सकते है जब कि झूठ बोलने में दोष नही है। उनमें से एक है जान बचाने की खातिर।"

कैंडी कहने लगे, "कोई और मरीज होता तो सौ झूठ बोलने में हिचकिचाहट न होती, मगर ...। अच्छा, अब बुलेटिन में क्या कहना है ? यही कि 'डाक्टरी दबाव

के नीचे उन्होंने मोसम्बी का रस लिया और हालत सुधरी'।"

मैंने कहा, "बापू नहीं मानेंगे कि डाक्टरी दबाव के नीचे उन्होंने रस लिया।" शाह बोले, "तो कहें कि डाक्टरी सलाह से लिया ?" डा० गिल्डर कहने लगे, "सलाह तो हमने कब से दी थी।"

सब चुप हो गए। मैंने कहा, "एक ही बात पर उन्होंने जोर दिया है, पानी पी सके। जब पानी नहीं पी सके तब पानी में रस मिला ले, जैसा कि उन्होंने उपवास करने से पहले ही कहा था। बस इतनी-सी बात है।"

बुलेटिन लिखी गई। डा० गिल्डर मुझसे मजाक करने लगे, "बहुत खूब! आज तो बुलेटिन पूरी तुम्हारी है।" मैंने कहा, "मैंने वही कहा है जो था।" डा० गिल्डर बोले, "हा, होना भी यही चाहिए।"

भूलाभाई, मुशी और राजाजी आज बापू से मिलने आए। भूलाभाई ने बताया, "सरकार तो अकडकर बैठी है। कोई दलील सुनने को तैयार ही नहीं। कुछ भी समझौते की बात करने से पहले वह कई तरह की शर्तें और गारटी मागने की बात करेगी। एक ओर आपकी आवाज जेल की दीवारो में बद है, दूसरी ओर देश की हालत बिगडती ही जाएगी।"

मुशी ने भी भूलाभाई का समर्थन किया। कहने लगे, "उनकी तैयारी तो आपको मरने देने की है। अगर परिणाम में जनता कुछ गडबड करे तो उनकी तैयारी उसे भी गोली से उडा देने की है। कई तरह के लोग आज बाहर काम कर रहे है। उनमे कइयो के नाम भी बापू नहीं जानते। मगर उन सब के कारनामो की जिम्मेदारी काग्रेस पर डाली जाती है। इसका कुछ उपाय करना चाहिए। मगर मुझे इतना कहना होगा कि जहातक मै जानता हू, किसी काग्रेस वाले ने जान-माल का नुकसान करने में हिस्सा नहीं लिया, मगर आपकी सीख के खिलाफ लोगो ने कई जगह काम किया है। अधिकतर यह अज्ञान और विचारो की गडबड का परिणाम था।"

बापू ने उनकी बाते चुपचाप सुन लीं और राजाजी से बातें करने के लिए अपनी शक्ति का सचय किये रखा। राजाजी ने वाइसराय के साथ के अपने अनुभव सुनाए और बताया कि लार्ड लिनलिथगो ने तीन बार उनसे झूठ बोला था। वे कहने लगे, "आखिरी बार जब मैं उनसे मिला तो वे पूछने लगे, "क्या गाधीजी उपवास करेगे ?" उस समय आपका खत उन्हे उपवास के बारे में मिल चुका था। इसी प्रकार एक बार कौमी मसले पर मेरे विचारो को 'बुद्धिमानी' कहकर बाद में उन्होंने उससे उल्टा वक्तव्य निकाला था। तीसरा असत्य तो इन दोनो असत्यो से भी बुरा है।"

राजाजी ने बताया कि लिनलिथगो को बापू के नाम से ही चिढ है। एक साहब उनसे बाते करने गए। बापू के नाम का जिक्र आते ही लिनलिथगो गुस्से में भरकर कमरे में चक्कर काटने लगे। किसीने उनसे पूछा कि उनकी कार्यकारिणी सभा के तीन मेम्बरो ने इस्तीफा दे दिया है, इसलिए क्या वे इस वजह से गाधीजी के प्रति अपनी नीति

बदलेंगे ? लिनलिथगो ने उत्तर दिया, "जितनों ने इस्तीफा दिया है, उनसे दुगने नाम जगहें भरने के लिए जेब में पड़े हैं।"

इसके बाद राजाजी ने सरकार की तरफ से बापू पर लगाई गई तोहमतों की बात की। कहने लगे, "आपके लेखों को तोड़-मरोड़कर झूठी तोहमतों की मनमानी खिचड़ी तैयार की गई है।"

कांग्रेस ने बापू से देश की लड़ाई की योजना बनाने को कहा था। बापू ने पकड़े जाने से पहले कोई सूचनाएं नहीं निकाली थीं, लड़ाई की रूपरेखा नहीं बनाई थी। जो बाहर रह गए, उनमें से किसीको कांग्रेस के नाम पर हिंसक या अहिंसक लड़ाई चलाने का अधिकार न था। कांग्रेस ने कहा था कि हर एक अपना सरदार है, सो हरएक स्त्री-पुरुष अपने कृत्यों के लिए जिम्मेदार था। कांग्रेस स्वयं किसीके किये की जिम्मेदार न थी। राजाजी का कहना था कि उसूलन बापू या कांग्रेस किसीके किये के लिए जिम्मेदार नहीं, मगर मौका आने पर यह स्पष्ट करना होगा कि हिंसक प्रवृत्तियां कांग्रेस और आपकी नीति के विरुद्ध हैं। बापू से कहने लगे, "मैं जानता हूं कि जेल में बैठकर बाहर की प्रवृत्तियों के विरुद्ध निदान देना आपकी जीवन भर की नीति के विरुद्ध होगा। मगर क्या आप हमसे यह नहीं कह सकते कि यह सब आपको पसंद नहीं ? जो लोग लड़ाई चला रहे हैं, वे अगर इतना स्पष्ट कर दें कि वे कांग्रेस के नाम पर नहीं, बल्कि अपनी जिम्मेदारी पर अपनी प्रवृत्ति चला रहे हैं तो वे कांग्रेस की भी सेवा करेंगे और अपनी भी। मैं जानता हूं कि आप यहां बैठकर उनकी निन्दा नहीं करेंगे, टीका नहीं करेंगे, मगर इसमें शक नहीं कि आज जो कुछ बाहर हो रहा है, वह बंद होना चाहिए। जिम्मेदारी किसीकी भी हो, मगर ऐसी प्रवृत्तियों से देश का भला नहीं हो रहा है।

"तीसरा है कौमी मसला। वह हल हो सकता है।" उन्होंने बापू को एक फार्मूला बताया। सर तेजबहादुर सप्रू, राजा महेश्वरीदयाल और अन्य मित्रों के साथ राजाजी ने इस प्रस्ताव की चर्चा की थी। उन लोगों को वह पसंद आया था। बापू से फिर कहने लगे, "इन लोगों में से किसीको आप इस मसले को हाथ में लेने की सत्ता नहीं दे सकते ?"

जब राजाजी सब कह चुके तब बापू ने उत्तर देना शुरू किया। उनकी आवाज बहुत कमजोर थी। बिलकुल पास कान रखने पर ही सुन सकते थे। बापू कहने लगे, "आज मेरी तबियत अच्छी है। मेरे मन में जो है सो सुना देता हूं। इन छः महीनों में मैंने अहिंसा का ही मनन किया है। मैंने देखा कि मेरी अहिंसा में एक दोष है और इस युद्ध के समय अगर अहिंसा को अपना चमत्कार दिखाना है तो वह दोष दूर करना होगा। वह दोष यह था, मैं कहा करता था कि अगर अहिंसा को अपना काम करना है तो देश में कहीं भी हिंसा नहीं होनी चाहिए। अगर कहीं हिंसा फूट निकली तो मैं अहिंसक लड़ाई बंद कर दूंगा। मगर मैं देखता हूं कि आज मेरे चारों ओर हिंसा है। हिंसा की आग सारे जगत् में फैली हुई है। तब क्या मेरी अहिंसा बेबस होकर चुपचाप यह सब देखा करे ?

"मुझे कहना होगा—नहीं, आज अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर काम करना है। इतना मैं कह सकता हूं कि अगर मैं बाहर होता तो हमारे यहां हिंसा उस तरह न फूट निकलती। मैं उसे रोक लेता या रोकने की कोशिश में खतम हो जाता। मैंने अपने आखिरी भाषण में जनता से कह दिया था कि अगर उसने एक भी अंग्रेज मारा तो वे मुझे जीता नहीं पाएंगे और मेरा खून उसके सिर पर होगा। आज देश में जो हिंसक कार्य हो रहा है, उनके लिए मेरे हृदय के किसी भी कोने में सहानुभूति नहीं है। रही उसकी कड़ी निन्दा की बात, सो जबतक मैं वैसे ही कड़े शब्दों में सरकार की निन्दा न कर सकूं, तबतक जनता की निन्दा भी नहीं करना चाहता। आजकल की हमारी सरकार व्यवस्थित हिंसा का मानो एक दूसरा नाम है और हम उसे स्वीकार करते हैं, उसकी सत्ता के नीचे रहते हैं। मेरा मत है कि हमें इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। कई साल पहले मैंने बिहार में इस बात का इशारा किया था। वहां पर पुरुषों ने पुलिस को स्त्रियों का अपमान करने दिया, उनका सामना करने की जगह वे भाग गए। कहने लगे कि मैंने उन्हें हिंसा करने से मना किया था, इसलिए उन्होंने पुलिस का सामना नहीं किया। मैंने कहा कि मैंने उन्हें बुजदिल बनने को कभी नहीं कहा था। उनका तो धर्म था कि स्त्रियों की रक्षा में अहिंसक या हिंसक तरीके से अपनी जान लड़ा देते। इस किस्म के अन्याय के सामने कभी न झुकते। अगर बिल्ली चूहे पर हमला करे और कोई बहादुर चूहा सामने से अपने दांतों द्वारा अपनी रक्षा के लिए बिल्ली का सामना करे तो चूहे ने हिंसा की, ऐसा आप कहेंगे क्या? उस समय मैंने इस किस्म की दलील की थी, मगर इस विचार का पूरा महत्त्व और उसका पूरा अर्थ उस समय आज की तरह मेरे सामने स्पष्ट नहीं हुआ था। अब मैं कहता हूं कि अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर अपना काम करना है। इसलिए मेरी यह मांग है कि कानून में अहिंसक विरोध को स्थान होना चाहिए। अगर अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर काम करना है तो यह आवश्यक है। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि कानून तोड़ने वाले को सजा न हो। उसे आप चाहे जेल भेजें या फांसी पर लटका दें। अहिंसक सिपाही समझता है कि कानून तोड़ने की सजा उसे भुगतनी होगी और वह खुशी से सजा लेने जाता है। मगर उसकी पत्नी को, कुटुम्ब को या देहात को सजा नहीं हो सकती। आज ऐसा होता है। यह न्याय नहीं। हमें इस संगठित रूप से चलने वाली सरकारी हिंसा के सामने झुकना नहीं चाहिए। हमें मृत्यु का भय छोड़ना होगा। इस बार हमें जापानियों से पाठ लेना चाहिए। जहांतक मैं जानता हूं, जापानी बहुत ही बहादुर कौम है, मगर उनकी महत्त्वाकांक्षा उन्हें अंधा कर रही है। उन्हें साम्राज्य चाहिए। वे सारे जगत् को हजम कर जाना चाहते हैं। मेरी उनके साथ नहीं पट सकती, जैसे कि हिटलर के साथ नहीं पट सकती। हमारे विचारों में आकाश-पाताल का अंतर है। मैं तो यहांतक जाता हूं कि इस हिंसा के सामने झुकने के बदले अगर लोग अपनेआप पर गोली चलाकर आत्महत्या कर लें तो उनका कृत्य अहिंसक होगा। मुझसे कहा गया है कि लोग थक गए हैं। सरकार ने अपनी फौजी मशीन के बल पर देश पर काबू पा लिया है। मेरा कहना है कि उन्होंने काबू

खोया ही कब था ? इन बातो का मुझ पर असर नहीं होता। मेरे मन में निराशा नहीं है। कोई कुछ भी कहे, मै फिर से दोहराना चाहता हू कि मैंने छूटने की खातिर उपवास नहीं किया। मुझे छूटने की इच्छा नहीं। तो भी अगर छूट जाता तो उसका उपयोग कर लेता और मै यह महसूस करता हू कि परिस्थिति को सम्भाल लेता।

"आप कह सकते है कि यदि उपवास के बाद आपको पहले की तरह फिर जिन्दा दफन कर दिया गया तब क्या? अगर आपको इस देश से ही ले जावे ताकि भारत की भूमि पर होने के नाते जितना आपका यहा से सबध है, वह भी न रहे, तब क्या? मेरा कहना है, मेरी आत्मा का सबध तो रहेगा ही और वह और भी ज्यादा असरकारी होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि बाहर कुछ भी हो, मगर मै अकेला भी सच्चा रहा तो हिन्दुस्तान जरूर आजादी पाएगा। अहिंसा में विश्वास रखनेवाले मुठ्ठी भर ही है तो क्या हुआ ? अगर अकेला मै ही अहिंसा की सम्पूर्ण मिसाल छोड जाऊ तो वही काफी होगा, कुछ काल के लिए, हमेशा के लिए नहीं। मगर इस काल में कोई बहुत बडी आत्मा आ पहुचेगी और सारे देश को जगा देगी। इसलिए देश के भाग्य का फैसला करने की, जो सत्ता देने की बात आप कर रहे है, वह मै नही दे सकता।"

यहा पर डाक्टरो को बातचीत बद करानी पडी। इतने श्रम से बापू की नाडी कमजोर हो गई थी। जब वे कुछ आराम ले चुके थे तब राजाजी ने बताया कि देश के भाग्य का राजनैतिक फैसला करने की सत्ता वे नही माग रहे थे, वे तो कौमी मसले के फैसले की सत्ता माग रहे थे।

बापू कहने लगे, "उसके लिए सत्ता मागने की आवश्यकता ही नहीं और आप जानते है कि हमारा कितना ही मतभेद हो, एक-दूसरे के प्रति अविश्वास नहीं है।"

२६ फरवरी '४३

कैण्डी आज फिर कहने लगे, "मोसम्बी का रस बढाने में उन्हे क्यो उज्र है, यह मेरी समझ में नही आता।" मैंने समझाया, "बापू ने कहा है कि पानी को पीने लायक बना लें, बस इतना ही कम-से-कम रस लेना चाहते है। अपनी इस प्रतिज्ञा का आत्मा और वचन से पालन करना चाहते है।"

कैण्डी बोले, "यह तो पानी और हवा खाने पर भी अकुश लगाने जैसी बात हुई।" शाह कहने लगे, "वे तपश्चर्या कर रहे है।" मैंने कहा, "उन्होने अपने एक पत्र में लिखा था कि उपवास करके वे अपने को सूली पर चढाएगे। आज वही कर रहे है।"

२७ फरवरी '४३

दो रोज से बापू के पेशाब की मात्रा कुछ कम है। जनरल कैण्डी को इससे चिन्ता हो रही थी। डा० विधान कहने लगे, "पिछले इतवार को तबीयत इस कदर बिगडी थी। उस वक्त भी दो-एक रोज तक पेशाब कम हो रहा था।" बापू उन्हे कुछ ज्यादा कमजोर

दिखाई दिये और कैण्डी ज्यादा चिंतित लगे। बुलेटिन क्या निकालनी चाहिए थी, इस पर चर्चा चली। मैंने 'चिंतित' शब्द निकलवा डाला। कल की बातों में बापू ने स्पष्ट किया था कि उन्हें किसी बात की चिन्ता न थी। वे चिन्तामुक्त होकर भगवान् के भरोसे चल रहे थे।

अणे साहब बापू से मिलने आए। वे लेडी लिनलिथगो का संदेश लाए थे कि अगर बापू अपने उसूलों को छोड़े बिना उपवास छोड़ सकें तो जरूर छोड़ दें। अनेक दूसरे मित्र भी उपवास छोड़ने को कह चुके थे और लिख चुके थे। सर मॉरिस ग्वायर का पत्र आया। उन्होंने भी उपवास छोड़ने की प्रार्थना की थी।

आश्रम से श्रीमती आशादेवी, श्री चिमनलाल शाह और डा० दास ने एक वक्तव्य निकाला है कि लोग बापू से मिलने की कोशिश न करें ताकि उनकी शक्ति बची रहे और वे उपवास के शेष दिन पूरे कर सकें। सब लोग ईश्वर से उनकी दीर्घायु के लिए प्रार्थना करें।

राजाजी फिर बापू से मिले। गुरुदेव के पुत्र रथीबाबू भी प्रणाम कर गए।

आज बापू ने हजामत कराई। सबको बहुत अच्छा लगा। सूखा हुआ चेहरा भी हजामत के बाद चमक उठता है।

२८ फरवरी '४३

जनरल कैण्डी ने दो-एक रोज पहले बापू को हजामत कराने की सलाह दी थी। आज यह जानकर कि बापू ने कल हजामत कराई थी, वे बहुत खुश हुए। मैंने कहा, "बापू कहते थे कि यह आपके सम्मान में है।" कैण्डी हंसकर कहने लगे, "मगर मैंने तो मोसम्बी का रस बढ़ाने को भी कहा था।"

हम सब बापू को देखने के लिए उनके कमरे में गए। कैण्डी उनसे बोले, "आज आप सुंदर युवक दिखते हैं।" बापू ने कहा, "आपका हुक्म बजाया है।" मैंने कहा, "बापू, जनरल कैण्डी कहते हैं कि उन्होंने तो मोसम्बी का रस बढ़ाने को भी कहा था!" कैण्डी बोले, "हां, पूरी सलाह क्यों न मानी जाय?" बापू कहने लगे, "ईश्वर की इच्छा हुई तो बुध को मानेंगे।"

बापू के कमरे में आकर बुलेटिन तैयार की। कैण्डी ने अपनी २५ तारीख की रिपोर्ट में सरकार को लिखा था, "राजाजी से बातें करके गांधीजी बहुत थक गए थे।" सो इसका एक नया ही परिणाम हुआ। कर्नल भण्डारी को सरकारी टेलीफोन आया कि गांधीजी और राजाजी की बातचीत की पूरी रिपोर्ट भेजो। कटेली साहब को हुक्म मिला कि गांधीजी की सभी मुलाकातों की रिपोर्ट भेजो। बेचारे कटेली साहब भाई के पास आए। मुलाकातों में वे हाजिर रहते थे, मगर बापू की आवाज क्षीण होने के कारण वे उनकी बातें बहुत कम सुन पाते थे, सो भाई से कह गए कि सब मुलाकातों की रिपोर्ट वे उन्हें दे दें। बापू की सत्य और अहिंसा की नीति का यह प्रताप है कि जेलर कैदियों का इस तरह विश्वास करे। भाई ने उन्हें सब मुलाकातों की रिपोर्ट तैयार कर दी।

बापू से राजाजी की मुलाकात फिर हुई। उन्होने कौमी मसले के बारे में अपने फार्मूले की चर्चा फिर की। जाते समय उसकी नकल देने लगे। मगर कटेली साहब ने कहा कि उसके लिए इजाजत लेनी पडेगी। इस पर नकल रखने का विचार छोड़ दिया गया। बापू ने हमसे कहा कि फार्मूले को ध्यान से पढ लो और फिर स्मरण करके उसकी नकल खुद बना लेना। इस पर भाई ने उसे एक बार फिर पढकर सबको सुनाया। राजाजी के जाने के बाद उन्होने नकल तैयार की। डा० गिल्डर ने बापू की खाट के नीचे हाथ करके शॉर्टहैण्ड में कुछ नोट ले लिये थे। बाद में भाई की नकल उससे मिलाई। कुछ फर्क न था।

आज बहुत से मुलाकाती आए। उपवास पूरा होने पर जेल के दरवाजे फिर बन्द हो जाएंगे, इसलिए मित्र लोग दर्शन का लाभ ले लेना चाहते हैं।

बापू की तबीयत अच्छी रही।

१ मार्च '४३

कल राजाजी के जाने के बाद भाई बापू से कहने लगे, "आपने कौमी मसले पर राजाजी को कोरा चेक दे दिया है। क्या यह ठीक है? आप जानते है कि पाकिस्तान के मसले के बारे में आपके विचारो से उनके विचार भिन्न है?"

बापू बोले, "यह ठीक है। मगर मैंने विश्वास रखा है कि राजाजी मुझे किसी ऐसी परिस्थिति में न डालेगे जो मेरी अतरात्मा की आवाज के विरुद्ध हो। और अगर कुछ ऐसी ही बाते बन गई तो मै आमरण उपवास करके अपनी भूल का प्रायश्चित्त करूगा।"

सो आज राजाजी के आने पर बापू ने यह सब उनके सामने साफ किया। राजाजी कहने लगे, "मै यह सब समझता हू। आप चिन्ता न करे। मै आपको ऐसी परिस्थिति में न डालूगा कि आपको अपनी अतरात्मा के विरुद्ध कुछ करना पडे।"

बापू काफी पानी पी लेते है। खुराक न जाने से कमजोरी होनी तो जरूरी है, मगर गुर्दे सब जहर निकाल रहे है। सो चेहरे पर ताजगी और प्रसन्नता पाई जाती है, तेज दिखाई देता है।

२ मार्च '४३

आज आखिरी बार मुलाकातियो के लिए आगाखां महल के दरवाजे खुले। लक्ष्मीबहन खरे और अन्य बहनो से विदा लेते समय बा की आखो में पानी आ गया। कहने लगीं, "अच्छा बहन, यह आखिरी राम-राम है!" मैंने कहा, "बा, आप ऐसा क्यो कहती है? हम सब छूटकर जाएगे और सबसे फिर मिलेगे।"

बा बोली, "हा, तुम सब जाओगी!" उनकी आवाज में करुणा थी, निराशा थी।

कर्नल भण्डारी से बाते करते समय बापू को पता चला कि कल उपवास छूटने के समय रामदासभाई और देवदासभाई के सिवा और कोई नही आ सकेगा। इस पर बापू ने

सरकार को पत्र लिखवाया कि उनके लिए रिश्तेदार, मित्र और पुत्र, सब समान हैं। अगर उपवास छूटने के समय उनके विशाल कुटुम्ब के लोग उपस्थित नहीं रह सकते तो पुत्रों को अलग कोटि में रखना उन्हें पसंद न था। सो कल उपवास छूटने के समय उनके जेल के साथी और अफसर ही मौजूद रहेंगे। जेल के साथियों में दुर्गाबहन, नारायण और कनु भी शामिल थे। वे बापू की सेवा के लिए आगाखां महल में ही रहते थे।

गर्मी काफी बढ गई है। बापू की खाट हम बरामदे में ले आए थे। मुलाकातियों और दर्शनाभिलाषियों की कतारें प्रणाम करके उनके सामने से गुजरती रहीं। सबका हृदय भरा था। बापू सौम्य, प्रसन्न-मुख से हाथ जोडकर सबका अभिनन्दन करते थे।

राजाजी और अणे साहब ने आधा-पौन घंटा फिर बापू से बातें कीं।

उपवास की समाप्ति

३ मार्च '४३

कल रात से हम सबका हृदय ईश्वर के प्रति धन्यवाद का गीत गा रहा है। इक्कीस दिन पहले ९ तारीख की रात को हममें से अधिकतर लोग बहुत कम सो पाए थे। चिंता थी, मन पर बोझ था कि इक्कीस दिन कैसे कटेंगे? अकेले बापू रात भर गहरी नींद सोए थे। कल रात फिर सब बहुत कम सोए। बापू की अग्नि-परीक्षा पूरी होती जान पड रही थी। डाक्टरी मत के अनुसार बापू के लिए इक्कीस दिन का उपवास पूरा कर सकना एक असम्भव-सी बात थी। पहले दो हफ्तों में बापू की हालत को देखकर हम लोग सचमुच कांपते थे और पिछले रविवार (२१ फरवरी) के रोज तो ऐसा लगता था कि बापू अब चले, मगर उसके बाद बापू ने पानी में थोडा-सा मोसम्बी का रस डालकर लेना शुरू किया। इससे वे पानी पी सके। इतना ही फर्क पडा। आठ-नौ औंस रस से शरीर को क्या पोषण मिल सकता है? मगर इतने थोडे-से रस का भी अद्भुत असर हुआ। बापू की तबीयत सुधरी और खून में पेशाब मिल जाने की बीमारी, यूरीमिया, के चिह्न एक-एक करके दूर हो गए। २४ से फरवरी को वजन का कम होना भी रुक गया और शक्ति बढी। बापू को तो अपनी तबीयत इतनी अच्छी लगने लगी कि हंसी में एक रोज कहने लगे, "मैं तो आराम से चालीस रोज तक इस उपवास को चला सकता हूं।" मगर हम डाक्टरों को निश्चिंतता नहीं थी, क्योंकि हृदय दुर्बल था और पेशाब की परीक्षा बताती थी कि गुर्दे को अपना काम करने में कठिनाई हो रही है। किस समय फिर से परिस्थिति गम्भीर रूप धारण कर ले, यह कहना कठिन था, इसलिए कल रात को जब मंजिल पूरी होती देख पडी तो हम सब हर्ष के कारण सो न पाए। बापू भी बहुत कम सोए। वे कल दिन में डा० विधान राय से कह रहे थे, "जितना विचार करता हूं, उतना स्पष्ट नजर आता है कि इस उपवास को पूरा करने की शक्ति मुझे भगवान् से ही मिली है।" सो वे पडे-पडे भगवान् का दर्शन उसकी कृति में कर रहे थे।

सुबह चार बजे बापू प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के बाद वे सामान्यत सो जाते है, मगर आज नहीं सो सके। कल मैंने पूछा था कि उपवास छोडने से पहले गीताजी का पारायण करना है क्या ? बापू कहने लगे कि करना अच्छा तो लगेगा, मगर कल सब डाक्टर आवेगे, इसलिए छोटी-सी ही प्रार्थना करनी चाहिए। मगर आज सुबह प्रार्थना के बाद जब वे सो नही सके तब कहा कि एक-एक करके तैयार होकर आते जाओ और गीता का पाठ शुरू कर दो। भाई तो उस समय तक लगभग तैयार थे। उन्होने पाच बजे× यानी नए हिसाब से छ बजे पाठ शुरू किया। कुछ अध्यायो के पश्चात् कनु आ गया। मैं दसवा अध्याय शुरू होने के समय पहुंची। सवा सात बजे पाठ पूरा हो गया। हम सब को बहुत अच्छा लगा।

जब पूरा होने को था तब डा० दीनशा मेहता अपनी पत्नी के साथ आए। बापू ने विचार किया था कि आज मालिश इत्यादि जल्दी पूरी कर लेगे, मगर श्री कटेली को कर्नल भडारी की आज्ञा चाहिए थी, इसलिए डा० दीनशा की पत्नी को वापस भेजना पडा।

हम सब स्नानादि कर चुके थे। नाश्ता किया और फूल चढाने नीचे महादेवभाई की समाधि पर गए। कल फूलो के बहुत से हार आए थे। सब वहा पहुचाए। सुदर दृश्य था।

सबेरे सवा सात बजे स्वामी आनद महादेवभाई की भस्म यहा से ले गए थे। जिस समय वहा ९ बजे बापू के उपवास छोडने की प्रार्थना चलती थी, उस समय उधर भस्म को नदी में प्रवाहित करने की विधि चलती थी। विचित्र सयोग था कि बापू के उपवास छोडने के समय ही यह क्रिया हो रही थी।

यह कोई सोच-विचारकर बनाया हुआ कार्यक्रम न था। कई दिन से दुर्गाबहन की अनुमति से सरकार की इजाजत लेकर यह निश्चय किया गया था कि भस्म का अधिकाश भाग यहीं नदी में प्रवाहित कर दिया जावेगा। अस्थिया गगाजी में प्रवाहित करने के लिए रख ली थी, मगर आज तक उसे नदी पर भेजने का प्रबध नही हुआ।

एक आकस्मिक घटना और घटी। आज जमनालालजी का श्राद्ध था। सयोग-वश बापू को अपना उपवास ९ फरवरी के बदले १० फरवरी को शुरू करना पडा। ऐसा न होता तो उपवास का छूटना और जमनालालजी का श्राद्ध होना, एक ही रोज न पड सकते थे।

प्रार्थना में बापू ने यह क्रम रखवाया था : पहले ईषावास्यमिद . . . वाला श्लोक, फिर एकादश व्रत, फिर 'मैं भरोसे अपने राम के, और नहीं कुछ काम के' वाला भजन, फिर रामधुन, 'अउज बिल्ला' और अंत में 'व्हेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रॉस'। मगर कल

× जब हम जेल मे थे तब सरकारी घडिया एक घटा आगे कर दी गई थी।

रात मीरावहन ने अंग्रेजी भजन नहीं गाया, इसलिए वापू ने उसे मुझसे पूरा कराया। रात को मीरावहन के साथ वह भजन पाच मिनट तक गाया। एक बार सुबह गाया। डर था कि कहीं गाने में भूल न हो जाय।

कमरा ठीक करके वापू को भीतर लाए। एक तरफ डाक्टरी इलाज के लिए कुर्सिया रखीं और दूसरी तरफ लोगो के लिए जमीन पर बैठने की जगह की। पौन वजे डा० विधान राय आए और कहने लगे, "मैं तो जमीन पर बैठूगा।" वापू बोले, "तो आपको फिर प्रार्थना में भी कुछ भाग लेना होगा।" बेचारे इधर-उधर कुछ ढूटने लगे। गीताजलि हाथ आ गई। उसमें से दो सुन्दर अश उन्होंने चुने।

वापू ने विचार किया था कि ८ वजकर ५० मिनट पर प्रार्थना शुरू की जावे ताकि वह ६ वजे उपवास छोड सके, मगर फिर विचार वदला। सरोजिनी नायडू कहने लगीं कि जनरल कैण्डी इत्यादि प्रार्थना में आ सके तो अच्छा हो। उनके आने से पहले कनु और नारायण ने 'आनन्द लोके, मगला लोके' गया। सरोजिनी नायडू ने 'वैष्णव जन तो ' गाने को कहा। वह भी गाया। इतने में जनरल कैंडी इत्यादि आ पहुचे। प्रार्थना शुरू हुई।

गीताजलि में से डा० विधान राय ने 'व्हेन दि माइट इज विदाउट फियर' और 'दिस इज माई प्रेयर टु दी, माई लॉर्ड', दोनो ही उन्होंने पढ सुनाये। अच्छे लगे। इसके वाद वापू ने प्रार्थना का जो क्रम रखा, वह एक के वाद एक चला। अन्त में 'व्हेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रास' गाया गया। भजन पूरा करके मैं उठी कि रस लाऊ, मगर वहीं-की-वहीं खडी रह गई। वापू आखें वन्द किये पडे थे। उनके होठ हिल रहे थे। आखें भीगी थीं। यह भजन वापू को हमेशा द्रवित किया करता है। आज और ज्यादा असर हुआ। विचार आया—दूसरा सलीव (क्रास) ढूढने की क्या आवश्यकता है? वह तो हमारी आख के सामने है। सारी-की-सारी प्रार्थना वहुत असरकारी वन गई थी। वातावरण गम्भीर, सौम्य और करुण था।

वापू कुछ शात हुए। मैंने प्याले में रस डाला। वापू ने छ औंस रस में से एक औंस पानी डालने को कहा था। वह मिलाकर मैंने वा के हाथ में दिया। वा की खाट का पिछला भाग उठाया। वापू उसके सहारे बैठ गए और धीमे स्वर में बोले, "मैं डाक्टरो को धन्यवाद देना चाहता हू ,"* उनका गला रुध गया। दो-एक मिनट तक सब सन्नाटे में खडे रहे। वापू ने सम्भलकर फिर कहना शुरू किया, "जो वडी सावधानी और प्रेम से मेरी देख-रेख करते रहे हैं . ,"† गला फिर रुध गया। थोडी देर वाद उन्होंने अपना वाक्य पूरा किया, "सफलता उन्हीं की वदौलत मिली है, लेकिन इच्छा प्रभु की थी कि

---

* "I wish to thank the doctors "

† "who have surrounded me with so much care and affection . "

मैं इस अग्निपरीक्षा में से जीवित पार हो जाऊ। प्रभु ही मुझे अगला कदम सुझाएगा। मेरी कमजोरी के लिए आप लोग क्षमा करे।"*

नाडी बहुत कमजोर और उसकी गति तेज थी। डा० गिल्डर ने बापू को लिटाने की कोशिश की, मगर बापू ने इन्कार किया। जो कहना था, वह कहकर बा से रस का गिलास हाथ में लिया।

भाई ने भडारी, कैण्डी और शाह को अगूरो का गरम-गरम रस पीने को दिया और हसकर बोले, "यह तुम्हारी शैम्पेन† है।" कल श्री कैंडी मजाक कर रहे थे, "क्या शैम्पेन मिलेगी ?" हम लोगो ने 'सहनाववतु' का मत्र पढा और बापू ने रस लिया। डाक्टरो ने अपना पेय। श्री कैण्डी ने बापू की नाडी देखी और 'चलो' कहकर बाहर निकले। श्री भण्डारी बम्बई सरकार को टेलीफोन करने गए कि उपवास टूट गया है।

बाहर आकर छ जनो की सही से बुलेटिन लिखी गई। श्री कैण्डी खडे बातें कर रहे थे। मैंने उनको धन्यवाद देते हुए कहा, "जनरल कैण्डी, विदा। आपकी सहायता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद !" वे कहने लगे, "नहीं-नहीं, मेरी समझ में नही आता कि आपके बिना हम लोग क्या कर सकते थे !" इतने में सरोजिनी नायडू आ पहुची। कैंडी की बातें सुनकर उसी ढग में वे भी कुछ कहने लगीं। मैं भीतर चली गई।

इतने में डा० गिल्डर आ गए और डा० बिधान राय की प्रेस-प्रतिनिधि भेंट का हाल सुनाने लगे। तभी डा० बिधान राय भी आ पहुचे। वे आज जा रहे हैं। बापू के साथ कुछ बाते करके आ रहे थे। उनको उपवास के सम्बन्ध में एक चार्ट-सा बनाकर दिया था। हाथ में लेकर कहने लगे, "विज्ञान आपको श्रद्धा के क्षेत्र में नही ले जा सकता। उपवास-सम्बन्धी हरएक बात को आप विज्ञान से सिद्ध नही कर सकते।" बात सच्ची थी। कल-परसो मैं और डा० गिल्डर चकित हो रहे थे कि आठ-नौ औंस सतरे का रस लेने से वजन कम होना कैसे रुक सकता है ! डा० दीनशा मेहता भी कह रहे थे कि उपवास में संतरे लेने पर भी वजन तो एक-आध पौण्ड प्रतिदिन गिरता ही है। बापू का निदान तो निश्चित था—"ईश्वर ने ही मुझे शक्ति दी है। इसमें शका को स्थान नहीं है।"

डा० विधान राय चले गए। बापू की मालिश इत्यादि पूरी करके डा० दीनशा और उनकी पत्नी भी चले गए। महल सुनसान-सा लगने लगा।

बापू ने दिन में दो-तीन बार रस, शहद और पानी लिया और आराम करते समय 'टेल आव दि टू सिटीज' और 'हाउण्ड आव हेविन' पढते रहे।

---

* "The triumph is theirs, but the will was God's that I should survive the ordeal He will show me the next step You must forgive me for this breakdown"

† एक प्रकार की शराब

उपवास की समाप्ति

चित्र—नवीन

"बा ने रस का गिलास हाथ में लिया।" पृष्ठ २८०

शाम को खाना खाने के बाद महादेवभाई की समाधि पर फूल चढाकर हम लोग बेडमिन्टन खेलने लगे। इतने में देवदासभाई आए। रोज इतने लोग आते थे, मगर आज फाटक बन्द हो गए है। अब देवदासभाई व रामदासभाई को ही आने की इजाजत है। रात को रामदासभाई देवदासभाई को लेने आए। माताजी और बापू की बहन (फई बा) बाहर मोटर में थे, मगर हम उनको देख तक नहीं सकते थे।

रात को बापू अच्छी तरह सोए। उपवास पूरा होते ही सरकार का रग बदल गया है। फिर वही कडी निगरानी और बात-बात पर हुज्जत ! ऐसा लगता है, सरकार को इस बात का अफसोस ही रहा है कि उपवास क्यो पूर्ण रूप से सफल हुआ।

: ४१ :

परिचारकों की विदाई

४ मार्च '४३

प्रात पाच बजे प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के बाद भाई बापू के पाव दबाने लगे। बापू उपवास की बात करते हुए बोले, "मैंने ईश्वर का दर्शन जितना स्पष्ट इस उपवास में किया है, दूसरे किसी में नहीं किया। यो तो हरेक उपवास ईश्वरदत्त था और उसमें मैंने भगवान का दर्शन ही किया, मगर वह उत्तरोत्तर बढता गया है। मेरी शक्ति क्या थी ? ईश्वर ने शक्ति दी। मेरा दृढ विश्वास था, श्रद्धा थी कि मुझे इस उपवास में अधिक तकलीफ नहीं होगी और हुई भी नहीं।" मैंने कहा, "पहले दो हफ्तो को छोड दें तो।" बापू कहने लगे, "हा, वह तो है।"

आज भी डा० दीनशा मेहता अपनी पत्नी के साथ बापू की मालिश आदि करने आए। भडारी और शाह भी आए। बापू सोते थे। जब जागे तब उन्हें देखकर बुलेटिन लिखी---जनता के लिए अलग और सरकार के लिए अलग---और उसके पास भेज दी।

खुराक में आज भी बापू ने फल और ग्लूकोज ही लिया। कैलरी वैल्यू ७५० हो गई।

दोपहर को रामदासभाई आए। वह आज माताजी और फई बा को बम्बई ले जा रहे हैं। बापू के साथ कुछ समय बाते करते रहे। बापू उन्हें अहिंसक और हिंसक लश्कर का भेद समझाते रहे।

शाम को मीराबहन काफी समय बापू के साथ कविता इत्यादि की चर्चा करती रहीं।

खाने के बाद हम लोग खेल रहे थे कि इतने में देवदासभाई आए। उनसे खेलने को कहा, मगर उन्होंने इन्कार किया। जबतक उन्हे जितना चाहें यहा रहने की इजाजत थी, तबतक वह खेला करते थे, मगर जब से उन पर साधारण मुलाकातियो के-से

नियम लागू किये गए हैं, तब से वे थोडे समय के लिए ही आते हैं। उतन कम समय में कैसे खेल सकते हैं।

घूमकर हम लौटे। देवदासभाई ने प्रार्थना में भजन गाया। प्रार्थना के बाद थोडा समय बापू के साथ बाते करके वे उठे और भाई के पास जा खडे हुए। वे आज शाम को बम्बई से आए थे। मैंने उनसे कुछ खाने को कहा। उपवास के समय तो भाई किसीको पूछते ही नहीं थे, क्योंकि आने-जानेवाले बहुत थे। मगर अब तो केवल देवदासभाई ही आते हैं। सो मुझे लगा कि पूछ सकते हैं और उन्हे भी लगा कि वह निमत्रण स्वीकार कर सकते है। दो-तीन मिनट में वे खाकर उठने ही वाले थे कि बापू ने कहलाया कि देवदास जल्दी जाए। वे उठे और चल दिये। मैं दरवाजे तक पहुचा आई। मगर बापू इस घटना से बहुत चिढ गए। उन्हे लगा कि इस तरह रुकने में खतरा है। देवदासभाई आज देर से आए थे, सात के बदले आठ बजे। इसलिए जाने में भी रोज से थोडी देर हुई। बापू को वह ठीक न लगा। मुझे बहुत दु ख हुआ। बापू क्यो इतनी छोटी-सी बात के लिए नाराज हुए? खाने में पाच मिनट भी न लगे होगे। इस उधेडबुन में एक बजे तक नही सो सकी। बापू भी एक बजे सोए। वह बहुत थक गए थे।

५ मार्च '४३

आज बापू ने थोडा-सा दूध लिया। सरोजिनी नायडू मजाक कर रही थीं, "नवजात शिशु तो चार औंस दूध ही ले सकता है न!"

बावला और कनु को अंग्रेजी सिखाना शुरू किया है। डा० दीनशा मेहता जब मालिश आदि शुरू करते है तब हम तीनो अभ्यास के लिए बैठ जाते है।

डा० दीनशा बापू के लिए कुछ फल लाए। उनमें पपीता भी था। बापू ने खाया, मगर दक्षिण अफ्रीका के फलो के बाद यहा के सामान्य फल उन्हे फीके ही लगते हैं।

भडारी और शाह ने आकर बुलेटिन भेज दी। दिन भर घर सुनसान था। शाम को देवदासभाई के आने से काफी परिवर्तन हो जाता है। अच्छा लगता है।

उन्हे आज भी बम्बई में कुछ काम था। प्रार्थना के बाद बापू से थोडी बात करके वे चले गए।

श्री कटेली ने आज नये बेडमिटन के बल्ले मगवाए हैं। सो खुद भी खेलने को पहुच गए। घुटने में चोट के कारण उन्हे खेलने की मनाही है, मगर उन्हे यह खेल इतना प्रिय है कि उसका सर्वथा त्याग करना उनके लिए बहुत कठिन है।

बापू को शाम के वक्त बेचैनी-सी लगती थी। पेट और सिर पर मिट्टी की पट्टी रखकर सो गए। अच्छी नीद आई।

६ मार्च '४३

देवदासभाई आज मथुरादासभाई के आपरेशन के लिए मिरज जाने का विचार कर रहे थे। कल शाम कह गए थे कि मिरज जाऊ तो शायद अगली शाम को न आ सकू।

यहा सुबह का कार्यक्रम रोज की तरह चला। भडारी और शाह आए। भडारी कहने लगे, "अब कल से बुलेटिन की क्या आवश्यकता है ? हम लोग भी मान गए।" आज की बुलेटिन में लिख दिया कि बिना विशेष आवश्यकता के अब आगे बुलेटिन न निकाली जायगी। भडारी कहने लगे कि कल से वे नहीं आवेगे। डा० शाह आया करेगे और सरकार को खबर भेजा करेगे।

डा० दीनशा मेहता और उनकी पत्नी मालिश करके चले गए।

बापू को खाना खिलाकर मैंने स्नान किया। जब खाना खाकर लौटी तो एक बज चुका था। इतने में श्री कटेली आए और कहने लगे, "अखबार में आया है कि देवदास कुछ घटो तक बापू के पास रहे थे। परिणामस्वरूप कल से उन्हे यहा आने की इजाजत नहीं मिलेगी। आज आखिरी दिन है।" बहुत बुरा लगा। कौन जाने आज वे आ भी सकेगे या नहीं। बापू से कहा गया था कि देवदास की मुलाकात बन्द करने से पहले उन्हे नोटिस दिया जावेगा, मगर आज एकाएक सब बदल गया। बापू सोते थे। उठने पर मैंने उन्हे बताया। क्षण भर उन्हे लगा कि परसो यहा देर हुई थी, वही कारण होगा, मगर मैंने याद दिलाया कि अखबार में तो पहले ही आया था कि चार दिन तक उन्हे आने देंगे। आज चौथा दिन है। परसो देवदासभाई मुश्किल से दो घटे ठहरे थे। इतने की तो उन्हे इजाजत थी ही। बापू कहने लगे, "तू ठीक कहती है, मगर मेरा स्वभाव है कि अपनी तरफ से कोई भी कारण मिल सके तो उसे पकड लेना चाहिए।"

बाद में बापू ने दुर्गाबहन और बावला को बुलाकर कहा, "देवदास के लिए इस तरह एकाएक हुक्म आ गया है तो तुम लोगो को भी एकाएक यहा से जाने के लिए सरकार कह सकती है, इसलिए तुम लोगो से आज ही थोडी बाते कर लेना चाहता हू।" फिर बावला को क्या करना चाहिए, कहा रहना है, इस बारे में बाते करते रहे।

कल से देवदासभाई नही आवेगे, इस खबर से एक तरह की उदासी-सी छा गई है।

देवदासभाई मिरज नहीं गए थे, क्योकि मथुरादासभाई का आपरेशन मुल्तवी हो गया था। वे शाम को आए। रामदासभाई भी बम्बई से आ पहुचे। उन्हे वहा सेक्रेटेरियट से पता चला था कि गाधीजी की तबीयत अच्छी है, सुधार सतोषजनक है। कल से बुलेटिन नहीं निकलेगी, इसलिए मुलाकात भी कल से बन्द होजावेगी। बुरा लगा। मालूम होता तो दो-चार रोज बुलेटिन और निकालते।।

प्रार्थना के बाद रामदासभाई बापू से बोले, "अब दूसरे उपवास के लिए हम पर दया रखना। हम तो पामर प्राणी है, इसका भी आपको विचार रखना चाहिए।" बापू कहने लगे, "यह तो तू ईश्वर से माग, मै कौन हू ? मुझसे जो मेरा मालिक करावेगा, वह मुझे करना पडेगा। यह उपवास भी मैंने कहा किया है ? मै तो जीना चाहता हू। आगे ईश्वर की मर्जी!" दोनो भाई चले गए। श्री कटेली सारा समय साथ थे। अन्त में उन्हे पहुचाने के लिए हम लोग कमरे से निकले। श्री कटेली ने हमें बरसाती से आगे जाने की

मनाही की, इसलिए हम वहीं रुक गए ।

बापू की मालिश हो रही थी कि इतने में श्री कटेली आकर कहने लगे, "भडारी का टेलीफोन था कि श्रीमती देसाई और उनके लडके को सोमवार तक चला जाना चाहिए ।" यह दूसरा धक्का था, मगर इसके लिए पहले की अपेक्षा हम लोग ज्यादा तैयार थे। मैंने उन्हे खबर दी। नारायण को दुर्गाबहन से अधिक बुरा लगा। उसे यहा बहुत अच्छा लगता था। पहले तो वह कहता था कि उसे जल्दी जाना है; क्योकि यहा जितना रहे, उतनी ही अधिक सम्भावना उसके लिए यहा से निकलने पर तुरत पकड़े जाने की है। महादेवभाई की अस्थिया भी गगाजी पहुचाने को रखी थीं। उस कारण भी वे दोनो जल्दी जाना चाहते थे, इसीलिए बापू ने भडारी से कहा था कि नर्सों में कनु ही रहेगा, मगर बाद में नारायण का मन बदला। वह भी कनु के साथ रहना चाहता था। मगर अब क्या हो सकता था !

दुर्गाबहन की मैंने मालिश की और उनसे बाते भी की ।

७ मार्च '४३

महादेवभाई की समाधि पर सुबह फूल चढाने बहुत दिनों के बाद आज मैं भी गई। लौटने के बाद थोडे मिनटो में ही भंडारी और शाह आ पहुचे। बापू ने भडारी से बा के लिए एक नर्स का इन्तजाम करने को और मनु गाधी या मणिबहन पटेल को भेजने को कहा।

दोपहर को बापू ने दुर्गाबहन और नारायण के साथ थोडी बाते कीं। बाद में दुर्गाबहन मेरे साथ काफी समय तक बाते करती रहीं। वे पुराने दिनो को याद कर रही थीं और बात-बात पर उनकी आखो में पानी आ जाता था।

रात को मौन लेने से पहले बापू ने मा-बेटे को फिर बुलाकर पूछा, "क्या कुछ कहना है ?" दुर्गाबहन बोलीं, "और तो क्या कहू, आप जल्दी आवे और हम लोगो पर दया रखकर फिर उपवास की बात न करे।" बापू ने उत्तर दिया, "यह उपवास भी मैंने नहीं किया। मैं तो राम के अधीन हू। अगर मैं कर्त्तव्य-पालन की एक सम्पूर्ण मिसाल जगत् के सामने रख जाऊ तो मेरे लिए वह बस है।"

बाबला के साथ आज बेडमिन्टन और रिंग खूब अच्छी तरह खेला। कल नहीं खेले थे। इससे वह निराश था, आज खुश हो गया।

८ मार्च '४३

सुबह महादेवभाई की समाधि पर फूल चढाकर लौटे तो दुःख हुआ था। आज नारायण की यह आखिरी पुष्पभेंट है। फिर वह यहा पर कब आ सकेगा, यह भगवान ही जानता है। नारायण के मन में था कि सम्भव है, किसी कारणवश उसका जाना टल जावे। कल भडारी के साथ नर्स की बात हो रही थी तब बापू ने उससे कहा था कि अभी तक दुर्गा बा की मदद करती थी। अब वह जावेगी तो बा को दूसरे की आवश्यकता होगी। बापू ने जो नाम सुझाए, उनके अलावा किसीको बाहर से लाने की भी बात चली। दुर्गाबहन

का नाम आया। भंडारी कहने लगे, "क्या वे ठहरेंगी ?" बापूने कहा, "ठहर तो जावेंगी।" मैंने कहा, "नारायण को उनसे अलग नहीं किया जा सकता।" भंडारी कहने लगे, "उस बेचारे को अनिश्चित समय के लिए कैसे रोका जा सकता है ? उसके लिए वह सजा हो जाएगी।" नारायण ने बाद में सुना तो कहने लगा, "उनसे कहो कि मेरे लिए यहा रहना कोई सजा नहीं। मुझे यहा बहुत अच्छा लगता है। सेवाग्राम की तरह मेरा अभ्यास भी यहा अच्छा हो सकता है।" मगर भण्डारी से कुछ कहना फिजूल था। दोपहर को मा-बेटे को लेने के लिए दिलीपकुमार मोटर लाए।

दुर्गाबहन के जाने से पहले बापू ने उनको बुलाया। दुर्गाबहन ने फिर कहा, "जल्दी आना।" बा कहने लगीं, "पापी छोड़ें तब तो ! वे किसीकी नही सुनते।" बापू का मौन था। उन्होंने लिखा, "सरकार भले न सुने, मगर सरकार के ऊपर भी एक बड़ा सरकार है। वह सबकी सुनता है। वह निर्बल का बल है।" साढे तीन बजे की गाड़ी पकड़ने के लिए वे लोग यहा से ढाई-पौने तीन बजे निकले। हम लोग बरसाती से ही वापस आ गए। बाहर जाने से कहीं कटेली रोके न, यह सोचकर आगे बढे ही नहीं। मगर बा बाहर तक गईं।

घर बहुत सूना लगने लगा है। भाई तो बहुत ही उदास हो गए। रात को बापू का काम भी नौ-सवा नौ बजे पूरा हो गया। बाद में कनु कुछ भजन सुनाता रहा, कुछ बाते करके भाई को हसाता रहा। साढे दस बजे सब सोने को उठे।

९ मार्च '४३

आज केवल डा० शाह आए और सरकार को खबर भेजने के लिए कुछ बाते पूछ गए।

आज बापू का वजन लिया। ९९ पौण्ड निकला।

बा की मालिश आदि आज मैंने की। दोपहर में कुछ सो भी गई। मगर तो भी रात को थकान लगती थी। दिन भर घर में उदासीनता-सी भरी रहती थी। बुरा लगता था। कनु मेरे पास व्याकरण सीखता है। आज से उसने सरोजिनी नायडू के साथ 'ट्रेज़र आइलैण्ड' पढना शुरू किया है।

कल से बकरी के दूध का मक्खन निकालना शुरू किया है, क्योंकि बापू की खुराक की केलोरी वैल्यू× बढाने के लिए मक्खन की आवश्यकता है। कल तो ½ औंस निकला था, आज पौन औंस निकला।

डा० गिल्डर का हृदय की धड़कन का नक्शा आया। सरोजिनी नायडू का और बापू का नक्शा भी उन्होंने लिया। भाई का और बा का मैंने लिया। उनसे कार्डियोलोजी† की छोटी-सी किताब भी पढने को लाई, मगर आज वह शुरू नहीं कर पाई।

× उष्णताजनक शक्ति

† हृदय-विज्ञान

१० मार्च '४३

आज से बापू ने भाई को भी अपनी सेवा में हिस्सा दिया, इसलिए मेरे पास दोपहर को दो-एक घटे, खाली बचे जिनमें अखबार और कार्डियोलोजी की किताब देखती रही।

आज भाई ने मक्खन निकाला। रोज से ज्यादा निकला, मगर बकरी ने आज दूध बहुत कम दिया, इसलिए कल मक्खन नही निकाल सकेंगे। आज का आधा कल के लिए रख लिया।

कनु आज खेलने के लिए आया। बहुत हसाता रहा। रात को भाई ने बापू का सब काम किया। कनु कल मीराबहन से अग्रेजी वातचीत और भजन सीखता रहा। मैंने कुछ पढा।

गर्मी बहुत पडने लगी है।

बापू का रक्तचाप सुबह नही देखा था। शाम को प्रार्थना से पहले देखा तो १२६/८२ निकला।

शाम को बापू के लिए गुड बनाया। दूध नही डाला। था ही नही।

११ मार्च '४३

आज से मीराबहन ने डा० दीनशा मेहता से एनीमा और मालिश इत्यादि लेना शुरू किया है। इसका असर उनकी तबीयत पर अच्छा होगा।

आज भडारी आए। कहने लगे, "कनु को यहा से जल्दी जाना होगा। किसी दूसरे को सेवा के लिए दे सकेंगे।" मैंने कहा, "मगर बा की तरह नहीं होना चाहिए कि दुर्गा-बहन चली गई और कोई आया भी नहीं।" वे कहने लगे, "तुम अपना मत लिख सकती हो।" इसलिए दोपहर को मैंने और डा० गिल्डर ने लिखा कि हमारी समझ में बा को रोज के लिए और बापू को एक महीने के लिए नर्स की आवश्यकता है। कनु रह सके तो सबसे अच्छा होगा, क्योंकि वह बापू की आवश्यकताए समझता है।

बापू ने आज शाम को सब्जी नहीं ली, मगर रात को उन्हे कब्ज-सा महसूस हुआ, इसलिए कल से दोनो वक्त सब्जी लेंगे।

बापू का रक्तचाप आज सोते समय देखा। १५६/९८ निकला।

कल वाले गुड में नीबू डालकर उसे आज फिर गरम किया। अच्छा बन गया है। अब बापू काफी गुड खा सकेंगे।

१२ मार्च '४३

आज भडारी नही आए। दोपहर को उन्होने कहलाया कि प्रेमाबहन यहा हैं और उन्हे बा के लिए बुला सकते हैं। चार लडको के भी नाम आए। उनमें से एक वालजी-भाई का लडका है। कनु की जगह कोई दूसरा आए, सरोजिनी नायडू को यह पसन्द न था। हम सबको भी। जितने दिन में नया आदमी काम समझेगा, उतने दिन में उसके

आया। अच्छा लगा। पीछे भाई के साथ थोडी देर पढती रही।

वा रात को अच्छी तरह सो गई। गर्मी सख्त थी।

१८ मार्च '४३

आज सुबह भडारी आए। कहने लगे कि मेहता और कनु २६-२७ मार्च तक चले जावें तो उचित होगा। मैंने कहा कि लगभग ठीक है। बोले कि अब लगभग की बात न करो। फिर कहने लगे कि बहुत करके डा० गिल्डर अब यहीं रहेंगे। मनु आ जावेगी, मगर मनोज्ञाभाभी और मनु गाधी दोनो में से किसको बुलाते हैं, यह उन्हें पता नहीं चलता था, इसलिए पूछ गए।

वा आज बिलकुल अच्छी थीं। सुबह आराम करने को कहा तो मुझसे चिढ गईं। जब उनकी तबीयत ठीक रहती है तब उन्हे बिठा रखना कठिन होता है।

दोपहर में सख्त गर्मी थी। अभी रात को कुछ हवा चली है। अच्छी लगती है।

कल डा० गिल्डर की कुछ डाक्टरी पत्र-पत्रिकाए आई हैं। उनमें से एक आज देखती रही।

: ४२ :

सरोजिनी नायडू की बीमारी और रिहाई

१९ मार्च '४३

आज सरोजिनी नायडू की तबीयत अच्छी नहीं है। सिर में चक्कर आते हैं। पतले दस्त हो गए हैं। नाडी तेज है और कमजोरी लगती है। रात में उनके पास कनु को सुलाया। मैंने उनके पास सोने को कहा तो उन्होंने मनाही की। कहने लगीं, "तुम्हारी बापू के पास आवश्यकता होगी।" मुश्किल से कनु को वहा सोने दिया।

दिन में आज कुछ खास काम नहीं कर पाई। खूब गर्मी पडती है। दिन यों ही निकल जाता है।

सुबह डा० शाह आए। सरोजिनी नायडू की तबीयत उस समय अच्छी थी, मगर तो भी वे बहुत दिनो से बीमार-सी है। डा० शाह कह रहे थे, "अगर वे चली जाए तो तुम लोगो की देखभाल कौन करेगा?" मगर हमारी देखभाल के लिए उन्हे रोका थोडे ही जा सकता है। उनकी तबीयत को देखते हुए उन्हे छोडना ही चाहिए।

२० मार्च '४३

आज भी सरोजिनी नायडू बीमार है। थोडा बुखार भी है। चक्कर तो आते ही रहते हैं। सुबह भडारी और शाह आए। उन्होंने रिपोर्ट भेजी है कि सरोजिनी नायडू को बहुत बीमार समझना चाहिए। शाम को फिर आए। उन्हे अस्पताल जाने को कहने

लगे। सरोजिनी नायडू ने इन्कार किया। उन लोगो ने काफी जोर लगाया, मगर वे न मानी। तब वे बापू को बुलाकर ले गए। वे बोली, "अस्पताल के बजाय मै घर जाना पसद करूगी।" मगर घर जाना तो सरकार के हाथ में रहा। आखिर इतना मानीं कि गुसलखाने उठकर नही जावेगी।

मनु भी शाम को आ गई। नागपुर जेल की बाते बताती रही।

भडारी ने आज कहा कि डा० दीनशा का आना सोमवार से बन्द करने का विचार है। प्यारेलालजी उनकी जगह मालिश कर सकते है। भाई ने उन्हे दोपहर को पत्र लिखकर बताया कि वे दीनशा की जगह क्यो नही ले सकते।

२१ मार्च '४३

कल रात मै सरोजिनी नायडू के पास सोई। वे काफी सोती रही। बीच-बीच में उठकर बैठ जाती थी। बुखार तो था ही। सुबह छ बजे मापा तो १०१ निकला, दिन में फिर बढा और दोपहर को १०५ तक गया। डा० शाह आए। भडारी बम्बई गए थे। बापू ने डा० शाह से सरोजिनी नायडू के लिए एक नर्स लाने को कहा। डा० शाह कहने लगे कि साढे दस बजे भण्डारी बम्बई पहुचेंगे। ग्यारह-बारह बजे उन्हे टेलीफोन करके वे पूछेंगे। मगर दोपहर को भडारी का टेलीफोन आया कि सरकार ने अम्माजान को छोड दिया है। वे कहा जाना चाहती है, यह पूछ ले। सरोजिनी नायडू ने पर्णकुटीर जाना पसद किया।

सुबह श्रीमती दीनशा मेहता आकर सरोजिनी नायडू की देखरेख करने लगी। उनका बुखार तेज था। मै और मीराबहन भी दूसरे कामो से समय निकालकर आते-जाते रहते थे। आज सुबह हमने सरोजिनी नायडू के कमरे से खाने की मेजें निकाली थी ताकि उनको आराम मिल सके। सामान की अलमारी निकालने की तैयारी में थे कि दोपहर को उनके छूटने की खबर आ गई। उनका सामान बाधा। मैंने जो तस्वीरे बनाकर उन्हे दी थी, उन पर कोई चीज रखी जाने से धब्बे पड गए थे, इसलिए उन्हे ठीक किया। अम्माजान को तैयार किया। पाच बजे डा० शाह आए और एम्बुलेन्स कार मगवाई। करीब साढे पाच बजे सरोजिनी नायडू रवाना हुई। उनका बुखार १०२ पर आ गया, मगर उल्टिया खूब हो रही थी। डा० दीनशा मेहता, उनकी पत्नी और डा० शाह उनके साथ गए। वे पर्ण-
जा रही थी। उनके जाने के बाद घर सूना हो गया।

डा० दीनशा ने आज सरकार को एक खत लिखा है, जिसमें उपवास के बारे में अपने अनुभव की चर्चा की है और कहा है कि उन्हे गाधीजी की सेवा में और लम्बे अर्से तक रहने की आवश्यकता है।

: ४२ :

अहिंसा का प्रयोजन

२२ मार्च '४३

सरोजिनी नायडू के जाने से घर बहुत ही सूना हो गया है। उपवास के बाद जिस रोज़ माताजी पूना मे गई थीं, उस रोज भी इतना सूना नहीं लगा था।

आज बापू की मालिश मैंने और भाई ने मिलकर की। डा० गिल्डर भी पास खडे थे। बोले, "बापू को कहीं यह न लगने पाए कि दीनशा गए तो अब उनके लिए कुछ होता ही नहीं है। इसमे तबीयत का सुधार रुक सकता है।

२३ मार्च '४३

भाई का हाथ कट गया था, इसलिए मैं मालिश कर रही थी। इतने में डा० गिल्डर ने आकर दूसरी तरफ की मालिश करनी शुरू कर दी। भाई आए और हसते-हसते कहने लगे, "जरा मैं भी तो देखू कि दो एम डी कैसे मालिश करते है!" बापू ने पूछा, "कैसा लगा?" वे भी हसने लगे। बोले, "चलेगा। मैं जल्दी प्रमाणपत्र देने वाला नहीं हू।"

शातिकुमारभाई का कनु के लिए पत्र आया। लिखा था कि मेरी माताजी को तेज़ बुखार आता था। चिन्ताजनक स्थिति हो गई थी, मगर अब अच्छी है।

२४ मार्च '४३

बापू को आज करीब आधे फर्लांग तक चलाया। धीरे-धीरे चलना बढा रहे है। मालिश आज भी डा० गिल्डर ने और मैंने की।

मनु ने बा का सेवा कार्य अच्छी तरह सभाल लिया है। बा अब घर के काम में भी रस लेती है। उनकी तबीयत भी अच्छी जान पडती है।

गर्मी बढती ही जाती है। दोपहर को बापू के कमरे में करीब एक हफ्ते से पखा चलता है।

आज माताजी की और खबर मिली। वे बहुत बीमार है। दस दिन से तेज बुखार आता था। दो दिन से कुछ कम है। इस खबर से बडी चिन्ता हो रही है। इस उमर मे मधुमेह के साथ लम्बा बुखार मामूली बात नही।

२५ मार्च '४३

आज शाम को जब मैं कनु को व्याकरण सिखा रही थी तब देखा कि बा लेटी है। उठकर पूछने गई तो पता चला कि वही दिल की धडकन का दौरा हो गया।

आज पौने चार घटे तक यह दौरा चला। रक्तचाप शुरू में १४०। ९० था, बाद में ९६। ६६ पर जा पहुचा। थोडी देर शका हुई कि सम्भवत मस्तिष्क में खून की गाठ (कोरोनरी थ्रोम्बोसिस) होगी, मगर उसके जैसी बेचैनी न थी। बा का सामान्य रक्त-चाप ११०। ७० था। उस हिसाब से तो रक्तचाप बहुत नहीं गिरा था। मगर तो भी चिंता काफी हो गई। डा० शाह को खबर दी। वे आए। दिल की धडकन का चित्र लेने के लिए कोयाजी को फोन किया। उनकी मोटर उन्हे उस समय नही मिल सकती थी, इसलिए डा० शाह उन्हे लेने गए। उनकी मोटर छोटी थी। सो घर जाकर अपनी बडी मोटर लाए। फिर कोयाजी के यहा थोडा रुकना पडा। वे दीनशा के बारे में अपना अनुभव डा० शाह को बताते रहे। नतीजा यह हुआ कि डा० शाह धडकन का चित्र लेने की मशीन लेकर आए। उससे दो-चार मिनट पहले दौरा बन्द हो चुका था। ई. सी जी. नार्मल निकला। अफसोस हुआ कि मशीन वक्त पर नहीं पहुची।

रात में बा को नींद अच्छी आई, मगर डरती थी कि कहीं फिर से कुछ न हो जाय।

दोपहर को बा के नाम सेवाग्राम से लीलावती का पत्र आया। लिखा था कि शकरन् और पजाब का झगडा हुआ था, इस कारण दवाखाना बन्द करना पडा है।

२६ मार्च '४३

आज मोहनलाल का अग्रेजी में लिखा पत्र आया। वह उसने बम्बई सरकार के सेक्रेटरी के दफ्तर में बैठकर लिखा था। माताजी की अच्छी खबर थी। दो रोज से बुखार नहीं था, साथ ही सेक्रेटरी की ओर से सदेश था कि प्यारेलाल गुप्त ने सदेश भेजा है कि आप लोगो की मा सख्त बीमार है। दोनो पत्रो की तारीख २५ मार्च थी, मगर उन्हे सदेश पहले मिला होगा। भेजने में देर हुई होगी। मोहनलाल के पत्र की खबर ही हमने सच्ची मानी।

टॉटेनहम का उत्तर भाई को मिला। 'काग्रेस की जिम्मेदारी' वाली किताब के बारे में भाई ने उनसे पूछा था कि क्या वे उसे गाधीजी को भेजेंगे? उन्होने लिखा कि गाधीजी चाहते है तो भेजेंगे।

मथुरादासभाई का पत्र आया। उन्हे पाचवा ऑपरेशन करवाना पडेगा।

बापू आज उपवास के बाद पहली बार शाम को महादेवभाई की समाधि पर गए। कनु चाहता था कि उसके जाने से पहले वे वहा हो आवे।

२७ मार्च '४३

आज कनु को जाना था। दिन का काफी समय उसके साथ बातचीत में गया। भाई की अपनी घडी ठीक हो कर आ गई थी। उन्होने वह मुझे कनु को देने के लिए दी। जाते समय घडी का रक्षाबधन मैंने उसे बाध दिया। उसका जाना अखर रहा था, क्योंकि वह बहुत हसाता रहता था और काम भी खूब करता था। उसके जाने से बहुत सूना

लगने लगेगा। सोचा था कि जाने से पहले मुझे कुछ भजन भी सिखा देगा। मगर वह न कर सका। शाम को प्रार्थना के बाद गाड़ी उसे ले गई।

रात में काफी समय तक डा० गिल्डर, भाई, कटेली साहब और मैं साथ ही बैठे रहे। डा० गिल्डर अपने पुराने अनुभव सुनाते रहे।

सरोजिनी नायडू की खबर अच्छी है। बा अलीतन काफी अशक्त है।

आज शाम को भी बापू महादेवभाई की समाधि पर गए।

२८ मार्च '४३

आज मालिश के समय श्री कटेली खबर लाए कि रामदासभाई को एक मुलाकात की इजाजत मिली है। बापू ने चार बजे उन्हें बुलवाया था, लेकिन वे पांच बजे आए। बा को बहुत अच्छा लगा। हम हंस रहे थे। हफ्ते में एक बार एक पुत्र उन्हें मिल जावे तो उनकी तबीयत अच्छी रहे। मैंने डा० गिल्डर से हंसी में कहा, "आप नुस्खा लिखिए।"

रामदासभाई के जाने के बाद हम लोग खाने बैठे। इतने में बापू नीचे समाधि पर फूल चढाकर आए। पीछे हम लोग उनके साथ घूमे। आज बापू आधा घंटा घूमे।

दोपहर को भाई के साथ बातें होने लगीं। भाई बोले, "अहिंसा के असर से हिंसा की वृद्धि हो तो वह आश्चर्यजनक बात ही कही जा सकती है न! अपनी और मुस्लिम लीग की मिसाल लीजिए। जितनी आपकी अहिंसा बढती है, उतना ही उन लोगों का जहर बढता है। यह क्यों?"

बापू कहने लगे, "ऐसा ही होना चाहिए और यह मैं नई चीज नहीं कह रहा हूं। दक्षिण अफ्रीका में भी वही हुआ था। वहां एक वर्ग ऐसा पैदा हो गया था, जो मेरे खिलाफ जहर उगलता रहता था और मुझे मारने तक को भी तैयार था और वह ऐसी जगह में, जहां मैं बच्चे-बच्चे को पहचानता था। अहिंसा का काम ही है सब मैल ऊपर ले आना। दूसरे शब्दों में अहिंसा का काम भंगी की तरह सफाई करने का है।

"डोक जब मेरे बारे में अपनी किताब लिखकर लाया था तब मुझसे उसे नाम क्या देना यह पूछने लगा। मैंने कहा—मैं नहीं बता सकूंगा। उसने नाम पसंद किया था 'ए स्कैवेन्जर' ('एक मेहतर'), मगर उस नाम का एक उपन्यास भी था, इसलिए उसे वह नाम पसंद न था। मुझे तो पसंद था, मगर पोलक ने उसे रद्द किया। आखिर डोक की किताब को 'एन इण्डियन पैट्रियॉट इन साउथ अफ्रीका' (दक्षिण अफ्रीका में एक भारतीय देश-प्रेमी), यह नीरस-सा नाम मिला।" फिर डोक कैसे उनके पास आया, यह बताते रहे।

: ४४ :

गुप्त नीति का विरोध

२९ मार्च '४३

आज बापू का मौन था। श्री कटेली को बुखार आ गया। गला खराब है। बा का ठीक चलता है, लेकिन वह कुछ कमजोर है।

भाई ने बताया कि रात में सोते समय उन्होने बापू से पूछा, "जनता में विचारो के समन्वय (Co-ordination of thought) के द्वारा सगठन हो सके तो सर्वोत्तम है, किंतु आज की परिस्थिति में अगर अहिसा के मार्ग पर जनता को लाने के लिए गुप्त नीति अनिवार्य हो तो भी उसे आप क्या त्याज्य मानेंगे ?"

बापू ने उत्तर दिया, "हा।"

बापू का मत है कि यह दलील भूल से भरी है। कहने लगे, "आज चाहे गुप्त नीति व्यवहार की दृष्टि से लाभदायक लगे, मगर अन्त में यह देखने में आवेगा कि उससे फायदे की जगह हानि अधिक होती है। इस रास्ते से हम सामुदायिक अहिसक क्राति के ध्येय को नही पहुच सकते। उल्टे इस ध्येय के रास्ते में उससे रुकावट आ सकती है। मुझे इसमें शका नही। इस चीज के गर्भ में ही उसकी निष्फलता के बीज पडे है।"

३० मार्च '४३

आज अखबार में खबर थी कि डा० बिधान राय को यहा आने की इजाजत नही मिली। बुरा लगा।

बापू को शाम को कुछ जल्दी घुमाने ले गई। थोडी देर घूमकर वे महादेवभाई की समाधि पर फूल चढाने को गए। मीराबहन नाराज हो गई कि इतनी जल्दी बापू को घुमाने नहीं ले जाना चाहिए था।

शाम को बेडमिन्टन और रिंग एक-एक बार खेले। अच्छा लगा।

३१ मार्च '४३

आज डा० गज्जर परीक्षा के लिए बापू के खून का नमूना लेने को आनेवाले थे। सुबह उन्हे घूमने नहीं दिया। उन्होने स्नानादि से जल्दी छुट्टी पाई जिससे कि बारह बजे तक उन्हे दो घटे आराम मिल सके; क्योकि खाना उसके बाद ही खा सकते थे। बारह-साढे बारह बजे गए, लेकिन डा० गज्जर का पता ही न था। आखिर डा० बिधान राय का श्री कटेली को टेलीफोन आया कि बापू को खाना खिला दो, क्योकि

डा० गज्जर दो-ढाई वजे से पहले नहीं आवेगे । वे खून की कुछ परीक्षा आज करेंगे, कुछ कल ।

डा० गज्जर चार वजे आए । 'ब्लड काउण्ट'× आज किया । कल 'ब्लडकेमिस्ट्री'† करेंगे । उनके साथ एक पुरुष और एक स्त्री मदद के लिए है । स्त्री हार्डिज कालेज की डा० डीमोन्टी की रिश्तेदार और वम्बई के एक पत्रकार मोराइस की पत्नी है । डा० गज्जर के साथ दो-तीन साल से पैथॉलोजी में काम करती है । कहने लगी, "मेरे पति ने गाधीजी को 'स्टोरी आव इण्डिया' किताव भेजी थी, वह मिली या नहीं ?" यहा आई ही नहीं । कौन जाने कितनी किताबें ऐसे ही पडी रहती होगी । सरोजिनी नायडू ने अपना वाकी सामान मगवा भेजा है, इसलिए मैंने सव इकट्ठा करके भेज दिया ।

डा० विधान राय नहीं आ सके । सरकार ने उन्हे इजाजत नहीं दी ।

शाम को वापू मीरावहन के साथ वाते करने लगे । मीरावहन ने पूछा, "आपका विचार है कि जो लोग गुप्त रीति से आदोलन चला रहे है, वे अपने को सरकार के हवाले कर दें । मैं जानती हू कि सतयुग की आदर्श स्थिति में ऐसा होना चाहिए, लेकिन हमें तो आज जैसी दुनिया है, उसी के साथ चलना है । विना नेताओ के आदोलन कैसे आगे वढे ?"

वापू वोले, "मेरा तो यही कहना है कि अपने को सरकार के हवाले कर देने के फलस्वरूप आदोलन खूव आगे वढेगा । हमारे साधन जितने पवित्र होगे, उतना ही देश के और लोगो के लिए अच्छा होगा । अगर मेरे वताए रास्ते पर चले होते तो दो में से एक वात होकर रहती या तो सिर्फ वे लोग, जो सत्य और अहिसा में पक्का विश्वास रखते है, आदोलन में हिस्सा लेते, जिससे कि आदोलन ठढा न पडने पाता जैसा कि वह पड गया है, या कोई भी उसमें हिस्सा न लेता । इन दोनो रास्तो से हमें गुप्त नीति जैसे गलत तरीको से छुटकारा मिल जाता । तोड-फोड के आदोलन को हमारे सिर मढकर खूव प्रचार किया गया है । वेशक तोड-फोड वालो ने साहस और कुशलता तो वहुत दिखाई है, लेकिन इस सवका मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पडा । मैं जानता था कि तरीका गलत है और आन्दोलन को जल्दी-से-जल्दी वन्द हो जाना चाहिए । जव सरकार ने कहा कि उसने परिस्थिति पर कावू पा लिया है तो मैंने उसकी वात पर विश्वास कर लिया, लेकिन सरकार में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वह देशव्यापी आन्दोलन पर कावू पा सके । आन्दोलन तो हमेशा नया वल पाकर चलता रहेगा ।"

मीरावहन वोलीं, "दुवारा जव आदोलन होगा तो या तो पूर्ण अहिसात्मक होगा

×रक्तकण की गिनती

†रक्त की रासायनिक जाच

या पूर्ण हिंसात्मक ।"

मैंने पूछा, "आपने तो कहा था कि इस वक्त हमारा लडाई का तरीका जेलें भरना नही है, फिर सरकार के हवाले अपने को कर देने की यह सलाह क्या उसके विरुद्ध नहीं है ?"

बापू कहने लगे, "नही, मैंने कहा था कि हम गिरफ्तारी का आवाहन न करके मृत्यु का करें। अगर हमारे काम के दौरान में हम पकडे जाते हैं तो कोई बात नहीं है। मान लो, जयप्रकाश अपने को सरकार के हवाले कर दे तो इसमें शक नहीं कि उसे कडी सजा मिलेगी, लेकिन उससे हमारा पक्ष मजबूत बनेगा। सरकार के हवाले अपने को करने से लोग अपने गलत कदम को वापस ले लेते है । उससे हमें कोई नुकसान नही हो सकता ।"

मीराबहन कहने लगी, "आपका यह विश्वास कि लोगो के प्रकट होने और परिणाम भुगतने से परिस्थिति सुधर जायगी, तर्क के आधार पर नही लगता, आपकी अतर्प्रेरणा के आधार पर ही समझना चाहिए ।"

बापू बोले, "वह तो है ही । सत्य और अहिंसा से किसीको हानि नहीं हो सकती ।"

१ अप्रैल '४३

आज सुबह नौ बजे डा० गज्जर आए। काम करते-करते ११—११-३० बज गए। पीछे बापू ने स्नान किया। खाना खाने को बहुत देर हो गई।

दोपहर को मै बिलकुल नहीं सोई। 'हिस्ट्री आव मेयो क्लिनिक्स' पढती रही।

शाम को बापू मीराबहन के साथ एमरी के भाषण की बातें करते रहे। बापू हस-कर कहने लगे, "या तो मै इन बातो पर त्यौरी चढाऊ या कटु बन जाऊ अथवा हस दू। हंस देना बहुत अच्छा है।"

पीछे बापू मनु की चौथी रीडर लेकर मीराबहन को उसमें से कुछ समझाते रहे और उनसे व मुझसे किताव पढने को कहा। मनु को उन्होने इतिहास और व्याकरण भी पढाया।

दोपहर को सख्त गर्मी रही। दिल्ली के जून महीने का-सा मौसम है। शाम को ठडी हवा चली।

प्रार्थना का समय सवा आठ हो गया है ।

२ अप्रैल '४३

आज बापू को सुबह घूमते समय कमजोरी मालूम हो रही थी, कारण रात में नींद का कम आना और कल सुबह नाश्ता न करना हो सकता है। उपवास के समय पहले तीन-चार दिन तक बापू को कमजोरी महसूस नहीं होती थी। अब एक समय का नाश्ता छूटने का भी असर होता जान पड़ता है

दोपहर को आज भी नहीं सोई, पढती रही। सुबह भी प्रार्थना के बाद नहीं सोई थी।

वाइसराय का राजाजी आदि को जो उत्तर मिला है, वह गजब का है। समझ में नहीं आता कि कोई ठीक दिमाग वाला आदमी कैसे इस तरह की बातें कर सकता है! नीरो के या जार के जमाने में चाहे ऐसा होता रहा हो, मगर आजकल के जमाने में दुर्योधन की तरह सुई की नोक जितनी जमीन भी देने से इन्कार करना मनुष्य को चकित कर देता है।

३ अप्रैल '४३

वा को कल से पेशाब में जलन की शिकायत है। आज और बढी है। बुखार भी आ गया। पेशाब पानी-सा साफ नहीं है। स्याहीचूस से छानने पर भी साफ नहीं हुआ। उसमें थोडी-सी चर्बी और पीप है। पहले वी-कोलाई × हो चुका है। वही फिर उभरा होगा। सल्फा (Sulpha) की गोली दी, बहुत फायदा हुआ, पर कमजोरी बहुत लगती है। प्रार्थना के बाद वा कहने लगीं, "मेरे पास बैठी रहो।" मैं बैठी रही। उन्हे नींद आई तब मच्छरदानी लगाकर चली आई।

डा० गिल्डर बम्बई के मेयर चुने गए हैं।

मीराबहन बगीचे में सोने जाती हैं। बरामदे में गर्मी बहुत लगती थी।

४ अप्रैल '४३

वा की तबीयत काफी अच्छी है। कमजोरी है, लेकिन बुखार और जलन नहीं है। इतनी थोडी सल्फा का इतना असर!

कल से सुबह पन्द्रह मिनट के लिए बेडमिण्टन खेलने जाती हूँ। अच्छा लगता है। बापू सुबह-शाम अब महादेवभाई के समाधि पर जाते हैं और आधा घंटा घूमते हैं।

गर्मी कल से कुछ कम है। बापू के कमरे में तो तीन-चार दिन से खस की टट्टी लगी है, इसलिए वहा खासी ठढक रहती है।

मैंने अभ्यास का एक कार्यक्रम बनाया है। कल से ठीक तरह चलने लगेगा, ऐसी आशा है।

५ अप्रैल '४३

वा की तबीयत कुछ अच्छी है। कमजोरी काफी है। बापू का मौन है। अच्छा नहीं लगता।

मेरे अभ्यास का क्रम कुछ ठीक चला।

× पेशाब मे वी-कोलाई कीटाणु आ जाने से गुर्दे में जलन और सूजन की बीमारी।

: ४५ :

राष्ट्रीय सप्ताह

६ अप्रैल '४३

आज वजन लेने का दिन है। बापू चार पौण्ड बढे। हसकर कहने लगे, "ऐसा ही बढता गया तो मुझे वजन कम करने के लिए उपवास करना पडेगा।"

शाम को घूमते समय मनु पूछने लगी, "हमारे लोगो ने जो आदोलन चलाया था, वह अगर अच्छी तरह चलता रहता तो अग्रेजो को झुकना पडता या नहीं ?" बापू बोले, "मगर यह तोड-फोड की लडाई अहिंसक लडाई न होती ।"

मनु कहने लगी, "न सही। अहिंसा को ये लोग समझते कहा है ?" बापू बोले, "तो भी अगर हिन्दुस्तान का इतिहास देखो तो पता चलेगा कि हिंसा के मार्ग पर चलकर हिन्द ने हमेशा मार ही खाई है।"

बापू सदा कहते आए है कि हिन्दुस्तान के अग-अग में अहिंसा भरी है। अहिंसा हिन्द के लिए स्वाभाविक है, हिंसा अस्वाभाविक।

७ अप्रैल '४३

आज याद आया कि कल से राष्ट्रीय सप्ताह शुरू हुआ है। हम लोग उसे भूल ही गए थे। छ. और तेरह तारीख को सामान्यत. हम लोग उपवास करते है। निश्चय किया कि अब तेरह को करेगे। बापू को याद न आया तो हम उन्हे बारह को याद दिलावेगे। मगर बापू थोडे ही भूलने वाले थे। समाचारपत्रो में भी राष्ट्रीय सप्ताह का उल्लेख है, इसीलिए बापू ने कल उपवास करने का विचार किया। कातते तो हम सब है ही। इस हफ्ते में कुछ अधिक कातेगे। मीराबहन के सिवा कल सबका उपवास होगा।

८ अप्रैल '४३

बापू ने आज दो बार आधा-आधा घटा करके काता। डा० गिल्डर भी मुझसे पूनी लेने आए और तीन पूनी ले गए। वे तकली पर कातते है। सुना है, सूत बारीक निकालते है, लेकिन गति बहुत धीमी है। मनु ने भी काता। बापू ने टॉटेनहम के सेक्रेटरी के पत्र का उत्तर तैयार किया। मैने रोज से दुगनी पूनी काती।

बापू ने वाल्मीकि-रामायण का गुजराती अनुवाद पढना पूरा किया। कल से सस्कृत शुरू करेगे।

९ अप्रैल '४३

हमें जेल में आए आज आठ महीने पूरे हुए। भगवान् जाने अभी और कितने पूरे

करने होंगे !

मैंने बापू के साथ बीस श्लोक वाल्मीकि-रामायण के पढ़े । भाषा सरल है । दो मालाओं में धागा डाला । काफी समय चला गया । इससे आज पढ़ाई का कार्यक्रम बिगड़ा ।

१० अप्रैल '४३

आज गर्मी कम पड़ी है, इसलिए बापू ने अपने कमरे में खस की टट्टी लगाने से मना किया ।

मीराबहन थोड़े दिनों से रोज शाम को खेलने आती हैं । बहुत रस लेती हैं । रात को कैरम भी खेलती हैं ।

बापू 'हाफुस' (Alfonso) आम खाने से इन्कार करते हैं । गरीबों को ये नहीं मिल सकते, इसलिए बापू भी नहीं खाना चाहते ।

मैंने डा० गिल्डर के साथ आधा घंटा डाक्टरी चर्चा की, थोड़ा-सा पढ़ा और मनु को सिखाया ।

११ अप्रैल '४३

आज मीराबहन के साथ ड्राइंग करने का मेरा विचार था, इसलिए डा० गिल्डर के साथ नहीं बैठी । पढ़ाई आज भी कम ही हुई । समय जाते पता नहीं चलता ।

डा० शाह और भण्डारी आए। डा० गिल्डर से बापू की रक्त-परीक्षा की रिपोर्ट वगैरा के बारे में मत पूछा । बाद में लिख भेजने को कहकर चले गए ।

१२ अप्रैल '४३

आज बापू का मौन है, इसलिए उनके साथ रामायण और बाइबिल नहीं पढ़ी। दूसरी पढ़ाई भी बहुत कम हुई । कल कैदियों को कुछ खाना देने का विचार किया है। उसका प्रबंध करने में कुछ समय गया । पिछली दफा उपवास के दिन बापू ने कहा था कि कैदियों को दूध क्यों नहीं दिया, इसलिए मैंने निश्चय किया था कि तेरह तारीख को उपवास होगा, तब ऐसा ही करूंगी । कल दूध की चाय बनाकर साथ में गेहूं के आटे का हलुवा सुबह दूंगी और दोपहर को खिचड़ी, सब्जी और केले । दूध तो इतना होता नहीं है कि सबको पूरा हो सके ।

१३ अप्रैल '४३

आज राष्ट्रीय सप्ताह का आखिरी दिन है । घर में सबका उपवास है । सब-का-सब दूध इकट्ठा करके कैदियों को चाय दी, साथ में हलुआ और थोड़े-थोड़े दाल-सेव । यह तो नाश्ता हुआ । दोपहर को चार बजे खिचड़ी, सब्जी और केले सबको बांटे । बापू ने उन्हें राष्ट्रीय सप्ताह क्या है और इसका जन्म कैसे हुआ, यह सब समझाया ।

: ४६ :

सरकारी आरोपपत्र और उसका उत्तर (१)

१४ अप्रैल '४३

सरकार का पैम्फलेट 'कांग्रेस की जिम्मेदारी' आ गया है। बापू उसे पढते रहे। पैम्फलेट में लाल स्याही से कई जगह सुधार किये गए है। सचमुच उन लोगो ने जल्दी-जल्दी उपवास में बापू की मृत्यु के साथ छपाने के लिए ही तैयार कराया होगा। बा बहुत कमजोर है। मानसिक स्थिति शरीरिक स्थिति को और बिगाडती है।

१५ अप्रैल '४३

आज भी बापू टॉटेनहम का पैम्फलेट पढते रहे। अब उसका जवाब लिखना शुरू करेगें। सुबह वे डा० गिल्डर को अपने कुछ पुराने अनुभव बता रहे थे और दादाभाई नौरोजी व गोखले इत्यादि का भी उल्लेख किया। सार यह था कि बुद्धिमान लोग भला काम करने के बाद किसीको उसका पता नहीं लगने देते।

१६ अप्रैल '४३

बापू ने टॉटेनहम को उत्तर लिखना शुरू किया।

बा थोडी अच्छी दिखती है।

१७ अप्रैल '४३

आज शनिवार है। महादेवभाई की बडी याद आ रही है। क्या मृत्यु के बाद भी प्रियजन सचमुच इकट्ठे होते हैं? यह विचार मन में उठता है।

शाम को खेलते समय भाई के पैर के अंगूठे में चोट आई। शायद हड्डी टूट गई हो। बहुत दर्द था।

डा० गिल्डर के कमर और टांग के दर्द (साइटिका) के लिए रात में सोने से पहले आधा घंटा उनकी मालिश की।

१९ अप्रैल '४३

कल रात कुछ आम आए थे। उनमें से अधिकांश कैदियो को बांट दिये। बाकी घर में काम आ गये।

बापू आज भी रात में दस बजे तक लिखते रहे। मैं बैठकर 'हरिजन' में से सरकार की किताब में उद्धृत किये गए अंशो को निकाल रही थी। उनके उत्तर भी उन्ही लेखो में भरे पडे है। मगर सरकार ने अपने काम के वाक्य चुन लिए थे। डा० गिल्डर भी बैठे थे। सोने को बारह बज गए।

बापू का मौन था, इसलिए रामायण और बाइबिल नहीं पढ़ सकी।

२० अप्रैल '४३

आज वजन का दिन है। बापू का वजन एक पौण्ड कम हुआ। मेरा भी एक पौण्ड कम हुआ है। और सबका बढा है।

डा० शाह सुबह आए। कल बा के रक्त की परीक्षा करावेंगे। सल्फोनोमाइड्स दो-तीन दिन से बद की है। आज उनके पेशाब में फिर मवाद था।

२१-२७ अप्रैल '४३

सरकारी पैम्फलेट के उत्तर में बापू की सहायता करने में चार दिन लगे। उसके बाद तीन रोज उसी विषय में भाई की मदद की। बापू के उत्तर में उन्होने जो सुधार किये थे, उन्हे अलग उतारा। एक शाम उसमें गई। डा० गिल्डर, मीराबहन और मैंने, सबने साथ बैठकर वह काम किया।

मनु घूमते समय बापू से कहानी सुना करती है।

हा, हमारा हिरण चला गया है। बापू ने कहा था कि इसे बद देखा नहीं जाता। बेचारा अकेला कैद में पडा है। इसे दूसरे हिरणो के साथ कहीं रखो या छोड दो। छोडा नहीं गया, क्योकि इतने दिनो से कैद में रहकर उसकी दौडने की आदत चली गई होगी। अगर छोडें तो उसे जगली जानवर खा जावेंगे। सो आठ आदमी जाकर उसे पकड ले गए। पता चला कि उसे ले जाकर किसीके घर में बाध रखा है।

२८ अप्रैल '४३

आज रामदासभाई मुलाकात के लिए आए। उन्होने सरकार से बहुत कहा, मगर उत्तर मिला कि मुलाकात नहीं हो सकती। सब आशा छोड देने के बाद कल रात श्री कटेली का उन्हे टेलीफोन गया कि मुलाकात की इजाजत मिल गई है और कल चार बजे आइए। उन्होने डा० मेहता की क्लिनिक के बारे में अधिक बाते कीं व देवदासभाई और अमतुस्सलामबहन की खबरें भी दीं।

शाम को छ बजे डा० पटवर्धन डा० गिल्डर की आख की फुसी का आपरेशन करने आए। डा० गिल्डर पट्टी बाधे घूम रहे हैं। जिस आख में मोतियाबिन्द हुआ था वह आख खुली है, मगर उसमें आपरेशन के बाद फिर मोतियाबिन्द होने के कारण दीखता कम है। पढ नहीं सकते।

आज मनुकी आख दुखती है।

शाम को रिंग खेलते समय मेरे हाथ में चोट आई। बहुत जोर से लगी। दर्द होता है। कल बापू की मालिश नहीं हो सकेगी।

जितना समय खाली था, भाई के साथ बैठकर उनकी मदद की।

बापू आजकल हसकर कहा करते है कि हमें यहा सात वर्ष तक रहना है। रामदासभाई बताने लगे कि अम्तुस्सलाम बहुत चिता करती है कि बापू फिर उपवास करेंगे तो क्या होगा! बापू बोले, "हमारी तो सात वर्ष यहा रहने की तैयारी है।" रामदासभाई ने कहा, "तो आप धैर्यपूर्वक सात वर्ष तक यहा रहना चाहते हैं, इसका मैं अम्तुस्सलाम को आश्वासन दे दू ?"

बापू ने कहा, "अरे, सात वर्ष तो क्या, मुझमें तो जिन्दगी भर यहीं रहने का धीरज है।"

२९ अप्रैल '४३

कल शाम को खेलते समय हाथ में चोट लगने के कारण आज बापू की मालिश नहीं कर सकी। शाम को पाच मिनट बाए हाथ से खेली। बापू नाराज हुए, "क्या दूसरा हाथ भी बिगाडने का शौक है ?"

सुबह मालिश के समय गडबड हो गई। मैंने मान लिया कि डा० गिल्डर और भाई समय पर पहुच जावेंगे। भाई ने सुबह कहा था कि वे मालिश करेंगे। मैं स्नान करने को चली गई। आकर देखा तो बापू मेज पर पडे थे। मालिश करने वाला कोई नहीं था। डा० गिल्डर के पास गई। उनकी आख का कल आपरेशन हुआ था। पट्टी बधी थी। इसलिए वे मालिश करने नहीं आ रहे थे। भाई को बुलाने गई। वे स्नान करने गये हुए थे। उन्हे बुलाकर लाई। साढे नौ बजे मालिश शुरू हुई। बापू कहने लगे, "तुझे देखना चाहिए था कि मालिश समय पर शुरू होती है कि नही।"

डा० गिल्डर की आख खोलकर पट्टी बाधी। ठीक है। शाम को डा० पटवर्धन आए। उन्होंने पट्टी खोल दी। शाम तक डा० गिल्डर चुपचाप पडे रहे। पढ भी नही सकते थे। मैंने अखबार पढकर सुनाया। थोडा समय उनके साथ कैरम खेली।

रात में मनु की आख धोई। फिर अपने हाथ को सेका। इससे दर्द कुछ कम हो गया।

३० अप्रैल '४३

मैंने नया कार्यक्रम बनाया। उस पर थोडा-सा अमल भी किया है। पूरा अमल तो भाई की मदद मिलने पर ही कर सकूगी। दोपहर और शाम को उनके साथ काम करती रही। टॉटेनहम को बापू जो जवाब लिख रहे है, उसीका काम है।

मालिश से आज भी मुझे छुट्टी रही। सेक करते-करते हाथ थोडा जल-सा गया। दर्द कुछ कम है।

डा० गिल्डर के घर से आमो का पार्सल आया। आज उनके विवाह की २९ वीं सालगिरह है। बा ने सुना तो बापू से पूछने लगीं कि उनके विवाह को कितने साल हुए है...?" बापू मजाक करने लगे, "बा भी अपने विवाह का दिन मनाना चाहती है ?" हम लोग खूब हसे।

१ मई '४३

आज कलेक्टर आने वाला था। बापू ने जल्दी मालिश शुरू करवाई। तैयार भी जल्दी हो गए। आज भाई, डा० गिल्डर और मैं, तीनों जन मालिश में रहे।

बाद में मैंने डा० गिल्डर इत्यादि के लिए मिठाई बनाई। दोपहर के बाद निश्चित कार्यक्रम चला। कुछ समय भाई के साथ बैठी। शाम को बापू साढे सात की जगह सात बजे घूमने निकल पडे। पीछे वापस आ गए और आधा घंटा शाम को और एक घंटा रात को लॉर्ड सैमुएल के लिए मुझे पत्र लिखाते रहे।

२ मई '४३

आज भी बापू ने काफी समय तक लिखवाया, इसलिए भाई को नाममात्र का ही समय दे सकी। मनु को भी आज नहीं सिखाया। मगर रामायण और बाइबिल की पढाई बापू के साथ हुई। लॉर्ड सैमुएल वाला खत पूरा हुआ। रात को बापू ने उसे दुबारा पढकर कुछ और बढाया। देखने की इच्छा हो रही थी, मगर उन्होंने वह मीराबहन को दे दिया। पीछे डा० गिल्डर के पास जाएगा। अब तो एक-दो दिन बाद ही देखने को मिलेगा।

शाम को खूब आंधी आई। हवा-पानी का इतना वेग रहा कि आदमी उड जावे। भाई के कुछ कागज उडे। उन्हें ढूंढने नीचे गई। हवा के वेग से सीढी पर से गिरती-गिरती बची।

३ मई '४३

आज बापू का मौन था। रामायण इत्यादि कुछ पढना नहीं था। लगभग सारा समय भाई के साथ बैठी। शाम को फिर आंधी आई, पीछे जोर की वर्षा। बाहर तो खेल नहीं सकते थे। बरसाती में खडे होकर थोडी देर तक हम लोग रिंग खेलते रहे। इतने में बापू घूमने को निकले। ऊपर बरामदे में ही घूमे। महादेवभाई की समाधि पर फूल चढाने के लिए भाई चले गए। हवा का रुख ऐसा बदल रहा था कि बरामदे में चारों ओर उस के साथ पानी के छींटे आते थे। आखिर मीराबहन के यानी भोजन करने के कमरे में घूमे।

रात को भाई के पास से बापू ने टॉटेनहम की किताब के उत्तर-सम्बन्धी कागज मांगे। भाई ने बुधवार की रात को देने का वचन दिया। रात को उनके साथ मैंने करीब बारह बजे तक काम किया।

बापू ने जिन्ना साहब को पत्र लिखा।

४ मई '४३

मैंने सारा समय भाई के साथ काम किया। आज आंधी इत्यादि खाली डराने के लिए ही शुरू हुई। शुरू भी नहीं हुई, ऐसा लगा कि अभी शुरू होगी। इतने में बंद भी हो गई। शाम को अच्छी तरह खेले। अच्छा लगा। भाई कल रात तीन बजे तक काम करते रहे थे, इसलिए आज रात जल्दी सो गए। मैंने ग्यारह बजे तक काम

किया। बापू लॉर्ड सैमुएल के पत्र का काम करते रहे। मुझे लिखाना चाहते थे, मगर भाई की मदद की वजह से बुलाना ठीक न लगा। मैंने कहा कि आशा है, कल मैं आपके काम के लिए खाली हो सकूगी।

बापू ने जिन्ना साहब को जो पत्र लिखा था, वह आज की डाक में गया। डा० गिल्डर ने टाइप किया था ।

५ मई '४३

भाई सुबह पांच बजे उठकर काम करने बैठे, लेकिन उन्होने उन्ही कागजो को लेकर काम किया जिन्हे मै ठीक-ठिकाने रख चुकी थी। नए कागजो को सभालकर रखने का काम बाकी था। मैंने बापू से कहा था कि शाम को चार बजे मैं आपके पास पहुचूगी, लेकिन चार बजे काम पूरा नही हुआ। बापू दो-तीन बार कह चुके थे कि तू वह काम पूरा कर, पीछे मेरे पास आना। इसलिए मै चार बजे नही आई। पाच बजे बापू का खाना तैयार करने आई तो बापू कहने लगे, "तूने अपना वचन तोडा है।" मैंने अपनी गलती मान ली। मेरी नासमझी थी। खाना तैयार करके उनके पास ही बैठ गई। जो काम मुझसे करवाना था, वह उन्होने मुझे समझाया। पौने छ से पौने सात बजे तक वह काम मैंने किया। खत पढा। कहा क्या करना था, वह समझा। प्रार्थना के बाद बापू को उसके बारे में अपनी सम्मति दी। उन्होने कुछ सुधारा और कुछ सुबह सुधारने के लिए कहा। मेरे हिस्से का भाई वाला काम बाकी था। बापू ने कहा, "उसे छोड दो।" रात के ग्यारह बजे सब कागज बापू ने ले लिये। कहने लगे, "अब मुझे मदद लेनी होगी तो मै बुला लूगा।" वे कागजो को तकिए के नीचे रखकर करीब बारह बजे सोए। तीन बजे के करीब उठ बैठे। तैयार होकर प्रार्थना करने को आए तो साढे तीन बजे थे। मुझे जगाने का प्रयत्न किया, ऐसा बताते थे, मगर मै तो उठी नही। भाई ने और बापू ने चुपचाप प्रार्थना की। पीछे बापू सैमुएल वाले पत्र का काम करने लगे।

६ मई '४३

मै पौने छः बजे बापू के नाक साफ करने की अवाज सुनकर उठी। पूछा कि क्या प्रार्थना का समय हुआ ? बापू ने बताया कि प्रार्थना तो हो चुकी। अब कुछ काम करके सोने को जाते थे। मैंने तैयार होकर वह पत्र लिया। इतने में बापू ने भाई को उसी पत्र के सिलसिले में कुछ लिखवाना शुरू कर दिया। सोए नही। बापू ने आज मुझे मालिश से छुट्टी दे दी और मैं घूमने के बाद स्नान करके उस पत्र की साफ नकल करने बैठी। जहा कुछ सुधार की गुजाइश देखी, वहा निशान लगा दिया।

दोपहर खाने के बाद बापू ने जो नया लिखाया था, उसका काम किया। जो-जो शकाए मुझे हुई, उनके बारे में शाम को पूछा। खाने के बाद बापू ने वह पत्र फिर पढा। प्रार्थना करने के बाद उन्होने उसे पूरा किया और कुछ सुधार भी किये। फिर वही पत्र डा० गिल्डर को टाइप करने और ध्यान से पढ जाने को कहा।

७ मई '४३

दोपहर को थोडी देर डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढीं, थोडा काम और बाइबिल पढी। रामायण भी आज शुरू की और मनु को सिखाया।

घर से माताजी इत्यादि के पत्र मिले।

८ मई '४३

रोज का कार्यक्रम चलाने का प्रयत्न किया। डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढने के समय बापू को 'हरिजन' में से जो कुछ देखना था, वह बताया। काम की अनुवाद के समय मनु का दूसरा वर्ग लिया। जितने दिन काम के कारण मनु को सिखाया नहीं, उतने दिन उसे दो-दो बार पढाना होगा।

९ मई '४३

सुबह भंडारी और शाह आए। मनु की आंख की बात होने लगी। भंडारी ने मुझसे पूछा, "तुम्हारी आंख अब अच्छी है न?" मैंने कहा, "मेरी आंख को तो कुछ हुआ ही नहीं था। मनु की आंख खराब है। उसके चश्मे का नम्बर निश्चित करना चाहिए।" डा० शाह बोले, "डा० पटवर्धन कह रहे थे कि चश्मे का नम्बर निश्चित करना आवश्यक नहीं है।" मैंने कहा, "नहीं, वे तो इसीलिए यहां आने वाले हैं। डा० गिल्डर ने मुझसे ऐसा ही कहा है।" वे बोले, "मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं। डा० गिल्डर ने डा० पटवर्धन से तीन बार कहा था, लेकिन डा० पटवर्धन ने कहा कि वे इसे जरूरी नहीं समझते हैं। तो भी वे चश्मे का नम्बर निश्चित करेंगे।"

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, "झूठ बोलने का कोई प्रश्न ही नहीं। यह बात कहां से आई। खैर ।"

१० मई '४३

आज बापू का मौन है। मैक्सवेल का भाषण पढ गए, फिर 'डॉन' पढते रहे। रात में मैक्सवेल का भाषण पढना पूरा किया। उन्हें अफसोस था कि उन्होंने उसे पहले नहीं पढा जब कि भाई ने पढने को कहा था।

: ४७ :

मैक्सवेल को पत्र

११ मई '४३

आज बापू ने मैक्सवेल के नाम पत्र लिखवाया। दिन भर उसीमें गया। रामायण, बाइबिल और चरखा, सब छूट गए।

१२ मई '४३

बापूने कुछ समय कल वाला पत्र फिर पढा और बाकी समय में सैमुएल वाला पत्र।

उसकी आखिरी नकल डा० गिल्डर टाइप करने के लिए ले गए। पीछे बापू मैक्सवेल वाले पत्र पर जुटे। आज काता, मेरे साथ रामायण पढी, मनु को भी सिखाया। बाइबिल नहीं पढी। मनु को सिखाते समय मैंने सैमुएल वाले पत्र में बापू को एक सुधार बताया। सुधार पहले बापू समझे नहीं। मैं छोडने को तैयार हो गई। मुझे लगा कि दलील करके उन्हे क्यो थकाऊ, मगर उन्होने आग्रह किया, "बता तो सही, क्या कहना चाहती है ?" तब मैंने बताया तो उन्होने सुधारा। बाद में समझाने लगे, "मैं धीरज रखकर तुझसे न समझ लेता तो तू यह छोड ही देने वाली थी न ? ऐसा नही होना चाहिए। तुझे धीरज से अपनी बात समझानी चाहिए और अपने में समझा सकने की शक्ति लानी चाहिए। भाषा पर तेरा खासा अधिकार हो जावे, इसीलिए तो तुझे व्याकरण इत्यादि कराने का आग्रह करता हू न।" बाइबिल के समय बापू ने मनु को भी सिखाया।

शाम को बापू की कहानी फिर शुरू हुई।

मैंने 'ट्रेजर आइलैण्ड' फिर से पढना शुरू किया है। बचपन मे पढा था, पर कहानी भूल गई थी। बडा रस आता है।

१३ मई '४३

आज बापू ने मैक्सवेलवाले पत्र का काम किया। उसमें काफी सुधार कर रहे है। मै 'ट्रेजर आइलैण्ड' पढती रही। सारा समय उसमें गया। थोडी देर तक डाक्टरी पत्र-पत्रिकाए पढीं। मैक्सवेल वाला पत्र बापू के कहने से पढ गई और शाम को बापू के सामने अपने विचार रखे। घूमते समय कहानी में बापू ने डाउन्स के साथ का अपना अनुभव सुनाया। समय की कीमत आकने की बात करते समय यह चर्चा चली कि डरबन में उनके मित्र डाउन्स को गिरजाघर में प्रवचन देना था। समय रखा था शाम के ७ बजे। निश्चित समय पर वहा केवल एक श्रोता था। बिना किसीकी प्रतीक्षा किये उसीके सामने उन्होने बोलना आरम्भ कर दिया।

१४ मई '४३

मैक्सवेल वाले पत्र के बारे में घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने तेरे सब विचार ले लिये है। खुश है न ?" मैंने हसकर कहा, "क्यो नहीं, खुशी से जमीन पर पाव नहीं पडते।" घूमते समय कहानी कहते-कहते बापू ने बताया कि कैसे उनके दक्षिण अफ्रीका जाने से गाधी-कुटुम्ब का उद्धार हो गया था।

१५ मई '४३

बापू आज मैक्सवेल वाला पत्र दुरुस्त करते रहे। सैमुएल वाले पत्र की आखिरी नकल आज गई। भाई ने मैक्सवेल के पत्र को टाइप किया। बापू ने उसको इतना काटा-छाटा था कि पढना कठिन हो गया था। मैंने दोपहर को डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढीं।

शाम का घूमने जाते समय श्री कटेली आग्रह करने लगे कि खेलने आया करो, मेरी कसरत नही हो पाती।

१६ मई '४३

सुबह सो कर उठे तो बापू ने कहा, "मुझे लगता है कि तुझे खेलने जाना चाहिए। कटेली इतना कहते है कि उनको खेलने का शौक है। खेलने के लिए साथी चाहिए।" मुझे अच्छा नहीं लगता था, किन्तु बापू का कहना मानना हमारा पहला कर्तव्य है, इस विचार से मैंने जाने का निश्चय किया। कटेली साहब और डाक्टर साहब मुझे देख कर बहुत खुश हुए। मैंने डाक्टर साहब से कहा, "आपको लगता होगा कि कल रात इन्कार करके मैं सुबह कैसे आ गई?" वे बोले, "कोई अच्छी बात हो तो हम उसका कारण पूछते ही नहीं। हम लोग सोचते है कि लोग क्या कहते होंगे, मगर लोग ऐसी चीजों पर गौर करते ही नहीं।" डाक्टर साहब हमेशा अनुभव और सहज बुद्धि से भरी सलाह देते है।

बा के पाखाने की जगह में जलन होती है। देखा, जरा-सा छिल गया है। उस पर मरहम लगा दिया। उनके पेशाब में भी जलन है। डा० साहब का नुस्खा आजमाने का विचार किया है।

दोपहर को मैक्सवेल वाले पत्र की सुधारी हुई नकल पढी। पीछे रात को बापू के सामने अपने विचार रखे। दस बजे नींद ने घेर लिया। सो गई।

१७ मई '४३

सुबह पौने सात बजे उठी। चाय इत्यादि के बाद खेलने गई। मालिश से आज छुट्टी मिली। भाई ने वहा मेरी जगह ली। मैंने अपने कपडे इत्यादि सम्भाले। अब अपनी डायरिया आदि पूरी कर लेती हू ताकि कल से सारा कार्यक्रम ठीक तरह चला सकू।

दोपहर को कातते समय भाई बापू को लुई फिशर का एक भाषण सुना रहे थे। भाषण बहस के बाद का था। अच्छा था, इसलिए कातने में काफी समय गया। कल का अखबार भी दोपहर को पढा। साढे चार बजे से रसोईघर में काम करती रही। पन्द्रह-बीस मिनट तक बापू की 'आत्मकथा' पढी।

बापू मैक्सवेल वाला पत्र फिर से पढते रहे और सुधारते भी रहे। पत्र दस बजे तैयार हुआ।

१८ मई '४३

सुबह मालिश के समय मीराबहन ने मैक्सवेल वाले पत्र की सुधारी हुई नकल के बारे में अपनी सम्मति बापू के सामने प्रकट की। बापू ने 'ह्यूमन्स' (humans) शब्द इस्तेमाल किया था। वे कहने लगीं, "ह्यूमन बीइंग्स (human-beings) क्यों नहीं?" उन्होंने 'ह्यूमन्स' शब्द कभी सुना नहीं था। बापू ने बताया कि वह इस्तेमाल होता है। मैंने भी कह दिया कि मैंने भी यह शब्द इस्तेमाल हुआ देखा है। लेकिन वे मानी नहीं।

आज रामायण के पढने के समय मैक्सवेल वाले पत्र की मैंने नकल पढी और अपने सुझाव दिये। एक सुधार करने में काफी साहित्य देखना पडा। आखिर बापू ने वह सुधार स्वीकार कर लिया और उसे लेकर एक नया पैरा ही बढा दिया। सुधार बापू

के उद्गार 'सब लोग अपने को आज से स्वतंत्र मानो' के बारे में था। मैक्सवेल ने वह उद्धृत किया था। बापू ने इसका उत्तर लिखा था। प्रार्थना के पहले का कातने के सिवा आज का सब समय इस काम में गया। शेष कार्यक्रम नहीं चला सकी।

प्रार्थना के बाद मैंने अखबार देखे और भाई ने ज्वालामुखी और भूकम्प की उत्पत्ति समझाई।

१६ मई '४३

आज प्रार्थना के बाद सोई नहीं। सुबह चाय के बाद आजकल खेलने जाती हू, मगर श्री कटेली चाहते थे कि एक-एक की ही जोडी रहे, सो आठ बजे महादेवभाई की समाधि पर फूल चढाने के बाद फिर उनके साथ दो बार बेडमिन्टन खेली। थक गई।

स्नान के बाद मैं मेकमोर्डी की व्याकरण देखती रही। बाद में दस मिनट तक रामायण की मार्गोपदेशिका देखी। दोपहर में 'दि नो ब्रेकफास्ट प्लैन ऐण्ड फास्टिंग क्योर'* के अडतालीस पन्ने पढे। दूसरा डाक्टरी अभ्यास आज नही किया। शाम को कैदियो को आम बाटे। मरोली से श्री एम एच. पेटिल ने करीब डेढ सौ आम भेजे थे। तेईस कैदियो को दो-दो आम मिले। कल सिपाहियो को बीस और दिये जावेगे। दस-पद्रह सड भी गए है।

शाम को तूफान आया। साथ ही वर्षा भी। शाम का सारा कार्यक्रम बिगड गया। खाने के बाद थोडी देर और कैरम खेलते रहे, पीछे बापू के साथ घूमे।

प्रार्थना के बाद भाई का कार्यक्रम हम दोनो ने बैठकर बनाया। देखें, कितना चलता है।

२० मई '४३

आज मैक्सवेल के पत्र की साफ टाइप-नकल तैयार हुई। बापू ने दस्तखत भी किये, मगर देर हो गई थी, इसलिए पत्र जा नहीं सका। कल छुट्टी है। शनिवार को जावेगा।

बापू सरकारी पैम्पलेट के जवाब को देखते रहे। शाम को फिर वर्षा हुई।

आज मैंने आइसक्रीम बनाई है। बापू के लिए थोडी-सी बकरी के दूध की बनाई। उन्होंने एक ही चम्मच भर ली, बाकी भाई को दे दी।

शाम को हम लोग अपना एक खेल खेलते रहे। कपडे की गेंद बनाई और उससे खेले। पीछे डोरी फादते रहे। डा० साहब इसमें शामिल नही हुए। एक टांग की दौड में भी नहीं। पीछे एक डोरी बरामदे में बाधकर उस पर मेरी ओढनी को जाली के तौर पर रखकर रिंग खेलते रहे।

इतने में बापू घूमने को निकले। हम लोग भी साथ हो गए। घूमते समय

---

* नाश्ता छोडने व उपवास का चिकित्सा-विधान

ट्यूनीसिया-डे की बातें होती रहीं। दूसरी इधर-उधर की बातें हुईं, लेकिन कहानी नहीं सुनाई। सुबह भी कहानी शुरू ही हुई थी कि स्वेज नहर का जिक्र आया, फिर उसी की बातें होती रहीं।

रात को प्रार्थना के बाद इतने पतगे उड़ने लगे कि बापू बत्त रखकर काम नहीं कर सके। सो गए। करीब साढे दस बजे फिर वर्षा हुई। हवा चलने लगी। बापू की खाट पर पानी आता था, इसलिए जगह बदली। सोने का वक्त हो गया था, सो गई। सारे दिन भर भाषण तैयार करते रहे।

२१ मई '४३

आज भी बादल थे। शाम को जोरों की वर्षा हुई। श्री कटेली ने बरामदे में रिंग खेलने के लिए कोर्ट बनवाया। लम्बाई ठीक है, मगर चौड़ाई ८ फुट कम है। शाम को मीराबहन इत्यादि सभी वहां खेलते रहे। मैं बापू के पास थी। वे अपने कागजों में से कुछ कागज निकालकर मुझे देते रहे। घूमने के समय वर्षा बन्द हो गई। बाहर घूमे।

मैक्सवेल का पत्र आज कटली साहब को डाक में डालने के लिए सौंपा, मगर आज ट्यूनीसिया-डे की छुट्टी है, इसलिए कल जावेगा।

: ४८ :

शैतान व ईश्वर

२२ मई '४३

आज शाम को बापू ने मीराबहन से शैतान और भगवान् की बात करते-करते नीचे लिखी बातें कही। मीराबहन उन्हें लिखकर बापू को दिखा गई। बापू ने उसे पास किया। यह नकल मैंने देखी, तो अच्छी लगी। उसे यहां देती हूं "शैतान कोई व्यक्ति नहीं है। वह एक उसूल है—सत्य का इन्कार, जब कि दैवी शक्ति सत्य का उसूल है। इसलिए वह जीवन देने वाली चीज है, जीवन है, ब्रह्म है। सत्य का इन्कार तो मृत चीज है, मगर जैसे कभी-कभी शव में जीवन का आभास होता है, यह भी इंसान को धोखे में डाल सकता है और माया से भ्रमित इंसान इस मरी हुई चीज के पीछे भागता है और समझता है कि यही जीवन का मकसद है।

"शास्त्र बताते हैं और मैं भी इसे मानता हूं कि सतयुग में पहुंचने के पहले कलियुग या शैतान के युग में से गुजरना होता है। इस में शक नहीं कि आज हम कलियुग में से गुजर रहे हैं। भले ही हम नए युग का प्रभात इस जीवन में देखें या न देखें, हमारे लिए हमारा यह पक्का विश्वास ही काफी है कि सतयुग आने वाला है और उसे लाने

के लिए हम जिन्दा रहते हैं और मेहनत करते हैं।"[१]

आज भी बादल थे, मगर वर्षा नही हुई। शाम को भाई, मीराबहन इत्यादि सब खेले। मुझे बापू टॉटेनहम के पैम्फलेट का उत्तर लिखवाते रहे। रात को भी प्रार्थना के बाद वही काम चलता रहा। बापू कहते थे कि कल सब काम छोडकर इसीमें लगेंगे।

कहानी कहते समय बापू ने स्वेज नहर की चर्चा करते हुए अरब और मिस्र की बातें बताईं।

२३ मई '४३

सुबह प्रार्थना जल्दी हुई, इसलिए प्रार्थना के बाद मै सो गई। साढे छ बजे उठी। चाय के बाद खेलने गई। स्नानादि के बाद बापू को खाना देकर खुद खाकर पीछे दोपहर को मै बापू के साथ बैठी। उन्होने लिखवाना शुरू किया। एक बजे के करीब सो गई। ढाई से चार बजे तक फिर लिखवाते रहे।

शाम को कहानी में बापू पोर्ट सईद और 'मुक्तिसेना' ('साल्वेशन आर्मी') की कथा सुनाते रहे।

२४ मई '४३

आज बापू का मौन है। दोपहर को मैंने 'नो ब्रेकफास्ट प्लैन ऐण्ड फास्टिग क्योर' पुस्तक पूरी की। कुछ और चीजें भी पढीं। दोनो वक्त खेली। आकाश आज साफ है। बापू को सब खाना आज बिजली की मशीन में एकरस करके दिया था। कुछ तो चबाने की क्रिया के निकल जाने के कारण, कुछ फुलाव अधिक हो जाने के कारण बापू की तबीयत बिगडी और खट्टी डकारे आईं, इसलिए शाम को उन्होने खाना नहीं खाया। खाली गरम पानी पिया।

२५ मई '४३

आज बापू ने दोपहर को रामायण नहीं पडी। कहने लगे, "अगर तू कर सके

---

[१] "Satan is not a person, but a principle—the principle of negation (of Truth) whereas the divinity is the principle of Truth It is therefore, life-giving and is itself life, God The principle of negation is a dead thing, but just as a corpse may look like a living being so does this negation deceive man deluded by *maya*, he pursues this lifeless principle, thinking it to be the thing for which to live

"The scriptures tell us and I believe that the reign of untruth has to be gone through (the reign of Satan in the Bible and Kaliyuga in the Puranas) before man can again rise to Satyuga Most surely we are passing through that period What does it matter whether we live to see the dawn of the age to come It is enough that we have unshakable faith and live and strive for that end"

तो मैं तेरा अभ्यास कुछ समय के लिए बन्द कराना चाहता हू । अपना सारा खाली समय तू मुझे दे दे और मैं सारा समय इस पैम्फलेट का उत्तर तैयार करने में दू । मुझे जो लिखाना हो लिखाऊ, जितनी दफा उसे फाडना हो फाडू।" मुझे इसमें क्या उज्र हो सकता है। बापू की सेविका बनकर यहा आई हू । जितना समय बापू को चाहिए, वे ले। उस समय दूसरा कुछ करने का विचार ही नहीं किया जा सकता । बापू मेरे समय का उपयोग करें, इससे अधिक खुशी की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है ।

सुबह घूमते समय अफ्रीका की बाते होने लगीं । बापू ने बताया कि जुलू लोगो पर क्या-क्या जुल्म हुए है । फिर डच लोगो के साथ अग्रेजो की लडाई की बाते बताते रहे। मेफिकिंग (Maffikıng) × शब्द की व्युत्पत्ति बताई, पीछे हिन्दुस्तान पर आए । बोले, "इतने बडे देश को, जिसकी सभ्यता इन लोगो की सभ्यता से बढ-चढकर है, ये लोग इस प्रकार से दबाकर बैठे है । ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने क्या-क्या किया ! मैं तो इन सब बातो का विचार करता हू तो खून खौलने लगता है। मौलाना मुहम्मद अली कहा करते थे, हम लोगो से तो आप बहुत आगे जाते हो । आप हिंसा मानते नही हो, वरना आप में इन लोगो को मजा चखा देने की शक्ति है , क्योंकि उस विषय में आपकी भावना बडी जबर्दस्त है और फिर आपके पास बुद्धि भी है ।"

२६ मई '४३

आज शाम को जब हम लोग खेल रहे थे, भडारी आए और बापू को एक बन्द लिफाफा दिया। टॉटेनहम का पत्र था। लिखा था कि सरकार बापू का खत जिन्ना साहब को नहीं दे सकती और इस विषय में एक विज्ञप्ति निकालने वाली है । विज्ञप्ति की एक नकल भी साथ भेजी है । बापू ने रात को उसका उत्तर लिखवाया ।

बापू ने सरकारी पैम्फलेट के काम के लिए दूसरा सब काम छोड दिया है । मेरा भी सारा समय उसीमें ले लिया है और लिखाया करते है । बेचारी बा सेवाग्राम में कभी सारा समय बापू के कमरे में नहीं बैठती थीं, इसलिए उन्हे क्या पता कि बापू कितना समय लिखने-लिखाने का काम करते है । यहा देखती है तो चकित होती है । कह रही थीं, "पहले तो कभी इतना नहीं लिखते थे । लिखते थे तो कोई किताब ।" भाई ने समझाया कि हमेशा यही काम चला करता है ।

२७ मई '४३

आज करीब पौने बजे टॉटेनहम को लिखे गए बापू के पत्र की साफ टाइप-नकल तैयार हुई और तुरत ही कटेली साहब को डाक के साथ भेजने को दे दी गई। ढाई बजे अखबार आये । उनमे सरकार की विज्ञप्ति आ गई थी । बापू समझते थे कि

×मेफिकिंग शहर की याद मे मेफिकिंग-दिन मनाने की प्रथा शुरू हुई थी । उस दिन शराब आदि पीकर जशन मनाया जाता था। उस पर से अंग्रेजी 'मफिकिंग' शब्द बना, जिसका अर्थ है शराब पीकर आनद मनाना ।

शायद उनका उत्तर जाने तक वह नही छपेगी, मगर डा० गिल्डर ने कहा था, "यह सरकारी विज्ञप्ति की नकल तो आपको शिष्टाचारवश भेजी है। जैसे यहा आ पहुची, वैसे ही प्रेस को भी दे दी होगी। ऐसा होगा तो आज दोपहर को पता लग जावेगा।" यही हुआ। शाम को बापू ने टॉटेनहम को दूसरा पत्र लिखवाया।

ग्यारह बजे बापू मीराबहन के साथ बाते कर रहे थे, "अग्रेजो ने क्या-क्या अत्याचार नही किये। सोते हुए जुलू लोगो को बच्चो-सहित गोली से उडा देते थे; क्योकि उनके सरदार ने यह कहने की हिम्मत की थी कि हम तुम्हे टैक्स नहीं देंगे। उन पर पोल-टैक्स लगाया ताकि टैक्स का पैसा पैदा करने के लिए वे लोग काम करे। हिटलर ने इससे अधिक क्या किया है ?"

डा० शाह आ गए। जिस ठेकेदार के यहा से उनके अस्पताल में खुराक का सामान आया था, वह डा० शाह से हाथ मिलाने आया, क्योकि वे बापू के यहा आते है।

२८ मई '४३

आज सुबह खेलने गई, मगर शाम को बापू लिखवाते रहे। जब वे घूमने गए तब मै खेलने को गई। रात को काफी समय बिगाडा। एक व्यर्थ की चर्चा में मै और भाई पड गए, इसलिए बापू सिर्फ पन्द्रह मिनट तक ही लिखवा सके।

सुबह बादल थे। खेलते थे तब बूदें पडने लगी थी। ऊपर बरामदे में आकर खेलते रहे। बापू बरामदे में घूमे। सवा आठ बजे महादेवभाई की समाधि पर फूल चढाने को गए। मुझे खेलने का समय देने के लिए ही इतनी देर की थी। जब हम सब फूल चढाने को गए तब वर्षा बन्द हो चुकी थी।

अखबार से पता चलता है कि जिन्ना ने वाइसराय को लिखे गए बापू के पत्र को रोकने के बारे में जबान नही खोली, पर अखबारो ने उनके भाषण का इस हेतु का जो हिस्सा उद्धृत किया था कि अगर बापू उन्हे पत्र लिखें और वाइसराय उसे न भेजें तो वे देख लेगे, उस पर नाराजी बताई है। भाई कहने लगे, "वह कह सकता है, अगर सचमुच आपका हृदय-परिवर्तन हुआ है तो अपने सत्याग्रह के आदोलन को वापस कर लो; क्योकि हम इसके विरुद्ध है। हम इसे मुसलमानो के विरुद्ध मानते है।" बापू कहने लगे, "हा, सम्भव है।" मगर मुझे यह अशक्य-सा लगा।

आज टॉटेनहम को दूसरा खत गया। बापू ने कल उनका पत्र छापने की माग की थी।

२९ मई '४३

सुबह प्रार्थना के लिए देर से उठे। साढ पाच बज गए थे। प्रार्थना पूरी हुई तो छ बज गए। नाश्ते का सामान तैयार किया। इतने में सात बज गए। बापू प्रार्थना के बाद सोए नही थे, मगर मुझे लिखवाने के लिए रोका नही, खेलने को भेज दिया। खेलने के बाद घूमन के लिए बापू के साथ निकली तो सही, मगर बीच में से आना पडा।

बापू बहुत अच्छी बातें बता रहे थे। भाई ने बात की कि ये एमरी वगैरा इस तरह से झूठ बोलते हैं। उन्हें लगता है कि हम तो इन्सान हैं ही नहीं। हमारे साथ झूठ इस्तेमाल करने में क्या हर्ज है। एमरी ने जो निवेदन भारत सरकार से किया है, वह श्वेतपत्र (व्हाइट पेपर) में छपा है। उसमें जापान के प्रति पक्षपात का आरोप नहीं है। इसी पर बात चली, क्योंकि जापान के प्रति पक्षपातपूर्ण आरोप तो सरकार की पुस्तिका में भरा ही पड़ा है। बापू कहने लगे, "यह तो है, मगर अपने यहां ही कितने आदमी इस किस्म के पड़े हैं कि जो झूठ और सच को परखने की मेहनत करें? ... लो। आजाद हिन्दुस्तान में अपने प्रान्त में वही सामने आयेगा न। उसको क्या पड़ी है झूठ-सच की? इस तरह के कई अवसरवादी हिन्दुस्तान में पड़े हैं।" मैंने कहा, "बापू, तो फिर हिन्दुस्तान का होगा क्या? आजाद होने पर ऐसे लोगों के हाथ में सत्ता रहेगी तो वह आजादी क्या होगी?"

बापू बोले, "यहां हम चार हैं—तू, मनु, प्यारेलाल और मैं। मनु तो छोटी है। तुझे भी ऐसी बातों का अनुभव नहीं, मगर मुझे और प्यारेलाल को तो है। मैं कहता हूं कि अगर हम चार सच्चे होंगे तो हिन्दुस्तान का भला-ही-भला है। मैं इससे भी आगे जाकर कहता हूं कि मैं अकेला भी आखिर तक सच्चा रहूंगा तो हिन्द का भला-ही-भला है। महाभारत में एक बड़ा संवाद है कि कृष्ण अकेले बिना हथियारों के क्या कर सकेंगे, मगर कृष्ण के पास तो धर्म था, सत्य था, इसीलिए उनकी जीत हुई।" मैंने कहा, "वहां पर पांडव भी तो सत्य पर थे न?" बापू ने कहा, "तू ऐसा मानती है तो गलती करती है। कौरवों की अपेक्षा पांडव अच्छे थे, मगर उनमें भी अनेक दोष थे और मनुष्य की हैसियत से कृष्ण भी सर्वथा दोषरहित कहां थे? गीता में कहा है न: 'अव्यक्ता हि गतिर्दुःख देहवद्भिरवाप्यते' अर्थात् देहधारी के लिए अव्यक्त बनना, सर्वथा अनासक्त बनना, कठिन है। कठिन क्या अशक्य ही है, मगर जगत में इसी तरह से काम चलता है। सब मिलाकर जिधर भलाई अधिक रहती है, उसीको ईश्वर बचा लेता है।"

बापू टॉटेनहम की किताब का उत्तर लिखने को भाई से फिर कहने लगे, "मैं इतना तो देखता हूं कि मैं धीमा पड़ गया हूं। एक चीज को तुरन्त पढ़कर समझ लेने और याद रख सकने की शक्ति कम हुई है, मगर ईश्वर को जितना काम कराना होगा, उतनी शक्ति देगा। जितनी शक्ति देगा, उतना करके संतोष मानूंगा।"

• सुबह घूमने जाने से पहले मुझसे भी वही बात कह रहे थे, "इस किताब (टॉटेनहम का पैम्फ्लेट) के एक-एक वाक्य में जहर भरा है। इसका बहुत सचोट जवाब दिया जा सकता है। अगर मैं उसे कर पाऊं तो इसमें से अनेक परिणाम भी आ सकते हैं। मगर मैं देखता हूं कि मैं धीमा पड़ गया हूं। एक बार पढ़ता हूं तो कुछ-न-कुछ खुलता है। दोबारा पढ़ता हूं तो फिर कुछ और खुलता है। प्यारेलाल करे तो मुझे काफी मदद मिल सकती है। थोड़े अभ्यास के बाद तू भी कर सकेगी, ऐसा मुझे लगता

है।" मैंने कहा, "आप ऐसा क्यो सोचते है कि आप धीमे पड गए है। यह किताब ऐसे पेचदार ढग से लिखी है कि एक दफा पढकर उसे पूरी तरह समझ लेना कठिन है।"

मन में बडा बुरा लग रहा था। महादेवभाई का स्मरण हो रहा था। आज वे होते तो बापू को कितनी मदद दे सकते!

मालिश-स्नानादि के बाद बापू फिर लिखाने बैठे। दोपहर को सोने के बाद अखबार आए। जिन्ना का उत्तर करीब-करीब जिन शब्दो में भाई ने पहले से सोचा था, वैसा ही अखबारो में था। यह चकित करने वाली बात है कि इन्सान किस हद तक जा सकता है।

सरकार ने बापू का खत जिन्ना को नहीं दिया। इस पर 'हिन्दू' में एक लेख था जिसका शीर्षक था—'भगवान हमें हमारे मित्रो से बचावे' ('गॉड सेव अस फ्रॉम अवर फ्रेन्ड्स')। बापू शाम को भी लिखाते रहे। रात को साढे नौ बजे कहने लगे, "अब मेरा दिमाग खाली हो गया है। बन्द करेगे।" बापू पर यह जवाब लिखने का बोझ बहुत पड रहा है।

कल मीराबहन सोने के समय बापू को गीत सुनाने आई तो कुछ बाते होने लगी। बापू ने कहा, "मै इस सरकारी पुस्तिका का उत्तर लिखने में बहुत मेहनत कर रहा हू, मगर उसके पीछे हृदय से सतत यह प्रार्थना निकलती है कि मेरी कलम से एक भी शब्द ऐसा न निकले जिसमें सत्य की गूज न हो अथवा जिसमें जरा भी हिंसा का रग हो।"

आज रात को भी बापू के साथ उनकी थोडी बाते हुई।

कुछ बादल थे। पानी के दो-चार छींटे आए।

३० मई '४३

मीराबहन ने कल रात की बातो का सार लिखकर बापू को दिया। बापू ने उसे सुधारा। सुधारी हुई नकल यह है—"मैंने (मीराबहन ने) बापू से पूछा कि जिन लोगो के विचार ईश्वर के बारे में कच्चे है, उनकी मदद कैसे की जा सकती है? मेरा खयाल है कि उनके सामने धर्म की रूढिबद्ध बाते नही रखनी चाहिएं, उनकी जगह सीधी-सादी भाषा में परम आत्मा की बात करना और जिन आदर्शो में हम विश्वास रखते है, उनके अनुसार अपना जीवन बनाकर जीती-जागती मिसाल खडी करना चाहिए।" बापू ने उत्तर दिया, "तुम्हे परम आत्मा की बात करन की कोई जरूरत नही। मेरा दृढ विश्वास है कि सत्य अपनेआप काम कर लेता है। सत्य ही परमात्मा है। वह हमेशा मौजूद है और हरेक जीव में काम कर रहा है। इसलिए इन्सान उनके बीच अपना आदर्श जीवन रखे और उनकी आवश्यकतानुसार सेवा करे। लिखने-पढने और सामान्य गणित जानने की भी कीमत तो है। इसलिए निरक्षर लोगो के ज्ञान की वृद्धि करना एक खास सेवा है। यह सेवा करना पढ़े-लिखो का धर्म है। बाकी, अगर हमारे जीवन में सचाई है तो उसका असर अपनेआप उन लोगो

पर पड़ेगा। जो ईश्वर यानी सत्य को ढूंढते हैं, उन्हें वह मिल जाता है। अगर हम सत्य यानी ईश्वर को अपने आसपास के लोगों से ज्यादा पहचानते हैं—इस बारे में दावे से कुछ कहना कठिन है—तो हम उन्हें अधिक दे सकेंगे, वह अपनेआप उन्हें हमसे मिलेगा।"*

दिन में बापू लिखवाते रहे। चार बजे लिखवाना बंद कर दिया। पीछे खुद उसे दोबारा पढ़ते रहे। रात को उसे दोहराकर पूरा किया।

जिन्ना साहब ने जो बयान कल निकाला है, उसमें उन्होंने कमाल ही कर दिया है। आज रविवार को तो अखबारों में उस पर कुछ निकला नहीं। कल पता चलेगा कि उसका लोगों पर क्या असर हुआ।

३१ मई '४३

आज बापू का मौन है। उन्होंने जो कल लिखाया था, उसे मैंने पढ़ा। उसमें कुछ भरना था, वह भरा। दोपहर को भाई के साथ बैठकर फाइलें वगैरह ठीक करवाईं। सरकार का जवाब आया कि लार्ड सैमुएल को बापू का पत्र नहीं भेजा जा सकता। जिस कारण जिन्ना साहब को पत्र नहीं दिया गया, उसी कारण लार्ड सैमुएल को भी नहीं भेजा जा सकता। बापू को लगा कि जिन्ना साहब और लार्ड सैमुएल, दोनों को एक कारण लागू नहीं हो सकता।

डा० गिल्डर को आज छ: पत्र मिले। अनेक ढंगों से उनमें लिखा था '३१ मई', 'कौनसी ३१ मई?' '१९४ ' इत्यादि। वे कहा करते थे कि ३१ मई को हम छूटने वाले हैं। उस पर से किसीने मजाक किया था। करने वाले कटेली साहब थे।

१ जून '४३

लार्ड सैमुएल को पत्र भेजने के विषय में आज बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर दिया।

३ जून '४३

भंडारी ने कहलवाया कि जिन्हें चश्मा चाहिए, वे अपने पैसे से लें। बापू को यह ठीक नहीं लगा। पहले विचार किया कि जाने दें, मगर बाद में विचार बदला। कहने

---

* "You should not even talk of the Supreme Soul It is my profound conviction that Truth is self-acting Truth which is God is ever present, ever working in all beings Therefore one should simply live one's own life amongst them and serve them according to their needs Three Rs have a value all their own Therefore giving that knowledge to the illiterate is a special service and obligatory on those who have that knowledge For the rest if we have Truth in us, it will go out to them without effort for It is self-acting God i e Truth comes to those who seek Him If we know Him more than they (of which we can never be sure), the more will go out to them"

लग कि सरकार लोगो को बन्द करके रखे, उनकी कमाई का साधन बन्द करे तो पीछे उनका सब खर्च सरकार को उठाना चाहिए ।

४ जून '४३

बापू ने भण्डारी को लिखा कि सरकार मनु को चश्मा दे, नहीं देगी तो भले वह लड़की अपनी आख खोए ।

बा की सास बहुत फूल जाती है ।

५ जून '४३

बा को सुबह पाच बजे हृदय की धडकन का दौरा हुआ । दो-तीन मिनट ही रहा । आज डा० साहब की तबीयत खराब थी । मनु कहने लगी कि अण्डी का तेल पीजिए । वे कहने लगे, "तू सुबह चार बजे आकर पिलाए तो पियेंगे ।"

आज मनु का सोलहवा जन्मदिन था । भडारी का उत्तर आया कि सरकार की तरफ से चश्मा मिलेगा ।

कैदियो को आम और खजूर बाटे ।

६ जून '४३

शनिवार की रात को मनु जागती रही । डा० साहब ने कहा था कि बिना किसीके उठाए चार बजे अण्डी का तेल पिलाने आवे तो पियेंगे, इसलिए बेचारी पहले बारह बजे उठी, फिर साढे बारह बजे, फिर दो बजे और फिर ढाई बजे । पीछे स्नानादि करने लगी । इतने में तीन बजे । फिर कोच पर पडी रही । चार के टकोरे हुए तो अण्डी के तेल की बोतल लेकर डा० साहब के पास जा पहुची । डा० गिल्डर बिना मुह बनाए पी गए । मनु को बहुत आश्चर्य हुआ । दिन में दो सिपाहियो को भी अडी का तेल पिलाना था । मनु के हाथ से दिलवाया । उसे बडी खुशी हुई । सारा दिन हम लोग हसते रहे ।

८ जून '४३

शनिवार को चार बजे तक अखबार पूरे कर दिये, मगर बापू का काम रात को शुरू किया । रविवार-सोमवार तक उसी काम में लगी रही । आज भी वही चल रहा है । आज सुबह तो पत्र का टाइप होना भी शुरू हो गया है । अभी काफी काम बाकी है । परिशिष्ट (अपेन्डिक्स) भी अपने-अपने स्थान पर रखने है । यह जवाब तैयार करने में कम-से-कम एक हफ्ता और लगेगा ।

बादल आते है । रोज डर लगता है कि वर्षा आवेगी और खेलना बन्द हो जावेगा, मगर होती नहीं है । हवा खूब चलती है ।

९ जून '४३

मीराबहन को गठिया का दर्द हो गया है । कधे और हाथ के जोडो की मालिश मुझसे कराया करती है । मगर आज बापू ने उन्हे सलाह दी कि उपवास करके इसकी जड निकाल डालो । डा० गिल्डर से शाम को बाते कीं । उन्होने उपवास के विषय में कोई

अड़चन नहीं बताई, इसलिए कल से मीराबहन उपवास करेंगी। बापू को आशा है कि तीन-चार उपवास के बाद फल देना शुरू कर सकेंगे। मीराबहन उपवास के दौरान में यहां आने के बाद के अपने विचार और अनुभव लिख डालने का विचार कर रही हैं।

आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं। रात को जल्दी सो भी गई। कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। मन में विचार उठता था—भगवान् महादेवभाई जैसों को क्यों उठा लेता है और हमारे जैसों को क्यों छोड़ जाता है?

सरकारी पुस्तिका के जवाब के परिशिष्ट की सामग्री तैयार करनी रही। उसे आज करीब-करीब पूरा कर डाला।

१० जून '४३

मीराबहन सुबह मजाक कर रही थीं कि दस तारीख को बापू का उपवास शुरू हुआ था और चार महीने के बाद ठीक उसी तारीख को उनका भी उपवास शुरू होना है। आज उन्हें कुछ खास तकलीफ नहीं हुई। शाम को भूख लगी थी। सिर कुछ भारी था। वजन आज सुबह १३३ पौण्ड है। जबान साफ है। कुछ खास कमजोरी नहीं मालूम होती। पसीना वगैरह नहीं आया। इससे वे खुश हैं। उनके दर्द का मुख्य कारण तो यह था कि खेलने के बाद खूब पसीना आता था। उसके बाद हवा में घूमती थीं। इस घर में हवा से तो आदमी बच ही नहीं सकता। आज वे खेलीं नहीं तो पसीना भी नहीं आया।

कल रात भाई रात भर टाइप करते रहे—एक मिनट भी नहीं सोए। दिन में भी आधा-पौन घंटा ही सोए। दोनों वक्त खेले भी खूब। सुबह खेलने के बाद ताजा हो गए, ऐसा कहते थे।

आज सरकार का जवाब आया। जिन्ना साहब को लिखे बापू के पत्र पर निकाली गई सरकारी विज्ञप्ति के विषय में बापू को सूचना देने से इन्कार किया गया था।

अनपढ़ गंवार लोगों की सेवा कैसे करनी चाहिए, इस बारे में बापू ने मीराबहन को जो लेख सुधार कर दिया था, वह बहुत संक्षिप्त था, मानो सूत्रों में लिखा गया हो। इसलिए उन्हें बापू से उसे समझना पड़ा। बापू ने कहा,* "जब

---

* "When I looked through what you had written down of our conversation, I saw that I should express what I had said in a shorter and clearer manner I have now put it in the form of aphorisms As a matter of fact, it was only yesterday that I fully realized the value of the three Rs In the past I have often expressed indifference to them But yesterday it came to me that the three Rs have a unique place and value and in serving illiterate people it is a vital part of one's duty to give them this knowledge The man who cannot read, write or add, must remain in many ways an ignoramus whereas with this knowledge at his command he can reach out to further and further development Of course that means that when I impart the three Rs I

मैंने तुम्हारी लिखी अपनी बातचीत की रिपोर्ट देखी तो मै समझ गया कि मैंने जो कहा था, उसे अधिक छोटा और अधिक स्पष्ट करके मुझे कहना चाहिए था। मैंने अब उसे सूत्र रूप में लिख डाला है। सच्ची बात तो यह है कि कल ही मै पढने-लिखने और सामान्य गणित की कीमत पूरी तरह समझा। आज तक मै उनके प्रति लापरवाह रहा हू, मगर कल मै समझ गया कि उनकी जो कीमत है और उनका जो स्थान है, वह और किसीका नही। निरक्षर लोगो की सेवा करते समय हरेक का यह धर्म है कि उन्हे ज्ञान दे। जो आदमी पढ नही सकता, लिख नहीं सकता, जमा और बाकी करना भी नहीं जानता, वह बहुत चीजो के बारे में अज्ञानी रहता है। मगर पढ़ने-लिखने और गणित के ज्ञान से वह अपना विकास उत्तरोत्तर कर सकता है। इसका यह अर्थ है कि जब मै उसे लिखना-पढना सिखाता हू तो ऐसे तरीके से सिखाऊ कि उसकी अपनी ज्ञान बढाने की इच्छा तीव्र बने। मेरे लिए तो यह सवाल ही नही उठता कि माला फेरी और चलते बने। मेरा उसको लिखना-पढना सिखाने का यह मकसद नही कि सब तरह से उसे आगे बढाना है। अगर मेरे सिखाने से उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधरती है तो बहुत अच्छा है, लेकिन मेरा असल हेतु तो है उसकी आत्मा का विकास करना और उसके लिए मुझे उसकी भौतिक सेवा करके उसके निकट पहुचना है। उसका शरीर तो सामने है, मगर उसकी आत्मा को अभी वह पहचानता नहीं है। दिन-प्रतिदिन जैसे वह मेरी सेवा स्वीकार करता जाता है, उसके मन में जिज्ञासा पैदा होगी कि मेरा अपना जीवन कैसा है।

---

must try to do it in such a way as to whet the man's appetite for further knowledge There can be no question for me of just counting beads and passing on I do not impart this knowledge for all round advance If he advances materially, all very well and good, though my concern is with his spiritual development It is through material service that I have to approach him His body is all there His soul is as yet unknown to him Day by day as he goes on accepting my material services, he will become more curious about my life He will begin to notice something more than the physical side of my life Why do I sometimes sit in certain postures ? Why do I shut my eyes at times ? What is it I am murmuring ? When this curiosity leads him to ask me what it all means, I can explain it to him How the information will affect him is not my concern It is not for me to interfere with the working of the spirit When I am face to face with a man in proportion as I have God's spirit in me, will it go out to him My purpose is not to give him my religion. My purpose is to let him see God through me if I have Him and express Him in reality in my daily doings"

"फिर वह मेरे भौतिक जीवन से आगे भी कुछ है, यह देखने लगेगा। वह सोचेगा कि मैं क्यो कभी-कभी आखें बन्द करके आसन लगाकर बैठता हू ? मैं इस तरह बैठकर किसकी रटन करता हू ? जब इस जिज्ञासा के वश होकर वह मुझसे पूछेगा कि इन सब चीजो का क्या अर्थ है तब मैं उसे बता सकता हू। इस ज्ञान का उस पर क्या असर होगा, उसकी चिन्ता करना मेरा काम नहीं। आत्मा के काम में दखल देना मेरा काम नहीं। जब मैं किसी इन्सान के आगे खडा होता हू तब जिस हद तक ईश्वर मेरे हृदय में विराजमान है, उसी हद तक वह मेरे सामने खडे व्यक्ति में भी प्रवेश करेगा। मेरा हेतु यह नहीं कि वह मेरा धर्म स्वीकार करे। मेरा हेतु यह है कि वह मेरे द्वारा ईश्वर का दर्शन कर सके। वह तभी हो सकता है कि अगर ईश्वर मेरे हृदय में विराजमान हो और अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में, कार्य में, मैं सचमुच उसको व्यक्त करता हू।"

: ४९ :

सरकारी आरोपपत्र और उसका उत्तर (२)

११ जून '४३

बापू कह रहे थे कि कल से पहले का सब कार्यक्रम फिर से शुरू होना चाहिए, मगर मैं समझती हू कि वह नहीं हो सकेगा। टाइप-नकल को आज पढना शुरू किया। कुछ समय बापू ने मेरे साथ पढा और साथ-साथ सुधार कराते गए। कुछ समय मैंने अकेले पढा। आज मीराबहन के साथ कुछ नही किया। पन्द्रह पन्ने ही पढ पाई। सब मिलाकर करीब ४० पन्ने है और परिशिष्ट अलग।

मीराबहन ने आज एक दर्जन मोसम्बी ली। तबीयत अच्छी है। भूख बहुत है और कमजोरी भी है।

रात को सरकार का पत्र आया। टॉटेनहम के सेक्रेटरी ने बापू की जिन्ना वाली विज्ञप्ति के बारे में जो दूसरा पत्र सरकार को लिखा था, उसकी और लार्ड सैमुएल को पत्र न देने के बारे में भेजे गए बापू के पत्र की पहुच थी। लिखा था कि उस बारे में सरकार को कुछ और नहीं कहना है। वह अपना निश्चय बदल नही सकती। सभी यह पत्र पढकर हसने लगे। बापू भी हसकर कहने लगे, "जवाब देते है, यह उनकी मेहरबानी है!" मगर उन्हे सैमुएल वाले पत्र के बारे में सरकार के उत्तर से कुछ आश्चर्य हुआ। उन्हे आशा न थी कि उसका भी ऐसा ही उत्तर आवेगा। सरकार दूसरी विज्ञप्ति निकाल सकती थी। वे लोग लिख सकते थे कि आप ठीक कहते है। लार्ड सैमुएल वाला पत्र, जिन्ना साहब के पत्र के बारे में जो विज्ञप्ति निकाली गई थी, उसकी श्रेणी में तो नहीं आता, मगर हम उस पत्र को दूसरे कानून से रोकते है।

१२ जून '४३

महादेवभाई को गए हफ्तो की जगह महीनो हो गए। क्या इसी तरह वर्षों चले जावेगे ? उनका स्मरण तो इतना ताजा है, मानो कल वे हमारे साथ ही थे। वह स्मरण इस जीवन में धुधला थोडे ही पड सकता है।

बापू आज भी मेरे साथ 'सरकारी बाइबिल'* के अपने उत्तर की टाइप-नकल पढते रहे और सुधार भी करते रहे। ३२ पन्ने आज पूरे हुए। अभी आठ-दस और है। कल पूरे हो जावेगे ।

मीराबहन को आज भी कमजोरी तो लगती है, मगर तबीयत ठीक है। दर्द कम है ।

१३ जून '४३

आज 'सरकारी बाइबिल' पूरी की। बीच-बीच में बापू ने कई जगहो पर सुधार करते समय अक्षर बढाए थे। परिणाम-स्वरूप कई जगहो पर खाली जगहे छूट गई थीं। भाई को ये जगहें भरनी पडीं ।

भाई कुछ उदास थे। जिन्ना इत्यादि की गालिया पढते-पढते हम लोग ऊब जाते है, मगर बापू के मन पर उनका कोई असर नहीं होता। वे तो अचल बैठे है। वे जानते है कि आज जो भी हो रहा है, उस सबका परिणाम शुभ ही होने वाला है हिन्दुस्तान के लिए। व्यक्तियो का तो उन्हे कभी विचार भी नही आता। अपनेआप की, अपने मान की उन्हे कुछ पडी ही नहीं।

यह सब काम करते हुए बापू मनु को आधा घटा जरूर सिखाते है। हर रोज थोडी गीता भी सिखाते है। दस-बीस मिनट तक एक रोज व्याकरण व एक रोज भूमिति सिखाते है। बापू पढाने में बिलकुल लीन हो जाते है। कह रहे थे, "मै यह सब काम ('सरकारी बाइबिल' का उत्तर लिखना इत्यादि) तो करता हू, मगर मुझे इसमें रस नहीं है, भाररूप लगता है। हा, भूमिति में, व्याकरण में, सस्कृत में मै लीन हो सकता हू।"

१४ जून '४३

आज भाई फिर कहने लगे, "मुझे लगता है कि ये लोग बापू को तबतक नहीं छोडेंगे जबतक वे काम करने लायक है। जब शरीर निकम्मा-सा हो जावेगा, तभी छोडेंगे।" मैंने रोका, "आप इस प्रकार का विचार भी क्यो करते है ?" वे कहने लगे, "अगर ईश्वर का यह मशा होता कि बापू को बाहर जाकर पहले की तरह से काम करना है तो महादेव क्यो चले जाते ?" मैंने कहा, "आज भी जो काम चल रहा है, उसमें भी महादेवभाई की आवश्यकता है। इसलिए आपकी दलील व्यर्थ है।" वे बोले, "सेवाग्राम का विचार भी

*हम लोगो ने जेल मे टॉटेनहम के पैम्फलेट को मजाक मे 'सरकारी बाइबिल' नाम दिया था।

मुझ काटता है। महादेव के विना उस जगह में रह ही क्या गया ! एक वही जगह थी, जहा जाकर घडी भर के लिए आदमी मन वहला सकता था, हल्कापन महसूस कर सकता था।"

इसमें शक नहीं कि महादेवभाई के विना आज वाहर के जीवन की कल्पना करना भी कठिन है, मगर भगवान् को वापू से और काम न लेना होता तो वापू को उपवास से ही क्यो वचाता ? मगर उसके साथ ही भगवान् का महादेवभाई को इस तरह उठा लेना मेरी समझ में जरा भी नहीं आता। उनकी जगह हममें से किसीको क्यों नहीं उठा लिया ?

आज वापू का मौन था, तो भी उन्होने कुछ समय मेरे साथ परिशिष्ट की टाइप-नकल मिलाई। वापू के हाथ में 'हरिजन' था। मै टाइप-नकल पढती जाती थी। भूल मिलती तो वापू मेरा ध्यान खींचते थे। मै सुधार लेती थी। वाकी समय वे संस्कृत और 'गुलीवर्स ट्रैविल्स' पढते रहे। एक दिन कह रहे थे, "संस्कृत के दो वाक्य भी पढ लू तो वे ज्ञान में वृद्धि ही करते हैं। इसलिए मुझे वह पढना अच्छा लगता है।"

मीरावहन ने आज से मोसम्वी के साथ शहद और पानी लेना शुरू किया है। शहद पीकर आज वे खूव ही सोईं।

१५ जून '४३

वर्षा वन्द है, सो वेडमिन्टन कोर्ट सूख गया है। चूने की कमी है, इसलिए डोरी की लाइनें वनाईं। इतने दिनो के वाद वाहर खेल सके। अच्छा लगा।

वा आजकल सव खेलो में वहुत रस लेती हैं। सुवह-शाम वेडमिन्टन व रिंग देखने आती हैं। हम कुर्सी डाल देते हैं। वे वैठी देखा करती हैं। रात को कैरम देखती हैं। मीरावहन वता रही थीं कि वा शाम को अकेली कैरम खेलने का अभ्यास भी कर रही थीं। मीरावहन ने प्रोत्साहन दिया। वा ने कैरम वोर्ड की पॉकेट में सात वार मोहरा डाला। रात को कटेली साहव वगैरा ने वा से खेलने को कहा। वा वहुत रस से खेलती रहीं। इन खेलो ने वा का जीवन वदल-सा दिया है। उनकी निराशा और उदासी वहुत कम हो गई है।

इसी तरह ग्रामोफोन से भी वा का खूव मनोरजन होता है। सुवह घटा डेढ घटा ग्रामोफोन वजता है। तव वा लीन होकर भजन सुनती रहती है। यह वहुत अच्छा है।

१६ जून '४३

आज रात को वापू ने टॉटेनहम के पैम्फलेट के उत्तर को दोवारा पढ लिया। आखिर के एक पैराग्राफ को सुधारना वाकी है, ऐसा कहते थे। सिर पर से भारी वोझ उतरा। मुझे भी ऐसा ही लगता है। पर मेरा काम तो अभी वाकी है। भाई अव उसे पढकर अपने सुझाव तैयार कर रहे हैं। पीछे हम सव वारी-वारी से पढेंगे। फिर उसकी साफ नकल होगी। एक हफ्ता शायद इसे जाते-जाते और लग जावेगा।

१७ जून '४३

आज सुबह बापू ४ बजे उठ गए। घडी एक घटा आगे होने के कारण रोज पाच बजे उठते है। साढे चार तक बिस्तर पर पडे रहे। सो नही सके। साढे चार पर प्रार्थना के लिए चले। बाद में सवा पाच-साढे पाच से लेकर साढे छ. बजे तक सोए।

सुबह घूमते समय पजाब के किसानो की खुराक की बात हुई। पजाबी किसान की निडरता की बात मेरे मुह से सुनकर बापू कहने लगे, "हा, पर याद रखो, एक गोरे को देखकर वे थर-थर कापने लगते है।" बात सच्ची है। पठान क्या और जाट क्या, दूसरे किसीकी परवाह उन्हे-है नही। विशाल काया रखते है, मगर गोरो से थरथर कापते हैं।"

पीछे कहानी चली। मिसेज डेनियल के यहा से कैसे निकले, अलग कमरे लेकर रहे, गाना, नाचना, भाषण देना सीखा और छोडा। यह सब सुनाया।

मालिश के बाद सोए नही। टॉटेनहम के पैम्फलेट के उत्तर की उन्हें बडी चिन्ता थी। आखिर का पैराग्राफ फिर से लिखना चाहते थे। करीब सारा दिन उसीमें गया।

भाई के साथ बैठकर बापू के पत्र को फिर से पढा और बापू की स्वास्थ्य-डायरी पूरी की। मीराबहन का उपवास आज छूटा।

१८ जून '४३

आज बहुत दिनो के बाद दोपहर को रामायण पढी। थोडी सस्कृत व्याकरण भी की। भाई के साथ कुछ देर काम किया। बाकी दिन यो ही चला गया।

मीराबहन ने उपवास के हफ्ते में ७॥ पौण्ड वजन खोया। पहले दो दिन तो दर्द कम रहा, मगर फिर बढ गया। परसो तो बहुत ज्यादा था।

कल से उन्होने खाना शुरू किया है। आज २॥ पौण्ड दूध पिया और सब्जी खाई। कहती थी कि आज ५० प्रतिशत दर्द चला गया है। देखें आगे क्या होता है।

१९ जून '४३

रामायणादि का आज फिर नागा हो गया। बापू के उत्तर के परिशिष्ट की सामग्री टाइप होकर आ गई थी। उसे देखती रही।

गेहू का आटा नही मिलता। आज से बाजरे की रोटी बनानी शुरू की है। बापू ने भी खाई।

आज बापू समझाते रहे कि कैदी की हैसियत से हमारा जीवन कैसा होना चाहिए। कहने लगे, "मेरा शरीर चल सके तो मै इन कैदियो की ही खुराक खाऊ।" मैंने कहा, "मेरा तो चल सकता है। मुझे खाने दीजिए।" बापू ने उसकी इजाजत नही दी, मगर अम्माजान के वक्त जो कच्चा खाने का व्रत लिया था, उसमें इतना फेर करके कि 'बापू के लिए जो सब्जी बने वह लेना', उसे चालू रखने की इजाजत उन्होने दे दी। यह फेर करने का कारण यह है कि कच्ची खाने लायक सब्जी यहा हमेशा नही आती है।

जबतक जेल में है तबतक यह व्रत चालू रहेगा।

आज एक दुखद घटना हो गई। बापू को ऐसा लगा कि ने झूठ बोला है। उससे वे खिन्न रहे।

भाई रात को तीन बजे तक काम करते रहे। 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर में जो सुधार करने का विचार वे रखते थे, वे सब किए।

२० जून '४३

सवेरे प्रार्थना के लिए सवा चार बजे उठी। मगर शर्म के साथ कहना पडता है कि गीताजी के पाठ के समय नींद आने लगी। मेरा स्वर ठीक न था। भाई पढने लगे और मै चुपचाप सुनती रही। सुनते-सुनते सो गई। कल भी ऐसा ही हुआ था।

बापू आज अपने लिखे उत्तर में भाई के किये हुए सुधारो को ध्यान से देखने रहे। मैंने दोपहर उनकी आत्मकथा पढी। दो-तीन रोज में उसे पूरा करने का विचार है। सोच रही थी—बापू दक्षिण अफ्रीका गए, तब चौबीस वर्ष के थे। मै पच्चीस पूरे कर चुकी हू। अर्थात् मुझ से छोटी उमर में उन्होंने कितने बडे-बडे काम करने शुरू कर दिये थे और हम लोग यहा बच्चे-से बनकर बैठे है। मगर यह बापू का प्रताप है। उनके पास बैठने से ही ऐसी भावना उठती है। अगर अस्पताल में बैठी होती तो ऐसा नही हो सकता था। जो हो, बापू उस उमर में जितनी प्रगति कर पाए थे, हमारे जैसे सारी जिन्दगी में भी कर पाए तो बहुत है। इतने पर भी बापू कहते है कि वे तो सामान्य आदमी है। जो उन्होंने किया, वह सब कर सकते है।

वर्षा धमकी देकर चली जाती है। अच्छा लगता है। सूखे कोर्ट पर हम खेल सकते है।

२१ जून '४३

आज बापू का मौन है। सुबह ही लिखकर कहा कि आज मालिश से मुक्ति लेकर टॉटेनहम की 'बाइबिल' का उत्तर पढना। शाम को खाने के समय वह पूरा किया। दोपहर में दूसरा काम भी रहा ही था। रात में भाई नए सुधारो को टाइप करते रहे। उन्होंने रात भर टाइप किया।

शाम को प्रार्थना के बाद मैक्सवेल का बापू के पत्र का उत्तर आया। बापू वह रूखा-सूखा उत्तर पढकर बहुत हसे।

२२ जून '४३

आज बापू ने मैक्सवेल वाले पत्र का उत्तर लिखा। भाई ने टाइप किया। 'बाइबिल' का उत्तर आज डा० गिल्डर पढते रहे। भाई ने कल रात को जो टाइप किया था, उसे मिलाने में कुछ समय गया। दोपहर दो घटे सोई, सो कुछ खास काम न कर पाई। शाम को बापू के साथ बाइबिल (असली बाइबिल) पढी।

बापू अशात-से लगते है। आज रक्त-चाप भी अधिक था। कल रात को बारह बजे सोए थे।

रात को डा० साहब 'सरकारी बाइबिल' को पढना चाहते थे। बापू ने कैरम में उनकी जगह मुझे भेजा। बा नहीं आईं। उन्हे नींद आ रही थी। जल्दी सो गईं। मैं, मीराबहन और कटेली खेले। मीराबहन ने हमें तीन बार हराया। वे कैरम बहुत ही अच्छा खेलती हैं। वहा से आई तो मनु और भाई बाते करते मिले। उन्होने मुझे भी बिठा लिया। हम लोग बारह बजे के बाद सोए।

२३ जून '४३

आज डा० गिल्डर मालिश करने नहीं आए। वे 'बाइबिल' का उत्तर कल से पढ रहे हैं। ११॥ बजे बापू खाना खा रहे थे। उस समय वे उनके पास अपने सुझाव लाए। बापू ने बाद में कुछ बातो के बारे में हम तीनो से फिर विचार करने को कहा। शाम को हम लोग फिर आधा घटा यहां बैठे। पीछे रात को भी करीब एक घटा लगा। दो पैराग्राफ अभी और तैयार करने को रह गए हैं।

२४ जून '४३

आज डा० गिल्डर ने 'सरकारी बाइबिल' का उत्तर पढकर बापू को वापस किया। कल बापू ने जो दो पैराग्राफ लिखने को कहा था, आज मालिश के बाद हम तीनो ने, मिलकर उन्हे लिख डाला। दोपहर को डा० गिल्डर ने बापू का उत्तर लौटाया, पीछे मुझे जो कुछ पूछना था, मैंने पूछा। डा० गिल्डर पहला पन्ना ले गए। आज से वह उसे टाइप करना शुरू करना चाहते थे।

मनु को तीन दिन से कब्ज था। उसने किसीसे कहा नहीं था। आज बापू से कहा। उन्होने एनीमा लेने को कहा। उसने लिया। खाना न खाने का विचार किया था, मगर पीछे बा के कहने से कुछ खा लिया। परिणाम-स्वरूप उसे दो उल्टिया हो गई।

२५ जून '४३

आज भी सरकारी 'बाइबिल' के जवाब में जिन-जिन चीजो के विषय में मुझे बापू को सुझाव देने थे या चर्चा करनी थी, वह मैं पूरी नही कर पाई, मगर चालीस पन्ने तक पहुच गई। अब बारह-तेरह पन्ने ही शेष रहे हैं। एक पैरा अधूरा था, उसे पूरा करना था। मालिश से छुट्टी ली और उसे पूरा किया।

मीराबहन कहती थी कि उनका दर्द दस फीसदी कम है, मगर उपवास के दूसरे दिन पचास फीसदी कम था। फिर पचहत्तर फीसदी बढा। इसलिए अभी से कुछ कहना ठीक न होगा। कलेक्टर आज आया।

मनु ने आज सुबह अण्डी का तेल लिया। शाम को उसके पेट में दर्द होने लगा। खाया नही—खेलने भी नही आ सकी। डा० गिल्डर को भी बुखार-सा था। कटेली के हाथ में दर्द था, इसलिए शाम को वे खेल नहीं सके।

२६ जून '४३

आज 'बाइबिल' के उत्तर के विषय में बापू के साथ चर्चा पूरी की। बापू आज उत्तर को आखिरी बार पढ़ने की आशा रखते हैं। डा० गिल्डर और भाई एक और कच्ची नकल टाइप करेंगे, फिर उससे साफ नकल तैयार होगी। डा० गिल्डर ने तो सात पन्ने टाइप कर भी लिये हैं। भाई अभी एक बार सब-का-सब फिर से पढ़ जाना चाहते हैं, बाद में टाइप करना शुरू करेंगे। अब इस चीज से हम सब थक गए हैं। जेल में ही इसे इतना समय मिल सकता था।

आज 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की पिछले वर्ष की पूरी फाइल आई है। वापस लौटानी होगी। बा कह रही थीं, "अखबार क्या काम आते हैं? इस फाइल की क्या आवश्यकता थी?" मगर 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर के लिए यह मंगवाई गई थी।

रामायण में भरत-मिलाप पढ़ते-पढ़ते मैंने बा से कहा, "बाहर जाकर आपको भरत-मिलाप का सिनेमा दिखा लावेंगे।" बा कहने लगीं, "मैं अब यहां से कहां वापस जाने वाली हूं!" मैंने और डा० गिल्डर ने समझाया तब मान गईं। कई बातों में बा बालक की तरह भोली हैं। बस शान्त मन से कैरम खेलने को दौड़ दीं।

अखबार बहुत से इकट्ठे हो गए थे। मैंने काफी पढ़ भी डाले। आशा है, सोने से पहले सब पुराने काम पूरे हो जावेंगे।

मीराबहन का दर्द कम है, ऐसा वे कहती थीं। दर्द का ढंग भी कुछ बदला है।

: ५० :

मनोरंजक घटना

२७ जून '४३

मेरे बालों में चिकना, सफेद मैल बहुत है। निकलता ही नहीं। एक दिन विचार आया कि बाल निकालकर इसका इलाज करें तो शायद साफ हो जावे। भाई ने और बापू ने इस विचार का समर्थन किया। बापू कहने लगे कि उनके सिर में भी यही था, जो इसी तरह अच्छा हुआ था। मीराबहन से बात की। उन्होंने बाल काटने से मनाही की। डा० गिल्डर के बालों में भी यही तकलीफ है। मेरी बात सुनी तो वे कहने लगे कि पहले वे करके देखें, फिर मैं करूं। मगर बाद में उनका मन बदल गया। कहने लगे, "बापू कहें तो मैं बाल कटाऊं।" बापू कहने लगे, "मैं क्यों कहूं?" आज मैंने बाल धोए थे। बापू कहने लगे, "बाल निकालना है तो आज ही निकालो।" मेरा मन काटने को होता नहीं था। यह भी विचार आया कि ऐसा इलाज यहीं किया जा सकता है। बाहर जाकर यह नहीं हो सकेगा। बापू और भाई मजाक करने लगे कि हिम्मत नहीं पड़ती। मैंने कह

दिया, "तो भले काटें ।" बस कहने की देर थी । तुरत बापू ने कैंची उठाकर पहले मेरी चुटिया काटी, फिर बाकी के बाल काट डाले। बुरा तो लगा, मगर अब क्या हो सकता था। सब काटकर दामोदर कैदी से उस्तरा फिरवा दिया । मीराबहन तो रोने जैसी हो गई । कहने लगीं, "मुझे पता होता कि तुम इतनी जल्दी फिसल जाओगी तो मैं तुम्हे ज्यादा रोकती।" कटेली साहब को भी बडा आघात लगा। कहने लगे, "हम सीपी-चन्दन मगा देते, उससे तुम्हारा सिर साफ हो जाता। इतने अच्छे बाल क्यो निकाल दिए?" मनु, बा, सबको बुरा लगा। बापू कहने लगे, "कल्पना की बात है न। मुझे तो तुम्हारा यह बिना बालो का सिर और चेहरा अच्छा दिखता है।" रात में डा० गिल्डर मजाक करने लगे, "जब बुढिया हो जाओगी तब इन बालो की 'विग' (टोपी) बनवाकर पहनना ।" कटेली साहब कहने लगे, "मुझे पता दें कि कहा बनती है। अभी से बाल भेजकर 'विग' बनवा ले, ताकि अभी ही पहनी जा सके।" उनसे मेरा मुण्डा सिर नहीं देखा जाता।

रात में मै सो न सकी। तकिये में सिर लगता तो तकलीफ होती। सिर की चमडी बहुत नाजुक थी। बालो की जडें कपडे में अटकती थीं।

२८ जून '४३

बापू का आज मौन है। 'बाइबिल' का उत्तर आखिरी बार पढते रहे। अब भी बाल मुझे तकलीफ देते है।

कल रात मैं सो न पाई थी। दिन में दो घटे सोई और कुछ अखबार आदि पढे।

: ५१ :

सरकारी आरोपपत्र और उसका उत्तर (२)

२९ जून '४३

बापू आज भी सरकारी 'बाइबिल' का उत्तर पढते रहे। उससे बहुत थक गए है। रात कह रहे थे कि इतनी मेहनत उन्हे किसी दूसरी चीज पर नही करनी पडी। मुझे जो चर्चा करनी थी, सुझाव देने थे, उनमें से कुछ तो दोपहर को दिये और कुछ रात को। सोने में करीब ग्यारह बज गए। कितने दिनो से ऐसा ही हो रहा है ।

आज बा को बुखार था। कल रात से उनका शरीर दुखता था और सर्दी लग कर बुखार आया था। छाती में नया कुछ नहीं। पेशाब में भी अल्ब्यूमिन का निशान तक नही। सम्भव है, मलेरिया हो। आज जाच के लिए रक्त नही लिया। फिर आवश्यकता पडी तो लेगे। बा को सुई लगवाना बहुत नापसन्द है।

शाम को . . . सिपाही से मैंने दो-चार रोटी बनाने को कहा, क्योकि मनु बा के पास थी। उसने कोरा जवाब दिया और झट बोला कि वह तो रोटी बनाना

जानता ही नहीं है। कटेली साहब ने बाद में उसे डांटा।

मुझे विचार आ रहा था कि रोटी खाना बन्द कर दूं। रोज मनु से बनवाकर खाना अच्छा नहीं लगता।

३० जून '४३

आज बा की तबीयत अच्छी है। बुखार नहीं। मीराबहन को भी काफी फायदा है। दो-तीन रोज से मिट्टी लगाती थीं। आज 'ओरियण्टल बाम' मलवाया है। विटामिन 'बी' और 'सी' भी लेती हैं और दवा पीती हैं। कहती है कि उनका सामान्य स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

रात को मीराबहन आकर कहने लगीं कि दर्द ज्यादा है। उसका कारण वे मालिश कराना बताती हैं।

आज भाई के कमरे में पुराने अखबार उठाकर ठिकाने पर रखे। काफी धूल खानी पड़ी। नए अखबार सब गोल मेज पर सजा दिये। महीना पूरा होने पर फाइलें यहां से उठा लूंगी।

आज सुबह मैं प्रार्थना में नहीं गई, क्योंकि रात को मुझे बुखार-सा लगता था। सिर में दर्द-सा था। मगर दिन में सब अच्छा रहा। इरादा है कि कल से अपना कार्यक्रम पूर्ववत् चलाना शुरू कर दूं।

१ जुलाई '४३

आज मीराबहन के सुबह से ही दर्द ज्यादा है। शाम को और बढ़ा करता है। कहतीं थीं कि अब तो सौ फीसदी साबित हो गया है कि मालिश से ही दर्द बढ़ता है। उन्हें कौन समझा सकता है कि यह भ्रम है।

खाने के समय बापू लिखाने लगे। ढाई बजे तक लिखवाते रहे। फिर सोने को लेटी। नींद मुश्किल से आई। साढ़े तीन बजे उठी तो सिर में दर्द था। बिस्तर से उठी तो बहुत ठंड लगने लगी। मापा तो १००.६ बुखार निकला। चाय के साथ दस ग्रेन कुनीन खाई।

शाम को लेटी रही। मीराबहन की लिखी हुई टीका, जो बापू के पास आई थी, पढ़ गई। कई भूलें थीं। बापू ने उन्हें सुधारने को कहा।

काफी अखबार पढ़े। रात मैं खूब सोई। बा आज शाम को पिंग-पौंग खेल रही थीं। मेरा पुराना कार्यक्रम आज शुरू न हो सका।

२ जुलाई '४३

सुबह उठकर अण्डी का तेल पिया। बापू को यह जुलाब विशेष अनुकूल लगता है। प्रार्थना बिस्तर में पड़े-पड़े सुनी। सुनते-सुनते सो गई। साढ़े सात बजे उठी। बुखार ९९.८ था। ग्यारह बजे तक उतर गया। अखबार देखे। बापू ने 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर में जो नए सुधार किये हैं, वे देखे। कल और आज की डायरी लिखी। अब बापू की स्वास्थ्य-डायरी पूरी करके 'आत्मकथा' पढ़ूंगी। आज शाम को बाइबिल भी पढ़ी।

बापू बहुत थक गए हैं। आज खून का दबाव भी ज्यादा था। 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर पर बहुत मेहनत करनी पड़ी है। आज शाम को घूमते समय कह रहे थे, "ईश्वर ऐसे मुझे उबार लेता है। उत्तर पूरा हुआ और थकान चढ़ी। इतनी मेहनत न करता तो जो सुधार किये हैं, वे कर नहीं सकता था।" रात को प्रार्थना के बाद उन्होंने तुरंत सोने की तैयारी की। चार-पाच दिन के बाद ठीक तरह से सिर और पैरों की मालिश करवाकर सोए।

डा० शाह आए। मैंने मीराबहन के दर्द के बारे में उनसे बात की।

३ जुलाई '४३

मीराबहन के दर्द का कारण नही मालूम पडता। एक दिन कम हुआ और एक दिन बढ गया। डा० शाह से कल बापू ने सुबह कहा था कि डा० गिल्डर शायद उन्हे पूरी जाच के लिए अस्पताल भेजना चाहेगे। उन्होंने कहा कि भडारी से बात करने के बाद जो कर सकेंगे, करेंगे। डा० गिल्डर दोपहर को कह रहे थे कि यहा से तो, जीवन-मृत्यु का सवाल हो तो भी, शायद ही किसीको अस्पताल भेजा जाय।

भाई ने रात भर टाइप किया।

४ जुलाई '४३

आज भडारी आए। भडारी की बात से लगता था कि मीराबहन को कही भेजने का उनका इरादा नहीं। कहते थे, "डा० शाह से सलाह करके कहूगा कि क्या कर सकता हू।"

भंडारी गवर्नर के आने की बात करते रहे। 'सी' श्रेणी के कैदियो ने विरोध-प्रदर्शन किया था, उन्हे सजा देने की चर्चा की। डा० गिल्डर ने कहा, "राजनैतिक कैदियों के साथ दूसरा ही बर्ताव करना पडता है, क्योकि दूसरे देशो में जो आज राजनैतिक कैदी है, वे ही कल सत्ताधारी हो सकते है, और जो आज सत्ताधारी है, वे कल कैदी हो सकते हैं।" मगर हमारे यहा परदेशी राज्य है, इसलिए सब चलता है।

बापू ने टॉटेनहम की 'बाइबिल' का जो जवाब दिया है, उसके परिशिष्ट पर मैंने नम्बर डाले। शाम को सात बजे तक यही काम किया। पीछे खाने को गई। फिर घूमने को। खेलने नहीं गई। बाद में पता चला कि आज कटेली साहब भी खेलने में न थे। उनके हाथ में दर्द था, सो खेल बिगडा होगा।

५ जुलाई '४३

बापू का आज मौन है। उन्होंने आज टाइप-नकल समाप्त की। मैंने परिशिष्ट की और अन्य चीजो की सूची तैयार की।

बापू आजकल अखबार देखने का भी समय नहीं निकालते। आज 'डान' दो-तीन दिन के बाद आया। मैंने हसते-हसते कहा, "बापू, अब तो दूसरा काम छोडिए। आपके मित्र का अखबार आया है।" बापू ने कहा कि उन्होंने सबसे पहले आते ही 'डान'

पढकर उसमें निशान भी लगा दिये थे। ऐसे ही दो-चार दिन पहले मैंने हमी में कहा था, "सब अखबार छोडकर--काम छोडकर--आप 'डान' पढने का समय निकाल लेते हैं। जिन्ना साहब के आप बहुत भक्त बनते जा रहे हैं।" बापू ने कहा, "भक्त के अधीन हू।" मैंने कहा, "जिन्ना साहब यह बात सुनेंगे तो नाराज हो जावेंगे।" हसी चलती रही।

शाम को मनु को बुखार आ गया। खेलने में भाई, मैं और डाक्टर गिल्डर थे। वर्षा आई, सो बन्द करना पडा।

६ जुलाई '४३

भाई मीराबहन के साथ टाइप-नकल मिला रहे थे। बहुत धीरे काम चल रहा था। बापू ने कहा कि यह काम पूरा होना ही चाहिए। शाम तक भाई ने पैंतीस पन्ने पूरे कर लिये थे। रात को मैं भी भाई के साथ पूरा कराने वाली थी, मगर मनु को फिर बुखार आ गया। उसे दवा-पानी देना था और बा की मालिश करनी थी, इसलिए बापू ने मुझे छुट्टी दी। गुसलखाने से आकर वे खुद भाई के साथ बैठ गए। दस बजे के बाद अपने दूसरे काम पूरे करके मैंने उनकी जगह ली और उन्हें सोने को भेजा। मैंने और भाई ने ग्यारह बजे के बाद सब पूरा किया। सोने को बारह बजे।

आज भी वर्षा थी। वर्षा में नीचे खेलना बन्द हो जाता है। ऊपर खेलने में पूरी कसरत नहीं होती।

मनु को बुखार था। . से रोटी बनाने को कहा। उसने नहीं बनाई और कैदी रसोइये को भी बनाने से मना कर दिया। पूछा तो बोला, "मैं खुद भी बनाना नहीं जानता हू और कैदी भी नहीं जानता।" पहले दोनो कह चुके थे कि रोटी बनाना जानते हैं। मैंने उसे ऐसे झूठ बोलने से डाटा। इस पर उसके सामने मुझसे नाराज होने लगीं। मैंने बापू से कहा, "ऐसे कैसे काम चलाया जा सकता है। मुझे आप रसोई-घर से मुक्ति दिलवाइये।" उन्होंने कहा, " को समझावेंगे।" मैंने कटेली साहब को सिपाही की बात बताई। उन्होंने उसे बदल दिया।

७ जुलाई '४३

आज खूब वर्षा हुई। मुझे रसोई का काम ज्यादा करना पडा, इसलिए दोपहर में रामायण नही पढ पाई। दूसरे काम में समय चला गया। मनु को थोडा-सा बुखार आज भी था, सो बा का काम मुझे ही करना है।

शाम को बाइबिल पढने के समय बीस मिनट तक बापू बातें सुनाते रहे।

८ जुलाई '४३

कल शाम को मीराबहन कह रही थीं कि उनके हाथ को आराम पहुचा है, मगर आज सुबह उन्होंने बताया कि कुछ भी फायदा नहीं, अस्पताल जाना चाहिए। जेल वालो को उन्हें अस्पताल भेजना ही चाहिए। मुझ से पूछने लगीं, "अस्पताल में क्या-क्या करेंगे?" मैंने बताने का प्रयत्न किया। कहने लगीं, "सुई तो मैं

कभी नहीं लगवाऊँगी।" मैंने कहा, "तब तो आपको अस्पताल जाना ही नही चाहिए।" बोली, "अभी यह बात क्यो कहती हो ? मैं एक बार जाऊ तो सही। पीछे देखेंगे, क्या होता है। डाक्टर मेरा अस्पताल जाना आवश्यक न मानें तो भी मैं जो आवश्यक समझती हू, वह कह तो सकती हू न!" बाद में उन्होने भडारी को पत्र लिखा। उसे बापू को सुनाने लगी कि इतने में कलेक्टर आ गया और मीराबहन के हाथ के विषय में पूछने लगा। उन्होंने बताया कि तकलीफ कम नही होती। अस्पताल जाने की इच्छा प्रकट की। वह कहने लगा, "हा, वह हो सकेगा।" इसलिए मीराबहन ने अपने पत्र में कलेक्टर के मत का भी जिक्र कर दिया।

आज भी वर्षा हुई। शाम को ऊपर 'रिग' खेले। मनु को बुखार नही है, मगर अभी उसे आराम करना चाहिए, इसलिए मैंने उसे काम नही करने दिया।

बापू प्रार्थना के बाद भाई से बाते करते रहे।

९ जुलाई '४३,

रात भर वर्षा हुई। आज दिन में भी होती रही। सुबह खासी वर्षा में बापू और मैं महादेवभाई की समाधि पर फूल चढाने गए। वर्ष पूरा होने को आया है। किसको कल्पना थी कि समय इस तरह से जावेगा। पिछले साल इन दिनो मैं भाई की बीमारी के कारण सेवाग्राम गई थी। महादेवभाई आखिरी रोज मुझे तागे में बैठने के समय कहने आए, "तुम जल्दी आ जाना। मुझे बापू की चिता रहती है। आनदमयीदेवी ने कहा है कि इस वर्ष बापू के जीवन को खतरा है।" उनका प्रेम और भक्ति अद्भुत थे। खतरा किसके जीवन को था, वह हम आज जानते हैं। कौन कह सकता है कि बाबर की तरह उन्होंने बापू का खतरा अपने ऊपर नही ले लिया ? महादेवभाई तो गए, लेकिन उनके बिना अब बापू के आसपास के जीवन में वसत ऋतु देखने में नही आती। सबके मन मुरझा गए हैं। महादेवभाई का मृदुल हास्य कठिन-से-कठिन समय के बोझ को भी हल्का कर देता था। अब हम वह कहा से ला सकते हैं ?

मनु को बुखार नही, मगर आज भी उसे आराम करने दिया है। भाई की तबीयत अच्छी नही। मन अस्वस्थ है। उनका स्वभाव इतना कोमल है कि जरा-सी बात का उन पर गहरा असर हो जाता है।

फजलुल हक का निवेदन और गवर्नर को गया हुआ उसका पत्र अखबार में पढा। पत्र बहुत अच्छा था।

काफी सर्दी हो गई है। वर्षा बन्द हो नही होती। मीराबहन ने भडारी से उन्हें अस्पताल ले जाने को कहा था। उन्होंने आज सिविल सर्जन को भेजा। उन्होंने मालिश करके रोग की गाठ को तोडने की सलाह दी और कहा कि अस्पताल जाने को कोई आवश्यकता नही है।

१० जुलाई '४३

कल शाम को मीराबहन बापू से पूछ रही थी कि आजाद हो जाने के पश्चात्

हिन्दुस्तान की जमीन का बटवारा कैसे किया जायगा ? बापू ने उन्हे स्काचमन का किस्सा सुनाया --"वह जहाज के कप्तान से मिलने गया। जवाब मिला कि कप्तान नहीं है। वह उठा और यह कहकर चल दिया--"कप्तान से कह देना कि मालिको में से एक मिलने आया था।" जहाज बनाने का उद्यम राष्ट्र का है, इसलिए राष्ट्र का हरएक स्त्री-पुरुष मालिको में से एक है। यह उसकी दलील थी। यहा जमीन लोगो की है और हरएक उसका मालिक है। सम्पत्ति राज्य की होगी। दरअसल जो हल चलावेगा, उसकी जमीन होगी। शासनतत्र हर तरह उसकी मदद करेगा। अच्छा बीज देगा और जरूरी तालीम वगैरा देगा। दक्षिण अफ्रीका में आज यह सब हो रहा है। वहा राज्य तुम्हारे खेत में बाड लगा देता है, कुआ खोद देता है और हर तरह की मदद बिना नफा लिये पहुचाता है। मुनाफाखोरी नही होती, इसलिए दाम बहुत कम पडते है। शर्त एक ही होगी कि जो जमीन लेता है, वह मेहनत करके उपज बढावे, निकम्मा या आलसी बनकर न बैठा रहे।"

मीराबहन ने पूछा, "क्या आप ऐसी कोई परिस्थिति सोच सकते है जबकि किसान को निकाला जा सकता है ?" बापू ने कहा, "नही, अगर वह जमीन को फिजूल न पडा रहने दे तो।" फिर उन्होने बताया कि कैसे हेनरी जार्ज ने यह सिद्धान्त चलाया था कि जमीन के सिवा दूसरी किसी चीज पर कर न लगाओ। जमीन को ठीक तरह काम में लाया जाय तो वह इतनी उपज दे सकती है कि सबके लिए काफी हो।

बापू बाद में सरक्षण (ट्रस्टीशिप) के सिद्धात पर आ गए। बोले, "आजाद हिन्द में जमीन नए सिरे से तकसीम होगी। जमींदारो से हम ट्रस्टी बनने को कहेगे और सुझाएगे कि वे मन से मालिकपन की भावना निकाल दें। तब उन्हे खासा कमीशन मिलेगा।

"मगर उनको अपनी शक्ति और ज्ञान का उपयोग जनता के लिए करना होगा। मेरे सामने जमनालालजी की मिसाल है। उनका दान लाखो का था। अगर मैं उन्हे प्रोत्साहन देता तो वे सब कुछ दे डालते। लेकिन मैं नही चाहता था कि वे अपनी सामर्थ्य से बढकर कुछ करे। घनश्यामदास बिडला भी उस आदर्श पर अमल करने की पूरी कोशिश कर रहा है, लोग भले उसके विरुद्ध कुछ भी कहे। आजाद हिंद में कानून बनेंगे और अगर कोई ट्रस्टी न बनना चाहे तो उसकी जमीन ले ली जायगी और उसे योग्य हरजाना भर ही दिया जायगा। जो वह मागेगा सो नही मिल सकेगा।

"गोलमेज परिषद् में सर तेजबहादुर सप्रू ने मुझसे पूछा, "तो क्या लोगो की जागीरो की जाच-पडताल करेगे ?" मैंने कहा, "हा।" इतने से ही मैंने अनेक दुश्मन खडे कर लिये। मगर हमें यह सब करना ही पडेगा। हमें देखना होगा कि कोई व्यक्ति जमींदार बना कैसे ? अगर उसका पिछला चलन अच्छा होगा तो उसे हरजाना देंगे।"

मीराबहन ने पूछा, "क्या इसी तरह निजी (प्राइवेट) व्यापार और निजी पूजी भी उडा देंगे ?" बापू ने कहा, "नहीं, निजी पूजी का उपयोग होना ही चाहिए, नहीं तो

हम प्रगति नहीं कर सकते, मगर व्यापारियो को अपने कर्मचारियों को मुनासिब तनख्वाह देनी होगी, बुढापे और बीमारी में उनकी सम्भाल का प्रवन्ध करना होगा और उनको रहने योग्य मकान भी देना होगा ।"

आज डाक्टर शाह आए। मीराबहन की मालिश की, पर उसके बाद भी दर्द कुछ ही कम हुआ ।

बापू ने दिन में दो बार कातना शुरू किया है । एक समय मैंने उन्हे 'लाइट आव एशिया' पढकर सुनाई और एक दफा बाइबिल की साहित्यिक भूमिका वाला भाग भी सुनाया ।

मनु ठीक है । आज शाम को घूमने भी निकली । शाम को बडी वर्षा हो रही थी । महादेवभाई की समाधि पर फूल चढाने अकेली मैं ही गई ।

११ जुलाई '४३

बापू द्वारा दिये गए टॉटेनहम वाले पैम्फलेट के उत्तर की आखिरी नकल को पहले प्रूफ के साथ मिलाने में मैंने काफी समय दिया। यह काम कल रात से चल रहा था । पाच-छ पन्ने करते हो बत्तिया बुझ गई । कागज सम्भालकर सोने को गई तो बत्तिया फिर जल उठी, मगर फिर तो सो ही गई ।

आज सुबह कटेली को पकडा । दोपहर को भी उनसे सहायता ली और जितने टाइप किये पन्ने तैयार थे, उतने मिला डाले ।

रात को अखबार पढे । दो दिन के इकट्ठे हो गए थे । भाई के साथ कुछ समय बाते करती रही ।

आज मनु को नही सिखा सकी । दोपहर को 'लाइट आव एशिया' भी नहीं पढ सकी । शाम को बापू के साथ मैंने बाइबिल पढी । बापू राजाजी व मणिलालभाई की बातें करते रहे। बा को मणिलालभाई की बडी चिंता हो रही है ।

१२ जुलाई '४३

आज आकाश कुछ खुला है । 'सरकारी बाइबिल' का उत्तर टाइप करना डा० गिल्डर कल पूरा करेंगे । परसो या नरसो वह चला जायगा । बहुत बडा बोझ सिर से उतरेगा । मजाक चल रहा है कि उस दिन को किस तरह मनाना चाहिए ।

१३ जुलाई '४३

आज टाइप करने का काम पूरा हुआ । डा० गिल्डर, मैं और भाई—तीनों ने बैठकर प्रूफ सुधारे और दूसरी नकलो में वही सशोधन किये । तीन पन्ने फिर से टाइप करने को निकाले । डा० साहब ने एक तो रात में टाइप कर डाला और दो सुबह करेंगे । थोडा-सा परिशिष्ट का काम भी है । पहले यह निश्चय हुआ था कि यह सब टाइप का काम भाई करे, मगर बाद में तय हुआ कि डा० गिल्डर भी कुछ भाग टाइप करे, क्योंकि दो जगह आधा-आधा पन्ना उनका टाइप किया हुआ था । उसीके नीचे दूसरा टाइप

करना था। दोनो टाइपराइटरो में थोडा-थोडा फरक है, इसलिए ऐसा लगा कि डा० साहब करे तो अच्छा होगा। बापू ने कल दो-ढाई बजे उन सबको भेजने का काम मुझे सौंपा।

शाम को भाई की तबीयत अच्छी न थी।

१४ जुलाई '४३

सुबह बापू ने सब परिशिष्टो का एक सूचीपत्र तैयार करने को डा० गिल्डर से कहा। वे बोले, "इस सूचीपत्र के सिवा बाकी सब दो-ढाई बजे तक आपको मिल सकेगा। सूचीपत्र भी शाम को मिलेगा।" दोपहर को बापू ने सूचीपत्र टाइप करने का काम भाई को सौंपा। डा० गिल्डर ने कहा, "मेरी मशीन पर ही कर लो। मै थोडा आराम कर लू।" भाई उनकी मशीन पर टाइप करने बैठे। एक बजे से लेकर चार बजे तक आधा काम कर पाए। खयाल था कि आधे घटे का काम है, मगर इस मशीन से वे वाकिफ नहीं थे। मशीन पुरानी है और कई जगह धोखा दे जाती है। उधर डा० गिल्डर का काम भी रुका पडा था। आखिर उन्होने भाई को सलाह दी कि वे अपनी ही मशीन पर सब काम करे, क्योकि इस नकल में कुछ दोष भी आ गया था। भाई ने अपनी मशीन पर एक घटे से भी कम अर्से में सब कर लिया। डा० गिल्डर ने भी अपना काम पूरा किया। मुझे कुछ आखिरी जरूरी देखभाल करनी थी। पन्नो को नम्बर देने आदि का काम मैने किया। करीब साढे सात बजे शाम को बापू को सब कुछ दिया। सचमुच सिर से भारी बोझ उतरा। डा० गिल्डर तो एक हफ्ते से दिन भर टाइप में ही लगे रहते थे, यहा तक कि दोपहर का सोना और कैरम खेलना भी छोड रखा था।

डा० गिल्डर ने टाइप करना कैसे सीखा, उसका इतिहास बडा रोचक है। देश में पढाई पूरी करके वे एम डी करने विलायत गए और वहा पाच साल पढे। वहीं पर उन्हे बार-बार आने वाला ज्वर (रिलैप्सिग फीवर) हुआ। उसके बाद एक आख में मोतिया-बिंद हो गया। मोतियाबिंद का कारण किसीको समझ में नहीं आया। डर था कि कहीं दूसरी आख में भी न उतर आवे, इसलिए उन्होने टाइप करना सीखा, ताकि आख न रहे तो मरीज को नुसखा टाइप कर दिया करेगे। ईश्वर-कृपा से दूसरी आख बची रही। बाद में पता चला कि कभी-कभी 'रिलैप्सिग फीवर' के परिणाम-स्वरूप मोतियाबिंद हो जाता है।

बापू को टाइप-नकल सौंपकर हम खेलने गए। आज सूखा दिन था। नीचे खेल सकते थे। बापू ने हमारी खातिर प्रार्थना पन्द्रह मिनट देरी से की। घटी इसलिए नहीं बजाई कि हम खेल पूरा करके आवें।

कल कटेली साहब अपने घर जा रहे है। बापू ने उनके बच्चो के लिए कुछ मिठाई भेजने को कहा था। शाम को मैने बेसन की मिठाई और चिवडा बनाया। एक-एक डिब्बा भरकर उनको दे दिया। एक-एक यहा के लिए रखा।

बापू ने रात को टाइप-नकल देखी और दस्तखत कर दिये। एकाध सुधार करना था,

वह मुझसे कराया। सवा दस बजे सोने को गए। मुझे भी आज कैरम खलने का शौक हुआ। बा खेलकर आ गई थी। टाइप-नकल को पच करके बाधना, बादामी कागज का बड़ा लिफाफा बनाकर उसमें उसे डालना, यह काम मीराबहन ने लिया था। सब सामान उन्हे देने गई तो डा० गिल्डर, कटेली और मीराबहन खेल रहे थे। मै भी उनके साथ बैठ गई। दस मिनट खेली। पीछे आकर सोने की तैयारी की। ग्यारह बजे आई। मीराबहन ने पौने ग्यारह के बाद अपना काम शुरू किया। कौन जाने कब सोई होगी। भाई रात को साढे बारह बजे सोए। पढते रहे थे।

१५ जुलाई '४३

सुबह मीराबहन बापू के उत्तर का लिफाफा ठीक करके ले आई। बापू ने भाई को लिफाफे पर पता लिखकर कटेली साहब को दे देने के लिए कहा। करीब नौ बजे वह लिफाफा कटेली साहब के हाथो में गया। जाने के बाद पता चला कि सूचीपत्र को नम्बर देने में दो छोटी-सी भूले रह गई थीं, पर अब वे सुधारी नही जा सकतीं। वे इतनी महत्त्व की भी नहीं थी कि अलग पत्र लिखकर सुधारी जावे। 'वर्धा की इटरव्यू' की तारीख और 'अमेरिकन ओपिनियन' में एक छोटा उप शीर्षक देना भूल गये थे। ऐसा लगता था कि ये दोनो भूले एक ही जगह है, मगर वे थी अलग-अलग।

कटेली दोपहर को पाच दिन की छुट्टी पर गए। उन्हे एक मुकदमे में गवाही देने जाना था और उनकी मा भी बीमार थी। उनसे मिलना था। दोनो काम हो जावेगे। करीब एक साल के बाद वे जेल से बाहर निकले।

सुबह आकाश खुला था। बडमिन्टन खेल सके। दोपहर पानी आया। शाम को नीचे का कोर्ट गीला था। ऊपर खेलना पडा।

डा० गिल्डर आज दोपहर में खूब सोए। पाच बजे जब चाय पीने आए तब हम लोग हसने लगे कि परीक्षा पूरी करने के बाद जैसे दिमाग हल्का महसूस होता है और विद्यार्थी खूब सोते है, वैसे ही डा० गिल्डर भी सोए है।

१६ जुलाई '४३

रात को मेरे सिर में सख्त दर्द रहा। बापू 'एना किग्सफोर्ड' की बात सुनाने लगे। उसने खुराक पर एक किताब लिखी है। कहने लगे, "वह बीमार रहा करती थी। उसे लगा कि दवा से वह अच्छी नहीं होगी, इसलिए नई शोध की। तुझे भी ऐसा करना चाहिए।"

रात को बापू ने विचार किया कि 'बापू ने आठ अगस्त वाला प्रस्ताव वापस ले लिया है', इस अफवाह के बारे में उन्हें सरकार को लिखना चाहिए। सुबह ही लिखा कि सरकार को प्रकट कर देना चाहिए कि यह अफवाह गलत है। आगे लिखा, "मेरे पास वह प्रस्ताव वापस लेने की सत्ता ही नही और ऐसा करने की मेरी इच्छा भी नहीं।" डा० गिल्डर ने इसे टाइप कर दिया। डा० साहब आए थे। उनके हाथ यह पत्र भेजा। वे रोज आते है, लेकिन इन पाच दिनो से हमारा सरदार रघुनाथ जमादार है।

माली का आना वन्द कर दिया, इसलिए वगीचा सूना पड़ा है। रघुनाथ माली से सब पूछ आया हूँ। उसने कल से कैदियो (कन्विक्टस) की मदद से फूल इत्यादि लगाना शुरू किया है। कहता था कि पाच दिन में सब पूरा हो जायगा। शकर वार्डर वगीचे का काम जानता है, लेकिन वह दो-चार दिन में छूटने वाला है। उसके जाने से पहले यह काम पूरा करने का रघुनाथ का प्रयत्न है।

मैंने आज फिर थोडी ड्राइग शुरू की है।

: ५२ :

जेलखाना नहीं, सुधार-गृह

१७ जुलाई '४३

आधी रात से मेरे सिर का दर्द शुरू हो गया था, इसलिए सुबह उठते ही जुलाब लिया। डा० गिल्डर की सलाह से कुनीन भी ली। शाम तक तो ठीक नहीं हुआ, मगर सोने पर ठीक हो गया।

श्री कटेली की गैरहाजिरी में कैरम की चौथी जगह पूरी करने के लिए मुझे बापू ने हुक्म दिया है। रात को पौन घटा उसमें जाता है। रात का पढना वन्द है।

बापू ने फिर से रामायण के चुने-चुने हिस्सो पर निशान लगाने शुरू किये। एक सक्षिप्त रामायण निकालने का उनका विचार है। भाई उसका गुजराती अनुवाद कर लेगे तो वह एक अच्छी चीज वन जावेगी। प्रार्थना के वाद रात का समय बापू इस काम में लगाते हैं। दिन में दो वार करीव पौन-पौन घटा कातते है, अखवार पढते हैं और खाली समय में भूगोल की किताव पढते हैं। मनु के साथ गीताजी, व्याकरण और ज्यामिति करते है, मेरे साथ वाइविल, रामायण (वाल्मीकिकृत) और सस्कृत व्याकरण। मैंने उन्हे 'लाइट आव एशिया' सुनाना आरम्भ किया है। आजकल कोई-न-कोई किताब मुझसे सुना करते है।

१८ जुलाई '४३

सुबह भडारी और शाह आए। हमारा विजली का चूल्हा भी वे ठीक करवा रहे हैं।

आज बापू की स्वास्थ्य वाली किताव के अग्रेजी अनुवाद का वाकी हिस्सा पूरा करना आरभ किया। भाई ने रामायण का अनुवाद शुरू किया।

शाम को खेलने के वाद भाई की छाती में दर्द हो गया। तीन-चार वार ऐसे ही हो चुका है। अव उनका खेलना वन्द करने का हमारा विचार है।

१९ जुलाई '४३

बापू का मौन है। मैंने छुट्टी मनाई। दो वार पिंगपाँग खेला। मीराबहन ने भी

खेलना शुरू किया है। भाई और मीराबहन शाम को फिर खले। मैंने शाम को थोडी ड्राइग की। रात को कैरम से छुट्टी मिली। बा की तबीयत अच्छी नहीं थी। मीराबहन और डा० साहब अकेले खेले।

२० जुलाई '४३

शाम को मीराबहन के हाथ में दर्द रहा। दर्द की दवा ('एस्पिरिन') खाकर सो गईं। खाना नही खाया और रात को कैरम भी नहीं खेलीं। दस बजे बापू के पास आकर थोडी देर बैठीं।

डा० गिल्डर ने फ्रेंच भाषा की एक डाक्टरी की किताब मुझे पढकर सुनाना शुरू किया है। आज बीस मिनट तक सुनाई। भाषा कठिन लगती है। धीरे-धीरे पढें तो समझना आसान है, खासकर डाक्टरी की किताब।

२१ जुलाई '४३

सुबह हम लोग प्रार्थना पूरी करके सोने गए तो बरामदे में से सिपाहियो को जाते देखा। मैंने कहा, "श्री कटेली आज आने वाले है, इसलिए ये लोग डर के मारे जल्दी उठ रहे है, नही तो कटेली साहब की गैरहाजिरी में सात बजे उठते थे। चाय के समय पता चला कि प्रार्थना चल रही थी तब कटेली साहब आ गए थे। उनका सामान बाद में रघुनाथ लाया। मिठाई वगैरा काफी लाए है, दस पौण्ड बिस्कुट भी।

शाम को हम खूब खेले। कोर्ट सूखा था। बाहर खेल सके। डा० साहब को खाने के समय आज श्री कटेली का साथ मिला। कटेली और डाक्टर साहब दोनो मासाहारी है, साथ खाना खाते है।

२२ जुलाई '४३

सुबह बेडमिन्टन खेलने लगे तो वर्षा आ गई। वापस आकर पिंगपौंग खेले। कल तो मीराबहन भी खूब खेली थी, मगर बाद में हाथ दुखा सो उन्होंने खेलना बन्द कर दिया है।

दिन में आकाश साफ हो गया है।

बापू की पुस्तक का अनुवाद चल रहा है। इस महीने के अत तक पूरा नहीं हो सकेगा।

बापू अब रात को भाई का रामायण वाला गुजराती अनुवाद सुधारते है, इसलिए उन्हे दस बज जाते है।

२३ जुलाई '४३

डा० शाह आए तो हिरण के बारे में हमने फिर पूछा। मुझे अफसोस है कि बेचारे को यहा से निकलवाकर हमने उसे और भी खराब हालत में डाल दिया।

मालिश में आज डा० गिल्डर नही आए। उनकी उगली में सूजन है।

मीराबहन की एक टाग में भी दर्द शुरू हुआ है। बा को कल रात खूब खासी आई और छाती वगैरा दुखी। उनके साथ मै कुछ समय तक जागी। परिणाम-स्वरूप सुबह

प्रार्थना में न उठ पाई। बुरा लगा। बिजली का चूल्हा फिर बिगड गया है, जिससे मीरा-बहन को बडी कठिनाई होती है।

२४ जुलाई '४३

डा० गिल्डर को जाडा लगकर बुखार आ गया। उनके शरीर का दर्द भी उंगली पकने के कारण नहीं, बल्कि मलेरिया के कारण ही होगा।

श्री कटेली पिंगपोंग की मेज को खाने के कमरे में ले आए है, क्योंकि वहा रोशनी अच्छी है।

२५ जुलाई '४३

बापू की मालिश करने आज मैं गई, इसलिए अनुवाद का समय उसमें गया। आज डा० साहब के पास फ्रेंच सीखने भी नहीं गई, क्योंकि उन्हे कल बुखार था। आज वे आराम कर रहे थे।

आज भडारी नहीं आए। कर्नल शाह के हाथ बिजली का चूल्हा भेजा है। इसकी मरम्मत न हो सके तो नया लाने को बापू ने उनसे कहला दिया है।

बापू और भाई अखबारो की कतरनें निकालने का काम करते रहे। कल रात ग्यारह बजे सोने गए, इससे खून का दबाव बढ रहा है।

२६ जुलाई '४३

बापू का आज मौन था। कल रात को बापू जल्दी बिस्तरे पर चले गए थे, इसलिए आज सुबह खून का दबाव कुछ कम रहा— १७६।१०४ के लगभग।

डा० साहब का बुखार उतर गया है। मनु को आज फिर बुखार आ गया है।

मीराबहन के पास ड्राइंग सीखने गई।

२७ जुलाई '४३

बापू का खून का दबाव आज बहुत ज्यादा है—२०६।११६। एक कारण यह है कि सुबह प्रार्थना के बाद वे सोए नहीं।

उन्होंने 'थियोलोजी इन इंग्लिश पोएट्स' पढ ली है। इसे पढकर उनके मनमें विचार उठा है—"जिन लोगो में इस प्रकार के साधु पैदा हुए है, उन्हीं में से आज के सरकारी राजनीतिज्ञो जैसे लोग कैसे निकल सके है ? इन लोगो के मन में भी कहीं-न-कहीं भलाई का अंश होगा ही।" इसलिए बापू को लगा कि लिनलिथगो को एक छोटा-सा पत्र अपना हार्दिक दु ख बताने के लिए लिखना ही चाहिए। कहते थे कि न सो सकने का कारण ये विचार न थे। उन्हें दूसरा काम करना था। कतरनें निकालने में भाई की मदद करना स्वीकार करने के बाद उन्हे वही काम करना चाहिए था। इसलिए वे विचार करते रहे कि कतरनो की अनुक्रमणिका (क्रॉस-इन्डेक्स) कैसी बनानी चाहिए। आश्चर्य है कि बापू छोटी-से-छोटी चीज भी उठाते है तो उसमें अपने प्राण उडेल देते है।

श्री कटेली जब से वापस आए है, बहुत उदास रहते है। अब वे इस जेल मे उकता गए है।

दिन में थोडी-थोडी वर्षा होती रही । बापू ने कतरनो की अनुक्रमणिका बनाई । खून का दबाव दिन भर बढा ही रहा ।

मनु को आज फिर बुखार आया है ।

माताजी आदि के पत्र मिले ।

२८ जुलाई '४३

रसोईघर के सिपाहियो और कैदियो को बुखार आ गया, इसलिए मुझे रसोई में काफी समय देना पडा ।

मनु को बुखार नहीं है । डा० साहब के पास थोडी-सी फ्रेंच पढी, थोडा समय डाक्टरी पत्र-पत्रिकाओ के पढने में लगाया । मालूम नहीं क्यो, यहा पढने के लिए इतना कम समय मिलता है ।

मीराबहन की तबीयत अच्छी नहीं ।

२९ जुलाई '४३

सुबह आकाश खुला । दिन में थोडी वर्षा हुई ।

मनु, मीराबहन और मैं---तीनो सलवार और कुर्ता पहनने लगे हैं । यह पजाबी पोशाक यहा खूब चली है । बापू को भी पसद है । मैंने एक दिन सलवार और कुर्ता पहना तो कहने लगे, "बस यही पोशाक पहनो ।" फिर मनु को भी वही पोशाक पहनने को उन्होंने कहा । मेरे कपडे उसके ठीक आ गए । यहा रोज घर में धो लेते हैं । थोडे कपडो से काम चल जाता है ।

श्री कटेली रात को उपवास करते हैं । उनके घुटने में और हाथ में दर्द है, इसीलिए उन्हे ऐसा करना ठीक लगता है ।

३० जुलाई '४३

बापू खूब काम करते हैं । कतरनें निकालना, कातना, मनु को सिखाना, मेरे साथ रामायण और बाइबिल पढना आदि । अब उन्होंने लैन्सबरी का जीवन-चरित पढना शुरू किया है और सम्भवत जल्दी पूरा कर डालेंगे ।

रात को बापू जल्दी सो जाते हैं, इसलिए खून का दबाव कम हो रहा है। बाहर होते तो रक्त-चाप या थकान कितनी भी होती, काम किये बिना न चलता।

३१ जुलाई '४३

बापू ने ४८ दिन तक सरकारी आरोपो का जवाब तैयार करने में लगे रहने के कारण काता नहीं था । ८ जुलाई से कातना शुरू किया तो रोज दो बार कातने लगे । कातने में खूब समय देते थे । सब दिनो का कातना, ७५ तार रोज के हिसाब से पूरा करना और ३१ जुलाई तक रोज दो बार कातना चाहते थे । आज वह सब हिसाब पूरा हुआ । तार हिसाब से अधिक निकले ।

शकरन् का पत्र आया । दवाखाने की रिपोर्ट भेजी थी ।

१ अगस्त '४३

आज से बापू की मालिश करना मेरा काम और स्नान में उनकी मदद करना भाई का काम तय हुआ है, सो साढे आठ से दस बजे तक भाई और साढे नौ से सवा ग्यारह बजे तक मैं काम कर सकगी।

सुबह घूमते समय जेल की बातें होने लगी। हमारे यहा एक पद्रह-सोलह वर्ष का कैदी लडका है। उसने थोडा-सा अनाज चुराया था। इस भुखमरी में कौन नहीं चुरा सकता? उसके लिए उसे साल या दो साल की सजा मिली है। सबके साथ वह भी शायद पक्का चोर होकर निकलेगा। भाई कह रहे थे, "यह क्रम बदलना चाहिए। कैदियो को काम का वेतन भी मिलना चाहिए। अमेरिका में तो न जाने कितना रुपया अपनी ही कमाई का लेकर कैदी जेल से निकलते हैं।"

बापू कहने लगे, "मेरा मत तो यह है कि जेलखाना होना ही नही चाहिए। सब सुधार-गृह होने चाहिए। इसी तरह सजा की मुद्दत भी नही होनी चाहिए। जब कैदी सुधर जावे और प्रमाण-पत्र प्राप्त कर ले तभी छूट जावे। आज जो चलता है, सब करुणाजनक है।"

अमेरिका की जेलो में दिल बहलाने के कैसे-कैसे साधन हैं, भाई इस बारे में बताते रहे। कोई जेल में बहुत तूफान मचाए तो उसे जेल के सामाजिक कार्यक्रम में से तथा दिल-बहलाव की चीजो में से निकाल देते हैं। यह बहुत बडी सजा हो जाती है, लेकिन इसकी बहुत कम आवश्यकता पडती है।

आज बापू का रक्त-चाप आदर्श निकला--१६६। ९८। उन्होने चार रात और पाच रोज से जल्दी सोना शुरू किया है। इससे अब सब ठीक हो गया है। कह रहे थे, "रात को काम न कर सकना मुझे चुभता है, मगर कोई चारा नही है।"

रात को भाई कहने लगे, "८ अगस्त को कुछ करना चाहिए।" मैंने कहा, "१५ अगस्त का दिन मनाना चाहिए, जिसमें कैदियो को खिलाना, उपवास और गीता-पारायण का क्रम हो।"

भाई ने कहा, "तबतक गीता कण्ठ कर लो।"

२ अगस्त '४३

बापू का मौन है। सरकार का पत्र आया है कि वह ८ अगस्त के प्रस्ताव को वापस लेने सबधी अफवाह को रद्द करने की आवश्यकता नही समझती।

३ अगस्त '४३

इन दिनो कुछ खास घटना नही हुई। आठ तारीख की शाम को झण्डा-वन्दन और स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा पढने का कार्यक्रम तय हुआ है। बापू शायद प्रतिज्ञा में कुछ परिवर्तन करेंगे। उपवास करने का विचार था, मगर डा० गिल्डर से बापू उपवास नहीं कराना चाहते थे। अगर सब करेंगे तो वे भी करेंगे, इसलिए उपवास का विचार हमने छोड दिया है। पद्रह तारीख को हम उपवास करेंगे। डा० साहब न करें, ऐसी सलाह

उन्हें दी तो है, पर डर है कि वे मानेंगे नहीं।

बापू और भाई कतरनें निकालने के काम में जुटे है। बापू ने लैन्सबरी का जीवन-चरित पढ डाला और अब 'रेड वर्च्' पढ रहे हैं।

रूस के प्रति बापू के मन में मान बढा है। कहते थ, "अगर लडाई में कोई जीतने के लायक हैं तो रूस। रूस में सब कुछ लोगो का है, इसीलिए वे इतनी बहादुरी दिखा रहे हैं।"

७ अगस्त '४३

मीराबहन ने आज ऊपर जाने की सीढी के नीचे की जगह पर अगीठी रखकर खाना खाया। कहती थी, "इस वर्ष भर में पहली ही बार आराम से खा सकी हू।" उनका दर्द आज फिर ज्यादा है।

आज मैंने बाइबिल नहीं पढी। रामायण भी थोडी ही पढी।

भाई पृथ्वी का पत्र स्यालकोट जेल से आया है। वे वहा खूब बहादुरी से काम कर रहे हैं। अच्छा लगा। कनु का पत्र आया है। सरकार ने उसमें बडी काट-छाट की है।

: ५३ :

'हकूमत जाओ'-दिन की संवत्सरी

८ अगस्त '४३

सुबह डा० शाह और कर्नल भण्डारी आए। मीराबहन की नाक के पानी की परीक्षा करवाने का विचार किया है। 'हकूमत जाओ' दिन की पहली सवत्सरी है। गत वर्ष आज के दिन शाम को मैं बबई पहुची थी। उस रोज किसीको खयाल भी न था कि क्या-क्या घटनाए इतने समय में होने वाली है।

दोपहर को बापू, भाई, डा० गिल्डर, मनु और मैं— सबने ढाई से साढे तीन बजे तक काता। मीराबहन और बा को बीमारी के कारण छुट्टी थी।

सुबह स्नान के बाद बापू ने स्वतन्त्रता-दिवस वाली प्रतिज्ञा को थोडा बदलकर 'हकूमत जाओ'-दिवस की प्रतिज्ञा तैयार की। शाम को झण्डा-वन्दन था, इसलिए चाय के बाद हम लोग झण्डा-वन्दन के लिए भजन तैयार करने बैठे। पौने सात बजे झण्डा-वन्दन किया। झण्डे का गीत गाकर डा० साहब ने झण्डा फहराया और प्रतिज्ञा पढ़ी। प्रतिज्ञा यह थी—

"हिन्दुस्तान सत्य और अहिसा के द्वारा हर मानी में पूरी आजादी हासिल करे— यह मेरा प्रत्यक्ष उद्देश्य है और वर्षो से रहा है और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए मैं आज 'हकूमत जाओ'-दिवस की पहली सवत्सरी के रोज प्रतिज्ञा करता हू कि जबतक

यह उद्देश्य पूरा न हो जाय, तवतक न मैं खुद चैन लूगा, न जिन पर मेरा असर है, उन्हे चैन लेने दूगा। मैं उस अदृष्ट दैवी शक्ति से, जिसे हम गॉड, अल्लाह, परमात्मा आदि परिचित नामो से पहचानते हैं, इस प्रतिज्ञा के पूरा करने में इमदाद मागता हू।"

पहले प्रतिज्ञा अग्रेजी में और हिन्दुस्तानी में डा० गिल्डर पढ गए। फिर हिन्दुस्तानी में हम सवने उनके पीछे-पीछे उसे दोहराया।

प्रतिज्ञा के वाद 'सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' गाया, फिर 'वदेमातरम्' गाकर समारोह पूर्ण किया। झडा गाडने की जगह लिपाई की थी और गोल चक्कर के किनारे-किनारे गमले रखे थे। सुन्दर दृश्य था।

रात में वापू ने पौने ६ वजे मौन लिया।

९ अगस्त '४३

सुवह यरवदा जेल की तरफ से जयजयकार की आवाजें आने लगी। हम याद कर रहे थे कि कैसे पिछले साल इस समय वापू को गिरफ्तार करके स्टेशन पर लाया गया था और कैसे वे यहा आए, आदि-आदि। स्वतत्रता का प्रण लेकर हम सव निकले थे—महादेवभाई उसे पूरा कर गए। कोई ऐसा दिन नहीं जाता, जव महादेवभाई का स्मरण वार-वार न हो आता हो।

दोपहर को भाई का कमरा साफ किया। उनसे कुछ कागज लिये हैं, उन्हे अभी ठीक करना है।

१० अगस्त '४३

अखवारो में, देश ने नवीं अगस्त को मनाने का कैसे प्रयत्न किया, इनकी खवर थी। इतनी सख्ती और इतनी भुखमरी होते हुए भी लोग इतना कर सके, यह हिम्मत की वात है। लेकिन देश की शक्ति अगर इतनी ही रह गई है तो हमें सचमुच यहा सात वर्ष और वैठना होगा।

आज और कल मैंने अनुवाद नही किया। कल भाई की जगह वापू के काम मैंने किये। आज मुझे रसोईघर का भी काम करना पडा। रसोईघर में चोरी होने लगी है, इसलिए वहा ताला लगाने का विचार हो रहा है।

११ अगस्त '४३

सुवह श्री कटेली ने खुद वैठकर अपने सामने खाने का सामान एक अल्मारी में रखवाकर ताला लगा दिया।

पन्द्रह तारीख को गीता-पारायण करने का विचार है। मैं, मनु और भाई आगे से वापू के पास शाम को चार वजे गीता-पाठ करेंगे। आज शाम को देर से वैठे, इसलिए पाच ही अध्याय हो सके। मनु तो पहले-दूसरे अध्याय के आगे नही चल सकी। भाई वैठे कातते रहे। पाठ में शामिल नही हुए।

१२ अगस्त '४३

मनु आज पाठ में नही आई। भाई के पास गीता का तीसरा अध्याय सीखती

रही। मैंने तीसरे से आठवें तक पाठ किया।

आज मुझे बुखार-सा लगता है। यहा मलेरिया बहुत सता रहा है।

१३ अगस्त '४३

रात में मुझे बुखार रहा। सुबह अण्डी के तेल का जुलाब लिया। शाम को १ से १८ अध्याय तक गीताजी का पाठ बापू के सामने किया।

: ५९ :

महादेवभाई की बरसी

१४ अगस्त '४३

आज महादेवभाई को गए ५२ हफ्ते पूरे हो गए।

कल कैदियो को खाना खिलाना है। दस बजे प्रार्थना में बैठेंगे। हम सब लोग उपवास करेंगे। मीराबहन को मैंने फूल सजाने में मदद देने को कहा है। 'व्हेन आई सर्वे दि वण्डरस क्रॉस' वे प्रार्थना में गाएगी। दोपहर को एक घटा सामूहिक कताई होगी।

बा की तबीयत अच्छी नहीं। दो-चार रोज से उनका शरीर दुखता है। मेरी तबीयत भी ढीली है। कल जब से जुलाब लिया है तब से उल्टी का-सा आभास होता है, इसलिए आज सिर्फ मोसम्बी खाई।

दोपहर दो बजे के करीब बा को दिल की धडकन का दौरा हुआ। चार बजे के करीब कुछ कम हुआ, पर छ बजे देखा कि फिर चल रहा था। शाम को मैंने डा० शाह से दिल की धडकन का चित्र लेने की मशीन लाने को कहा। वे कोयाजी के यहा गये। उनका सहायक शाम की छुट्टी पर गया हुआ था, वह मुश्किल से मिला। यहा बापू ने प्रार्थना जल्दी पूरी कराई। भजन और रामायण छोड दिये, ताकि डा० शाह वापस आवें तबतक सब लोग तैयार हो जाय। राह देख-देखकर बापू गुसलखाने गए। आकर सोये तब कहीं सवा नौ-साढे नौ बजे मशीन आई। दौरा अभी जारी था। चित्र लेकर वे लोग वापस गए। करीब ग्यारह बजे मैंने देखा कि दौरा बन्द हो गया था। रात को वह अच्छी तरह सोईं। मनु करीब बारह बजे तक बा के पास सोई, पीछे अपनी खाट पर गई। मैं सुबह प्रार्थना में नहीं उठी, क्योकि उस वक्त पसीना आकर बुखार उतर रहा था। कल शाम को चार बजे के लिए भजन का और ईशोपनिषद् का अभ्यास किया।

१५ अगस्त '४३

रात में पानी पड रहा था। डर था कि सवेरे भी ऐसे ही रहा तो समाधि की सजावट करने और प्रार्थना करते समय अडचन आवेगी, परन्तु तीन बजे बारिश थम गई।

भाई सुबह प्रार्थना के बाद नहीं सोए। मैंने भी न सोने का इरादा किया था, मगर मतली आती थी और चलने-फिरने से बढती थी, इसलिए सो गई। सात बजे उठी, तब तबीयत ठीक थी। आकाश में बादल घिरे थे। पिछले वर्ष भी महादेवभाई की मृत्यु के दिन ऐसा ही था। जल्दी से स्नानादि से छुट्टी पाई। बापू सवा सात बजे घूमने जाने वाले थे। मैं सात बजकर बीस मिनट पर पहुच गई और फूल इकट्ठे किये। पौने आठ बजे हम लोग महादेवभाई की समाधि पर गए। मीराबहन, डा० साहब, कटेली साहब, सब आए थे। मनु कुछ देर से आई। बा के पास थी। मीराबहन ने फूल सजाने में मदद की। बहुत सुन्दर सजावट हो गई। कल शाम को गोबर से लिपाई कराई थी। सब सुन्दर लगता था। डेलिया का एक फूल भी लहलहा रहा था मानो महादेवभाई की खातिर ही आज खिला हो। उसे ॐ के बीच लगाया। गीताजी का पाठ रोज की तरह किया। आज वातावरण में गम्भीरता अधिक थी।

महादेवभाई की समाधि (बा ने इसे 'महादेव का मदिर' नाम दिया है) से लौट कर भाई बापू को मालिश करने गए। मैंने कैदियो के लिए खिचडी, सब्जी और कढी का सामान दिया। पीछे सफाई पर लगी। जिस कमरे में महादेवभाई के शव को पिछले साल रखा था, वहा का सामान निकलवाया। कमरा जैसा उस समय था, वैसा ही कर दिया। कमरे में उसी तरह बीच में जेल की चद्दर बिछाई। मीराबहन ने जिस तरह जेल की चादरो के बीच पडे शव पर फूल सजाए थे, उसी तरह आज चद्दर पर सजाए। जहा महादेवभाई का सिर था—उनका मधुर मुख था, वहा फूलो का 'ॐ' बनाया, पावो के पास सलीब। सिर के पास एक कटोरे में सुगधि-सामग्री सुलगाकर रखी। शव के पास जहा बापू बैठे थे, वहीं उनकी गद्दी रखी, उनके पास ही बा की बैठक, सामने डा० साहब और कटेली साहब के लिए जगह। बीच में धूप इत्यादि के पास बापू के बाद मैं, फिर भाई, फिर मनु और उसके बाद मीराबहन अर्धचन्द्र-सा बनाकर बैठे। सामग्री में से खूब धुआ उठ रहा था। गले में जाता था, सो जरा पीछे हटाकर रखना पडा। जिधर शव के पाव थे, उधर मनु ने तुलसी की बत्ती जलाकर रखी। पौने दस बजे बापू स्नानघर से निकले। महादेवभाई के कमरे में आए। मैंने कहा, "बापू, देखिए, सिर की जगह 'ॐ' है, क्योकि महादेवभाई 'ॐ' में लीन हो गए न ?" बापू कहने लगे, "हा, वह तो है ही।" दीवारो पर, जो फर्नीचर रह गया था, उस पर और अलमारियो आदि पर मीराबहन ने सुन्दर फूल सजाए। सुलगती हुई सुगधि-सामग्री गत वर्ष शव के पास सुलगाई हुई सामग्री का शेष भाग थी।

डा० शाह आए और कहने लगे, "मुझे पता नहीं था कि आज महादेवभाई की सवत्सरी है।" बापू ने हसकर जवाब दिया, "कोई हर्ज नहीं। आप भले आए। आपको हम बाहर नहीं निकालेंगे।" डा० शाह कहने लगे, "हा, खास करके महादेवभाई की सवत्सरी से आप मुझे कैसे निकाल सकते है ?"

दस बजने में पाच मिनट पर घटी बजाने को बापू ने कहा। मैंने जाकर बजाई।

ठीक दस बजे प्रार्थना शुरू हुई। ईशोपनिषद् का पहला और आखिरी श्लोक, फिर 'वैष्णव जन' गाया गया। पीछे मीराबहन ने 'नारायण-नारायण' की रामधुन चलाई। भाई ने 'ओजअबिल्ला' और डा० साहब ने 'मजदा अन्मोई' चलाया। मीराबहन ने 'व्हेन आई सर्वे दि वण्डरस क्रॉस' गाया। इसके बाद मीराबहन, डा० साहब और कटेली साहब चले गए। हमने 'ॐ पार्थाय प्रतिबोधिताम्' से शुरू करके गीता-पारायण किया। साढे ग्यारह बजे सब समाप्त हुआ। बात-बात में बापू भाई को बताने लगे कि महादेव-भाई की मृत्यु के दिन कमरे की बिलकुल ऐसी ही सजावट थी। शव के स्थान पर आज फूलो की सेज बनाई थी। मुह की जगह 'ॐ' था, जो अब की तरह पीले कनेर के फूलो से घिरा हुआ था। पावो की जगह पर '†' बनाया था। मैंने पूछा, "महादेवभाई की आत्मा क्या इस समय यहा होगी ?" बापू बोले, "मुझे इसमें जरा भी शक नही।"

बापू को और बा को गरम पानी और शहद तथा मीराबहन को गरम दूध देकर मैं और मनु नीचे रसोई में कैदियो का खाना देखने गईं। कढी बननी बाकी थी। महादेव-भाई को कढी कितनी प्रिय थी ! अपने हाथ से बनाकर उन चार दिनो में उन्होने हमें खिलाई थी, इसलिए उनकी स्मृति में कैदियो के लिए कढी बनाई गई थी।

बापू के कहने से मैंने सोडा की गोली खाई और पानी पिया। इतनी सख्त मतली होने लगी कि मुझे खाट पर पडना पडा। साढे बारह बजे कैदियो का खाना तैयार किया। बापू ने खिचडी, मीराबहन ने कढी और डा० गिल्डर ने सब्जी बाटी। मुझे वहा से जाना पडा, क्योंकि बहुत मतली होती थी। बापू ने कैदियो को बताया कि आज उन्हे क्यों खिलाया जा रहा है। सब सामान सिपाहियो को भी भेजा गया। कटोरी में थोडा-सा मेरे चखने के लिए रखा।

बापू कैदियो को खिलाकर लौटे। मुझे लेटे देखा तो नाराज होने लगे और बोले कि मोसम्बी का थोडा रस लेना चाहिए था। पूरा उपवास नहीं करना चाहिए था। मैंने रस लिया। तो भी मतली बन्द नहीं हुई। साढे तीन बजे तक पडी रही, इसलिए कातने में शामिल नही हो सकी। मनु रात में कम सो सकी थी। वह भी साढे तीन बजे सोकर उठी। हम दोनो ने जाकर रसोईघर में काम करना शुरू किया। कैदियो के लिए हलुवा और चाय बनाई। जितना अच्छा हलुआ मैं बना सकती थी, बनाया। उसमें बादाम, इलायची, लौंग इत्यादि सब डाला। बापू के लिए सब्जी और दूसरो के लिए रोटी और सब्जी बनाई। साढे पाच बजे कैदियो को मीराबहन ने चाय बाटी और बापू ने हलुआ। पौने छ बजे बापू खाने बैठे और सवा छ पर दूसरे सब लोग। बापू ने हलुआ चखा। "मिठास कुछ ज्यादा थी, नही तो बहुत अच्छा बना था," ऐसा उन्होने कहा। कैदियो को बहुत अच्छा लगा।

खाने के बाद पिंगपौंग खेले। प्रार्थना के बाद बापू ने मौन लिया। रात को मैं और भाई दस बजे सो गए।

१६ अगस्त '४३

रात में एक बजे बापू ने जगाया। चन्द्रग्रहण पड रहा था। आधा चन्द्रमा ढका था। मनु को भी जगाकर दिखाया। डेढ बजे फिर देखा कि तीन-चौथाई चाद ढक गया है। पीछे सो गए। सुबह प्रार्थना के बाद मैं फिर सो गई। थकान थी। साढे छ बजे उठी। तैयार होकर घूमने गई। सवा आठ बज गए थे। आकर बा की मालिश आदि की। मनु का हाथ कट गया था, सो उसे छुट्टी दी। खाने के बाद डा० साहब के पास थोडा पढा। एक बजा। उन लोगो का खाना बाहर से आता है। डेढ बजे तक नहीं आया, इसलिए जो कुछ घर में था, वह मैंने उन्हें डेढ बजे खिलाया। दो बजे उनका खाना आया। वह शाम के लिए रखा।

कल एक सिपाही का हाथ गरम चाय पडने से जल गया था। सुबह उसके छाले को जरा काटकर पट्टी की थी। अभी उसे देखने जाती हू। सुना है, उसे बुखार आ गया। देखा तो उसे बुखार नहीं था, जख्म भी साफ था। मुझे डर लग रहा था कि जरा ऐसी-वैसी सफाई करके ही छाले काटे थे, कहीं जहरीला न हो गया हो।

बा को आज भी बहुत कमजोरी लगती है और शरीर दुखता है। मेरी तबीयत अभी अच्छी तरह सुधरी नहीं है। आज भाई की फाइलो का काम करना था, वह नहीं हो सका।

: ५५ :

अहिंसा का बाह्य चिन्ह—चर्खा

१७ अगस्त '४३

सुबह घूमते समय बापू बताने लगे—"पद्रह तारीख को तू कात नही सकी, वह मुझे चुभा। तबीयत ठीक नहीं थी, मगर तबीयत को ठीक रखना तेरा काम था। दृढ सकल्प रहता कि तबीयत ठीक रखकर कातना है तो वह होता ही। मेरी दृष्टि में चर्खा गीता का अमल है। गीता सिद्धात बताती है। गीता-पाठ का महत्त्व है, पर यदि मुझसे कोई पूछे कि गीता-पाठ करू या चर्खा कातू तो मैं कहूगा कि चर्खा कातो। जो समझपूर्वक कात सकता है, उसे गीता पढने की आवश्यकता नहीं। चर्खा कार्यरूप में परिणत अनासक्ति है।" मैंने पूछा, "यह कैसे? क्या आप यह कहना चाहते है कि गीताजी में कर्मयोग का जो पाठ है—'अनासक्त होकर, फल का विचार न करके, लोगो की हसी की परवा न करके कातना' यह उस पाठ पर अमल करना है?"

बापू कहने लगे, "ऐसा नहीं। कर्म का फल तो है ही, मगर जो फल प्रत्यक्ष नहीं है, उसके बारे में दृढ विश्वास रखना अनासक्ति है—जैसे कि कातने से हम स्वराज्य लाने वाले है, इस श्रद्धा में भी आसक्ति तो है, पर वह अनासक्ति है। राम-नाम में

आसक्ति आसक्ति नहीं कहलाती। राम-नाम में आसक्ति रखने वाला आदमी दूसरी वस्तु के बारे में अनासक्त है। यही नियम मै चर्खे को भी लागू करता हू। चर्खे के कारण मेरी बडी हसी हुई है। अभी तक होती है, पर मुझे उससे क्या? मेरा विश्वास दृढ है, मुझे इस बारे में कोई शका नहीं है।"

चर्चा पूरी नहीं हुई थी कि इतने में डा० साहब और कटेली साहब बेडमिन्टन खेलने आए। बापू ने मुझे खेलने को भेज दिया।

बा की मालिश के बाद मीराबहन को देखा। उनके स्नायु-सस्थान (Nervous System) की अच्छी तरह परीक्षा की।

जबसे रसोईघर की चीजो पर ताला पडा है तब से रसोईघर में अधिक समय लग जाता है।

शाम को काता। दो-तीन दिन के नागो के बाद आज काता था। रात को थोड़ा अखबार वगैरह देखकर साढे दस बजे सो गई।

आज सुबह प्रार्थना के बाद मनु की खाट पर चूहा आ गया। उसे भगाया। वह चूहे से बहुत डरती है। उस खाट पर फिर वह सोई ही नहीं, हम लोग मजाक करने लगे कि रोटी लेकर खाती-खाती सोई होगी, नहीं तो चूहा खाट पर क्यो आता।

१८ अगस्त '४३

आज भी सुबह प्रार्थना के बाद उठ गई। उठकर साढे छ तक स्नानादि से फारिग हो गई। आधा-पौन घटा पढने को मिल गया। पीछे घूमी, खेली, बा की मालिश की और डा० साहब के साथ पढा। अभी पौने ग्यारह बजे अनुवाद करने बैठती हू।

आज बा ने मनु से अपने लिए बेसन भरकर बैंगन का साग बनाने को कहा। मनु ने मुझ से पूछा। बा की तबीयत अभी ठिकाने नहीं आई। कल रात को भी पेट में दर्द बता रही थीं। मैंने उन्हे दो-चार रोज तक ऐसी भारी चीज न खाने की सलाह दी। मनु सबके लिए ऐसी सब्जी बना रही थी। मैंने उसे बनाने से रोक दिया। बा बहुत नाराज हो गईं। बापू के पास जाकर शिकायत करने लगीं, "किसी दिन मैं कुछ खाना चाहूं तो मुझे क्यो रोका जाय?" बापू ने समझाने का प्रयत्न किया। मैंने भी समझाया, लेकिन उनका गुस्सा कम नहीं हुआ। मुझे बहुत बुरा लगा। क्या करू, कुछ समझ में न आया। खाने दो तो मुश्किल, रोको तो मुश्किल।

दोपहर और रात को मैं 'लौस्ट वर्ल्ड'* (Lost World) पढती रही। बहुत अच्छी किताब है। रस से भरी है। भाई की फाइलो का थोडा-सा काम भी किया।

---

*लेखक A Conandoyle

१६ अगस्त '४३

आज सुबह प्रार्थना के बाद सो गई। बा ने मनु से और बापू ने भाई से मालिश कराई। बाद में स्नान के समय कपडे वगैरा धोने का काम मैने किया। आज अनुवाद नहीं कर सकी और डा० गिल्डर के साथ पढा भी नहीं। 'लौस्ट वर्ल्ड' ही पढती रही और पूरी करके उठी।

सुबह घूमते समय बापू उस दिन वाले चर्खे और अनासक्ति वाले प्रसग पर फिर आये। बोले, "तूने पद्रह तारीख को कातने का सकल्प किया था तो उस सकल्प को पूरा करने के लिए जो हो सके, करना चाहिए था। तबीयत सम्भालनी चाहिए थी। सकल्प शुभ हो, दृढ हो तो पूरा तो होता ही है। फिर दोपहर को नहीं कात सकी तो रात को या दूसरे दिन उस सकल्प को पूरा करना चाहिए था।" मैंने कहा, "तबीयत सम्भालने की खातिर, पद्रह तारीख को अच्छी-भली रहने के लिए ही तो अण्डी का तेल लिया था, मगर असर उल्टा हुआ। मै यह नहीं समझी थी कि दोपहर की जगह शाम को या रात को भी काता जा सकता है।" बापू कहने लगे, "क्यो नहीं? कातना कोई ऐसी चीज नहीं है, जो दूसरे समय पर नहीं हो सकती! और अगर कातना अच्छी चीज है तो एक रोज ही नहीं, हर रोज कातना चाहिए, पहले से ज्यादा दृढ होकर कातना चाहिए। चर्खे की बहुत हसी उडाई गई है, अब भी उडाई जाती है, मगर मुझ पर उसका कुछ असर नहीं होता। मनु भी सवाल किया करती है कि 'दिन भर काता जाय तो ढाई-तीन गुण्डी ही तो कात सकते है न! इससे क्या फायदा? कातना मानो वक्त खोना है।' मगर मै कहता कि तीस कोटि लोग पद्रह मिनट भी काता और बुना करें तो हिन्दुस्तान को करीब-करीब मुफ्त में कपडा मिल सकता है। ऐसा करें तो स्वराज आज हाथ में है। गरीब-से-गरीब, दीन-से-दीन को स्वराज दिलाने का दूसरा रास्ता नहीं। दूसरी तरह से तो तानाशाही ही आ सकती है जैसा कि जर्मनी और इटली में चलता है। रूस में भी वही हाल है, मगर चूकि वहा राज सबके लिए है, सचमुच प्रजा के लिए है, इसलिए वह अच्छा दिखता है, लेकिन उसकी शोभा भी टिक नहीं सकती। उसके टिकने का रास्ता एक है अहिंसा को ले और हिंसा का त्याग करे। चर्खा अहिंसा का बाह्य चिह्न है। अब रही अनासक्ति की बात, सो दूसरी सब चीजो में अनासक्ति अच्छी है, मगर चर्खे में आसक्ति रखना तो और भी अनासक्ति है।"

जिस सिपाही का हाथ जला था, उसका जला स्थान कहीं रगड खा गया, इसलिए छाले की चमडी उखड गई। कुछ विषाक्त हो गया है। थोडी सूजन और मवाद भी है। उसे अस्पताल भेजना मुझे अच्छा नहीं लगा। इसलिए यहा पर उसकी मरहम-पट्टी कैसे करू, यह विचार करने लगी। आखिर कैची और रुई आदि आवश्यक चीजो को पानी में उबाल लिया। तब सिपाही की जली हुई चमडी काट डाली। 'सेलफा नेलीमाइड' की दो गोलियो को पीसकर जख्म पर पाउडर डाला और लिक्वीड पैराफीन

कपडा उबाल कर उसकी ऊपर से मरहम पट्टी की। शाम को वह कह रहा था कि अब दर्द नहीं है।

बा आज भी नाराज हैं। कल से दूध मात्र पीती हैं—शाक-भाजी, कुछ नहीं लेतीं।

२० अगस्त '४३

बा की नाराजगी चल रही है। मनु का हाथ काम करने से पक गया है। आज डा० साहब ने बा से कहा कि उससे मालिश नहीं करानी चाहिए। तब मैंने मालिश की। पीछे अनुवाद इत्यादि करती रही। ग्यारह बजे के बाद बापू को खाना देकर स्नान करने को गई। दोपहर दो घंटे सोई। पढाई का क्रम बिगडा। थोडी देर वर्षा हुई। मगर शाम को कोर्ट सूखा था। सभी खेल सके।

२१ अगस्त '४३

महादेवभाई को गए आज दूसरे वर्ष का पहला शनिवार आ गया है। मगर उनका जाना तो कल का-सा है। बार-बार विचार आता है कि भगवान् उन्हे इस तरह से ऐसे समय पर क्यो ले गए ?

बा आज भी नाराज है, मुझ पर और बापू पर विशेष रूप से। लेकिन कटेली साहब और डा० गिल्डर से खुश हैं।

आज दोपहर बापू को कतरनो के काम में मदद देती रही।

आज खूब वर्षा आई। शाम को खेल नहीं सके।

: ५६ :

हिंसा के बीच अहिंसा

२२ अगस्त '४३

बहुत दिनो के बाद सुबह बेडमिन्टन खेली। कटेली साहब का हाथ दुखता है, खेलने में कठिनाई आती है, तो भी खेलना उन्हे अच्छा लगता है।

सेवाग्राम से किताबें, टाइपरायटर, चर्खा, घी इत्यादि चीजें आई। भडारी सुबह अपने साथ लकडी की दो पेटिया लाए थे।

दोपहर को डेढ घटा कतरनें निकालनें का काम किया।

बा की नाराजगी चालू है। नाराजगी के कारण परहेज रखने से उनकी तबीयत सुधरती है, इसलिए बापू उनसे खाने के लिए आग्रह नही करना चाहते।

शाम को वर्षा होने लगी। लेकिन खेलने के समय आकाश खुल गया। मै और डा० साहब एक तरफ थे—कटेली और मनु दूसरी तरफ। हम हारे, मगर खेल अच्छा रहा।

प्रार्थना के बाद बापू का मौन शुरू हुआ। मैं रात को बहुत कम काम कर पाई। सिर में दर्द था।

२३ अगस्त '४३

आज जन्माष्टमी है। बा ऐसे दिन कैदियों वगैरा को सामान्यत कुछ देना चाहती है, मगर पूछने पर उन्होंने इन्कार किया।

दिन में मैंने भाई की फाइलों का काम किया। मीराबहन ने बालकृष्ण की मूर्ति के आस-पास सुंदर फूल सजाए। बा वहा जाकर खूब भक्ति भाव से पूजा कर रही थीं।

बा ने आज दूध का उपवास छोडा। शकरकंदी खाई, टमाटर खाया। कल रात खूब खासी हुई थी, मगर आज की रात अच्छी गई।

२४ अगस्त '४३

बा ने सब्जी वगैरा बनवाई। शामको उनका शरीर दुखने लगा। बापू मानते है कि खाने से ही उनकी तबीयत बिगडी है और हमेशा बिगडती है।

मीराबहन ने आज भी सुन्दर फूल बालकृष्ण की पूजा में सजाए थे, मगर मैं देखने जाना भूल गई।

दिन में मै कतरनें निकालने का काम करती रही। २५१ नम्बर की कतरन तक के सग्रह का कार्य पूरा किया। बाइबिल का समय भी उसी में गया।

शाम को घूमते समय मीराबहन बापू से फिर पूछने लगीं कि स्वराज्य में जमीन का बटवारा कैसे किया जायगा? बापू ने बताया, "जमीन राज्य की होगी। मै मान लेता हू कि शासन-तत्र ऐसे लोगों का होगा, जो इस आदर्श को मानने वाले होगे। अधिकाश जमींदार खुशी से अपनी जमीन छोड देंगे। जो नहीं छोडेंगे, उनसे कानून छुडवा लेगा।" मीराबहन ने कहा, "तो पहला काम होगा लोकमत को तैयार करना?" बापू ने उत्तर दिया, "लोकमत को तालीम मिल चुकी है। वह आज लगभग तैयार है"

अचानक बाहर से 'इन्कलाब जिन्दाबाद'—'महात्मा गाधी की जय'—'गाधीजी को छोड दो' के नारो की आवाज आने लगी। पता लगा कि पद्रह बिहारी मोर्चा लेकर आए थे। सब गिरफ्तार हो गए है। सब सिपाही उधर ही भाग गए थे। हम हसने लगे, "सब पहरेदार उधर चले गए हैं। इधर से हम भाग सकते हैं।" बापू कहने लगे, "वे उधर इसलिए चले गए है कि वे तुम्हारा विश्वास रखते है कि तुम लोग ऐसा कुछ नहीं करोगे।" हो सकता है कि यह बात ठीक हो और बाहर के ७२ पहरेदार हमें बाहर जाने से रोकने को नहीं, पर बाहर वालो को अन्दर आने से रोकने को ही रखे गए हो।

२५ अगस्त '४३

आज सुबह ग्यारह बजे के करीब फिर जय-जयकार सुनाई दी। बापू कहने लगे, "ऐसा लगता है कि मेरे पहले शिक्षणके अनुसार इन लोगो ने सर्वथा अहिंसक लडाई का यह तरीका निकाला है। पकडे जाने के ही लिए आते है और एक बार पकडे गए तो पूर्ण-

तथा शांत रहते हैं। एक भी सिपाही दस-बीस की टोली को पकडने के लिए काफी है।"

शाम को भाई बहुत दिनों के बाद रिंग खेलने को आए। खेलने से कुछ तकलीफ नहीं हुई। मनु नहीं खेली। उसे थोडा बुखार था। आज से उसे कुनीन मिक्सचर देना शुरू किया है। गोली काम नहीं करती लगती।

कल 'धम्मपद' पढा। आज 'पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट' पढना शुरू किया है। रातको भाई के साथ फिर वही पढा। वे कुछ उस समय के इतिहास की बातें बता रहे थे।

२६ अगस्त '४३

आज भी मनु को थोडा बुखार है। कल से बा की रात की मालिश मैंने शुरू की है। लगता है कि बा की नाराजगी अब चली गई है।

रात को भाई के साथ 'पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट' पढ रही थी—एक जगह वे कहने लगे, "यह 'कॉर्न लॉ' से सम्बन्ध रखता है।" यह सुनकर मैं आगे पढने लगी। मैं समझी थी कि अब और उन्हे कुछ कहना नहीं है, मगर उन्हे लगा कि मैं 'कॉर्न लॉ' के बारे में जानना ही नहीं चाहती। बुरा लगा।

दोपहर का समय कतरनो में जाता है। डाक्टरी अभ्यास नहीं होता। यह चुभता है। इसके लिए कुछ करना ही होगा।

शाम को घूमते समय मीराबहन बापू से कुछ पूछा करती हैं। मैंने बापू से कहा कि चर्चा का विषय आज क्या था? उन्होने बताया, "उनके (मीराबहन के) मन में कुछ गलतफहमी है कि हम जापान का सामना किस तरह से करेंगे। मैंने समझाया कि सरकारी फौजें अपने ढग से, हिंसक लडाई से, उनका सामना करेंगी और हम अहिंसक तरीके से। पहले मैं कहा करता था कि हिंसा चलती हो तब अहिंसा नहीं चल सकती, मगर अब मैं आगे बढा हू। हिंसा के बीच अहिंसा न चल सके तो वह अहिंसा अपग है।" भाई ने पूछा, "क्या अहिंसा और हिंसा का सहयोग हो सकता है?" बापू ने उत्तर दिया, "क्यो नहीं, अभी देखो, हम रूस और चीन की मदद करना चाहते है न? हिन्द आजाद होकर जापान का सामना अहिंसक तरीके से करे तो क्या रूस को या चीन को मदद नहीं मिलेगी? यद्यपि रूस और चीन हिंसक लडाई लड रहे हैं, हमारी अहिंसा उनकी मदद करेगी।" भाई ने आगे सवाल उठाया। मगर प्रार्थना का समय हो गया था। बापू ने बाद में यह चर्चा चलाने को कहा।

२७ अगस्त '४३

आज मनु को बुखार नहीं आया। मैंने दोपहर को कतरनो का काम पौन घटा ही किया। दूसरा पौन या एक घटा अपना अभ्यास किया। शाम को वर्षा हुई। फिर बन्द हो गई। हम लोग खेल सके। कल से सुबह बेडमिन्टन खेलने मनु भी आवेगी। डा० साहब कह रहे थे, "यह या तो काम किया करती है या पढा करती है, यह ठीक नहीं।" बात यह है कि उसके पास खाली समय तो खूब है, मगर और लोग अपने-अपने काम में

लगे हों तो वह अकेली पड जाती है। पढे न तो करे क्या? सभी सुबह-शाम अच्छी तरह खेलते हैं और ज्यादा समय खेलने में दें, यही हो सकता है। बा ने सुना तो बोलीं, "मेरी मालिश में मनु का तो आधा घंटा भी नहीं जाता। रसोई का काम भी मैं उससे नहीं करवाती। दोपहर को आधा-पौन घंटा मुझे पढकर सुनाती है। बाकी सब समय उसका खाली ही तो रहता है। पहले सरोजिनी तुम्हारे बारे में कहती थी, 'बेचारी सुशीला सारा दिन काम करती है। बेचारी बालक है, बडों के बीच में कैसे खेल-कूद सकती है?' अब ये लोग मनु के बारे में कहते हैं।" मैंने समझाया, "ठीक है, मनु सुबह-शाम ज्यादा खेलेगी तो काम ठीक चलेगा।"

२८ अगस्त '४३

मेरे दाहिने हाथ में चीरा लगा है। मालिश इत्यादि बाएं हाथ से करती हूं।

महादेवभाई को गए आज दूसरे वर्ष का दूसरा शनिवार आया। समय बडे-से-बडे घाव को भी भर देता है। कोई दिन आएगा कि हफ्तों और महीनों की जगह हम लोग वर्षों की गणना करने लगेंगे।

डेलिया के फूल महादेवभाई की समाधि पर चढते हैं। जीवन में जिनका उपयोग वे न कर पाए, उनकी समाधि पर वही फूल रखकर हम संतोष मानते हैं।

२९ अगस्त '४३

आज दोपहर को एक सुंदर पक्षी बा की खाट पर आ बैठा। मैं खाना खाकर आई तो बापू बा की खाट के पास खडे उसे देख रहे थे। वह काला था। उसके पंख लम्बे थे और पीछे की तरफ लम्बी-नीची पूंछ का-सा उनका आकार था। मैंने कहा, "मीराबहन को बुलाऊं?" बापू बोले, "हां।" मीराबहन कमरे में न थीं। बापू को और भाई को लगता था कि पक्षी बीमार है। मीराबहन इसे ज्यादा होशियारी से पकड सकेंगी। आखिर मीराबहन डा० गिल्डर के कमरे में मिलीं। वे आईं। सबकी आवाज सुनकर पक्षी फुर्र से उड गया। मुझे अफसोस हुआ। मैंने अच्छी तरह देखा न था। मीराबहन की ही खोज में रही थी।

घूमने में हम लोग जब नहीं होते तब मीराबहन बापू के साथ आती हैं। कोई और आ जाता है तो भाग जाती हैं। मैंने उनसे एक बार इसका कारण पूछा तो बोलीं, "दो की बात और है। वे अच्छी तरह बातें कर सकते हैं।" मैंने कहा, "आप भले बातें करें, हम सुनेंगे। और हमारी बात तो कोई ऐसी है नहीं कि दो में ही हो सके।" वे कुछ घबराहट में पड गईं। सच यह है कि उन्हें मनुष्यों की अपेक्षा वृक्षों, बकरियों और पक्षियों का साथ अधिक अच्छा लगता है। आज मीराबहन घूमने के समय बापू के साथ आईं।

कल शाम घूमते समय मैंने बापू से पूछा था, "हम लोगों ने अंग्रेजों की मदद करने

की बात सोची थी। पहले आपने कहा था कि उन्हे बिना शर्त मदद देनी चाहिए। लेकिन अब आप कहते है कि अगर वे हिन्दुस्तान की माग स्वीकार न करें तो उनके साथ लडना चाहिए। इन दोनो परिस्थितियो में सचमुच विरोध नहीं है; क्योकि आज हम मानते है कि हम स्वतन्त्र हुए बिना उनकी मदद नही कर सकते। क्या मेरी यह धारणा सही है ?" बापू कहने लगे, "इसमें मै इतना ही कहूगा कि उस समय की हालत में बिना शर्त मदद देना ही उचित था। मेरी बात काग्रेस ने मानी होती तो नुकसान नहीं होने वाला था। बाद में क्या होता, यह कहा नहीं जा सकता, मगर काग्रेस ने यह न माना। वल्लभभाई ने भी, जो हमेशा मेरी बात मानते है, कहा कि 'यह मैं नहीं मान सकता।' इसका परिणाम यह हुआ कि हम अग्रेजो को उनके असली रूप में देख पाए। उसे देखकर हम बिना शर्त मदद की बात नहीं कर सकते। चीन और रूस की हमें मदद करना हो तो हमें पहले स्वतन्त्र होना चाहिए।"

मैंने पूछा, "क्या अहिंसक और हिंसक लडाई में सहयोग हो सकता है ? वे लोग हिंसक लडाई लडते है और हम अहिंसा द्वारा उनकी मदद करना चाहते है। इसी तरह अग्रेज यहा रहकर जापान के साथ हिंसक लडाई करें और हम अहिंसक लड़ाई करके उनकी मदद करने की बात करें तो क्या यह सम्भव है ?" बापू कहने लगे, "इसे सहयोग का नाम न दिया जाय। हम अपनी अहिंसा के द्वारा अपनी रक्षा करते है, इसका परिणाम यह आता है कि रूस को, चीन को, अग्रेजो को, जो हिंसक लडाई करते है, इससे फायदा पहुचता है। इसमें हिंसा के साथ सहयोग करने की बात नहीं आती। जापानी हिंसक लडाई करते है तो अहिंसक पक्ष क्या चुपचाप बैठा रहे ? यह नही हो सकता। हमें अहिंसक लडाई चलानी होगी। इस तरह हमारी अहिंसा पूरी तरह दीप्यमान नहीं होगी, यह ठीक है, मगर अहिंसा को हिंसा से भरे जगत में अपना स्थान बनाना हो तो उसे हिंसा के बीच आकर काम करना होगा। उससे हिंसक लडाई करने वालो को भी बिना फायदा पहुचे नहीं रह सकता और अन्त में अहिंसा की सफलता देखकर वे हिंसक मार्ग को छोड़ भी सकते है। लेकिन यह सवाल निरर्थक-सा है। मौका आने पर क्या होगा, यह कौन कह सकता है। अहिंसक ऐसे मौके पर अपना मार्ग देख लेगा।"

३० अगस्त '४३

बापू का मौन है। दिन भर वे अपनी कतरनो का काम करते रहे। कई बार कह चुके है कि उन्हे इस काम में बडा रस आता है। असल में जो भी काम वे हाथ में लेते है, उसीमें उन्हे रस आने लगता है। पिछले साल मैंने और भाई ने कुछ कतरनें निकाली थी। उनमें पर्चिया* आदि लगाने का काम पहले बापू ने मीराबहन को सौंपा था। थोडा-

---

*कतरनो के सिरे पर अखबार का नाम, तारीख इत्यादि डालने के लिए पर्चिया चिपका दी जाती थी।

सा करने के बाद मीराबहन कहने लगीं, "शायद इससे भी हाथ को तकलीफ होती है। कतरनें खोवें नहीं, इससे बापू को लगा कि छोटी-छोटी कतरनें रखनी ही न चाहिए, जोडकर लम्बी कर लेना ज्यादा अच्छा है। मेरा एक बडा गत्ता पडा था। उसे काटकर दो किये ताकि तीन-चार कालम चौडे और पूरे अखबार की लम्बाई की कतरनें उसमें आ सकें, मगर जब कतरनें बढ गईं तो उन्होने देखा कि उठाते समय गत्ता लचक जाता है, इसलिए कटेली साहब से लकडी के पट्टे बनवाने को कहा। मैंने प्लाईवुड का पता लगाया तो ७ × ३२ इंच की माप के तख्ते का दाम ५०) के करीब पडता था। बापू इतना खर्च करवाना नहीं चाहते थे, इसलिए जेल में मामूली लकडी के पट्टे बनाए गए। बापू अब कतरनें उसमें रखते है। उन्हे दिन भर पर्चिया लगाने का काम करते देखकर मैंने भी उनकी मदद करना शुरू किया। परसो पुराना सग्रह पूरा हो गया। कल से बापू अनुक्रमणिका बनाने के काम में लगे है। २५-२५ कतरनो को सीं कर, उनका बण्डल बना लिया है। नई कतरनो में पर्चिया लगाने का काम मुझे दिया है। रोज के नए अखबारो की कतरनें भाई निकालते हैं। दस रोज के पुराने चार अखबारो— हिन्दू, हिन्दुस्तान टाइम्स, हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड और स्टेट्समैन की निकालने लायक कतरनो पर भाई निशान करते है। बापू उन्हे देख जाते है, फिर वे अखबार डा० गिल्डर और कटेली साहब के पास जाते हैं। वे लोग उनमें से कतरनें निकालकर पर्चिया वगैरह लगाकर बापू के पास लाते है। बापू उन्हें नम्बर देकर अनुक्रमणिका बनाते है। इस तरह सब घर कतरनो के काम में लगा हुआ है। आशा है, एक महीना और लगेगा और यह पुराने अखबारो में से कतरनें निकालने का काम पूरा हो जावेगा।

आज शाम को जब भाई खेलने जाने लगे तब मुझसे एक अखबार की कतरनें निकालने और कुछ कतरनो पर तारीख डालने को कह गए। मैंने तारीख तो डाली, मगर जब कतरनें काटने का काम करने लगी तो भाई का निशान ठीक समझी नही और काटने लगी। बाद में गलत कटी हुई कतरनो को जोडना पडा। आधा घटा लग गया और तब भी एक पन्ना बिना कटा रह गया।

मैंने रविवार के दिन रसोईघर में काम कम करने का विचार किया था, ताकि काम करने वालो को आराम मिले। रविवार को सफाई भी करानी होती है, इसलिए शनिवार की शाम को खाखरा वगैरह करवा लेने और रविवार को खिचडी मात्र पकवाने का विचार था, लेकिन शनिवार की शाम को खाखरा और मीराबहन की रोटी कराना भूल गई। इसलिए रविवार के दिन सबके लिए रोटी कराई। बापू को पता लगा। उन्होने सोमवार के दिन सबको छुट्टी देने को कहा। आज सोमवती अमावस्या भी थी। बापू ने कच्चा साग, दूध और बादाम खाए। मनु ने और भाई ने सुबह कोको ली। मैंने चाय और बा ने दूध-मुरब्बा। डा० गिल्डर और कटेली साहब का खाना तो बाहर से आया ही था। शाम को मैंने, भाई ने और मनु ने कोको ली और खाखरा खाया। सिर्फ मीराबहन के लिए खाना पका, वरना दिन भर काम करने वालो को छुट्टी रही।

३१ अगस्त '४३

कल शाम को कनु भाई का पत्र बा और मनु के नाम आया। वल्लभभाई की तबीयत अच्छी नहीं लगती। भाई बहुत उदास रहे। कहने लगे, "एक-के बाद-एक बापू के स्तम्भ जा रहे हैं। जमनालालजी गए। राजेन्द्रबाबू और वल्लभभाई भी बीमार से रहते हैं।" मैंने कहा, "आप क्यों चिन्ता करते है? भगवान् को बापू से काम लेना हैं तो सहायक और साधन देगा ही।" भाई कहने लगे, "आज तक जो गए है, उनकी जगह नए कौन-से आए हैं?"

मीराबहन का दर्द बढा है। आज भंडारी को मैंने फिर पत्र लिखा कि उनकी अच्छी तरह परीक्षा होनी चाहिए। कल फिर सिविल सर्जन आवेंगे। आज उनके रोग का ब्यौरा लिखकर तैयार किया है।

१ सितम्बर '४३

आज सुबह मैं जल्दी खेलने को चली गई थी। बापू के घूमने निकलने के थोडी देर बाद मैं खेलकर आ गई। मनु खेलने को गई। भाई भी बापू के साथ थे। सो उस दिन वाला प्रश्न आगे चलाया। घूमने के समय हम लोग खेलते है, इसलिए कुछ पूछने का समय ही नहीं मिलता। आज हम लोग बापू के साथ घूमने चले। भाई ने बात चलाई। उन्होंने उस रोज पूछा था, "अंग्रेजो को आप यहा लश्कर रखने की इजाजत देते हैं, मगर जापान कह सकता है कि इससे तो हम मर जाते है। तुम्हारे घर से ये हमें पत्थर मारते है, इसलिए या तो तुम्ही इन्हे निकालो या हमीं को निकालने दो। तब अहिंसा क्या उत्तर देगी?"

मैंने कहा, "मैं जो इस प्रश्न का उत्तर समझी हू, वह बापू सुनें और मुझे सुधारें। एक तो यह कि अंग्रेज इतने समय से यहा है। वे हमें अपनी आजादी न्यायपूर्वक लेने देते है, मगर अपनी रक्षा के लिए यहा रहना भी चाहते है। तो हमारा उनके प्रति यह कर्त्तव्य है कि हम उनकी अनुकूलता का विचार करें और उन्हे रहने दें। जापान के प्रति हमारा कोई फर्ज नहीं है। दूसरे हमारी सहानुभूति अंग्रेजो के साथ है। हम नहीं चाहते कि वे युद्ध में हारें। जिस काम के करने में उन्हे हार का डर हो, वह हम उनसे नहीं करवाना चाहते।" बापू कहने लगे, "यह ठीक है, मगर इसमें मेरी दलील पूरी-पूरी नहीं आ जाती। सम्पूर्ण अहिंसा के सामने हिंसा टिक नहीं सकती, यह शाश्वत नियम है। अगर सारा हिन्दुस्तान अहिंसक होता तो अहिंसा द्वारा जापानी आक्रमण का सफल मुकाबला किया जा सकता है, इसे अंग्रेज स्वय देख सकते। तब यहा पर हिंसक साधनो से जापान का मुकाबला करने के लिए उनके यहा रहने का सवाल ही न रह जाता। किन्तु बात यह है कि अंग्रेजो के सामने आज है क्या कि जिससे वे यह मान सकें कि हमारी अहिंसा सफल होगी? ऐसी हालत में मेरी अहिंसा मुझे मजबूर करती है कि मैं उन्हे यहा रहने दूं। अपनी रक्षा के लिए अपने खर्च पर वे यहा रहे तो मैं उन्हे इन्कार नहीं कर सकता। अगर सारा हिन्दुस्तान अहिंसक रहता तो उनके यहा रहने

का प्रश्न उठ ही नहीं सकता था। कोई कहे कि ऐसी अहिंसा लोगों में कभी आने की नहीं है तो उससे यह नियम नहीं बदलने वाला। मगर आज जब सारा हिन्दुस्तान अहिंसक नहीं है तब मैं अंग्रेजों से अहिंसा में विश्वास रखकर यहां से चले जाने को कैसे कह सकता हूं?"

यह बात करते-करते हम महादेवभाई की समाधि पर पहुंच गए। फूल चढ़ाकर प्रार्थना करके वापस लौटे तो भाई कोई दूसरी बात करने लगे, मगर बापू ने कहा, "मेरा मन अभी उसी प्रश्न पर है। तुम्हें याद रखना चाहिए कि इस चीज की उत्पत्ति कैसे हुई। मेरे स्वभाव में यह चीज पड़ी है कि अपनी भूल देख लूं तो उसे ढांप नहीं सकता। दूसरे लोग तर्कपूर्ण ढंग से बात करने पर जोर देते हैं। उन्हें डर रहता है कि एक बात कहकर कुछ दूसरी ऐसी बात मुंह से न निकल जावे, जिससे पहले की बात अतर्कपूर्ण मालूम पड़े। मुझे ऐसा कुछ है ही नहीं। मुझे एकमात्र सत्य से वास्ता है। दक्षिण अफ्रीका में अपने एक मुकदमे के हिसाब में मैंने भूल देखी। मैंने बड़े वकील से कहा। उन्होंने मुझे समझाया, 'ऐसी भूल स्वीकार की तो समझो कि मुकदमा तो हाथ से गया ही, साथ ही वकालत भी खतम। मुझ से तो यह न हो सकेगा। मुझे तो वकालत चलानी है।' मैंने नम्रता से कहा, 'तो मुझे भूल स्वीकार करने दीजिए।' मैं गया और मुकदमा जीत कर आया। भूल सुधारने से मेरे मवक्किल को कुछ ज्यादा देना पड़ता था। जज इस बात को पहले न देख सके। बोले, 'मि० गांधी, तो क्या यह धोखादेही न थी?' मैंने भी जरा तेज होकर उत्तर दिया, 'क्या आप मेरी भलमसाई का ऐसा दुरुपयोग करेंगे?' तब वे सीधे हो गए। आज भी उनका चेहरा मुझे याद है। सो जब फिशर ने मेरी योजना की त्रुटि मुझे बताई तो उसके इशारा करते ही मैं कायल हो गया। यह ठीक है कि मैंने खुद पहले से ही यह चीज देख ली होती और 'अंग्रेजो जाओ' इस मंत्र के साथ ही उसे भी रखा होता तो वह अधिक सुशोभित होती। मुझ पर आज जो जहरीले हमले इस बारे में हो रहे हैं, वे न होते, मगर वह तो नहीं हुआ। तो जब मुझे त्रुटि नजर आ गई तब मुझे उसे सुधारना ही था। हरेक चीज के दो पक्ष होते हैं। मेरे काम से जापान को नुकसान भी हो तो मैं क्या करूं। जो चीज मेरे सामने है, उसे यथाशक्ति मैं शुद्ध भाव से सम्पूर्णतया अहिंसक बना सकूं तो मेरे लिए बस है। उसके दूसरे परिणामों का हम आज विचार न करें, क्योंकि यह सनातन सत्य है कि शुभ कार्य का परिणाम अशुभ नहीं आ सकता। वे लोग भले रहें, जैसे रक्षा करनी है, करें। मैं अपनी रक्षा अहिंसा से करूंगा। अपनी अहिंसा को सफल करके बता सकूं तो मुझे उनके साथ अहिंसक मार्ग लेने के लिए दलील करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वह अपनेआप इस तरफ आवेंगे।"

भाई बोले, "हम इन्हें बर्मा को गुलाम बनाने में क्यों मदद दें? अगर ये लोग सच्ची नीयत से हिन्दुस्तान का राज्य छोड़ते हैं तो इन्हें बर्मा की स्वतन्त्रता की घोषणा पहले से करनी चाहिए। यह करवाकर हम इनकी मदद करें।"

बापू कहने लगे, "ऐसा करना अपने ऊपर बेईमानी का आरोप लगवाना होगा। वे कहेंगे कि हम लोग कुछ करना ही नहीं चाहते, इसलिए एक-के पीछे-एक हुज्जत निकालते है। हमें दूर की बात में नहीं पडना चाहिए। अहिंसा के सिद्धात के अनुसार हमारा अग्रेजो के प्रति ठीक व्यवहार क्या है, इतना ही हमें विचारना है। बाकी श्रद्धा रखनी चाहिए कि शुद्ध विचार से जो कार्रवाई की जाय, आगे जाकर उसके परिणाम भी ठीक ही निकलेंगे। तुम इतना समझो कि हिन्दुस्तान सचमुच आजाद हो जावे तो उसके परिणाम बहुत दूर तक जावेंगे। बर्मा की आजादी उसके गर्भ में पडी है।"

आज कर्नल भ्रौल मीराबहन को देखने आए। किसी दूसरे आदमी को परामर्श के लिए बुलाना चाहते हैं। सरकार से पूछना होगा। उसके बाद आवश्यकता होगी तो एक्स-रे करावेंगे।

२ सितम्बर '४३

आज अखबार में बापू और वर्किंग कमेटी के साथ वालो को छोडकर बाकी कैदियो को महीने में एक मुलाकात मिलने की खबर थी। डा० गिल्डर के लिए अवश्य ही एक समस्या खडी होगई। मुलाकात की इजाजत से लाभ उठाना हो तो उनको वापस यरवदा जाने के लिए सरकार के साथ झगडा करना चाहिए। क्या ऐसा करना उचित है? यरवदा जाकर एक तो जेल की जेल, दूसरे खर्च, और तीसरे बापू का साथ छोडना। वैसे भी यहा का वातावरण उन्हे अनुकूल है। यह सब छोडना या मुलाकात छोडना? मैंने कहा, "खर्च की उन्हे क्या परवाह है?" बापू कहने लगे, "ऐसा नहीं, कौन जाने कबतक यहा रहना है। वे प्रतिष्ठा वाले आदमी है। अब काग्रेस को कभी छोडेंगे नहीं। यह भी जानते हैं कि मैं लोगो को भिखारी बनाने वाला हू, सो जो धन है, उसे सभालकर रखेंगे ताकि वह उनकी लडकी को मिल सके।"

मैंने कहा, "क्या और एक वर्ष में यहा भी मुलाकातें नहीं शुरू की जाएगी?" बापू कहने लगे, "छ. वर्ष में जरूर शुरू होगी।"

आज मैंने अनुवाद पूरा किया। कल उपवास की कहानी लिखना शुरू करने का विचार है।

३ सितम्बर '४३

सुबह घूमते समय मीराबहन सोवियत रूस-सम्बधी एक किताब के बारे में बात करने लगी। वहा तीन-चार व्यक्ति गए थे। जो जिस विषय में रस रखता था, उसके बारे में उसने लिखा। मैंने हसकर पूछा, "मीराबहन, आप जावें तो किस विषय को लें?" वे कहने लगी, "मास्को तो सामान्य हालचाल का पता लगाने ही जाऊ, मगर वहा के देहातो में खास ध्यान देने की बातें हो सकती है। मेरा खयाल है कि बापू के चुने हुए उन तीन-चार लोगो के साथ जाना चाहिए, जो खास-खास विषयो में ज्ञान रखते और रूस में उन विषयो का ज्ञान प्राप्त कर सकते हो! ठीक है न बापू?" बापू हसकर बोले, "छः साल के बाद यह चर्चा करना।" मीराबहन भी हस पड़ीं। उन्हे विश्वास है कि

ये जल्दी ही छूटनेवाली है । छ साल की बात तो हम सबको बढाई हुई लगती है, मगर मीराबहन की तरह बहुत जल्दी छूटने की भी हम आशा नहीं रखते । समय बतावेगा कि किसका अनुमान ठीक है । आज तो काफी काम यहा पड़ा है । उसमें समय का उपयोग कर लें तो बस है ।

आज उपवास पर लिखना शुरू न कर सकी । यही सोचती रही कि कौन-सा कागज इस्तेमाल करू ।

शाम को मन बहुत चिन्तित था । माताजी इत्यादि का बहुत दिन से पत्र नहीं आया ।

४ सितम्बर '४३

महादेवभाई को गए आज दूसरे वर्ष का तीसरा शनिवार है । सुबह समाधि पर बहुत से फूल ले गई और डेलिया के फूलो का स्वस्तिक बनाया । चारो कोनो पर और 'ॐ' के बिंदु पर भी वही फूल रखे और शेष पर डेजी के और एस्टर के । डेजी फूलो का सलीब भी बनाया । सब दृश्य बहुत सुदर दीखता था ।

आज दोपहर बाइबिल नहीं पढी । भाई ने कुछ लिखने को कहा था, वही लिखती रही । कार्लाइल पढा । कल से कतरनो की अनुक्रमणिका बनाने में बापू की मदद करूगी ।

भाई की उगली बिजली की बत्ती की एक टूटी हुई हाडी से कट गई थी, अब वह पक गई है । उन्हे बापू के काम से छुट्टी दी ।

रात बापू की मालिश करते समय बरामदे में सन्नाटा-सा छा रहा था । दूर से मीराबहन वगैरह के कैरम खेलने की आवाज आती थी । सामने बगीचे में भी सन्नाटा था । मैंने बापू से पूछा, "आप इतनी बार जेल गए है, अकेले भी रहे है, तकलीफें सही है, पर कभी आपको अकेलापन अथवा निराशा मालूम होती थी ?"

बापू बोले, "अकेलापन तो कभी नहीं लगा । दक्षिण अफ्रीका में मुझे एकात कोठरी में रखा था, मगर मुझे उसमें कुछ तकलीफ नहीं लगती थी । उल्टा सुपरिन्टेण्डेण्ट आता था तो चुभता था कि अब यह मेरा थोड़ा समय बरबाद करेगा । मैंने अपना लम्बा कार्यक्रम बना रखा था । सस्कृत सीखना, तमिल सीखना और अग्रेजी की किताबें तो पढनी थीं ही । मैं जूते बनाने का काम भी करने लगा था । इसलिए मेरी कोठरी में ही मुझे जूते बनाने का सामान दे दिया गया था । मुझे किसीके साथ तो काम करने दिया ही नहीं जा सकता था । मगर मुझे तो अकेले काम करना अच्छा लगता है । सब कार्यक्रम बना और छूटने का हुक्म आया । हर दफा जेल छोडना मुझे बुरा-सा लगा है । निराशा और शून्यता भी कभी नहीं महसूस हुई । हा, दक्षिण अफ्रीका में कभी-कभी उदासी आ जाती थी । बाहर क्या होता होगा, यह विचार मन में उठते थे । यहा ऐसा कभी नहीं हुआ, कारण कि मैंने जेल में क्या भाव रखना चाहिए, इसकी एक नई फिलासफी बना ली है और इस बारे में काफी लिखा है । लिखता तो दक्षिण अफ्रीका में भी था, मगर वहा पर तो यह नया सिलसिला था और यहा की तरह पढे-

लिखे बहुत चर्चा करन वाले लोग भी नहीं थे । यहा तो इतने लोगो के साथ इस बारे में वाद-विवाद करना पडा है कि वह चीज दिमाग पर काबू पा गई । दक्षिण अफ्रीका में बीजगणित सीखना शुरू किया था; क्योकि गणित सीखने से मन को एकाग्र करने की शक्ति आती है ।"

मैंने पूछा, "क्या अब भी आपको मन को एकाग्र करने के लिए अभ्यास करने की आवश्यकता हो सकती है ?" बापू बोले, "अब भी हो सकती है, मगर तब तो बहुत थी ।"

५ सितम्बर '४३

सुबह प्रार्थना के बाद बापू ने मुझे बुलाया और कहा, "आज पारसियो की 'पटेती'* है । रागोली से साल मुबारक लिखना चाहिए । चाय की मेज पर मेरी मेज के फूल रख दो ।" कल शाम को ही रामायण में एक जगह वर्णन आया था कि एक भी वानर ऐसा न था, जिससे राम ने कुशल-क्षेम न पूछी हो । बापू भी छोटी-से-छोटी बात नहीं भूलते ।

मैं आटे से 'साल मुबारक' लिख रही थी और एक दरवाजे पर पूरा करके दूसरे पर शुरू कर रही थी कि कटेली साहब एक तश्तरी लिए नीचे आए । उसमें डा० साहब के लिए फूलो का हार, गुलाब जल, नारियल, सिंदूर इत्यादि था । डा० साहब आए तो उन्हे भेंट किया । मैंने दोनो को सिन्दूर का टीका लगाया । पीछे दोनो जने बापू को प्रणाम करने आए । चाय के बाद सब्जी इत्यादि चढाकर कुछ समय बेडमिन्टन खेले । सिपाहियो से मैंने कह रखा था, सो वापस आने तक सब तोरण बध गए थे । मैंने मालिश के काम से छुट्टी ली । कटेली और डा० साहब के दरवाजो पर चावल के आटे से 'साल मुबारक' लिखा । उनके लिखने-पढने की मेज पर फूलो से लिखा । डेलिया के फूल सजाए, पीछे स्नान किया और कपडे धोए । पौने बारह बजे खाली हुई । साढे आठ बजे के नाश्ते के समय के लिए सवेरे मीराबहन ने मेज पर फूल रखे थे । दोपहर उन्होने सलाद तैयार की, मगर वे लोग उसे खाना भूल गए ।

दिन को हवा जोर से चली । उससे डा० साहब के दरवाजे के सामने जो 'साल मुबारक' रांगोली में लिखा था, उसका कुछ हिस्सा मिट गया । लिखा रह गया 'साल म ।' डा० साहब ने सबको बुला-बुलाकर दिखाया । हम लोग खूब हसे ।

श्री कटेली ने सूरत से मिठाई मगाई थी, सो घर में कुछ करने की मनाही की ।

६ सितम्बर '४३

बापू का मौन था । रामायण इत्यादि का पाठ बन्द रहा । दोपहर के समय 'डान' के छुटे हुए अको की एक सूची बनाई । यह पत्र बहुत अनियमित आता है । बापू

*पारसियो का नये साल का त्यौहार।

शिकायत लिखवाना चाहते हैं। शाम को सवा सात बजे कोई खेलने नहीं गया। पीछे मैं और मनु व डा० साहब और कटेली साहब थे। अच्छी कसरत हो गई।

७ सितम्बर '४३

आज मीराबहन को डा० सिम्कावस देखने आये। वे कहते थे कि उनकी बाह की मास-पेशियो में कुछ विकार है। उसे ठीक करना होगा।

डाक्टर साहब के पास सरकारी पैम्फलेट 'कांग्रेस की जिम्मेदारी' की कल एक दूसरी प्रति आई है। पहली को फिर से छापा है। पहली में लाल स्याही के जो सुधार थे उन्हे इसमें शामिल नहीं किया गया।

८ सितम्बर '४३

कल वजन का काटा नहीं आया था। आज सबका वजन लिया गया। मनु चार पौण्ड घटी। उसने सुबह-शाम खेलना शुरू किया है, मगर खाना कम कर दिया है। अब वह उबला खाना खाने लगी है और मीठी चीजें नहीं खाती। इस बात की चर्चा सभी कर रहे थे। डा० गिल्डर ने भी बापू से कहा कि उसकी खुराक बढनी चाहिए। बा को लगता था कि कसरत कम करनी चाहिए। दोपहर बा ने उसे घी वाला साग आग्रहपूर्वक खिलाया। शाम को उन्होने उसे आग्रह करके और ज्यादा खिलाया। खाने के बाद मैं बापू का सूत उतार रही थी तो मनु गुसलखाने से निकली। मैंने पूछा, "क्या हुआ ?" कहने लगी, "उल्टी हुई।"

रात को बापू की मालिश के बाद अखबार आदि देखकर और भाई के साथ थोडा पढकर साढे दस बजे सो गई।

बा अच्छी है, मगर कमजोरी बहुत आ गई है। 'सल्फा' दवा के कारण भी कमजोरी हो सकती है। कल से बद करूगी।

शाम को बापू के पास थोडी देर तक बाइबिल पढी। वे बता रहे थे कि उनकी दृष्टि से डाक्टर को स्थितप्रज्ञ होना चाहिए और कभी किसी वजह से सतुलन नहीं खोना चाहिए।

९ सितम्बर '४३

सुबह उठी तो मेरे सिर में दर्द था। बेडमिन्टन खेलने को नहीं गई। बापू के साथ घूमती रही। मीराबहन से मैंने कहा, "आप खेलने कब आती है ? हम लोग आपकी राह देखते है।" कहने लगीं, "सुबह थोडा खेलना शुरू करने का विचार करती हू।" थोडी देर बाद देखा तो बेडमिन्टन खेल रही थीं।

शाम को बापू के पास पढने बैठी तो वे समझा रहे थे कि कुछ भी हो, किसी भी चीज से मन का सतुलन बिगडना नहीं चाहिए। किसी भी चीज का दुःख क्यो माना जाय ?

रात में भाई के सिर में दर्द रहा। उनके साथ पढा नहीं। उनका सिर वगैरह

दबाकर साढ़े दस बजे सोने को गई ।

१० सितम्बर '४३

आज पारसियो का त्यौहार है । जरथुस्त का जन्म-दिन है । मै सुबह प्रार्थना के बाद सोई नही ।

थोडी देर में डाक्टर गिल्डर सुबह-ही-सुबह स्नान करने आए । नए साल के दिन भी बहुत सवेरे नहाए थे । मनु ने उनके लिए आज पूरनपूरी बनाई । दोपहर को कटेली साहब और डा० साहब शिकायत करते थे, "दूसरे किसी ने पूरनपूरी क्यो नही खाई? हमने तो कहा था कि सब लोग खाए तभी बनाना ।" दो-एक रोज पहले कटेली साहब मिठाई के बारे में भी ऐसे ही कह रहे थे, "तुम लोग नहीं खाते हो तो हम भी छोड देंगे ।" शाम को सबने खाया ।

सच्ची बात तो यह है कि दूसरो को इन चीजो का शौक नहीं है ।

बापू ने सरकार को पत्र लिखा कि 'बाइबिल' के उत्तरकी पहुच अभी तक क्यों नहीं आई ?

भाई की तकली का सूत उतारा । उसमें बहुत समय जाता है । बापू की कतरनो का थोडा काम किया । आज भी दिन भर कुछ नहीं पढा ।

११ सितम्बर '४३

महादेवभाई को गए आज दूसरे वर्ष का चौथा शनिवार है । वे होते तो बापू को छोटी-छोटी अनेक झझटो से बचा लेते ।

भाई को यहा आए आज एक वर्ष पूरा हुआ । गए वर्ष उनके आने की आशा छोड देने पर एकाएक वे आज के रोज करीब बारह बजे दोपहर के समय आ पहुचे थे । इस एक साल में न जाने क्या-क्या देखना पडा है । आने वाला वर्ष अच्छा जाए तो बस है ।

कल माताजी का पत्र आया था । वे बहुत परेशान हैं, इससे बहुत चिन्ता होती है । दुःख होता है ।

कल शाम को महादेवभाई की समाधि पर बहुत सुदर फूल सजाए थे । आज सुबह भी वे बिलकुल ताजा लगते थे, इसलिए उन्हे बदला नही । बहुत सुदर दृश्य है । डा० साहब और कटेली साहब भी आए थे । डा० साहब सरोजिनी नायडू की तरह हर शनिवार को आते है ।

आज सुबह चार बजे उठी और डायरी लिखी । प्रार्थना के बाद भी काम किया । आख कुछ ठीक थी । थोडा पढ सकी ।

बापू कतरनो के काम में लगे हुए है । एक दिन कह रहे थ, "मै अपने जीवन के आखिरी दिनो में तुम लोगो के लिए एक खासी चीज तैयार कर जाऊगा ।" मैने कहा, "आखिरी दिनो में क्यो ? अभी तो आप को कम-से-कम पचास वर्ष और रहना है । १२५ वर्ष की बात तो आपने भरी सभा में की थी ।" बा कहने लगी, "किसके लिए छोड़

जाओगे ? सुशीला के लिए ?" बापू कहने लगे, "जो मेरा काम करेंगे, उनके लिए।" बा बोलीं, "अभी तो सुशीला और प्यारेलाल ही सब करते है न ?"

बापू को कतरनो के काम से बहुत सतोष है । भाई से कह रहे थे, "तुम देखोगे कि एक सुदर चीज बन गई है । जो कतरन चाहिए, उसे निकालते एक मिनट की देर भी नहीं लगती । लाइब्रेरी की अलमारियो की तरह इनमें एक क्रम है । अनुक्रमणिका देखो और जो चाहो निकाल लो। अनुक्रमणिका सम्पूर्ण है। तो भी मैं अखबारो में से एक-एक की कतरनो को तारीखवार रखने का प्रयत्न कर रहा हू ताकि बिना सूची के भी कोई देखना चाहे तो उसे बहुत मुश्किल न पडे ।" मीराबहन से कह रहे थे, "मेरा मन मा का-सा हो गया है । मा जितना अपने बच्चे को दूध पिलाती है, उतना ही ज्यादा उसे प्यार भी करती है। मैं भी जितना ज्यादा इस काम में लगता हू, उतना ही ज्यादा उसमें दिल लगता है ।

"मैं रोज उसे ज्यादा अच्छा करता हू । सरकारी पैम्फलेट जैसी यह चीज नहीं है । वह तो करना ही था, इसलिए किया था । यह तो खुशी से करता हू, सो इसमें लीन हो जाता हू । मुझे बाकी सात साल यहा पर यही काम करना हो तो मुझे वह खटकेगा नहीं ।"

मीराबहन हसी करने लगी, "हा, क्योकि यह आपका बच्चा है और जबतक दूसरे बच्चे इसकी जगह न लें, यह आप पर कब्जा रखेगा। यहा से जाने से पहले दूसरे बच्चे इसकी जगह लेने ही वाले है।"

आज वर्षा थी । कल रात भी रही । दिन में आकाश खुला था, मगर सुबह खेलने की जगह भीगी होने के कारण खेल न सके । शाम को खेलने के समय वर्षा आ गई, सो दोनो वक्त का खेलना गया ।

मीराबहन ने बालकृष्ण की पूजा में कल और आज बहुत ही सुन्दर फूल सजाए।

१२ सितम्बर '४३

सुबह पौने पाच बजे उठी । प्रार्थना के बाद आधा घटा लिखने का काम किया । दोपहर को बहुत सोई । शाम को वर्षा आ गई । खेलना बन्द हो गया । शाम को घूमने के समय वर्षा बद हो गई । घूमते समय बहुत दिनो बाद बापू ने अपनी कहानी सुनाई । मनु ने कोई कहानी कहने को कहा था । बापू इधर-उधर की सुनाते थे । वह भी अच्छा लगता था, मगर मैंने कहा, "बापू, आप अपनी कहानी सुनाइए न ?" तब बापू ने जो आरम्भ की थी, उसीको आगे कहना शुरू किया । विलायत में जब एक कमरा लेकर रहते थे तब का वृत्तान्त था । सुबह दलिया, एक पाइट* दूध और थोडी रोटी लेते । दोपहर को बाहर छ पेनी (आना) वाला भोजन लेते । शाम को दो छोटे

*एक पाइट—बीस औंस यानी लगभग पौने दस छटाक ।

सेव और रोटी घर पर खाते। दिन भर अभ्यास करते। मैट्रिक्युलेशन की तैयारी के लिए उन्होंने ट्यूटर रखा था, जो हफ्ते में दो बार घटे-दो घटे का समय अन्य दो विद्यार्थियो के साथ उन्हे देता था। लैटिन में खास मदद की आवश्यकता पडती थी। पहली बार तीन महीने की तैयारी के बाद परीक्षा दी, फिर भी लैटिन में असफल रहे। दूसरी बार रसायनशास्त्र की जगह 'ताप' (Heat) और 'प्रकाश' (Light) लिया था। एवलिंग की पुस्तक पढी और परीक्षा देकर तुरत ब्राइटन चले गए और वहा वे एक महीना रहे। एक-एक मिनट अभ्यास में लगाते थे। साथ में फ्रासीसी भाषा की राबिन्सन क्रूसो ले गए थे। उसे पढते थे। अपना खाना स्वय पकाते थे। उनका खर्च सत्रह शिलिग प्रति हफ्ते का था। बताने लगे कि कैसे वे परीक्षा के नतीजे के तार की राह देखते थे। आखिर एक दिन बाहर से आ रहे थे तब सीढी चढते समय मकान मालकिन ने उनके हाथ में तार दिया। पास हो जाने की खबर से कितना खुश हुए, यह सब बताया।

यही सब बातें उनकी 'आत्मकथा' में लिखी हैं, लेकिन बापू के मुह से सुनने में और ही रस आता है।

सुबह चाय के समय, बापू के जन्म-दिन पर क्या करना चाहिए, इस पर बात चली। देशी तारीख के अनुसार जन्म-दिन २६ सितम्बर को आने वाला है।

बापू का मौन है। रामायण इत्यादि का पाठ बन्द रहा। बहुत-से अखबार इत्यादि इकट्ठे हो गए थे। उन्हे पढा। थोडी-सी यूरोपियन हिस्ट्री पढी। अभी 'पास्ट ऍड प्रेजेन्ट' पढने का विचार है। रात में वर्षा होती रही, मगर इस वक्त आकाश खुला है। आज रसोईघर में भी छुट्टी का दिन है। सब घर सूना-सूना-सा लगता है। वायु-मण्डल में गर्मी की ऋतु का आभास है।

रात को मौन छोडने के बाद भाई बापू से कहने लगे कि उन्हीकी पसद के उनके लेखो का एक सग्रह निकाला जाय। बापू बोले, "वह अच्छा तो होगा, मगर इस बारे में इतना काम हो चुका है कि अभी और न किया जाय तो भी चल सकता है। प्रभु कर रहा है। निर्मल बोस का काम अच्छा माना जाता है। आनन्द ने भी खूब मेहनत की है। गुजराती में नगीनदास अमुलकराम के काम की पूरी कीमत नही आकी गई, मगर उस काम पर अपार मेहनत हुई है।"

भाई कहने लगे, "उस गुजराती सग्रह का बहुत-सा भाग अग्रेजी में नही आया है, इसलिए उसका अनुवाद होना चाहिए।"

भाई आजकल बहुत उत्साहित हैं। खूब काम करते हैं। बापू को इससे बडा सतोष है। यहा पर नियमितता की आदत पड जावे तो बाहर जाकर उनका काम बहुत आसान हो जायगा।

१३–१६ सितम्बर '४३

इतने दिन डायरी नही लिख पाई। अच्छा नही लगता था। एक अनुभव लिया है। सुबह बापू से पहले उठ जाती थी, सो घटा-डेढ घटा सुबह काम के लिए मिल

जाता था। एक दिन तो ढाई बजे उठ गई। सुबह उठना बहुत अच्छा लगता है।

१७ सितम्बर '४३

आज सुबह नहीं उठी। इससे सुबह कुछ काम नहीं कर पाई। बापू की मालिश व स्नान के बीच थोडा समय मिला। उसमें कुछ पढा। दोपहर भी आज बहुत कम काम हो पाया।

शाम को वर्षा आई। बाहर खेलना बन्द हुआ। भीतर पिंग-पाँग खेले। डा० साहब के घुटने में थोडा दर्द है। दो रोज पहले बहुत खेले थे। उससे ऐसा हो गया। इसलिए वे थोडे दिन तो खेल ही नहीं सकते।

कल से शाम को कातने के समय कार्लाइल की किताब भाई बापू को पढकर सुनाते है। मै उतने समय में कात लेती हू और फिर मनु को सिखाती हू। भाई को यह कार्यक्रम अनुकूल है।

आज सुबह घूमते समय बापू मीराबहन के साथ इसेबेला डन्कन (Isabella Duncan) की बात कर रहे थे। उन्हे लगता था कि जिन पुरुषो के सम्पर्क में वह आई, उन्होने अगर उसकी निर्दोष बुद्धि की रक्षा की होती तो कौन जाने आज वह कितनी उन्नति कर गई होती। कुछ रुककर बोले, "मेरा यह दृढ मत है कि स्त्री जब भी गिरती है, उसे गिराने वाला पुरुष होता है। पुरुष अधिकतर मेरे साथ इस विषय पर सहमत नहीं होते, मगर मेरा मत अचल है।' मीराबहन को यह पुरुषो के प्रति कठोर मत लगा, मगर लौटने का समय हो गया था, इसलिए चर्चा आगे चल नहीं सकी।

रात को मालिश के समय भाई बापू से बोले, "आज सरकार की नीति का विरोध बाहर रहकर पूर्णत अहिंसा के द्वारा कैसे किया जा सकता है ?" बापू कहने लगे, "अहिंसा के द्वारा ऐसा करने का सबसे अच्छा रास्ता अनशन है। हजारो की सख्या में लोग ऐसा करें तो चमत्कारी परिणाम आ सकता है, मगर इस रास्ते पर चलने वालो में भी पूर्ण अनासक्ति व अहिंसा और ईश्वर में दृढ श्रद्धा होनी चाहिए।" भाई ने कहा, "अनशन कठिन है। लोग करना शुरू तो करें, मगर उस पर टिके रहना आसान नहीं है। इससे तो हाराकिरी ज्यादा आसान है।" बापू बोले, "अनशन में ईश्वर को जैसा करना हो, वैसा करने का मौका मिलता है। वह स्वाभाविक और सीधी क्रिया है, इसलिए हाराकिरी से यह तरीका ज्यादा अच्छा है।"

१८ सितम्बर '४३

परसो सरकार की तरफ से खबर आई थी कि मध्यप्रात की सरकार मनु को छोडने का विचार कर रही है। अगर वह स्वेच्छा से रहना चाहे तो आज की शर्तों के मुताबिक रह सकती है। मनु ने रहना पसद किया।

मीराबहन को मित्रो को पत्र लिखने की इजाजत मिली है। आज उनसे पुछवाया गया कि वे जिन्हे पत्र लिखना चाहती है, उनके नाम बताए और कारण बतावें कि

उन्हे क्यो लिखना चाहती है। नाम तो उन्होने पहले से ही दे रखे है। बापू का मत है कि ज्यादा कडा जवाब होना चाहिए। मीराबहन आज उत्तर तैयार कर लाईं, मगर वह काफी कडा नहीं था। अब दूसरा उत्तर लिखने का प्रयत्न करेंगी।

आज बापू ने सीताफल (शरीफा) के बीज बोए। पाच गड्ढे खुदवाए थे। तीन में दो-दो बीज बापू ने डाले और दूसरो में डा० गिल्डर से डालने को कहा। पाच बीज बाकी थे। डाक्टर साहब ने तीन एक गड्ढे में और दो दूसरे गड्ढो में डाले। पानी डालकर हम लोग वापस आ गए। महादेवभाईकी समाधि के चारो ओर भी सीताफल बोने के लिए गड्ढे खुदवाए है।

१९ सितम्बर '४३

सुबह खेलने के समय वर्षा हो रही थी। शाम को आकाश खुला था। थोडा खेल सके। आजकल अधेरा जल्दी हो जाता है। महादेवभाई की समाधि पर सवा सात बजे फूल चढाने आने का सुझाव कटेली साहब ने दिया है, क्योकि सर्पादि और दूसरे जगली जानवरो का डर है। इसलिए आज बापू जल्दी फूल चढाने गए।

कल शाम को मैं अपने तैल-चित्र के रग खोलकर देख रही थी। कचरे में से लकडी का एक टूटा टुकडा भाई को मिला, उसी पर मैंने एक पहाडी चित्र बनाया। सबको तस्वीर खासी जची। पहाडियो पर का सध्या-काल का दृश्य है। चित्र बनाना मुझे अच्छा तो बहुत लगता है, परतु समय निकालू तो कहा से! मुझे अभी कितना सीखना है! कितना काम करना है!

२० सितम्बर '४३

सुबह साढे चार बजे उठी। सवा पाच तक लिखा। इतने में बापू उठ गए। प्रार्थना के बाद सो गई। आज बापू का मौन है, इसलिए हमारी छुट्टी रही।

रसोईघर में मैंने रोटी बनाने में एक घटा लगाया। कल शाम को सिपाही .. ने रोटी नहीं बनाई थी, लेकिन आज बनाने को तैयार है। उसकी छुट्टी के रोज उसे रोकना मुझे ठीक नही लगा, तो भी सुबह वह रसोईघर मे ही रहा। उसने बताया कि उसने एक दूसरे सिपाही के साथ दूधी (घिया) का मुरब्बा बनाया और कमरे में रख आया है। शाम को मैंने देखा तो मुरब्बे का चौथा हिस्सा भी नही रह गया था। बा ने सिपाहियो के जमादार से कहा, "सिपाही लोग बेचारे . का मुरब्बा खा गए होगे।" इस पर जमादार ने .. को खूब डाटा कि उसने शिकायत की है। बेचारा रोने जैसा हो गया। एक तो मुरब्बा गया और दूसरे डाट खानी पडी।

दोपहर को मैंने 'मून वॉयेज'* (Moon Voyage) पुस्तक पूरी कर ली, शाम को चित्र पूरा करने गई, मगर अधेरा जल्दी हो गया। अधेरे में पूरा करने को कोशिश

---

*फ्रासीसी लेखक जूलसवर्न का उपन्यास, जिसमे पृथ्वी से चद्रलोक तक की यात्रा का वैज्ञानिक आधार पर काल्पनिक वर्णन आता है।

की। कल दिन में पता चलेगा कि वह सुधरा या बिगडा।

२१ सितम्बर '४३

चित्रकारी का अभ्यास मैं सोमवार के दिन ही करती हू, मगर भाई कहते हैं कि तस्वीर जल्दी पूरी करू तो अच्छा हो। मैंने उनके पास से सुबह का वक्त लिया। वे बापू की मालिश में गए। मैं चित्र बनाकर पौने बारह बजे लौटी। आकर जल्दी खाना खाया ताकि रामायण में ज्यादा देर न हो। भाई ने बापू से जाकर कहा, "इसे रामायण न कराइए। जल्दी खाना खाती है।" बापू को पहले से ही बुरा लग रहा था कि आज कार्यक्रम तोडकर चित्रकारी का अभ्यास करने को गई। खूब डाट पडी। बोले, "अगर जाना ही था तो मुझसे पूछ लेना चाहिए था।" मैंने गलती स्वीकार की। नतीजा यह हुआ कि रामायण केवल पन्द्रह ही मिनट हुई।

२२ सितम्बर '४३

सुबह घूमते समय बापू मीराबहन के साथ बातें करने लगे। मीराबहन बोलीं, "सरकार आपकी अहिंसा को पहचानती नहीं है। थोडी हिंसा देखकर उसे लगता है कि सब हिंसा-ही-हिंसा है। क्यो न हो, आखिर आपको भी तो इतने वर्ष यह पहचानने में लगे कि हिंसा के बीच अहिंसा काम कर सकती है अथवा नहीं। आप तो कहते थे कि जरा भी हिंसा हो तो अहिंसा नहीं चल सकती।" बापू ने कहा, "हा, अगर वह इस चीज को पहचाने तो उसका व्यवहार दूसरा ही हो। और मुझे देर लगी, इसका मुझे अफसोस नहीं है। मेरे लिए तो यह मेरा स्वाभाविक विकास था। अन्य प्रकार से मैं इस तरह आगे चल ही नहीं सकता था। मुझे तो एक-एक कदम टटोलकर चलना है न! नया रास्ता निकालना है, सो इसी तरह मैं प्रगति कर सकता हू।"

२३ सितम्बर '४३

आज सुबह ग्यारह बजे स्नान-घर में मैं नहाने के टब में खडे होकर फव्वारे के नीचे स्नान कर रही थी। पैर में साबुन लगाया था। इससे फिसली और टब में गिरी। सिर टब के किनारे पर लगा। घडी भर बेसुध-सी रही, मगर ठढा पानी तो ऊपर से पड ही रहा था, इसलिए होश में आ गई। पर उठा नहीं जाता था। सिर में खूब चोट आई थी। मुश्किल से साबुन धोकर कपडे पहने और आकर बा की खाट पर सो गई। किसी की आवाज सहन नहीं होती थी, इसलिए भाई के कमरे में दरवाजे बन्द करके दिन भर पडी रही। दिमाग को चोट लगी थी। उठने या चलने से या आवाज से तकलीफ होती थी। बोलना तो बहुत ही बुरा लगता था। थोडी और चोट आई होती तो खोपडी फूट गई होती और मैं चल दी होती। बापू का जन्म-दिन बिगडता।

शाम को हिम्मत करके उठी और कतरनो में कुछ पचिया लगाई। पीछे बहुत ही धीरे-धीरे चली। आवाज से सिर में धक्का-सा लगता था। रात को प्रार्थना में भी नहीं बैठ सकी। नींद अच्छी आई।

: ५७ :

जेल में बापू का दूसरा जन्मदिन

२४ सितम्बर '४३

आज भी पडी रही और दोनो वक्त की प्रार्थना में नही बैठी । खाने को उठी । बाद में कतरनो का काम किया । रसोईघर का काम देखा । पढना-लिखना वगैरा कुछ नहीं किया । मगलवार की रात को हम लोग विचार कर रहे थे कि बापू के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में क्या करना चाहिए । भाई कहने लगे कि हम सब धर्मो का एक मदिर बनाकर उसे अच्छी तरह सजावें। मैंने इसमें जोडा, "और हम सब धर्मो के प्रतिनिधि बनकर बापू का साल-मुबारक कहने जावें । उस मदिर में बापू के दीर्घायु होने की प्रार्थना करें।" भाई को यह पसद न था। बापू को किसी तरह की कृत्रिमता पसन्द नही है और अभिनय से अरुचि है । मीराबहन आदि खेल रहे थे। मैंने मीराबहन से जाकर बात की । वे कहने लगीं, "धार्मिक चीज यानी प्रार्थना आदि के साथ अभिनय की चीज को मिलाना मुझे अच्छा नहीं लगता। अगर कुछ देशो के नेताओ वगैरह की नकल हो तो ठीक है ।" मैंने कहा, "तो ऐसा ही कीजिए । डा० गिल्डर को स्टालिन और कटेली को रूजवेल्ट बनाइए । आप स्वय च्याग काई-शेक बनिए ।" वे बोलीं "तुम मैडम च्याग काई-शेक बन जाओ । उसका भी तुम्हारी तरह छोटा कद है और बाल कटे हुए । प्यारेलाल को चर्चिल बनना पडेगा । वही एक मुछकटा है।" "मगर वे सब लोग मोटे है। हमसे ऐसा मोटा कैसे बना जाए ? सब अपने-अपने काम का विचार करें ।" यह कहकर मैं साढे दस बजे लौटी ।

दूसरे रोज भाई बोले, "मुझे तो अभी भी यह नहीं जचता । मैं मीराबहन से बात करूगा ।" मीराबहन से उन्होने बात की तो उन्होंने सब धर्मो के मदिर की बात पसद की । भाई ने कागज का मदिर बनाने को कहा, पर मीराबहन ने मिट्टी का बनाने का विचार किया । सब धर्मो के प्रतिनिधि भी बापू को साल मुबारक कहने आए । मदिर में प्रार्थना करने हम लोग न जावें, यह उनकी सलाह थी । मीराबहन कहने लगी, "सुशीला को फ्राक और टोपी पहनाकर पारसी लडकी बनावेंगे । मैं सिख बन जाऊगी, डा० साहब पठान, प्यारेलाल क्रिश्चियन और मनु हिन्दू साधू ।"

मनु के बाल लम्बे होने के कारण आखिर उसे ही पारसी लडकी बनाने का विचार किया गया । मुझे रोमन कैथोलिक साधु और भाई को मद्रासी ब्राह्मण बनाने की सोची । भाई की नापसदगी जारी थी। कहने लगे, "मुझे तो अच्छा नही लगता । करना ही है तो मुझे छोड दो ।" मै चुप रही । शाम को मीराबहन मुझे बुलाकर ले गई और क्या करना

चाहिए, यह सोचने लगीं। मैंने कहा, "भाई से पूछ लो तब पीछे कुछ तय करेंगे।" रात को मै बैठी अखबार पढ रही थी। भाई जल्दी सो गए थे। मुझे कल और आज दिन भर सोने के कारण रात को नींद नहीं आ रही थी। इतने में मीराबहन आकर बातें करने लगीं। उनके हाथ में दर्द अभी तक होता है। आज ज्यादा था। बोलीं, "वह विशेषज्ञ चला गया है। दो चार बार और कसरतो वाला इलाज करता तो मेरा हाथ अच्छा हो जाता।" मैंने कहा, "डा० गिल्डर से क्यो नहीं इलाज करातीं?" कहने लगीं, "नहीं, इन्होने ऐसा काम किया नहीं है। उस विशेषज्ञ का गुण तो उसीके साथ गया। मीराबहन को डर है कि कहीं गर्दन उतर (dislocate) न जाए।" मैंने कहा, "गणपति के दिन है। हाथी का सिर तो यहा नहीं मिलेगा, मगर किसी बकरी का पसद कर लो तो वह लगा देंगे।"

आज पता लगा कि मीराबहन को सचमुच यही डर है। मैंने समझाने की कोशिश की कि डरने की आवश्यकता नही है, पर उन्हे सतोष नही हुआ। बोलीं, "आखिर गर्दन तो मेरी है। मै कोई खतरा उठाना नही चाहती।"

२५ सितम्बर '४३

आज भी सुबह प्रार्थना में नही उठी। रात को नींद बहुत देर से आई थी। साढे तीन बजे बा को बडी खासी आई थी, तब उठी थी। उसके बाद अच्छी नीद आई, सो सुबह तक सोती रही। सुबह भाई फिर कहने लगे, "स्वाग भरने में मैं भाग नहीं लेना चाहता।" मीराबहन से भी यही कह आए। मैंने समझ लिया कि यह प्रस्ताव अब गया। पारसी कपडे मगाए थे, सो लौटा दिये। भेजकर आ रही थी कि मीराबहन ने मुझे बुलाया। कहने लगीं, "पूरा स्वाग हम करेंगे।" मैंने कहा, "मैंने तो कपडे लौटा दिये।" बोली, "वापस मगवाओ।" मैंने कहा, "अब आप ही मगवाइए।" उन्होने जाकर मगाए। फिर अपनी एक सलवार डा० साहब को दी। उन्होने एक सफेद कुर्ता, ऊपर से वास्कट व चेक का एक लम्बा कोट पहना। भाई ने पगडी बाध दी। डाक्टर साहब खासे पठान बन गए। मीराबहन ने डा० साहब की पतलून, लाल कुर्ता, सफेद कोट और अपने ओढने की लहरियादार पगडी पहनी। कोट के ऊपर की जेब में रेशमी रूमाल बाहर झाक रहा था। भाई ने मेरे कटे बालो की दाढी बनाकर उन्हे दी। पेंस्टिल रग से मूछ बनाई। बस, दयालसिंह कॉलेज का सिख जवान तैयार हो गया। उसी तरह से अकड कर चलती थी। हसते-हसते हमारे पेट में बल पड गए। मनु को पारसी कपडे पहनाये गए। मैंने मीराबहन का एक लम्बा काला-सा ऊन का चोगा पहना। कमर में रस्सी बाधी। पेंस्टिल से कुछ नई जमती हुई दाढी-मूछ मीराबहन ने बना दी। खिस्ती साधुओ के जत्थे में दाखिल होने वाला नया नवयुवक तैयार हो गया। भाई आज तैयार नही हुए।

फैसला किया गया कि नवयुवक साधु एक गुलदस्ता और ईसाई धर्म फैलाने की किताबें भेंट करे। पारसी लडकी फल दे। सिख जवान हलुवा और मिठाई तथा पठान सूखी मेवा और मद्रासी ब्राह्मण नारियल व नीबू भेंट करे।

कल कैदियो को देने के लिए बेसन की मिठाई और चिवडा मैंने और मनु ने मिल कर बनाया। बहुत थक गई। रामायण पढी। बापू ने बाइबिल पढी और मैंने सुनी। सुनते-सुनते कतरनो का काम भी करती रही। दोपहर सो नहीं सकी सो साढे तीन बजे सो गई। डर था कि आज रात को जागना ही होगा, इसलिए दिन में जो नीद न ली तो काम बिगडेगा। शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "पिछले साल तुम लोग रात भर जागे थ, इस बार मत जागना।" भाई कहने लगे, "बापू, सारा साल आपका, एक रात हमारी।" मैंने कहा, "बापू, कल के कार्यक्रम का निश्चय कर ले।" कार्यक्रम की बात के सामने और बाते टल गईं।

आज शान्तिकुमारभाई के यहा से सामान आया। बापू की तीन धोतिया, हाथ पोछने के दो रूमाल, एक छोटा रूमाल और एक नारियल। नारियल पर स्वस्तिक का चिह्न था और उसे एक पीली पगडी पहनाई हुई थी। साथ में सुदर सूत का कता एक हार था।

रात को भाई ने जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट के नाम एक खत लिखा। डा० गिल्डर ने उसे टाइप किया। दोनो ने मिलकर सबके नये नाम रक्खे। भाई ने सबके विजिटिंग कार्ड तैयार करने का काम अपने ऊपर लिया।

दोपहर मैंने सिपाहियो और कैदियो के लिए थालियो में मिठाई रखी। रात को मीराबहन, मनु और डाक्टर साहब की भेंट के लिए सामान तैयार कराया। भाई ने बरामदे में श्लोक लिखे। मीराबहन ने दोनो किनारो पर रेखाए खीचीं। मैंने उन पर रागोली डालकर उसे पूरा किया। पहले सफेद रागोली से श्लोक लिखना आरम्भ किया, मगर सफेद सगमरमर पर वह अच्छा उठता नहीं था। मीराबहन ने कुछ कुकुम, कुछ गुलाल और सफेद रागोली, सब मिलाकर बहुत सुन्दर हल्का तरबूजी रग बनाया। मेरा काम रात के दो-ढाई बजे पूरा हुआ। डेढ बजे मीराबहन आईं। मेरे लिए अभी तीन लाइनें और आखिर का ॐ पूरा करना बाकी था। इसलिए मीराबहन ॐ बनाने लगीं। उन्हे पौन घटा लगा होगा। उतने समय में मैंने तीनो लाइनें करीब-करीब पूरी कर लीं। दो-तीन शब्द रह गए थे। पूरा करके हम लोग सोने को चले। ढाई बज चुके थे।

बरामदे की सजावट पूरी हुई तो इस तरह की थी——नीली पेन्सिल के निशान सफेद रागोली के थे, स्याही के निशान तरबूजी रागोली के, लाल पेन्सिल के निशान गुलाल के।

बापू के कमरे की तरफ से शुरू करके पहले कमल का-सा आकार बनाया, फिर लिखा:

सत्यमेव जयते नानृतम्
जीवेम शरद शतम्
पश्येम शरद शतम

श्रृणुयाम शरद शतम्
अदीनास्याम शरद शतम्
प्रब्रवाम शरद शतम्
भूयश्च शरद शतात्
असतोमा सद्गमय
तमसोमा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृत गमय

अत में ॐ और स्वस्तिक के चिह्न अकित किये। बापू घूमनेको निकले तव सामने से यह सव पढ सके, इस तरह लिखा था।

२६ सितम्बर '४३

सवेरे पाच वजे वापू ने मुझे प्रार्थना के लिए उठाया। वापू को प्रणाम करके प्रार्थना की तैयारी की। मनु प्रणाम करना भूल गई। प्रार्थना के लिए सव लोग वैठ गए, तव मैंने उसे याद दिलाया। वह समझती थी कि जव हार देंगे तभी प्रणाम भी करेंगे। जव मैंने कहा तव भागी-भागी गई। वापू खाट पर लेट गए थे। वहीं जाकर प्रणाम कर आई।

साढे छ वजे डा० गिल्डर उठे। विजिटिंग कार्डों पर नाम टाइप करना वाकी था। भाई रात में नहीं टाइप कर सके, क्योंकि आवाज होती थी। मैंने डा० गिल्डर को टाइप करने को कहा। उन्होंने तैयार कर लिया।

सात वजे कटेली साहव आए। वे पारसी पगडी और लम्वा सफेद कोट पहने थे। एक सुन्दर, हाथ के वने वटुवे में ७५) रु हरिजन-फण्ड के लिए वापू को भेंट किये और प्रणाम कर गद्गद् कठ से कहने लगे, "वहुत जीओ और आपके मनोरथ सफल हो। आपकी फतह के लिए मै दुआ करता हू।"

सुदर दृश्य था। डाक्टर साहव ने खत तैयार करके मुझे दिया और मैंने कटेली साहव को दे दिया। उसमें वापू को उनके जन्म-दिवस पर वधाई देने के लिए भेंट करने की सरकार से आज्ञा मागी थी।

जल्दी से चाय-दूध पीकर हम लोग अपने-अपने कपडे पहनकर चले और डाइनिंग रूम के खाली हिस्से में जा वैठे। कटेली साहव वापू के पास खत लेकर गये। वापू ने मेहमानों से मिलने आने में थोडी देर लगाई। मुझे डर लगा कि वापू को कहीं यह सव नापसन्द न हो। मगर वापू तो अपना काम पूरा करके उठना चाहते थे, ताकि सीधे घूमने को जा सके। वापू आकर खडे हुए। हसते-हसते वोले, "आप लोग कहां से आए हैं?" पहले जेरवाई (मनु) वैठी थी। वह अपनी फल की टोकरी लेकर उठी और वोली, "महात्माजी, साल मुवारक।" उसके वाद व्रदर लॉरेंस (मैं) वैठे थे। वह अपना गुलदस्ता और 'माउण्ट आव व्लेसिंग्स' भेंट करते हुए वोले, "भगवान करे, आप दीर्घायु हो।" पीछे रामाचुल्लू नाम्वूद्रीपाद (भाई) वैठे थे। अपने नारियल और नीवू की भेंट लेकर।

कोखती* पहने बैठे थे। मलयाली भाषा का अभिनय करते बोलते हुए बापू के सामने लेट गए और साष्टांग प्रणाम किया और भेंट दी। फिर सरदार शमशेरसिंह (मीराबहन) मिठाई का थाल भेंट करते हुए 'सत् श्री अकाल' बोले और आखिर में सरदार सिकंदर अकबरखान (डा० गिल्डर) सूखे मेवों और सेवों की टोकरी लेकर आगे आए। बोले, "तोंडा माशे मलग बाबा †।" और हाथ मिलाया। सब लोग हंसते-हंसते लोट-पोट हो रहे थे। बापू और बा भी बहुत हंसे। बापू कह रहे थे कि सबका भेस सम्पूर्ण था।

बापू मेहमानों को साथ लिये महादेवभाई की समाधि की ओर चले। नीचे उतरे तो सिपाहियों की कोठरियों के पास आने पर कटेली साहब ने जोर से पुकारा, "जमादार किधर है ?" बेचारा . तैयार नहीं था। उन्होंने फिर पुकारा, "जमादार किधर है ? बाहर के आदमियों को कैसे आने दिया ?" . आखें मलते-मलते जल्दी से कपडे पहनकर निकला। श्री कटेली उससे फिर वैसे ही बोले। उस बेचारे का चेहरा देखने लायक था। पीला पड गया। इतने में सब लोग हंस पडे। बाद में कह रहा था कि उसने डा० साहब और मीराबहन को तो बिलकुल ही नहीं पहचाना।

समाधि पर फूलों का एक हार महादेवभाई की तरफ से बापू को पहनाया। फूल चढाकर और प्रार्थना करके वापस लौटे। मीराबहन अपनी बकरियों को सजाने लगी। मैं और मनु ऊपर आए। कपडे बदले। मुझे तो वह ऊनी पोशाक बहुत चुभ रही थी। बकरियों के लिए बिस्कुट लेकर नीचे गए। सब बकरियों को हार भी पहनाए गए थे। अच्छी दिखती थीं। तीन ने बिस्कुट खाए। बाकी को बिस्कुट पसंद न थे।

बापू ने कहा था कि आज खेलना जरूर चाहिए। जाली लगवाकर हम लोग बेडमिन्टन खेल आए।

आज बा ने बापू के हाथ के कते सूत की लाल किनारी की साडी पहनी। मनु बता रही थी कि जब सेवाग्राम से वह जाने लगीं तब बा ने उससे कहा था, "यह साडी जानकीबहन के यहां रख दो। यहां कहीं जब्ती वगैरह हो तो यह सुरक्षित रहे। मरते समय यही मेरी देह पर हो।"

मनु ने और मैंने भी लाल किनारी की साडी पहनी। अच्छा लगा।

घूमने से लौटकर भाई और डा० गिल्डर ने बापू की मालिश की। मैंने कैदियों के लिए खाना पकवाने का सामान निकाला। फिर सुबह जो मिठाई आदि आई थी, वह सम्भाली। बापू के लिए बाजरे की खिचडी चढाई।

बापू ने कहा था, "देखो, ऐसा न करना कि हम लोग स्वाद के चक्कर में पड जाएं। हमें तो ऐसा कार्य करना है जिससे यह जाहिर हो कि हम असलियत में बंगाल के भुखमरे लोगों की विपदाओं में हिस्सा बंटा रहे हैं।" सो यह तय हुआ कि हम सब लोग

---

* ओढने का वस्त्र जिसे ट्रावनकोर की यात्रा में इस्तेमाल किया था।

† पठान अभिवादन, जिसका शाब्दिक अर्थ है, "आपको कभी थकान न हो।"

बाजरा खाए। कैदियो के लिए भी बाजरे की खिचडी, सब्जी और कढी पकाई गई। बापू के लिए सादी खिचडी बिना छौंक और मसाले के तैयार की और उसीमें थोडी-सी सब्जी भी डाल दी। बा, मीराबहन और मैंने उसीमें से थोडी-थोडी ले ली। मनु और भाई ने कैदियो वाला खाना खाया। मैंने और डा० गिल्डर ने भी कढी चखी। उसमें बहुत मिर्च थी।

बापू स्नान करने निकले। उस समय हम लोग अपने-अपने सूत के हार तैयार कर रहे थे। एक बापू के लिए और दूसरा बा के लिए। हारो के नीचे गेंदे का एक-एक फूल लगाया और गुलाल के ७५ टीके। साढे ग्यारह-पौने बारह बजे सब तैयार होकर गए। डा० गिल्डर ने स्वतन्त्रता के दिन, राष्ट्रीय सप्ताह आदि के अवसरो पर जो सूत काता था, उसका एक छोटा-सा हार बनाया। पहले बा ने बापू के टीका लगाकर हार पहनाया, फिर डा० गिल्डर, मीराबहन और कटेली साहब ने फूलो का हार पहनाया, फिर भाई ने। आखिर में मैंने और मनु ने बापू और बा के टीका किया और हार पहनाया।

डा० गिल्डर और कटेली साहब भी पीछे टीका करने आए और बा के लिए चप्पल, लकडी का चम्मच और कांटा, अपने यहा के पेड के नारियल और गुड और गेहू की एक-एक कटोरी लाए थे। उनके फूलो के हार बहुत ही सुन्दर थे। एक चन्दन की माला भी लाए थे। बापू और बा फूलो के ढेरो में बहुत ही सुन्दर दीख पडते थे। सुबह शातिकुमारभाई के यहा से फूलो की टोकरी आई थी। रघुनाथ भी बाहर से फूल लाया था। मीराबहन ने कमरे में उन्हें सजाया। सिपाही लोग तोरण सवेरे ही बाध गए थे। कमरा महक रहा था।

इसके बाद प्रार्थना में बैठे। पहले 'ओ गॉड आवर हेल्प इन एजेज पास्ट' गाया। फिर 'मूक करोति वाचाल', 'ईशावास्य मिद सर्वं', 'अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्', 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव', 'असतो मा सद्गमय' आदि श्लोक* गाए।

---

*(१) अग्ने नय सुपथा राये अस्मान
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठा ते नम उक्तिं विधेम॥

'सब मार्गो के जानने वाले हे अग्निदेव! जिस रीति से हमें (अपने) ध्येय की (निश्चित) प्राप्ति हो, उस रीति से, तुम हमें अच्छे रास्ते ले चलो। हमसे हमारे कुटिल पापो को अलग कर दो (मिटा दो)। हम तुम्हें बार-बार नमस्कार करते है।'

(२) ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतंगमय॥

'हे प्रभो! मुझे असत्य से सत्य में ले जा। अंधेरे से उजाले में ले जा। मृत्यु से अमरता में ले जा।'

श्लोकों के पाठ के बाद 'अउज अविल्ला' और 'वैष्णवजन तो तेने कहिए' गाये और राम-धुन चलाई। सब कुछ भली प्रकार सम्पन्न हुआ। तब बापू को खाना खिलाया। बा भी बैठ गईं। दोनों ने साथ खाया। खाने के बाद सिपाही हार पहनाये आए। सबको एक-एक संतरा और एक-एक मोसम्बी दी। इतने में कैदियों का खाना आया। खिचड़ी, कढ़ी, सब्जी और एक-एक मोसम्बी सबको दी। पीछे हम लोगों ने खाया। पौने दो बजे लेटी, मगर नींद न आई। ढाई से साढ़े तीन तक काता। सूत उतारकर कतरनों के काम में बैठ गई। आज सबका संकल्प था कि सब लोग मिलकर पर्चियां चिपकाने का काम पूरा करें। साढ़े चार बजे बापू ने बाइबिल पढ़ी। मैंने सुनी।

पांच बजे कैदियों की चाय तैयार हो गई। सबको बेसन की मिठाई, चिवड़ा, गाठिया,* नमकीन सेव और चाय के दो-दो प्याले दिये। सिपाहियों को मिलाकर ३२ आदमी थे। इन्हें भी खिलाया। साढ़े पांच बजे कतरनों का काम पूरा हुआ।

बापू को दूध दिया और हम लोगों ने खाखरा, दूध तथा फल खाए। इतने में वर्षा आ गई। खेलना तो हो ही नहीं सकता था।

मीराबहन शाम के चार बजे से मिट्टी का सार्वधार्मिक मंदिर बनाने में लगी थीं। भाई भी मदद कर रहे थे। दोनों घूमने नहीं आए। आठ बजे घूमकर लौटे तो बापू के कमरे का दरवाजा बन्द था। वहां मंदिर सजाया गया था। लकड़ी के एक पट्टे पर गीली मिट्टी की तह जमाकर उसके ऊपर एक तरफ मस्जिद, एक तरफ गिर्जाघर और बीच में महादेव का मंदिर बनाया था। उसके पास ही सरकण्डों के छिलकों का मण्डप बनाकर उसके अंदर पीले कनेर के फूलों से अगियारी† का स्थान बनाया था। सामने बगीचा। फूलवाली छः-छः नौ-नौ इंच की छोटी टहनियों को गीली मिट्टी में गाड़कर बगीचा बनाया था। आटे के छोटे-छोटे दीपक बनाकर उनमें घी की बत्तियां सामने और दाएं-बाएं रखकर जलाई थीं। बापू प्रार्थना के लिए भीतर आए तब बिजली बन्द थी। वहां छोटे-छोटे दीपक जल रहे थे। पीछे की तरफ जंगली झाड़ियों के गमले और सामने दोनों तरफ फूलों के गमले थे। सुन्दर

---

(३) त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

'हे देवों के देव! तू ही मेरी माता है, तू ही मेरा पिता है, तू ही मेरा भाई है और तू ही मेरा मित्र। तू ही मेरी विद्या है, तू ही मेरा धन है और तू ही मेरा सब कुछ है।'

*बेसन की बनी नमकीन।

†पारसियों का पूजा-गृह।

दृश्य था। कमरे के बीच-सामने फूलो का 'ॐ' और उसके दोनो तरफ फूलो के 卐 स्वस्तिक बने थे। जितने फूलो के हार इत्यादि आए थे, वे दीवारो पर लटका दिये गए। कमरा फूलो से महक रहा था। बडा अच्छा लगता था। प्रार्थना में पहले 'ह्वेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रॉस' गाया गया, फिर हमेशा की तरह प्रार्थना हुई। 'हरि ने भजता हजी कोई नी लाज जती नथी जाणी रे' भजन गाया। मीराबहन ने 'गोपाल राधेकृष्ण' 'गोविन्द गोविन्द गोपाल' की धुन चलाई। प्रार्थना के बाद बापू की सिर-पैर की मालिश इत्यादि करके सब लोग सो गए। बहुत थके थे।

२७ सितम्बर '४३

सुबह उठकर कल का बनाया हुआ दृश्य देखा तो विचार आया कि स्वप्न-चित्र की तरह यह सब विलीन हो जायगा। उसकी स्मृति को स्थायी कैसे बनाया जाय, यह सोचते हुए भाई मुझसे कहने लगे, "इस मदिर की एक तस्वीर बनाओ।" मै अपने तैल वाले रग और ब्रुश लेकर बैठी और सवा ग्यारह तक काम किया। फिर बापू का खाना लाने को गई। दोपहर कुछ अखबार देखे, कुछ पढा, डायरी लिखनी शुरू की। समय बीत गया।

शाम को बा के साथ प्रार्थना के बाद रामायण का अर्थ करके मैंने गीताजी के श्लोको का अर्थ किया।

आज मुझे बुखार-सा लगता था, इसलिए जल्दी सो गई।

सुबह हम लोग बापू के कमरे से फूलो के हारो और गुलदस्तो का ढेर महादेव-भाई की समाधि पर ले गए। खूब सजावट की। सुन्दर दृश्य था।

२८ सितम्बर '४३

सुबह साढे ग्यारह बजे तक मैंने चित्रकारी की। डा० गिल्डर की तबीयत अच्छी न थी, इसलिए बापू की मालिश भाई ने और मैंने की। पौने दस बजे तक बापू के कमरे में बा की मालिश होती है। कमरा बन्द रहता है। उसके बाद ही चित्रकारी हो सकती है।

दोपहर बाद मनु को मैंने अग्रेजी सिखाई। कुछ स्वय पढा और कुछ कतरनो का काम भी किया।

आज सुबह कलक्टर और डा० शाह ने मदिर देखा। कलक्टर ने कहा, "मेरे खयाल में ये फूल इसी बगीचे के हैं।" डा० शाह देखकर खुश हुए।

२९ सितम्बर '४३

आज मदिर मीराबहन के कमरे में चला गया। साढे नौ बजे चित्रकारी करने बैठी और साढे ग्यारह बजे तक की। बाकी दिन का कार्यक्रम हमेशा जैसा ही रहा।

शाम को अधेरा जल्दी हो जाता है। कल कटेली साहब ने बापू को सूचना की

कि घूमने को सात बजे निकलें ताकि पौने आठ बजे वापस आ सकें। कल डा० साहब खेलने का समय पाच से छ बजे का करने को कहते थे। पहले तो मैंने इन्कार किया। साढे पाच बजे बापू को खाना देना होता है और पाच से साढे पाच तक उनके पास पढना, मगर बापू को पता लगा तो उन्होने आग्रहपूर्वक पाच का समय रखने को कहा। बापू शाम को साढे छ बजे कातेंगे। उसी समय पढने का क्रम रखा जायगा। खाना वे पौने छ बजे लेंगे। मैं पौने छ बजे वापस आ जाया करूगी, यह तय हुआ। आज पाच बजे खेलने को गए। नीचे कोर्ट गीला था। ऊपर बरामदे में खेले।

बापू का खाना पौने छ बजे हुआ और कातना साढे छ से सात तक। सात बजे वे घूमने चले गए। पौने आठ से सवा आठ तक मैंने भाई के साथ इतिहास पढा। प्रार्थना के बाद अखबार इत्यादि देखे। बैठी थी कि जोर से आधी, तूफान और वर्षा आई। बाहर पडे हुए सब बिस्तर अन्दर लाने पडे। सब लोग अन्दर ही सोए। मच्छरो ने सबको खूब हैरान किया।

आज अवन्तिकाबाई गोखले के यहा से बापू के लिए दो जोडी धोती आईं। बापू कहते थे कि जरूर आवेंगी। आज तक वे इसमें कभी चूकी नही है।

३० सितम्बर '४३

आज भी सुबह साढे ग्यारह तक चित्रकारी की। कल बापू ने कहा था कि एक दिन से ज्यादा और समय चित्र के लिए नहीं मिलेगा, मगर मैं पूरा नहीं कर पाई। बापू से पूछकर कल उसे पूरा करने की इजाजत ली है। चित्रकला ऐसा काम है कि इसे उठाओ तो दूसरा कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो जाता है। सुबह का सारा वक्त इसमें चला जाता है।

दोपहर को आज मनु की परीक्षा थी। कल उसे प्रश्न लिखाए थे। आज उसने उत्तर लिखे और मेरे पीछे पड गई कि अभी देख दो। मैंने रात को प्रार्थना के बाद देखा। वाक्य बनाने वाला प्रश्न उसने बहुत खराब किया था। दूसरे अच्छे थे। दिन भर से शोर मचा रही थी—"मैं फेल हुई तो रात को पढा करूंगी।" उसकी आखें कमजोर हैं, इसलिए रात को पढने से बापू मना करते हैं।

मनु पास हो गई, तो भी रात में पढने की इजाजत बापू से मागने लगी। मगर बापू कब इजाजत देने वाले थे। रात को दिलरुबा बजा सकती है, इतनी इजाजत उन्होने दी।

दिन का कार्यक्रम कल के जैसा चला। भाई के साथ शाम को इतिहास पढा। प्रार्थना के बाद अखबार देखे। सोने को बहुत देर हो गई। नींद आने में और देर लगी। साढे बारह बजे के बाद सो सकी। बुरा लगा।

१ अक्तूबर '४३

सुबह चाय के समय कटेली साहब कहने लगे, "२२ अक्तूबर को डा० गिल्डर

का जन्म-दिन है। उस दिन क्या करना है?" दो विचार मुझे आए। उनमें से एक तो बाद में रद्द हो गया और दूसरा स्वेटर तैयार करने का अभी है, सो अच्छी ऊन मिली तो तैयार करेंगे।

आज मैंने पौने बारह बजे तस्वीर पूरी की। भारी बोझ सिर पर से उतरा। फिर दोपहर को बैठकर डायरी पूरी की।

अब दो अक 'सोशल वेलफेयर' के और एक 'मेडिकल जर्नल' पढ़ने को है। फिर पिछड़ा हुआ पढ़ने का काम खतम हो जायगा।

कल शाम को भाई पृथ्वीचन्द का पत्र आया। उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। लिखा था कि उन्होंने सरकार को तार-पर-तार दिये, पर समय पर न छोड़े जाकर वे पत्नी की मृत्यु के बारह दिन बाद पेरोल पर छोड़े गए। हिन्दू स्त्री के लिए मृत्यु से पहले पति का दर्शन बड़ी चीज है। बहुत करुणाजनक घटना है। भाई पृथ्वीचद बड़े अशात हैं। हम उन्हें पत्र भी नहीं लिख सकते। आखिर शाति देने वाला भगवान् ही तो है न!

२ अक्तूबर '४३

आज महादेवभाई को गए दूसरे वर्ष के छ हफ्ते पूरे हो गए।

३ अक्तूबर '४३

सुबह बहुत-से फूल तोड़े थे, मगर मैं पहुची तबतक बापू ने प्रार्थना शुरू करवा दी थी। उनके कहने से फूल वापस ले आए। शाम को फूलो की चार थालिया समाधि पर लेकर गए। बा कहने लगीं, "शकर भगवान् से कहना कि प्रसन्न हो और हमें जेल से निकालें।" बा हमेशा महादेवभाई की समाधि को महादेव या शकर भगवान् का मदिर कहती है। आज समाधि की सजावट बहुत सुन्दर हुई।

कल दोपहर को मैंने खाने के कमरे का सामान ठीक कराया। वह कमरा सामान का लगता था। सरोजिनी नायडू के समय में सजा रहता था, बाद में कटेली साहब ने कुछ सामान वहा रखवा दिया। इससे कमरा भद्दा लगने लगा। आज सब सामान जब ठिकाने लगवाया तो कमरे की शकल बदल गई।

अभ्यास वगैरह फिर से नियमित शुरू हुआ है। अच्छा लगता है। लिखना कल से शुरू करूगी।

४ अक्तूबर '४३

आज मैंने मालिश से छुट्टी ली। सुबह इतिहास पढ़ा। दोपहर सारा समय सस्कृत-व्याकरण पढ़ती रही। शाम को कतरनो का काम करने और कातने के समय भाई प० जवाहरलालजी की 'ग्लिम्प्सेज आव वर्ल्ड हिस्ट्री' ('विश्व इतिहास की झलक') पढ़कर सुनाते रहे। कार्लाइल की किताब लाइब्रेरी से फिर से निकालने के लिए कहा है।

रात को अखबार आदि देखे ।

५ अक्तूबर '४३

सुबह प्रार्थना में पौने छ बजे उठे । पीछे सोने का सवाल ही नहीं था ।

बापू की मालिश के बाद इतिहास पढा । दोपहर एक घटा डाक्टरी अभ्यास किया और आधा घटा अखबार पढा । बापू अपनी कतरनो के काम में लगे हैं । भाई को अब यह बहुत अखरता है । 'बापू का समय क्या ऐसी चीजो में लगने देना ठीक है ?' यह सवाल उन्हे सताता है, मगर बापू अब उसे छोडने को तैयार नहीं । आज मैंने पूछा, "इन कतरनो पर इतनी मेहनत होती है । इनका उपयोग कितना होगा ?" बापू कहने लगे, "यह तो तुम लोग जानो । प्यारेलाल तो उपयोग करेगा ही । मैं नही करने वाला हू । मगर मैंने अपने जीवन में ऐसी बहुत-सी चीजें की है, जिनका उपयोग मेरे अपने लिए नही था । "

बापू पाखाने चार दफा जाते है । उस समय वे जवाहरलालजी का लिखा इतिहास पढते हैं—थोडी देर तक मालिश के समय भी पढते है । सब मिलाकर डेढ घण्टे से अधिक नही होता है । बाकी समय अखबार देखने या कतरनो की अनुक्रमणिका बनाने के काम में लाते हैं । एक घटा मेरे और मनु के लिए निकालते हैं । दोपहर खाने के समय मेरे साथ उनकी रामायण भी होती है और मीराबहन बाइबिल का कुछ अश जो उन्हे अच्छा लगे या उनकी समझ में न आवे, पढकर सुनाती है । शाम को अखबार सुनाती है । आधा घटा बापू कातने के लिए निकाल लेते हैं तब भाई पढकर सुनाते है। दो-तीन रोज से करीब पौन घटा वा बापू से लेती हैं। गीता का उच्चारण सीखती हैं। बापू अर्थ भी बताते हैं । आजकल हम सब एक-एक मिनट नियमित हिसाब से काम में लगाते है ।

६ अक्तूबर '४३

शाम को साढे चार बजे खूब तूफान आया । वर्षा आई । दिन में बहुत गर्मी थी । तूफान के बाद ठढक हो गई ।

मैंने शाम को घूमना बद कर दिया है । सात बजे डा० गिल्डर के पास जाती हू । उन्हे कुछ डाक्टरी पाठ लिखने थे । मैंने कहा, "मुझसे लिखाया कीजिए, जिससे कि आप का काम भी हो जायगा और मुझे भी कुछ अनुभव और ज्ञान हो जायगा । साथ ही सभी चीजें दुहरा लूगी ।" उनके पास शाम का ही वक्त था । बापू ने इस काम के लिए घूमना छोडने की इजाजत खुशी से दे दी ।

सुबह बहुत-से फूल तोडकर बापू का कमरा सजाया । शाम को उन्हे समाधि पर ले गई । यह बापू की आज्ञा थी ।

७ अक्तूबर '४३

आज भी शाम को वर्षा और तूफान आए । सुबह आज भी नहीं खेल सके । कल भी नहीं खेल सकेंगे । शाम को ऊपर बरामदे में ही खेले ।

आज बा को बुखार है। मनु उनके पास थी— खेल में नहीं आई। हम पिंग-पॉंग खेल रहे थे। वर्षा शुरू हुई। मैंने सिपाही को बाहर के कपड़े उठा लाने को भेजा। थोड़ी देर में मीराबहन आकर नाराज होने लगीं, "वर्षा आई है। कपड़े भीगते हैं।" मैंने कहा, "मैंने सिपाही को भेज दिया है।" वे कहने लगीं, "एक आदमी क्या कर सकता है? सभी कुछ भीग गया है। मनु भी भीग गई है।" बाद में पता लगा कि कुछ भी नहीं भीगा था। मनु भी नहीं भीगी थी। सब आदमी बरामदे में ही थे और कपड़े उठा लिये गए थे।

बा को रात में १०२.४ डिगरी बुखार हो गया।

८ अक्तूबर '४३

आज से शाम को सवा सात से सवा आठ बजे तक डा० गिल्डर के पास जाने का समय रखा है। १५ मिनट घूमने के निकाले, बिलकुल न घूमने से स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। बा को आज बुखार नहीं है। मनु रात को अच्छी तरह सो नहीं सकी, बा के पास थी। दिन में बारह से साढ़े तीन बजे तक सोई। उसे सिखाने का समय मैंने भी सोने में खोया। पौने तीन बजे उठी। करीब एक घंटा सोई थी। परिणाम-स्वरूप रात को नींद बहुत देर से आई। तूफान आज भी शाम को आया, मगर छः बजे शुरू हुआ। हम लोग खेलना पूरा कर चुके थे।

९ अक्तूबर '४३

महादेवभाई को गए आज ५९ हफ्ते पूरे हो गए। दूसरे वर्ष के भी सात हफ्ते चले गए। सुबह बहुत-से फूल तोड़कर समाधि को सजाया। बापू ने हर शनिवार को पहले से जाकर सजावट करने को कहा।

१० अक्तूबर '४३

एक-दो रोज से बापू का यह क्रम रहने लगा है कि जवाहरलालजी का लिखा जितना इतिहास वे पढ़ते हैं, उसका सार मुझे दोपहर को सुनाते हैं, ताकि शाम को कातने के समय वह किताब पढ़ी जाय तो उसका क्रम बराबर मिल जावे। इससे मेरे सोने में देर हो जाती है, फिर उठती देर से हूं। मनु को देर तक सिखाती हूं। परिणाम-स्वरूप पढ़ने के लिए बहुत कम समय रह जाता है। आज मनु पत्र इत्यादि लिखने में बा के पास ही लगी रही, मुझे छुट्टी मिल गई। बापू के पास अनुक्रमणिका बनाने की सब कतरनें खतम हो गई हैं। अब नई मिलें तो आगे काम चले। भाई ने हर रविवार को नए अखबारों की कतरनें देने की बात की थी, मगर आज पूछा तो कहने लगे कि आज कतरनें काटने का काम करेंगे। देंगे कल से। आज वे काफी समय वही काम करते रहे।

११ अक्तूबर '४३

बापू का आज मौन था। भाई दिन भर कतरनों का काम करते रहे। शाम को मैं भी उनके साथ बैठी। रात को साढ़े ग्यारह बजे काम पूरा हुआ। करीब पौने दो

सौ कतरनें तैयार हुईं । अखवारी कालम की लम्बाई के बराबर कतरनो वाली पर्चिया वनी । कई-एक पर्चिया छोटी-छोटी पर्चियो को एक साथ जोडकर बनी थीं ।

शाम को खेलने के समय मैंने भाई से ३३ कतरनें लाकर बापू को दीं । उन पर नम्बर इत्यादि नहीं दिये थे । खेलने गई तो डा० गिल्डर, कटेली साहव, मीरावहन और मनु को पिंग-पौंग खेलते पाया । जल्दी वापस लौट आई और कतरनो पर नम्बर लगाए । इतने में वे लोग भी आ गए । भाई ने आज सव कामो से छुट्टी ली । पौने छः वजे जव मैं बापू को दूध वगैरह देने आई तो सवने खेलना वद कर दिया था ।

आज मैंने जुलाव लिया ।

१२ अक्तूबर '४३

आज बापू ने दो दिन की कहानी इकट्ठी सुनाई । बीस मिनट लगे, इतने में मीरावहन आईं । मगर बापू ने उन्हे यह कहकर भगा दिया, "तुम्हारे सोने का यह वक्त नहीं है, मगर मेरा है ।" मुझे लगा कि बापू कहानी न कहे तो अच्छा है । सोने को देर होती है । मैंने कहा भी, मगर वे माने नहीं ।

सोकर उठी तो कतरनें लेकर बैठी, फिर मनु को सिखाया । मैंने बापू को सुवह चालीस कतरनें दी थीं । सोचा था कि दिन भर चलेंगी, मगर उन्होने साढे ग्यारह वजे तक पूरी कर डालीं । मुझे अव दूसरी जल्दी तैयार करके देनी है । विचार किया कि अब सव पूरा करके ही उठना अच्छा है । भाई भी मेरी मदद करने आ बैठे । पाच वजे खेलने की घटी हुई । उस समय थोडा काम बाकी था । मैंने सोचा कि शायद आज भी ये लोग पिंग-पौंग खेलेंगे। काम पूरा करके ही उठना चाहिए । आज नीचे का कोर्ट खेलने के लिए तैयार था। सव लोग सीधे वहा गए थे। कुछ मिनट तक हमारी राह देखी। सिपाही को हमें बुलाने भेजा। मैंने कहलाया कि अभी आती हू, मगर उसके दो मिनट बाद ही सव लोग वापस आ गए । डा० गिल्डर कल से ही नाराज है, आज और चिढ गए । बहुत मुश्किल से उन्हे मनाकर खेलने भेजा, छः वजे तक खेले । वे बहुत अच्छा खेलते हैं । शाम को जव मैं उनके पास लिखने गई तव उन्होने वही बात चलाई । उन्हे कई दिनो से चिढ आ रही थी । भाई अक्सर देर से आते हैं । मुझे भी कई दफा पाच-सात मिनट की देर हो जाती थी । जेल में जहा चार-पाच खेलने वाले हो, वहा वक्त पर सबको आना ही चाहिए । इस बात पर डाक्टर साहव जोर दे रहे थे ।

: ५८ :

सच्चा धर्म

१३ अक्तूबर '४३

आज शरत् पूर्णिमा है । बा ने दूध पिया और पकौडी बनाने को कहा । थोडी-सी खाई । मुझे बहुत डर लग रहा था कि कही उन्हे तकलीफ न हो जाय, मगर कुछ

नहीं हुआ ।

शाम को गुड के चाकलेट बनाने में समय गया ।

२२ ता को डाक्टर साहब का जन्म-दिन है । उस दिन क्या करना है, यह हम सब विचार करते थे । वापू ने कहा, "डा साहब के लिए गुड के सिगार बनाओ । कल मावा बनवाया था, उसमें कोको डालकर लम्बे-लम्बे चाकलेट बनाए । डा साहब से मैने सुनहरी वर्क और सिगारो के खाली डिब्बे मागे थे । भाई ने गुड के सिगार कागज में लपेटकर दो सुन्दर पैकेट तैयार कर दिये । सिगारो में एक सिगार असली भी था। इसे हम नमूने के तौर पर चुराकर लाए थे ।

शाम को खूब वर्षा हुई, रात को और भी जोर से ।

१४ अक्तूबर '४३

सिगार के तीसरे पैकेट पर तैल-चित्रकारी की। उसमें कतरनें निकालने का सामान रखने का विचार था। एक मेजपोश बनाकर देने का सुझाव वापू ने दिया ।

कल गुड बनाते समय मेरा हाथ जल गया, इसलिए मालिश में भाई गए । चित्रकारी करने के लिए मै तीसरे पैकेट को धोने लगी । पैकेट का ढकना अलग जा गिरा । वह कागज से ही जुडा हुआ था । मैने कटेली साहब को उसे जुडवाने के लिए दिया और स्वय मै मेजपोश बनाने में लगी । दोपहर को अखबार देखे ।

शाम को ऐसी वर्षा आई कि अभी तक कभी नहीं आई थी। मूसलाधार पानी बरसा ।

१५ अक्तूबर '४३

आज सुबह घूमने के समय वापू ने जवाहरलालजी की किताब की कहानी सुनाई । फिर जेलो में उन्होने क्या-क्या अभ्यास किये, यह सब बताते रहे । रानडे की 'दि राइज ऑव मराठा पावर' और जदुनाथ सरकार की शिवाजी पर पुस्तक जरूर पढनी चाहिए, यह सुझाया ।

आज भी मेजपोश बनाने, मनु को सिखाने और 'डॉन' की दो-तीन प्रतिया पढने में समय गया। डाक्टरी अभ्यास बद रहा । डा गिल्डर को भी शाम को कतरनो का काम करना था, इसलिए वहा से भी छुट्टी मिली । शाम को घूमने गई ।

रात को अखबार देखे । एक हफ्ते की डायरी पूरी की । दुबारा ऐसे नागे न होने चाहिए, क्योकि यह तो मुझे वापू ने लिखने को कहा था । मुझे नियमित रूप से लिखना चाहिए, नहीं तो इसकी कोई कीमत नही है ।

साढे ग्यारह बज रहे है, सोने के लिए जाती हू ।

१६ अक्तूबर '४३

आज महादेवभाई को गए दूसरे वर्ष के आठ हफ्ते पूरे हो गए है । सुबह खूब फूल तोडे । मै और मनु, दोनो सजावट करने गईं । सोचा था कि सजावट करके घूमेंगे, मगर इतने में वापू घूमकर वहा आ पहुचे । जल्दी से सजावट पूरी की, प्रार्थना

करके वापस लौटे ।

पैकेट को चित्रित करने में ढाई-तीन घटे लगे । चीज सुन्दर तैयार हुई है । उगता हुआ चन्द्रमा और चढता सितारा, यह चित्रकारी ढकने पर की है और चारों ओर नीला रग। मीराबहन को बहुत पसद आया। अब सामने 'घणु जीवो'* लिखना बाकी है।मेजपोश भी तैयार करना है ।

मीराबहन का भी मन अब तैल-चित्र की ओर आकर्षित होने लगा है ।

आज वर्षा नही हुई । बादल छाए है । शायद रात को पानी आए । खेलने का कोर्ट मौरग वगैरह डालकर पक्का कर रहे है, कल से लाग लगी है । अभी पाच-सात दिन लगेंगे, तबतक ऊपर ही खेलना होगा ।

बापू के पास अनुक्रमणिका बनाने के लिए कतरनें नही है। इससे सारा खाली समय अब पढने में देते हैं ।

आज भाई ने कुछ कतरनें दी। एक-दो दिन में डाक्टर साहब के पास से भी आ जाएगी । तब काम फिर बढ जायगा । बापू को इस काम का बोझ नहीं लगता। कहते थे, "यह काम पूरा होगा तब मुझे फिक्र होगी कि कौन-सा दूसरा ऐसा ही काम हाथ में लू ।"

१७ अक्तूबर '४३

आज सुबह मैंने, भाई ने और डाक्टर गिल्डर ने मिलकर बापू की मालिश की । मैंने पेट और छाती की, भाई ने टागो की और डा० गिल्डर ने हाथ, पीठ और सिर की। ११। बजे सब पूरा हुआ ।

दोपहर को मै मेजपोश ही बनाती रही । शाम को डा० गिल्डर ने मनु को कहानी सुनाई । मै घूमने गई । मैंने डा० साहब से कहा था कि वे लिखाने से रविवार को छुट्टी रखें, ताकि घूमने के समय बापू का मौन न हो ।

दोपहर को जोर की वर्षा आई । शाम तक होती रही । फूल चढाने को अकेली मै ही गई । भाई कतरनो के काम में लगे रहे । मनु डा० साहब के पास थी ।

घूमते समय मीराबहन बता रही थी कि इग्लैण्ड में राजा से मिलने जाने के समय क्या-क्या भेंटें देनी चाहिए ।

सुबह घूमते समय पाकिस्तान की बात होने लगी । बापू ने बताया कि किस प्रकार एक समय आगाखा ने मुसलमानो को पत्र लिखा था कि पाकिस्तान इस्लाम के विरुद्ध और मुसलमानो के लिए शर्म की बात है । बोले, "वह सच्चे हृदय का आग्रह था । आज भले ही वह बदल जाए तो भी उस उद्गार की कीमत कम नहीं होती । जैसे कि मैं आज कहने लगू कि अहिसा निकम्मी है तो एक समय मैंने जो अहिसा का सिद्धात लोगों के सामने रखा था, उस सत्य की कीमत कम नही होगी ।"

---

* 'जुगजुग जिओ'

बात सिखों और मुसलमानों के सम्बन्ध पर आई। मुसलमानों का गुरु को मारना, गुरु गोविन्दसिंह के बच्चों को जीते-जी चिनवा देना, इस पर चर्चा होने लगी। जिस प्रकार इस कारण से सिखों के मन में मुसलमानों के प्रति तिरस्कार है, गुरु गोविन्दसिंह के लड़कों को पकड़वाने में ब्राह्मण रसोइये का हाथ था, इसलिए सिख ब्राह्मण के प्रति भी तिरस्कार कर सकते हैं, आदि बातें हुईं। मैंने कहा, "पंजाब में तो ब्राह्मण के प्रति मान है ही नहीं, यह कहा जा सकता है।" बापू कहने लगे, "हां, यह है। जब मैं पंजाब गया था तब मुझे तो लगा था कि वहां कोई ब्राह्मण है ही नहीं। बात तो यह है कि ब्राह्मण बहुत समय से अपना ब्राह्मणत्व खो बैठे हैं। नहीं तो हिन्दुस्तान गुलाम बनता ही नहीं।" मैंने पूछा, "क्या आप मानते हैं कि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को निकाल फेंका और वह अच्छा नहीं हुआ?" बापू बोले, "मैं मानता ही नहीं कि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को निकाल फेंका। उसका अच्छे-से-अच्छा भाग उन्होंने ले लिया। आज जितना बौद्ध धर्म हिन्द में है, उतना न चीन में है, न जापान में, न बर्मा में, न लंका में। बुद्ध भगवान् अगर आज आवें तो कहेंगे कि बौद्ध धर्म का सत्व तो हिन्दुस्तान में ही है, बाकी सब तो भूसा है।"

मीराबहन कहने लगीं, "ईसा आवें तो कहेंगे कि आज ईसाइयत कहां है?"

बापू बोले, "हां, ईसा आज जिन्दा हों तो सारे यूरोप को अपनाने से इन्कार करें और कहें, यूरोप आज ईसाई नहीं है।"

मीराबहन बोलीं, "लेकिन साम्यवादियों को छोड़कर! ईसा ने कहा है—'मैं भूखा था। तुमने मुझे खाना खिलाया।' किसी ने पूछा—'कब?' उन्होंने कहा—'मेरे इन अदने-से-अदने भाइयों के लिए तुमने जो किया, वह मेरे लिए किया।' और साम्यवादियों ने तो समाज के पिछड़े हुए, दबे हुए लोगों के लिए, बहुत-कुछ किया है।"

बापू ने उत्तर दिया, "हां, मगर साथ ही ईसा साम्यवादियों से यह पूछें कि उन्होंने इतने खून और कत्ल किये, सो क्यों?"

मीराबहन ने कहा, "नहीं जी, आपकी तरह ईसा जीव-हत्या के विरोधी नहीं थे।"

बापू बोले, "तो क्या तुम उस मत की नहीं हो जो यह मानते हैं कि ईसा ने कहा था—'जो तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसके सामने तुम बायां गाल भी कर दो?' वह क्या सिर्फ उनके १२ शिष्यों के लिए ही था?"

मीराबहन इसका उत्तर न दे सकीं। कहने लगीं, "मगर दूसरों ने साम्यवादियों से कहीं अधिक खून बहाया है।"

बापू बोले, "हां, मगर तो भी ईसा उन्हें क्षमा नहीं कर सकते। यह सब ईसा के शिक्षण के साथ मेल नहीं खाता।"

मीराबहन कहने लगीं, "अच्छा बापू, मैं इस बारे में विचार करूंगी।"

१८ अक्तूबर '४३

आज बापू का मौन है। मैंने दिन भर मेजपोश का काम किया। शाम को मीरा-बहन के साथ पिंग-पौंग खेली। वहा से आकर बापू के लिए दूध ले जाने की तैयारी में थी और फलो का सलाद बना रही थी कि जमादार रघुनाथ को बरामदे में दौडते देखा। पूछा तो पता चला कि सरकार का पत्र आया है। जाकर देखा कि 'बाइबिल' वाले बापू के उत्तर का जवाब था, खासा लम्बा और जहर से भरा। सरकार ने ढिठाई की हद कर दी। बापू ने पढा तो हस दिये। सबने पढा और सबको लगा कि आज तक आने वाले पत्रो में यह पत्र सबसे खराब है। भाई तो तिलमिला उठे। बोले, "साफ जाहिर है कि सरकार बापू को किसी प्रकार उत्तेजित करके उनके प्राण लेना चाहती है।"

१९ अक्तूबर '४३

सुबह घूमते समय मीराबहन कहने लगीं, "वाइसराय के जवाब में और टॉटेनहम के कल वाले पत्र में कितना फर्क है। वाइसराय ने आपके पत्र का उत्तर देने की तकलीफ उठाई और फिर जो भी कहना था, नरमी के साथ कहा, मगर टॉटेनहम ने तो पूरी कोशिश करके अपने खत में जहर भर दिया है। जीत से इन लोगो का दिमाग ठिकाने नहीं रहा।"

बात चली कि जो सचमुच बडे होते है, उनकी जबान ज्यादा मीठी होती है। इस पर बापू कहने लगे, "यह क्यो भूल जाते हो कि उपवास के समय वाइसराय का आखिरी खत इससे भी ज्यादा खराब था।"

बापू के साथ जितना पढती हू, उतना पढा। बाकी समय मेजपोश के बनाने में लगाया। वह लगभग पूरा हो गया है।

बा की तबीयत अच्छी नही है।

शाम को घूमते समय मीराबहन कहने लगीं, "बापू, आप नहीं मानते कि आपको जेल में रखने की इतनी कोशिश ये लोग कर रहे है, उसका कारण यह नहीं कि आपने कुछ किया या करते, मगर अग्रेजो को यह अनुकूल है कि आप सब लोगो को वे बन्द रखें, जिससे आपकी गैरहाजिरी में वे लोग हिन्दुस्तान के बारे में अपनी गन्दी चालबाजी को अमल में ला सके।"

बापू बोले, "इसमें कोई शक नही है।"

मीराबहन कहने लगीं, "अगले रोज मैंने हंटिंगडन की किताब में पढा था कि हिन्द तीनचौथाई से अधिक अग्रेजी साम्राज्य का भाग है, तब मैं उनकी चालबाजी समझ पाई।"

इसी सिलसिले में आस्ट्रेलिया और अफ्रीका में अग्रेजो ने क्या-क्या किया, इस पर बात चली। मीराबहन ने कहा, "यह सब न्याययुक्त है, इसे सिद्ध करने के लिए बस बाइबिल के पन्ने खोलने की जरूरत है।" सच है। धर्म को जैसा चाहे वैसा रग दिया जा

सकता है।

२० अक्तूबर '४३

मेजपोश मैंने पूरा किया। कपडे के बीच में कुछ और भी काढने का इरादा था, मगर बापू नाराज होने लगे, "मेरा तो इतनी मेहनत करने का इरादा ही नहीं था। कल चारो कोनो पर काम किया, उसके लिए रात को देर से सोई। जो मेरा सकल्प था कि दूसरे कामो में विघ्न न पडे, उसको तूने भग किया। मीराबहन ने कहा है, इसलिए तू अभी और करना चाहती है। पीछे दूसरा कोई और कहेगा तो और करने लगेगी। मेरे खयाल में इस तरह काम करने वाले गिरते है।"

मैंने मेजपोश के बीच में जो काढना आरम्भ किया था, उसे उधेड डाला। पीछे पैकेट पर चित्र बनाया। बापू ने उस पर 'घणु जीवो' लिखा। मेरा बारीक ब्रुश अच्छा नहीं है। उससे लिखना बापू के लिए कठिन था, इसलिए बापू ने कलम की नोक से लिखवाया। रग तैलरंग थे। साढे ग्यारह बजे कलेक्टर आया। पीछे खाने के बाद रामायण पढी। थोडा सोई, पर नींद नहीं आई। मेजपोश के एक कोने में बापू ने तमिल में, दूसरे कोने में भाई ने उर्दू में, तीसरे कोने में कटेली साहब ने गुजराती में डाक्टर साहब के नाम का पहला अक्षर लिखा। चौथे कोने में मीराबहन ने कल हिन्दी में लिख दिया था।

२१ अक्तूबर '४३

सुबह महादेवभाई की समाधि पर खूब फूल लेकर चढाने गई। जाकर वहा पहले सजावट की। बापू जब आए तब सब तैयार हो गया था। प्रार्थना करके आई तब घूमने के सात मिनट बाकी थे। बापू को डर था कि समाधि पर मै तैयार नहीं होऊंगी, सो ज्यादा समय लेकर आए थे। समाधि से लौटकर वे सात मिनट फिर घूमे।

बापू ने हजामत बनवाई। हम तीनो ने उनकी मालिश की। रसोईघर में कुछ काम किया और अखबार देखा। इतने में दामोदर आया। दोपहर को अखबार देखे। ब्लेड का चाकू बनकर आ गया है, उस पर मैंने रग लगाया।

रात को पद्रह मिनट तक कैरम खेली। डाक्टर साहब के लिए बनाई हुई सब चीजें मैंने कटेली साहब को दे दी है, वे डाक्टर साहब को उनका पार्सल बना कर देंगे। मीराबहन ने बकरी पर एक कविता लिखी है। कविता के पृष्ठ में ऊपर बकरी का एक चित्र बनाया। एक कैदी से मिट्टी की बकरी बनवाई है, सुन्दर बनी है। दोपहर को बकरिया आवाज कर करके डा० साहब को सोने नहीं देतीं, ऐसी शिकायत एक दिन वे करते थे। इसी बात को लेकर मीराबहन ने कविता बनाई है। कुल मिलाकर पाच पार्सल बन गए है—बकरी का, पेन्टिग वाले पैकेट का, मेजपोश का और दो पैकेट सिगार व चाकलेट के।

बापू ने अपने सूत के ६२ तारो का हार उनके लिए बनाया है। हम सब उन्हे फूलों के हार पहनावेगे।

२२ अक्तूबर '४३

सुबह साढे सात बजे हम सब डा० गिल्डर के कमरे में गए। बा ने उन्हे टीका लगाया, हार पहनाया और नारियल वगैरह दिए। बापू ने अपना सूत का हार पहनाया। कटेली साहब ने फूलो का हार पहनाकर टीका लगाया। फिर उन्हे खाने के कमरे में ले गए। डा० साहब ने चाय पीते-पीते सब पार्सलो को खोला। यह सब करते-करते करीब आठ बज गए, बापू भी वही बैठे थे। पीछे हम सब घूमने गए। लौटकर डाक्टर साहब बापू की मालिश करने लगे।" मैंने और मीराबहन ने बापू का कमरा फूलो से सजा दिया।

दोपहर को मैंने कैदियो को खाना खिलाया, शाम को उन्हे चाय इत्यादि दी। बाद में नीचे नए कोर्ट में खेलने गए। मीराबहन भी आई। रात को बा तीन दिन के बाद कैरम खेलने गईं।

बापू ने टॉटेनहम के पत्र का उत्तर लिखा।

२३ अक्तूबर '४३

महादेवभाई को गए आज ६१ हफ्ते हो गए। काफी फूल तोडे। बापू के कमरे में जो फूल रखे थे, उन्हे शाम को समाधि पर ले गई।

२४ अक्तूबर '४३

बापू टॉटेनहम के पत्र का उत्तर सुधार रहे है। यदि तैयार हो गया तो कल सुबह ही डाक से जावेगा।

बापू तीन-चार दिन से बा को गरम-ठढा कटि-स्नान देते है। आधे घटे से बढाते-बढाते एक घटे तक ले जावेगे।

२५ अक्तूबर '४३

बापू का मौन है। मैंने कोई काम नही किया। खूब सोई। दिन में बहुत सोई थी। रात को देर तक नही सोई। भविष्य के बारे में सोचती रही, सब अधेरा-सा लगता था।

२६ अक्तूबर '४३

डा० गिल्डर ने जो लिखाया था उसे दुहराकर उन्हे दिया। बाकी समय रोज का कार्यक्रम चला। 'मार्गोपदेशिका' कल पूरी हो गई थी। आज भण्डारकर की दूसरी किताब शुरू की। यह ज्यादा कठिन है।

सुबह घूमते समय बापू से भाई ने पूछा, "आपको श्रीनिवास शास्त्री की खुली चिट्ठी कैसी लगी?" बापू ने उत्तर दिया, "भाषा तो अच्छी है, मगर और कुछ नही है।"

भाई ने कहा, "उनका तो यही कहना है न कि किसी भी प्रकार आप बाहर निकल आवे!"

बापू बोले, "वे इतनी बात नही समझते कि 'किसी भी' तरह बाहर आकर मैं कुछ काम नही कर सकता हूँ।"

भाई कहने लगे, "शास्त्रीजी के पत्र का उत्तर लिखू ?"

बापू ने कहा, "उत्तर तो एक मिनट में लिखा जा सकता है। यह इतना ही है— 'आप क्यो नहीं समझते कि अपनापन खोकर मैं हिन्दुस्तान के काम का न रहूगा।'

२७ अक्तूबर '४३

आज दोपहर थोडे-से डाक्टरी पत्र-पत्रिका पढे। दो-चार रोज में ये सब वापस जाने वाले है। इसलिए जितने पूरे कर सकू, करना चाहती हू।

मीराबहन की आख में कल से दर्द है। शाम को वे पढ नहीं सकीं और पिंग-पॉग अधिक समय तक खेली। पीछे रिंग खेलने गई और छ बजे तक खेलती रहीं।

शाम को घूमते समय पाकिस्तान के बारे में मीराबहन ने बात चलाई। बापू कहने लगे, "मैं तुम्हे अपना मत बता चुका हू। पाकिस्तान नही बनेगा, क्योकि मुसलमान खुद पाकिस्तान लेना नहीं चाहेगे। अर्थशास्त्र की दृष्टि से वह चल नहीं सकता। इसी कारण वह राजनीति की दृष्टि से भी नहीं चल सकता। जिन्ना साहब उसे देखकर भयातुर हो उठेंगे और उसकी इच्छा नहीं करेंगे।"

२८ अक्तूबर '४३

आज भाई के कमरे की सफाई कराई। वहा अक्सर पानी चला जाता है और भाई को दरवाजे बन्द रखने पडते है। वहा कुछ बदबू भी आने लगी थी। कमरे से निकाली हुई पुस्तको की एक सूची बनाने में मेरा, भाई का और मनु का दोपहर का सारा समय गया।

बा की तबीयत बहुत अच्छी है, जलन बिलकुल नहीं है। बापू ने उन्हे गरम और ठढे पानी का कटि-स्नान देना आरम्भ किया था, उसीका यह फायदा दीख पड़ रहा है।

: ५९ :

जेल मे दूसरी दीवाली तथा अन्य उत्सव

२९ अक्तूबर '४३

आज हम लोग जेल में दूसरी दीवाली मना रहे है। जब आए थे तब कल्पना तक न थी कि यहा इतने अरसे तक रहना होगा।

सुबह महादेवभाई की समाधि पर खूब फूल सजाए। रात को अगर की बत्तियो की दीपावली का आयोजन किया। अगर बत्तियो का 'ॐ' और '†' अधेरी रात में बहुत सुन्दर लगते थे। बापू घूम-फिरकर वहा आए। भाई और डा० गिल्डर वहा पहले से ही बत्तिया सजा रहे थे। बत्तियो को जलाने के पहले अधेरा हो चला था,

इसलिए मिट्टी का एक दीपक जलाया। दीवार पर रखने का विचार था, मगर वैसा करने से दीपक बुझ जाता था। फिर वहां रखने से ॐ की शोभा भी कम होती थी।

दिन में रोज की तरह सब कार्यक्रम चला। शाम के समय कैदियो को खजूर, चाय और पकौडे दिए।

सुबह प्रार्थना में बापू ने 'और नहीं कुछ काम के, मैं भरोसे अपने राम के'* और शाम को 'श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन' वाले भजन गवाए। इस प्रकार दीवाली खतम हुई।

३० अक्तूबर '४३

महादेवभाई को गये ६२ हफ्ते पूरे हुए। सुबह बेडमिन्टन से जरा जल्दी छूटी, इसलिए जाकर समाधि की सजावट के लिए फूल इकट्ठे किये। गेंदे के फूलो का 'ॐ' बनाया। बहुत सुन्दर लगता था। बा भी नीचे आईं, लेकिन लौटते समय थोडा थक गईं।

बापू की मालिश के बाद ग्यारह-साढे ग्यारह तक मैंने डाक्टरी पत्र-पत्रिकाए पढे। बापू का बाकी काम भाई ने किया, साढे ग्यारह तक अच्छा चला।

आज नया हिन्दू वर्ष आरम्भ होता है। इच्छा थी कि दिन अच्छा निकले, सब काम व्यवस्थित हो, मगर साढे ग्यारह के बाद सब बिगड़ा और रात तक बिगडता ही चला गया। मेरे खराब दिनो में से एक दिन यह भी कहा जा सकता है।

मनु के सिर में दर्द है, शायद मलेरिया की तैयारी होगी। इसलिए रात में बापू, बा और मनु की व्यवस्था करके साढे दस बजे सोई।

३१ अक्तूबर '४३

बाइबिल का शुरू किया हुआ भाग आज पूरा किया है। 'ओल्ड टेस्टामेंट' ('पुराना करारनामा') नामक अध्याय अब आरम्भ किया है।

कर्नल भण्डारी आए। बापू स्नान को चले गए थे, उन्हे मिल नहीं सके।

शाम को खेलते समय मेरी आख के नीचे कटेली साहब की कोहनी जोर से लगी। आख काली-नीली-सी हो गई।

रात को चन्द्रमा बहुत सुन्दर लगता था। कल बादलो के कारण नहीं दिखाई दिया था।

रात को मैं बापू की मालिश करने के बाद कुछ पढने बैठी, मगर कल रात अच्छी नींद नहीं आई थी।

सुबह पढने के समय नींद लगती थी। कम काम कर पाई।

---

*और नहीं कछु काम के, मैं भरोसे अपने राम के—और०
दोऊ अक्षर सब कुल तारे, वारी जाऊ उस नाम पै—और०
तुलसीदास प्रभु राम दयाघन, और देव सब दाम के—और०।

डा० गिल्डर के डाक्टरी पत्र-पत्रिका पूरे पढकर जल्दी लौटाने थे, मगर जल्दी सो गई। साढे ग्यारह बजे तक तीन बार नींद में मै चिल्लाकर मै उठी, माताजी को पुकारती थी। बापू बता रहे थे कि तीसरे समय तो इतने करुण-क्रन्दन की आवाज निकली थी कि उनसे सहन नहीं हो सकी।*

१ नवम्बर '४३

बापू के काम से छुट्टी लेकर डाक्टरी पत्र-पत्रिका पूरे किये और लौटा दिये। दूसरे नए ले आई। गुरुवार तक सब पूरे करने है। बापू का मौन था, मगर बाइबिल तो उनके साथ पढी। मनु को भी बापू ने सिखाया। पता नहीं 'मार्गोपदेशिका' मौन रहकर कैसे सिखाई होगी।

बा की तबीयत कुछ ढीली है। आज दोपहर को उन्होंने कटि-स्नान नहीं किया। बापू आजकल एक घटा (३ बजे से ४ बजे तक) बा को स्नान कराने में देते है। कल शाम को कहते थे, "मुझे यह बडा अच्छा लगता है कि इस अवस्था में मुझे बा की सेवा करने का अवसर मिल गया है। इसमें मुझे पूरा सतोष है। बा को भी अच्छा लगता है। बा अब इसमें तन्मय हो गई है, हसती है और खुलकर बातें भी करती है। बा मेरा समय बचवाना चाहती है, मगर मैंने उसे समझाया है कि मेरे काम की वह चिन्ता न करे। वह हुआ तो क्या और न हुआ तो क्या! बा को स्नान से फायदा भी बहुत है। कहती थी कि जलन तो बरसो से थी, मगर मालूम नहीं जब वह कहा चली गई।"

२ नवम्बर '४३

सुबह मालिश करके पढने को बैठी। बा की तबीयत ज्यादा ढीली है, मगर उन्होंने दोपहर को कटि-स्नान लिया।

शाम को बहुत जोरो से वर्षा आई। खेलने का कोर्ट भीग गया।

बापू को शाम को कुछ थकान लगती थी। वे जवाहरलालजी की लिखी पुस्तक 'ग्लिम्प्सेज आव वर्ल्ड हिस्ट्री' की बात करते रहे। कह रहे थे, "मुझे कुछ लिखना हो तो मै इसी किताब का अनुवाद करु और वह मुझे अच्छा भी लगे।"

हम लोग बापू के पीछे लगे है कि वे अब कतरनो का काम छोडकर कुछ लिखना शुरू करें। आश्रम का इतिहास, महादेवभाई के सस्मरण, आत्मकथा का दूसरा भाग—सभी कुछ तो लिखना है। अभी 'स्वास्थ्य की चाबी' नामक पुस्तक भी पूरी करनी है।

३ नवम्बर '४३

बापू ने आज महादेवभाई के विषय में अपने सस्मरण लिखने शुरू किये। शाम

---

*बाद मे पता चला कि उस दिन मेरी भाभी का, जो मुझे सगी बहन की तरह प्यार करती थी, आपरेशन हुआ। वह सारा समय मुझे याद करती थी, पुकारती थी। आपरेशन बिगडने से उसकी मृत्यु हो गई।

को पन्द्रह मिनट मिले। उसी समय में लिखना शुरू कर दिया। भाई कह रहे थे, "मुझे बडी ईर्ष्या होती है कि इतने थोडे समय में बापू कैसे लिख सकते हैं।" मैंने कहा, "अगर मालूम हो कि क्या लिखना है तो वह हो सकता है।" भाई बोले, "इतना हृदय भरा होना चाहिए कि बस पानी उडेलने की तरह अपनेआप कलम चलती जावे।" बापू के साथ तो ऐसा होता ही रहता है।

मैंने डाक्टरी अभ्यास आज काफी किया।

४ नवम्बर '४३

मुझे आज जुकाम ने खूब दबाया है। डाक्टरी अभ्यास ढीला पड गया। बापू ने कहा है कि मैं जो कुछ पढू, उसकी सूची बना लू। उपयोगी सलाह है। ऐसा ही करना आरम्भ किया है।

५ नवम्बर '४३

खाली समय में डाक्टरी पत्र-पत्रिकाए पढे और मीराबहन के लिए गुड बनवाया।

६ नवम्बर '४३

आज ... नही आया। बापू का टब वही भरा करता था। मैंने देखभाल की।

जुकाम के कारण बुखार-सा लगता है। शाम को खेलने गई, पर जल्दी लौट आई। मीराबहन नही खेल सकी। पिगपौंग की गेंद कल टूट गई थी। अभीतक नई नही आई।

७ नवम्बर '४३

मीराबहन को बापू के पास आये १८ साल हो गए। आज १९वा वर्ष आरम्भ हुआ है। बापू के पास आने के दिन को वे अपना जन्म-दिन मानती है, इसलिए आज उनका जन्म-दिन मनाया गया। सुबह जब वे साढे सात बजे के करीब बापू के पास आई तब हम सबने उन्हे हार पहनाये। बापू ने उन्हे अपने सूत का हार पहनाया। मजाक किया जा रहा था कि मीराबहन की १९वी वर्षगाठ उनकी ५२ साल की उमर में आई है।

मैंने उन्हे अपनी एक बारीक साडी दी। बापू को यह बहुत अच्छा लगा। साथ ही खादी का एक तौलिया और बनाया हुआ गुड दिया। बापू को भेंट-स्वरूप आया हुआ गोदरेज साबुन और ब्राह्मी तेल भी उन्हे दिया।

कैदी पहलवान ने एक गाय, दो बैल, एक बछडा, एक बकरी और दो लेले मिट्टी के बनाये थे। वे भी भेंट किये। वे बहुत सुन्दर बने थे, उनपर रोगन लगाया गया था—सब लकडी के एक खोखे में बन्द थे। दूसरी चीजें—टीका, दियासलाई, साबुन इत्यादि के पार्सल बनाये थे। बापू के पास ही मीराबहन को नाश्ता और बा को चाय ला दी। पीछे पार्सल खुलने लगे। इसमें सवा आठ बज गए और बापू घूमने चले गए। हम लोग थोडा खेले।

डा० गिल्डर ने कार्ल मार्क्स की प्रसिद्ध पुस्तक 'कैपिटल' के दोनो भाग एक

साथ मगाये थे। १२) में मिले। सामान्य कीमत ७) से अधिक नहीं है। किताबों की कीमत स्थिर करने के उद्देश्य से कल-परसों एक सरकारी हुक्मनामा निकला है, ताकि मनमानी कीमतें न ली जा सकें। डा० गिल्डर ने यदि दो दिन बाद पुस्तक खरीदी होती तो पांच रुपए बचते।

८ नवम्बर '४३

बापू को थोड़ा-थोड़ा जुकाम लग रहा है, नाक बहुत टपकती है। दिन भर उनका मौन था। सुनसान-सा लगता था।

बा ने आज तुलसी की शादी मनाई है। तुलसी के ऊपर गन्नों का मण्डप बनाया, हार पहनाए, फूल चढ़ाए, फल की भेंट सामने रखी और रांगोली वगैरह बनाई। सुन्दर दृश्य था।

९ नवम्बर '४३

बापू का जुकाम खूब जोरों पर है। शाम को डा० शाह आए, तब मजाक होने लगा। बापू को पहले पहल जुकाम सैसूर से लौटने पर हुआ था। मैंने कहा, "आप मैसूर से जुकाम लाये हैं और वह यहां सबको बारी-बारी से दबा रहा है।" वे बोले, "हां, जुकाम बहुत खराब चीज है। मुझे खांसी इस जोर से आती है कि क्या करूं।"

शाम को बापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया कि आपके पत्र पर विचार किया जा रहा है। बापू ने वह पत्र लिखते समय बहुत संयम से काम लिया था। कह रहे थे कि पहले उन्होंने तीखा जवाब देने का विचार किया था, फिर सोचा कि व्यंग में उत्तर दें, मगर अन्त में मीठे-से-मीठा उत्तर देने का निश्चय किया। वेवल नया आया है, उसको पहले-ही-पहले व्यंग भरा तीखा पत्र भेजना ठीक नहीं है। इसलिए सरकार के पत्र में भरे हुए जहर को पी गए और शांतचित्त होकर उत्तर लिखा।

अब की बार सरकार का अपमान भरा दो शब्दों का उत्तर नहीं आया, नहीं तो लिखा होता कि सरकार ने आपको जो लिखा है, उससे ज्यादा कुछ नहीं कहना है।

आज बा ने तुलसी-विवाह का प्रसाद नारियल, शक्कर, अनार और गन्ना कैदियों और सिपाहियों में बांटे।

: ६० :

भाभी का आपरेशन और मृत्यु

१० नवम्बर '४३

सुबह बापू ने अण्डी का तेल लिया, खूब असर हुआ। मालिश के समय तबीयत अच्छी थी। स्नान-घर में जब स्नान कर रहे थे तो मुझे थके-से लगे। मैं तसला वगैरह धोने लगी। लौटकर देखा तो पैर धो रहे थे, मगर बहुत धीमे-धीमे। टब में स्नान कर रहे थे तभी मैंने पूछा था— "आप थके-से लगते हैं।" कहने लगे, "नहीं, यों ही

सुस्ता रहा हू ।" तब मै दूसरा काम करने लगी । साबुन में कपडे भिगोने लगी । इतने में देखा तो बापू तौलिये से मेरी तरफ इशारा कर रहे थे । बाद में बताते थे कि उन्होने मुझे बुलाया भी था, मगर मैने सुन नही पाया । मैने पूछा, "क्या चक्कर आता है ?" कहने लगे, "नहीं, तू मेरी देह को पोछ दे ।" मैने कहा, "बैठ जाइए ।" मगर बापू ने इन्कार कर दिया । मैने देखा कि उनके पैर कुछ लडखडा रहे थे, इसलिए मैने उनकी कमर में दोनो हाथ डालकर उन्हे उसी पाटले पर बिठा दिया जिस पर वे खडे थे ।

कहने लगे, "पाखाने की हाजत है ।" मैने पूछा, "कमोड यहीं लाकर रख दू ?" उन्होने इन्कार किया, पर बाद में मान गए । उन्हे कमोड पर बिठाकर सहारा दिये खडी रही । बापू को जम्हाई बहुत आ रही थी । वे सफेद होते जा रहे थे । नाडी की गति बहुत धीमी पड गई थी । मैने भाई को बुलाया । उन्होने आकर बाल्टी वगैरह हटाकर जगह खाली की । गादी बिछाई । पूछा, "डा० गिल्डर को बुलाऊ ?" बापू ने इन्कार किया, मगर भाई कहने लगे कि वे बुरा मानेंगे कि उन्हे खबर नही दी । डा० गिल्डर बुलाये गए । बापू को गादी पर सुलाया गया । दो-तीन मिनट में वे बिल्कुल ठीक हो गए । रक्त-चाप मापा तो १३५ । ८२ निकला । इतने में बा आईं । पूछने लगी, "यह क्या किया ?" मन में उनके चिन्ता थी । ऊपर से हसने का प्रयत्न कर रही थीं । बापू ने उत्तर दिया, "अब तो कुछ भी नही ।" पन्द्रह-बीस मिनट बाद वे उठकर बाहर आए । थोडा-सा सोए, फिर उठकर खाना खाया । दोपहर को खूब सोये, पर कमजोरी दिन भर रही ।

मै दोपहर को एक मिनट भी नही सो सकी । बापू बाहर सोने गए थे । मै भी बाहर ही थी । मुझे लगा कि शायद गरमी के कारण नींद नही आती । दोपहर को मै बाहर से उठकर अन्दर आई । भाई ने मुझे आते ही मोहनलालभाई का पत्र दिया । मेरी भाभी शकुन्तला के ऑपरेशन के बारे में था । अस्पताल में दाखिल करा दिया गया था, तो भी समय पर इतनी ढील हुई कि जान के लाले पड गये । खत में लिखा था कि शरीर में नाडी में रक्त देने की तैयारी कर रहे थे, मगर उसके बिना ही तबीयत सुधर रही थी । अभी खतरे से बाहर नहीं है । मुझे, हो सके तो, पेरोल पर आने के लिए लिखा था । सरकार भेजेगी तो चली जाऊगी । बाकी इस सरकार से भीख कौन मागे । बाद में दो-तीन तार लगातार आए थे । पहला पाच तारीख को आया । उसी दिन मिल जाता तो भी मै आठवी तक पहुच जाती, पर आठवीं को पहुंचने में फायदा ही क्या था ।

११ नवम्बर '४३

कल रात मै बारह बजे तक सो नहीं सकी । माताजी, शकुन्तला और मोहनलाल की ही याद आती रही । सुबह प्रार्थना के बाद भी नही सो सकी । बापू के उठने पर उनसे पूछकर मोहनलाल और डा० हरजगीर को तार किया कि शकुन्तला की खबर तार से भेजो । सरकार ने मोहनलाल का तार सीधा भेजने की इजाजत दी, मगर

डा० हरजगीर को वम्बई सरकार की मार्फत तार गया। वाद में पता चला कि तार गया ही नहीं। सरकार का हुक्म है कि रिश्तेदारों को ही तार-ख़त भेजा जा सकता है, इस पर भी डाक्टर को तार नहीं कर सकते।

वापू की तवीयत अच्छी है। कल से वा को दोपहर का स्नान देना शुरू किया है।

१२ नवम्बर '४३

मेरे तार का उत्तर तो नहीं आया, पर मोहनलाल के भेजे हुए ४ नवम्बर का तार आज दोपहर को मिला। मोहर से पता लगा कि यह तार यहा ५ नवम्बर को आ गया था, मगर यहा से वम्बई और वम्बई से यहा फिर आया है। इसमें शकुन्तला के आपरेशन की खवर है, उसकी हालत नाजुक है। वहुत वुरा लगा। अप्रैल में इसी तरह माताजी की वीमारी के समय खवर देर से मिली थी। पर सौभाग्य से माताजी अच्छी होगई थीं। लेकिन शकुन्तला का न जाने क्या हाल हुआ हो। शाम को विचार आया कि वहा सव कुशल ही होगी, नहीं तो अभी तक खवर जरूर आती।

१३ नवम्बर ४३

सुवह खवर मिली कि ९ नवम्बर को मोहनलाल का एक दूसरा तार आया था, किन्तु वम्बई भेज दिया गया है। वस, इस खवर से तो होश गुम हो गए। तार में क्या लिखा होगा? शकुन्तला है भी या नहीं! दिन भर सख्त वेचैनी रही।

वम्बई सरकार को पत्र लिखा कि इस तरह की खवर देने में इतनी ढील करना समझ से वाहर की वात है, पर सरकार को क्या पड़ी थी? उसकी निगाह में कैदी इसान थोडे ही था! दिन भर उत्तर की राह देखती रही, पर कोई उत्तर न आया।

१४ नवम्बर '४३

आज भी तार की राह देखते-देखते दिन गया। मैं वडी वेचैन हो गई। वापू कहने लगे, 'जव हमें दूसरा तार, जो वम्बई गया है, मिलेगा तभी पता चलेगा। मेरी समझ में पहले तार का उत्तर ही वह तार है—भला हो या वुरा। मैं मानता हू कि वुरा नहीं हो सकता। मृत्यु होती तो देवदास जरूर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में उसकी फोटो देता और उसके वारे में कुछ लिखता। शकुन्तला स्वय भी इतनी योग्यता रखती थी कि उसकी मृत्यु अखवार में दी जावे।" मुझे डर लगा कि पहले तार में आया था-'हालत खतरनाक है' तो दूसरे में होगा—'चल वसी'। वापू वोले, "ऐसा हो सकता है, मगर मैं मानता हू कि तार अच्छा ही होगा। डाक्टर ने ही शायद तार किया हो कि शकुन्तला की हालत नाजुक होने के कारण तुझे पेरोल मिलने में आसानी हो। शायद उनसे सरकार की तरफ से कहा गया हो कि वे अर्जी देंगे तभी पेरोल मिल सकती है। ऐसी हालत में डाक्टर तुझे तार करेंगे।" मैंने यह वात मानने की कोशिश तो की, पर दिल वुझा रहा। भाई भी कहने लगे, "तुम व्यर्थ ही चिन्ता करती हो, मुझे तो निराशा नहीं लगती।" वाद में

मैं सोचने लगी, "शायद शकुन्तला अच्छी हो रही होगी और मोहनलाल अधिक कुछ कहना न चाहता हो। शायद वह सोचता हो कि चलो, इसी बहाने पेरोल पर मैं वहा हो आऊगी ।"

शाम की प्रार्थना में 'हरि तुम हरो जन की भीर' गाकर 'डूबते गजराज राख्यो' ज्यो ही गाया कि मेरा गला रुधने लगा।

१५ नवम्बर '४३

आज वापू का मौन था। मैं दोपहर खाना खाकर सो गई। एक वजे उठी। वापू के पैरो में मालिश करते समय मैंने पूछा, "क्या श्री कटेली वगैरह खाना खा गए है ?" वापू को मालूम न था। आज तो कोई उत्तर आवेगा ही, ऐसी आशा थी। वम्बई से ही तार आवेगा। जो आदमी खाना लेकर आता है, वही डाक भी लाता है, इसलिए मुझे लगा कि श्री कटेली जव खाने आवेंगे तव कुछ खवर लावेंगे। सोचती थी कि वापू के पैरो की मालिश करके खाने के कमरे में देखने जाऊगी कि प्लेटें उठ गई है कि नहीं। इतने में श्री कटेली को वरामदे में से जाते देखा। मेरा माथा ठनका, लगा कि कुछ खराव खवर है। इसलिए मुझे तार देना नहीं चाहते, भाई को देकर आए है। मन में हुआ कि वापू से कहू। दौडकर भाई से पूछू। मगर अपने आपको रोका। वापू सोने की तैयारी में है। उनकी नींद क्यो विगाडू ? वाद में पूछ आऊगी। और शायद श्री कटेली उधर किसी दूसरे ही काम से गए हो। यह विचार चल ही रहा था कि भाई ने तार लाकर वापू के हाथ में दिया। मैंने कहा, "वोलते नहीं हो, खराव खवर है न ?" वापू ने सिर हिलाकर 'हा' कहा। मैंने पूछा, "शकुन्तला गई ?" वापू ने सिर हिलाया, "हा।" डर तो था ही-पर आशा वधी थी कि वह तो अच्छी ही होगी। मगर वह कहा से ? वह तो सोमवार, ८ नवम्वर को ही चल वसी थी। मैं उठकर वगीचे में एकान्त में जा वैठी। दुःख के मारे फटते हुए हृदय से सोचती रही कि माताजी और मोहनलाल अव क्या करेंगे। ऐसी देवी जगत में कहा मिल सकती है ? रिश्तेदार क्या, मित्रवर्ग क्या, जिस किसी को मिली, उसीका मन हर लिया। उसकी हसती मूर्ति मेरे सामने नाचने लगी। उसकी मीठी आवाज मेरे कानो में गूजने लगी।

भाई आकर मुझे वापस ले गए। उठकर कातना शुरु किया। पढना तो असम्भव था ही। आखो से अश्रु-धारा वह चली। वापू ने आकर यह देखा तो उन्होने अपना मौन-व्रत तोडना चाहा, पर मैंने ऐसा न करने को कहा। उन्होंने सव कार्यक्रम चालू रखने को कहा, मगर मेरे सामने तो शकुन्तला थी।

फिर विचार चले। रविवार के रोज डाक्टर लोग छुट्टी की धुन में होगे और शकुन्तला वहा पर इतनी अशक्त हो गई होगी कि ऑपरेशन सहन न कर सकी होगी।

मीरावहन आई। सहानुभूति दिखाने लगी, "तुम वहा होतीं तो उसका तुम्हारे प्रति विश्वास ही उसे वडी मदद करता।" पर मैं वहा होती कैसे ? सरकार की तरफ से तार देने में इतनी ढील हुई थी कि भाभी ८ तारीख को ही गुजर गई और मुझे १५

तारीख को उसकी मृत्यु का तार मिला ।

हम घर में तीन बहनें है—तीनो डाक्टर । और शकुन्तला के काम एक भी न आई ! मोहन ने प्रकाश या सत्या को ही बुला लिया होता ! मुझे भी तो उसने ऑपरेशन करवाने के बाद ही लिखा । नतीजा यह हुआ कि खबर मुझे उसके ऑपरेशन के समय नहीं, बल्कि मृत्यु की मिली ।

शकुन्तला की बच्ची का खयाल आने लगा, बेचारी बची रहे । मीराबहन कहने लगीं, "अब तुम्हे बच्ची की देखभाल करनी चाहिए ।" मैंने कहा, "वहा के लोग तो करते ही होगे ।" वे कहने लगीं, "हा, मगर तुम यहा से भी मदद कर सकती हो ।'

शाम को प्रार्थना में 'मगल मदिर खोलो' गाया । 'जीवन वन अति वेगे वटाव-यऊ' गाते समय आवाज जवाब दे गई । मनु को किताब दी कि गीत को चलाए, पर वह भी रोने लगी । मुश्किल से किसी तरह भजन पूरा किया । रामायण की एक चौपाई पढकर बन्द कर दिया ।

डायरी लिखकर सोने को गई, मगर नींद कहा ! आखो के आगे शकुन्तला थी । माताजी और मोहन का विचार आने लगा । शव को अस्पताल से कहा ले गए होगे ? श्मशान कहा ढूढा होगा ? शाम को पौने पाच बजे मृत्यु हुई तो शव को कब जलाया होगा ? और वह नन्हीं-सी बच्ची ! उसका अब क्या होगा ? मोहन का क्या होगा ? माताजी की पौत्र पाने की इच्छा का क्या होगा ? बिना शकुन्तला के तो मैं उस घर को कल्पना ही नहीं कर सकती ।

१६ नवम्बर '४२

सुबह एक-एक अग दुखता था । सिर में सख्त चोट खाए हुए इन्सान की-सी मेरी स्थिति हो रही थी । कल शाम को बच्ची के विषय में पूछने को तार तैयार किया था, आज सुबह वह भेजा । दोपहर को मोहनलाल का तार आया कि तुम कहो तो बच्ची को तुम्हारे पास ही भेज दू, सरकार को इस बारे में लिखता हू, इत्यादि । सरकार आने दे तो मैं उसे खुशी से रखू, मगर सरकार कभी आने नहीं देगी । मनु तो उछल पडी कि बेबी आवे तो बडा अच्छा लगेगा, मगर इस बात का विचार करना भी बेकार है । मोहनलाल तार से उत्तर मागते है । तार लिखा—"तार मिला । इजाजत मिलनी मुमकिन नहीं लगती । मेरी सलाह है कि दूसरी दो बहनें बारी-बारी से माताजी के पास रहे, जबतक कि बच्ची खतरे से बाहर नहीं हो जाती ।"

बापू कह रहे थे, "तू पेरोल की अर्जी देकर चली जा ।" मैंने कहा, "उससे क्या फायदा ? महीने-डेढ महीने में बेबी बडी और समझदार तो हो नहीं जावेगी । फिर मेरे साथ हिल जावेगी तो मेरे यहा आने के समय उसे और भी कष्ट होगा । माताजी को भी दुबारा सदमा होगा । इससे तो यही अच्छा कि मेरी दो चचेरी बहनें बारी-बारी से महीने-महीने की या अधिक छुट्टी लेकर वहा रहे । पीछे बेबी जब सफर करने लायक हो जाय तब उसे और माताजी को अपने साथ ले जाए ।"

तार कल जावेगा, पीछे पत्र लिखना होगा। बापू ने कल शाम सरकार को भेजने के लिए एक पत्र तैयार किया था। उसमें मुझे तार देर से मिलने के बारे में शिकायत थी। कहा गया था कि उनके साथ रहने वालो को कैदियो के साधारण हको से भी वचित रखा जाता है, यह ठीक नहीं। मिसाल के तौर पर डा० गिल्डर की बीमार पत्नी अथवा उनकी लडकी उनसे मिलने नहीं आ सकतीं। ऐसे ही बा के और मनु के बारे में लिखा था। शाम को चार बजे वह पत्र गया। सामान्यत यहा की डाक रजिस्ट्री से जाती है, मगर रजिस्ट्री का समय बीत गया था, इसलिए बापू के कहने पर पत्र बिना रजिस्ट्री के ही गया। कल उसकी नकल रजिस्ट्री द्वारा भेजी जावेगी। बाद को प्रार्थना के समय बापू डा० गिल्डर से मजाक कर रहे थे, "डाक्टर, मुलाकातो के लिए तैयार रहना।" मुझे लगा कि या तो मुलाकाती लोग आवेंगे या जिन्हे यहा की बन्दिशें नही चाहिए, उन्हे बिस्तरा गोल करने का हुक्म आवेगा।

१७ नवम्बर '४३

आज दोपहर को बा के नाम छगनलालभाई का पत्र आया। 'शकुतला का ऑपरेशन करना पडा। अब चिन्ता का कोई कारण नहीं है।' हा, अब चिन्ता काहे की! अब तो शकुतला भगवान् की गोद में सुरक्षित है। पीछे पत्र में लिखा था कि उन्होने बा के पत्र से समझा था कि मनु और सुशीला को सरकार ने छोड दिया है, मगर वे दोनो अपनी खुशी से बा और बापू की सेवा कर रही है। बा को यह खटका। उन्होंने बापू से जाकर तार तैयार कराया कि यह बात गलत है। सिर्फ मनु को ही छोडने की बात थी, सुशीला को नहीं। मैंने समझाया कि तार की क्या आवश्यकता है, मगर वे नहीं मानी।

सबेरे बहुत धुन्ध थी। सामने का दरवाजा भी नही दिखाई देता था।

१८ नवम्बर '४३

आज सुबह आकाश साफ है। खासी गर्मी पडती है। श्री कटेली के घुटने में दर्द है, कल से खेलते नही। कल सुबह मैं और मनु दोनो अकेले ही खेले थे, आज नहीं खेले।

दिन अधिकाश मे बेकार गया। रात को भी कुछ नही पढा।

१९ नवम्बर '४३

दिन बहुत खराब गया। गीताजी में रोज पढती हू कि मृत्यु का स्वरूप क्या है, मगर जब उस ज्ञान पर अमल करने का अवसर आता है तब असफल सिद्ध होती हू। बीते वर्षो में महीनो तक महादेवभाई की मूर्ति आखो के सामने नाचती रहती थी, इस वर्ष शकुतला की है। प्रार्थना के लिए आखें बन्द करती हू, पर शकुतला सामने आ खडी होती है— वही मधुर मुस्कान, वही हसता हुआ चेहरा। रात को सोने के लिए आख बन्द करती हू, तब फिर वही हाल होता है। मेरे जैसे, जिन्हे ईश्वर ने इतना सब दिया है,

असंतुष्ट रहते हैं, मगर वह लड़की हमेशा संतुष्ट थी। निराशा-जैसी चीज उसके पास थी ही नहीं। वह चली गई और हम यातना भुगतने को रह गए।

सरकार पर गुस्सा आता है, जिसने हमें बन्द करके इस तरह प्रियजनों का वियोग दिखाया— जब तक तन में प्राण हैं, मैं सरकार से लड़ती ही रहूंगी। वह खतम होगी या हम!

२० नवम्बर '४३

शकुन्तला की बातें होती रहीं। बेबी बच जावे तो बड़ी बात है। मां ने इसी बच्ची के कारण प्राण दिये।

महादेवभाई की समाधि पर सुबह खूब फूल सजाए। अब तो कुछ फूल रहे ही नहीं। सब सूख गए, इसलिए फूलों के अभाव में मीराबहन पूजा में भी अधिकतर पत्तों से ही काम चलाती हैं।

महादेवभाई की समाधि पर प्रार्थना करते समय उनकी मूर्त्ति के साथ-साथ शकुंतला की मूर्त्ति भी रहती है।

२१ नवम्बर '४३

मीराबहन को थोड़ा-सा बुखार है। जुकाम अच्छा हो जाने पर भी अभी तक उनका गला खराब है। हाथ में भी बहुत दर्द होता है। मृत्यु की खबर ने भी उन पर असर किया है।

यहां बैठे-बैठे जानती थी कि शकुंतला वहां आराम से होगी, इसलिए संतोष था, मगर एक तार ने दुनिया ही बदल दी है। वह अलौकिक लड़की हमारे पास क्यों रहती? हम उसके लायक नहीं थे।

२२-२३ नवम्बर '४३

दो दिन तक डायरी नहीं लिखी। कुछ करने को मन नहीं होता। बापू कल मुझ से कह रहे थे, "मुझे नहीं मालूम था कि तुझमें इतना राग है।" मैंने कहा, "मैंने कभी किसी पर ऐसा असर नहीं डाला कि मुझ में वैराग्य है।" बापू कहने लगे, "वैराग्य भले न हो, पर उसमें और राग में फर्क है।" जो भी हो, मैं शकुंतला को भूल नहीं सकती।

लक्ष्मी भाभी ने बा को पत्र भेजा है। शकुंतला की मृत्यु का भी थोड़ा हवाला था— 'बहुत दुःख और वेदना उसने सहन की, मगर मृत्यु के एक घंटा पहले तक सबको पहचानती थी। शव को नहला-धुलाकर और लाल चुनरी ओढ़ाकर लाए तो नई दुलहन-सी लगती थी।' वह नई दुलहन भगवान् की थी, उसीके पास चली गई।

लक्ष्मी भाभी का एक तार भी आया है। उसमें 'बेबी अच्छी है' यह जानकर संतोष हुआ। ईश्वर उसे दीर्घायु करे!

मीराबहन ज्यादा बीमार हैं, बुखार अधिक था, गले की गांठें फूली हैं। उनमें से गले में अन्दर मवाद निकलता देखा जा सकता है।

२४ नवम्बर' ४३

'कांग्रेस की जिम्मेदारी' पैम्फलेट के सम्बन्ध में बापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया। कोरा जवाब था— 'आपने आठ अगस्त वाले प्रस्ताव के बारे में मत नही बदला। कांग्रेस कार्यकारिणी ने भी अपना रुख नही बदला। सो आपको मिलने देने में कोई फायदा नही।' बम्बई सरकार को बापू ने जो पत्र लिखा था, उसका भी जवाब आया कि आगे से तार जल्दी मिला करेंगे। डा० गिल्डर की मुलाकात के बारे में उनकी लडकी ने भी लिखा है। उसी सिलसिले में बापू का पत्र दिल्ली भेजा गया है।

आज मीराबहन को १०२ डिगरी तक बुखार रहा। सल्फा शुरू किया तो उतर गया। कमजोरी बाकी है।

२५ नवम्बर '४३

मीराबहन के खून की परीक्षा करने के लिए डाक्टर को बुलाया, लेकिन वह परीक्षा करने का सामान नही लाया था। वह केवल खून की स्लाइडें[1] ले गया। हम तो स्लाइडे पहले ही भेज चुके थे। गले के मवाद का फोआ बना कर भी परीक्षा के लिए ले गया।

आज मीराबहन की तबीयत थोडी अच्छी रही, बुखार ९९.४ से ऊपर नही गया। सारी दोपहरी उनकी सेवा में गई। एनीमा दिया और स्पज भी किया। यहा डाक्टरी और नर्सिग दोनो करने पडते है।

२६ नवम्बर '४३

प्रकाश का पत्र आया है। उसे भी मृत्यु का ही तार मिला था। बेचारी तुरत आई। माताजी को बीस-बीस दस्त आते थे, तीन दिन के इलाज से कुछ फायदा हुआ। बेबी को अस्पताल से लाई। उसे हरे दस्त आ रहे थे, मुह में दाने भी थे, पर अब अच्छी है।

२७ नवम्बर '४३

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है, यानी शनिवार। सुबह जितने फूल इकट्ठे कर सकी, किये। उनमें से मीराबहन की पूजा के लिए भी ले आई— बालकृष्ण को महादेव का प्रसाद मिला।

२८ नवम्बर '४३

सोचती हू कि मृत्यु से इतना क्या घबडाना, जबकि सभी को आगे-पीछे एक-न-एक दिन जाना ही है। मगर यह विचार तो पीछा ही नहीं छोडता कि शकुतला अब कभी नहीं मिलेगी।

बेबी का विचार आता था। भण्डारी आए तो मैंने पूछा, "मेरे भाई ने मुझे तार किया था कि वे बेबी को मेरे पास रखने के लिए अर्जी दे रहे है। उसका क्या हुआ?"

---

[1] परीक्षा के लिए खून की बूद शीशे की पटरी पर फैलाकर ले जाते हैं।

उन्होंने वताया, "अर्जी मेरे पास आई थी। सरकार को भेजी है।" मालूम नहीं, सरकार इजाज़त देगी भी या नहीं।

२९ नवम्बर '४३

आज वापू का मौन है। डा० गिल्डर को आज मुलाकात का अवसर मिलेगा, भडारी कल कह गए थे। डा० साहव जल्दी तैयार हुए, मगर गाडी करीव साढे वारह वजे आई। दो सिपाही साथ गए। साढे तीन वजे डा० साहव वापस आए। अभी एक मुलाकात मिली है, दूसरी मुलाकातो की वात चल रही है। दो हफ्ते में पता चलेगा। डा० गिल्डर वहुत खुश है।

वापू ने मोहनलाल के पत्र तार आदि दोपहर को मागे। रात के समय सरकार को भेजने के लिए एक पत्र तैयार किया। वेवी के विषय में सरकार को मोहनलाल ने लिखा है। सरकार स्वीकार करे तो अच्छा है, नहीं तो मुझे पेरोल पर छोड दे। हा, इससे कुछ दिक्कतें अवश्य वढ जायेंगी। वापू और वा को कष्ट होगा, वे कष्ट सहन कर लेंगे। मुझे लगता है, वापू एक व्यक्ति के वारे में इन लोगो को क्यो लिखें? उनके पास वहुत वडे काम पडे है, मगर वापू ने लिखा ही। वे छोटी चीजो से ही वडी चीजो पर जाते है।

मेरी चचेरी वहन सत्या का पोस्टकार्ड पद्रह दिन वाद आया।

: ६१ :

वा के वारे में चिंता

वा की तवीयत परसो से अच्छी नहीं है। कल स्नान-घर में उन्हें इतनी कमजोरी लगने लगी कि उन्होंने मुझे आवाज दी। मैं जाकर उन्हें वाहर लाई। अपने आप उठने की उन्हे हिम्मत न होती थी।

३० नवम्बर '४३

कल रात वापू ने सरकार को लिखा था कि वह मोहनलाल की अर्जी के अनुसार वेवी को न भेज सके तो सुशीला को पेरोल पर छोडे। मुझे लगा कि वापू तो पेरोल के खिलाफ है, फिर मेरे लिए क्यो लिखें? वापू इस वात पर विचार कर रहे है। इस सम्वन्ध में मैंने भाई से भी वात की।

आज इस पत्र ने ही दिन का सारा समय ले लिया।

वा का दम खूव फूल रहा था। रात को आक्सीजन मगाकर रखी, क्योंकि वा की हालत किसी भी समय विगड सकती है।

१ दिसम्बर '४३

आज मेरे वहुत रोकने पर भी वापू का पत्र गया। मैंने और डा० गिल्डर ने सरकार को पत्र लिखा कि वा की हालत अच्छी नहीं है। उन्हे नियमित मुलाकात मिलनी

चाहिए। वह दवारूप काम करेगी। कच्ची नकल मैंने तैयार की थी, जिसे रात में टाइप कर लिया।

२ दिसम्बर '४३

मालिश के समय बापू को उस पत्र के बारे मे बताया, जो कल बा के सम्बन्ध में तैयार किया था। डा० गिल्डर से उन्होने कहा, "अगर यह पत्र भेजना डाक्टरो को अपना धर्म लगे तो भेजे।" डा० गिल्डर को लगता था कि अभी तो बापू ने उनके और मेरे बारे में भी सरकार को लिखा है। एक और माग करना शायद ठीक न हो। मुझे लगता था कि भेजना हो तो जल्दी ही भेजना चाहिए, क्योकि आज बा की तबीयत इतनी बिगड गई है और दो हफ्ते पीछे अच्छी भी हो सकती है। दूसरी बार बिगडे तबतक की राह देखनी चाहिए। अगर मुलाकात बा के लिए दवारूप है तो उसमें देर क्यो की जाए! बा हर बार खतरे से बच ही जाएगी, यह मानने का कोई कारण नही। आखिर डा० गिल्डर कहने लगे, "हम डा० शाह से सब हाल कह देंगे। वे अपने आप लिखें तो ज्यादा अच्छा होगा।" डा० शाह आज आए नही सो कुछ कर नही सके।

बा की तबीयत कुछ ज्यादा ढीली है। उनमें स्नान करने की शक्ति नहीं है, इसलिए उन्होने स्पज ही किया।

बापू बहुत विचार में पडे दीखते है, बा की चिन्ता मे है।

३ दिसम्बर '४३

आज बा की तबीयत कुछ अच्छी है। डा० शाह आकर कहने लगे कि उन्होने बा को छोडने के लिए लिखा है। डा० गिल्डर ने बताया कि वे छूटना तो चाहती नही है। मुलाकात की सुविधा के लिए लिखना चाहिए था कि जिससे बा का मन कुछ शान्त हो। शायद डा० शाह इस बारे में लिखेंगे। मीराबहन के बारे मे भी डा० शाह ने लिखा है कि या तो उन्हे अस्पताल में भेजा जाए या उन्हे छोड दिया जाए। यहा उनका इलाज नही हो सकता।

मीराबहन बापू से कुछ सवाल पूछना चाहती है ताकि एकाएक छूटने का हुक्म आ जावे तो उन्हे कठिनाई न आवे।

४ दिसम्बर '४३

आज शनिवार है, महादेवभाई की मृत्यु का दिन। आजकल फूल नही है। सिपाही ने थोडे फल इकट्ठे किये, उन्हीं की सहायता से समाधि की सजावट की।

कल रात में बा की तबीयत बहुत खराब थी। दम के कारण बहुत कम सो सकी। हम लोग ी कम सो पाए। सवेरे दातुन वगैरह उन्हे खाट पर ही कराई।

मैंने शाम को बाइबिल के समय भी सस्कृत पढना शुरू किया है ताकि अगर पेरोल पर जाना हो तो सस्कृत की दोनो किताबें घर से ही पक्की कर लाऊँ, परतु शका है कि सरकार जाने की इजाजत दे ही देगी।

तीन दिन पहले हम शाम को खेलकर लौट रहे थे तो सीढी के पास

कैना (अकीक) के फूलो में एक छोटा-सा पक्षी बैठा फडफडा रहा था। भाई ने पकड लिया। कहने लगे कि मीरावहन को दिखाएगे । ऊपर लाए । मीरावहन ने कहा, "यह शकरखोरा का बच्चा है। इसे दो-चार दिन रखें और जब इसमें उडने की शक्ति आ जाए तब जाने दें।" बापू की छोटी-सी रद्दी की टोकरी थी। उसमें पत्ते बिछाकर, बीच में एक दातुन आरपार रखी । उस पर उसे बिठाया । टोकरी के मुह पर वे कपडा वाध देती है कि कहीं बिल्ली न खा जावे और हवा भी अन्दर जाती रहे। उसे शहद खिलाती है, पानी पिलाती है। बापू के पास जब बाइबिल पढने आती है तो उसे साथ लाती है । दरख्त की एक टहनी वहा रख देती है और जगल का-सा वातावरण पक्षी के लिए बन जाता है । फूल लेने जाती है तो उसे साथ ले जाती है। वह धूप में उछलता-कूदता रहता है। पहले दिन मीरावहन को डर लगा था कि वह बीमार-सा लगता है। मगर धूप में खूब उछलने लगा, इस-लिए उनको लगता है कि एक-दो दिन में वह उड जावेगा।

वा की तबीयत अच्छी नहीं। दोपहर को स्पज किया। बाद में उन्होंने थोडी नींद ली। आज वह इतना घबरा रही थी कि एक बार कहने लगीं, "बस, मैं अब चार-पाच घटे की मेहमान और हूँ ।" मैंने कहलाया, "नही बा, अभी तो चार-पाच वर्ष है।"

शाम को वे कुछ स्वस्थ हुई। सुबह कटेली साहब पूछ गए थे कि बा किस-किस से मिलना चाहती है। बापू ने लम्बी सूची दी और कहा कि याद आवेंगे तो और नाम बतावेंगे ।

रात में नींद कम आई। बापू भी कम सोए। बापू का रक्तचाप ज्यादा है।

५ दिसम्बर '४३

भडारी और शाह आए। खबर मिली कि सरकार ने देवदास और रामदास-भाई को आने के लिए तार दिया है। रामदासभाई ने टेलीफोन किया कि नीमू भाभी आज दोपहर तक पहुँचेगी। वे खुद और बच्चे नहीं आ सके। वे लोग सरकार के तार से बहुत घबरा गए होंगे।

वा की तबीयत आज अच्छी है। रात में नींद अच्छी आई। मुलाकात की आशा से उनकी तबीयत में काफी सुधार हुआ है। नीमू भाभी तो शाम को सवा छ बजे आईं। एक घटे की मुलाकात थी। खाली बा और बापू को वहा रहने की इजाजत थी। श्री कटेली सारा समय हाजिर रहे।

पता लगा है कि देवदासभाई कल आ रहे है।

कल रात में बडी सर्दी थी। सुबह मीरावहन ने देखा कि पक्षी रात की सर्दी में खतम हो गया था। बहुत बुरा लगा। मीरावहन ने गड्ढा खोदकर उसे दबाया। वहा एक पत्थर स्मृति के तौर पर रखा और उस पर कुछ लिखा भी।

कल से शाम को कटेली साहव ने खेलना शुरू किया है, अच्छा लगता है।

कल मीराबहन ने वापू से कुछ प्रश्न पूछे थे। आखिरी प्रश्न समाजवाद पर था। वापू कहने लगे, "इस प्रयोग की ओर आदमी उदासीनता नही रख सकता और रखनी भी नही चाहिए।

"मुझे इसमें वहुत रस आ रहा है। चीन और रूस का इतिहास पढा। इसमें शक नही कि ये लोग जनता की सेवा के लिए ही सव कुछ कर रहे है, अगर उनका पाया हिसा में है। हिंसा के विना वे रह नही सकते और हिसा हमेशा टिक नही सकती। इसलिए यह प्रयोग भी अन्त में निष्फल होगा, ऐसा मुझे लगता है। आज तक हिंसा ऊपर के वर्ग वालो के हाथ मे थी, अव वह जनता के हाथ में आई है। यह कोई नही कह सकता कि इसका परिणाम क्या होगा।"

मीरावहन ने चीन की वात चलाई। कहने लगीं, "हिंसा के प्रश्न को छोडकर अगर देखा जाए तो समाजवादियो में और आपके शिक्षण में ज्यादा अतर नही है।" वापू ने कहा, "मशीन का प्रचार भी तो है।" मीरावहन वोली, "मगर वह इतना वुरा नही। उसे आसानी से फेंका जा सकता है। क्या आपको ऐसा नही लगता ?" वापू कहने लगे, "मुझे तो उससे उल्टा लगता है। उद्योग का, मशीन का प्रचार हिसा की जड है और उसे निकालना आसान नही। उसे निकालना शायद हिंसा को निकालने से भी ज्यादा कठिन है।"

मीरावहन ने कहा, "मगर वे लोग जल्दी ही समझ जावेंगे कि इस पथ पर चलना मूर्खता है। रूस की आवादी कम है, सो वे तो सदियो अपनी मूर्खता समझे विना इस रास्ते जा सकते हैं, मगर चीन की आवादी ज्यादा है। वे लोग जल्दी ही समझ जावेंगे कि उद्योग वढाने में, मिले वढाने में, उनकी वर्वादी है।"

६ दिसम्बर '४३

आज वापू का मौन है। वापू ने वा की मुलाकातो के वारे मे एक पत्र सरकार को लिखा, मगर वाद में उसे न भेजने का निश्चय हुआ। डा० शाह आए। कहने लगे, "श्रीमती रामदास को आने की इजाजत फिर मिलनी चाहिए।" वे भडारी से भी यही कह कर आए होगे। रात को खवर मिली कि उन्हे आने की इजाजत मिलेगी।

दोपहर को अखवार में देखा कि देवदासभाई आज दोपहर पूना पहुच रहे हैं। शाम को हम लोग खाने की तैयारी में थे कि पता चला कि देवदासभाई आए हैं। वा ने तो कह दिया कि कल आवे, आज वापू का मौन है। मगर वापू ने अभी आने को कहा। कारण पूछा तो वापू ने लिखा, "अगर वा को रात में कुछ हो जावे तो ?" मौन छोडने के वाद रात को समझाने लगे, "महादेव ने जाते समय क्या एक घटे का भी नोटिस दिया था ? वह तो बीमार नही था, मगर बा तो, हम सव जानते हैं, किसी भी दिन वगैर नोटिस दिये जा सकती है। कही कुछ हो जावे तो हमेशा के लिए मन में अफसोस रह जावे। देवदास तो वा से मिलने आ रहा है, मुझसे नहीं। मेरे मौन के कारण उसे रोकना ठीक

न था ।"

देवदासभाई आए । उन्होने बापू को शकुन्तला का सब हाल सुनाया । बाद में माताजी, मोहनलाल और बेबी के समाचार बताए । बेबी अच्छी है, सब लोग हिम्मत रख रहे है ।

सभी कहते है कि अगर मैं शकुतला के पास रहती तो शायद उसके लिए कुछ कर पाती, मगर सच तो यह है कि जब किसी को जाना होता है तो बचने के साधन भगवान् गायब कर देता है । बुद्धि भी ऐसी ही उत्पन्न करता है कि बचने की सूरत ही न रहे, इसलिए बार-बार विसूरने से लाभ क्या ?

माताजी को मेरे पत्रो से बडा सतोष मिला, यह बताकर देवदासभाई ने बापू से कहा कि सुशीला के पत्र माताजी के लिए ताकत की दवा (टॉनिक) का काम करेगे, इसलिए बापू को चाहिए कि वे मुझे नियमित रूप से पत्र लिखने का आदेश दें । दु ख हुआ । लिख सकू तो मुझे भी बडा अच्छा लगे, मगर जब एक बार निश्चय कर लिया कि नहीं लिखना है तो निश्चय किस तरह तोडा जाय । सरकार भी कहेगी कि देख लिये ये लडने वाले, जरा-सी तकलीफ हुई नही कि फिसले !

बापू ने मुझसे आवश्यकता पडने पर पत्र लिखने को कहा । मुलाकात में बापू और बा को ही रहने की इजाजत थी । देवदासभाई अभी बैठे ही थे कि इतने में बा की छाती में दर्द अधिक होने लगा । बापू ने देवदासभाई को भेज दिया । बाद में हम लोग बा की सेवा-शुश्रूषा में लगे रहे ।

बा की तबीयत कुछ अच्छी दीख पडी, इसलिए हम लोग घूमने आए और प्रार्थना के बाद काता । प्रार्थना भीतर हुई, क्योकि कल से बा ने अन्दर सोना शुरू किया है । बा के पास रात के १२ बजे तक बैठी और उन्हे सुलाकर सोई ।

७ दिसम्बर '४३

आज से बापू ने सुबह घूमने जाने का समय आठ बजे का कर दिया है , क्योकि सुबह सर्दी बहुत पडती है । धूप में घूमना अच्छा लगता है। शायद कल से सवा आठ पर ही निकले ।

डा० गिल्डर वगैरा ने सुबह का नाश्ता छोड दिया है, साढे दस-ग्यारह बजे खाना खाते है । रसोईघर का सिपाही बीमार है, इसलिए कल से मैं ही रोटी बनाती हूँ। एक दूसरे कैदी को भी सिखाया है, शायद वह अब बना लेगा ।

नीमू भाभी साढे तीन बजे आई और घटे भर बाद गई । पीछे देवदासभाई आए । बापू को यह सब समाचार सुनाते रहे । माताजी ने सरकार को अर्जी दी थी कि वह या तो मुझे छोडे या उन्हे मेरे पास रखे । यह न हो सके तो महीने में कम-से-कम एक मुलाकात की व्यवस्था करे। पद्रह दिन बाद जवाब आया कि इन बातो में से एक भी नही हो सकती ।

मैंने जब यह सुना तो बडा अफसोस हुआ । बापू को भी अच्छा नही लगा। उनका मत है कि मुझे छुडवाने की कोशिश करना फिजूल है । सत्याग्रही को यह शोभा नही देता । जो करने या मरने की बात कहकर आते है, उन्हे तो सरकार छोडे तो भी वे फिर जेल जाने की तैयारी किये रहते है ।

बेबी के विषय में देवदासभाई ने बापू को बताया कि उससे तो क्या माताजी और क्या मोहन—सब का मन लगा हुआ है, इसलिए उसको वहा से हटाने की कोशिश ही नही करनी चाहिए । इस पर बापू विचार करने लगे । सोचने लगे कि जो खत लिखा था, वह वापस ले लेना चाहिए या नही । पेरोल बेबी के लिए मागी थी, उसके लिए आवश्य-कता न हो तो मेरी या मेरी माताजी की खुशी के कारण पेरोल मागना ठीक नही । मुझे भी लगा कि बापू का जो पत्र गया है, उससे किसी तरह का गोलमाल नही होना चाहिए । माताजी की खातिर पेरोल मागे तो वह एक स्वतत्र विषय होगा, बेबी के साथ वह विषय मिलाना नही चाहिए । घूमते समय यही चर्चा चली ।

देवदासभाई के जाने के बाद बापू को दूध वगैरा दिया, पीछे घूमने गए । प्रार्थना के बाद काता ।

८ दिसम्बर '४३

सब सोच-विचार कर बापू ने बेबी के यहा आने या मेरे पेरोल पर छोडे जाने के बारे मे अपनी माग को वापस न लेने का निश्चय किया । उन्होने देवदासभाई के मान जाने पर ही वह कार्य करने का विचार किया था, मगर देवदासभाई ने यह पसन्द नहीं किया । उन्हे लगता था कि बेबी का क्या भरोसा है । फिर माताजी व मोहनलाल की बडी समस्या के कारण भी यह बात इष्ट थी । मैंने बापू से कहा कि उन्हे जो ठीक लगे वह करे, मगर बापू को लगा कि देवदास ने जो खबर दी है, उसका आश्रय ले कर कुछ भी करना हो तो उसकी सम्मति से ही करना चाहिए ।

किशोरलालभाई की तबीयत जेल में बहुत खराब रहती है । वजन ७५ पौण्ड हो गया है । इस बारे में बात करते-करते बापू कहने लगे, "मैंने तो किशोरलाल को खोने की पूरी तैयारी कर ली है । मुझे यह सुन कर जरा भी आश्चर्य न होगा कि किशोर-लाल महादेव की तरह नागपुर जेल में ही चल बसा । अहिसक लडाई दूसरी तरह चल नही सकती ।"

इस परिस्थिति में भी सत्याग्रहियो को जेल से छुडाने के लिए आदोलन की बात करते हुए बापू कहने लगे, "व्यक्तियो के लिए ऐसा करना ठीक नही है, खासकर सरकारी अमलदारो से मिलकर उनसे ऐसी माग करना तो एकदम अयोग्य है । जो आदमी इन लोगो के पास कुछ भी मागने जाता है, वह कुछ खोकर आता है । अपना तो खोता ही है, मगर हिन्दुस्तान का भी कुछ खोकर आता है । खुला सार्वजनिक आदोलन लोग कर सकते है, मगर वह तो ऐसे सब के लिए होगा, एक अकेले व्यक्ति के लिए नही ।"

बा की तबीयत अच्छी नही है । दिन में तो कुछ ठीक रही, मगर शाम को ज्यादा

बिगडी । पेट में तकलीफ थी । भाई बाहर से उन्हे उठाकर अन्दर लाए। शाम को हम लोग घूमने गए थे, उस समय भी बा को कुछ घबराहट हुई थी । मुझे बुलवाया था, तभी मैंने निश्चय किया था कि जबतक बा कुछ अच्छी न हो, उन्हें एक मिनट भी अकेले नहीं छोडूगी ।

बापू का रक्तचाप कभी-कभी ज्यादा रहता है, सामान्यत सुबह १९२/१०४ । उन्हे बा की काफी चिंता रहती है । कहते थे, "मुझे आशा थी कि बा को साथ लेकर बाहर जाऊगा, मगर अब वह आशा छूट गई है ।"

बा को 'स्ट्रोफैन्थस' नाम की दवा देना बन्द कर दिया है । आज नीमू भाभी और देवदासभाई बा से मिलने आए । सबका स्वागत करने और विदा करने का काम बापू को करना पडता है, क्योकि दूसरो को तो उन्हे मिलने की इजाजत नही है ।

९ दिसम्बर '४३

आज रामीबहन, मनु मशरूवाला, बा के भाई और देवदासभाई बा से मिलने आए । दोनो बहनें साथ आई, फिर मामा और देवदासभाई आए । सुना है कि जब बापू ने मनु की पीठ जोर से ठोकी तब रामीबहन की बच्ची इतना डर गई कि सारा समय रोती रही । मनु की बच्ची मजे में रही । मनु ने बा को 'कह के पथिक, कह कीन्ह है गमनवा' गाकर सुनाया और उसकी बच्ची ने नाचकर बताया । दूर से मीराबहन गाना सुन रही थीं । बोलीं, "असल गाना ग्रामोफोनी गाने से कितना अच्छा लगता है ।"

बा को आज 'डेरीफिलिन' के दस बूद दिये । उससे छाती का दर्द बैठा । बारह-एक बजे के बाद उनका दिन अच्छा गया और रात को नीद भी अच्छी आई ।

१० दिसम्बर '४३

आज बा के साथ देवदासभाई की आखिरी मुलाकात है । अगर सरकार ने इजाजत दी तो लक्ष्मी भाभी और बच्चो को लेकर देवदासभाई फिर आवेगे ।

बा की तबीयत दिन भर अच्छी रही । रात में बहुत अच्छी नींद आई । खासी के मिक्सचर के अलावा उन्हे कोई दवा नहीं दी । ऐसा सुधार चालू रहेगा तो बा बहुत जल्दी अच्छी हो जाएगी । बापू को इसमें शक है । वे बहुत कम आशा करते है ।

शाम को भडारी आए, कल से छुट्टी पर जा रहे है । वे देवदासभाई से बाते करके चले गए । श्री कटेली मुलाकात की रखवाली करने में लगे थे, इसलिए भडारी को लेने या विदा करने नही गए ।

११ दिसम्बर '४३

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है । उनकी समाधि पर प्रार्थना करते समय शकुतला की याद हो आती है ।

रोज डाक की राह देखा करती हू। न घर से ही कोई खबर आती है, न बापू के पत्र का सरकारी जवाब ही आता है।

बा की तबीयत दिन भर अच्छी रही।

पेट के आपरेशन के बाद जो पलग इस्तेमाल किया जाता है, वह आ गया है और कल से बा के काम में लाया जाएगा।

मनु की तबीयत अच्छी नहीं और भाई की भी शाम को बिगडी, इसलिए बापू और बा की मालिश मैंने ही की। सोने को जाते-जाते ग्यारह बज गए।

१२ दिसम्बर '४३

बा को आज नए पलग पर लिटाया। सुबह के समय वे अच्छी थीं, पर दोपहर में ढीली पड गई। शाम को फिर अच्छी दिखती थीं।

सुबह कर्नल भडारी की जगह कर्नल अडवानी आए। महादेवभाई की मृत्यु के दिन उन्हे देखा था—आज फिर देखा।

आज मैंने सर फीरोजशाह मेहता की जीवनी पढ डाली। डाक्टरी पत्र-पत्रिकाए पढने का इरादा फिर किया है। सब्जी पीसने की बिजली की मशीन का शीशा मुझसे फूट गया।

१३ दिसम्बर '४३

भाई की तबीयत कल रात से ढीली थी, आज दोपहर उन्हे बुखार आ गया और १०३.२ डिगरी तक पहुच गया। शाम से उन्होने कुनैन लेना आरम्भ किया है। हमेशा शेखी बघारते रहते थे— "मुझे मलेरिया नहीं हो सकता।" मच्छरदानी लगाकर तो सोते नहीं थे, इसीलिए मलेरिया का आक्रमण हुआ है। कुनैन के असर से रात में केवल एक घटा सोए।

बापू का मौन है। मेरे विषय में जो पत्र उन्होंने सरकार को लिखा था, उसका सरकारी उत्तर दोपहर को आया। सरकार ने मुझे पेरोल पर छोडने की या बेबी को यहा रखने की, दोनो प्रार्थनाओ को नामजूर कर दिया है।

मोहनलाल का लम्बा पत्र आया है। लगता है कि डाक्टरो ने शकुतला के मामले में बडी ढील और लापरवाही से काम लिया। मगर ईश्वर की इच्छा के बिना क्या हो सकता है ?

एक के बाद एक प्रियजनो की मृत्यु सरकार के कारण हो रही है।

बापू ने लिखा, "मुझे तू लडने दे तो मैं पेट भर कर लडू।" परन्तु मुझे यह बात ठीक नहीं लगी। बापू लडाई में उतरें तो कहा जाकर अटकें, इसका पता नही चल सकता।

बा अच्छी है। रात को खूब सोईं।

१४ दिसम्बर '४३

बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर लिखा और भाई ने उसे टाइप किया। पत्र का भाव यह है कि सरकार की कार्रवाई अनुचित हुई है।

भाई को ९९ ६ डिगरी वुखार है मगर काम तो वे करते ही रहे ।

कल मैंने अपना ऊनी शाल उधेड डाला, वेवी के लिए उसमें की ऊन से स्पटे बनाकर भेजूगी । यहा नई ऊन तो कहा से मिल सकती है ?

कल से हम लोगो ने वेडमिन्टन खेलना आरम्भ किया है। रात में वा कम सोईं ।

१५ दिसम्बर '४३

भाई को आज भी ९९ ६ डिगरी वुखार आया । शाम के वक्त वे खेलना चाहते थे, मगर डाक्टर गिल्डर ने मना कर दिया । तव वापू के साथ घूमने निकले ।

कल से डा० गिल्डर ने वाह् के अदर की ओर की नाडी के लकवे पर (पैरेलेसिस आव रेडियल नर्व) पर लेख लिखवाना शुरू किया है।

डा० शाह आज कह रहे थे कि वा के लिए किसी भी चीज की आवश्यकता हो तो वता दें । मैंने कुछ दवाए लिख कर दीं और एक पहियेदार कुर्सी के लिए भी कहा । वाहर धूप में से वा को गुसलखाने ले जाने के लिए कुर्सी पर उठाकर लाना पडता है । तीन आदमी—मैं, भाई और मनु उठाते हैं। वा को यह अच्छा नहीं लगता । पहियेदार कुर्सी में एक ही आदमी ला सकेगा ।

आज मीरावहन वापू से कहने लगी कि वे 'जगली जानवर और अहिंसा' पर प्रकाश डालें । वापू वोले, "मेरी अहिंसा मनुष्य तक ही जाती है । जगली जानवरो को खोज-खोज कर मारने की सलाह नही दूगा, मगर शेर या चीता कही हमला करे तो उसे वहा के लोग मारें । उसके लिए तालीम लें तो मैं रोकूगा नहीं । जितनी जल्दी हो सके, कम-से-कम तकलीफ देकर उसे मारना चाहिए ।"

सवाल उठा कि यह तालीम सभी लोग लें या एक व्यक्ति ? और एक व्यक्ति जो चुना जाए, वह शारीरिक वल के आधार पर या अन्य गुणो के कारण ? वापू ने कहा, "अगर एक को ही चुनना हो तो वह सार्वजनिक मत से चुना जाना चाहिए, शारीरिक वल के कारण नही, मगर लोगो का वह कितना विश्वासपात्र है, इस माप से । मुझे लगता है कि यह तालीम गाव के सव लोग लें तो अच्छा है, नही तो एक आदमी दूसरो पर वाद में सत्ता जमा सकता है । वह ऐसा न भी करे तो भी लोगो के मन में ऐसा भाव पैदा तो होगा कि वह तालीमयापता आदमी उनसे ऊचा स्थान रखता है। यह योग्य नही है।

वा रात को खूव अच्छी तरह सोईं ।

१६ दिसम्बर '४३

वा आज रात को देर से सोईं। मैं वारह वजे तक उनके पास थी। मनु मेरे जाने के वाद वा के ही पास सो गई । भाई के सिर में दर्द था, पर वाद में अच्छा हो गया और वे रात के वारह वजे तक पढते रहे ।

१७ दिसम्बर '४३

सुवह वा आठ वजे के वाद उठीं ।

मैंने मीराबहन के साथ साढे सात से पौने आठ तक सवेरे कसरत करना शुरू किया है ।

मगलवार से शाम को वाइविल का पढना फिर शुरू किया है। मीराबहन 'किग डेविड' तक पढ गई और मैं 'लेविटिकस' तक पहुची हू। आशा है, उन्हे शीघ्र ही पकड़ लूगी ।

वा के लिए पहियेदार कुर्सी आ गई है । शाम को वा को उस पर विठाकर घुमाया । उन्हें वहुत अच्छा लगा ।

वा की तवीयत कुछ ठीक थी । शाम को एकाएक धडकन का दौरा हो गया, लेकिन गर्दन की एक विशेष नस को दवाने से चन्द मिनटो में ही वन्द हो गया । उसके वाद वे निर्वल हो गई और दस वजे रात को सो गई । अचानक दो वजे उन्हे वडी खासी आई—करीव घटे भर परेशान करती रही, पीछे चार वजे सो पाई । शाम को क्वीनीडीन की गोली दी थी । ताकत के लिए 'ईस्टन सिरप' देती हू, क्योकि वा शक्ति की दवा मागती हैं ।

भाई के साथ मैंने रात में उमर खय्याम की रुवाइया पढी ।

१८ दिसम्बर '४३

दिन में वा ने करीव ५ घटे की अच्छी नीद ली। शाम को डा० शाह और अडवानी उनसे मजाक करने लगे, "सरकार का हुक्म है कि रात में अच्छी तरह सोना ।" रात को खवर मिली कि देवदासभाई कल तीन-साढ तीन के वीच आवेंगे । आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है, परन्तु फूल वहुत कम होने के कारण सजावट न हो सकी ।

१९ दिसम्बर '४३

कल रात में वा एक वजे के करीव सो पाई । मै उनके पास अढाई-तीन वजे तक वैठी रही। वाद में सो गई । परिणाम-स्वरूप सुवह की प्रार्थना मे आज भाग नहीं ले सकी ।

भाई प्रार्थना के वाद दिन भर खाली समय में मोहन और तारा[1] के लिए तस्वीरो का एक अल्वम तैयार करते रहे। वे लोग लगभग साढे तीन वजे आए। अल्वम की किताव साढे चार वजे तैयार हुई। मैंने भी दो एक घटे उसमे दिये। मनु ने थोडा समय दिया । भाई ने तैयार करके वापू को दिखाई, वापू ने उसे पसन्द किया ।

देवदासभाई के वच्चो के स्वास्थ्य को देखकर बापू को असतोष हुआ। शाम को घूमते समय कहने लगे, "मैं अपने आपको आदर्श पिता मानता हू । मेरे किसी भी वच्चे का शरीर ऐसा सूखा न था । सभी वालक हमेशा स्वस्थ रहे है । ये वच्चे तो दुष्काल

---

[1] देवदासभाई के वच्चे

में से आए लगते हैं ।"

वा की तवीयत अच्छी रही । अडवानी सुवह आए तो कहते थे कि देवदासभाई को एक ही मुलाकात मिलेगी , परन्तु वम्वई सरकार द्वारा उन्हें सूचित किया गया था कि मुलाकातें अधिक मिलेंगी ।

२० दिसम्वर '४३

आज श्री कटेली सरकार की ओर से आकर पूछने लगे कि वा को हृदय का रोग कब से है । मैंने वताया कि खासी तो वरसो की है और उससे हृदय का कमजोर हो जाना भी स्वाभाविक है । मगर हृदय में अव का-सा दर्द पहले नहीं था, दर्द तो पिछले मास सितम्वर मे शुरू हुआ है । कटेली साहव ने डा० गिल्डर से भी यही वात पूछी । गिल्डर को भी हृदय में कभी कुछ मिला न था । वाद में वा को आने वाले हृदय के दौरो की तारीख भी उन्होंने मुझसे मागी ।

कल रात में नींद न आने के कारण वा के कहने पर मैं उन्हें अपनी खाट पर ले गई । वहा भी उन्हें नींद नहीं आई । पास ही होने के कारण वापू भी नहीं सो सके । डेढ वजे उन्हें अन्दर लाई । मैं दो वजे के वाद और वा तीन वजे के वाद सोई ।

दो वजे से मनु वा के पास वैठी और उनके पास ही सो गई । पाच वजे उठी तव अपनी खाट पर गई । वे दोनो सुवह आठ वजे तक सोती रही ।

आज भी दिन में देवदासभाई लक्ष्मीवहन और वच्चों समेत आए । वापू का मौन रहा ।

२१ दिसम्वर '४३

कल रात में वा को वहुत कम नींद आई, दम का दौरा-सा था । कुछ नाराज भी थी, इसलिए किसी को पास भी नहीं वैठने दिया । रोज एक-दो वजे से आठ वजे तक सोती थीं, मगर आज तो सुवह ६ वजे से ही सोई और आठ वजे उठ गई । कुल मिलाकर मुश्किल से दो-तीन घटे सोई होगी । हम लोग भी नहीं सो पाए । देवदासभाई सपरिवार आज फिर आए । कल सुवह लक्ष्मीवहन और वच्चे दिल्ली चले जावेंगे ।

डा० शाह से मैंने कहा कि वा के लिए वे नर्स भेजें। सरकार ने किसी और रिश्तेदार को वुला लेने की इजाजत दी है ।

वा कनु को वुलाना चाहती है, प्रभावती का नाम भी दिया है । वे कहती है, "एक कनु आवे तो काफी है । मुझे और किसी की जरूरत नही है ।"

शाम को वहुत दिनो वाद मीरावहन खेलने आई और वेडमिन्टन खेली ।

२२ दिसम्वर '४३

कल रात को मैंने वा के पास रात भर रहने का निश्चय किया था । वा को इससे सतोष रहेगा । वापू की खाट मीरावहन के कमरे के नजदीक ले गए । मेरी खाट वा ने दरवाजे के सामने रखवाई और मनु भी उनके नजदीक ही भीतर सोई । मगर मैं तो वा के पास ही रही ।

खासी के डर से वा ने आज भी नीद की दवा मागी। मैंने वारह वजे उन्हे एक गोली दी, ग्रामोफोन वजाकर सुनाया। वा एक वजे सो गई, मगर सोते में आवाज वहुत करती थी। आवाज सुनकर वापू डेढ वजे के करीब आए। भाई और डा० गिल्डर भी आए। डा० साहव हम तीनो को खडा देखकर डर-से गए, मगर मैंने वताया कि चिंता का कोई कारण नहीं है। वा शाम को कुर्सी पर वैठकर हम लोगो का खेलना देखने आईं और रात को कैरम भी देखा। दिन में उन्होने कुछ नीद भी ली और कल से आज का दिन अच्छा गया।

कल वेवल का भाषण पढने के वाद मीरावहन ने यहा से जल्दी जा सकने की आशा छोड दी है।

२३ दिसम्बर '४३

कल रात वा कैरम का खेल देखते-देखते अपनी सव वीमारी भूल गई और सुवह आठ वजे तक सोती रही। दिन में कभी-कभी दर्द वताती थीं, मगर नीद अच्छी आई।

दोपहर मणिलालभाई का पत्र आया। पत्र के साथ ही उनके वच्चो के चित्र भी थे। वा चित्र देखकर खुश हुईं।

वा ने दिन में दो वार एनीमा लिया। रात को वे आज फिर कैरम देखने गईं। दस वजे मैं उन्हे ले गई तो उन्होने मुझे एक खेल खेलने को विठा लिया। वे मानती हैं कि मीरावहन जीते तो उनकी जीत है, क्योकि वे खेल में उनकी साथिन रही है। मीरावहन अकेली खेलती है तो हार जाती हैं। मनु को सर्दी लगती थी सो वा की मालिश वगैरह मैंने की।

२४ दिसम्बर '४३

वा सुवह सवा आठ के वाद उठी। मनु और मैं वारी-वारी से खेलने जाती हैं। एक वा के पास रहती है तो दूसरी खेलने जाती है।

मेरी और मनु की रीढ की हड्डी सीधी नहीं। उसके लिए वापू ने लोहे का एक डण्डा लटकने के लिए लगवाया है, इसलिए उस पर थोडी देर लटकी, पर शरीर जरा-सा अकड गया।

दिन में वा को दर्द की कुछ शिकायत रही। शाम के समय कहने लगी कि कैरम देखने नही आऊगी, इसलिए डा० गिल्डर वगैरह वा की खाट के पास ही कैरम ले आए। वा ध्यान लगाकर दस वजे तक खेल देखती रही और अपना सव दर्द भूल गई। वाद में मालिश करवाकर सोईं।

दोपहर को मुझे कुछ-कुछ हरारत-सी लगती थी, रात को ठीक हो गई।

कल से मैंने शाम को रामायण या सस्कृत और दोपहर मे वाइविल पढने का निश्चय किया है।

: ६२ :

अहिंसा में विचार-शुद्धि

२५ दिसम्बर '४३

आज बड़ा दिन है। मगर यहां तो सब दिन समान हैं। महादेवभाई की मृत्यु का दिन भी आज ही है। सुबह थोड़े-से चम्पा के फूल लाई थी, इसलिए सजावट सुन्दर हो गई।

खबर मिली है कि देवदासभाई कल आवेंगे। अडवानी और शाह शाम को आए और बोले कि सरकार ने कनु और प्रभावती को यहां भेजने से इन्कार कर दिया है। किसी दूसरे को बुलाने के लिए वे कहने लगे। तब बापू ने कहा, "मैं सरकार को बार-बार 'न' कहने का मौका नहीं देना चाहता। मैं उसका दृष्टिबिन्दु भी जानता हूं। उसे लगता है कि यह आदमी दगाबाज है, जापान के साथ मिला है, इसलिए वह मेरी हरेक चीज को अविश्वास की नजर से देखती है।"

किसीने पूछा कि उपवास के समय सरकार ने कनु वगैरह को क्यों आने दिया था? बापू बोले, "तब उसे आशा थी कि यह आदमी बचेगा नहीं, मगर अब वह देखती है कि इसके हाथों अभी तो उसे और तकलीफ मिलनी है। इसीलिए वह ऐसा कर रही है।"

शाम को बा की मालिश मैंने की। मेरा मन कुछ खिन्न हो रहा है। भविष्य की बात सोचती हूं। लगता है कि हम लोग जब छोटी-छोटी बातों से ही घबरा जाते हैं तो आजादी लाने में भला क्या सहयोग देंगे? अगर वह काम करने की योग्यता नहीं रखते तो यहां बैठकर देश का क्या भला करेंगे? जिस लड़ाई के सिपाही ऐसे हों, उसका अन्त कहां जाकर होगा, कौन जानता है।

सुबह बात करते-करते मैंने बापू से पूछा, "जितना प्रचार आपके और कांग्रेस के विरुद्ध इस समय हो रहा है और हुआ है, वैसा कभी पहले भी हुआ था? इतना प्रभाव विरोधी लोग कभी डाल सके हैं क्या?" बापू बोले, "आज तक भी वे कोई प्रभाव नहीं डाल पाए। मुझे तो निराशा होती नहीं है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे मन में जरा भी असत्य या हिंसा नहीं है, इसलिए इस लड़ाई का परिणाम बुरा नहीं हो सकता। अगर मैं अपने मन में असत्य या हिंसा पाऊं तो दूसरी बात है। तब तो मैं खुद ही कांप उठूंगा।"

मैंने पूछा, "जिन्ना के भाषण से स्पष्ट है कि वह चाहता है कि आप किसी भी प्रकार जेल से न निकलें। मुस्लिम लीग भी आपकी गैर हाजिरी में अपना प्रभाव जमा रही है। इसका क्या किया जाय?" बापू कहने लगे, "जिन्ना तो चाहता है कि जबतक

कांग्रेस जेल में है, वह अपना सिक्का जमा ले, जितना कर सकता है करवा ले, मगर मैं नहीं मानता कि वह सचमुच प्रभाव डाल रहा है। हिन्दुओ पर तो उसका कुछ भी असर नही। मुसलमानो पर भी मेरी दृष्टि से बहुत कम है, क्योकि वह सत्य-पथ पर नही है।"

२६ दिसम्बर '४३

आज बा का दिन बहुत अच्छा गया। स्नान के बाद दो ग्रेन एस्प्रीन दी थी, उससे दर्द वगैरह शात रहा। दोपहर को देवदासभाई सपरिवार आए। बापू ने उन्हे जल्दी भेज दिया ताकि दूसरे भी आ सकें। उनके बाद जमनादासभाई आए। बाद में सामलदासभाई सपरिवार आए। उनके बाद रामदासभाई और कनु। सबको बापू ने जल्दी-जल्दी विदा किया। तो भी वे साढे छ के बाद ही घूमने निकल सके।

श्री कटेली का सारा समय मुलाकातो की निगरानी में ही जाता है। चाय तक नही पी सकते। खाने को भी देर हो जाती है।

२७ दिसम्बर '४३

आज दोपहर को देवदासभाई, रामदासभाई और कनु आए। कनु शायद बुधवार को फिर मिलने आवेगा।

बापू आज चाहते थे कि हम लोग खेलने जाए, इसलिए मुलाकातो के ताते को पाच बजे खत्म करना चाहते थे। सबके जाने के बाद हम लोग साढे पाच से छ बजे तक खेले।

आज बा के लिए पागलखाने से डा० शाह ने एक आया भेजी है। बेचारी हमारे साथ कैद हो गई है। अब घर नहीं जा सकेगी। घर में उसके तीन बच्चे है, वे नानी के पास रहेगे।

२८ दिसम्बर '४३

आज बा के पेट में कुछ गडबड रही।

दोपहर को देवदासभाई सपरिवार आए।

शाम को मोहनलाल का पत्र आया—शकुन्तला का अतिम वर्णन किया है। दुखद है।

२४ तारीख के दिन बापू जब घूमकर आए थे तो मुझे बता रहे थे कि मीराबहन को उन्होने समझाया कि 'अहिंसा में विचार-शुद्धि' अनिवार्य बुनियादी चीज है। मीराबहन ने उस दिन की बातो का सार लिख लिया था, जो इस प्रकार है—"अहिंसा मे सबसे आवश्यक चीज है सही विचार-धारा। प्रश्न उठ सकता है कि सही विचार क्या है? सही ध्यान और सही योजना बनाना ही सही विचार नही है, वह है मूल तत्त्वो की ठीक पहचान। मिसाल के तौर पर, 'ईश्वर है' यह सही विचार है, 'ईश्वर नही है'— यह गलत विचार है। 'मुझे ईमानदार होना चाहिए'— यह सही विचार है, 'बेईमानी भी कर सकता हू' यह गलत विचार है। जब आदमी को सही विचार की आदत पड जाती है तो सही कार्य अपने आप होता है, मानो कि परिस्थिति के कारण हम कार्य तो सही करते है, पर सही

विचार की आदत नहीं। तब उस सही कार्य का उतना असर नहीं होगा और करने वाले को सच्चे-सही कार्य का फल नहीं मिलेगा। सही विचार के बिना अहिंसा में श्रद्धा या निष्ठा की जीवित शक्ति नहीं होगी और जिसे सही विचार की आदत नहीं, वह चाहे भी तो ऐन मौके पर उसका कार्य सही नहीं हो सकता।"

२९–३१ दिसम्बर '४३

बा की तबीयत साधारण है, मगर नींद अच्छी ले लेती है। बुध (२०) के दिन कनु, धीरू, मनु के पिता, उसकी बहन व कुछ और लोग आए। कनु ने बा को दो भजन सुनाए।

शुक्रवार (३१) को मीराबहन ने मेरे तैल-रंग लेकर बापू के लिए लकड़ी के तख्ते पर 'हे राम' और 'ॐ' बनाया। सुन्दर बना।

१–६ जनवरी '४४

इस हफ्ते में सामलदास गांधी, केशुभाई, राधाबहन, सतोकबहन, कुंवरजी-भाई और उनकी बडी लडकी--इतने लोग बा से मिलने आए। बापू और बा के सिवा मुलाकात में और कोई नहीं रहता। कुंवरजीभाई ने मुझे मुलाकात के समय बुलाया तो मैंने कहला दिया कि आने की इजाजत नहीं है।

बा को रात में अच्छी नींद नहीं आई थी। वे ढीली थीं। छ तारीख को देवदास-भाई और कांति आए। देवदासभाई बेबी की तस्वीर लाए। उन्होंने मुझको बुलवाया। मेरी इच्छा जाने की नहीं थी पर जब मनु ने आकर कहा कि बापू, कटेली और देवदास-भाई बुलाते हैं तो मैं गई।

रात को सरकार की तरफ से खबर मिली कि बापू तार के बाहर धूप में नहीं घूम सकते और कनु एक दिन छोडकर आया करेगा।

७ जनवरी '४४

आज दोपहर को देवदासभाई, काशीबहन, बच्चू और प्रभुदासभाई की पत्नी अपनी दोनों लडकियों के साथ आए। हम लोग भी थोडी देर के लिए बुलाये गए।

डा० गिल्डर को रात में बुखार आया था, इसलिए बापू और बा की मालिश मैंने की।

मनु की आंख दुखती है।

१५ जनवरी '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। मैं पौन बजे बा का काम पूरा करके नीचे गई। बापू समाधि पर फूल चढा आए थे। वे वहां आज जल्दी गए थे। कल शाम को चाबी न मिलने के कारण बाहर जा ही नहीं सके थे। ९ बजे से बा का काम फिर चला। मालिश के वक्त आजकल धूप बर्दाश्त करना कठिन हो जाता है।

९ तारीख के दिन से बापू घूमने के समय मौन रखते हैं। बाकी समय में भी बा के काम के और मेरे व मनु के साथ पढने के समय को छोडकर वे लगभग मौन ही रखते

है। घर का वातावरण इसी कारण गम्भीर बन गया है।

मीराबहन दो रोज से फिर बीमार है। जुकाम है, साथ ही थोडा बुखार भी है। बा की खुशी के लिए हम लोग उनके पास ही कैरम खेलते हैं।

बा ने कल कहा था, "सक्रान्ति है, इसलिए तिल की मिठाई बाटनी चाहिए।" कल तो बाजार से सामान आ नही सकता था, इसलिए आज मगाकर मिठाई बनाई। मूगफली और दो-दो लड्डू सब सिपाहियो को और कैदियो को बाटे। हम लोगो ने भी थोडा खाया।

रात को मेरे सिर में दर्द होने लगा। बाद में मतली भी होने लगी। डा० गिल्डर को भी ऐसा ही हुआ। मैंने तिल की मिठाई को दोष दिया और डा० गिल्डर ने धूप को, क्योकि मिठाई सबने खाई थी, मगर बापू की मालिश में धूप तो डा० गिल्डर और मैंने ही खाई थी। इसीलिए तकलीफ भी हमीं दोनो को हुई।

प्रभावतीबहन ११ तारीख की शाम को आ गईं। बा की सेवा में वह खूब हाथ बटाती है।

रात को बा सो नहीं पातीं, इसलिए पास में किसी-न-किसी को बैठना ही पडता है।

१७ जनवरी '४४

बापू का बाहर धूप में घूमना बद हुआ तब उन्होंने अदवानी से कहा कि पूरब की तरफ वाली बाड को सीधा करवा दिया जाय तो खुले में घूमने को हो जाय। सरकार ने शीघ्र ही बाड सीधी करवा दी। खासा अच्छा रास्ता तैयार हो गया है।

बा की तबीयत सुधरती नहीं दीखती। सुबह अच्छी रही तो शाम को खराब—यही क्रम चल रहा है। जेल की तकलीफो ने उनकी परेशानी और भी बढा दी है। मुलाकाती आते हैं तो कुछ ठीक रहती हैं। उनके जाने पर फिर वही हाल होता है। मन-बहलाव की व्यवस्था होती तो वे शरीर की व्यथा भूल जाती हैं।

बापू का आज मौन है, पर इस तरह आजकल रोज ही रहता है। उनका रक्त-चाप ज्यादा रहता है। इस बारे में मैंने डाक्टर गिल्डर से बातें की।

रात में सोते-सोते मैंने माताजी को दो-चार बार पुकारा। बहुधा ऐसा होता है।

१८ जनवरी '४४

आज भी बापू का रक्तचाप बहुत बढा है। सरदी के कारण बढ जाता है, वैसे गर्मी के कारण दिन में गिर जाता है। सर्पगधा देने से सुबह की सरदी में भी बढने नहीं पाता, नहीं तो सुबह बहुत बढ जाता है।

बापू ने आज खजूर नही खाए, क्योकि पाच चीजो से अधिक तो वे खाते ही नहीं हैं। दवा का स्थान भी पाचो चीजो में गिना जाता है।

आज दोपहर को देवदासभाई आए। भाई की पुरानी शाल के अन्दर खादी

लगवा दी है। जहा फटी थी, रफू करवा दी है। सुन्दर हो गई है।

वा की तवीयत दिन भर अच्छी रही। शाम को साढे चार वजे घवराहट शुरू हुई। मुझे वुलाया, जाकर कुछ तसल्ली दी और खाट को धूप से साये में किया, पानी पिलाया, दवाया। वाद में कुछ ठीक लगीं। देवदासभाई सवा पाच वजे गए। वाद में शाह और भडारी जव आए तो वा ने उनसे देवदासभाई को कल फिर भेजने को कहा।

रात को वारह वजे तक मैं, एक वजे से प्रभावहन और साढे तीन वजे से भाई वा के पास वारी-वारी से वैठे।

१९ जनवरी '४४

सुवह घूमकर मैं जव लौटती हूँ तो तुरत वा को एनीमा देती हूं। वाद में दस वजे तक वापू की मालिश करती हूँ। फिर वा की मालिश, स्नान आदि कराकर स्वय स्नान करती हूँ। समय मिलता है तो अगर भाई वापू के कपडे नहीं धो पाते है तो मैं ही उन्हे धोती हूँ। फिर नित्य का काम चलता है। यह करते-करते ११॥-११॥। वज जाते है। खाना खाकर रामायण, वाइविल, आधा-आधा घटा (१२ से १ तक) चलता है। देर से जाऊँ तो उतना ही कम समय मिलता है। तव वापू के पैरो की मालिश करके आराम करती हूँ और २-२॥ वजे भीतर आती हूँ। रसोई का थोडा काम देखकर पढने वैठती हूँ। पाच वजे तक कातना, पढना, वा का कोई काम हो तो वह, यह सव करती हूँ। पाच से छ वजे तक सव लोग खेलते है। ६ से ६॥-६॥। तक वापू को खाना देने, खुद खाने और रसोई का काम देखने का क्रम चलाती हूँ। वाद में घूमने जाती हूँ। वापू साढे छ वजे निकल जाते है। मुझे अक्सर देर हो जाती है। वे ७। वजे तक वापस आ जाते है।

वापू जव अपने पैर धोने लगते है तवतक मैं उनका चर्खा तैयार रखती हूँ। पीछे रक्तचाप का माप लेकर वापू को चर्खा कातते समय शेक्सपियर पढकर सुनाती हूँ। २० मिनट से आधा घटे तक पढने का समय मिलता है।

सवा आठ वजे प्रार्थना होती है। रात को वापू की मालिश की जाती है। पीछे कैरम खेलना पडता है। १०।-११ वजे तक भाई के साथ शेक्सपियर पढती हू और वाद में सो जाती हू। आजकल की यही दिन चर्या है।

आज दोपहर देवदासभाई दो से तीन वजे के वीच आए। वा अच्छी थी, लेकिन शाम के चार वजे उनकी तवीयत कुछ घवराती थी। मैं साप और सीढी का खेल (Snakes and Ladders) ले आई। उसमें उनका मन वहल गया।

शाम का कार्य-क्रम रोज जैसा चला।

२० जनवरी '४४

आज दोपहर कनु, मनु की वहन और वहनोई दो वच्चो के साथ वा से मिलने आए। कल वा कहती थी, "माताजी नहीं आ सकतीं।" कैसे आयें।

दोपहर माताजी और मोहनलाल का पत्र आया। वेवी अच्छी है।

२१ जनवरी '४४

आज मेरा गला बैठ गया है। बा को एनीमा तो दे दिया, मगर बापू और बा की मालिश तथा स्नान का काम न कर सकी। थोडा बुखार भी हो गया।

शाम को भडारी आए तब बापू ने मुलाकातियो और लाइब्रेरी की किताबों के बारे में उनसे बातें की।

: ६२ :

बा की निराशा

२२ जनवरी '४४

बा की तबीयत ठीक नही है। उन्हे दिन में बेचैनी रही और सारी रात खराब गई। उनके मन में से अच्छी होने की इच्छा और आशा ही उठ गई है। देवदासभाई नही आए। कनु आया तो बा को भजन वगैरह सुनाकर चला गया।

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। उनकी याद बहुत आती है। सेवाग्राम में पहले दिनो का उनका और मेरा परिचय याद आ रहा है। जीवन का क्या भरोसा है! सात गुलाब के फूल मिल गए तो उनसे समाधि पर सलीब बनाया।

सरकार के तीन नोटिस आए हैं। उनमें यह बताया गया है कि मैं और मीराबहन—दोनो क्यो नजरबन्द किये गए है। लिखा है—"तुम लोग गाधीजी से निकट का सम्बन्ध रखती हो और चूकि सार्वजनिक सत्याग्रह की हलचल में हिस्सा लेना तुम्हारे लिए सम्भव था, इसीलिए तुम्हे नजरबन्दी में रखा गया है।" बापू ने इसका उत्तर लिखा है, जिसे मैंने अभी देखा नही है।

२३ जनवरी '४४

आज बापू और मीराबहन के उत्तर तैयार हो गए। भाई रात को बैठकर टाइप करते रहे।

बा के पास एक रात मैं और मनु तथा एक रात भाई और प्रभावती रहे, यह तय किया गया है। रात को बा के पास ११ से २। बजे तक मैं रही, बाद मे सुबह प्रार्थना के समय तक मनु रही।

कैरम खेलने से अब हमें छुट्टी मिल गई है। अब डा० गिल्डर, कटेली और मीराबहन ही खेला करेंगे।

२४ जनवरी '४४*

बापू और मीराबहन ने सरकारी पत्र के जवाब आज भेजे। रामदासभाई,

---

* २४ जनवरी से २७ जनवरी तक का विवरण भाई की डायरी से लिया गया है। —सु० नै०

सुमित्रा और हरिलालभाई बा से मिलने आए। कनु भी आया, मगर बातों के कारण भजन वगैरह अच्छी तरह नहीं हो सके।

२५ जनवरी '४४

आज डा० सिम्काक्स सुबह के समय मीराबहन को देखने आए। शाम को फिर आए। उन्होंने मीराबहन को बेहोश करके उन जोड़ों को तोड़ा, जहां मांस-पेशियां जुड़ गई थीं। डा० साहब बुद्धिमान् जान पड़ते हैं। वे बापू से भी मिले।

दोपहर देवदासभाई, रामदासभाई, सुमित्रा और हरिलालभाई मुलाकात करने आए।

२६ जनवरी '४४

रात में मीराबहन को बुखार आ गया।

आज स्वतंत्रता-दिन है। सबने चौबीस घंटे का उपवास किया। कैदियों के लिए पकौड़े और चाय बनाई।

शाम को सवा सात बजे श्रद्धाभिवादन करने गए और वर्ष की प्रतिज्ञा पढ़कर तीन भजन गाए।

आज के मुलाकातियों में रामदासभाई, सुमित्रा, कनु और हरिलालभाई थे।

२७ जनवरी '४४

डा० गिल्डर आज अपनी पत्नी और लड़की से मुलाकात करने गए। पिछली दफा की तरह जेलों के इंस्पेक्टर जनरल के दफ्तर में मुलाकात हुई। डेढ़ घंटा मिला।

डा० सिम्काक्स सुबह मीराबहन को देखने आए। तीन हफ्ते बाद फिर आवेंगे। मीराबहन का बुखार दूर हो गया है।

बा की तबीयत साधारण रही।

२८ जनवरी '४४

कल रात में दो बजे तक बा के पास रही। बाद में मनु बैठी। उसने बताया कि बा केवल २ से ५ बजे के बीच आधा घंटा ही सोई थीं। उसके बाद अच्छी नींद ली। दोपहर रामदासभाई और सुमित्रा आए।

सुमित्रा बा के पैर दबाती थी और उनकी पीठ पर हाथ फेरती थी। कल रामदासभाई और सुमित्रा नागपुर वापस जावेंगे।

२९ जनवरी '४४

बापू सुबह चार बजे उठ गए। प्रार्थना जल्दी हुई। 'टाइम्स' में सर चिमनलाल सीतलवाद का पत्र प्रकाशित हुआ है। पहला भाग तो कुछ ठीक था, मगर आखीर का बहुत खराब था।

३० जनवरी '४४

बापू आज भी साढ़े चार बजे उठ गए। दिन में भण्डारी साहब आए।

बा की रात खराब गई । अचानक प्रभावती की घडी का, एलार्म बज गया, उससे बा बहुत डर गई ।

बापू शेक्सपियर पढने में लगे है । कहते थे कि इसीलिए उनका उर्दू पढना रुक गया है । वे यह नहीं निश्चय कर पाते कि क्या पढें और क्या न पढें । सच तो यह है कि बा की बीमारी के कारण उन्हे भी पढने का समय कम मिलता है । चिन्ता तो रहती ही है ।

३१ जनवरी '४४

रात में बा को मुश्किल से पौन घण्टा नीद आई । एनीमा के बाद बहुत दम चढा, नाडी भी खराब थी । ऑक्सीजन और कोरामीन दी तब कुछ दबा । रक्तचाप का माप लिया तो ९०/५० निकला । पेट और छाती मे बहुत दर्द और बेचैनी रही । लगता है कि हृदय की किसी छोटी-सी रक्तवाही नाडी में खून जम गया है ।

डा० गिल्डर ने और मैंने सरकार को लिखा कि डा० जीवराज मेहता और डा० विधानचन्द्र राय को सलाह देने के लिए भेजा जाय । बापू ने सरकार को याद दिलाया है कि कनु, दीनशा और मुलाकातियो पर से प्रतिबध हटा लिये जाय ।

दोपहर को श्रीमती पंडित का पत्र बापू को मिला । सरकार ने लिखा है कि यह पत्र आपको अपवादस्वरूप दिया जाता है । आपका पत्र भी (यदि कोई खटकने वाली बात न होगी तो) अपवादस्वरूप ही भेजा जावेगा ।

कनु आया । उसे शाम के सात बजे तक रहने दिया गया । बा को अच्छा लगा । भण्डारी दो बार बा को देखने आए । बा को दिन में काफी बेचैनी रही ।

१ फरवरी '४४

रात में बा को नींद कल से अच्छी आई । पिछले २४ घटो में कमजोरी बढ गई है । अगर तबीयत जल्दी नहीं सुधरती तो बा को खो देने का अदेशा है ।

मैं सुबह बापू की मालिश के बाद १० बजे से लेकर १२ बजे तक बा की सेवा में थी । स्पज आदि करके उनको मैंने एनीमा दिया तो एनीमा लेने के बाद उनके लिए उठकर बैठना कठिन हो गया । दिन में भी बेचैनी काफी रही । खबर मिली कि कनु आज भी आ सकता है और शाम के ७ बजे तक रह सकता है । कनु एक बजे आया । थोडी देर बाद सदेश आया कि वह हमारे कैम्प में दाखिल हो सकता है । कनु ने खबर दी कि कल प्रेमाबहन और मणिबहन छूटकर आ गई है । शाम को पौने छ. बजे भण्डारी, डा० जीवराज मेहता को लेकर आए । डा० मेहता बापू को नही देख पाए । बा को उन्होने देखा और नया नुस्खा लिखा । बा को अच्छा लगा ।

कनु शाम को पाच बजे अपना सामान लेने गया था, वह रात को साढे आठ बजे वापस आया और रात को मीराबहन के साथ मैं और वह कैरम खेले ।

बा की देखभाल के लिए बारी-बारी से ड्यूटी करने के लिए एक सूची बनाई ।

उन्हें पाच मिनट भी अब अकेले नहीं छोड़ा जा सकता।

२ फरवरी '४४

बा की तबीयत कुछ अच्छी है। रक्तचाप भी आज कुछ ज्यादा है। परसों ९०/५० था, कल ८८/५६ और आज १००/५८ है। आवाज में भी कुछ तेजी है। सुबह स्पंज कराने के बजाय उन्होंने स्नान किया।

बापू को कल सर्पगन्धा दिया था। सुबह उनका रक्तचाप थोड़ा कम रहा। दोपहर को खूब उतर गया —१४४/८४ था। शाम को १५६/९८ हो गया, इसलिए शाम को सर्पगन्धा फिर दिया, ताकि कल सुबह न बढ़े।

आज शाम को कनु ने प्रार्थना कराई। अच्छा लगा। दिन में उसने रोज की तरह बा को भजन सुनाए।

शाम को खेल में कनु ने बहुत हंसाया। हंसते से ही कसरत हो गई। भाई, श्री कटेली और कनु के हाथ में से रिङ्ग मुश्किल से ही किसी दूसरे के हाथ में जाती थी।

आज काता भी और दोपहर में कुछ पढ़ा भी।

३ फरवरी '४४

कल रात में बा बहुत कम सोईं और दिन में बहुत बेचैन रहीं। रक्तचाप का माप ८४/५२ था। चिन्ता हो गई कि रात को ही कहीं कुछ न हो जाय। इसी विचार से रात को अपनी ड्यूटी लगाने का निश्चय किया, मगर बापू के कहने से यह विचार छोड़ दिया। उन्हें लगता है कि बा समझ जावेंगी कि सुशीला खतरे के कारण उनके पास बैठी है। इसका असर उनपर खराब होगा।

रात में भंडारी और शाह आए, क्योंकि शाम को भंडारी को खबर दी थी कि बा की तबीयत ठीक नहीं है।

४ फरवरी '४४

कल रात में बा को बड़ी अच्छी नींद आई। दिन में भी बहुत सोईं। दो बार अपने आप दस्त हुआ। ब्रोमाइड के असर के कारण चेहरा अच्छा नहीं दीखता, तो भी कल से तबीयत अच्छी कही जा सकती है।

सुबह डा० शाह आए। बा ने उन्हें किसी वैद्य को बुलाने को कहा। उन्होंने स्वीकार किया। बा पहले भी वैद्य के लिए कई बार आग्रह कर चुकी हैं।

दोपहर को बापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया। लिखा था कि कनु जेल में रह सकता है। वैद्य और डाक्टर आदि लाने के बारे में सरकारी डाक्टर विचार करेगा। मुलाकात के समय कितने लोग उपस्थित रहें, इसका निश्चय जेलों के इन्स्पेक्टर जनरल करेंगे।

बापू ने सुझाया कि हम अपना खाना खुद पका लिया करें, जिससे कि सिपाहियों और कैदियों या और किसीकी मदद न लेनी पड़े और लड़ाई-झगड़े का मौका ही न आवे। शाम को कटेली साहब से बापू ने इस सम्बन्ध में बातें कीं।

५ फरवरी '४४

वा की तबीयत खराब है। कल रात को तो घबराकर कह उठीं कि मैं जाती हू। गीता-पाठ कराया और भजन कराया। बापू भी करीब घंटा भर बैठे। बाद में दो घण्टे तक सो नही सके।

सुबह मालिश के समय बापू ने डा० गिल्डर से बातें कीं। आज से दीनशा का आना शुरू हुआ है। पहले सूचना मिली कि उनके आने के समय डाक्टरो के सिवा और कोई नहीं रह सकता, बापू इससे बहुत उत्तेजित हो गए। सरकार को पत्र लिखाया, मगर बाद में कहा गया कि सरकारी सूचना को समझने में थोडी भूल हुई। बापू और दूसरे परिचारक भी जा सकते थे, मगर बा के रोग के सिवा दूसरी कोई बात नहीं कर सकते थे। तब बापू ने पत्र को फाड डाला।

६ फरवरी '४४

बापू ने दीनशा के दो बार आने की इजाजत ली। उनके आने पर खुद और नर्सों के बा के पास जाने के बारे में भी उनका मत जाना। शाम को बापू ने डा० गिल्डर से बातें कीं। रात में बा के कारण तीन घण्टा जागे थे, इसलिए थकान थी। बा की तबीयत तो गिरती ही जाती है। वैद्य लाने के बारे में भण्डारी ने पूछने पर कहा कि वह सरकार से मालूम करेंगे।

७ फरवरी '४४

प्रार्थना देर से हुई। बापू ने सरकार को दो खत लिखे, जिनमें पूछा कि उनके पिछले पत्र का जवाब मिलेगा या नहीं और अगाथा हेरीसन को उनका जवाब भेजा गया या नहीं?

कल रात बा के पास मेरी ड्यूटी थी, इसलिए सोने का प्रयत्न करते-करते दिन बहुत खराब गया। शाम को बापू और भाई की कुछ बातें सुनीं, फिर बापू की मालिश करके सोने गई, पर बहुत कम सो सकी।

: ६९ :

हालत और बिगड़ी

८ फरवरी '४४

बा रात में बहुत बेचैन रहीं। आज पहली बार पाव पर सूजन साफ दीख पडी है। दीनशा मेहता ने एनीमा दिया, पर निकला कुछ नहीं। बा ने मुझे बुलाया और बोलीं, "तू एनीमा दे।" मैंने समझाया कि डा० मेहता से अधिक अच्छी तरह एनीमा मैं नहीं दे सकती, मगर बा नहीं मानी। आखिर मैंने दिया। कुछ मल निकला। फरक इतना ही था कि मैंने पानी बहुत धीमे-धीमे चढाया था।

मेहता और डा० गिल्डर में 'एलिमिनेशन काइसिस'* के सम्बन्ध में चर्चा हुई, गरमागरम बहस होने लगी। मैंने जाकर दोनों को शान्त किया। इतना रस नहीं, यह अच्छा लगा।

बा का दिन आज भी खराब गया। बापू शाम को कहने लगे कि अब बा को एनीमा देना छोड़ दो। कमजोरी इतनी है कि कमोड पर अपने आप बैठी नहीं रह सकती, इसलिए कपड़े वगैरह खराब हो जाते हैं।

बापू मुझे रात की ड्यूटी से मुक्त करना चाहते हैं, मगर मैं नहीं मानी।

अगर इजाजत मिली तो डा० मेहता के आरोग्य भवन से उबल रोटी मगाई जा सकेगी।

९ फरवरी '४४

रात में मैं बा के पास थी। पौने दो बजे बा जागी और खासीं, बेचैनी थी। १२ से पौने दो बजे तक वे अच्छी तरह सोई थीं। उनके पास बैठी-बैठी थोड़ी देर के लिए मैं भी सो गई। पीछे सोचा कि ऐसे नहीं सोना चाहिए। अगर कुछ हो जाये तो! मैंने कुछ भजन वगैरह सुनाए और शर्बत दिया। ढाई बजे जब मैं सोने जा रही थी तब बा कनु से अत्यन्त करुण स्वर में कह रही थीं, "कनुभाई, सुशीला मेरी बहुत सेवा करती है।" बहुत चोट लगी। कितने दिनों तक अब यह स्वर और सुनने को मिलेगा? हमारी सेवा क्या प्रभु निष्फल ही जाने देगा? मैं इस चिन्ता के कारण फिर सो ही नहीं पाई। दिन में भी बहुत कोशिश की, पर नींद न आई।

बापू ने बा की वैद्य बुलाने की इच्छा पूरी करने के लिए डा० शाह से कहा। डा० शाह ने भण्डारी से कहा। भण्डारी ने आयगर को फोन किया। आयगर ने दिल्ली को फोन करने की बात कही। कोई नतीजा नहीं निकला।

दिन में बेचैनी, खांसी और नींद न आने के कारण बा को बड़ी तकलीफ रही। उनकी खुराक भी बहुत कम हो गई है। डा० दीनशा वैद्य को बुलाने के विरोध में थे। सबसे बात की। तब समझे कि बा वैद्य बुलाना चाहती हैं तो हमें रोकना नहीं चाहिए।

१० फरवरी '४४

रात में बा को बिलकुल नींद नहीं आई। बापू ३-३० से ५-१५ बजे तक उनके पास रहे। डा० गिल्डर को उन्होंने बा को आक्सीजन देने के लिए जगाया। मुझे बहुत थकी जानकर नहीं जगाया।

दिन में बा की बेचैनी कम रही। नींद भी अच्छी आई। पेशाब बहुत कम

---

*नैसर्गिक उपचारवादियों का सिद्धांत कि शरीर-शुद्धि की क्रिया के फल-स्वरूप रोगी के कई चिह्न उग्र रूप धारण करने लगते है, यह स्वास्थ्य लौटने का पूर्वगामी लक्षण माना जाता है।

आता है। कल बा ने पानी और दूध वगैरह लगभग ४४ औंस लिया, पर पेशाब सात ही औंस निकला। कुछ दस्त के साथ भी। तो आज पेशाब लाने की दवा दी। कोई उपाय न सूझा तो पेशाब लाने के लिए इन्जेक्शन देना पडेगा।

आजकल बा की बीमारी के कारण पढना, लिखना या कातना, कुछ भी नहीं कर पाती।

सुबह ९ बजे प्रेमलीलाबहन बा को देखने आई। बा को बडा अच्छा लगा। रो पड़ी। प्रेमलीलाबहन वैद्य का इन्तजाम कर रही है ताकि सरकार से इजाजत मिलते ही वह तुरत बुलवाया जा सके।

११ फरवरी '४४

आज सुबह बापू वैद्य भेजने के बारे में सरकार को पत्र लिख ही रहे थे कि भण्डारी आकर कहने लगे, वैद्य या हकीम— कोई भी बुलाया जा सकता है। हा, जिम्मेदारी बापू को ही लेनी होगी। इसलिए पत्र फाड डाला गया। बापू ने यही के किसी वैद्य को तुरत बुलाने के लिए कहा और शिवशर्मा नामक वैद्य को बुलाने के लिए तार करने को कहा।

शाम को पूना के एक वैद्य श्री जोशी आए और हेमगर्भ व अभ्रकभस्म की चार पुडिया दे गए। यह भी कह गए है कि उसके साथ दूसरी दवा नही दी जा सकती। बापू ने उसकी दवा न देने का निश्चय किया है। शर्मा आवेंगे तब देखा जाएगा।

रात को एफ्रेडीन मगवाई ताकि रक्तचाप बढाया जा सके। मैंने एक बार यही दवा देने को कहा था, मगर डा० गिल्डर ने सुझाया था कि इसके देने से रक्तचाप के बढाव को हृदय बर्दाश्त नहीं कर सकेगा; लेकिन आज बोले, "यह खतरा उठाया ही जाना चाहिए। बात यह है कि इतने धीमे रक्तचाप से गुर्दे काम नही कर सकेंगे और पेशाब भी बहुत कम आएगा। इस कारण शरीर में जहर इकट्ठे होते है और स्थिति भयकर हो जाती है। रात को भण्डारी ने यह दवा भेजी। दवा का असर यह हुआ कि रात में पेशाब आठ औंस हुआ और नीद अच्छी आई।

१२ फरवरी '४४

रात को खबर मिली कि शर्मा सुबह साढे दस बजे आवेगें।

शर्मा बारह बजे आए। बापू खाना खाते-खाते उठे। दो बजे जब शर्मा चले गए, तब उन्होने खाना पूरा किया। शर्मा कुशल जान पडते है। आकर्षक व्यक्तित्व है। डा० गिल्डर कहते थे, "अगर यह डाक्टर बनता तो बहुत सफलता पाता।" बापू का मत है, "शर्मा वैद्य होकर ज्यादा सफलता पा रहा है; क्योकि डाक्टर तो अनेक कुशल होते है, सो उनमें यह पहला नम्बर नही होने वाला था, जैसा कि वैद्यो मे है।"

शर्मा की दवा शुरू हो गई है। दोपहर को एक छोटी पुडिया दी, रात के नौ बजे दुशादा और बडी पुडिया दी और १०॥ बजे सौंफ का अर्क और छोटी पुडिया।

सुबह मैंगसल्फ दिया था। उसमें बा के चार बार कपड़े बिगड़े, सब कपड़े बदलने पड़े। अब तबीयत कुछ सुधरी है। सुबह जुलाब लेकर बहुत घबराई थीं, बाद में सूजन कम हुई। देखकर खुशी हुई।

रात को ग्यारह बजे से बा को बड़ी बेचैनी शुरू हुई। रात के सवा दो बजे लिख रही हूं। नींद नहीं आ रही है। दिमाग भी ठिकाने नहीं है। बापू तीन बार आ चुके हैं। अब भाई आकर बैठे हैं। शर्मा को फोन किया था। वे कहते हैं कि पेशाब न होने के कारण ही बेचैनी है, लेकिन किया ही क्या जावे! उन्होंने बा के सिर में मालिश आदि करने को कहा था। सो सब किया, मगर हालत में कोई तबदीली नहीं हुई।

१३ फरवरी '४४

रात में डा० गिल्डर को जगाकर पूछा कि बा को क्या कुछ देना चाहिए? दवा तो वैद्य की चल रही है। हम लोग कुछ दें भी कैसे? आखिर बापू की सलाह से शर्मा को फोन किया। बा की बेचैनी बढ़ी-सी लगी। घबरा गई। कहने लगीं कि तुम्हीं लोग दवा दो। उनको समझाया।

बा को नींद नहीं आ रही थी, इसलिए डा० गिल्डर से बोलीं, "मुझे अपने कमरे में ले चलो।" बापू आए तो उनसे बोलीं, "मुझे अपनी खाट पर ले चलो।" पीछे मुझ-से कहने लगीं, "मुझे प्यारेलाल के कमरे में ले चलो।" तड़के के समय तो खाट से उठकर खड़ी हो गई और बोलीं, "बापू के पास जाती हूं।" मच्छरदानी में थूकने लगीं, बस कुछ ठिकाना ही न था। मुश्किल से रात कटी। ढाई से सवा तीन बजे तक भाई भी आए। कनु को भी जगाया। वह अकेले बैठने में डरता था, इसलिए साढ़े तीन तक मैं उसके साथ रही और बाद में सो गई।

दिन में बा को दो बार दस्त हुआ, उससे तबीयत कुछ हल्की हुई। शर्मा आए तो बा ने शिकायत की। उन्होंने समझाया। वे शांत हो गईं।

सबेरे पुड़िया खिलाते समय बा बापू के सामने आनाकानी करने लगीं। शर्मा ने छोटी पुड़िया देने को कहा था, जिसे खिलाते-खिलाते मुझे और बापू को पौन घण्टा लग गया। बा मानती ही न थीं। बोलीं, "सुशीला को ही खिलाओ, नहीं तो आप खुद खा लो।" बाद में मैंने कहा कि शर्मा ने कहा है कि बा से हाथ जोड़कर विनय करके कहना कि वे दवा खा लें। इसपर वे पिघलीं और दवा खाई।

दिन में बा ने दशमूलारिष्ट व पाउडर खाया। शाम को उन्हें इतना अच्छा लगा कि आठ-दस दिन के बाद आज फिर कुर्सी पर बैठकर घूमने की इच्छा प्रकट करने लगीं। इसलिए घर के बरामदे का एक चक्कर लगाया, बालकृष्ण के पास ७ मिनट और तुलसी के पौधे के पास पांच मिनट रहीं। हम लोग घूम रहे थे, सुना तो ऊपर आ गए। बा हमें देखकर खूब हंसीं। सभी बहुत खुश हुए।

प्रार्थना के बाद बा का दाहिना कंधा और हाथ कांपने लगे। शायद यह एल्कोहल

का असर हो ।

रात मे फिर बेचैनी शुरू हुई । एक बजे तक नीद नहीं आई । तब शर्मा को बुलाया । उन्होने आकर एक ऐसी गोली दी कि खाते ही बा सो गई ।

शर्मा दिन भर यही रहे । शाम को पाच बजे बाहर गए । रात को साढे नौ बजे फिर आ गए और रात भर बाहर मोटर में सोए । भीतर सोने की इजाजत न थी । सुबह भण्डारी आए । बापू ने इस बात पर कि वैद्य को उचित लगे तो वह भीतर क्यो न सोए, भण्डारी से काफी कहा, मगर कुछ न हुआ । लाचार होकर उन्हें अगले दिन फिर मोटर में ही सोना पडा । दूसरा कोई चारा ही न था ।

१४ फरवरी '४४

पूछने पर शर्मा ने कहा कि अरिप्ट में २ प्रतिशत से अधिक एल्कोहल नही था । डा० गिल्डर का कहना है कि १२ प्रतिशत तक होता है । शर्मा यह भी कहते हैं कि अरिप्ट के कारण बा के हाथ नही कापे । बा का दिन अच्छा नहीं गया । पाखाना न होने से बेचैनी रही । शर्मा ११॥ बजे आए, पर बा की बेचैनी देखकर वापस गए और ४ बजे आकर उन्हे दुशादा पिलाया और पेट पर कुछ लेप किया । उन्होने कुछ दूध-फल लिया, हमारे साथ खेले और ६ बजे टोस्ट और उबली सब्जी खाई । बाद में आयुर्वेद और दूसरे वैदिक विज्ञानो की बातें करके वे ७ बजे चले गए ।

साढे सात बजे बा को दस्त हुआ । रात को एक बार हुआ । बापू की सलाह से मैंने और डा० गिल्डर ने जाकर देखा कि बा के पैरो की सूजन बढी ही है, कम नहीं हुई । पेशाब भी कम निकलता है । फेफडे पीछे की ओर तो साफ थे, मगर आगे की ओर बलगम से भरे हुए थे । ऐसा इसीलिए है कि वे आगे की ओर झुककर बैठती है । नाडी भी वैसी ही है ।

सवा दस बजे शर्मा आए । बापू ने उनसे कहा कि डाक्टरो के अनुसार तो बा में कोई सुधार नहीं दीखता । शर्मा भी कहने लगे कि दो दिन में कुछ कहा नहीं जा सकता । बापू ने कहा, "जबतक आपको आत्म-विश्वास हो तबतक आप इलाज करें और जो देना चाहे, दें । जब आप से कहा जाय तब इलाज छोडने और दुबारा इस मामले को हाथ में लेने की तैयारी रखें ।" आखिर शर्मा एक पाउडर देकर चले गए ।

शर्मा आज भी मोटर में ही सोए । बापू ने इस विषय में सरकार को कडा पत्र लिखा है कि आवश्यकता पडने पर वैद्य को यहा सोने की इजाजत होनी ही चाहिए । दूसरा एक और पत्र उन्होने मुलाकातियो के विषय में लिखा, क्योकि कल दोपहर शामल-दास गाधी वगैरह आए, उन्होने बताया कि अब मुलाकात की इजाजत मिलने में कठिनाई होने वाली है ।

सरकार का उत्तर आया कि जिन शर्तो पर डा० गिल्डर को मुलाकात मिली थी, उन्हींके अनुसार हम लोगो को भी मुलाकातें मिलेंगी ।

बा ने मेरी माताजी से मिलने की इच्छा प्रकट की थी, सो वे यहा आ सकें

तो अच्छा हो, मगर क्या सरकार इजाजत देगी ?

१५ फरवरी '४४

कल रात में बा को बेचैनी रही, इसलिए उन्हें आक्सीजन दी और उनके पास बैठी रही। तीन बजे बापू और सवा तीन बजे वैद्य आए। दवा दी, मगर नींद तब भी नहीं आई। सवा चार बजे भाई को बा के पास बिठाकर मैं सोने गई।

दिन में बा अच्छी रहीं, पर शाम के ८ बजते ही बेचैनी बढ़ गई। १०१ डिग्री बुखार है, पेट में पानी है और शायद अब फेफड़े में भी भरने लगेगा। सूजन भी ज्यादा है। वैद्य ने सुबह पेशाब लाने का इंजेक्शन देने को कहा। बापू बोले कि इंजेक्शन तभी देना जब उसके बिना काम न चले। इस ख्याल से इंजेक्शन लगाने का विचार कल शाम तक के लिए स्थगित कर दिया गया। बेचैनी के कारण बा के पास पहले मैं और प्रभाबहन बैठी थीं और अब प्रभाबहन और मनु बैठी हैं। मनु को बिठाना अच्छा नहीं लगता। बापू लार्ड वेवल के नाम का एक पत्र मुझे पढ़ने के लिए दे गए हैं। मैंने पढ़ लिया है।

१६ फरवरी '४४

रात को मैंने कनु को बा के पास बिठाया, क्योंकि एक बजे मैं सोने जा रही थी कि बापू ने कहा कि मनु की तबीयत अच्छी नहीं। कटेली साहब वैद्य को बाहर पहुंचाकर खुद सोने गए। बापू को यह देखकर दुःख हुआ कि कटेली साहब को भी हम लोगों की खातिर जागना पड़ता है।

दिन में दो बजे बापू ने भण्डारी के नाम एक पत्र लिखा कि वैद्य को तो भीतर ही सोने की इजाजत मिलनी चाहिए। तीन बजे वे सो गए। नमक के कानून के विषय में एक तार सरकार को भेजने का विचार कर रहे थे।

पत्र काफी सुधार के बाद साढ़े ग्यारह बजे भेज दिया गया। उसमें हम लोगों के सुझाये हुए सुधार करके बापू ने उसे कनु को लिखाया था। मीराबहन ने बापू को स्नान कराया।

मथुरादासभाई सकुटुम्ब और राधाबहन बा को देखने एक बजे आए और पौने तीन बजे चले गए। चार से पांच बजे तक बापू और मैंने थोड़ी नींद ली। ५ से ६ तक बापू ने हम सबके साथ वेवल वाला पत्र सुधारा।

दिन में बा का पेशाब नहीं उतरा। वैद्य कहने लगे, "अभी तक मैं डरकर चलता था, मगर आज तो जो कर सकूं, करना शुरू कर दिया है। पेशाब न उतरे और बा की तबीयत में दो दिन में सुधार न हो तो मैं दूसरे चिकित्सकों को भी अवसर दूंगा।'

मीराबहन ने दोपहर को बापू के पास ही बैठना और सोना आरम्भ किया है।

१७ फरवरी '४४

रात दो बजे तक बा के पास मेरी ड्यूटी थी। बा को नींद बहुत कम आई।

बेचैनी अधिक नही थी, पर सास बहुत फूलता था।

वैद्य ने आकर एक गोली बा को खिलाई। बा आध घण्टे तक सोई, बाकी समय भजन सुनती रही और कभी-कभी खुद भी मेरे साथ गाने लगती थी।

बापू ने कनु और मीराबहन के विषय में थोडी बात की।

दोपहर सरकार से आध घण्टे की इजाजत लेकर हरिलालभाई आए। बा को यह अच्छा नही लगा। बोली, "दो भाइयो में इतना भेद क्यो किया जाता है? देवदास रोज आ सकता है, लेकिन हरिलाल एक बार और वह भी आधे घटे के लिए! यह क्या बात है?"

बापू वहीं बैठे हजामत बनवा रहे थे। यह सुनकर बा से पूछने लगे, "हरिलाल क्या हर रोज आवे?" बा ने कहा, "हा!" बापू ने कटेली साहब से कहा। हरिलाल-भाई अब रोज आया करेंगे। पूना में आठ रोज रहेगे। बापू ने उन्हे मेहता के यहा रहने की सलाह दी, मगर हरिलालभाई को धर्मशाला अधिक पसन्द है।

दिन मे बा को दम की बडी शिकायत रही, पर बेचैनी नही थी। मैंने तीन बार आक्सीजन दी। वैद्य की दवा से दस्त तो काफी हो गए, मगर पेशाब नही उतरा। रात में बा को १००.२ डिगरी बुखार हो गया, साथ ही बेचैनी भी हो गई। बापू मुझसे कहने लगे, "बा तुम्हारे हाथ मे फिर आवे तो मेरी सलाह तो यह है कि अब दवा देना बन्द कर दो।" मैं बोली, "यह कैसे हो सकता है? जबतक किसी दवा से फायदा होते दीख न पडे तबतक डाक्टर रोगी को दवा देता ही जाएगा न?"

कल बा के फेफडे देखेंगे। वैद्य की दवा का असर अगर कल तक अच्छा न दीख पडा तो शायद वे चले जावें। वे आज यही सोवेंगे।

मनु को बुखार आ गया है।

१८ फरवरी '४४

रात में बा को नीद नही आई। भाई उनके पास थे। ३॥ बजे मैं और बापू जब बा को देखने गए, तो उन्होने बताया कि वैद्य ने बा को दो बार दवा दी है तो भी उन्हें नीद नही आई। बुखार भी रात में १००.२ डिगरी रहा। ४ बजे हम लोग बा के पास से हटे तो बापू कहने लगे कि अब प्रार्थना क्यो न कर ली जाय।

बापू प्रार्थना के लिए तैयारी कर ही रहे थे कि वैद्य ने आकर कहा कि वे चिंता के मारे रात भर सो नही सके, क्योकि बा का इलाज करने में वे सफल नही हो रहे है।

रात मे वैद्य ने बा को अच्छे-से-अच्छे रसायनो की दवा दी, मगर नतीजा कुछ न निकला। उनके कहने पर बापू ने मुझसे और डा० गिल्डर से कह दिया है कि हम लोग बा का इलाज जैसे चाहे वैसे करे। इसलिए मैंने तुरत पेशाब लाने और दिल को ताकत पहुचाने के लिए दवाइयां दी। डा० दीनशा ने मैगसलफ का एनीमा बा को दिया। बाद मे कहते थे कि मल बहुत निकला। मै आई तबतक सब फेंक चुके थे।

दोपहर को डरते-डरते पारे के इंजेक्शन की आधी मात्रा बा को नस में दी। इंजेक्शन का पता बा को नहीं चला और प्रयत्न सफल रहा। सैकड़ों में एक को ही इस इंजेक्शन से तुरन्त नुकसान होता है। पाच बजे पाच औंस पेशाब हुआ। हम सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। बा भी दिन में खूब सोई। चार बजे एक संगीत-मण्डली आ गई। बा उठीं, तब कुछ संगीत हुआ। पौने पाच बजे बा को पेशाब लगा, इसलिए उसे रोक दिया गया।

बापू ने वैद्य के आने के विषय में भण्डारी को फिर लिखा। भण्डारी ने शाम को आकर कहा कि वे आने रह सकते हैं, लेकिन रात को भीतर नहीं ठहर सकेंगे। आज हरिलालभाई नहीं आए। मेहता के यहा टेलिफोन करने को कह गये थे। जब फोन से बताया गया कि उन्हें आने की इजाजत मिल गई है तो पता चला कि वे वहा गए ही नहीं। शाम को मेहता के आने तक उनको खबर न थी।

शाम को छ-सात बजे बा को बेचैनी शुरू हुई। परीक्षा करने पर पता लगा कि दाहिने फेफड़े के ऊपरी भाग में निमोनिया के चिह्न मिले। रात को ये चिह्न और बढ़े। यह देखकर रात की दवा में सल्फा की दो गोलिया भी शामिल कर दी। डर था कि पेशाब कम है, सल्फा कहीं गुर्दों में बैठकर और अधिक तकलीफ न दे। मगर आखिर खतरा उठाया ही। रात को बुखार १०० डिगरी रहा। मैं बा के पास २ बजे तक बैठी। १२ बजे तक नींद की आधी मात्रा दवा देने पर उन्होंने २ बजे तक अच्छी नींद ली। दो-ढाई घंटे तक आक्सीजन भी ली।

माताजी और मोहनलाल के मुझे पत्र मिले।

१९ फरवरी '४८

आज बा को १॥ सी० सी० पारे की दवा और २५ प्रतिशत ग्लूकोज भी नस में दिया, मगर पेशाब नहीं हुआ। इससे निराशा हो रही है। सुबह कुनीन में आधा चम्मच सुनहरी मैगसल्फ दी थी, इसलिए दो-तीन पाखाने हो गए और पेशाब केवल एक बार चार औंस हुआ। बाद में दो बार करके एक औंस और हो गया। अगर सेलिर्गन (Salyrgan) का असर हो जाता तो देती। दिन में बा काफी सोई, मगर नींद थकान और दवा के कारण है। बहुत चिन्ता हो रही है।

बापू बा के पास काफी समय तक बैठते हैं। वैद्य भी आए थे। बापू से बातें करते रहे। बापू पर उनका बहुत अच्छा असर पड़ा है।

२० फरवरी '४८

रात को बा ने खासी नींद ली। लगभग रात भर आक्सीजन चलती रही। बार-बार 'राम-राम' चिल्लाती थीं। साढ़े तीन बजे आक्सीजन की नली बा ने निकाल डाली। सुबह सवा पाच बजे से उन्हें बड़ी बेचैनी लगने लगी। मैंने आक्सीजन की नली फिर डाली, तब थोड़ा शात हो सकीं। बापू आए और बा की खाट पर बैठकर ही प्रार्थना करने लगे। कल के सेलिर्गन के इंजेक्शन का असर न होने के कारण निराशा छाई थी।

तिसपर बा की बेचैनी ने और चिंता बढा दी। दो बजे के बाद बापू ने मुझे बा के पास से भेज दिया।

सबको लग रहा है कि अब बा जाती है। बा 'हे राम, हे राम' इतने करुण स्वर से कहती है कि सुना नही जाता।

१ बजे बा की नाडी खराब हो गई, मगर थोडी देर मे सुधर गई और दिन भर इधर-उधर चलती रही। रामधुन और भजन बा के पास दिन भर होते रहे। वे भी बीच-बीच मे जोरो से गाती थी। बापू काफी समय तक बा के पास बैठे।

सुबह सवा नौ बजे दिमाग शात करने की दवा दी। परिणामस्वरूप बा घटे-डेढ-घटे के लिए सो गई। उठी तो दातुन मागी। अच्छी तरह घिस-घिसकर दातुन की। नाक मे पानी चढाया। तत्पश्चात् चाय भी पी।

सबको बडा आश्चर्य हुआ कि बा में इतनी शक्ति कहा से आ गई, मगर थोडी देर बाद बेचैनी शुरू हुई। पेशाब बहुत कम हुआ।

बा शाम को एनीमा के लिए चिल्लाने लगी। बापू बोले, "अब बा की दवा राम-नाम ही है, दूसरा सब उपचार छोड दो।" सुबह दवा देने के अलावा मैंने फिर दवा नही दी, लेकिन मुझे यह बात पसन्द नही आई। इच्छा थी कि दिल की ताकत बढाने वाली दवा पूरी मात्रा में दू। बापू से मैंने इसके लिए कहा भी, पर वे बोले, "मेरी तो वृत्ति है कि बा को पानी और शहद के सिवा कुछ भी न दो। वह खुद मागे तो अलग बात है। एसी ही दवा की बात है। बा जाए तो भले। बा की व्यथा का दृश्य करुण है, मगर मुझे बहुत प्रिय है। बस राम-धुन के सिवा उसे चैन नही। आज मैंने उसके मुह से 'राम' के सिवा और कुछ सुना ही नही। मै दवा को मानता ही नही। लडको की कैसी-कैसी बीमारी मे भी मैंने दवा नही दी। बा के बारे में मैंने ऐसा नही किया। अब समय आ गया है कि अब तो दवा छोडू। ईश्वर को बचाना होगा तो ऐसे ही बचा लेगा, नहीं तो बा को मै जाने दूगा।"

इसलिए बा ने जब एनीमा मागा तो बापू ने उसे टालने का प्रयत्न किया और कहा, "अब राम-नाम ही तेरी दवा है।" मगर मैंने कहा, "वे चाहती है तो लेने दीजिए।" तब बापू मान गए। एनीमा दिया, खूब मल निकला। बा तब शात होकर करीब दो घटे तक सोई।

डा० दीनशा मेहता दिन भर यही रहे। रात के लिए भी इजाजत मागी। बम्बई से टेलीफोन आया है कि वे रह सकेंगे।

शाम को एनीमा के बाद बा की हालत इतनी अच्छी रही कि मैंने बापू से कहा कि यदि ऐसी ही हालत रात के बारह बजे तक रही तो मै दवा देना शुरू कर दूगी।

भण्डारी, शाह और वैद्य सुबह बा की हालत पूछने आए। तभी खबर मिली कि बा की मृत्यु यदि हो गई तो कोई व्यक्ति बाहर न जा सकेगा। वैद्य यह सुनते ही जल्दी चले गए। उन्हे साढे तीन बजे की गाडी से जाना था।

इस खबर से जान पड़ता है कि सरकार का इरादा महादेवभाई की तरह वा की अंतिम क्रिया यहीं होने देने का है, मगर क्या सरकार उनके लड़कों के मांगने पर भी शव उनको न देगी ?

सुना है कि रामदासभाई नागपुर से चल पड़े हैं। शायद देवदासभाई भी आ रहे हैं। शाम को वा एकाएक बहुत तेजी में आकर हरिलालभाई के न आने पर नाराजी दिखाने लगीं। जब उन्हें बताया गया कि दो लड़के आ रहे हैं तब कुछ शांत हुई।

मैंने भण्डारी से पेनिसिलीन के लिए कहा। वे कोशिश करेंगे। फौजी अस्पताल में तो नहीं मिली। डा० विधान राय यहां होते तो ऐसी चीजें उनके द्वारा खोजी जा सकती थीं। जेल में बैठे-बैठे आदमी क्या कर सकता है।

साढ़े नौ बजे से वा की बेचैनी फिर शुरू हुई है। मीरावहन रामधुन सुना रही हैं।

: ६५ :

अंतिम रात्रि

२१ फरवरी '४४

रात में नींद की दवा देने पर १२ बजे तक खूब सोने के बाद बेचैनी फिर शुरू हुई, पर आक्सीजन देने पर वे सो गईं।

अब वा के पास एक व्यक्ति से काम नहीं चलता। मनु के आग्रह पर मैंने उसे बारह बजे जगाया। मेहता भी १। बजे आ गए। डेढ़ बजे मैंने मनु को सुला दिया। बापू रात को दो बार आए। १ से १।। बजे तक वे वा के पास बैठे, मगर वा ने बैठने नहीं दिया। इतनी बीमारी में भी उन्हें बापू के आराम का खयाल था। बापू १।। बजे उठकर चले और साथ ही वा का थूक पोछने के दो रूमाल उठाकर धोने ले गये। मैंने कहा, "लाइये, मैं धो दूं।" मगर उन्होंने धोते-धोते कहा, "मुझे ही धोने दे।"

कल दिन में डा० गिल्डर मुझसे कहने लगे, "जरा ध्यान रखो। निमोनिया है। वा के आसपास काफी जहरीले कीड़े फैल रहे हैं। बापू वहां बहुत न बैठें।" मैंने कहा, "मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं कुछ कहूं। कल दोपहर खाने-पीने के बाद बापू वा के पास बैठे थे। वा ने उनसे जाने को कहा, क्योंकि वे सोना चाहती थीं। मैंने कहा कि आप अब उठ जाइए, क्योंकि अगर वा आपका सहारा लेकर सो गईं तो फिर आप उठ न सकेंगे। तब बापू उठ तो गए, मगर बाद में बोले, "मुझे थोड़ी देर बैठने दिया होता तो क्या था।" मुझे लगा कि मैंने उन्हें उठने के लिए कहा ही क्यों। वे खुशी से बैठें। इसीलिए आज मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं बापू से कुछ भी कहूं।

डा० गिल्डर कहने लगे, "पास भले बैठें, मगर मुंह के नजदीक न रहें।" मैंने कहा, "यह कहना भी कठिन है।" तो वे बोले, 'हां, मैं अब समझा। आखिर, बापू यह देखते

हैं कि साठ साल का साथ छूट रहा है, इसलिए वे बा से दूर नही रह सकते। हम भी उनसे कुछ कह नहीं सकते।" रात के करीब ११॥ बजे बा मेरी गोद में पडी थी। मेरा एक हाथ उनकी नाडी पर था। एकाएक नाडी इतनी कमजोर हो गई कि मिलती ही न थी। मुझे लगा कि बा क्या सोते-सोते ही चली जावेंगी। प्रभावतीबहन को आवाज दी कि नाडी वापस आ गई और रात भर ऊची-नीची चलती रही। दो बजे मैं सोने को गई और सात बजे तक सोती रही। यहा तक कि बापू ने मुझे जगाकर कहा कि डा० गिल्डर बहुत देर से बा के पास खडे है। उन्हे मुक्त कर मै गई तो गिल्डर जा चुके थे। नाडी वगैरह ठीक थी।

मै जब बा के पास गई तो वे मुझसे कहने लगी, "मुझे अण्डी का तेल दे।" मैंने समझाने की कोशिश की कि अब उसकी आवश्यकता नहीं, उससे आपको थकान होगी। वे तेल मागना भूल जावें, यह सोचकर मै वहा से हट गई। इतने मे प्रभावतीबहन आई और कहने लगी, "बा अण्डी के तेल के लिए चिल्ला रही है।"

मै और डाक्टर दोनो नही देना चाहते थे। इतने में बापू ने जाकर बा को समझाया, "एक बात तो यह कि तू गुस्सा करना छोड दे। करना हो तो अकेला मुझपर कर। दूसरे, अब दवा लेनी छोड दे। कल से तू राम-नाम लिया करती है, वह मुझे बहुत भला लगता है। अब तो राम-नाम को हृदय पर अंकित कर ले। राम-नाम जिन्दा रखेगा तो जीयेंगे, नहीं तो चले जायेंगे।"

बा ने बापू की सब बातें शांति से सुनीं। ऐसा लगता था मानो उन्होने सब कुछ स्वीकार भी कर लिया। थोडी देर बाद जब मै बा के पास गई तो बापू बा से कह रहे थे, "रोगी कभी अपनी दवा खुद नही करता। और मैं तो तुझे कहता हू कि अब तू दवा छोड़ दे। सब कुछ भूल जा। मुझे भी भूल जा। राम मे ही मन को पिरोले।"

बाद में बापू मुझसे बोले, "बा अब अण्डी का तेल नही मागेगी।" मैंने कहा, "अच्छी बात है।" फिर बापू घूमने को गए। बा मेरी गोद मे पड गई। १० बजे मैं उठकर गई। थोडी देर बाद जब बा के पास फिर पहुची, बापू भी आ गये। बा मेरी तरफ उगली हिलाकर बोली, "तो अण्डी का तेल नही दिया न ?" मैंने कहा, "शाम तक अगर पाखाना न होगा तो अण्डी का तेल दूगी।" डा० गिल्डर ने भी समझाया। दीनशा ने भी। आखिर आधी चमची अण्डी के तेल में लिक्विड पेराफीन डालकर दी। बा ने वह लिया। बाद में पानी भी। डेढ बजे आक्सीजन शुरू करके मै सोने गई। डा० गिल्डर उनकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। बा सो गई। मैंने बापू से कहा, "बा जब अण्डी का तेल लेने के लिए इतना आग्रह करती हैं तो दूसरी दवाए रोकना कहा तक ठीक है।" बापू का मौन था। उन्होने लिखकर दिया, "विरोध करने को अब मेरे लिए बात ही नही रहती।"

एक प्याले मे हृदय को ताकत देने वाली दवा निकाली और डा० गिल्डर से यह कहकर कि बा के जागने पर दवा पिला दें, मैं सोने चली गई।

एकाएक चार बजे गीता-पाठ की ध्वनि सुनकर उठ बैठी, मगर कोई खास बात न थी। बा को सुनाने के लिए गीता-पाठ हो रहा था।

दोपहर साढे तीन बजे हरिलालभाई आए।

मैंने रामधुन सुनाना शुरू कर दिया। बा शात होकर सुनने लगीं। छाती में दर्द बताने लगीं। मैंने उन्हे दवा दी और वे मेरी गोद में पडी रहीं। ५ बजे मैं खेलने गई।

सवा छ बजे के करीब देवदासभाई वगैरह आए। बा उनसे मिलकर रोने लगीं। मनु भी रोने लगी। मैंने बा से पूछा "क्या मनु भजन सुनावे?" बा ने 'हा' कही। मनु ने गाना आरम्भ किया तब दोनो का रोना बन्द हुआ। बा देवदासभाई से भी मिलकर रोईं और बोलीं, "बापू तो साधू है। उनको तो बहुत काम है और बहुत जिम्मेदारिया हैं। इसलिए तू सबको सभालना।"

देवदासभाई ने बताया कि बा के पास रात को रहने की इजाजत तो उन्हे है, मगर दूसरो को नहीं है। कहने लगे, "सतोकबहन और मनु बा के पास रहे तो बा को अच्छा लगेगा। देवदासभाई ने इसीलिए मुझे बापू के पास भेजा कि वे जाकर श्री कटेली से सतोकबहन के रहने की इजाजत लें। बापू ने कागज पर लिखा, "कटेली सरकार को फोन करें कि बा की सेवा के लिए तो जरूरत नहीं है, लेकिन उसकी शाति के लिए सतोकबहन को रहने के लिए सरकार इजाजत दे तो अच्छा हो।"

आठ बजे तक तो उन लोगो को जाना था ही, वे चले गए।

करीब सात साढे सात बजे से मैं बापू के पास बैठी। कनु ग्रामाफोन बजा रहा था। बा मेरा सहारा लेकर १॥ घटा सो गईं। साढे नौ-पौने दस पर प्रभावतीबहन को बा के पास बिठाकर मैं बापू की मालिश करने गई। लौटकर देखा तो बा सो रही थीं।

बा ने आज न के बराबर खाया। खाने में उनकी अरुचि कई दिनो से बढती जा रही है। बापू ने कहा था, "अभी बा को दूध-चाय भी न दो। अपने आप मागे तो अलग बात, नही तो शहद और पानी ही दो।"

आज बा को पानी और शहद से भी अरुचि हो गई। निगलने में कठिनाई होती थी। मैंने पूछा, "खासी की दवा लोगी?" पर 'हा' कहकर भी उन्होने दवा नहीं ली। कहती थीं, "मुझे सुला दो।" प्रभाबहन से बोलीं, "हम दोनो यहीं सो जाए।"

बा को दवा देने के लिए बत्ती जलाई तो देखा कि बिस्तर में उन्होने पाखाना किया है और उन्हे कुछ मालूम न था। प्रभाबहन की मदद से मैंने बा के सब कपडे बदले। फिर बा को सहारा देकर बैठी। प्रभाबहन कपडे धोने गई और फिर आकर बा के पास बैठीं। मैंने उठकर बा की बीमारी की नोट-बुक में सब हाल लिखा। ११ बजे देवदास-भाई आए और १ बजे तक बा के पास रहे। मैंने १ बजे प्रभावतीबहन को सोने भेज दिया।

बा की मानसिक स्थिति ठीक नही है। आधी नीद में रहती जान पडती है। सिर में दर्द भी बताती है। देवदासभाई खडे-खडे उनका सिर दबा रहे थे। उन्हे लगा कि बा सो गई है, इसलिए उन्होने दबाना बन्द किया, पर बा फिर मुझसे कहने लगीं,

यही इच्छा रहती है ; क्योकि एक वार वा के पास बैठकर उनका वहा से उठने का मन ही नही होता । आजकल वे तीन-चार रोज से मशीन की पीसी हुई सब्जी और दूध ही लेते है । सो दस-पद्रह मिनट मे पूरा हो जाता है । साढे बारह वजे के लगभग बापू बा के पास आकर बैठे । थोडी देर में वा खाट पर सीधी सो गई । महीनो से वे सीधी न हो सकी थी । हमें लगा कि कही जाती तो नही है । देवदासभाई को फोन कराया । वे सोने की तैयारी में थे । फौरन आ गए । थोडी देर में दीनशा मेहता भी आ पहुचे । वा से भजन और रामधुन के बारे मे पूछा तो उन्होने इन्कार कर दिया। बापू की सलाह से महादेवभाई वाले कमरे मे गीता-पाठ होने लगा जिससे बा के कान में भी ध्वनि जाती रहे। पहले कनु बैठा। इतने में देवदासभाई कमरा लेकर आए और उन्होने गीतापाठ शुरू कर दिया। कनु देवदासभाई का लाया हुआ कैमरा सुधारने लगा, लेकिन सुधार न सका । तब देवदासभाई दूसरे कैमरे का प्रबध करने गए । दीनशा को इसके लिए बाहर भेजा ।

कल रात से वा को पानी पीने मे अरुचि हो गई है, मगर जव सुना कि देवदासभाई गगाजल लाए है तो मुह खोल दिया । बापू ने एक चम्मच गगाजल मुह में डाला । वा तुरत पी गई और बोली, "बस ?" मानो कि उन्हे और चाहिए । बापू कहने लगे, "बस, अब फिर लेना ।" बाद में गगाजल फिर लिया । जल में तुलसी के पत्ते भी डाले गए थे ।

थोडी देर में वा को कुछ शक्ति मिली । उठ बैठीं और सतोकवहन, केशुभाई, मनु, रामीवहन वगैरह से बाते की । भीड न हो, इसलिए दूसरे सब चले गए ।

गीता-पारायण के बाद सतोकवहन और मनु ने बा को भजन सुनाए ।

सतोकवहन वगैरह के आते ही बापू वा के पास से उठकर बाहर चले गए और अपनी खाट पर जाकर सो गए। मै तो वा के पास थी । कभी वा मेरी गोद में लेट जाती थी, कभी वैठ जाती थी । दो वार वा को थोडा पाखाना हुआ । सफाई की । पीछे मै थोडी देर आराम करने को चली गई । मगर कोई बुलाकर ले आया । वा का फोटो लेना था । चार वजे के करीब वा के पास से उठी । बापू अकस्मात् वा के पास वैठे हो तो भले हम फोटो ले ले ।"

फोटो के रयाल से वापू वा के पास वैठने वाले नही थे । मैंने उनसे कहा कि अभी आप वा के पास बैठे । मै थोडा सो लू । वापू मान तो गए, पर वा के पास बैठे नहीं। बा दोपहर उनपर थोडा नाराज हो गई थी । वे दु:खी थीं । सब पर कभी-कभी नाराज हो जाती हैं । बापू कहने लगे, "अभी उसको अच्छा नही लगेगा । जब बुलावेगी तब जाऊगा ।

मै दूसरे कमरे मे गई । वहा देवदासभाई आदि वैठे थे । पेनिसिलीन आ गई है, मगर दोपहर वा की हालत इतनी खराब थी कि वह उनके लिए इस्तेमाल नही की । अभी हालत अच्छी थी, सो देवदासभाई को लगता था कि क्यो न आजमाई जावे ।

दोपहर वा सतोकवहन से कहने लगी, "देवदास ने मेरे लिए बहुत धक्के खाये

हैं। वहुत सेवा की है।"

देवदासभाई से भी कहा, "तूने मेरी वहुत सेवा की है। वहुत धक्के खाये हैं। अव तू अपना कर्त्तव्य पूरा कर।"

देवदासभाई वोले, "वा, सेवा तो डा० गिल्डर, सुशीला, मनु, इन लोगो ने की हैं। मैंने क्या किया है ?"

अतिम समय पर देवदासभाई के आ जाने से वा को वडा आनन्द और सतोष था। रामदासभाई के विषय में देवदासभाई ने कहा, "वा, रामदासभाई आये हैं।" वा वोलीं, "क्या जरूरत थी ?" उनके मन में हमेशा यह भावना रहती है कि रामदास-भाई को सफर का खर्च नहीं पडने देना चाहिए। देवदासभाई से वात करके वा ने आखें वन्द कर लीं और ईश्वर की प्रार्थना करने लगीं—"हे कृपालु राम, अव तो तेरी भक्ति चाहिए, तेरा ही प्रेम चाहिए।" पीछे वोली, "हे भगवान्, पशु की तरह पेट भर-भर कर खाया है। क्षमा करना।"

उनकी वृत्ति विलकुल सात्त्विक हो गई थी—उनका चेहरा उस समय देखने लायक था।

शाम को साढे पाच वजे भण्डारी और शाह पेनिसिलीन लाये। डा० गिल्डर को वापू का मत जानते हुए उसे देने में सकोच होता था। भडारी और शाह ने वापू से पूछा तो वे वोले, "सुशीला और डा० गिल्डर देना चाहे तो भले दें।" थोडी देर वाद डा० गिल्डर ने मुझसे आकर कहा कि वापू विगड रहे हैं। उन्हें इस वात का पता नहीं था कि पेनिसिलीन के इजेक्शन वार-वार देने पडेंगे। वापू का मत है कि वा मृत्यु-शय्या पर है, इसलिए अव पेनिसिलीन क्या देना। और लोगो का मत है कि जवतक श्वास है तवतक उपाय करना चाहिए। इतने में वापू ने मुझे देखा, पूछा, "तुमने क्या तय किया है ?" मैंने कहा, "पेनिसिलीन देंगे।" वापू वोले, "क्या तुम और डा० गिल्डर, दोनो मानते हो कि देनी चाहिए ?" मैं 'हा' न कह सकी। देवदासभाई से वाते करते समय यही वात हुई थी। मुझको निराशा हुई—इसलिए कि वा को वचाने का उपाय होते हुए भी उसका उपयोग नही कर पा रही हूँ। साथ ही मानसिक शाति भी मिली कि व्यर्थ ही वा के शरीर को छेदना नही पडेगा।

प्रभावतीवहन अभी वा के पास जा वैठी थी तव वा ने करुण स्वर में पुकारा था—"वापूजी!"

प्रभावतीवहन ने कहा, "वुलाऊ ?" वा कुछ वोली नही। वापू सवा सात वजे घूमने को चले जाते हैं। आज पेनिसिलीन के कारण पहले डा० गिल्डर से वात की, पीछे देवदासभाई को समझाया। सो उन्हें देर हो गई थी। जाने के लिए गुसलखाने में तैयार होने को आए। इतने में प्रभावतीवहन ने वुलाया। वापू आकर वा के पास वैठ गए। वा दो वार उठकर सीधी वैठीं। वहुत वेचैन थी। वापू ने पूछा, "क्या होता है ?"

अजाने प्रदेश में खडे एक छोटे वालक की तरह अत्यन्त करुण स्वर और

तोतली जबान से उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ पता नही चलता।"

मैंने नाडी देखी—बहुत कमजोर थी। मगर मुझे लगा कि ऐसा तो कई बार हो चुका है, बा अभी ठीक हो जावेगी। इसलिए मैं बरामदे में कनु से कहने गई कि अब फोटो ले लो। मगर उसने कहा कि बापू ने मना किया है। मैंने कहा कि फोटो के बारे में उन्होंने कहा था कि अकस्मात् ले लोगे तो भले ले लेना, अब उसके लिए भी मना कर रहे है।

बा के भाई माधवदास आए। बापू कहते थे कि बा ने उन्हे पहचाना, उनकी आखो में पानी आया, परन्तु वे उनसे बात नही कर सकी।

इतने में भीतर कुछ गडबड सुनी। देखा कि बा अतिम बार उठने की कोशिश कर रही है और बापू कह रहे है, "अब पडी ही रह न!" बा उनकी गोद मे पड गई, आखे पथरा-सी गई और गले मे घडघराहट आरम्भ हो गई। ये सब मृत्यु के स्पष्ट लक्षण थे। अचानक श्वास लेने के लिए मुह खुल गया और दो-चार श्वास लेकर बा सासारिक बन्धनो से मुक्त हो गई।

: ६६ :

बा चली गई

बापू ने सब तकिये निकालकर बा का सिर अपने हाथ पर ही टिका लिया। खाट की आड की गई थी, वह नीची कर दी गई। सब लोग आसपास खडे थे। बापू ने आखें बद कर ली। अत समय मे सब लोग 'राजाराम राम राम सीताराम राम राम' गाने लगे। मेरे मुह से एक शब्द भी नही निकल रहा था। किकर्त्तव्य विमूढ की भाति मैं खडी रह गई। डाक्टर होकर भी मृत्यु को तटस्थता से देखना मैंने नही सीखा।

दो-तीन रोज से बार-बार यही भावना उठती है कि ईश्वर किस प्रकार मनुष्य का घमण्ड उतारता है। जमनालालजी की मृत्यु की खबर सुनी तो लगा कि मैं पास होती तो उन्हे बचा लेती। उसके बाद ईश्वर ने मिनटो में दूसरा अवसर मेरे सामने महादेवभाई की मृत्यु का रखा तब मुझे लगा कि मेरे पास सब साधन न थे—जेल मे सब साधन कहा से होते। आज ईश्वर ने बा को मेरे ही सामने उठाया और चुनौती-सी दी कि कुछ कर सकती है तो कर, मैं कुछ न कर पाई। गिल्डर-जैसे अनुभवी डाक्टर, -जैसे कुशल वैद्य और दीनशा-जैसे प्राकृतिक चिकित्सक, कोई बा के काल को न टाल सका।

७-३५ पर बा की आत्मा मुक्त हुई। रामधुन पूरी हुई। देवदासभाई फूट-फूट कर रोने लगे और 'बा-बा' पुकारने लगे। बापू ने उन्हे शात करने का प्रयत्न किया। सब की आखे भीग गई, पर मेरी सूखी थी। अभी तक मेरी विमूढता दूर न हुई थी। अवसर

आखें मूदलीं और प्रार्थना करने लगी
"हे कृपालु राम, अब तो तेरी भक्ति ही चाहिए। तेरा ही प्रेम चाहिए   क्षमा करना।" पृष्ठ ३९३

"दो-चार श्वास लेकर वा सासारिक वधनो से मुक्त हो गई।" पृष्ठ ३९४

"वह मुझ मे समा गई।"
—वापू
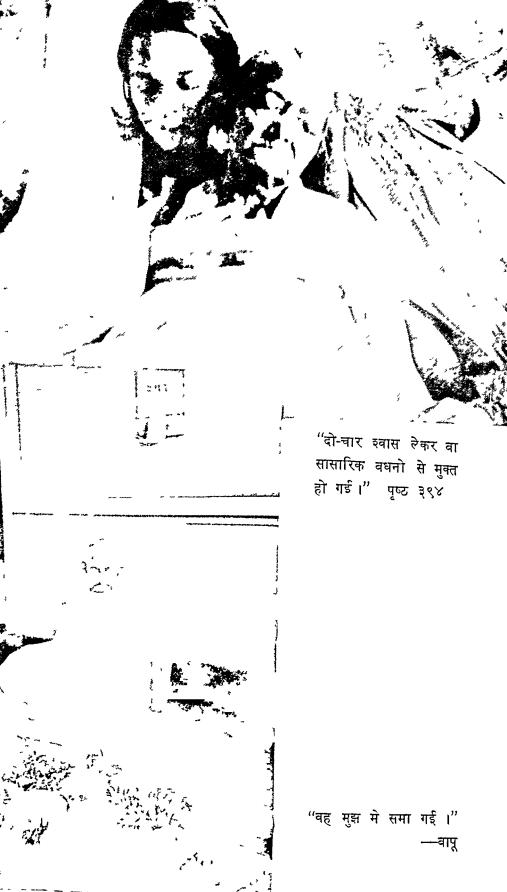
आने पर हमेशा मेरा ऐसा ही हाल रहा है। महादेवभाई की मृत्यु के समय भी ऐसा ही हुआ था और अपने काका की मृत्यु के समय भी।

आखिर वापू उठे और मुझसे कमरा खाली करवाने को कहा। वा को स्नान कराने के वारे में आदेश देते हुए वोले, "तू और मै दोनो मिलकर वा को स्नान करावेगे, जैसा कि महादेव के वक्त किया था।"

वा को आज विशेष लाल किनारी की साडी, जो वापू के काते हुए सूत से वनाई गई थी, पहनाई जायगी। वा जव वापू के साथ सेवाग्राम से वम्वई जाने लगी तव यही साडी उन्होंने मनु को दी थी।

अफवाह थी कि आश्रम जव्त हो जावेगा। इसीलिए वा ने कहा, "यह मेरी साडी सभाल कर रखना। जव मै मरु तव मुझे यह पहननी है। दूसरी तो वापू के हाथकते सूत की कौन जाने कव मिलेगी।"

मनु ने तव यह जानकीवहन के यहा रखवा दी थी। वा यह साडी यहा मँगवाना चाहती थी, मगर पता न चला था कि कहा रखी है। मनु जव यहा आई तो उसने आश्रम वालो को एक पत्र लिखा और वा के लिए उसे मगवा लिया। आज वा के लिए यह साडी पहनने का दिन आ गया।

वा के शव को वापू के स्नान घर में रखा। इतने में भण्डारी आ गए। सरकार ने पुछवाया था कि शव के वारे में वापू की क्या इच्छा है। वापू ने तीन प्रस्ताव सरकार के सामने रखे —

"(१) सवसे अच्छा तो यह होगा कि शव मेरे लडको व रिश्तेदारो को सौंप दिया जाय। इसका अर्थ यह होगा कि अत्येष्टि-क्रिया आम जनता के सामने होगी और सरकार उसमें रुकावट न डालेगी।

"(२) अगर यह न हो सके तो महादेव की भाति दाह-क्रिया यही हो। सरकार यह कहे कि सिर्फ रिश्तेदार ही क्रिया के समय हाजिर रह सकते है तो मै इसे स्वीकार न कर सकूगा, जवतक कि वे सब मेरे मित्र, जो मेरे लिए कुटुम्वियो के समान है, उसमें शामिल न हो सके।

"(३) अगर सरकार को यह भी मजूर न हो तो वे सव लोग, जिन्हे वा से मिलने के लिए यहा आने की इजाजत दी गई थी, वापस चले जायगे और अत्येष्टि-क्रिया में वे ही मौजूद रहेगे, जो मेरे साथ यहा नजरवद है।"

तव वापू भण्डारी से कहने लगे, "वा अपना राज्य लेकर चली गई, अव मेरा राज्य है। उसकी खातिर मै वहुत-सी वातो को वर्दाश्त कर लेता था, मगर अव मुझे वैसा करने की जरूरत नही। मेरे लिए मित्रो और रिश्तेदारो में कोई फर्क नहीं है।"

वापू कहते गए, "आप साक्षी है कि अपनी पत्नी की इस सख्त वीमारी से . प्रकार का राजनैतिक लाभ न उठाने की मेरी हमेशा कोशिश रही है, मगर ह .। इच्छा यह रही है कि सरकार जो कुछ भी करे, अच्छे ढग से करे। मुझे डर है कि

उसका अभाव रहा है। क्या यह आशा रखना बड़ी बात होगी कि कम-से-कम मरीज की मृत्यु के बाद सरकार जो कुछ करेगी, अच्छा ही करेगी।"

भण्डारी के पूछने पर बापू ने बताया कि मित्रो की सख्या लगभग सौ होगी और देवदास ही निश्चित करेगा कि कौन आवे, कौन नहीं।

उन्होने यह भी स्पष्ट कर दिया कि सार्वजनिक दाह-क्रिया होगी तो जनता का प्रदर्शन पूर्णतया शान्त होगा। "मेरे लडके मर जायगे, मगर अशान्ति नहीं फैलने देंगे।"—बापू ने कहा।

बा जब विदा ले रही थीं तब मथुरादासभाई सपरिवार दरवाजे पर खडे थे, मगर उन्हे अन्दर नहीं आने दिया गया। भण्डारी ने बापू से कहा, "अगर वे अन्दर आकर फिर बाहर गए तो खबर फैल जायगी और फलस्वरूप शहर में गड़बड हो सकती है।"

बापू बोले, "अगर वे भीतर आ जावें और एक-दो घटे यहीं रहे तबतक आप सरकार से हुक्म जारी करा सकेंगे तो सब काम ठीक हो जाएगा न? बजाय इसके कि सडक पर खडे-खडे इतजार करें, अदर हो तो ज्यादा अच्छा होगा।" इसपर मथुरादासभाई को भीतर आने की इजाजत मिली।

बापू बा के शव को नहलाने से पहले मुह-हाथ धोने लगे। इतने में कटेली साहब बापू के पास आए और बोले, "दाह-क्रिया यदि सार्वजनिक रूप से हो तो आप बाहर तो न जाना चाहेगे?"

बापू ने उत्तर दिया, "मैं नहीं जाऊगा। मेरे लडके ही सब-कुछ कर लेंगे।"

शव को स्नान कराते समय बापू ने कहा कि जो बहनें चाहे, अन्दर आ सकती हैं। मैं और बापू साबुन लगाकर बा का शरीर साफ करने लगे और प्रभावतीबहन पानी डालने लगीं। मनु और कनु बा के कमरे में फिनाइल का पोता लगा रहे थे। मैंने बा के बाल धोये और पैर साफ किये। फिर पीठ साफ की।

बा को साफ-सुथरा करके जेल की एक चादर पर लिटा दिया और उसपर गगाजल छिडका। इसके बाद उन्हे बापू के सूत की लाल साडी पहनाई। श्रीमती ठाकरसी की भेजी हुई हरे किनारे की एक साडी को गगाजल में भिगोकर सुखाया और शव के नीचे बिछा दिया। बा के बालो को कघी की। बापू कहने लगे कि बालो को खुले ही रहने दो। बा के बाल बाधने की डोरी उन्होने स्वय धोई।

बा की कठी और चूडिया उतार ली गईं। मनुजयसुखलाल ने बा की कठी के साथ-साथ बापू से बा की चूडिया भी ले लीं।

सतोकबहन ने तुलसी की एक नई कठी बा को पहनाई और बापू के सूत का हार भी उनके गले में डाला। बापू के सूत को रगकर उसके गजरे बनाए और बा के हाथो में पहनाए। मनु मशरूवाला ने माथे पर कुकुम का लेप किया और चन्दन का टीका लगाया। ऐसा लगता था, बा सो रही है। बहुत सुन्दर लगती थीं।

उन्हे उठाकर बाहर लाए। एक जेल की चादर पर उन्हे लिटाया। मीराबहन

ने चूने से एक लम्बी चौकी वनाई थी। चौकी के सिरहाने ॐ वनाया था और पैताने 卐 वनाई थी। मृत्यु के वाद व्यक्ति लम्बा हो जाता है। यह अनुभव मुझे महादेवभाई की मृत्यु के समय पर पहली वार हुआ और आज भी उसी की पुनरावृत्ति हुई। वा के पैरो ने 卐 को ढक लिया। उनके सिरहाने और पैताने 'हे राम' के चित्र शोभित हो रहे थे। हम लोग कम्वल विछाकर वा के चारो ओर वैठ गए।

इतने मे भण्डारी सरकारी जवाव लेकर आए और वताया कि आम जनता के सामने दाह-क्रिया करने की इजाजत तो सरकार नहीं दे सकती, मगर मित्र और रिश्तेदार सौ तक की सख्या में यहा सम्मिलित हो सकते हैं। देवदासभाई दरवाजे पर रहकर जिसे अन्दर आने देना चाहेगे, वे सभी अन्दर आ सकेंगे। स्वामी आनन्द, श्रीमती ठाकरसी और शातिकुमार भी आ पहुचे। मीरावहन और मनु वगैरह ने शव पर फूल चढाए। जो दीपक वा तुलसी के पौधे के पास रखा करती थीं, वही घी का दीपक वा के सिर के पास आज जल रहा है। दोनो तरफ धूप सुलगाई गई है।

वापू सिर के पास एक ओर वैठे। प्रार्थना करवाई गई। गीता-पाठ करने वाले वा के पावो के पास वैठे। उनमें जमनादासभाई, केशुभाई, राधावहन, भाई, कनु, प्रभावहन, मनु और मैं थे। पहले वापू ने कहा कि सव जने दो-दो अध्याय वोलें, मगर वह ठीक न लगा। कनु कहने लगा कि सवकी ध्वनि वदला करेगी—अच्छा नहीं लगेगा। मैंने कहा कि देवदासभाई स्वर उठावें—हम सव उनके पीछे वोलेंगे। वापू कहने लगे, "पाठ मधुर नही होगा तो मैं कही भी वन्द कर दूगा।" अन्य भजनो के साथ-साथ गीता का सम्पूर्ण पारायण एक घटा २५ मिनट में पूरा हुआ। वापू उसमें एकदम तल्लीन हो गए। वाद में कहने लगे, "वहुत ही अच्छा चला। वडा ही मधुर पाठ था। देवदास अपनी पुरानी चीज को भूल नही गया, यह मुझे वडा अच्छा लगा।"

अव कल कौन-कौन आवेगा, इसपर वात चली। प्रस्ताव रखा गया कि वम्वई से आने वालो के लिए वा की दाह-क्रिया का समय कल क्या ९ वजे से वढकर ११-१२ वजे का नही हो सकेगा? वापू ने उत्तर दिया, "मैंने मित्रो को वुलाने की वात जव की थी तव वम्वई मेरी कल्पना से वाहर थी। मैंने तो सोचा था कि पूना से ही मित्र लोग आएगे। इसलिए तुम लोग वम्वई की वात छोड दो।"

हम लोगो ने प्रार्थना की, "वापू, वा को देखने की कितनी अधिक लालसा लोगो में होगी, आप इसका खयाल करें। और इसी निमित्त आपके भी दर्शन उन्हें हो जाएगे तो वे शाति पावेंगे और आज के वाद तो इस महल के दरवाजे पर दोहरा ताला लगने वाला है ही।"

तव वापू वोले, "तो भी मै वा की मृत्यु का ऐसा उपयोग नही करना चाहता। लोगो को खवर हो जाएगी तो वे आना ही चाहेगे। फिर हम खामखा क्यो किसीको तकलीफ दें।"

किसीने कहा, "कम-से-कम फोन तो करने दीजिए कि जिसके पास साधन

हो, वे आ सकते हैं।"

मगर बापू नही माने। उन्होंने श्रीमती ठाकरसी से कहा कि स्थानीय लोगो को ही बुलावें। इसके बाद मनु और संतोकबहन के सिवा अन्य लोगो को बाहर भेज दिया जाय।

एक बजे के करीब बापू खाट पर लेटे। बा को पेनिसिलीन देने के बारे में बापू ने मना किया था। उसकी बात करते हुए वे कहने लगे, "ईश्वर ने मेरी श्रद्धा की परीक्षा ली। मना करके मैंने ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा और सिद्धात की दृढता बता दी। ऐसा न करता तो भी बा को इजेक्शन देने का समय ही नही रहा था।"

मैंने कहा, "हा, पिचकारी अभी उबल ही रही थी कि बा चल दी।"

बापू बोले, "कुछ होने वाला तो था ही नही। मैंने अगर मना न किया होता तो बस मेरी लाज जाने वाली थी।"

देवदासभाई कह उठे, "फोटो के बारे मे भी यही बात है। बापू ने मना न किया होता तो भी कनु कुछ कर नही पाता। कैमरे मे फिल्म बैठाता ही कि इतने मे बा चल देती।"

एक बजे के करीब बापू खाट पर लेटे। २॥ बजे तक मैं देवदासभाई के पास बैठी। बा के स्मरणो की बात करती रही। प्रभाबहन और मनु मशरूवाला शव के पास देवदासभाई के पास तीन बजे तक बैठे। तीन से पाच तक कनु और संतोक बैठे। पाच से सात बजे तक मैं और भाई बैठे। शव के पास बैठकर बापू ने प्रात काल की प्रार्थना कराई।

: ६७ :

अंत्येष्टि-क्रिया

२३ फरवरी '४४

बापू साढे छ बजे उठे, प्रार्थना कराई और फल का रस लिया। तब उन्होंने सबको नाश्ता करने की सलाह दी, मगर संतोकबहन ने कहा कि शव को जलाकर स्नान किये बिना पानी नही पिया जा सकता। यह जानकर हम लोगो ने कुछ नहीं खाया-पिया। केवल डा० गिल्डर और श्री कटेली ने चाय पी।

७॥ बजे बापू फिर रात की जगह आकर बैठ गए। हम लोगो ने बगीचे में से ताजे फूल लेकर सजावट की।

मैं, कनु और कटेली दाह-क्रिया की जगह देखने गए। महादेवभाई की समाधि के पश्चिम की तरफ वाली दीवार हटा दी गई थी। समाधि के पास ही बा के शव के लिए स्थान तैयार हो रहा था। बा हमेशा कहा करती थी, "मुझे कहा बाहर जाना है!

और बेटे ने अर्थी सजाई
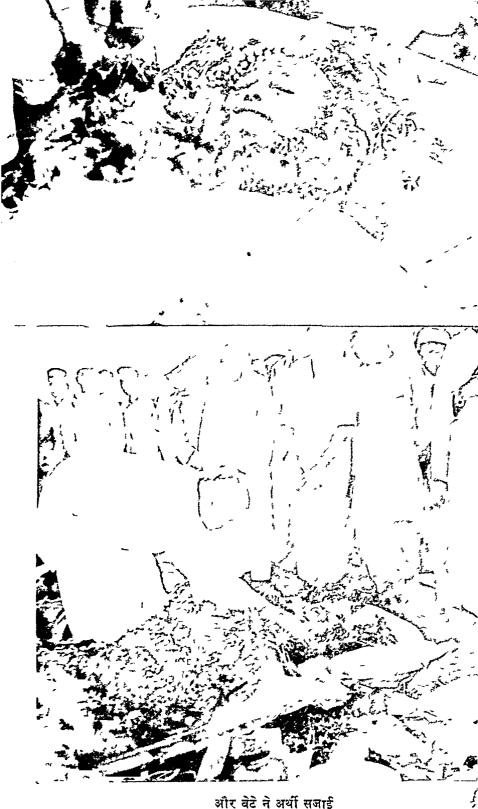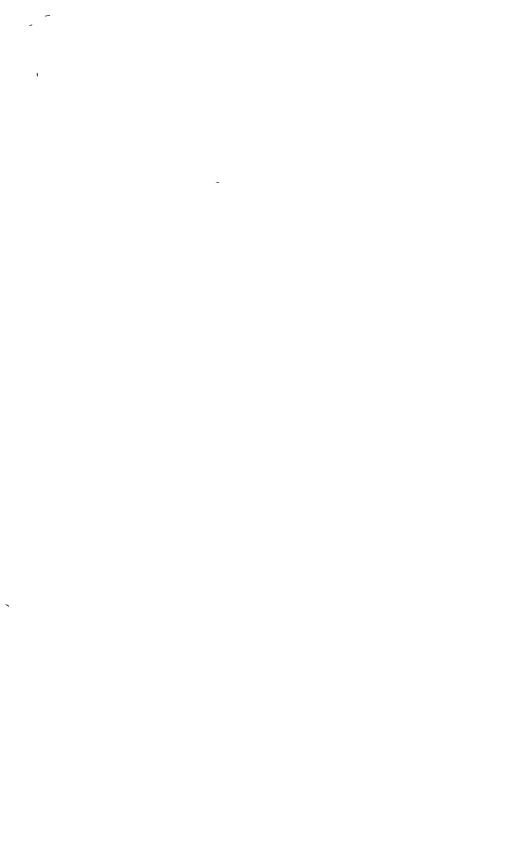
मुझे तो महादेव के पास ही आखिरी नींद में सो जाना है।"

वह सच ही हुआ। मुझे हमेशा आशा रही थी कि वा को अपने साथ लेकर जावेंगे। वह आशा मिट्टी में मिल गई। स्वतन्त्रता की वेदी पर इस जेल में यह दूसरा बलिदान हुआ। क्या ऐसे-ऐसे बलिदान हर साल देने पड़ेंगे? हमें यह सहर्ष स्वीकार हो सकता है, मगर भगवान् वापू को इस जेल से सही सलामत वाहर निकाले और पूर्ण विजयी वनने की शक्ति प्रदान करे। यही अन्तरात्मा की प्रभु से विनती है।

धीरे-धीरे लोग वाहर से आने लगे। सबसे पहले नरगिसवहन, पीछे और सब लोग। श्रीनिवास शास्त्री, केलकर, कृष्णा हठीसिंग और उनके पति आदि आए। पता लगा कि शातिकुमार की पत्नी हवाईजहाज से आ रही है।

महादेवभाई की दाह-क्रिया जिन ब्राह्मणो ने कराई थी, वे ही फिर आ पहुचे।

कटेली ने शव के लिए शुद्ध खादी मगाई थी, लेकिन बापू ने उसे यह कह कर अलग करा दिया कि खादी वेकार जलाना नही चाहता। यह गरीबो के काम आवेगी।"

रात को श्रीमती ठाकरसी ने चन्दन की लकडी के बारे में वापू से वात की। वापू ने उत्तर दिया, "जब मै गरीबो को चन्दन की लकडी से नहीं जला सकता तो वा को, जो उस व्यक्ति की पत्नी है जो अपने आपको गरीब-से-गरीब मानता है, चन्दन मे कैसे जला सकता हू।"

कटेली बोले, "मेरे पास चन्दन के दो पेड कटे पडे है।" वापू कहने लगे, "तुम तो जो दोगे, वही काम में आएगा। आखिर सरकार को ही तो सारा इतजाम करना है।"

ब्राह्मणो और रिश्तेदारो ने मिलकर अर्थी तैयार की। ब्राह्मण लोग देवदास-भाई से पूजा करवाने लगे। इसके पहले मनु मशरूवाला ने वा की आरती उतारी थी। 'वैष्णवजन' वाला भजन गाया गया और रामधुन चलाई गई। यह सब हो चुकने पर सब लोगो ने वा को प्रणाम किया। मै स्वय वा के चरणो पर सिर रखकर अपनी भूल-चूको के लिए क्षमा मागने लगी। उस समय मै अपने आपको रोक न सकी, आखो से आसू गिरने लगे। मै जल्दी से गुसलखाने की ओर चली गई। कल से मै मनु और प्रभा-वतीवहन वगैरह को समझा रही थी कि रोने से मृतक की आत्मा को क्लेश होता है, सो मुझे रोते देखें तो ठीक नहीं।

लीलावती आसर आई, कल दिन भर पूना मे थी, मगर जीवित वा के दर्शनो का सौभाग्य उनके लिए नही था। वापू की गोद में गिरकर फूट-फूट कर रोने लगी। जब लोग आने लगे तो वापू दरवाजे के पास ही खडे हो गए। मृदुला भी पहुच गई। वालुकाका गेरुवे कपडे पहने एकतारा और करताल वजाते हुए कीर्त्तन कर रहे थे। लोग दर्शन करके वगीचे में जाकर वैठते थे।

साढे नौ वजे के वाद अर्थी सजी। वालुकाका के लाये हुए तिरगे झण्डे से शव को ढक दिया गया। सिंदूर में रगे हुए सूत की आटियो से शव को अर्थी पर वाधा गया।

यह सूत मेरा काता हुआ था। झडे को फूलो से सजाया।

कनु ने उस समय कई फोटो लिये। जीवित बा के पास बैठे हुए बापू का चित्र तो वह न ले सका, पर मृत बा के पास बैठे हुए बापू का फोटो लिया। फोटो लेकर कैमरा श्री कटेली को सौंप दिया गया। वे ही सब सामान अपने पास रखेगे।

श्मशान में कुछ आवश्यक पूजा आदि के पश्चात् कनु, जयसुखलालभाई, शातिकुमारभाई, कमलनयन बजाज वगैरह ने चिता की लकडी चिनी। शव को चिता पर रखवाकर बापू ने प्रार्थना करवाई। ईशावास्यमिद सर्व, असतो मा सद्-गमय, अउज़-अ-बिल्ला, मजदा अ मोइ वहिश्ता, व्हेन आई सर्वे दि वडरस क्रॉस, मगल मन्दिर खोलो, रामधुन (राजा राम राम) तथा गीता के बारह अध्याय चले।

तब देवदासभाई ने साढे दस बजे चिता में आग दी।

बापू एक लकडी का सहारा लिये खडे थे। कुछ लोगो ने दौडकर कुर्सी का प्रबध किया और कुछ ने उनसे बैठने की प्रार्थना की, पर बापू ने बैठने से इन्कार कर दिया। मीराबहन ने बापू के ऊपर अपने छाते से छाया कर ली।

ज्वाला जब खूब भडकी तब लोगो को कुछ पीछे हटना पडा। बापू भी हटे और इमली के पेड के नीचे जाकर कुर्सी पर बैठे। आशा थी कि बारह बजे तक क्रिया पूरी हो जायगी, मगर अग्निदाह ही साढे दस बजे शुरू हुआ।

बा के शरीर में पानी भरा था। चिता भी उचित रीति से चिनी नही गई थी, इसलिए जलने में बडा समय लगा। अधजला शव जब बास से चिता पर ठीक रखने के ख्याल से हटाया जाता था तब बार-बार नीचे लुढक जाता था। भयानक दृश्य था। सिर के पास अभी और लकडिया रखने की आवश्यकता थी। दूर से फेंकने पर लक-डिया ठिकाने पर न पडकर इधर-उधर गिरती थी। आखिर कनु हिम्मत करके पास जाकर लकडी ज्वाला में रखकर आया। उसकी आखो की पलकें, मुह और हाथ झुलस गए। शातिकुमारभाई सब समय लकडी डाल रहे थे। सगा पुत्र अपनी मा के शव की दाहक्रिया में इससे अधिक प्रेम और भक्ति से काम नही कर सकता।

लगभग दो घटे बाद बापू से कहा गया कि वे जाए, हम लोग पूरा करके आवेंगे। बापू उठने वाले थोडे ही थे, बोले, "६२ वर्ष साथ रहकर अब आखिर के दिन मुझे इतनी क्या जल्दी लगी है! बा भी क्या कहेगी!" यह सुनकर सब चुप हो गए। बहुत-से लोग चले गए और बहुत-से बैठे रहे, पर बापू नही उठे।

साढे चार बजे सब क्रिया सम्पन्न हो गई। बापू तब ऊपर आए। मैं स्वय साढे तीन बजे के बाद बहुत घबरा गई थी। धूप में खडे रहने से प्यास बढ रही थी, थकान-सी चढी थी और सिर चकरा रहा था। इतने में आई हुई एक बहन ने कहा कि उसे गुसलखाने मे ले चलू। कटेली से पूछकर मैं उसे ऊपर ले गई। जाकर पहले तो ठडे फर्श पर लेट गई, फिर स्नान किया, जिससे कि लोगो के आने पर उनकी मदद कर सकू। फिर नीचे गई, मगर वापस आना पडा। श्मशान में खड़े रहने की शक्ति

अग्नि-दाह

"दस बजे चिता मे आग दी।" पृष्ठ ४००

...हुत से लोग चले गए, बहुत से बैठे रहे, पर बापू नही उठे।" पृष्ठ ४००
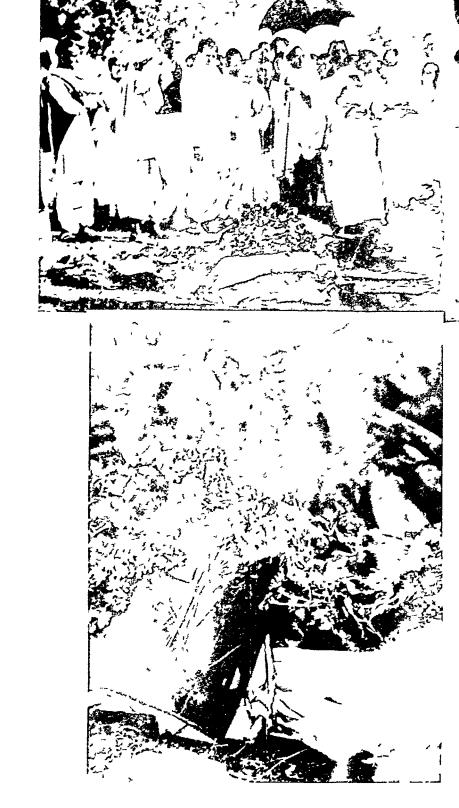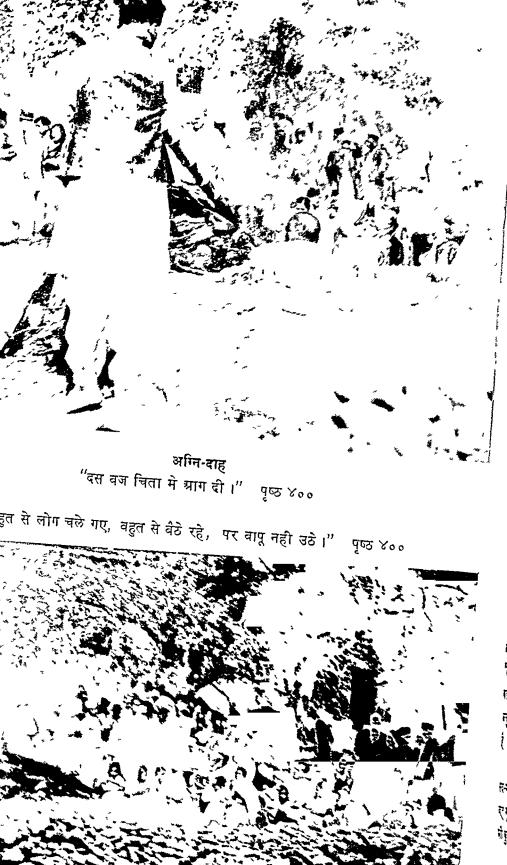
स्नान के बाद भी नहीं आई थी। चार बजे कृष्णा हठीसिंग ऊपर आईं। उनके सिर में दर्द था। 'एस्प्रिन' चाहिए था। डा० गिल्डर ने गोली दी, चाय पिलाई। दुबारा नीचे आई तब बापू ऊपर आ रहे थे। उनके स्नान की तैयारी कराई, मगर उन्हे तो पहले सबको विदा करना था। सो कुछ लोग बरामदे में खडे रहे। आखिर सब लोग एक-एक करके चले गए तब बापू ने स्नान करके भोजन किया। केवल देवदास-भाई इसलिए रह गए कि उन्हे बा के फूल चुनकर शुक्रवार के दिन जाना है। शुक्रवार तक वे बाहर न जा सकेंगे।

रामदासभाई अभी तक नहीं आए। मगर आए तो यहा रह सकेंगे। छ बजे भण्डारी आए। बापू ने उनसे कहा कि बा की सेवा के लिए जो आए थे, उनमें से कनु भले जावे, मगर थोडे दिन बाद। उमे बाहर बहुत काम है। मनु यहा अभ्यास के लिए रहना चाहती है। बापू रखने को तैयार हैं—सरकार रहने दे तो। नहीं तो उन्हें अपने पास उसे रखने का कोई कारण नहीं है। प्रभा तो कैदी है। उनको या तो यहीं रहने दें, अगर यहा से ले ही जाना हो तो उन्हें बिहार वापस ले जावें। दूसरी जगह न ले जावें। भण्डारी ने इन बातो को ध्यान में रखने का वचन दिया।

देवदासभाई और भाई साढे छ बजे खाने को बैठ ही रहे थे कि रामदासभाई आ पहुचे। उन्हे बहुत सदमा हुआ था। खूब रो लिये। फिर देवदासभाई उन्हे चिता पर ले गए। उसके बाद वे स्नान करने गए। देवदासभाई और भाई खाने को बैठे। रामदासभाई को मनु ने खाना खिलाया। ७। बजे हम सब नीचे गए—महादेवभाई व बा को फूल चढाए, फिर सवा आठ बजे प्रार्थना हुई। बा के शव वाले स्थान पर घी का दिया जलाया और धूप अगरबत्ती सुलगाई। घर सूना है। बा का कमरा सूना है। हम सबका मन सूना है। बा की मृत्यु आदर्श भले ही हो, मगर करुण भी बहुत है। उनकी तीव्र इच्छा थी कि एक बार बाहर जाकर अपने लडके-बच्चो के बीच बैठें, मगर ईश्वर को यह मजूर न था।

बातो के दौरान में बापू से पूछा गया कि बगाल के दुष्काल के बारे में उनका मत क्या है। बापू ने कहा, "मैं मानता हू कि काग्रेस बाहर होती तो यह होता ही नहीं, अर्थात्, काग्रेस उसको निबटा लेती और इतने लोग नहीं मरते।" इसपर किसीने पूछा, "तो क्या इसका यह मतलब नहीं कि काग्रेस को किसी भी तरह बाहर न जाना चाहिए ? कई लोग कहते है कि क्या ऐसी हालत में अपने स्व-मान को लेकर जेल में बैठे रहना अनुचित नहीं है ?" बापू ने उत्तर दिया, "अपना स्व-मान रखने के लिए जो जेल में जाता है, वह मूर्ख है।"

प्रश्नकर्त्ता ने जल्दी से अपना प्रश्न सुधारा, "अपना स्व-मान नही, देश का स्व-मान।" बापू बोले, "जो देश के स्व-मान की खातिर प्राणो की बाजी नहीं लगाता, वह मूर्खो का सरदार है। बात यह है कि आज की परिस्थिति में काग्रेस बाहर रहकर भी कुछ नहीं कर सकती। उसके हाथ में सत्ता हो तभी कर सकती है और वह है नही।

इसीलिए काग्रेस आज वाहर नही है।"

इसके वाद दूसरी वातें हुईं। पता चला है, कि सरकार के गोपनीय आंकडो के अनुसार सन् '४२ की लडाई में हमारे ५०,००० आदमी उन्होने मार डाले हैं। मगर ऐसी चीज वह प्रकट थोडा ही करने देने वाले हैं।

प्रार्थना के वाद वापू ने काता। कुछ तार आए थे। भाई वह पढकर सुनाते रहे। थोडा समय वातें चली। सोने को गए तो १२ वजे थे। मै तो खाट पर साढे वारह वजे जाकर पडी, मगर नींद कहा! दो वजे का घटा सुनने के वाद सो सकी। सोचा था कि डायरी पूरी करने के वाद सोऊंगी, मगर सव सोने को चले गए थे। वा के कमरे के सिवा और कहीं वत्ती नहीं जलाई जा सकती थी; क्योकि सव जगह लोग सो रहे थे। वा के कमरे में इतना सूना लगता था कि वहां वैठना कठिन था, इसलिए जल्दी खाट पर जा पडी।

देवदासभाई नें वापू के पैरो की मालिश की, भाई ने सिर की। रामदासभाई सकोचवश नहीं गए थे— "कहीं ठीक न कर सकू तो!" यह वात उनके नम्र स्वभाव की सूचक थी।

: ६८ :

वियोग-वेदना*

२४ फरवरी '४४

सुवह प्रार्थना के लिए सव उठे। प्रार्थना मधुर थी। फिर कई लोग सोए। कनु, प्रभा और मनु— तीनो कातने वैठे। देवदासभाई ने कहा था कि घूमने के समय उन्हे जरूर जगा लिया जाय। एक वार उन्हे जगाया। वे फिर सो गए। पहले विचार किया कि दुवारा न जगाया जाय, मगर फिर उनके आग्रह का विचार करके और यह सोचकर कि वे यहा दो-तीन दिन ही है, कौन जाने वापू से फिर कव मिल पावेंगे, उन्हे फिर जगा दिया।

वापू सुवह घूमने जाने लगे तव सभी लोग उनके साथ हो लिये। वापू यह देखकर वोले, "आज तो मण्डल भरा है। जो वात वा के जीते-जी न हो सकी, वह उसके चले जाने के वाद अपने आप हो गई है।"

वा की समाधि के स्थान पर हम लोग गए। चिता अभी तक धधक रही थी। वापू ने कहा कि राख रखनी हो तो अभी रख ली जाय, मगर देवदासभाई ने कहा कि अभी तो पूरे २४ घटे भी नही हुए है। श्री कटेली और डा० गिल्डर भी फूल लाए।

*यह विवरण २७ फरवरी को लिखा गया था।

कुछ सिपाही भी फूल लाए थ। समाधि को सजाकर प्रार्थना की।

महादेवभाई की समाधि को फूलो से खूब सजाया और प्रार्थना पूरी की। वा की एक बात याद आ गई, दिल भर आया। वे कहा करती थी— "मुझे तो महादेव के पास जाकर आखिरी नींद सोना है।" आज सचमुच ही वे महादेव के पास ही पडी है। उनकी याद के सामने मुझे शकुन्तला की याद भूल गई है।

खाने के समय वापू को समवेदना के १५० तार पढकर सुनाये गए। चार बजे के करीब वा का सामान खोला गया और देवदासभाई की सहायता से यह निश्चित किया गया कि वा की कौन-सी चीज किसे देनी है। पिछले साल वा ने एक सफेद शाल मुझे दिया था। देवदासभाई ने वह मुझे फिर दे दिया। मेरा आग्रह यह था कि घर के आदमियो को देने से कुछ वचे तो मुझे दिया जाय। भाई के सूत की एक साडी वा के पास थी। वह देवदासभाई मुझे देने लगे। भाई ने वह लक्ष्मीभाभी को देने को कहा। मैंने कहा, "मुझे साडी देनी ही हो तो राजकुमारी के सूत की कती हुई साडी, जो पिछले साल नये वर्ष के दिन मुझे वा देना चाहती थी, वह दे दीजिए।" अन्त में देवदासभाई ने वा का विस्तर खोलकर वह निकाली और मुझे दे दी। वा का नमदा वापू के लिए रखा गया।

रात को वापू ११ बजे तक बातें करते रहे। वा के स्मरणो की बातें थीं।

वा के श्राद्ध के बारे में बातें करते समय देवदासभाई कहने लगे, "गगा में अस्थिया प्रवाहित करने से कोई लाभ नहीं होगा।" परन्तु वापू बोले, "वा की श्रद्धा और भक्ति के विचार से उसकी अस्थिया गगा में ही जानी चाहिए।" बाद में प्रयाग ले जाना तय हुआ। वापू १२ बजे के बाद सोए।

रामदासभाई और देवदासभाई ने मिलकर वापू की मालिश की। दोपहर को रामदासभाई ने उनके पैरो की मालिश की थी। सुबह घूमते समय तय हुआ था कि हम लोग जबतक कनु, मनु, प्रभा, देवदासभाई, रामदासभाई यहा है, तबतक उन्हे वापू की सेवा करने का मौका दें, क्योंकि दोनो भाई कल चले जावेंगे। कनु वगैरह का भी कुछ ठीक नही है।

२५ फरवरी '४४

सुबह की प्रार्थना में देवदासभाई ने भजन गाया। वडा ही मधुर था। वेचारे रात को सो नहीं सके थे। बहुत खिन्न-चित्त है। अभी कह रहे थे, "जीवन का सब सौन्दर्य और माधुर्य धीरे-धीरे जा रहा है। पहले महादेवभाई गए और अब वा।"

भाई से बातें करते-करते कहने लगे, "क्या कहू, तुम लोग अन्दर हो और हम बाहर है, मगर वा पर जो यहा बीती, वह मुझपर कितने अरसे से बीत रही है। ऐसा लगता है कि जीवन में से कुछ हमेशा के लिए चला गया है और पहले जैसे दिन वापस आने वाले नही है।"

भाई बोले, "हा, एक ही आश्वासन है कि थोडे ही दिनो में हमे भी

विश्राम करने को मिलेगा। हमारे प्रियजन पहले से ही वहा हमारी राह देख रहे है। वहा जाकर फिर सब इकट्ठे होगे।"

सुबह जब हम लोग घूमने गए तो मनु और प्रभावती ने बा के शव की राख शीशियो में भर ली। कल शाम को भी भरी थी। चिता पर बा के शव के साथ पाच काच की चूडिया भी डाली गई थी। प्रभावतीबहन और रघुनाथ को पाचो चूडिया मिल गई। इतनी प्रचड ज्वाला में भी वे न तो पिघली और न टूटी। ब्राह्मण कह रहा था कि यह शुभ शकुन है, अखण्ड सौभाग्य का चिह्न है।

ब्राह्मण एक बजे आया। देवदासभाई से पूजा कराई। चिता अभी तक बडी गरम थी, इसलिए अस्थिया चुनने से पहले पानी डालना पडा। अस्थिया चुनी जाने के बाद राख इकट्ठी की गई। बापू पहले तो खडे रहे, पर बाद में नीम के पेड के नीचे जाकर बैठ गए। हरिलालभाई भी आ पहुचे।

साढे दस बजे ब्राह्मण ने बापू से कहा कि पौन घटे बाद उनकी जरूरत पडेगी। इसपर बापू मालिश आदि पूरी करवाकर ११॥ बजे फिर नीचे गए और आवश्यक पूजा वगैरह पूरी की। इसके बाद उन्होने ऊपर आकर खाना खाया।

चिता पर से आकर देवदासभाई और रामदासभाई ने स्नान किया। एक बजे देवदासभाई, रामदासभाई, हरिलालभाई तथा भाई एक साथ भोजन करने बैठे। बापू हरिलालभाई को खाने के समय देखने आए। हरिलालभाई के दात तो है नही, इसलिए डबल-रोटी, कोको और सब्जी ले रहे थे। खाते-खाते कहने लगे, "यह सब मुझे दक्षिण अफ्रीका की याद दिलाता है।"

मै सोच रही थी कि अपने बेटो को एक साथ बैठे देखकर उन्हे खिलाते हुए बा कितनी खुश होती। देवदासभाई कहने लगे कि बा होती तो वे भी बापू की तरह हरिलाल-भाई को देखने आती।

बापू ने हरिलालभाई से बातें कीं।

बा की चीजो को अपने यहा रखने के लिए किसी सग्रहालय ने बापू से प्रार्थना की थी। बापू को यह नापसन्द है। कहते है, "यह तो मूर्त्ति-पूजा हुई। जो बा को पहचानते है, जिन्होने बा की सेवा और भक्ति की है, वे भले ही बा की चीजें अपने पास रखें। मनु बा का डोरा पहनती है तो उसे लगेगा कि यह डोरा पहनकर कोई भी बुरा काम कैसे किया जा सकता है। मै इस तरह की योजना पसन्द करता हू, लेकिन सग्रहालय मे कोई चीज रखना मुझे पसन्द नही है।"

प्रार्थना के बाद तीनो भाई सामान सभालकर चलने लगे। देवदासभाई ने जो साडी लक्ष्मीबहन के लिए निकाली थी, वह मुझे मेरे आग्रह पर दे दी। अब लक्ष्मी-बहन को वह साडी मिलेगी, जिसे भाई ने बा के लिए बनाया था। मुझे यह बात अच्छी लगी। गर्मी के दिनो मे बा की साड़ी पहनूगी और ठण्डक के दिनो मे उनका दिया हुआ शाल ओढूगी।

रात को पौने दस बजे तीनो भाइयो को विदा किया। देवदासभाई जब बा का विस्तरा बाध रहे थे तब बापू उधर से गुजरे और बोले, "देखो, विस्तरा वैसे ही बाधना जैसे बा बाधती थी।" बा सचमुच ही अपना विस्तरा बडी सुघडता से बाधती थीं।

२६ फरवरी '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। मगर अब उनके पास बा भी पहुच गई है।

बा की मृत्यु के धक्के से बापू अभी सम्भल नहीं पाए है। बासठ वर्ष का साथ—विलायत के तीन वर्ष और जेल-यात्राओ आदि के कुछ और समय के अलावा वे कभी बा से अलग नहीं रहे। बचपन में भी वे साथ खेला करते थे। शादी से भी पहले यानी बासठ वर्ष से पाच-सात वर्ष पहले से वे दोनो साथ में खेला करते थे। ऐसे साथी का चला जाना साधारण घटना नही है।

देश को बा के जाने का भारी धक्का पहुचा है। सैकडो तारो के अलावा मालवीयजी का भी तार देवदासभाई के नाम आया है कि बा के फूल लेकर त्रिवेणी आओ। देवदासभाई तो पहले से ही तैयार बैठे है।

बा की राख का बोरा एक मोटर में रखकर देवदासभाई अन्य लोगो के साथ गए। हरिलालभाई न थे, इससे बापू को दु ख हुआ।

सुबह ८। बजे बापू घूमने निकले। उनके और मनु के अलावा सबने स्नान कर लिया था। ८॥। बजे बा ओर महादेवभाई के 'मदिर' पर फूल चढाने गये। बापू ने बा की समाधि पर गुलाब का फूल चढाया। मीराबहन ने इस फूल को बीच में रख कर चारो ओर फूल सजाए। सबने अपनी-अपनी पुष्पाजलि अर्पित की। डा० गिल्डर और कटेली अभी रोज आते है, थोडे फूल भी लाते है। सजावट होने पर बारहवें अध्याय का हमेशा की तरह पाठ होता है। कनु ओर प्रभाबहन ने बापू की मालिश की। प्रभाबहन ने स्नान कराया और कनु ने उनके कपडे धोए। मनु ने खाना दिया।

आज शाम को बापू कहने लगे, "मेरा मन बा को छोडकर और किसी चीज का विचार ही नही करता। आज 'डॉन' में एक लेख पढते-पढते मुझे लगा कि वेवल कौन है—वाइसराय है या और कोई।" मैक्सवेल के व्याख्यान को लेकर जो पत्र बापू ने लिखा था, उन्होने उसे खाने के समय सुधारा और कनु ने उसे टाइप किया।

मैंने बापू से कहा, "बापू, बा के जाने का असर आपपर महादेवभाई के जाने से भी अधिक हुआ है।" बापू बोले, "हा, हो सकता है। महादेव तो क्षणभर में चला गया, मगर बा ने हफ्तो तक कठिन वेदना सही। मुझे वे दिन भूलते ही नही है।" बापू दो बजे बाद सोए और तीन बजे उठे। तब बा की मृत्यु पर आये हुए गवर्नर के पत्र का उत्तर लिखा। मिट्टी की पट्टी पेट पर रखकर सो गए। उनका रक्तचाप इस समय आदर्श है। सुबह १७०।९८ तथा शाम को १५६।९६ रहा। मगर थकान बेहद है।

जिस मेज पर बा सिर रखकर सोती-बैठती थी, वह बापू के आदेश से उनके पास लाई गई। इसपर अब उनका नाश्ता रखा जाएगा। कहते हैं, "मेरे लिए यह मेज बडी ही कीमती हो गई है। इसपर सिर रखे बा का चित्र मेरे सामने हमेशा रहता है। एक ओर मुझे इस बात से सतोष है कि बा मेरे हाथो-ही-हाथो गई और दूसरी ओर ६२ वर्ष से भी अधिक समय की साथिन को खोकर मैं दिग्मूढ-सा हो गया हू।" शाम को घूमते हुए भी बा की बातें होती रही।

अन्त समय की बात करते हुए बापू बोले, "बा का इस तरह अन्तिम समय मुझे बुलाना और मेरी गोद मे जाना यह एक अद्भुत बात है।"

मैंने उत्तर दिया, "बापू, इससे साफ जाहिर होता है कि ऊपर से बा चाहे जितनी भी आपसे नाराज रही हो, अन्दर से आपमें उनकी बडी श्रद्धा और अटूट प्रेम था। मुझे कोई ऐसा उदाहरण नही मिला कि जहा पत्नी इस तरह से पति को गोद मे सोई हो।"

बापू बोले, "वह तो है ही, मैंने स्वय ऐसा उदाहरण कही नही पाया। हम लोगो में तो ऐसा पति-पत्नी-सम्बन्ध सामान्यत रहता ही नहीं है।"

मेरे साथ पढने की बात करते हुए बापू बोले, "पढना तो शुरू करना ही है।" मैंने कहा, "बापूजी, थकान दूर हो जाने दीजिए। इसमें एक या दो हफ्ते भले चले जाए।" बापू कहने लगे, "हा, थकान तो मुझे बहुत है। बस अभी मुलतवी रखेंगे।"

शाम को ७। बजे घूमने निकले। फूल चढाकर ८ बजे लौटे। ८। बजे प्रार्थना की। बापू बाद में अखबार पढते रहे।

२७ फरवरी '४४

प्रार्थना के बाद थोडा सोए। ७ बजे उठे और अनार के दानो का रस पिया। ७।। बज गये। मुझे घूमने जाने को देर हो गई। प्रभाबहन और मनु के यहा रह सकने के प्रश्न पर आज बापू ने भण्डारी साहब को गुसलखाने मे ही बुलवाकर पूछा। भण्डारी ने उत्तर दिया कि वे बम्बई से कुछ जवाब भेजेंगे। बापू ने कहा कि क्या सरकार को इस बारे मे पत्र लिखा जाए? भण्डारी बोले कि हा, इससे उन्हे काम बनाने में बडी मदद मिलेगी।

एक बजे बापू ने खाना खाया। मनु ने पैरो की मालिश की। मगलवार को बा की मृत्यु को आठ दिन हो जावेंगे। मनु के कहने से हम लोगो ने उस रोज अखड चर्खा चलाने का क्रम बनाया। बापू सुबह ७-३० से ८-३० तक कातेंगे। अखड चर्खा शुरू करेंगे और बुधवार को शाम के ६-३५ से ७-३५ तक कातेंगे।

बापू की थकान अभी चल रही है। बा का स्मरण उन्हें उसी तरह व्यथित करता रहता है। आज फिर कह रहे थे, "बा की मृत्यु भव्य थी। मुझे उसका बहुत हर्ष है। जो दुख है वह तो अपने स्वार्थ के लिए। ६२ वर्ष के साथ के बाद उसका साथ छूटना चुभता है। कितनी ही कोशिश करू, अभी मैं उन स्मरणो को

मन से निकाल नहीं सकता।" बापू की पानी की बोतल को गीले कपडे में लपेटने की जरूरत थी, बापू ने अपना पुराना मिट्टी बाधने वाला पट्टा फाडकर इस्तेमाल करने को कहा। बोले, "यह बहुत बार बा के लिए इस्तेमाल होता था, इसलिए इसकी मेरे पास बहुत कीमत है।"

घूमने के बाद प्रार्थना हुई। पीछे प्रभावतीबहन और मनु के यहा ठहर सकने के विषय में बापू ने सरकार को पत्र लिखा। भाई ने उसे टाइप किया।

२८ फरवरी '४४

बापू रात को दो बजे तक जागते रहे। बाद में पता नहीं, वे कब सोए। उनका आज मौन है। सुबह नाश्ते के बाद भण्डारी को लिखे गए कल वाले पत्र को उन्होने फाड डाला और दूसरे पत्र में लिखा कि दोनो लडकियो को यहा रखने के विषय में सरकार से दरख्वास्त करना अनुचित है। इसी विचार के कारण वे सो नही सके। अपनी दरख्वास्त वापिस चाहते थे। मनु को बाहर जाना अच्छा नही लगता है, इसलिए उसे स बात से आघात पहुचा।

मैंने और डा० गिल्डर ने मालिश से पहले बापू के फेफडो तथा अन्य अगो की परीक्षा की। सब कुछ ठीक है। खून का दबाव १७४/१०० है।

आज मैंने कृष्णा हठीसिग की लिखी किताब 'विद नो रिग्रेट्स'* पढ डाली। बहुत अच्छी है।

शाम को जाकर देखा कि बा की समाधि भी महादेवभाई की बगल में तैयार हो गई है। कनु ने अखड चर्खे का कार्यक्रम तैयार किया।

: ६९ :

सत्याग्रह और सत्ता

२९ फरवरी '४४

बा को गए आज एक सप्ताह हो गया। बा के बिना सन्नाटा छाया हुआ है। करीब डेढ साल पहले ८ अगस्त १९४२ की शाम को किन आशाओ को लेकर मैं बम्बई पहुची थी। भय था तो यही कि पहुचने से पहले सब लोग कही पकड न लिये जाए। अखिल भारतीय काग्रेस के अधिवेशन के पडाल में बापू, भाई और महादेवभाई से मिलकर कितना हर्ष हुआ था! ९ अगस्त को बापू वगैरह पकडे गए और बाद में बा, मैं और भाई की बारी आई, लेकिन हृदय में उल्लास था। उमग थी। हसते-हसते सूली पर चढ जाने की

*इसका अनुवाद 'कोई शिकायत नहीं' के नाम से प्रकाशित हुआ है।

तैयारी थी। आज इस डेढ साल की ठोकरें खा-खाकर वह उमग, वह आशा और उत्साह सब खाक हो चुके हैं।

पुण्यवान् लोग एक-एक करके जा रहे हैं। जो लोग यहा कुछ कर सकते हैं, उनकी आवश्यकता बाहर भी है, किन्तु जो यहा पर फालतू हैं, उन्हे ईश्वर भी ठुकराता है।

सुबह मैंने अखबार में देवदासभाई का बा-सम्बन्धी लेख पढा तो अपने को रोक न सकी और आसू बहने लगे।

आज अखण्ड चर्खा-कताई शुरू हुई। पहले बापू ने एक घटा काता, फिर मीरावहन ने आधा घटा, मनु ने दो घटे, प्रभावतीवहन ने दो घण्टे, भाई ने तीन घटे और मैंने दो घटे काता। पीछे ४ बजे से ८ बजे रात तक कनु ने काता। बापू ने शाम को ६-३५ से लेकर ७-३५ तक काता; क्योकि वे जल्दी घूम लिये थे।

जयप्रकाश और प्रभावतीवहन की चर्चा करते हुए बापू ने कहा, "ऐसा उदाहरण जगत् में मिलना कठिन है। इन दोनो ने विषय-सुख कभी भोगा ही नही। यह बात नही कि मैंने प्रभा को मना किया था। मैंने तो उसे समझा दिया था कि अगर कभी जरा-सी भी इच्छा हो जाय तो उसे दवाना नहीं। जयप्रकाश भी समझ गया। इसीलिए उसने कभी प्रभा पर दवाव करने का विचार तक नही किया। इन दोनो का प्रेम तो पराकाष्ठा पर है और इनके जीवन का एक-एक क्षण देश के ही अर्पण है। यह छोटी चीज नही है।"

मैंने पूछा, "स्वतन्त्रता देवी के आगे तो महान् बलिदान चढते जा रहे हैं। मगर देवी प्रसन्न कब होगी?"

बापू बोले, "प्रसन्न तो हो रही है।"

मैंने पूछा, "प्रसन्न होकर अपना साक्षात्कार कब करावेंगी? मैं उस दिन की बात कर रही हू, जब हिन्दुस्तान पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त करेगा।"

बापू ने उत्तर दिया, "सच्चे अर्थो में पूर्ण स्वतत्रता की बात तो कौन कह सकता है।"

मैंने कहा, "'पूर्ण स्वतत्रता' शब्द का अत्यन्त व्यापक अर्थ मैंने नही लिया। इसका आशय तो इतना ही है कि विदेशी सत्ता हटे और लोग अनुभव करें कि अब उनका अपना राज्य है।"

बापू कहने लगे "वह तो है। वह आवेगी ही।... मगर मैंने तो कहा है न कि सत्याग्रह हमे अपने ध्येय की ओर ले जा सकता है, परन्तु सत्याग्रहियो के हाथ मे सत्ता न आवे तो भी वे सत्ताधारियो पर अकुश रख सकेंगे।"

मैं बोली, "आपने गए वर्ष भी यही बात कही थी, लेकिन स्पष्ट शब्दो में लिखा कही नही है। काग्रेस-मिनिस्ट्री को पुलिस का उपयोग जब करना पडा था तव आपने कहा था कि अगर राजकाज इतनी भी हिसा के बगैर नही चल सकता तो सत्याग्रही सत्ताधारी नही बनेंगे, बल्कि उन पर अकुश रखकर सतुष्ट रहेगे।"

महादेवभाई और बा की समाधिया

"मुझे तो महादेव के पास जाकर ग्राखिरी नीद सोना है ।" पृष्ठ ४०३
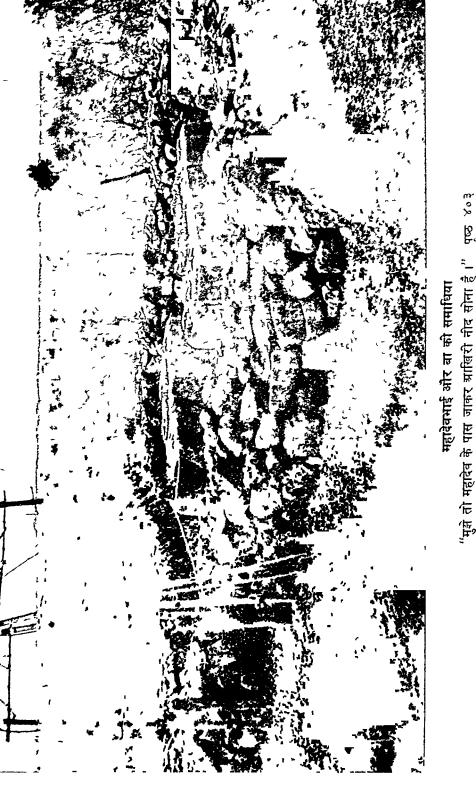
वापू कहने लगे, "हा, मैंने लिखा है, मगर कलम दवा-दवाकर, ताकि हमारे लोगो को दु ख न हो। कहीं वे यह सोचकर निराश न हो कि अव तो हमें सत्ता मिल ही नहीं सकती। मेरे मन में यहा आकर एक विचार और पक्का होता जा रहा है कि हो सकता है कि सत्ता सत्याग्रह की मर्यादा से वाहर की चीज हो।"

वापू की वात पूरी हुई। हम फूल चढाने गए और प्रार्थना की। मन भारी था। किसी भी चीज के लिए उत्साह नहीं है। पता नही कहा से आए, कहा आए और कहा जा रहे है।

१ मार्च '४४

मैंने १० से ११॥ वजे तक काता, १० मिनट में खाना खाया, कपडे धोए और चर्खे पर वैठी। ३–२० पर मैंने कातना वद कर दिया। चार वजे तक मीरावहन कातने आने वाली थीं, पर वह सो गईं और देर से उठीं।

वापू के पत्र का उत्तर वेवल ने भेजा। वा की मृत्यु पर उन्होंने सहानुभूति प्रकट की है। वा की वातो का उत्तर उनके भाषण में आ गया था, यह कहकर भाषण की नकल भी पत्र के साथ ही भेजी है। मैं जव खेलने गई तभी वापू ने घूम लिया और ७–३५ पर उनका कातने का समय पूरा हुआ। फिर प्रार्थना की। प्रार्थना में मनु और प्रभावहन रोने लगीं। प्रभावहन तो अचानक उठकर चली गईं। प्रार्थना के वाद मीरावहन ने आकर वताया कि प्रभावहन को हिस्टीरिया का दौरा हो गया था, प्याज वगैरह सुघाने से ठीक हो गया। उनको ऐसा दौरा कभी-कभी हो जाता है।

रात को दो वजे के लगभग प्रभावहन के रोने की आवाज आई। मैं देखने गई तो वापू ने कहा कि नींद में रो रही है। तुम सो जाओ।

२ मार्च '४४

सुवह पाच वजे सव लोग उठे और गीता पारायण किया गया।

वा की मृत्यु के वाद आज दसवें दिन मैंने और कनु ने २४ घटे का उपवास किया। मनु ने आठवें दिन फलाहार किया था, इसलिए आज उपवास नही किया।

आज से वापू ने मनु को अपने सामने विठाकर खाना खिलाना शुरू किया है। वह वहुत जल्दी खाती है। मैंने और प्रभावहन ने वडी कोशिश की, लेकिन उसकी यह आदत न छुडा पाए। अव वापू ने ही यह काम सभाला है।

वापू शाम को कहने लगे, "वा का जाना एक कल्पना-सा लगता है। मैं उसके लिए तैयार था, मगर जव वह सचमुच ही चली गई तो मुझे कल्पना से अधिक एक नई वात लगी। मैं अव सोचता हू कि वा के विना मैं अपने जीवन को ठीक-ठीक वैठा ही नहीं सकता हू। इसी तरह इन लडकियो (मनु और प्रभा) के जाने की वात है। मुझे लगता है कि सरकार इन्हे ले जाएगी। मैं नही कह सकता कि इसका मुझ-

पर क्या असर होगा। तुम सभी एक-एक करके चले जाओ तो हो सकता है कि मैं अकेला ही रह जाऊं। हा, वह दयाजनक स्थिति होगी।"

शाम के वक्त प्रभावहन को एक नोटिस मिला है कि उनकी गिरफ्तारी क्यो हुई थी ?

: ७० :

फिर अपने-अपने कर्त्तव्य पर

४ मार्च '४४

कल के अखवारो में एक लेख बटलर द्वारा कामन्स-सभा में बा के सम्बन्ध में दिये गए भाषण के आधार पर निकला है। उस लेख को पढकर बापू विचार में पड गए है। सुबह चार ही बजे उठ बैठे और प्रार्थना आदि के बाद भाई को जल्दी से पत्र लिखवाया। पत्र मुझे दिया गया और मैंने उसमें सुधार किये, इसी प्रकार सब के सुधार लिये गए।

एक पत्र बापू ने और लिखवाया। बापू के खर्च के विषय में गृह मत्री ने असेम्वली में जो भाषण दिया था, उसीके सम्बन्ध मे यह पत्र था। बाद मे बापू ने इस पत्र मे और सुधार किये।

२-१० पर दोनो पत्र लिखवाकर भेजे गए।

शाम को बापू ने उस नोटिस का उत्तर लिखवाया, जो प्रभावहन को दिया गया था। मैंने उसका अग्रेजी अनुवाद करके साफ नकल तैयार की।

शाम को बापू घूमते समय कनु से बात कर रहे थे कि बा के स्मारक के लिए पैसा इकट्ठा करना है। बापू की अगली जयती पर ७५ लाख रुपया इकट्ठा करने की बात पहले से ही चल रही थी। कनु बापू से इस विषय पर पूछ रहा था। बापू ने कहा, "दोनो फण्ड साथ मिला दो। बा मुझ में समा गई थी। कौन है ऐसी स्त्री, जो इस तरह अपने पति की गोद मे प्राण दे ? अतिम समय में उसने मुझे बुलाया। तब मैं नही जानता था कि वह जा रही है। और मैं घूमने नही चला गया था,-वह भी ईश्वर का ही काम था। पेनिसिलीन के कारण ही मैं रुका। मृत्यु-शय्या पर पडी हुई को इन्जेक्शन क्या देना था ? मगर जब बा के पास बैठा तो समझ गया कि बा अब जाती है। बा के नाम से विश्वविद्यालय खोलना मैं एक निकम्मी बात समझता हू। उसे विश्वविद्यालय मे रस कहा था ? चर्खा इत्यादि मे तो वह रस लेती थी। यह फण्ड हम दोनो के निमित्त इकट्ठा हो तो लोगो पर बोझ नही पडेगा। बा का हिस्सा मेरी जयन्ती मे हमेशा रहा है। इस फण्ड का उपयोग चर्खा और ग्रामोद्योग के लिए होगा। नारायणदास को उसके कारभार में पूरी मेहनत और जिम्मेदारी लेनी होगी।"

पीछे दूसरी घरेलू वातें उससे करते रहे। इतने में फूल चढाने का समय हुआ। वहा से आकर प्रार्थना की।

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। प्रार्थना-स्थान पर पहले से अधिक गाम्भीर्य और शाति होती है। वा, महादेवभाई और शकुन्तला, यह त्रिमूर्त्ति अव प्रार्थना के समय मेरी आखो के सामने रहती है। तीनो के चेहरे प्रफुल्लित देखने में आते है।

५ मार्च '४४

वापू सुवह तीन वजे उठ गए। फिर नहीं सो सके। चार वजे प्रार्थना के लिए सव उठे। कनु और भाई रात को देर से सोए थे। वापू को उन्हे उठाना ठीक नहीं लगता था, मगर कनु का आज यहा आखिरी दिन है, सो उसे उठाया। प्रार्थना के वाद वापू सो गए। कनु कुछ लिख रहा था। वापू से उसे कुछ और वातें पूछनी थी।

वापू सुवह वेवल को पत्र लिखने के वारे में विचार कर रहे थे। सुवह लिखवाने का विचार किया, मगर फिर प्रभावहन के उत्तर का अनुवाद देखने लगे। वोले, "अगर प्रभा को जाना पडे तो उससे पहले यह जवाव यहा से भेज सके तो अच्छा है। सो यह काम पहले करना चाहिए।"

घूमने के वाद मालिश के समय वेवल को जाने वाला पत्र मुझे लिखवाने लगे। कटि-स्नान लेने के समय भी लिखवाया। स्नान-घर से निकलकर फिर थोडा लिखवाया। दोपहर में सोने के वाद फिर लिखवाने लगे। शाम को साढे छ वजे पत्र पूरा हुआ। कनु साथ-ही-साथ टाइप करता जाता था। यह कच्ची नकल है। नौ वडे-वडे फुलस्केप कागज तैयार हुए। वापू की धारणा से पत्र ज्यादा लम्वा हो गया है।

शाम को घूमने के समय वापू ने कनु से थोडी वातें की। प्रार्थना के वाद तो उसे जल्दी जाना ही था। सामान उसने तैयार रखा था। वापू मौन लेने लगे तो कनु कहने लगा, "मुझे भेजकर ही अव मौन लीजिए।" उसे जाना अच्छा नही लगता था। वह आग्रह करता तो शायद वापू उसे रखते भी, मगर वाहर वह काफी काम कर सकता है। इस दृष्टि से उसे आग्रह करना अच्छा नही लगा।

साढे नौ वजे कनु को हम सव नीचे छोडने गये। मनु दही और शक्कर उसके लिए ले गई थी। सवको प्रणाम करके उसने वह खाया, फिर दो वार वापू को प्रणाम करके चलने लगा। मैंने कहा, "कनु भाई, अव तो वाहर ही आकर मिलेंगे।" डा० गिल्डर वोले, "हा भाई, अव इस तरह न आना।" भाई कहने लगे, "नही, हमे लेने के लिए आना।" कटेली हसने लगे, "आप लोग जाओगे तव खवर किसको होने वाली है। दूसरे दिन अखवार में ही लोग देखेंगे कि वापू छूट गए।" मगर कनु किसीको उत्तर देने की स्थिति मे न था। वह रो रहा था। दरवाजे के पास पहुचा तब तो सिसकिया लेने लगा। मैंने उसकी पीठ ठोकी, "कनुभाई, तुम ऐसा करते हो?" मगर मन में मुझे लग रहा था कि उसकी स्थिति में मेरी भी वही हालत होती।

कनु को विदा करके वापस आए। घर में सन्नाटा छा रहा था। भाई तुरत सोने को चले गए। हम लोग— प्रभाबहन, मनु और मैं— दस बजे बापू के पैरो की मालिश करके फारिग हुए और सोने की तैयारी की।

ग्यारह बजे के बाद जाकर देखा तो भाई अभी तक खाट पर पडे जाग रहे थे। करीब एक बजे तक उनका सिर दवाती रही, फिर आकर अपनी खाट पर लेटी। दो बजे नीद आई होगी। तीन बजे बिल्ली ने जगा दिया। उसने यहा पर छ सुन्दर बच्चे दिये थे। एक सिपाही ने वे बच्चे किसी नर्स को दे दिये। बेचारी मा अब रातभर अपने बच्चो को ढूढती है और रोती फिरती है। उठकर बिल्ली को निकाला, फिर सोने को लेटी। नीद बहुत कम आई। विचारो में पडी रही।

बापू का आज मौन है। मौन का दिन तो इतनी जल्दी आ जाता है कि क्या कहना।

सुबह की प्रार्थना मे कनुभाई की कमी महसूस होती थी। इस कमी को दूर करने के लिए सवा सात बजे की प्रार्थना में खूब जोर-जोर से श्लोक बोलना शुरू किया।

६ मार्च '४४

प्रार्थना के बाद रोज का कार्यक्रम चला। नाश्ता वगैरह करके सवा आठ बजे बापू घूमने निकले। सडक पर किसीकी मधुर बसी बजाने की ध्वनि सुनाई दे रही थी।

फूल चढाकर वापस लौटे। प्रभावतीबहन की जगह मनु ने और कनु की जगह डा० गिल्डर ने बापू की मालिश की। डा० गिल्डर इतने दिन बापू की सेवा न कर सकने के कारण बेचैन-से हो गये थे। वे बहुत प्रेम से मालिश करते है।

डा० गिल्डर और कटेली सवेरे घमते समय समाधि के लिए प्रेम से फूल चुनते है, सबके साथ मिलकर समाधि सजाते है और प्रार्थना मे हिस्सा लेते है।

स्नानादि के बाद बापू ने देवल वाला पत्र और हम लोगो के बारीबारी से सुझाव मागे। सबके सुझावो को देखकर कल सुबह बापू पत्र को फिर पढेगे।

मनु को शाम के समय सर्दी लगकर बुखार आ गया। दो-तीन घटे रहा। खाने-पीने मे वह बडी लापरवाही करती है, इसीलिए कभी जुकाम से पीडित रहती है तो कभी बुखार से।

आज भडारी की राह देखी, मगर वे नही आये। प्रभावहन और मनु को इसी बात की चिंता रहती है कि न जाने कब उन्हे बाहर निकलना पडे। मुझे नही लगता कि अब किसीको भी जाना पडेगा, मगर निश्चित रूप से तो क्या कहा जा सकता है।

जैसे-जैसे दिन जा रहे है, बा के बगैर घर ज्यादा-से-ज्यादा सूना लगता जा रहा है। उनकी बीमारी में चौबीस घटे की दौड-धूप रहती थी। अब तो कुछ काम ही नही। बहुत बुरा लगता है।

बापू ने हम सबसे बा की मृत्यु के बाद तुरत अपने-अपने सस्मरण लिखने को

कहा था। वे स्वय भी लिखने का विचार करते हैं। मैंने सम्मरण लिखन शुरू कर दिये हैं।

आज से मैंने प्रभावतीवहन के साथ आई हुई 'स्नेहयज्ञ' नामक किताव पढनी शुरू की है।

७ मार्च '४४

वा को गए आज दो हफ्ते पूरे हो गए, मगर कल की जैसी ही वात लगती है। इसी तरह एक के पीछे एक प्रियजन विदा होते जाएगे।

सुवह सवा पाच वजे प्रार्थना के लिए उठे। वाद में वापू वेवल वाला पत्र सुधारते रहे। स्नानघर से निकलकर खाते समय, पीछे दोपहर सोने के वाद पाच वजे तक वही क्रम चला। इतने परिवर्तन हुए कि भाई को उसकी कच्ची टाइप नकल फिर तैयार करनी पडी। अभी वह फिर पढा जाएगा।

सुवह और शाम वापू पन्द्रह मिनट जल्दी घूमने निकले। शाम की प्रार्थना १५ मिनट देर से हुई—सवा आठ की जगह साढे आठ वजे। भण्डारी आज भी नहीं आए।

८ मार्च '४४

सवेरे सवा पाच वजे प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के वाद फिर सव सो गए। ६॥ वजे उठे। मनु सोती रही। उसे रात में ९९ डिगरी वुखार रहा।

वापू ने वेवल वाले अपने जवावी पत्र में फिर इतने सुधार किये हैं कि मीरावहन को वैठकर लिखवाना पडा। भाई ने भी दिन का अधिकाश समय उसे टाइप करने में लगाया, खा-पीकर सात वजे फिर वैठे और रात को एक वजे तक पत्र का कार्य करते रहे। मीरावहन एक वजे उठकर चली गई तव भाई ने अकेले ही काम करने का निश्चय किया, पर पहली ही लाइन में भूल हुई। टाइप किया हुआ पैराग्राफ फिर से टाइप करने लगे। मुझसे कहने लगे कि जो कुछ हुआ, वह मैं किसीसे न वताऊँ। मगर वापू स्वय थोडी देर वाद वहा आ पहुचे और उन्होने जव पूछा कि कितना टाइप हुआ तो भाई को सव वताना पडा।

सुवह मैंने वापू से पूछा कि वेवल को जाने वाले जवावी पत्र का क्या अच्छा परिणाम निकलने वाला है? वे वोले, "मैं कोई आशा वाधकर नहीं वैठा। उसके भाषण में एक-दो वाक्य ऐसे मिले कि उनके आधार पर मुझे लिखने जैसा लगा, सो लिख डाला है। जो होना होगा सो होगा।"

मैंने प्रभावतीवहन की लाई हुई किताव 'स्नेहयज्ञ' लगभग समाप्त कर ली है।

९ मार्च '४४

कल ११-१५ पर 'स्नेहयज्ञ' को पूरा कर लिया। इतने में वापू भी उठे। विल्ली ने चिल्लाना शुरू किया। मैंने उसे भगाया। भाई कल वाला पत्र टाइप करने में

११ मार्च '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। बा की मृत्यु का दिन मगल का है। इसलिए अब समाधियो की लिपाई हफ्ते में दो बार हुआ करेगी। आजकल फूल बहुत होते है। डा० गिल्डर और कटेली फूल इकट्ठे कर लाते है, इसलिए सारे हफ्तेभर अच्छी सजावट होती है। प्रभावतीबहन बापू से रोज कहा करती है कि समाधियो के दरवाजे के स्थान पर एक ऊँचा दरवाजा बने और उसपर बेले चढाई जाए। पहले तो बापू उनसे यही कहते रहे कि उनका यहा रहना निश्चित हो जाय तो दरवाजे का काम करेगे, लेकिन इतने दिनो से किसी प्रकार का सरकारी आदेश नही आया, इसलिए बापू आज मान गए। बापू काफी देर तक 'गुड अर्थ' पढते रहते है और रोज के अखबार देखते है।

मीराबहन आजकल दोपहर को पौन घटे तक और शाम को एक घटे तक बापू से सवाल पूछती है।

बापू अभी तक स्थिर-चित्त नही हो पाए। कहते है कि सुचित्त हो जाने पर वे बा के सस्मरण लिखना शुरू करेगे।

मनु को आज बुखार नही था, मगर दो बार उल्टी हुई। मलेरिया की दवा का असर हुआ लगता है।

१२ मार्च '४४

सुवह पाच बजे प्रार्थना को उठे। पीछे हमेशा का कार्यक्रम चला। ९ बजे घूमकर लौटे। मनु व प्रभावतीबहन को ४ से ५ तक सिखाया। आज शाम को खेलते वक्त वर्षा के साथ-साथ ओले पडे और बाद में इतनी गरमी बढ गई कि प्रार्थना के समय बापू ने पखा उठाया।

भाई आजकल टाइप करने और फाइलो को व्यवस्थित करने मे लगे है। शाम को घूमने भी नही निकलते।

आज मै साढे दस बजे रात तक बापू का काम करती रही। फिर डायरी लिखी। नीद नही आ रही थी, लेकिन बापू का कहना है कि समय होने पर तो खाट पर जाना ही चाहिए।

: ७१ :

मीराबहन की आश्रम-योजना

१३ मार्च '४४

बापू का आज मौन है। एक-दो रोज पहले वे और अधिक मौन लेने का विचार करते थे। एक सोमवार का ही मौन हम लोगो के लिए इतना कष्टकर होता है तो बापू के अधिक मौन लेने से हमारी क्या गति होगी! असल बात तो यह है कि आजकल

वापू की मन स्थिति ठीक नहीं है, इसलिए उनसे कुछ भी कहने में डर लगता है । उन-में भीतर-ही-भीतर वडे-वडे परिवर्तन होते दीखते है, पर यह सव है क्यो, इसका पता नही लगता ।

मैंने 'गुड अर्थ' पढी, थोडा लिखा और प्रभावतीवहन को एक घटा सिखाया । मीरावहन ने मान लिया है कि वे अव जल्दी ही छूटने वाली है । उनकी हरेक वात से यही ध्वनि निकलती है, परतु छूटने की सम्भावना वहुत कम है । वापू भी कहते थे, "इसके भोलेपन और इसकी कल्पना-शक्ति का कोई पार नहीं है ।"

समाधियो के दरवाजे पर हरे वासो का एक तोरण वनाया है । उसपर तीन तरह की वेलें चढाई जाएगी, जो वकरियो से वच जाए तो ठीक है । वर्षा ऋतु के वाद समाधि-स्थान के चारो कोनो में सरव के चार वृक्ष लगाये जाएगे ।

मीरावहन ने अपने आश्रम की सारी योजना वनाकर वापू से उसे स्वीकृत करा लिया है । आश्रम के ध्येयो मे से एक वात भाई को खटकी है । वह यह कि 'लोगो को आत्म-रक्षा (Non-aggressive defence) के लिए तैयारी कराना ।' अहिसा के सिद्धात के साथ यह ध्येय कहा तक सगत है, भाई की समझ में यह नही आता । वे कहते हैं, "मै जानता हू कि मीरावहन के द्वारा इस ध्येय का दुरुपयोग नही होगा, मगर दूसरे लोग इसे लेकर इसका दुरुपयोग अवश्य करेंगे ।" वापू का मौन छूटने पर वे उनसे इस वारे में पूछेंगे ।

१४ मार्च '४४

समाधियो के नए दरवाज को मनु ने आज खूव सजाया । वडा सुन्दर दीखता है ।

घूमते समय वापू भाई को मीरावहन के आश्रम-सम्वन्धी प्रश्न को लेकर समझाने लगे, "किसीपर हमला किये विना अपनी रक्षा करने में हिंसा का समावेश नहीं है । यह देखना चाहिए कि मीरा ने कौनसी भाषा का प्रयोग किया है । एक जगह उसने लिखा है--गाधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम चलाना ही उसके आश्रम का ध्येय होगा । तो वह तो शुद्ध अहिसा हुई ।"

भाई ने कहा, "'हमला किये विना आत्म-रक्षा' (Non-aggressive Self-defence) एक खास अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है "

वापू वोले, "लोग क्या समझेंगे या क्या कहेगे, मुझे इसकी कुछ नही पडी है । 'अहिसा-अहिसा' कहने से ही अहिसा थोडे आती है ! जव हम अहिसा पर अमल करके दिखा देंगे तव लोग अपने-आप देख सकेंगे कि हम क्या करना चाहते है या क्या कर रहे हैं । सो इसका काम भी जव आगे वढेगा तव लोग अपने-आप उसे देख सकेंगे ।"

: ७२ :

अंग्रेजों की नीति

खाने के समय मीराबहन उस पत्र की चर्चा करने लगी, जो बापू वेवल वाले पत्र के जवाब मे भेज रहे हैं। बापू ने उसमे बा के विषय में काफी लिखा है। बापू कह रहे थे कि उनके मनोभावो को समझाने के लिए उस भूमिका की आवश्यकता थी। वे कहते हैं, "सामान्यत लोग यह मानते है कि हिन्दुस्तानियो को अपनी पत्नियो की परवाह नही होती है। उनकी इस मान्यता के कारण भी है। पत्नी की परवाह करना हिन्दुस्तान मे कुछ हद तक नई चीज है, मगर मेरे लिए बा की कितनी कीमत थी, यह बताने के बाद ही वेवल को मैं यह समझा सकता था कि उसके झूठे वक्तव्य से मुझे कितना दुख हुआ।"

इसके बाद वेवल के पत्र मे एक जगह आता था 'पीपल्स आव इडिया' (Peoples of India), इसके बाद 'हकूमत जाओ', और यह बापू को अखरा।

मैंने और बापू ने 'गुड अर्थ' पढ लिया है।

१५ मार्च '४४

खाने के समय मीराबहन से 'पीपल' और 'पीपल्स' वाले पैराग्राफ की बात करते हुए बापू कहने लगे, "अगर वह (वेवल) हिन्दुस्तानियो को एक 'प्रजा' मानता है तो हिन्दुस्तान के कुदरती ऐक्य की दलील को भी अपनी बात के समर्थन में इस्तेमाल कर सकता है। अगर वह यह मानता है कि हिन्दुस्तान मे एक से अधिक 'प्रजाए' है तो देश के कुदरती ऐक्य की बात करना फिजूल है। कुदरती तौर पर तो यूरोप भी एक मुल्क है, मगर हम जानते है कि वहा कई राष्ट्र है। इसलिए उसे एक मुल्क या वहा के लोगो को एक नही कह सकते।

"इसी तरह अगर हिन्दुस्तानी लोग एक प्रजा नही है तो पर्वतो की दीवार या समुद्रो का विस्तार हिन्द को एक राष्ट्र नही बना सकता।

"अग्रेज लोगो को गर्व है कि राजनैतिक दृष्टि से उन्होने हिन्दुस्तान को एक राज्य बनाया। एक तरह से यह सही भी है। भूतकाल मे भी ऐसे प्रयत्न हुए हैं। अशोक और दक्षिण भारत के कुछ राजाओ ने इस प्रयत्न में काफी सफलता पाई थी, मगर पूरी सफलता अग्रेजो ने ही पाई है, चाहे इसमे भी उनका निजी स्वार्थ ही क्यो न रहा हो। अब अग्रेज अपने किये पर पानी फेरना चाहते है। यह कैसी शर्म की बात है कि अगर वे हिन्दुस्तान का शोषण नही कर सकते तो उसके टुकडे-टुकडे कर डालेंगे।"

'हकूमत जाओ' के आदोलन की बात करते हुए बापू बोले, "उन्हे समझना

चाहिए कि उन्होंने किस तरह से हिन्दुस्तान को चूसा है। हिन्दुस्तान का सारा खून चूसा जा रहा है। एक-एक विदेशी सिपाही हिन्द को भारी पडता है। तुम तो यहा सरकारी अमलदार की बेटी की हैसियत से भी रही हो और मेरे साथ एक हिन्दुस्तानी की तरह भी। तुम जानती हो कि दोनो के रहन-सहन में कितना फर्क है। तुम्हारा खर्च तब कितना होता था और अब कितना होता है? हिन्दुस्तान कहा से उनके लिए खाना लावे? मुझसे यह मत कहो कि वह सब खर्च हिन्दुस्तान में ही होता है। खर्च तो हिन्दुस्तान का खून ही होता है न! आज हिन्द में जो कागजी रुपया चल रहा है, उसकी कीमत ही क्या है? फौजी लोग नोटो की गड्डी उठा लाते हैं और सब्जी, दूध, घी, फल जो भी चाहे, उठा ले जाते हैं। गरीब हिन्दुस्तानियो के लिए कुछ नही बचता, उनके बच्चों के लिए दूध नहीं मिलता और वे सब कठिनाइया सहन करते हैं विदेशी सरकार की खातिर। सिपाहियो की कुर्बानियो की बातें करते हैं। कहते हैं कि परदेशी लोग हमारी रक्षा के लिए यहा आए है, मगर क्या सचमुच वे हमारी सेवा करने के लिए हैं? मैं कहता हू कि वे यहा इसलिए हैं कि उन्हे वेतन मिलता है। वेवल से लेकर नीचे तक के सरकारी अमलदारो को लो। उनमें से कोई भी 'वालटियर' कहलाने का अधिकारी नहीं है। कहा यह जाता है कि हिन्दुस्तानी सिपाही 'वालटियर' है। सिपाहियो को 'वालटियर' कहते हैं। वह बिचारा गरीबी का मारा भरती होता है और भूख का मारा होने से सिपाही बनता है। जितने विदेशी लोग यहा पडे है, वे यहा की गरीबी को और जनता की भुखमरी को बढाते हैं। ये सिपाही यहा चाहे थोडे-से ही हो, मगर उनका खर्च इतना हो जाता है, जितना खर्च हिन्दुस्तान के करोडो भूखो पर होता है।

"इससे जनता में ब्रिटिश सरकार के प्रति कटुता का भाव आने लगा है। इसे रोकने के लिए कुछ करना चाहिए। शायद वे कहे, 'हम हिन्दुस्तान को आजादी देना चाहते है, मगर जरा धीरज रखो।' तुम्हारा जवाब यह होना चाहिए, 'नहीं, हिन्द को आजाद करने का मौका आज है। आज ही यह कटुता मित्रभाव में बदली जा सकती है।' मैं जानता हू, वे कहेगे कि जो चल रहा है, उससे उन्हे सतोष है। और ऐसा क्यो न कहे? उन्हे जो चाहिए सो हिन्द से मिल सकता है। बाल्डविन से जब मैंने क्लाइव और वारेन हेस्टिंग्स के कारनामो की बात की तो उसने मुझे जवाब दिया, 'हमने हिन्दुस्तान में जो किया है, उसका हमें गर्व है।' वे अब भी ऐसा ही कह सकते है। तब मेरा जवाब वही होगा, जो मैंने बाल्डविन को दिया था कि 'ऐसी हालत में मुझे आपसे कुछ कहना नहीं है।'

"'हकूमत जाओ' आन्दोलन ने लोगो के हृदय में अंग्रेजो के प्रति अपना गुस्सा प्रकट किया। उस गुस्से को निकालने का यह एक सीधा और निर्दोष रास्ता था और ब्रिटेन को समझाने का प्रयत्न था कि वह कुछ करे, जिससे इस गुस्से की जगह मित्रता और कृतज्ञता की भावना लोगो के हृदय में उठे। मगर मेरी शिकायत यह है कि उन्होंने

काग्रेस के दृष्टिविंदु को समझने की कोशिश तक न की । 'हकूमत जाओ' आदोलन के नाम-मात्र से वे इतना चमकते हैं, यही वताता है कि उनकी नीयत साफ नही। हिन्द को लूटना वन्द करने का उनका इरादा नहीं, नही तो मौलाना साहव और जवाहरलाल की अपील की तरफ ध्यान देते और मेरे भाषण पर गौर करते । आठवी अगस्त के 'हकूमत जाओ' प्रस्ताव मे भी काग्रेस ने ब्रिटेन के प्रति उचित मित्रता वताने की कोशिश की । काग्रेस चाहती है कि मित्रराष्ट्र युद्ध में जीतें और उनकी जीत पक्की करने के लिए ही काग्रेस ने कहा, 'हिन्दुस्तान के साथ न्याय करो ।' अगर वे इस चीज को समझते तो बाकी सव ठीक हो सकता था। अव भी समझें तो हो सकता है ।"

१६ मार्च '४४

डा० गिल्डर की टाग में 'साइटिका' का दर्द है । मनु और भाई ने मिलकर वापू की मालिश की । मुझसे ही मालिश करवाने वाले थे, मगर कुछ कारणो से ऐसा हो न सका ।

आज मनु को कुनीन का इजेक्शन दिया, इससे उसे रात के समय सिर में चक्कर आते रहे ।

गृह-मन्त्री ने असेम्वली में वा को दी गई सुविधाओ के सम्वन्ध में जो वक्तव्य दिया था, वह अखवारो में प्रकाशित हुआ है। हम सवको वह चुभा है। इतनी तकलीफें देकर और झगडे करने के वाद अव सरकार यह वताना चाहती है कि उसने वा की सभी आवश्यकताए पूरी कीं ।

वापू शाम को भाई से कहने लगे, "हो सके तो तुम इसका उत्तर लिखो ।" भाई ने मुझसे भी अभ्यास के तौर पर उत्तर लिखने को कहा ।

१७ मार्च '४४

भाई पत्र लिखने में व्यस्त हैं, इसलिए वापू ने मनु से मालिश कराई ।

१८ मार्च '४४

भाई ने दिन में वह पत्र लिखकर वापू को दिया तो वापू ने देखा कि उस पत्र में लिखी हुई लगभग सभी वातें वे अपने पत्र में सक्षेप में पहले ही लिख चुके हैं। इसलिए पत्र को रोक दिया । वे खुद ही फिर लिखेंगे ।

खाने के समय वापू मीरावहन से वोले, "मानो कि वाइसराय आज कहे कि 'हमें हिन्दुस्तान से इतना रुपया मिल रहा है, इतने सिपाही मिल रहे हैं तो काग्रेस क्या इससे ज्यादा देगी ? काग्रेस को खुश करने से हमें और क्या मिलेगा ?' तव मैं कहूगा कि 'काग्रेस और कुछ भी करने वाली नही । हा, उसके द्वारा आपको लोगों का दिल और आत्मा मिलेगी और आम लोगो की सद्भावना ।' सिपाही को अपनी तनख्वाह की पडी है और व्यापारी को अपनी तिजारत की । मगर किसान, जो हिन्दुस्तान की ९० प्रतिशत जनता है, हिन्दुस्तान की जमीन के साथ वधे हैं । अगर किसान

आजादी के उल्लास का अनुभव करेगा तो अपने देश की आजादी के लिए आखिरी दम तक लडेगा ।

"अगर हिन्दुस्तान खुश होगा, सतुष्ट होगा तो आप एक-एक हिन्दुस्तानी सिपाही को पूर्वी लडाई के मैदान में भेज सकते हैं। हिन्दुस्तानी सिपाही ब्रह्मदेश की लडाई में लडने के लिए अधिक उपयुक्त हो सकते हैं। अग्रेज या अमरीकन सिपाहियो की निस्बत हिन्दुस्तानी सिपाही सस्ते भी पडेंगे। आज आप हिन्दुस्तानियो को पूर्व में इस्तेमाल नहीं कर सकते, क्योकि आपको डर है कि हिन्दुस्तानी सिपाही हिन्दुस्तान की आजादी की लडाई में हिस्सा लेने लगेंगे।

"हिन्दुस्तानी सिपाहियो को आपको आधुनिक लडाई की तालीम देनी होगी, मगर उसके लिए हम आपके कुछ अफसर माग लेंगे, चाहे वे अग्रेज हो या अमरीकी या रूसी ।"

मीरावहन बोली, "आपने फिशर से कहा था कि मित्रराष्ट्रो की फौजें अपने खर्च पर यहा रह सकती हैं। तो फिर इन हिन्दुस्तानी फौजो के खर्च का क्या होगा ?"

वापू ने उत्तर दिया, "खर्च के वारे में जो आज व्यवस्था है, वही रहेगी। एक तो वाकायदा हिन्दुस्तानी फौज होगी। उसके अलावा मित्रराष्ट्र अपने लिए सहायक सेना की भरती करेंगे और उसका खर्च उन्हें देना होगा, सिवा इस हालत के कि हिन्दुस्तान की रक्षा के लिए इस्तेमाल हो या लडाई लडने में हिन्दुस्तान का अपना हित सधता हो, जैसे कि ब्रह्मदेश में और उसके लिए वह अपने सिपाही वहा भेजें।

"मैं यह कहूँगा कि अगर अग्रेजो को इनमें से कोई भी वात नही जचती तो उन्हे जापान पर जीत वहुत महँगी पडेगी। लडाई के अत में गुस्से से भरा असतुष्ट हिन्दुस्तान उनके सामने खडा होगा।"

वापू के कहने से भाई ने मीरावहन से 'Non-aggressive Self-defence' के अर्थ के वारे में स्पष्टीकरण के लिए वात की थी। मीरावहन का कहना था कि उनका इससे तात्पर्य 'अहिंसात्मक ढग से आत्मरक्षा' (Non-violent Self-defence) ही है। भाई ने जब कहा कि आजकल 'अहिंसात्मक ढग से आत्म-रक्षा करने' का अर्थ रूढ हो गया है तव मीरावहन ने स्वीकार किया कि एक प्रसिद्ध सस्था के विधान की भाषा ऐसी चौकस होनी चाहिए कि कोई भी उसका दूसरा अर्थ न कर सके। उसमें विपरीत अर्थो की गुजाइश नहीं रहनी चाहिए।

मनु को मैंने आज कुनीन का दूसरा इजेक्शन दिया।

अखवार में किसीने वापू को यहा से हटाने की माग की हैं। गृह-मत्री दिया है कि इसपर विचार किया जायगा। इस परवहुत चर्चा चली। वापू कि यह उनके पत्र का परिणाम है। उन्होने लिखा था कि सरकार उन क्यो करती है। वे मानते हैं कि उन्हे अव यहा से हटाया जावेगा, ले शक है।

१९ मार्च '४४

आज सुबह जब भण्डारी आए तो बापू को यहा से हटाने की बात पर मजाक चलता रहा ।

आज बहुत दिन बाद मैंने बापू की मालिश की और स्नान कराया ।

मनु बुखार के कारण तीन दिन तक आराम करेगी, इसलिए उसका काम प्रभावतीबहन करेगी ।

दोपहर बाद कनु, रामदासभाई, नीमुभाभी और मामाजी के पत्र आए । उन्हे पढते-पढते मनु और प्रभावतीबहन को सिखाने का समय हो गया ।

बा को दी गई सुविधाओ के सम्बन्ध में गृहमन्त्री ने जो वक्तव्य दिया था, बापू ने उसका जवाब एक सक्षिप्त किन्तु शानदार विरोध-पत्र द्वारा दिया है ।

कल डा० सिम्कावस मीराबहन को देखने आवेगे । मनु और प्रभाबहन के जाने के बारे में अभी तक कोई हुक्म नही आया, मगर बापू मानते है कि कुछ-न-कुछ हुक्म तो जरूर आवेगा । बापू को यहा से हटाने का विचार होता होगा, इसलिए हुक्म आने में देरी लगी है ।

: ७२ :

जेल में मन-बहलाव

२० मार्च '४४

बापू का बा के बारे मे विरोध-पत्र आज गया है । उनका आज मौन-दिन है, इसलिए वे दिनभर 'अरेबियन नाइट्स' पढते रहे ।

डा० सिम्काक्स सुबह दस बजे आए और मीराबहन को बेहोश करके उनकी बाह को खूब हिलाते-डुलाते रहे । शाम को उन्हे फिर देखने आए । मनु को बुखार नही था । उसे मैंने आज तीसरा इजेक्शन दिया । दोपहर को भाई की फाइल का सूची-पत्र तैयार कराने का काम किया । आधा कर पाई । हम रोज गाते है 'यततोह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चित । इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभ मन ॥' आदमी अपने विचार और वाणी से कभी-कभी अनिच्छा और विरोधी प्रयत्न के बावजूद भी अपना काम कर लेता है । दूसरी ओर खूब सतर्क रहने पर भी वह नासमझी कर बैठता है ।

२१ मार्च '४४

आज बा की मृत्यु का दिन है । सिपाही काफी फूल इकट्ठे कर लाए, मगर दरवाजे पर रखने के लिए फूल जरा देर से पहुचे । समाधियो के दरवाजे को फूलो से सजाया गया ।

पारसी लोगो का आज त्यौहार है। बा हमेशा त्यौहार के दिन डा० गिल्डर और कटेली के लिए कुछ-न-कुछ बनाने की व्यवस्था करवाया करती थीं, मगर आज उनके लिए बाहर से इतना खाने को आ गया कि और बनाना बेकार लगा। आज की जगह कल पूरन-पूरी बनाने का विचार किया। मालिश के समय डा० गिल्डर जरा देर से आए। बापू ने कारण पूछा। मैंने बताया कि बाहर से खाना आने में देर हो गई थी, इसलिए डाक्टर साहब को नाश्ता करना पड़ा। इसपर बापू को लगा कि उनके लिए हमें भी कुछ करना चाहिए था। दोपहर को बापू के फिर कहने से मैंने लकडी के एक छोटे-से रगीन डिब्बे में एक रुमाल पर डा० साहब का नाम लिखकर उसमें रखा और पार्सल बनाया। रामनायक ने बापू के लिए एक बडा चौरस रुमाल बनाया था, जिसके बीच में रगीन धागे का काम था—इसे भी लिया। प्रभावहन से बारीक खादी लेकर रामनायक ने दो रुमाल और बना दिये। बडे रुमाल के किनारे हम तीनो ने मिलकर बनाए और उन्हें धोकर और इस्त्री करके तीनो रुमालों पर नाम डालकर एक दूसरा पार्सल बनाया।

शाम को प्रार्थना होने के समय डा० साहब को कुकुम का तिलक लगाकर फूलो की माला पहनाई और पार्सलो की भेंट दी। बक्स पर स्वय बापू ने नाम लिख दिया था, इसलिए उसकी बडी कीमत हो गई। आज का दिन इसी काम में गया।

डा० सिम्कॉक्स भी आए थे। वे मीराबहन को देखकर चले गए। अगले महीने फिर आवेगे।

: ७९ :

बा की स्मृति

२२ मार्च '४४

बा को गए आज एक महीना पूरा हुआ। इसी तरह उस दिन तारीख २२ और तिथि तेरस थी। सुबह प्रभावतीबहन ने पूजा की। मनु ने बा की तस्वीर रखकर पूजा की। जहा महादेवभाई की राख रखी थी, वही बैठकर प्रभावतीबहन पूजा करती है। यह विचित्र बात है। उन्हे इस बात की खबर तक न थी, अकस्मात् ही उन्होने उस जगह को पूजा के लिए चुन लिया था। ८॥ बजे प्रार्थना में ईशावास्यमिद, नम्यो, असतो सद्गमय, अउजबिल्ला, मजदा और गीता के बारह अध्याय पढे। सभा अच्छी थी। कैदियो को खिलाने और प्रार्थना का कार्यक्रम रखा गया।

पकौडी, हलुवा और पूरनपूरी बनाई। दो बजे बापू पूछने आए, है कि कितनी देर है।" उसी समय मैंने कैदियो को बुलवाया था।

तीन बजे खिलाना शुरू किया और सबने भरपेट खाया। ६॥ बजे बापू

था और ७-३५ पर प्रार्थना शुरू करनी थी ।

बीमारी के दिनो में बा की खाट बापू के कमरे में रहती थी । वहा जिस मेज पर बा सिर रखा करती थीं, उसपर मैंने मेजपोश डालकर विष्णु और लक्ष्मी की मूर्त्तियां प्रतिष्ठित कीं । उनके चरणो के पास वह चित्र रखा, जिसमें बा बापू के पाव पखारती हुई दिखाई गई है । इसके नीचे मीराबहन का बनाया हुआ मिट्टी का विष्णु-मदिर रखा । लगता था, मानो बा मन्दिर से उठकर भगवान् के चरणो में पहुच गई हैं । इस दृश्य के पीछे तुलसी के पौधे रखे, ऊपर दीवार पर 'हे राम' की तख्ती लटकाई और सामने के भाग में रागोली से सजावट की । उसमें ॐ और 卐 बनाए, सुन्दर दृश्य था ।

बापू और भाई के नाम माताजी के पत्र आए है । मोहनलाल का पत्र भाई के नाम आया है—वे जल्दी मुलाकात के लिए आवेगे ।

७-३५ पर प्रार्थना शुरू हुई । हमेशा की प्रार्थना के साथ-साथ 'वैष्णवजन,' 'गोपाल राधाकृष्ण' 'गोविन्द गोविन्द गोपाल' (यह धुन बा को बहुत प्रिय थी), 'व्हेन आइ सर्वे दि वडरस क्रास', तथा रामायण हुई । मीराबहन ने करताल बजाई । पीछे गीताजी का पारायण किया । ९। बजे सारा कार्यक्रम अच्छी तरह समाप्त हुआ । प्रभा, मनु और मै नीचे जाकर समाधि पर बत्ती रख आए । रात को बैठकर कातने की बापू ने मनाही की ।

२३ मार्च '४४

बापू से मैंने रामायण और व्याकरण ११॥ से १२॥ तक पढना शुरू किया है । शाम को आधा घटा लिन्-यू-टाग की किताब पढी ।

शाम को घूमते समय बापू कुछ थके-से लगे । पूछने पर कहने लगे, "एक तो मेरे पत्रो के सरकारी जवाब नही आते है, इसलिए मन पर बोझ है । दूसरे, बा के जाने का धक्का अभी तक दूर नही हुआ । बुद्धि कहती है कि इससे अच्छी मृत्यु बा के लिए हो नहीं सकती थी । मुझे हमेशा यह डर रहता था कि बा अगर मेरे पीछे रह जाएगी तो अच्छा नही । मेरे हाथो में ही चली जाए तो मुझे अच्छा लगे, क्योकि बा मुझमें समा गई थी। मै शोक में पडा रहता हूँ, ऐसा भी नही है । बा का विचार करता रहता हू, वह भी नहीं । क्या है, उसका मै वर्णन नही कर सकता ।"

: ७५ :

असंतोष और प्रगति

कटेली साहब ने खबर दी है कि २७ तारीख (सोमवार) के दिन माताजी मुलाकात करने आवेगी । मनु बेबी के लिए फ्राक बनाना चाहती है । मेरे पीछे लगी है कि मै कपडा काट दू, मगर मै तो फ्राक काटना जानती नही हू । कैदियो में एक दर्जी है । कल

उससे पूछूंगी ।

२४ मार्च '४४

प्रभावतीबहन ने रोटी बनाई। हम सबको बडी अच्छी लगी। जबतक आटा है, डबल रोटी नही मगाएगे।

दोपहर को भाई रामायण पढने के समय कातते है, पीछे खाने को बैठते है। इस लिए इस समय का उपयोग करने के लिए भाई मे मैने भूगोल सीखना आरम्भ किया है ।

सवेरे घूमते समय चर्चा चली थी कि जापानी अगर सचमुच आगे बढे तो हमें क्या करना होगा। बापू बोले, "हो सकता है कि जब भी हम जेल से निकले, हमें जापान का सामना करना होगा। उनके वश में होने का तो सवाल उठता ही नही। लोगो से हम क्या करवा सकते है, किस प्रकार उनपर काबू रख सकते है, यह तो उन्हे देखकर ही तय करना होगा।" आश्चर्य है कि ऐसे आदमी को सरकार जापान की तरफ झुकने वाला कैसे कहती है ।

२५ मार्च '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। उनको डेढ वर्ष से अधिक हो गया है, इसलिए हफ्तो की गिनती तो भूल गई है, मगर वह दिन इतना ताजा है कि मानो सारी घटना कल ही हुई हो। अब उनके साथ बा भी जा मिली है। मन में आया है कि यह चितास्थान जगदम्बा और महादेव के मन्दिर के नाम से पूजा जाएगा। वहा जो नीम लगाया था, उसपर नये पत्ते आ रहे है।

गर्मी बढने लगी है, इसलिए बापू सुबह शाल लेकर नही निकलते।

शाम को माताजी की मुलाकात के बारे में बात हुई। प्रभाबहन ने कहा, "इतनी दूर से आने वाले को एक से अधिक मुलाकाते मिलनी चाहिए। देवली में मिलती थी।" बापू बोले, "वे दिन गए।" रात में मैने भाई की फाइलो का काम किया।

२६ मार्च '४४

बापू ने भण्डारी और शाह से पूछा, "सुशीला की माताजी इतनी दूर से फिर नही आ सकेगी, इसलिए एक से अधिक बार मिलने नहीं दिया जा सकता क्या?" भण्डारी ने बम्बई सरकार से दरियाफ्त करने को कहा। बाद में बापू कहने लगे, "माताजी को अनुकूल हो तो उन्हे एक महीना रोक लिया जाए। दीनशा के वहा वे अपना इलाज भी करावे, लडकी की भी सम्भाल हो। फिर दुबारा मिलकर महीने के बाद जावे।"

भाई को सकोच हो रहा था कि दीनशा पर इतना बोझ कैसे डाला जाय, लेकिन बापू को कोई हर्ज नही लगता था। बोले, "उसके यहा मै किसी भी रोगी को भेज सकता हू, यह बरसो से उसके साथ समझौता है।"

भण्डारी कहते थे कि माताजी का पत्र देर से आया था, इसलिए उसका जवाब

२२-२३ को भेजा गया। उनको वह समय पर मिल भी सकता है और नही भी मिल सकता है।

२७ मार्च '४४

बापू का मौन है। मुलाकात के लिए उन्हे मौन में ही जाना होगा, यह अच्छा नही लगा। पर इससे यह फायदा भी था कि आज जाने से रामायण वगैरह मे नागा नही पडेगा। सोमवार को यो ही नागा होता है।

दोपहर की डाक से मोहनलाल का पत्र आया कि वे आज आ रहे हैं। हमने तो मुलाकात की आशा छोडकर दिन का कार्यक्रम शुरू कर दिया था। मैने ६-७ अक 'डान' के पढे, मनु और प्रभा को सिखाया, खेलने गई और खाने के बाद बापू के पास लिन्-यू-टाग की किताब पढी। इतने में घूमने का समय हो गया।

बापू की शिकायत का सरकारी उत्तर आया है। बुरा है। काशीबहन का भी पत्र आया है।

बापू ने मीराबहन के साथ बाते करते हुए उन्हे बताया कि चीनी सहयोग मडलिया (Chinese Coops) हिन्दुस्तान के लिए क्यो उपयोगी नही है? चर्खासघ मे और इडस्को *(Industrial Co-operatives) मे क्या फर्क है?

रात को एक बडा साप बरामदे में पाया गया। मीराबहन के हाथ में टार्च थी, इसलिए वे बाल-बाल बच गई, नही तो पैर उसीपर पडता। सिपाहियो ने आकर उसे मार डाला।

कटेली साहब ने बताया कि कल ११ बजे हम लोगो की मुलाकात होगी।

२८ मार्च '४४

आज सुबह घूमते समय बापू सात्त्विक, राजसिक और तामसिक असतोष का भेद समझाने लगे, "प्रगति के लिए असतोष आवश्यक है, मगर असतोष जिस प्रकार का होगा, प्रगति उसीके आधार पर होगी। तामसिक असतोष वाला मनुष्य मात्र ईर्ष्या के वश होकर आगे बढने का प्रयत्न करेगा। राजसिक असतोष वाले के मन में निर्दोष स्पर्द्धा का भाव रहेगा, किन्तु सात्त्विक असतोष मे किसीके साथ मुकाबले का सवाल ही नही उठता। मनुष्य स्वतत्र होकर आगे बढने का प्रयत्न करता है। फिर राजसिक असतोप वाला मनुष्य राजसी वृत्ति से काम करेगा। वह दौड-धूप से भरा रहेगा। सात्त्विक भाव से प्रयत्न करने वाला शान्ति से--सौम्यता से काम करेगा।"

डेढ वर्ष से ऊपर हो गया जब इस दरवाजे के अदर हम सब आए थे। उस रोज बा भी मेरे साथ थी और मैने आशा की थी कि हम लोग बाहर भी एक साथ ही जाएँगे, मगर वह कुछ न हुआ।

---

* औद्योगिक सहयोग मण्डल

जमादार हमें मोटर में इंस्पेक्टर-जनरल पुलिस के ऑफिस में ले गया। हम लोग सीढिया चढ रहे थे तब ऊपर के वरामदे में से माताजी को जाते देखा। वेवी ने पेशाव कर दिया था, इसलिए वे कपडे धोने गुसलखाने गई थी और वहीं से आ रही थी। उन्होने हमें नहीं देखा। आफिस के दरवाजे पर हम उनसे मिले और साथ ही भीतर गए।

वेवी वडी सुन्दर लगती है। वह भूखी थी, इसलिए दूध पिलाने पर सो गई। थोडी देर में माताजी ने उसे जगा दिया। वह खेलने लगी, मगर वाद में रोने लगी और तूफान मचाने लगी। माताजी ने उसे मतरा चुसाया। शकुन्तला की वातें चली।

हमें आशा थी कि दूसरी मुलाकात मिलेगी, मगर भण्डारी तो वम्वई चले गए थे। अदवानी इस वारे में कुछ जानते न थे। इसलिए यह तय हुआ कि खुद मोहनलाल वम्वई जाकर पता करें और माताजी को दीनशा के यहा छोड जाएँ।

हम लोग दो वजे वहा से वापस लौटे। वापू तभी उठे थे। उन्हे सव वताया तो वातों में तीन वज गए। मुलाकात पूरी हुई है, मुझे ऐसा नहीं लगता, क्योंकि दूसरी मुलाकात की आशा है।

: ७६ :

वा के वारे मे सरकार की सफाई

वापू रात भर सो नहीं सके। सुवह चार वजे उठकर वा-सम्वन्धी सरकारी उत्तर का जवाव तैयार करने लगे।

२९ मार्च '४४

आज वा की मृत्यु पर लायड जार्ज का समवेदना-पत्र वापू को मिला।

३० मार्च '४४

आज पता चला कि हमें दूसरी मुलाकात न मिल सकेगी। वुरा लगा।

वापू ने अपना पत्र सुधारा। हम सवने भी उसे देखा। प्रार्थना के वाद वापू कहने लगे कि वा की अन्त्येष्टि-क्रिया के वारे में सरकारी पत्र में था—'पूछने पर पता चला कि पहले या दूसरे चुनाव में आपका किसी तरफ खास पक्षपात न था।' और यह उनको खटका था। मैंने और भाई ने इस वाक्य की ओर उनका ध्यान दिलाया था, मगर वापू ने आज इस वाक्य को पकडा और हम लोगो से कहने लगे, "मै ध्यान न दू तो मेरे साथ झगडा करना चाहिए। अगर डरते रहोगे कि वापू का रक्तचाप वढ जावेगा या वापू नाराज हो जावेगे तो मेरा काम नही कर सकोगे।"

३१ मार्च '४४

प्रार्थना के वाद वापू सोए नहीं। सरकार को पत्र लिखने के विचार से इतने

भरे थे कि घूमने के बाद २०४। ११६ रक्तचाप निकला। स्नान करते समय भी उसी विचार मे लीन रहे। उसके बाद बाहर निकलकर लिखवाना शुरू किया।

साढे छ बजे बापू मुझसे बोले कि मै उन्हे लिन्-यू-टाग की किताब पढकर सुनाऊ, मगर मैने उनसे आराम लेने को कहा--तब वे आख मूदकर लेटे और सो गए।

१ अप्रैल '४४

मैने जब डा० गिल्डर से कहा कि बापू के पत्र का पाच बार सशोधन हो चुका है तो वे बोले, "छठी बार मै सशोधन कराऊगा।" उन्होने जो कमिया निकाली, वे मुझे भी खटकी थी। मै एक पत्र तैयार करके बापू के पास ले गई। उन्होने पत्र को खूब काट-छाट डाला था। हमारे सुधारो को समझकर वे घूमने गए। अपना सुधारा हुआ पत्र वे हमे दे गए कि जिससे हम उसे अच्छी तरह देख ले और दोनो मे से जो पसन्द करे, वे उसे ही भेजने का निश्चय करेगे। हम लोगो ने दोनो पत्रो को मिलाकर एक तीसरा पत्र तैयार किया। बापू पौने दस बजे वापस आए तब डा० गिल्डर ने किये हुए परिवर्तनो को पढकर उन्हे सुनाया। बापू ने स्वीकार किया। स्नानघर में मुझसे उन्होने वह पत्र पढकर सुनाने को कहा। उन्होने उसमे कुछ और सुधार करवाए, यहा तक कि खाते समय भी सुधार करवाते रहे। बारह बजे पत्र पूरा हुआ। भाई ने तीन बजे तक टाइप कर दिया और चार बजे वह साधारण डाक से चला गया। सोमवार को इसी पत्र की एक नकल रजिस्ट्री से भेजी जावेगी।

भाई रात गए तक पत्र की नकले टाइप करते रहे। चाहते है कि सोमवार के लिए नकले तैयार हो जावे। नकलो के साथ परिशिष्ट भी टाइप की, यहा तक कि उनके सिर मे दर्द हो गया।

प्रभाबहन के सिर में भी बडा दर्द रहा। उनमे खून की कमी है। मैने उन्हें लोहा सेवन करने की सलाह दी है।

२ अप्रैल '४४

सवेरे बापू को घडी देखने में देर हो गई, इसलिए छ बजकर बीस मिनट पर प्रार्थना के लिए उठे, वह भी प्रभाबहन के उठाने से। वे उस समय साढे चार का समय समझ रहे थे। घटे और मिनट की सुइया देखने में भूल हो गई थी।

घूमते समय बापू कहने लगे कि पिछले साल की निस्बत इस साल कम गर्मी पड रही है। पिछले साल उपवास के बाद मार्च मे पखा चलाना पडता था, मगर इस साल अभी तक पखे की जरूरत नही है।

बा की शिकायतो वाले बापू के पत्र मे स्पष्ट किया गया था कि किस प्रकार बार-बार बा के लिए सहूलियते मागी गई और किस तरह बार-बार कहने के बाद मौका निकल जाने पर सहूलियते मिली--इससे भण्डारी को चिन्ता हो गई कि कही उनपर विपत्ति न आ पडे, इसलिए वे अपने बचाव की खातिर आज आकर कहने लगे, "यह पत्र की क्या

वात है ? आपने मुझे पहले क्यो नही वुलाया ?" डा० गिल्डर वोले, "वुलाया तो था, मगर आप यहा नही थे।" भण्डारी ने कहा, "दीनशा को इसीलिए पहले नही भेजा कि आप उनकी जरूरत नही समझते थे।" गिल्डर वोले, "मैंने तो आपसे कभी नही कहा कि दीनशा की सेवाओ की आवश्यकता नही।" भण्डारी ने उत्तर दिया, "हा, वह तो ठीक है। मैंने भी ऐसा कुछ नहीं कहा। मैंने यह कहा था कि उन्हे सलाह के लिए नही वुलाया जा सकता, क्योंकि वे डिगरीधारी डाक्टर नही है। पता नही, सरकार इसमे क्या समझी।"

वापू वोले, "और दाह-क्रिया के वारे मे सरकार कहती है कि उसने पूछा और पता चला कि मुझे पहले दो चुनावो में कोई पक्षपात नही था, यह क्या वात है ?"

भण्डारी ने जवाव दिया, "मैंने तो शब्दश आपका सदेशा टेलीफोन पर पढकर सुनाया था। और मैंने कुछ नही कहा।"

फिर भण्डारी भाई से पत्र लेकर डा० गिल्डर के कमरे मे वैठकर पढने लगे। वापूकी मालिश पूरी करके डा० गिल्डर वहा गए और भण्डारी से वाते करते रहे। वापू ने मुझ-से कहलाया कि वे भण्डारी को भी एक पत्र लिखेंगे। मै कहने गई तो भण्डारी मुझसे वोले, "यह पत्र लिखने से पहले मुझे वुला क्यो न लिया ?" मैंने वताया, "आपको वुलाया तो था, मगर आप चले गए थे। मै तो खुद आपसे मिलना चाहती थी, क्योंकि आपने कहा था कि माताजी से मेरी दूसरी मुलाकात हो सकेगी।" वे वोले, "हा-हा, वह तो अदवानी कर सकता था।" मैंने कहा, "अदवानी से कहा था। उन्होने कहा कि वे कुछ नही कर सकते।" भडारी वोले, "मुझे तो लगता है कि उसमें कोई दिक्कत नहीं हो सकती थी।" डा० गिल्डर ने वतलाया, "सुशीला का भाई आयङ्गर के पास गया था, वहा से 'न' मिली।" भण्डारी वोले, "मै करता तो ऐसा न होता।"

मैंने कहा, "मेरी माताजी इस समय वम्वई मे है। यहा आने वाली है। वापू ने उन्हे इलाज के लिए दीनशा के यहा रहने को कहा है। इसलिए आप अव भी कुछ कर सकते हो तो करे।" वे कहने लगे, "उनके आने पर मुझे खवर करना।" वाद में उन्होने किया-कराया कुछ नही।

सुवह वापू ने भण्डारी को पत्र लिखा। शाम को भडारी स्वय आए और फिर वही वाते कहने लगे, "दीनशा के वारे मे मैंने पहले समझा था कि आप उसे डाक्टरी सलाह के लिए वुलाते होगे। इसीलिए मैंने कहा था कि उसे वुलाया नही जा सकता।" वापू वोले, "मैंने तो आपसे स्पष्ट कहा था कि वह डाक्टरो के नीचे काम करेगा।" भण्डारी ने कहा, "जव आपने यह कहा तव मैंने उसके आने की इजाजत मागी थी।" वापू वोले, "वा तो वहुत दिनो से कह रही थी। मुझसे जैसे ही आपने पूछा, मैंने स्पष्ट कर दिया था कि वह आकर क्या करेगा।"

भण्डारी कहने लगे, "वा ने पहले अदवानी से कहा था कि दीनशा को भेजो। अदवानी ने मुझसे कहा या नहीं, यह मुझे याद नही। मै १७ जनवरी को आया।

बाद ही बा ने मुझसे कहा। बा के कहने पर तो मैंने कुछ किया नहीं, मगर आपके कहने पर फौरन अमल किया।" बापू बोले, "मैंने तो हताश होकर सरकार को लिखा था; क्योंकि जबानी कहने का कोई असर देखने में नही आया।" भण्डारी ने जवाब दिया, "यह पता चलते ही कि आप उन्हे सलाह के लिए नही, वल्कि इलाज और एनीमा या मालिश करने के लिए बुलाते हैं, मैंने उनके आने का इतजाम किया।" डा० गिल्डर ने बताया, "मगर सलाह के लिए उन्हे बुलाने का कभी सवाल ही नही उठा।"

दाह-क्रिया के बारे में भी भण्डारी ने कहा, "मैंने तो अक्षरश आपकी दरख्वास्त उन्हे सुना दी थी। कल जाकर मैं सब कागजात देखूगा। आपको उत्तर की जल्दी तो नही है न ?" बापू ने कहा, "नही।" अपने और कागजो के साथ भण्डारी बापू का कल वाला पत्र भी माग गए।

बापू ने कौंसिल आव स्टेट में दिये गए कोनरन स्मिथ के वक्तव्य के बारे मे भी एक पत्र सरकार को लिखा। शर्मा को बुलाने की तारीख उन्होने ९ फरवरी बताई थी, जब कि ३१ जनवरी के अखबारो में शर्मा का नाम आ गया था और ३ फरवरी को फिर से याद दिलाई गई थी।

: ७७ :

बापू की जागरूकता

३ अप्रैल '४४

भाई ने आज भी काफी टाइप का काम किया। बापू का मौन है। वेवल का उत्तर आया है जिसमें मुझे तो सूखी 'न' लगती है। मीराबहन और भाई उसमें से कुछ आशाजनक अर्थ निकालने की सोच रहे हैं। अभ्यास के तौर पर बापू ने उसका उत्तर लिखने को कहा। परसो वाले पत्र की आज एक नकल रजिस्ट्री से गई।

डा० गिल्डर को थोडा बुखार है।

४ अप्रैल '४४

आज सबका वजन लेने का दिन है। डा० गिल्डर का वजन ६ पौण्ड घटा। मनु का और मेरा वही-का-वही रहा। मीराबहन और बापू एक-एक पौण्ड घटे। प्रभाबहन और भाई का वजन बढा।

बा की समाधि पर मीराबहन ने शखो का 'हे राम' बनाया। हम लोगो ने शाम को देखा।

मीराबहन ने अपना उत्तर पाठरूप में लिखकर दोपहर में बापू को दिया। मैंने भी चालीस मिनट मे अपना जवाब लिखकर बापू को दिया। उन्हे अच्छा लगा।

शाम को घूमते समय पाकिस्तान की बात होने लगी। बापू कहने लगे, "मैंने

कहा है कि जिसे मैं पाप समझता हूं, उसमें 'हां' कैसे करूं ! मगर तुम्हें लेना हो तो लो। तुम्हें कौन रोक सकता है। मैं गो-हत्या को पाप मानता हूं, मगर उसके लिए मुसलमानों के साथ झगड़ा नहीं करता। अपनी बात मैं उन्हें सुना देता हूं। उन्हें वह चुभती नहीं। खिलाफत के दिनों में मैं उनसे कहता था कि खिलाफत तुम्हारी गाय है। मैं उसे अपनी गाय मानता हूं। मेरी गाय को तुम अपनी गाय मानो। मगर मुझे तुम्हारे साथ सौदा नहीं करना है। जो करना है, अपने आप करो। एक साल तक यह चला भी। लाखों गाएं बचीं। मुसलमानों ने अपने-आप उन्हें बचाया।"

५ अप्रैल '४८

डा० गिल्डर ने अपना उत्तर लिखकर आज बापू को दिया। भाई तो रात उत्तर लिख चुके थे। आज उसे टाइप किया।

शाम को चार बजे बापू प्रभावहन की डायरी देखते-देखते उन्हें गुजराती भाषा के बारे में और बाद में दूसरी और बातें बताते रहे। एक घंटे तक उनकी बात चलती रही। मैं भी सुनती रही। बाद में उन्हीं बातों का विचार आता रहा।

आज सुबह खाने के कमरे में जाते समय बापू ने देखा कि वहां लिखने की मेज पर खाने का सामान रखा है। उन्हें वह चुभा और सबको उन्होंने ऐसा न करने की हिदायत दी, "लिखने की मेज पर यह सब सामान देखा तो मुझे चुभा। मुझे लगा कि कटेली को भी बुरा लगता होगा, मगर हमें बुरा न लगे, इसलिए वे कुछ कहते नहीं। मैं उन्हें इस परिस्थिति में नहीं डालना चाहता। उनसे मेहरबानी भी नहीं चाहता। वे मेहरबानी करके हमें यह मेज इस तरह इस्तेमाल करने दें तो उससे तो बेहतर यह है कि हम उसे काम में न लें। इसीलिए मैंने यह हिदायत की। पहली बात तो यह है कि कटेली से पूछना चाहिए। उन्हें इसके इस तरह इस्तेमाल में लाने में कोई हर्ज न हो तो मुझे भी नहीं है। मुझे खुश करने के लिए तुम कुछ न करो।"

मीराबहन ने कटेली से बात की। परिणामस्वरूप वहां संगमरमर की एक मेज आ गई और लिखने की मेज कोने में चली गई। उस मेज के खाने इस्तेमाल किये जाएंगे। दूसरा सामान संगमरमर की मेज पर रखा जावेगा।

: ७८ :

जेल में दूसरा राष्ट्रीय सप्ताह

६ अप्रैल

आज राष्ट्रीय सप्ताह शुरू होता है। कल शाम बापू बता रहे थे कि मन में उन्होंने ६ अप्रैल के दिन सत्याग्रह को जन्म दिया और रौलट एक्ट का

के लिए प्रार्थना, उपवास और हड़ताल का एलान किया। देश-भर में जबर्दस्त हड़ताल हुई। उससे पहले हड़ताल शहरो में ही होती थी। अब देहातो मे भी आरम्भ हुई। हड़ताल का निश्चय जिस समय किया गया, उस समय वक्त इतना कम था कि लोगो तक सदेश पहुचाना कठिन था। मगर इस चीज मे ईश्वर का हाथ था। इसलिए जागृति की लहर तो अपने-आप ही लोगो में फैल गई और छ अप्रैल को देशभर मे व्यापक हड़ताल हुई। अधिकाधिक सख्या में लोगो ने २४ घटे का उपवास किया। हड़ताल कई-कई स्थानो मे १३ अप्रैल को मनाई गई। लोगो की माग थी कि सत्याग्रह करने से पहले एक हफ्ते का समय और दिया जाय ताकि सत्याग्रह के लिए कुछ तैयारी की जा सके। अमृतसर में सारा हफ्ता मनाया गया। लोगो की मान्यता थी कि १३ तारीख को जनरल डायर द्वारा गोली चलवाने से पहले सरकार ने डुग्गी पिटवाकर घोषणा की कि जलियावाला बाग में सभा होगी और वहा जो आदमी भाषण करने वाला था, वह सरकार का ही आदमी था। इस तरह लोगो को वहा इकट्ठा करके, बिना किसी तरह का नोटिस दिये, डायर ने उनपर गोली चलवाई। वह तो मशीनगन लाने वाला था, लेकिन गली तग थी, इसलिए नही ला सका। बाद में उसने स्वय कबूल किया कि अगर बारूद न खत्म हो गई होती तो वह गोली चलवाता रहता।

प्रभाबहन ने पूछा, "उसे सजा नहीं हुई?" बापू ने उत्तर दिया, "जाच करवाई गई थी और कामन्स-सभा ने उसे जनरल के पद से हटा दिया, किन्तु लार्ड-सभा ने उसका स्वागत किया और उसे हीरो से जटित तलवार भेंट की।" भाई बोले, "बर्मिघम नगर के निवासियो ने भी उसका ऐसा ही स्वागत किया था। आश्चर्य है कि उस समय की इन घटनाओ के बावजूद भी अगस्त १९४२ के समय सरकार हमारे लोगो से बम्बई में सडकों पर झाड़ू लगवा सकी।"

प्रभाबहन ने कहा, "बिहार में ऐसा ही हुआ।" बापू बोले, "हा, एक तरफ सारे देश मे जाग्रति आई है और दूसरी तरफ यह है कि लोग आज भी डरकर ऐसे काम कर देते हैं। मगर बात तो यह है कि उस वक्त लोग सरकार के डर से थर-थर कापते थे। आज दो वर्ष से सरकार का जो दमन चल रहा है, उसके सामने रौलट एक्ट और जलियावाला बाग कोई चीज नही है। तो भी लोग इस समय कापते नहीं है, उनपर इसका कुछ भी असर नही हुआ है।"

बापू एक और अवसर पर बात करते हुए कहने लगे, "सरकार की इतनी सख्ती के परिणाम से काग्रेस बहुत ऊची उठ गई है। आज सब काग्रेस का ही नाम लेते है। दूसरे दलो के लोग सरकारी झझटो मे नही पडते। पडें तो बहुत कुछ उन्हे मिले भी। लेकिन ऐसे दलो के लोग समझ गए है कि इससे देश को कोई फायदा नही होने का। देश के लिए कुछ करना हो तो वह काग्रेस के ही मार्फत हो सकता है। इसीलिए सभी लोग काग्रेस को रिहा किये जाने की माग करते है।"

आज सभी का २४ घटे का उपवास रहा। सुबह छ से शाम के छ. बजे तक

अखण्ड चर्खा चलाया। मैंने, मीरावहन ने और भाई ने दो-दो घटे, मनु ने साढे तीन घटे, प्रभावहन ने ८ घटे तथा वापू और डा० गिल्डर ने एक-एक घटा काता।

वापू ने सुवह प्रार्थना के वाद उठकर वेवल के पत्र का उत्तर तैयार किया। हम सवको वह जरा तीखा लगा, मगर वापू को लगता था कि दूसरा रास्ता नहीं है। कहने लगे, "वह पत्र तीखा है ही नहीं।" स्नान के वाद उसे फिर से पढा। दोपहर को भाई ने कच्ची नकल टाइप की। मैंने उन्हे लिखवाया।

मैंने और भाई ने वापू से कहा, "इस तरह का पत्र न लिखें तो क्या हर्ज है?" वे वोले, "लिखना तो चाहिए। न लिखू तो मैं नीचे उतरता हू और लिखू तो ऐसा ही लिख सकता हू।"

रात को डा० गिल्डर प्रार्थना के वाद वोले, "यह पत्र लिखने का हेतु क्या है? क्या आगे के लिए पत्र-व्यवहार वन्द करने का?" वापू ने कहा, "हा, यह परिणाम हो सकता है।" डा० गिल्डर ने कहा, "मगर इसका असर क्या होगा? न सिर्फ आप, वल्कि सारा आदोलन, सारी लडाई वदनाम होगी।"

वापू ने कहा, "हा, वह भी हो सकता है। लोग कह सकते है कि इस आदमी से तो हमारी कभी पट ही नहीं सकती। इसके साथ वात क्या करना? मगर इस डर से कि जगत क्या कहेगा, सत्याग्रही कभी कोई काम नहीं करता। वाइसराय के पत्र में मैं कोई रास्ता खुला पाता ही नहीं हू। देखू तो झट कूद पडू। जैसा उसका पत्र है, वैसा ही जवाव होना चाहिए, ताकि वह समझ ले कि मैं उसका अर्थ समझ गया हू। अगर कोई रास्ता निकलना भी होगा तो इसी तरह निकलेगा।"

वापू फिर दक्षिण अफ्रीका की वात करने लगे कि कैसे स्मट्स ने वहा उनसे वात करने से भी साफ इन्कार कर दिया। वे ट्रान्सवाल पर चढाई कर रहे थे और ३,००० आदमियो को अपने हाथो खिलाते थे। स्मट्स ने कहा, "वात करना है तो यहा से लौट जाओ।" मगर उन्होने ऐसा नहीं किया। वे और आगे वढे। अन्त में उसे उनके साथ समझौता करना पडा।

वापू कहने लगे, "उस लडाई के आरम्भ में सव लोग मेरे विरुद्ध थे। वा समेत सोलह आश्रमवासियो को लेकर मैंने लडाई शुरू की। जो लोग मेरे साथ चर्चा करते, उनसे मैं कहता, 'भाई, मैं कहा यह लडाई चला रहा हू। भगवान् मुझसे जो कराता है, मैं करता हू।' आखिर छ महीने में उस लडाई का सफल अन्त आया। सत्याग्रह का यह नियम है कि 'कोई क्या कहेगा' इस विचार से सत्याग्रही कभी कोई कदम न उठावे। मैं सच्चा हूगा तो मेरे हाथो हिन्दुस्तान का वुरा कभी होने वाला नहीं है। अभी मैं जो कहता हू, उसे घमण्ड न माना जाय, मगर मुझे विश्वास है कि हिन्दुस्तान का कोई कुछ विगाड नहीं सकता। विगाडू तो मैं ही विगाड सकता हू। मैं कभी हिन्दुस्तान को विगाडूगा नहीं। लोगो को लगे कि मुझसे निभ ही नहीं सकती तो वे मुझे छोड सकते हैं। मैं तो नाचूगा। मैं तो यहा वैठा हू। उन्हे जो करना है, करें।"

डा० साहब बाद में कहने लगे, "बापू जब सत्याग्रह के कानून की बात करने लगते है तब हमारा मुह बन्द हो जाता है।"

७ अप्रैल '४४

सुबह घूमते समय मैंने बापू से पूछा कि जिस सत्याग्रह की बात वे कल कर रहे थे, क्या वह दक्षिण अफ्रीका का आखिरी सत्याग्रह था? उन्होंने जवाब दिया, "हा, वह आखिरी सत्याग्रह था। शुरू किया गया था १६ जनो को लेकर, मगर वह जगल की आग की तरह फैला और इतना प्रचण्ड साबित हुआ कि छ महीनो में समझौता हो गया। हमारी गैरहाजिरी में बच्चो ने फिनिक्स का आश्रम चलाया। देवदास और प्रभुदास-जैसे १२-१२ बरस के लडके रह गए थे और १६ बरस से ऊपर के सभी जेल में थे। पहाड-जैसे जुलू लोग आसपास पडे थे। गोरो का मिजाज इतना बिगड रहा था कि कुछ ठिकाना न था, मगर बच्चो के साथ क्रूरता करना कठिन था। बच्चो का काम बहुत अच्छी तरह चला। जोहान्सबर्ग के दफ्तर का काम मिस श्लेजन ने सभाला। वह करीब २२ वर्ष की थी, मगर बडे-बूढे तक उससे सलाह लेने आते थे। उसने वास्तव में अद्भुत काम किया— हिसाब सभालना, लडाई चलाना और 'इडियन ओपीनियन' प्रकाशित कराना, यह सब उसके जिम्मे था। उसके लेख भी उन दिनो अद्भुत हुआ करते थे।"

मैं बोली, "यह तो यही हुआ कि उन दिनो उसकी जीभ में सरस्वती आकर बैठी थी।"

बापू ने कहा, "बस यही है; नहीं तो उसने इस तरह का काम न पहले किया था, न बाद में।"

भाई को बापू वाले मसविदे से सतोष नहीं था, इसलिए उन्होंने एक नया तैयार किया है। खाने के समय बापू उसे लेकर बैठे और मुझे एक नया ही पत्र लिखवा डाला। तीन बजे मैंने, मीराबहन ने और भाई ने अपने-अपने सुझाव उनके सामने रखे। बहुत-से सुधार किये गए और ७–८ बजे बापू ने फिर से नया पत्र लिखवा डाला। लिखाते समय भी सुधार करवाते रहे। आठ बजे घूमने निकले और २० मिनट घूमे। रात को विचार आया कि डा० गिल्डर की भी राय ली जाय और सुधार किये जाय। चाहते थे कि पत्र आज चला जाय अथवा न जा सके तो कम-से-कम पूरा तो हो ही जाय।

डा० गिल्डर कल सुबह बापू के सामने अपने सुझाव पेश करेंगे।

८ अप्रैल '४४

बापू ने अपने पत्र में कहा है कि समानता के बिना सहयोग नही हो सकता। डा० गिल्डर ने अपने सुझाव में इसका विरोध किया। इसी तरह बापू ने लिखा है कि हाकिम और रैयत एक होकर काम नहीं कर सकते। इसका विरोध भी डा० गिल्डर ने किया। बापू ने कहा, "सचमुच राजा-प्रजा एक मच पर नही इकट्ठे हो सकते। जब ऐसा सम्भव नही होता तब राजा प्रजा का सेवक बन जाता है, राजा नही रहता।"

अनेक राजतन्त्रो की चर्चा करते हुए बापू ने कहा, "इग्लैण्ड, अमेरिका या रूस— कहीं भी राजा-प्रजा मे सच्चा सहयोग नही है।' बाद में उन्हे विचार आया कि कभी-कभी ऐसी परिस्थितिया भी आ सकती है, जब राजा-प्रजा में तथा स्वामी-सेवक में सहयोग हो सकता है।

घूमते समय बापू ने हम लोगो को समझाया, "मानो कि एक मालिक बिलकुल गुण्डा है और नौकर पर जुल्म करता है। मगर एकाएक सर्प निकलता है और दोनो पर हमला करता है। तब वे दोनो सहयोग करेंगे और मिलकर सर्प को मारेंगे। इस तरह अनेक परिस्थितिया ऐसी हो सकती है, जिनमें असमान व्यक्तियो या दलो में सहयोग हो सकता है, इसलिए मेरा यह कहना कि सच्चा सहयोग समान दलो में ही हो सकता है, ठीक नहीं है। यह सच है कि इस खास जगह पर समानता के बिना सच्चा सहयोग नहीं हो सकता, मगर सामान्य नियम के रूप में यह चीज सच्ची नहीं है। मुझे यह बात सूझनी ही चाहिए थी, मगर हम सब अक्सर ऐसी भूल करते है और झट सामान्य नियम पर आ जाते है। अगर मेरा यह पत्र ज्यो-का-त्यो चला जाता तो मेरी हसी होती। डा० गिल्डर ने तो सिर्फ इशारा किया, मगर अब मैं उनसे भी आगे जाता हू। अब यह पत्र नया ही लिबास पहनेगा और छोटा भी हो जावेगा।"

सवेरे घूमकर, फूल चढाकर ऊपर आए और स्नानादि के बाद बापू पत्र लेकर बैठे। बारह-साढे बारह बजे से लिखाना आरम्भ किया। पत्र दो बजे से पहले पूरा हो गया।

बापू ने कल से प्रभाबहन को गीता का उच्चारण सिखाना आरम्भ किया है। आज उन्हे और मनु को २० मिनट सिखाया, साथ ही सस्कृत भी पढाई।

९ अप्रैल '४४

खाने के समय रोज की तरह रामायण वगैरह पढा। आजकल बापू थके-से रहते है। रामायण दो-चार मिनट पहले ही बन्द कर देते है। पहले वे नियत समय से अधिक पढा करते थे। मैंने पूछा तो बोले, "रामायण में रस तो और ज्यादा आता है, मगर आजकल शक्ति कम है।"

खबर मिली है कि प्रभाबहन को मगलवार के रोज भागलपुर भेजने का हुक्म आया है। बापू की बात सच निकली कि एक-न-एक दिन प्रभावती को जाना ही होगा।

बापू कहने लगे, "यह तो बस चलने का आरम्भ है। दूसरा नम्बर मनु का होगा, पीछे बाकी सबको यहा से हटावेंगे। मैंने तो तीन चीज में भविष्य कहा है। तीनो होने ही वाली है। लेकिन इसमें भविष्यवेत्ता की बात नहीं है, केवल अनुभव की ही है।"

मैंने प्रभाबहन और मनु के लिए एक डिब्बे पर चित्रकारी करनी शुरू की है, कल सुबह पूरी होगी।

सुबह भण्डारी आए थे। उस समय प्रभाबहन के बारे में कुछ नही कहा।

शायद बाद में खबर आई होगी ।

१० अप्रैल '४४

प्रभाबहन को कल सवा पाच बजे जाना है । बडी हिम्मत से काम ले रही हैं । बापू का मौन उन्हे आज बहुत अखर रहा है । उन्होने ही आज बापू की मालिश वगैरह की ।

११ अप्रैल '४४

सवेरे उठते ही प्रभाबहन कहने लगीं, "कल इस वक्त मै कहा हूगी । बापू, अब तो थोडे ही घंटे रह गए ।" बापू बोले, "इसी तरह थोडे मिनट रह जाएगे और फिर तू चली जायगी ।"

घूमते समय बापू बोले, "तेरा जाना चुभता तो है । एक तरफ से लगता है कि तू यहा पर रहती तो तेरा अभ्यास वगैरह अच्छी तरह से चलता । दूसरी तरफ से खुशी होती है कि भले तू जावे । यहा पर तो सुख का जीवन बन गया है । जेल में हम तकलीफें सहन करने के लिए जाते हैं, तपश्चर्या करने जाते हैं । यहा तकलीफ नही है । दूसरी जगह तुझे कुछ तकलीफें तो सहन करनी पडेंगी । मेरी दृष्टि से वह इष्ट है । मैंने तुझे समझाया है कि कैसे अपने-आप अभ्यास किया जाता है । ऐसा करेगी तो तेरा कल्याण ही है ।"

सुबह नाश्ते के समय और बाद में खाने के समय प्रभावतीबहन बापू से कुछ प्रश्न पूछने लगी ।

बापू को लगता है कि सम्भव है, थोडे दिनो बाद बिहार सरकार प्रभावती को छोड दे । छूटने के बाद वह क्या करेगी, इस बारे में वे बोले, "मै यहा बैठा तुझसे बहुत नही कह सकूगा । बाहर का क्या वातावरण है, दूसरे कार्यकर्त्ता व मित्रगण क्या राय देते हैं—वह सब देखकर तू तय करेगी । इतना कहे देता हू कि आज जेल जाने की खातिर जेल जाने की बात मेरे पास नहीं । मगर तू देखे कि बाहर रहकर कोई काम ही नहीं कर सकती, खादी का काम भी नहीं कर सकती, तो जेल में जायगी । जेल से बचने की खातिर तू कुछ न करेगी । काम करते-करते तुझे पकड लें तो भले पकड लें । मगर मुझे लगता है कि तुझे इस बारे में विचार करने में कुछ कठिनाई नही आने वाली । वातावरण में से तू अपना रास्ता अपने आप ढूढ लेगी ।"

साढे बारह बजे से लेकर अढाई-तीन बजे तक कटेली ने प्रभाबहन के सामान की तलाशी ली । पीछे सब सामान बन्द करके चाभी अपने साथ ले गए । जो सिपाही प्रभावतीबहन को लेने आवेंगे, उनके मुखिया को वे चाभी दे देंगे। प्रभावतीबहन कहती थीं कि इतनी बारीकी से उनकी तलाशी आज ही हुई है ।

तीन बजे के करीब कटेली साहब आए— कहने लगे, "अभी-अभी टेलीफोन आया है कि जिस गाडी से प्रभाबहन को ले जाना था, वह आज नहीं जा रही है । अब उन्हे कल सुबह दस बजे तैयार रहना होगा ।" हम सब बहुत खुश हुए ।

प्रभावहन के पास रास्ते में पहनने के लिए रगीन साडी नहीं है। वबूल के रग में रगी एक साडी, जो वा ने दो-एक महीने यहा पहनी थी और मुझे दी थी, मैंने उन्हे दी। उन्होने वापू की दो धोतिया, एक तौलिया, एक छोटा रूमाल और उनके सूत की आटी भी ली।

१२ अप्रैल '४४

सुवह उठे तो लगता था कि कौन जाने आज भी पुलिस जाना मुल्तवी कर दे। घूमने के वाद प्रभावहन ओर डा० गिल्डर ने वापू की मालिश की। मैंने डिव्वे पर चित्र पूरा किया। सवको वहुत पसन्द आया। प्रभावहन इस 'हे राम' वाले डिव्वे में वा का कोई चिह्न रखेंगी।

ऐसा लगता था कि वापू स्नानघर में होगे, तव प्रभावहन चली जावेगी। पर जव कोई नहीं आया तो वापू ने हम दोनो को खाना खाने के लिए भेज दिया। १२॥ वजे वापू सोने के लिए लेटे। वे कह रहे थे, "अगर आज नही ले जावेंगे तो कल मैं भेजूगा नहीं।"

इतने में खवर मिली कि मोटर आ गई है और सामान नीचे जा रहा है। वस उठे। प्रभावहन तार के अन्दर से जाकर समाधियो को प्रणाम कर आईं। मै और मनु साथ थीं। हम सव उन्हे पहुचाने दरवाजे तक गए। एक वडी-सी पुलिस-लारी खडी थी। उसमें करीव आधे दर्जन सिपाही और एक मेट्रन थी। वह तो यहा सुवह से ही आकर वैठी थी।

प्रभावहन ने वडे धीरज से काम लिया, मगर तार के दरवाजे से वाहर जाने के वाद मैंने उन्हे साडी के पल्ले से आख पोछते देखा। क्या स्थिति है कि मन का दु ख हलका करने के लिए अगर आसू भी आवें तो इतने लोगो में उनकी नुमाइश होगी, इस डर से उन्हे रोकना पडता है। आखिर जेल जेल है और कैद कैद ही है!

एक वजे उन्हे विदा करके हम लोग ऊपर आए। प्रभावहन के जाने से घर इतना सूना हो गया है कि वा के अवसान के समय का-सा वातावरण फिर वन गया है।

वापू तीन दिन से शाम को इतना थक जाते हैं कि वडे धीरे-धीरे चलते हैं। अच्छा नहीं लगता। विचार आता था कि क्या किसी रोज सचमुच इतने दुर्वल हो जाएगे कि इतना धीमा चलें!

१३ अप्रैल '४४

आज राष्ट्रीय सप्ताह पूरा हुआ। सुवह से प्रभावहन की याद आ रही है। वेचारी को रास्ते की गर्मी में उपवास भारी पडेगा। वापू ताकीद करने वाले थे कि रास्ते में मोसम्वी का रस तो ले ही, मगर कहना भूल गए। आशा रखते हैं कि वह लेगी। रास्ते में काता भी होगा। उनकी गैरहाजिरी में आज भी १२ घटे का अखण्ड चर्खा चलाया, मगर सूत छ तारीख वाले दिन से वहुत कम निकला, क्योकि उस दिन प्रभावतीवहन ने ८ घटे काता था। दो हजार से ऊपर के तार तो उन्हीके हो गए थे।

बापू का लिखा हुआ टॉटेनहम के पत्र का उत्तर आज डाक से गया। छ तारीख को उसका पत्र आया था। बापू ने दिन में बिल्कुल आराम नही लिया। उपवास भी था। शाम को उनकी कमजोरी के कारण घूमते समय कुछ कम धीमे चलते थे। पाव घसीटकर चलने जैसी बात न थी। पिछले दो दिन की कमजोरी का कारण मुझे तो हल्का बुखार लगता है। परसो प्रभावहन ने रात मे उनसे कहा था, "बापू, लगता है कि आपको बुखार है।" बापू ने हसकर टाल दिया। मगर कल रात को उन्हे खूब पसीना आया। पसीना आने का दूसरा कोई कारण न था, बुखार उतरा होगा। सो आज जब कि उपवास था, बुखार न होने से शक्ति अधिक लगी।

शाम को सवा सात बजे झडा-वदन हुआ। वहा से सीधे फूल चढाने गए, घूमे, प्रार्थना इत्यादि के बाद सोने की तैयारी की। बापू आज कहने लगे, "जो आदमी प्रार्थना के समय नियम का पालन नही करता, मेरी दृष्टि से वह दूसरा कोई नियम पालन नहीं कर सकता।"

डायरी लिखने की चर्चा करते हुए बोले, "भले लगे कि यह काम तो रोज करते है, इसे लिखने मे क्या फायदा, तो भी लिखने में फायदा तो है ही। आखिर सूर्य रोज निकलता है तो वह निकम्मा थोडे ही है। हम अपना कार्यक्रम व्यवस्थित बना लें, समय पर सब काम करें तो पीछे डायरी लिखने में कोई मुश्किल आ ही नही सकती। हम अपना काम यन्त्र के समान समय पर करें, मगर यन्त्र बनकर नहीं। यह सब प्रकार की प्रगति और सफलता के लिए अमोघ शस्त्र है।"

: ७६ :

बापू को मलेरिया

१४ अप्रैल '४४

प्रात· हमेशा की तरह प्रार्थना के लिए उठे। नाश्ते के बाद घूमने गए। खाने के बाद मैंने उनके साथ रामायण पढी, फिर भाई के साथ शेक्सपियर पढा। पीछे सो गई। ढाई बजे उठी तो देखा कि भाई ने मोहनलाल का एक पत्र बापू को दिया। उसके साथ और कई कागज थे। मैं मनु को सिखाने दूसरे कमरे में चली गई। बापू पेट पर मिट्टी रखकर वह पत्र पढने लगे। तभी आकर भाई मुझे बताने लगे कि पत्र पढते समय बापू के हाथ बहुत ही काप रहे थे।

तीन बजे बापू की आवाज सुनी। मुझे लगा कि भाई के साथ बातें कर रहे हैं। मगर मनु ने कहा—नही, तुम्हे बुला रहे है। मैं गई तो कहने लगे, "पूरी दस आवाजें दी है। पेशाब की बोतल ले आ।" मुझे बडा दु ख हुआ। देखा कि बापू काप रहे हैं। पूछा, "क्या हुआ बापू?" कहने लगे, "बुखार आवेगा। बोतल लाई?" बाद में

मैंने उनकी पीठ और मनु ने उनके पैर दबाए। पेट पर मिट्टी रखते ही बापू को सर्दी लगने लगी थी। उठकर किसी तरह पिछला दरवाजा बन्द कर आए, मगर गुसलखाने जाने की हिम्मत न हुई, गिर जाने का डर लगा और इसीलिए मुझे आवाज दी। मन-ही-मन में निश्चय किया कि कुछ भी हो, बापू को अकेले छोड के नही जाऊगी। जो कुछ करना होगा, यहीं बैठकर करूगी और दूसरा कोई पास बैठा होगा तभी उठकर जाऊगी।

थोडी देर बाद उनका कापना कम हुआ। बुखार ९८ ६ डिगरी था। 'ब्लड-स्लाइड' लेने का विचार किया। स्लाइडें घर में न थीं। कटेली से कहकर अस्पताल से मगवाई। चार बजे खून की फोटो (Blood Smears) लीं। उस समय बुखार १०२ ६ डिगरी था। पाच बजे भण्डारी आए। तब बुखार १०३ ६ डिगरी था। मैंने, भण्डारी और डा० गिल्डर ने बापू से कुनीन लेने को कहा। मगर वे कहने लगे, "कल बुखार आवेगा तो लूगा।" हम सबने कहा, "मगर कल तो बुखार की बारी है न?" वे बोले, "तो परसो सही। अगर परसो बुखार आया तो मै कुनीन लेने में हुज्जत नहीं करूगा। मै मानता हू, आज दोपहर को मैंने कुछ भी न खाया होता तो बुखार आने वाला नहीं था। अब मुझे खाना छोडने का उपचार करके देखने दो।" आखिर हम लोगो ने आग्रह छोड दिया। बुखार में उनके साथ दलील करके उन्हे थकाना ठीक नहीं लगा।

भण्डारी के जाने के बाद बापू को सरमाम होने के कुछ आसार दीख पडे। बापू पाच-पाच, दस-दस मिनट पर समय पूछते थे। एक बार तो हठपूर्वक पेशाब करने गुसलखाने गए। बाद में उन्हे यह बात याद तक नहीं रही। साढे पाच बजे हम लोगो से घूमने जाने को कहने लगे। उन्हे लगा कि साढे सात बज गए है। छ बजे बुखार उतरना शुरू हुआ। रात को नौ बजे ९९ ६ डिगरी था। पसीना खूब आया। नीद भी अच्छी ली। खाने में नीबू का पानी तथा शहद लिया।

१५ अप्रैल '४४

आज महादेवभाई का मृत्यु-दिन है। मै सोचती हूँ कि बापू के बुखार के कारण वे कितने घबरा गए होते और बा का तो न जाने क्या हाल होता!

कल बापू कह रहे थे, "अच्छा हुआ, बा के सामने मुझे बुखार नहीं आया, नहीं तो बा तुम सबको मेरी सेवा में धकेलती और खुद किसीकी सेवा न लेती।" मैंने कहा, "वह तो है ही। मगर वे तो उससे भी आगे जातीं। बीमार होकर भी वे उठकर आप की सेवा करने लगतीं।" बापू बोले, "हा, बा का काम ऐसा ही है।"

फिर जरा सम्भले। कहने लगे, "मैंने कहा, 'ऐसा है,' मगर कहना चाहिए था 'ऐसा था।'" मै बोली, "आपके लिए तो बा आज भी हाजिर है, चली थोडे ही गई है।" बापू ने कहा, "हा, यह ठीक है।"

दोपहर को उन्हे बुखार न लगता था, मगर पेट पर मिट्टी रखकर बुखार मापा तो ९९ ६ डिगरी निकला। सुबह बापू समाधि-स्थान पर आए थे। समाधि की शोभा

अद्भुत थी। बहुत सुदर फूल सजाए थे। बाद में मीराबहन के बालकृष्ण-मदिर में भी गए थे। साढे चार बजे १०१ डिगरी था। बापू को स्वय इतना बुखार नही लगता था। पाच बजे भण्डारी आए तब बापू का बुखार १०२.१ डिगरी था। सबके कहने पर भी बापू ने कुनीन नही ली। केवल फलो का रस और मोसम्बी के रस मे पानी मिलाकर पिया। वे मानते है कि इससे कल बुखार नही आएगा। शाम को साढे छ बजे उनका बुखार उतरना शुरू हुआ। रात को नौ बजे ९९.४ डिगरी था।

वे दिनभर लेटे रहे और 'कान्स्टिपेशन एण्ड अवर सिविलाइजेशन' किताब पूरी की।

कल से आज उनकी तबीयत अच्छी है।

१६ अप्रैल '४४

सुबह बापू प्रार्थना करने के लिए उठे। दातुन करने गुसलखाने गए और कुर्सी पर बैठकर की। मगर कहते थे कि उन्हे कुर्सी की जरूरत नही थी। प्रार्थना के बाद रोज की तरह सोए। ६॥ बजे उठे, तैयार हुए और नाश्ते के बाद लेटे-लेटे पढते रहे। समाधि पर फूल चढाने नीचे आए।

साढे ग्यारह बजे तक बापू की तबीयत ठीक रही। इतने मे मीराबहन ने आकर कहा कि बापू को बेचैनी-सी है और उन्हे बुखार आने वाला है। मैं आई तब बापू आखें मूदे पडे थे और भाई पाव दबा रहे थे। थोडी देर बाद उन्होने करवट ली तो मैंने बुखार मापने की बात की, मगर बापू ने कहा कि सोकर उठू तब लेना। एक बजे वे सोकर उठे तो बुखार १०१ ७ डिगरी था। मैंने कुनीन लेने की बात की तो बोले कि शाम को लेगे, मगर बाद मे मान गए और सेवाग्राम से आई हुई कुनीन में से अदाज से तीन ग्रेन ली। उसे नीबू के रस में घोलकर छ औंस पानी और थोडा-सा सोडा बाईकार्ब डाला तब धीरे-धीरे दस मिनट में उस कडुवे शरबत को पिया। पीते जाते थे और मजाक में कहते जाते थे, "खूब, बहुत खूब।" हमसे (मनु और मुझसे) कहते थे, "तुम भी बोलो, 'बहुत खूब।'" बाद में अफीमचियो का किस्सा सुनाने लगे। फिर नीलाम की बाते करते रहे। मनु हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई। मैंने दो-तीन बार कहा, "बापू, बोलने में शक्ति न खर्च करे।" लेकिन वे माने नहीं, "यह तो कुनीन का अमल चढाने के लिए है। 'राम अमल मा राता माता ।'" भजन की यह कडी दो-तीन बार जोर-जोर से बोले। मुझे शक होने लगा कि यह बुखार का दिमाग पर असर तो नही है। था कुछ ऐसा ही।

कुनीन पी चुकने के बाद ही उन्हे जोर-जोर से सर्दी लगनी शुरू हुई। बहुत कापने लगे। पौने दो बजे उल्टी हुई, पीछे चुपचाप पडे रहे। सवा दो बजे भाई ने मुझसे आग्रहपूर्वक आराम लेने को कहा। तीन बजे जब मैं वापस आई तो पता चला कि ढाई बजे फिर उल्टी हुई थी। उस समय बापू बहुत थक गए थे, पेशाब भी हुआ था। मैंने पेशाब देखा, उसमें उल्टी पडी थी—पीली, पित्त की उल्टी थी। मैंने बापू से पूछा कि मतली

शान्त हुई या नहीं तो कहने लगे कि अब शान्त है। कुछ पानी वगैरह लेने को कहा तो इन्कार कर दिया। थर्मामीटर कापते हुए हाथ से मुह में रखकर उन्होने बुखार मापा तो १०४ ८ निकला। उन्होने कई बार कहा कि गुसलखाने जाएगे, मगर रोकने से रुक गए। बोतल में पेशाव किया। वे बुखार की वेहोशी में बोल रहे थे। मैंने डा० गिल्डर की सहायता से उनको स्पज किया और सिर तथा पेट पर ठढी मिट्टी रखी। बुखार उतरना शुरू हुआ। मीरावहन ने श्री कटेली से कहलाया कि दीनशा को बुला दें। पाच बजे भण्डारी और दीनशा आए। सवेरे जब भण्डारी आए थे तब वापू अच्छे थे और वे उनसे ऊपर छत पर सोने को कह रहे थे कि जिससे मच्छरो से बचाव हो सके।

दीनशा विना कुनीन के इलाज करने की बात कर रहे थे। मैंने और डा० गिल्डर ने विरोध किया। विना कुनीन लिये बुखार रुक भी जाए और बार-बार आए तो यह खतरा उठाना हम नही पसन्द करते थे। वापू के लिए एक ऊचा पलग विछाया। रात में पौने सात बजे वे सो गए और साढे सात तक सोए। खूब पसीना आया। भीगे हुए कपडे बदलकर पीछे कुनीन की दूसरी मात्रा दी। इस बार उसमें दो औंस पानी डाला। ऊपर से मौसम्वी का रस पिलाया। थोडी देर तक मतली हुई, फिर थम गई। आठ बज गए थे। मैं और मनु समाधि पर फूल चढाने गए, मगर चाबी न मिलने के कारण तार में से ही सिपाही को फूल देने पडे। वह उन्हे समाधि पर रख आया। प्रार्थना के बाद डा० दीनशा अपने घर चले गए।

वापू का बुखार ९८ ४ डिगरी रहा। कमजोरी अभी काफी है।

१७ अप्रैल '४४

वापू को आज तीन खूराक कुनीन (एक बार में तीन ग्रेन की मात्रा) दी। उन्होन मोसम्वी का रस, नीबू, पानी और शहद ही लिया। दूध नहीं लिया। उन्हे चार दस्त आए, चौथा कुछ पतला आया। इसलिए डर लगने लगा कि अधिक दस्त आ गए तो काम कठिन हो जाएगा।

उनका बुखार आज साधारण से भी नीचे रहा, पर रात को ९९ डिगरी हो गया।

आज उनका मौन-दिन है। सुवह पाच बजे वे वोले थे, क्योकि उनके विचार से अपनी या दूसरो की बीमारी के समय मौन रखना कठिन हो जाता है। बाद में हमेशा की तरह उन्होने पूरा मौन धारण किया।

सरकार ने एक छोटी-सी विज्ञप्ति वापू की बीमारी के सम्वन्ध में अखवारो में दी है। 'टाइम्स' ने इस विज्ञप्ति को स्थान तो मुखपृष्ठ पर ही दिया है, लेकिन इतने छोटे टाइप में कि पहली निगाह में उसपर ध्यान ही नहीं जा पाता। विज्ञप्ति में लिखा था कि गाधीजी को तीन दिन से मलेरिया है और कमजोरी भी है, किन्तु उनकी हालत इस उमर में जितनी अच्छी हो सकती है, उतनी है। लगा कि आखिरी वाक्य लिखकर भविष्य में किसी भी प्रकार की गम्भीर स्थिति पैदा होने पर सरकार ने अपना बचाव

कर लिया है ।

शाम को बापू बालकृष्ण-मंदिर में पहियेवाली कुर्सी पर बैठकर गए और बरामदे का एक चक्कर लगाया। मुझे बा की याद आ गई। ईश्वर बापू को दीर्घायु दे और अन्त तक उनकी सब शक्तिया कायम रखे, यही मेरी प्रार्थना है ।

१८ अप्रैल '४४

बापू की आज बुखार की बारी थी, पर बुखार नही आया। कुनीन की तीन मात्रा लीं। कुनीन तो लेते ही है, दूध लेना भी शुरू किया है। शाम को वे कुर्सी पर बैठकर समाधि-स्थान पर आए। वहा से लौटकर थोडी देर नीचे ही-हवादार स्थान में बैठे। सब सामान नीचे लाए। सिपाहियो की लालटैन ली और प्रार्थना की, किन्तु लालटेन का तेल कम होने से रामायण की एक ही चौपाई हो सकी ।

कर्नल शाह बाहर गये हुए है, इसलिए भण्डारी को रोज यहा आना पडता है ।

रात मे सख्त गर्मी पडी। अब तो ऋतु-परिवर्तन-सा हो गया है और गर्मी के दिन आरम्भ हो गए है ।

: ८० :

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

१९ अप्रैल '४४

आज सुबह बापू ने कुनीन नही ली। उन्हे चक्कर-से आने लगे है और कम सुनाई देने लगा है। कहते थे कि मेरा सिर चकराया हुआ-सा महसूस होता है। कुनीन बन्द कर देना चाहते थे। बहुत समझाने-बुझाने के बाद उन्होने और दो दिन तक तीन-तीन ग्रेन की मात्रा में कुनीन लेना स्वीकार किया था, किन्तु आज फिर छोड दिया। बुखार नही आया और सुबह-शाम चलकर समाधियो तक गए। थकान महसूस नही हुई।

रात में सोते समय भी कुनीन की ही बातें करते रहे। कुनीन लेना उन्हे अच्छा नही लगता ।

२० अप्रैल '४४

सुबह प्रार्थना के बाद बापू सोए नही। दोपहर को अच्छी नीद ली। दोपहर के भोजन के बाद बापू भाई से बोले, "मुझे लगता है कि मनु की भलाई अब उसे यहा से भेज देने मे है। वह बा की खातिर आई थी, सो अब वह बात तो रही नही। मेरी सेवा के लिए रखने का तो कभी सवाल था ही नही। मुझे सेवा की आवश्यकता भी नही है। रहा उसे उसके अभ्यास के लिए यहा रखने का प्रश्न, सो मुझमें अब वह आत्म-विश्वास नही है जो पहले था कि मै उसे बहुत कुछ दे सकूगा। इसलिए उसे रखने का

उत्साह नही होता। मै मानता था कि वह जो मुझसे पा सकती है, वह कहीं से नहीं पा सकती, मगर आज मैं टूट गया हूं। मै मानता था कि मुझे मलेरिया कभी नहीं आवेगा, तुम सबको भले ही आ सकता है, मगर मेरा वह घमण्ड दूर हुआ। मैंने हमेशा माना है कि मनुष्य बीमार पडता है अपने पाप के कारण। जिसका अपने मन पर पूरा काबू है, जिसका मन पूर्णत स्वस्थ है, वह बीमार नहीं पड सकता। मैं कहा हूँ, यह नहीं जानता, मगर अपने-आपको जहा मानता था, वहा तो नहीं हू। इस विचार ने आज मुझपर काबू पा लिया है। मेरे मन की कैसी दयाजनक स्थिति है, वह तुम लोग नही जानते हो।"

मैंने कहा, "यह तो मलेरिया के कारण आई हुई कमजोरी और कुनीन का असर है। थोडे दिनो में यह सब दूर हो जाएगा। शरीर में शक्ति आवेगी और उदासी चली जाएगी।"

बापू बोले, "शरीर में शक्ति भले आ जावे, मगर पहले-जैसा आत्मविश्वास कैसे वापस आ सकता है।"

मैंने उत्तर दिया, "मलेरिया तो आपको पहले भी आ चुका है—सेवाग्राम में, साबरमती में, चम्पारन में। उससे तो आप निराश नही हुए। फिर ऐसा क्यों सोचते है? उसके बाद भी तो आपने बडे-बडे काम किये है।"

बापू कहने लगे, "काम तो अब भी करूंगा। चम्पारन में मलेरिया आया था, तब से लेकर आज पच्चीस वर्षो में क्या मैंने कुछ भी प्रगति नही की? मै मानता था कि मै उस स्थिति से बहुत आगे बढ गया हूँ, मगर अब उस मान्यता के विषय में शक पैदा हो गया है।"

भाई ने समझाया, "आध्यात्मिक दृष्टि से तो आप आगे बढे है, पर समय के बीतने के साथ-साथ शरीर जीर्ण भी तो होता है न।"

बापू बोले, "नही, शरीर दुर्बल भले हो, लेकिन जिसने अध्यात्म में प्रगति की है, वह बीमार नही पडता। उसकी सब शक्तिया और स्वास्थ्य अन्त तक कायम रहते है।"

भाई ने कहा, "दूसरे शब्दो में वह जीवन्मुक्त हो जाता है। मैं आपकी बात समझता हूँ। यह तो एक तरह की सिद्धावस्था की बात हुई, सो उसतक आप नही पहुँचे।"

बापू कहने लगे, "सिद्धावस्था की भी बात नही है। हा, जहा तक मै अपने को पहुँचा हुआ मानता था, वहा तक नही पहुँच पाया हूँ।"

मै बोली, "आप किसी भी पहुँचे हुए, अत्यत सयमी, पूर्ण स्वस्थ मन वाले व्यक्ति को लाइये, मैं उसे मलेरिया का बुखार चढा देने का ठेका लेती हूँ। एक दफा नही तो दस दफा मच्छरो के काटने से उसे मलेरिया होगा और वह कुनीन से उतर भी जावेगा।"

बापू ने कहा, "इस बुद्धिवाद से तू मेरी मान्यता को हिला नही सकेगी। मै जानता हूँ कि अपनी बात सिद्ध करने के लिए मेरे पास सबूत नही है, तो भी मेरी वर्षो की यह मान्यता है कि जिसका मन पूर्णत स्वस्थ यानी स्वच्छ है, उसका शरीर स्वस्थ रहना ही चाहिए।"

दोपहर को बापू ने दही लिया और शाम के समय दूध तथा सबेरे केवल फल का रस लिया। तबीयत ठीक है, पर कमजोरी बहुत आ गई है।

शाम को बापू ने जेल-बदली और मनु को छुडवाने के विषय में सरकार को पत्र लिखा। मनु वाला पत्र मनु के आग्रह के वश नही भेजा।

२१ अप्रैल '४४

सुबह प्रार्थना के बाद बापू सोए नही। रात को अच्छी नीद ली।

बापू ने कल कुल मिलाकर एक पौण्ड भोजन लिया था; दूध-दही मिलाकर आज सवा पौण्ड लिया। चीजें सब कल की जैसी ही थी। सुबह मोसम्बी का रस, दोपहर को दही और शाम को दूध। कुनीन खाने का कोर्स आज पूरा हो गया।

शाम को सरकार द्वारा भेजे हुए बा की मृत्यु के सम्बन्ध में सहानुभूति-सूचक बहुतसे पत्र आए। बा पर लिखी हुई टॉमस की किताब भी आई है। पहले ही पन्ने पर लिखा था कि बा के तीन ही लड़के जीवित हैं—रामदासभाई को उन्होने छोड ही दिया है। अन्दर कितना सही लिखा होगा, वह कौन जाने। सुबह-शाम जितनी शक्ति हो, उतना बापू ने चलना आरम्भ किया, मगर बहुत चलने की शक्ति उनके पैरो मे नही। बस एक चक्कर बगीचे का लगाया। बापू के लिए नई टार्च आई है। कल २२ तारीख है और बा के जाने का दिन है।

२२ अप्रैल '४४

आज बा की मत्यु का दिन है। उन्हे गए दो महीने पूरे हो गए है। बा के बिना बापू को अपना जीवन बिताना आज भी करीब उतना ही कठिन है, जितना कि बा के जाने के बाद पहले हफ्ते मे था। शायद ही बापू पूरी तरह से वैसा कर सके। उनके मलेरिया-ग्रस्त होने में एक कारण यह भी है। बा के चले जाने से उनका शरीर इतना दुर्बल हो गया कि मलेरिया का सामना करने की शक्ति बहुत कम हो गई। सो मलेरिया आया।

प्रात ८ बजे फूल चढाने गए, लौटकर सीधे ऊपर आए—बगीचे में एक भी चक्कर नही लगाया। पहले दिन की दो खूराको से ही उनका बुखार उतर गया। वे मानते हैं कि बाद मे दी हुई कुनीन अनावश्यक थी।

बापू ने कुल मिलाकर ३६ ग्रेन कुनीन ली, जो कि सामान्य मनुष्य के लिए एक दिन की खूराक है, पर बापू उसे भी अधिक मानते हैं। पहली खूराक के ३ ग्रेन जो उलटी मे चले गए थे, निकाल दें, तो उन्होने ३३ ग्रेन कुनीन खाई।

बा की स्मृति मे कैदियो को सब्जी, कढी और खिचडी खिलाई गई। सिपाहियो ने भी खाया-पिया।

दोपहर बाद ३ से ४ बजे तक सबने काता। डा० गिल्डर ने एक घटे मे ११० तार निकाले। यह बडी अच्छी प्रगति है।

शाम को ७ ३५ से ९ बजे तक प्रार्थना, रामायण और गीता-पारायण हुआ।

२३ अप्रैल '४४

आजकल खूव लू चलने लगी है। वापू के कमरे में परसाल की तरह दोनो ओर खस की टट्टी लगी रहती है। परसाल जव वा को वापू के कमरे में लगी टट्टियो की ठढक न सहन हो सकी और जव वापू ने देखा कि वा भाई के कमरे में सोने जाती है तो खुद गरमी सहन करना पसन्द किया और कमरे की टट्टिया निकलवा दी थी।

वापू की देसी मच्छरदानी इतनी मोटी थी कि उसमें हवा भी ठीक से न जा पाती थी, इसलिए श्री कटेली से कहकर दूसरी वारीक कपडे की मच्छरदानी वनवाई है। वहुत अच्छी है।

वापू ने सुवह-शाम समाधि पर जाने का समय ८ वजे का रखा था, मगर सुवह खूव धूप होती है, इसलिए कल से पौने आठ या उससे भी जल्दी आया करेगे। दो-तीन रोज से, जव से वापू समाधि पर आने लगे है तव से वगैरह सिपाही समाधियो को हमारे आने से पहले अच्छी तरह सजा रखते है, पर आज वापू कहने लगे, "अपने हाथ से सजावट करना ज्यादा अच्छा लगता है।" इसलिए मैंने कल से सुवह साढे सात वजे जाकर फूल सजाने का निश्चय किया है।

मेरी भजनावली की जिल्द टूट गई थी। वापू की वताई हुई विधि से सुधारी जाने पर अव वह अच्छी वन गई है। महादेवभाई ने इसे मुझे भेंट किया था। उनके अवसान पर उनकी जेव से एक गीता निकली थी, जो मेरे ही पास है।

वापू में अव काफी शक्ति आ गई है, इसलिए घूमते समय खूव हसी होती रही। वे अच्छी तरह घूमे।

भण्डारी के आने पर वापू ने पूछा कि छत पर जाने के विपय में वे क्या कहते है। भण्डारी ने कहा कि छत पर से मधुमक्खिया उडा दी जाए तव जाया जा सकता है।

वाद में मधुमक्खियो की ही चर्चा होती रही।

२४ अप्रैल '४४

आज वापू का मौन है।

मेरी आख दुखती थी, इसलिए खाने के वाद आख पर मिट्टी रखकर सो गई। वडा फायदा हुआ।

भाई की रामायण की जिल्द सुधारी और रात को टॉमस की किताव पढनी शुरू की।

वा की मृत्यु पर सहानुभूति के पत्रो का एक ढेर और आ गया है, जिसे वम्वई सरकार ने भेजा है।

२५ अप्रैल '४४

वापू पौने आठ वजे फूल चढाने गए और सवा आठ वजे वापस आए। शाम को भी इसी तरह आधा घटा घूमे। दोपहर को वा के विपय में लिखी टॉमस की किताव मैंने पूरी कर ली और कुछ डाक्टरी का अभ्यास किया।

२६ अप्रैल '४४

आज शाम को १५ मिनट डा० गिल्डर से फ्रेंच सीखी। भाई का आग्रह था कि सस्कृत तो है ही, फ्रेंच भी सीखनी चाहिए।

२७ अप्रैल '४४

आज मैंने भण्डारी से बापू के रक्त की परीक्षा कराने तथा हृदय की धडकन का फोटो लेने के लिए कहा। आजकल बापू का रक्तचाप बहुत कम रहता है। चढाव पर १४० के आसपास और उतार पर ८०-९० के बीच है, इसलिए दिल की धडकन का फोटो लेना अच्छा है।

भडारी कहने लगे, "कुनीन का असर तो यह नहीं है?"

डा० गिल्डर ने कहा, "नही, कुनीन तो उल्टी नाडियो को सिकोडती है, इसीलिए तो कुनीन से अन्धापन हो जाता है।" इसपर से नस में कुनीन देने की बात चली और पेशाब मे शक्कर आने की बाते भी होती रही।

भण्डारी बापू से बिना मिले ही चले गए। बापू उस समय स्नान-घर में थे। भाई ने बापू को स्नान करा दिया था। मैंने कपडे धो डाले।

मैंने मसानी की किताब पूरी कर ली है। मनु के साथ 'मार्गोपदेशिका' पढना शुरू किया और १५ मिनट तक डा० गिल्डर के साथ फ्रेन्च भी सीखी।

प्रार्थना के बाद बापू का रक्तचाप १२६।७८-८० रहा। यह बहुत कम है। मैंने बा के स्मरण लिखने शुरू किये है। मै उनके इतना निकट रही हूँ कि यही नही तय कर पाती कि क्या लिखू और क्या न लिखू। ज्यो-ज्यो विचार आते है, लिखती चली जाती हूँ। बापू जब देखेंगे तब पता चलेगा कि उसमें कुछ तथ्य है या नही।

२८ अप्रैल '४४

सुबह भण्डारी आए तो पूछने लगे कि बापू का खून परीक्षा के लिए कब भेजोगे? डा० गिल्डर ने बताया कि डा० नरोना रक्त-परीक्षा करने आ रहे है, तभी वह भी कर लेगे। इसलिए दो-दो बार बापू के शरीर में सूई क्यो चुभोई जाए?

भण्डारी ने जाकर इन्तजाम किया। श्री कटेली ने बताया कि डा० नरोना बारह बजे आवेगे। भण्डारी उसे लेकर करीब साढे बारह बजे आए और नरोना ने परीक्षा के लिए बापू का रक्त लिया।

बा की मृत्यु पर लिखे गए बहुत-से समवेदनात्मक पत्र आज फिर आए। जल-सेना के एक अफसर के पत्र में लिखा है— "आज मै ऐसे धन्धे में पडा हूँ कि आप कल्पना तक नही कर सकते कि मै आपका कितना बडा भक्त हूँ। आपकी तरफ देखता हूँ और आपके आदर्श को मानता हूँ। इस लडाई के अत पर बहुत-से लोग यहा ऐसे है, जो आप पर आशा लगाए बैठे है।"

साढे चार बजे शाम को भण्डारी के कथनानुसार श्री कोयाजी की मशीन आई।

वापू के दिल की धडकन का फोटो लिया गया और मशीन वापस गई । छ वजे ही खवर मिल गई कि कोई नया दोष नहीं है । हृदय के वाएँ तरफ का जोर तो पुरानी चीज है ।

२९ अप्रैल '४४

प्रात ५ वजे वापू प्रार्थना के लिए उठे । उस वक्त रोज की तरह शहद और पानी पिया । नाश्ता छोडा, खाट पर पडे रहे । यूरिया क्लीयरेस टेस्ट* के लिए डा० गज्जर आने वाले थे, पर सवा आठ वजे श्री कटेली ने कहा कि फोन किया गया था, लेकिन डा० आए नहीं । वापू को नाश्ता करवा दिया जाय । इतने में डा० गज्जर अपने दो सहायको के साथ आ पहुँचे । वापू का पेशाव इकट्ठा किया और साढे नौ वजे वापू का खून लिया । खून की सामान्य परीक्षा यही कर ली गई । हेमोग्लोवीन (Haemoglobin) ८५ प्रतिशत, आर वी सी ३७ लाख । मेक्रोसिटिक एनीमिया (Macrocytic anaemia)† लगता था ।

खून की रासायनिक जाच के ख्याल से डा० गज्जर वगैरह ने पौने ग्यारह वजे की गाडी से जाने का विचार किया, इसलिए मनु ने उन्हे नाश्ता कराकर भेजा। उनका नौकर वापू का पेशाव लेकर दोपहर की गाडी से जाएगा ।

: ८१ :

सरकार की चिंता

साडे दस वजे वापू को सतरे का रस दिया । वाद में जव वे भोजन कर रहे थे तव थके-से लगते थे । अभी खा ही रहे थे कि १२॥ वजे श्री कटेली आए और वोले कि जनरल कैण्डी आए हैं । मैं नोटवुक लेकर उनके पास गई और उन्हें वापू का सारा हाल वताया । इतने में डा० गिल्डर भी आए । कैण्डी ने आकर वापू को देखा और ज्यादा मात्रा में कुनीन खाने और 'आयरन टानिक' लेने को कहा । वापू की खूराक कैसे वढे, यह भी समझाते रहे । कुछ देर वाद वे कहने लगे, "देखने में तो खासे अच्छे दिखते हैं, मगर उसका कुछ महत्त्व नही है । अगर रक्तचाप १४० डिगरी से नीचे न जाए तो चिन्ता की वात नहीं ।"

उन्हे लगा कि वापू को शायद इन्फ्लुएन्जा हुआ होगा, मगर हमने वताया कि खून में मलेरिया के जन्तु मिले है । टानिक वगैरह देने की वात करके वे चले गए ।

दोपहर के समय मैंने अखवार में देखा कि वापू की वीमारी के कारण सरकार

* गुर्दो की खून मे से यूरिया निकालने की गति

† रक्तहीनता का एक प्रकार का रोग

बहुत घबरा गई है।

आज ९ बजे रात को बत्तिया बुझाकर हमे मच्छरदानी में घुस जान का हुक्म मिला। शहद की मक्खियो को भगाने के लिए आदमी आया है।

३० अप्रैल '४४

बापू ने 'हाउ ग्रीन वाज़ माइ वैली' पढकर पूरी कर ली। मेरे पूछने पर बोले, "अच्छी है, मगर तू न कहती तो मै अपने-आप इसे पढने वाला न था। यह किताब ऐसी नही है कि न पढा हो तो ऐसा लगे कि कुछ रह गया।"

रात को खबर मिली कि कल डा० बिधान राय बापू को देखने आवेंगे। पाच बजे की गाडी से आकर आठ बजे की गाडी से वापस जाना चाहते है। यहा साढे पाच बजे सुबह आने वाले थे।

कल से बापू ने प्रार्थना मे रामायण की एक चौपाई नियत कर दी है, बाद में उसका अर्थ गुजराती में कर देने का आदेश दिया है, ताकि डा० गिल्डर भी अच्छी तरह चौपाई को समझ सके।

१ मई '४४

डा० बिधान राय ५।। के बजाय ७ बजे आए। कहने लगे, "कल मै यहा से गुजरा था तब मुझे नही बताया गया कि बापू को देखना है।" भण्डारी ने कहा, "मैंने तो कल कहा था न कि ग्यारह बजे तक ठहरो, मगर आप ठहरे ही नही।" डा० बिधान राय बोले, "उपवास के बाद के कडुवे अनुभव के बाद मै इस तरह कैसे ठहर सकता था।"

डा० बिधान राय ने बताया कि बापू को छोडने के लिए विलायत में बडी हलचल हो रही है। हिन्द-मत्री को समाचार मिला है कि बापू अस्वस्थ है। दूसरे ही दिन श्री कैण्डी की रिपोर्ट छपी कि 'बापू पहले से अच्छे है। रक्तचाप और रक्तहीनता की दशा पिछले २४ घटो में काफी सुधरी है।' पिछले वाक्य से लोगो, खासकर डाक्टरो को अवश्य ही लगा होगा कि रिपोर्ट विश्वास के लायक नही है। रक्तहीनता एक ही दिन में कैसे सुधर सकती है? डा० गज्जर की रिपोर्ट छपी कि गुर्दे अच्छी तरह काम नही कर रहे है। इसपर डा० बिधान राय ने पूछा, "हमें ठीक-ठीक बताना था कि क्या हाल रहा बापू का?" भण्डारी ने कहा, "मैने तो कई बार कहा था कि आप आवे।" खैर जो कुछ भी हो, डा० बिधान राय आए, यह हमें अच्छा लगा।

बापू को देखकर वे हम लोगो से सलाह करने बैठे। डा० गज्जर को वे कल फिर बुला रहे है। 'यूरिया क्लीयरेन्स' फिर करावेगे और कुछ दूसरी परीक्षाए करेगे। तब अपनी रिपोर्ट देगे।

पौने आठ बजे डा० बिधान राय चले गए। डा० गज्जर की रिपोर्ट से जनता में कुछ चिन्ता बढ गई। आशा है कि गुर्दो पर यह असर स्थायी नही रहेगा।

मनु की उँगली पर 'व्हिटलो' होने की तैयारी है। मैंने और डा० गिल्डर ने बापू

के लिए आख का डाक्टर और मालिश के लिए दीनशा को भेजने के लिए भण्डारी से कहा ।

२ मई '४४

डा० गज्जर अपने सहायको के साथ छ बजे सवेरे आए । ६-२० पर बापू उठे, तब उनकी परीक्षा करके वे लोग सवा आठ की गाडी से वापस गए । साढे आठ बजे पेशाब लेकर जमादार ११-३० की गाडी से गया ।

कल फिर २४ घटे का पेशाब लेकर जाना पडेगा ।

बापू जब खाना खा रहे थे तब भण्डारी आए । कहने लगे, "आख का डाक्टर भेजेंगे । दीनशा के बारे में पुछवाया है ।" शाम को खबर मिली कि दीनशा आ सकेगे । मैने बापू से पूछा, "दीनशा यहा कितने समय तक ठहरेगे ?" बापू बोले, "मै इस तरह बधना नही चाहता । बाधोगे तो मुझे दीनशा नही चाहिए । आवेगा तो जितना समय उसे आवश्यक लगेगा, रहेगा ।"

जेल-बदली के विषय में बापू को भण्डारी ने बताया कि विचार किया जा रहा है । बाद में डा० गिल्डर से कह रहे थे कि क्या १०० मील का मोटर-सफर कर सकेगे ? सोचा कि क्या अहमदनगर ले जावेगे ? अगर ऐसा हो तो किस-किस को साथ ले जावेगे ? वहा बापू को वर्किंग कमेटी के साथ रखेंगे या नही ?

दोपहर को बापू का रक्तचाप १२६।७८ और रात में १३४।७६ रहा । थोडा ज्यादा रहे तो अच्छा हो ।

यहा से बदली करने के बारे मे बापू कहने लगे, "ये लोग दूसरी चीजो पर करोडो रुपए व्यर्थ ही जाया करते है, इसलिए मेरे पर भी कुछ करे तो क्या हुआ—यह दलील गलत है । मै हिन्दुस्तान का पैसा इस तरह से क्यो खर्च कराऊँ ? ये लोग अपनी जेब से कहा निकालते है ? निकलता तो सब मेरी ही जेब मे है न, हिन्दुस्तान की जेब से ही तो ! यहा दो मृत्युएँ हुई है, इसीलिए ये मुझे यहा से हटाने की बात करते है । मगर मेरे सामने वह सवाल नही । उलटा उस कारण से तो मुझे यह जगह प्रिय है । समाधि पर जाना मुझे अच्छा लगता है, मगर हिन्दुस्तान का पैसा बचाने के लिए मै वह त्याग करने को तैयार हू । मलेरिया का भी मेरे सामने सवाल नही । हिन्दुस्तान में ऐसी कौनसी जगह है, जहा मलेरिया न हो ? मेरे सामने एक ही सवाल है—खर्च का । वह कम होना ही चाहिए ।"

मुलाकातो के बारे मे बापू कहने लगे, "मैने अपने लिए एक नियम बना रखा है, इसलिए केवल रिश्तेदारो से ही मै नही मिलना चाहता । बा की बात और थी ।"

अपनी बीमारी के कारण छूटने के विषय में बोले, "इसमें मुझे रस नही है । बा के जाने का मुझे बहुत आघात पहुँचा है । अभी तक है, मगर बुद्धि से मै जानता हू कि बा के लिए इससे अच्छी मृत्यु हो ही नही सकती थी । जो बात बा को लागू होती थी, वह मुझे भी लागू होती है । इसका यह अर्थ नही कि मै मरना चाहता हूँ । मै जिन्दा रहना चाहता हूँ और भगवान से मागता हू कि मुझे यहा से जिन्दा बाहर ले जाए और जब मै

बाहर जाऊँ तब मेरे लिए कार्य-क्षेत्र तैयार हो। बीमार होकर निकलना मुझे चुभता है। सत्याग्रही को वह शोभा नही देता और आज की परिस्थिति मे मैं निकलकर करूँगा भी क्या ?"

मैंने कहा, "पहले तो शरीर को फिर से सगठित करना होगा। अपेण्डिक्स के आपरेशन के बाद उसी तरह जाना पडा था न।" बापू बोले, "सरकार छोड ही दे तो मैं क्या कर सकता हूँ, मगर मुझे यह अच्छा नही लगता। इस हालत में बाहर जाकर मैं चुपचाप पडा भी नही रह सकता।"

३ मई '४४

दोपहर को भण्डारी आख के एक डाक्टर को लाए। उन्हे 'फण्डस' (Fundus*) मे कुछ मिला नही। बात-बात में पता चला कि डा० ने मेरे कालेज की एक पजाबी लडकी से शादी की है। उसके जाने के बाद बापू पूछने लगे कि क्या डा० पजाबी था ? मैंने कहा, "हा पजाबी ही तो लगता है।" वे बोले, "मैंने उसके साथ हिन्दुस्तानी में बात शुरू की, मगर वह शाहजादा तो अग्रेजी ही चलाता रहा। अगर जरा भी बैठता तो मैं डाटने वाला था कि हिन्दुस्तानी जानते हो या भूल ही गए हो ?"

सुबह बापू की मालिश करने के लिए दीनशा आए। मालिश के द्वारा शक्ति किस प्रकार एक शरीर से दूसरे शरीर में भेजी जा सकती है, इसपर बाते होती रही।

मुलाकातो के बारे में बापू ने सरकार को लिखा है कि पिछले साल की तरह मुलाकाते देनी हो तो आश्रमवासियो, मित्रो तथा रिश्तेदारो—सबको देनी चाहिए। केवल रिश्तेदारो से मैं मिलना नही चाहता।

बापू के अदर जितना पानी पहुचता है और जितना निकलता है, उसमें ४०-५० औंस का फर्क दो रोज से मिलता है।

आज बापू का २४ घटे का पेशाब जमादार... डा० गज्जर के पास बम्बई ले गया। उनकी रिपोर्ट आने पर हम अपनी रिपोर्ट भेजेंगे।

भण्डारी बता गए है कि कनु आ रहा है।

४ मई '४४

आज डा० गिल्डर के पेशाब में 'एल्ब्यूमिन' पाया गया है। बापू ने मुझे भण्डारी को इस बारे मे लिखने को कहा।

बापू की बदली को लेकर अनेक अफवाहे उड रही है। देखें, आखिर क्या होता है। दोपहर को कनु आ गया। कह रहा था कि बा के स्मारक-फण्ड के विषय में कठिनाई हो रही है।

---

*आख के भीतर का एक अवयव

: ८२ :

रिहाई की खबर

५ मई '४४

प्रात रोज की तरह पौने पाच बजे प्रार्थना के लिए उठे। फिर कल की डायरी लिखी। रात को शहद की मक्खी उडाने वाले फिर आए थे, इसलिए रात को लिख न सकी थी। स्नान आदि करके नीचे जाने के लिए उठे तो बापू की घडी में पौने आठ बज गए थे। साथ-साथ नीचे गए। समाधि पर प्रार्थना करने के बाद थोटा घूमे। सवा आठ बजे ऊपर आए। बापू की मालिश करने मेहता आए। उस समय डा० गिल्डर ने और मैंने बापू को लोहा सेवन करने की सलाह दी। डा० गिल्डर मेरी तरफ देखकर हँसकर कहने लगे, "यह छोटी-सी लडकी आपको लोहे के चने चबवाने वाली है क्या ?" बापू ने दवा मगाने की इजाजत दे दी, खाने या न खाने का निश्चय बाद में करेंगे। मगर मगवाई है तो खाएगे ही--ऐसी आशा है।

डा० गज्जर की रिपोर्ट कल आ गई थी, इसलिए उसके आधार पर चार बजे शाम को मैं अपनी रिपोर्ट लिखने बैठी, ताकि गिल्डर का और मेरा मत सरकार को भेज दिया जाय। पत्र तैयार करके डा० गिल्डर को दिया, जिससे उनके सुझाव भी जाने जा सके। बापू का एक्सरे कराने के लिए भी हमने भण्डारी को एक पत्र डाला। हमारी रिपोर्ट कल सरकार को भेजी जावेगी। छ बजे खेल के बाद बापू को खाना दिया। मैं खाने बैठने ही वाली थी कि भण्डारी आए। आश्चर्य हुआ कि इस समय क्यो आए है! कुछ पहले ही सब कैदी भेज दिये गए थे। उन्हे आज जल्दी जाने का हुक्म था।

भण्डारी अचानक बापू के पास आकर बैठ गए और कहने लगे, "कल सुबह आठ बजे आप लोगो को बिना शर्त छोड दिया जायगा।" हम सब हैरान हो गए। बापू बोले, "आप मजाक तो नहीं कर रहे है ?" भण्डारी ने उत्तर दिया, "नहीं जी, आज पत्र आया है। अब दया करके फिर वापस न आना। देखिए, चिन्ता के कारण मेरे तो बाल भी सफेद हो गए है।"

बापू हसकर बोले, "मै कहा आता हूँ। सरकार लाती है।"

छूटने की खबर सुनते ही मेरे मुह से निकला, "तीन महीने की देर हो गई। अगर तीन महीने पहले बापू को मलेरिया होता और वे छूट जाते तो शायद आज बा जिन्दा होतीं !" बापू ने कहा, "हा, वह बिलकुल सम्भव था।"

बापू तो इस खबर से बिलकुल घबडा-से गए। एक तो बीमारी के कारण उन्हे छूटना अच्छा नही लग रहा है। दूसरे, वे कहते है कि बाहर जाकर करूगा क्या ! एक बार

कहने लगे, "क्या यह सचमुच सेहत के ही लिए है ? मुझे इसमें शक है।" फिर कहने लगे, "नही, वस हमे यही मानना चाहिए कि जो वे लोग कहते हैं, वही सही है। वे मुझे सेहत के कारण ही छोड रहे है।" हम लोग खाना खाने बैठे और तव समाधि पर गए। प्रार्थना के समय जोर की वर्षा हुई। मुझे लगातार वा का विचार आने लगा। उन्हे कितना शौक था वाहर जाने का ! मगर उनके नसीव में यहा शहीद होना लिखा था। आगाखा महल मे मृत्यु पा कर उन्हे जगदम्वा होना था। और आखिर तो वे मा थी न ! शायद उन्हे लगा हो कि महादेव को विल्कुल अकेले कैसे छोडा जा सकता है।

श्री कटेली प्रार्थना के वाद वापू को प्रणाम करने आए। सुवह तो अफसर वन कर खडे रहना पडेगा, सो अभी आकर वापू का आशीर्वाद लिया। उनके हर्ष का पार नही है। वे हमेशा यही कहा करते थे, "सव लोग यहा से अपने-अपने घर जावे तो मुझे अच्छा लगेगा। दूसरी जेल में जाना, विखर जाना, मुझे अच्छा नही लगता। सव लोग मेरे लिए तो विलकुल कुटुम्वीजन-से हो गए है, इसलिए मन में रहता था ही कि किसी दूसरे सुपरिटेण्डेण्ट से वास्ता न पडे तो अच्छा है। खैर, अव उसका तो सवाल ही नही रहा।" उन्होने वापू को सुवह प्रार्थना के लिए जगाने को कहा। वोले, "सुवह नहाकर प्रार्थना करनी चाहिए।" डा० साहव ने भी उन्हे उठाने को कहा। मनु वडी ही खुश है। उसे हमेशा यह डर लगा रहता था कि न जाने कव वापू से अलग कर दी जाय। कहती थी, "मै हमेशा समाधि पर जाकर प्रार्थना करती थी कि महादेवभाई और वा आशीर्वाद दे कि मुझे वापू से अलग न होना पडे। ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली।"

मगर वापू को कोई हर्ष नही है। गम्भीर विचार मे पडे है। वोले, "मेरा सिर चकरा रहा है।" मैने कहा, "वापू, वाहर जाकर वडी सम्भाल रखनी पडेगी।" वे कहने लगे, "मै जानता हूँ। वाहर जाकर मुझपर सव तरफ से प्रहार होने वाले है। यहा की शान्ति अव खतम हुई। मुझसे जितना वन पडेगा, उतना आराम तो लूगा, मगर कुछ आराम तो छोडना पडेगा ही।"

श्री कटेली प्रार्थना में हमारे साथ रामायण पढा करते थे, इसलिए रामायण की एक नकल, जो देवदासभाई लाए थे, वापू ने उन्हे दे दी। कनु ने एक भजनावली और भाई ने 'एपिक फास्ट' की एक प्रति कटेली को दी। वापू का एक फोटो भी उन्हे दिया गया। सव वस्तुओ पर कटेली की इच्छानुसार वापू ने दस्तखत कर दिये। वापू ने पहले ही पुछवा लिया था कि चीजें दस्तखत के साथ हो या विना दस्तखत के ? वापू की मालिश के वाद हम लोग अपना सामान वाधने लगे। वापू ने नोटिस दिया था कि कल सुवह पौने आठ वजे सव कुछ तैयार रहना चाहिए। एक मिनट भी अधिक नही मिलेगा। तीन वजे तक सवका सामान वधकर तैयार हो गया। वापू का सामान, खाने का सामान अ।र दवाइया वगैरह सम्भालने में वडा समय गया। भाई का सामान तो सवेरे ही वाधा जा सका। चार वजे नहा धोकर मै खाट पर पडी और पौने पाच बजे प्रार्थना के लिए उठी। एक मिनट भी नीद नही ली।

“सबने प्रार्थना के पश्चात समाधियों को अन्तिम बार हिंदी ढंग से प्रणाम किया।” पृष्ठ ८५३

आखिरकार दरवाजे खुले।

: ८२ :

रिहाई

६ मई '४४

प्रात पौने पाच वजे मव लोग प्रार्थना के लिए उठे। भाई का सामान वध रहा था। कनु खूब नींद में था। चार वजे तडके सोया था। मनु भी थोडी ही सोई थी। वापू ने भी रातभर में आध-पौन घटे की ही नींद ली थी। सव लोग स्नानादि करके प्रार्थना करने आए और 'वैष्णवजन ' वाला गीत गाया। कल रात 'हरि ने भजता' गाया था। मीरावहन ने 'ह्वेन आइ मर्वे दि वण्डरस क्रॉस' गाया था। आज प्रार्थना के समय वे नहीं उठीं।

प्रार्थना के वाद श्री कटेली ने वापू को ७५) भेंट किये। वहुत खुश थे। कहने लगे, "आप वाहर जावेंगे तो अनेक लोग भेंटें लावेंगे, मगर सवसे पहले कटेली की भेंट आपके हाथ में पहुँची है।"

प्रार्थना के वाद मैंने कटेली से विदा ली और भूल-चूक के लिए माफी मागी। उनकी आखो में पानी आ गया। विवेक की भाषा में वोले, "माफी तो मुझे मागनी चाहिए।" प्रार्थना के वाद वापू सोए नहीं, एकदम तैयार हो गए। कटेली ने चाय तैयार की थी। उसमें से केवल मैंने ही ली। दूसरे लोग दूध लिया करते हैं। हम सवने वचा हुआ सामान वाधा और व्यवस्थित कर लिया।

साढे सात वजे समाधि पर गए। आज की प्रार्थना में 'नम्यो हो', 'ईशावास्य-मिद सर्व', 'असतोमासद्गमय', 'अउज-अ-विल्ला', 'मजदा' और 'ओ गॉड अवर हेल्प इन एजेज पास्ट' आदि सभी भाषाओं के भजन और गीता का १२वा अध्याय पढने का कार्यक्रम चला। सवने प्रार्थना के पश्चात् समाधियो को अंतिम वार कैदी-ढग से प्रणाम किया। मेरे हृदय से निकला, 'वा, वापू की रक्षा करना। उन्हे सेहत, दीर्घायु और पूर्ण विजय देना। महादेवभाई, वापू की रक्षा करो और मुझे अपनी ही भाति वापू की सेवा करने की योग्यता और उन्हींकी गोद में कूच कर सकने का वरदान दो।'

पौने आठ वजे भण्डारी आए। आठ वजे के पहले छूटना नहीं था। वातें करते रहे। मैंने यह देखना चाहा कि अपने साथ कौन कौन-सा सामान ले जाऊंगी। सामान देखने पोर्च में गई। देखा कि वहा कलक्टर और एक पुलिस का अफसर वैठा है। मुझे साथ में सामान क्या लेना चाहिए, इसकी चर्चा करते देखकर पुलिस वाला वोला, "आधे घटे में सारा सामान आपके पास पहुच जायगा।"

भण्डारी की मोटर में वैठकर मैं वापू के साथ तार के अहाते के वाहर निकली

ही थी कि एक सिपाही ने कार खडी कराई और मुझे एक नोटिस दिया । नोटिस में लिखा था--"आगाखा महल में जो कुछ हुआ है, उसकी चर्चा करने के बारे में तुम्हे मनाही है।" सिपाही ने मुझसे इसपर दस्तखत करने को कहा । मैंने बापू की ओर देखा। बापू ने कहा, "कर दे।" मैंने कर दिये। बापू बाद मे कहने लगे, "यह तो मुझे भी दस्तखत करने के लिए दे सकता था, क्यो नही दिया सो पता नही।" मैंने कहा, "बेचारे अधिकारी डरते होगे कि कही आप यह कहकर अड न जाएँ कि 'तब तो मुझे जाना ही नही है', तब वे क्या करेगे ? हा, एक बात बताइये, इस तरह के हुक्म को हम कैसे स्वीकार कर सकते हैं?" बापू बोले, "पहली बात तो यह है कि दस्तखत किया सो उसका अर्थ यह नही है कि स्वीकार किया और दूसरे यह कि मुझे तुम लोगो से किसी तरह का तूफान नहीं करवाना है।"

बाहर के दरवाजे पर ४०-५० आदमी थे। उन्हींमे शान्तिकुमार, स्वामी आनन्द, जमनादासभाई और सुशीला पै थे । बापू ने किसीको नही देखा। मोटर सीधी हमें पर्णकुटीर लाई । कल भण्डारी ने कहा था, "आप यहा रहना चाहे तो रह सकते है, मगर मेरी सलाह है कि न रहे । यह फौजी इलाका है । अपने लोगो के झुण्ड आने लगे तो किसीके साथ भी झगडा हो सकता है । पर्णकुटीर में मै खबर कर दूगा ।" बापू मान गए, सो हम लोग वही गए । वहा पर बापू के स्वागतार्थ खडे हुए लोगो में से बहुतो को मैं नही पहचानती थी। जमनादासभाई ने बताया कि उन्हे आयगर ने बुलाकर सारा हाल बताया था और यहा इसलिए भेजा था कि मैं बापू से कहू कि वे धीमे-धीमे चले, क्योंकि वे नही समझते कि उनकी हालत कितनी गम्भीर है ।

बापू हसी करते हुए बोले कि मनाही वाले नोटिस के हुक्म की व्याकरण गलत है । मेरे हस्ताक्षर करने के बाद भाई व डा० गिल्डर ने भी मनाही के हुक्म पर दस्तखत किये थे । डा० गिल्डर को पहले कुछ शक हुआ था कि नोटिस पर दस्तखत किये जाय या नही, पर जब भाई ने कहा, "दस्तखत करने में क्या हर्ज है । उससे यह अर्थ थोडा ही निकल सकता है कि हम उसे स्वीकार करते है," तब सबने कर दिया ।

मिलने वाले अधिक-से-अधिक सख्या मे आ रहे थे। कई लोगो ने तो बापू से खूब ही बाते की, यहा तक कि शाम तक बापू एकदम थक गए । सबेरे बापू का रक्तचाप १९२।१०६ था । वे मालिश मे भी नही सोए । दोपहर को एक घटा सोए । उसके बाद रक्तचाप गिर गया ।

यहा पर बेहद गरमी पडती है । आगाखा महल में खस की टट्टियो के कारण बापू का कमरा ठढा रहता था, मगर यहा ऐसा इन्तजाम नही है । उनके बैठने की जगह भी सीढी के सामने ही है । आते-जाते सब उन्हे देख सकते है और पास आकर बैठ जाते है । आराम की दृष्टि से घाटे मे ही रहे ।

शाम की प्रार्थना में देशपाण्डे ने 'हरि तुम हरो जन की भीर' वाला भजन गाया । बापू ऊपर छत पर बैठे थे, लोग सामने नीचे बैठे थे । प्रार्थना के बाद हरिजनो के लिए

चन्दा इकट्ठा किया गया। तव वापू थोडा घूमे।

गरम पानी पीने के लिए वापू वापस आने ही वाले थे कि श्री मुशी और श्रीमती लीलावती, श्री रामेश्वरदास विडला और दूसरे कई लोग आ गए। दस वजे वापू उठे और थोडा-सा घूमे। थोडी देर में पृथ्वीसिंह की पत्नी वगैरह और दो-चार लोग आ गए। उनके जाने पर ही वापू सोने की तैयारी कर सके। करीव ग्यारह वजे मैं वापू की मालिश वगैरह पूरी करके आई। आकर कमरे का सामान ठीक किया। डायरी लिखने वैठी। वारह वजे उठी। सोने को जा रही थी कि देखा—वापू वरामदे में खडे है। वे वाहर खुले में सोए थे, पर मच्छर इतना काटते थे कि सो नहीं सके। मैंने उनका विस्तर भीतर लगाया और मच्छरदानी लगाकर पखा चलाया। मैं स्वय वरामदे में जमीन पर सोई। वेहद गर्मी पड रही थी। खूव मच्छर लग रहे थे।

७ मई '४४

पौने पाच वजे वापू प्रार्थना के लिए उठे। वाद में वे पाखाने गए। तव आकर गादी पर वैठे। थोडा नाश्ता किया। कुछ तार-पत्रो के उत्तर भाई को लिखवाए। घूमने को निकले तो थोडी धूप निकल आई थी। आगाखा महल में, जिसे हम 'शिमला' कहते थे, वहुत देर से धूप आती थी, इसलिए वहा वापू देर तक घूमते रहते थे। वहा सव तरह की सहूलियते थीं। यहा के पाखाने छोटे-छोटे है और वापू के हिसाव से गदे रहते है। पढने के लिए पाखाने में वत्ती कहा से आए? वापू के लिए पाखाना और प्रार्थना-स्थल, दोनो एक-जैसे साफ चाहिए और पाखाने में पढने और किताव रखने का साधन होना चाहिए।

दीनशा ने साढे आठ वजे से वापू की मालिश की और एक घटे से अधिक की। वापू सोते रहे। उनके स्नान करने के लिए कोई टव नही है। एक हौज है। वह इतना लम्वा है कि वापू उसमें नीचे खिसकने लगते थे। एक वार तो दीनशा ने पैर पकडकर और मैंने शरीर थामकर उसमें गिरने से उन्हे वचाया। थोडी देर में वे स्वय उठ गए। पानी भी अच्छी तरह गरम नहीं था, नहीं तो वे आधे घटे तक पानी में लेटे रहते है।

साढे ग्यारह वजे स्नान-घर से जव वे वापस आए तो उनका दरवार खचाखच भरा था। श्री मुशी ने तो खूव ही उनसे वाते कराईं। सरोजिनी नायडू सुवह आ गई थीं। उन्होने जाकर सवको टोका। श्री मुशी और ठक्कर वापा ने वा-स्मारक फण्ड के वारे में वापू से खूव वाते कीं।

दोपहर को श्रीमती भण्डारी आईं और कहने लगी, "मेरे पति के तो वाल सफेद हो गए है, मेहरवानी करके अव जेल न आना। अगर आवे तो दो महीने पहले नोटिस दे दें, ताकि मेरे पति छुट्टी पर चले जाएँ।" भण्डारी आए तो वोले, "अव तो आप यरवदा जेल से दूर ही रहे।" रात को गर्मी और मच्छरो के कारण रातभर जागने के कारण वापू अत्यन्त थक गए है और सोना चाहते है, पर सो नहीं पाते। कह रहे थे, "मै सोना चाहता था, वहुत प्रयत्न किया, मगर नींद ही नही आई। वस राम-नाम लेता

रहा। आखिर यह कहने वाला मैं ही तो हूँ न कि राम-नाम लेते रहो---एक लाख बार लो, एक करोड बार लो, अन्त में शान्ति मिलेगी ही। यह धन्धा मैंने किया। उसका परिणाम आज प्रत्यक्ष देख रहा हूँ। रातभर का जागरण है, दिन मे भी इतना श्रम पडा है, मगर मै ताजा महसूस करता हूँ। मुझे कुछ सूझता ही नही कि मै क्या करूगा, क्या कहूगा, मगर जिसने आज तक मुझे रास्ता दिखाया है, वही अब भी रास्ता दिखाएगा। मगर इतना मै कबूल कर लेता हू कि मैंने कभी इतना अधेरा महसूस नही किया, जितना आज कर रहा हूँ।"

मैंने कहा, "बापू, इसका मुख्य कारण तो शारीरिक दुर्बलता है। उसीसे दिमागी थकान भी है। शक्ति आने पर सब ठीक हो जायगा।"

दोपहर को लोग आते ही रहे। काफी भीड रही। सीढी के सामने पर्दा लगाया, मगर कोई लाभ नही हुआ। सौन्द्रम् और रामचन्द्रन् आज आए। सौन्द्रम् से बहुत-से समाचार मिले। औंधवाले अप्पाजी अपनी पत्नी समेत आए। उनकी पत्नी डाक्टर हैं।

शाम को मुलाकातियो का ताता लगा रहा और बापू पर बहुत बोझा पडा। उन्हे बहुत थकान लगने लगी। प्रार्थना में रेहानाबहन ने भजन गाया। बाद मे हरिजनो के लिए रुपए इकट्ठे किये।

दीनशा हम लोगो को शाम के वक्त समाधि पर ले गए। और कई लोग भी साथ थे। फूल चढाकर अगरबत्ती जलाई और प्रार्थना की। हमारी इच्छा थी कि जितने दिन हम यहा है, समाधि पर प्रार्थना करने जाया करे। कल की थी और आज भी कर ली।

समाधि पर से लौटे तब बापू मौन ले चुके थे।

हम लोग समाधि पर थे, तभी से तूफान की तैयारी थी। रात मे थोडी वर्षा हुई। हवा ठण्ढी हो गई। बापू रातभर अच्छी तरह सोए।

समाप्त

"जिस रोज हिन्दुस्तान आजाद होगा तब यह यात्रा का स्थान बनेगा।"
पृष्ठ ११०

आगाखां द्वारा बनवाई गईं संगमरमर की समाधियां